MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ
No. 37

GENERAL EDITOR: PROFESSOR HIRALAL JAIN



THE

MAHĀPURĀṆA

OR

TISAṬṬHIMAHĀPURISAGUṆĀLAṂKĀRA

(A Jain Epic in Apabhraṃśa of the 10th Century)

OF

PUṢPADANTA

Vol. I.

CRITICALLY EDITED BY

Dr. P. L. VAIDYA, M. A. (Cal.); D. Litt (Paris)
Professor of Sanskrit and Allied Languages
Nowrosjee Wadia College, Poona

Published by
MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ, BOMBAY

1937

Price Rs. Ten

Text (pages 1-592) Printed by Ganesh Kashinath Gokhale, Secretary Shree Ganesh Printing Works, 596-97, Shanwar Peth, Poona 2 and the rest by Anant Vinayak Patwardhan, B. A., at the Āryabhūshan Press Poona, Peth Bhamburda, House No 915/1, and published by Pandit Nathuram Premi, Secretary, Manikchand Digambara Jaina Granthamālā, Hirabag, Girgaum, Bombay 4.

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तमो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचितं
त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम
अपभ्रंशभाषानिबद्धं

महापुराणम्

तस्यायं

आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थवाडियाकॉलेजाख्यविद्यामन्दिरनियुक्तेन
संस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन
वैद्योपाह्वपरशुरामशर्मणा
संपादितः

प्रकाशिका
माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दाः १९९३]   [खिस्ताब्दाः १९३७

मूल्यं दश रूपिकाः

TABLE OF CONTENTS

विक्रमाब्दाः १९

प्रकाशकका निवेदन

अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवतः सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो ' जैन-साहित्य-संशोधक ' के जुलाई सन १९२३ के अंक में ' महाकवि पुष्पदंत और उनका महापुराण ' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद्वर पं० हीरालाल जैन एम० ए०, एल‌एल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर मुग्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनों तक अन्वेषण किया। कारंजाके भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश-साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिह्वापर तो इस साहित्यकी सुललित सूक्तियाँ निरन्तर ही नृत्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँगरेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन् १९३१ में उनके उद्योगसे कारंजा-सीरीजका प्रारंभ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकंडुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणोंसे उसके फण्डमें कमी आगई और अर्थाभावके कारण वह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो दस पन्द्रह हजार रुपया इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी बिक्री इतनी कम है कि उसके भरोसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाश करनेका साहस नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाको इतना दरिद्र न रहने दे।

अभिमानमेरु पुष्पदन्तके ग्रन्थ जैनसाहित्यकी अमूल्य निधि हैं और ऐसी निधि हैं जिनका वह गर्व कर सकता है। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाको एक तरहसे बिलकुल ही भूल गया है, जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियोंने अपनी सरस, सालंकार, सुपदन्यास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व शृंगार किया था। एक समय था जब ये रचनाएँ घर घर पढ़ी और गाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्योंसे भी अधिक आदर था। सर्वसाधारण जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलाप्रेमको परितृप्त करती थी। परन्तु आज यह दशा है कि जहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान् हैं वहाँ इस भाषाके जानकार दस पाँच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे भंडारोंमें अब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ों ग्रन्थ मौजूद हैं परन्तु पंडित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझते। यह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भाषामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्रान्तिक भाषायें इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बड़े ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। बॉम्बे, अलाहाबाद, बनारस और नागपूर यूनीवर्सिटियोंने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंको अपने पाठ्य-क्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य यूनीवर्सिटियाँ भी इस ओर ध्यान देंगी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रान्तीय भाषाका ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यको थोड़ा बहुत न जान ले। इस दृष्टिसे जो विद्यार्थी हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओंको लेकर एम० ए० होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, वाडिया कॉलेजके प्रोफेसर डॉ० परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम्. ए., डी. लिट. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमवश ही इस कार्यको किया है, अन्यथा इस दरिद्र ग्रन्थमालाकी उन जैसे धुरंधर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति कहाँ है? इसके लिये ग्रन्थमालाके संचालक डॉक्टर साहिबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, साथ ही प्रो० हीरालालजीकी भी ग्रन्थमाला ऋणी है जिनके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी भूमिकाका हिन्दी सारांश भी लिख दिया है। यह माला कारंजा-सीरीजके अधिकारीवर्गकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस मालाको प्रदान कर दी।

बम्बई
१-८-३७

नाथूराम प्रेमी,
मंत्री

INTRODUCTION

THE Mahāpurāna or Tisatthimahāpurisaguṇālaṃkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puṣpadanta in Apabhraṃśa. Of the two smaller works, the Jasaharacariu was edited by me and published in the Kāranjā Jaina Series, Vol. I, 1931. The Nāyakumāracariu was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol. I, Kāranjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puṣpadanta's Mahāpurāna comprising the Ādipurāṇa, and hope to complete the work in two more volumes When I announced in my introduction to Jasaharacariu that I had undertaken the edition of the Mahāpurāṇa I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhraṃśa works of Puṣpadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Saṃdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Adiparva or Ādipurāna, and describes the lives of Risaha or Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth saṃdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining saṃdhis. Dr. Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāna under the title "Harivaṃśapurāna, Ein Abschnitt aus der Apabhraṃśa Welthistorie, Mahāpurāṇa Tisaṭṭhimahāpurisaguṇā-

laṃkāra von Puṣpadanta, Hamburg, 1936", which contains saṃdhis 81–92 of the work. This portion will be re-edited in Devanāgarī characters and incorporated in the third volume, so that the entire work will now be made available to the public in a uniform edition. Besides as we now possess more Mss. than Dr. Alsdorf was then able to get, improvement on his work may be possible.

The text of the entire Mahāpurāṇa will cover approximately 2000 pages of the royal size, of which the present volume contains 600. It is clear that the whole of the Mahāpurāna could not be conveniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only, reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover, Introductions to Jasaharacariu and Ṇayakumāracariu already contain some information about the author, the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

THE CRITICAL APPARATUS

The text of the Adipurāna or of the present volume of the Mahāpurana is based upon the following five Mss. fully collated.

1. G. This Ms. consists of 503 leaves measuring 11″ × 5″. It has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written at Ghoghā Mandir, is dated 1575 of the Saṃvat era, or 1441 of the Śaka era, corresponding to 1518 A. D. It uses pṛsthamātrās and has brief marginal gloss. It is a well-preserved Ms., belongs to the Balātkāra Gana Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 524 of their list (No. 7752 of the Catalogue). It was secured for my use by Professor Hiralal Jain. It begins:—॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends:— इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥ आद्यं पर्व्वं समस्तं ॥ शुभं भवतु संघस्य ॥ स्वस्ति श्री सं० १५७५ वर्षे शाके १४४१ प्र० दक्षणायने ग्रीष्मऋतौ ट्टि...श्वदि ७ रवौ घोघामंदिरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपद्मनंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीमल्लिभूषणदेवास्तत्पट्टे भ० श्रीलक्ष्मीचंद्र तच्छिष्य मुनीश्रीनेमिचंद्र । देशातूंबडज्ञातीयगांधी श्रीपाति तस्यांगना बाई सभू तयोः पुत्र गांधी काहआ गांधी सांता । तेषां मध्ये बा० सभू तया लिखाप्य प्रदत्तमिदमादिपुराणशास्त्रं मुनिश्रीनेमिचंद्रेभ्यः ॥ शुभ भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥ सं० ८००० ॥ भ० लक्ष्मीचंद्रेभ्यः प्रदत्तं ॥ चिरं नंदतु ॥ शुभं भूयात् ॥

This is one of the best and the most authentic of the Mss. of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2. K. This is a paper Ms. containing 732 pages measuring 16″ × 4″. Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāṇa or Ādiparva as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of pṛsṭhamātrās is noticed. The Ms. is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms. from which this Ms. may have been copied. I secured this Ms. through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr Tatyasaheb Patil of Naudni, near Kolhapur. It begins:- ॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and the Adipurāṇa portion ends :— इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगण-हरिसहणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेउ समत्तो ॥ आइपव्वं समत्त ॥. It adds in a different hand : भ० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे भ० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे भ० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तक ॥ The Uttarapurāṇa portion ends:—इय महापुराणे तिसट्ठि-महापुरिसगुणालंकारे महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वीरजिणिंदणिव्वाणगमण णाम दुत्तरसयपरिच्छेयाणं महापुराणं समत्तं ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं ॥ श्लोकसंख्या २०००० (?) ॥ शुभं भवतु ॥. We find on the final blank leaf :—भ० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे भ० श्रीप्रभाचंद्राणां पुस्तकं ॥ It adds further in a different hand : भ० श्रीवादि-चंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमहीचंद्रास्तत्पट्टे भ० श्रीमेरुचंद्राणां पुस्तकं ॥

The entire work seems to be written in one hand ; in fact this is the only Ms. of the whole of the Mahāpurāṇa, i. e., Ādipurāṇa and Uttarapurāṇa, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms. seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss., in a different hand. This Ms. thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the Ṭippaṇa

of Prabhācandra, (for which see below). There is no indication of the age of the Ms. although its original, probably a palm-leaf Ms., represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3. M. This Ms. consists of 470 leaves measuring 11″ × 4½″. It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muttra, in 1883 of the Saṃvat era, i.e. in 1826 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K. or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1050 of 1887–91. It begins :—ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends :— इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्तत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ संवत् १८८३ का मित्ती वैशाख शुक्ल ३ बुधवासरे ॥ शुभं भवतु ॥ लिखितं श्रीमथुरापुरीमध्ये ब्राह्मण श्यामलाल ॥ श्रीजिनधर्मप्रतिपालक श्रीमहाराजाधिराजश्रीकुमरजी चेतरामजी पठनार्थं वा परोपकारार्थं ॥ शुभ दीर्घायुर्भवति पुत्रवृद्धिर्भवति ॥ श्रीजिनधर्मप्रवर्तन करोति ॥ श्री आदिनाथेभ्यो नमः ॥ समाप्तोय आदिपुराणः ॥ शुभं ॥

4. B. This Ms. consists of 306 leaves measuring 11″ × 5″. It has 9 lines to a page and about 33 letters to a line It belongs to the Balatkāra Gaṇa Mandir at Karanjā, Berar, and bears No. 523 of their list (No. 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof. Hiralal Jain of Amraoti. It was written at Yogimpura, i. e., Dehli, in 1659 of the Samvat era, i. e., 1602 A. D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in it a version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins:–ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends :– इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहनाहभरहनिव्वाणगमणं णाम सत्तत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ आदिपुराण संपूर्णयेन जात ॥ श्लोकमानेनाष्टसहस्राणि अंकतो ग्रंथ ८००० ॥ अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफं ॥ साधुभिरेव मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥ योगिनीपुरदुर्गस्थाने जलालदीनसाहिअकबर-

राज्ये अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादित्यराज्ये संवत् १६५९ पोषसुदि ४ बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीसिंघकीर्तिदेवा......................

5. P. This Ms. is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measurig $11\frac{1}{2}'' \times 5''$. It has 9 lines to a page and abont 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 370 of 1879-80. It seems to be a very old Ms., edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The prsthamātrās are used. The available portion ends with a part of the third kaḍavaka of the 28th saṃdhi (see foot-note 8 on this kaḍavaka on page 433 of our edition). This Ms. preserves a recension which is metrically correct, i. e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणविवि and पणवेवि where पणविवि respresents the metrically correct form. It beings :—स्वस्ति ॥ ओं नमः ॥ सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवहूमणरंजणु etc., and ends with चामर° in XXVIII 3. 11.

In addition to these five Mss. fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāṇa. Of these one is deposited in the Sena Gana Mandir at Kāranjā, (No. 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss. in C. P & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms. was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranja and presented by her to the Bhaṭṭāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Saṃvat era, i.e., 1534 A.D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss. belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No. 1140 of 1891-96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 saṃdhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyeṣtha of 1848 of the Saṃvat era, i. e., 1791 A. D. I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms. from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891–95. It is dated Wednesday, the 10th of the bright half of Phālguna of 1925 of the Saṃvat era, i. e., 1868 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 leaves and contains the text of the first sixteen saṃdhis. The second part contains 177 leaves which are numbered from 1 to 177, and not from 143. The third part contains the remaining 33 pages, numbered from 178, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P, and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Ṭippaṇa of Prabhacandra (T in the Critical Apparatus). I Secured a Ms. of this Ṭippaṇa on the Ādipurāṇa portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 563 of 1876–77 This Ms. measures $13\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$, has 51 leaves, with 13 lines to a page and 45 letters to a line. The script used is peculiar in that words like द्वितीय are written like द्विता । There is no indication as to its age, but from appearance it seems to belong to the 16th century A. D. It begins :—ॐ णमो वीतरागाय ॥ प्रणम्य वीरं विबुधेन्द्रसंस्तुतं निरस्तदोषं वृषभं महोदयम् । पदार्थसंदिग्धजनप्रबोधकं महापुराणस्य करोमि टिप्पणम् ॥ १ ॥ सिद्धत्यादि सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिः सैव वधूस्तस्या मनोरञ्जनाश्चित्तरञ्जकः. It ends :—इति सप्तत्रिंशत्तमसंधि समाप्ताः ॥ समस्तसंदेहहरं मनोहरं प्रकृष्टपुण्यं प्रभवं जिनेश्वरम् । कृतं पुराणे प्रथमे सुटिप्पणं सुखावबोधं निखिलार्थदर्पणम् ॥ इति श्रीप्रभाचन्द्रविरचितमादिपुराणटिप्पणकं पञ्चाशच्छ्लोकहीनं सहस्रद्वयपरिमाणं परिसमाप्ता ॥ शुभं भवतु ॥

I also examined a Ms. of Prabhācandra's Ṭippaṇa on the Uttarapurāṇa which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain, from Master Motilal Sanghi of Jaipore. This Ms. measures $12'' \times 5\frac{1}{2}''$, has 57 leaves with 13 lines to a page and about 31 letters to a line. It begins:—ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ वंभहो परमात्मनः. It ends :—श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणामशीत्यधिकसहस्रे महापुराणविषमपदविवरणं सागरसेनसैद्धान्तात् परिज्ञाय मूलटिप्पणकां चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं अज्ञपातभीतेन श्रीमद्बला...रगणश्रीसंघाचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्डाभिभूतरिपुराज्यविजयिनः श्रीभोजदेवस्य ॥ १०२ ॥ इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचंद्राचार्यविरचितं

समाप्तम् ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७५ वर्षे भाद्रवासुदि। बुद्धदिने। कुरुजांगलदेसे। सुलितानसिकंदरपुत्र सुलितानब्राहिम राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे मथुरान्वये पुष्करगणे। भट्टारकश्रीगुणभद्रसूरिदेवाः। तदाम्नाये जैसवाल चौ. टोडरमल्ल। इदं उत्तरपुराणटीका लिखापित ॥ सुभं भवतु ॥ मांगल्यं ददाति लेखकपाठकयोः ॥ This Ms. is dated Saṃvat 1575, i. e. 1578 A. D.

On examining the colophon of the author of the Tippaṇa we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition. We learn that the Tippana was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D., i. e., within sixty years of the completion of the Mahāpurāṇa by Puṣpadanta ; we also learn that king Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva ; that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tippaṇa ; that he also consulted the original Tippaṇa, probably of Puspadanta himself (मूलटिप्पणकां चालोक्य), and prepared a collected Tippana (समुच्चयटिप्पणं) on the Mahapurāṇa, embodying the original Tippaṇa. An author's writing a Tippana on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible , for I had an occasion to examine Mss. written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers. I therefore think that Puṣpadanta must have written a short gloss on the difficult words of his work ; this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down. The gloss found in Mss. of our text is not identical with the Tippaṇa of Prabhācandra, but is one which is either abriged or amplified.

Professor Hiralal Jain, in his Introduction (LXIII—LXIV) to the Ṇāyakumaracariu refers to the colophon of a Ms. of the Tippaṇa of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā (*circa* 1055 A. D.) But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D. and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself. Our Ms. of the Tippana again does not contain the stanza तस्वाधारमहापुराण etc. Prabhacandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasiṃhadeva.

The critical apparatus described above divides the Mss. into two groups, one comprising G and K, and the other M, B and P, not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group (see page 514), but also on the strength of the agreement of the Praśasti stanzas found at the beginning of several samdhis. I have already alluded to this topic in my Introduction to Jasaharacariu (page 21), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the Ms. tradition of the works of Puṣpadanta and also the principle on which I have grouped the Mss. and valued them.

THE PRASASTI STANZAS OF THE MAHĀPURĀNA *

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of Jasaharacariu, I discovered that certain Mss. contained, at the commencement of a saṃdhi, stanzas in praise of the poet's patron, Nanna, while others did not record them. In the course of the collation of Mss. I also discovered the fact that those Mss. which contained these praśasti stanzas agreed very closely in one set of variants, while those Mss. which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those Mss. which did not give the praśasti stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the Jasaharacariu the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator, who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these praśasti stanzas, and was forced to advance a hypothesis that the poet himself, with the help he obtained from his patron, must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote, at leisure, at first in the margin perhaps, some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

* Some of the Praśasti stanzas are put together by Pandit Nathuram Premi in his article on Puṣpadanta in Jain Sāhitya Saṃśodhaka, Vol II. No I, 1923.

page 21 of the Introduction to Jasaharacariu, enabled me then to fix up that Mss. S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the Praśasti stanzas of the Mahāpurāṇa, viz.,

दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the Mahāpurāṇa, in as much as the plunder of Mānyakheṭa, a well-ascertained historical event of 972 A. D., was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the Kāranjā Ms. at the beginning of the 50th saṃdhi, while the completion of the Mahāpurāṇa in the Krodhana year, i. e., in 965 A. D., was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms. K. This fact coupled with the absence of praśasti stanzas in my best Mss. of the Jasaharacariu enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of Mahāpurāṇa Mss. fully corraborates. The Ṇāyakumaracariu of Puṣpadanta, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any praśasti stanzas in any of his Mss., and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the praśasti stanzas occurring at the beginning of the saṃdhis of the Mahāpurāṇa. I have not so far discovered a Ms. of the Mahāpurāṇa which has no praśasti stanzas : at the same time I have found that Mss. do not agree in giving them all. I have however found that groups of Mss. agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether. A smaller number of stanzas was found in my Mss. G and K of the Ādipurāṇa, while the remaining Mss. gave a much larger number of them. I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the Ādipurāṇa. I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the Critical Apparatus. I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying Bharata to such extent. I also believe that the poet composed these stanzas

long after he had completed the composition of the Mahāpurāṇa. At any rate the stanza दीनानाथधनं etc. he could not have written before 972 A. D., i. e., seven years after the completion of the Mahāpurāṇa. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e., (a) those found in G and K; (b) those found in other Mss. of the Ādipurāṇa; (c) those found in Poona, Kāranjā and K of the Uttarapurāna portion; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms.. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section.

(a) 1. (i) आदित्योदयपर्वतादुरुतराच्चन्द्रार्कचूडामणे-
रा हेमाचलतः कुबेरानिलयाद्दा सेतुबन्धाद् दृढात् ।
आ पातालतलादहीन्द्रभवनाद्दा स्वर्गमार्गं गता
कीर्तिर्यस्य न वेत्ति भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khanda, i. e., the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd samdhi in G and K, but at the beginning of the 2nd samdhi in the remaining Mss. (See foot-note on page 18 and also note the variants).

2. (ii) सौभाग्य शुचिता क्षमा भुजबल शौर्यं वपुः सुन्दर
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-
स्यैकैकं गुणमङ्गमूर्जितधिया पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet's patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth saṃdhi.

3. (iii) भ्रूलीला त्यज मुञ्च संगतकुचद्वन्द्वादिकं वक्षसा
मा त्वं दर्शय चारुमध्यलतिका तन्वाङ्गि कामाहता ।
मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गना न भरतः शौचाद्धियो वाञ्छति ॥

This stanza states that Bharata, the poet's friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person. The stanza is found at the beginning of the 5th saṃdhi in G and K,

and in other Mss. also at the same place. (See footnote on page 72 and also note the variants).

4. (iv) एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः
एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।
एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां
द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth. The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth saṃdhi, but in all others at the beginning of the 9th saṃdhi.

5. (v) जगं रम्मं हम्मं दीवओ चन्दबिम्बं
धरित्ती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्थं ।
पिया णिद्दा णिच्चं कव्वकीला विणोओ
अदीणत्तं चित्त ईसरो पुप्फदन्तो ॥

This stanza states that the poet Puṣpadanta is a king in as much as he has the nobility of mind : the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss. at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in Poona, Jaipore and Kāranjā Mss.

6. (vi) णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥

7. (vii) तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकैः
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।
काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्यद्य विद्याप्रियो यो
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Puṣpadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning ir the Kali age. These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th saṃdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th saṃdhi.

8. (viii) प्रतिगृहमटति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसङ्गमावसति ।
भरतस्य वल्लभासौ कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss. of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however, strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The agreement existing between G and K regarding the location of the above-mentioned praśasti stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by a general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further, the fact that the number of praśasti stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss. represents an older recension than the other one. Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was able to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which made it difficult for me to decipher the Ms. correctly.

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, B and P. Besides these, I had an occasion to consult three more Mss., one from the Sena Gana Bhāṇḍāra at Kāranjā and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the Praśasti stanzas, (i) and (iii–viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

(b) 9 (i) बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।
संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

(Found at the beginning of the third saṃdhi).

10. (ii) आश्रयवशेन भवति प्राय: सर्वस्य वस्तुनोऽतिशय: ।
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

(Found at the beginning of the fourth saṃdhi).

11. (iii) श्रीर्वाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि संततं लक्ष्म्यै ।
भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

(Found at the beginning of the sixth saṃdhi).

12. (iv) हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता
कोऽयं श्याम: प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्तः
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

(Found at the beginning of the seventh saṃdhi).

13. (v) मातर्वसुंधरि कुतूहलिनो ममैत-
दापृच्छतः कथय सत्यमपास्य शाठ्यम् ।
त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यतुल्यः ॥

(Found at the beginning of the eighth saṃdhi).

14. (vi) सूर्यात्तेज (?) गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः
सौम्यत्वं कुसुमायुधात्सुभगतां त्यागं बलेः संभ्रमान् ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डः (?) कवेर्वल्लभः ॥

(Found at the beginning of the eleventh saṃdhi).

15. (vii) तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

(Found at the beginning of the thirteenth saṃdhi and also at the beginning of the thirty-fourth saṃdhi).

16. (viii) केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउग्गिण्णदन्तङ्कुरोहा
सेसाहीबद्धमूला जलहिजलसमुब्भूयपिण्डीरवत्ता ।

बम्मण्डे विस्थरन्ती अमयरसमयं चन्दबिम्बं फलन्ती
फुल्लन्ती तारओहं जयइ नवलया तुम्ह भरहेस कित्ती ॥

(Found at the beginning of the fourteenth saṃdhi).

17. (ix) त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं
कीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।
सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेम्णोऽन्तरां निर्वृतिं
श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्न भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

(Found at the beginning of the fifteenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the 95th saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

18. (x) वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।
अत्यन्तवृद्धिगतमपि भुवनं वि (वं ?) भ्रमति तच्चित्रम् ॥

(Found at the beginning of the seventeenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the 102nd saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

19. (xi) शशधरबिम्बात्कान्तिस्तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

(Found at the beginning of the eighteenth saṃdhi. It is also found at the beginning of the thirty-ninth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in K, and in Poona and Jaipore Mss.)

20. (xii) श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।
भरतच्छलेन संप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥

(Found at the beginning of the nineteenth saṃdhi).

21. (xiii) फणिनि विमुञ्चतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-
मलकेषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।
मदमुचि मायतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खङ्गणे (?) ॥

(Found at the beginning of the twentieth saṃdhi).

22. (xiv) यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुरसि सदा विराजते ।

वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुहृन्मयममलमङ्गलः ॥

(Found at the beginning of the twenty-first saṃdhi).

23. (xv) मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादेरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।
निर्मलतपविचित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा
भारतमङ्ग सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

(Found at the beginning of the twenty-second samdhi).

24. (xvi) अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरुम्बकर्णिकं
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।
विलसदनुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमलं
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-third saṃdhi).

25. (xvii) हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डलं
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुममंकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षित-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

(Found at the beginning of the twenty-fourth saṃdhi).

26. (xviii) उन्नतातिमनुमात्रपात्रता (?) भाति भद्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

(Found at the beginning of the twenty-fifth saṃdhi).

27. (xix) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुर्भ्रमताम् ।
गणनव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

(Found at the beginning of the twenty-sixth saṃdhi).

28. (xx) गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥

(Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-seventh saṃdhis).

29. (xxi) मुखनालिनोदरसद्मनि गुणधृतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥

(Found at the beginning of the twenty-eighth saṃdhi).

30. (xxii) बम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियाकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण समं समसीसियाइ कइणो न लज्जन्ति ॥

(Found at the beginning of the thirty-second saṃdhi).

31. (xxiii) विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रसक्त एव ॥

(Found at the beginning of the thiry-third saṃdhi. It is also found at the beginning of the fortieth saṃdhi of the Uttarapurāṇa in Poona and Jaipore Mss., but is missing in K).

32. (xxiv) इति भरतस्य जिनेश्वरसमयैकशिरोमणेर्गुणान्वक्तुम् ॥
मातु च वार्धितोयं चुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

(Found at the beginning of the thirty-fifth saṃdhi)

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss., one from Seṇa Gaṇa Bhaṇḍāra at Kāraṇjā and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the Adipurāṇa portion. Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāṇa, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss. existed for the Uttarapurāna also. Unfortunately the number of the available Mss. of the Uttarapurāna is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balātkāra Gaṇa Bhāṇḍāra at Karaṇjā. On examination I found that Poona and Kāraṇjā Mss. agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th saṃdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different saṃdhis from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

(c) 33. (i) वरमकरोद्पारतरविवरमहिकिरणेन्दुमण्डलं
यदपि च जलधिवलयमधिलंघ्य विधेस्तदन्तरं दिशः ।
विगलितजलपयोदपटलद्युति कथमिदमन्यथा यशः
प्रसरदमादमङ्कदनाभारत भुवि भरत साम्प्रतम् ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 41st and the 47th saṃdhis. The Jaipore Ms. has it only at the 41st. K does not give it anywhere).

34. (ii) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेद्यशाम तन्मङ्गलं
सर्वस्यापि गुरुर्बुधः कविरयं चक्रे अयं च (?) क्रमः ।
राहुः केतुरयं द्विषामिति दधत्साम्यं ग्रहाणां प्रभुः
सप्रत्योदय (?) माननोति भरतः सर्वस्य तेजोधिकः ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 50th along with two following and जगं रम्मं हम्मं etc. (see stanza 5 above). The Jaipore Ms. gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere).

35. (iii) सया सन्नो वेसो भसणं सुद्धसीलं
सुसतुद्धं चित्तं सव्वन्नविसु मत्ती ।
सुहं दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो
अहो खण्डस्सेसो केण पुण्णेण जाओ ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, the Jaipore Ms. gives it at 49th, and K does not give it anywhere).

36. (iv) दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्फुल्लवल्लीवनं
मान्याखेटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं
क्वेदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

(Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere).

37. (v) अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 59th saṃdhi).

38. (vi) बन्धुः सौजन्यवार्धेः कविकुलधिषणाध्वान्तविध्वंसभानुः
प्रौढालंकारसारामलतनुविभवा भारती यस्य नित्यम् ।
वक्त्राम्भोजानुरागक्रमनिहितपदा राजहंसीव भाति
प्रोद्यद्गम्भीरभावा स जयति भरते धार्मिके पुष्पदन्तः ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd saṃdhi).

39. (vii) आखण्डोड्डमरारवं डमरुकं चण्डीशमाश्रित्य यः
कुर्वन् काममकाण्डताण्डवविधिं डिण्डीरपिण्डच्छवेः ।
हंसाडम्बरडिण्डिमण्डलमद्रागीरथीनायकं
वाञ्छन्नित्थमह कुतूहलवती खण्डस्य कीर्तिः कृते: ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th saṃdhi).

40. (viii) आजन्मं (?) कवितारसैकधिषणासौभाग्यभाजो गिरां
दृश्यन्ते कवयो विशालमकलग्रन्थानुगा बोधतः ।
किं तु प्रौढनिरूढगूढमतिना श्रीपुष्पदन्तेन भोः
साम्यं बिभ्रति (?) नैव जातु कविता शीघ्रं ततः प्राकृते ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th saṃdhi).

41. (ix) यस्येह कुन्दामलचन्द्ररोचिःसमानकीर्तिः ककुभां मुखानि ।
प्रसाधयन्ती ननु बंभ्रमीति जयत्वसौ श्रीभरतो नितान्तम् ॥

42. (x) पीयूषसूर्तिकिरणा हरहासहार-
कुन्दप्रसूनमरतीरिणशक्रनागाः ।
क्षीरोदशेषघवलसत्तम (?) हंम (?) चेव
किं खण्डकाव्यधवला भरतः स यूयम् (?) ॥

(Both these stanzas are found in all the four Mss. at the beginning of the 66th saṃdhi.)

43. (xi) इह पठितमुदारं वाचकैर्गीयमानं
इह लिखितमजस्रं लेखकैश्चारु काव्यम् ।
गतवति कविमित्रे मित्रतां पुष्पदन्ते
भरत तव गृहेऽस्मिन् भाति विद्याविनोदः ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th saṃdhi).

44. (xii) चञ्चच्चन्द्रमरीचिचञ्चुरचातुर्यचञ्चोचिना
चञ्चन्ती विचटच्चमत्कृतिकविः प्रोद्दामकाव्यक्रियाम् ।
अञ्चन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया माधुर्यधुर्या रसैः
खण्डस्यैव महाकवेः सभरतान्नित्यं कृतिः शोभते ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th saṃdhi).

45. (xiii) लोके दुर्जनसंकुले हतकुले तृष्णाकुले नीरसे
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांप्रतं
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥

(Found in all the four Mss. at the beginning of the 80th saṃdhi).

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

(d) **46.** (i) सोऽयं श्रीभरतः कलङ्करहितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः
सज्ज्योतिर्मणिराकरो प्लुत इवानर्घ्यो गुणैर्भासते ।
वंशो येन पवित्रतामिह महामत्राह्वयः प्राप्तवान्
श्रीमद्दल्लभराज—कटके यश्चाभवन्नायकः ॥

(Found at the beginning of the 42nd samdhi).

47. (ii) वापीकूपतडागजैनवसतीस्त्यक्त्वेह यत्कारितं
भव्यश्रीभरतेन सुन्दरधिया जैनं सुराणां (पुराणं ?) महत् ।
तत्कृत्वा प्लवमुत्तमं रविकृतिः (?) संसारवार्धेः सुखं
कोऽन्यत् (?) स्वसहसो (?) स्ति कस्य हृदयं तं वन्दितुं नेहते ॥

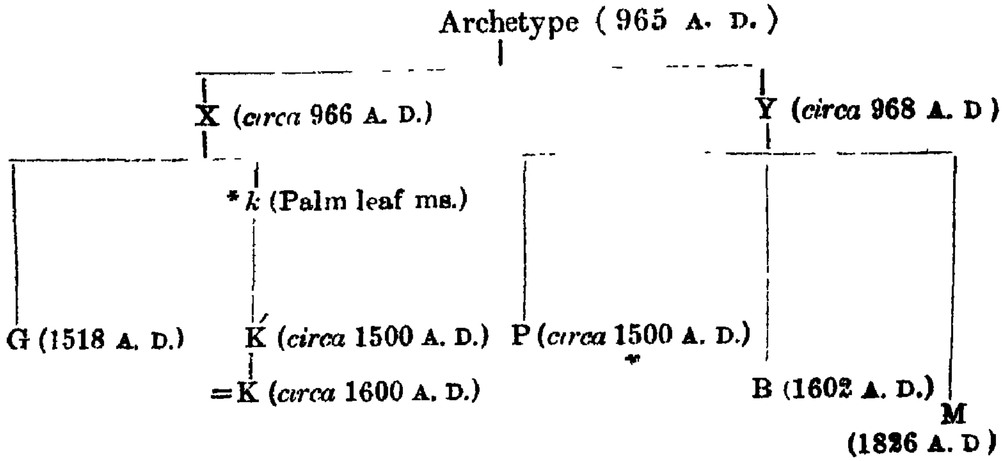
(Found at the beginning of the 45th saṃdhi).

48. (iii) संजुडियजाणुकोप्परगीवाकडिबन्धणावयवो ।
अणुहवइ घोरियं तुज्झ जं पावइ लेहओ दुक्खं ॥

(Found at the beginning of the 58th saṃdhi).

It will be seen from the account of these praśasti stanzas that even the Uttarapurāṇa Mss. preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss. the middle and the Jaipore Ms. the youngest. Leaving the question of the genealogy

of the Mss. of the Uttarapurāna for the time being, I present below in genealogical form the relation of the different Mss. of the Ādipurāṇa :—



BHARATA, THE PATRON OF PUSPADANTA

There are in all 48 praśasti stanzas found in the Mss. of the Mahāpurāna. Of these stanzas, six, viz., 5, 6, 16, 30, 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same. Prakritisms occur there pretty often (e. g. चोज्जं in 29). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning (वाएसी, 6) and Ambikā (23), the poet Puspadanta himself (5, 30, 36, 39, 40, 45), the poet and his Mahāpurāṇa (37), the relation between Bharata, the patron, and the poet (1, 4, 14, 26, 35, 37, 38, 42, 43, 44), and the glorification of Bharata, the poet's patron (remaining stanzas). Bharata is mentioned and glorified in the body of the work (I. 3–8 ; XXXVII. 3–5 ; CII. 13) and also in the Ghatta lines and the puspikā at the end of each samdhi (महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे) of the Mahāpurāṇa. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss. of the Jasaharacariu glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office ; and a long praśasti at the end of the Nāyakumāracariu (page 112) gives some details about the same. On the strength of the information supplied by these it is possible to construct a short biography of Bharata to whose generosity the world owes this epic poem in Apabhraṃśa.

* The asterics indicate conjectural Mss.

We have now an excellent account of the *Rāṣṭrakūṭas and their Times* by Dr. A. S. Altekar (Poona, 1934). We find that a few pages (115–123) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III (939–968 A. D.). We also have there a section dealing with education and literature (Chapter XIV) of the period. And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet. On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period. Puṣpadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhraṃśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts. It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puṣpadanta and the praśasti stanzas.

Kṛṣṇa III is known in Puṣpadanta's works by three names: Tuḍiga, Suhatuṅgarāya (Sk. Subhatuṅgarāja) and Vallabhanrpa. He came to the throne in 939 A. D, and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khoṭṭigadeva. It was during the reign of Khoṭṭigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rāṣṭrakūṭas, was plundered by the king of Dhāra. Bharata was the minister of Kṛṣṇa III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatuṅgarāya, i. e., Kṛṣṇa III. Bharata however was still living when Puṣpadanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puṣpadanta and induced him to write Jasaharacariu and Ṇāyakumāracariu.

Bharata seems to have come from the family of Koṇḍella gotra (Sk. Kauṇḍinya). This was a rich family and held the office of ministers (महामात्राह्वयः वंशः , 46), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master (संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया). His grandfather's name was Annaiya or Annayya. His

father's name was Aiyaṇa or Airaṇa and his mother was called Devī. Bharata had no brother or near relative (बन्धुरहितेन, 15). He was married to Kundavvā and had seven sons, viz., Devalla, Bhogalla, Naṇṇa, Sohaṇa, Guṇavamma, Dangaiya and Santaiya. Naṇṇa is mentioned as the son of Kundavvā and it is not unlikely that Bharata had more wives than one. All the seven sons of Bharata were still living in 965 A. D., while Naṇṇa is stated to have succeeded his father already in 968 A. D. We have therefore to presume that his two elder brothers died following the death of their father or that Naṇṇa had some special qualifications to supercede his brothers in the office of his father.

Bharata is described by Puṣpadanta as possessing dark complexion (श्यामः प्रधानः, 12 ; श्यामरुचि, 20). He had a beautiful figure and is likened to the god of love (20). He had a good physique (भारनमह, 23), and held the office of a general in the army of Kṛṣṇa III (वल्लभराज...कटके यश्चाभवन्न यकः, 46). He also held the portfolio of the minister of charities in the royal household (प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता, 12). He had a gentle dress and courteous manners and speech (सया सन्तो वेसो, मुहे दिव्वा वाणी, 35). He was fond of learning (विद्याप्रियः, 7). He combined in him wealth and learning (श्रीरुरसि, सरस्वती वदनपङ्कजे, 22). It was impossible to count his virtues as it is impossible to count the waters of the sea (11 ; 12). He had a pure character (स्वप्नेप्येष पराङ्गनां न वाञ्छति, 3). He was in fact a rendezvous of all virtues, most striking among them being his generosity. Poems were being recited in his house, copyists prepared copies of works. Thus, since Puṣpadanta became the friend of Bharata, his house became a meeting place of the learned (43). He was always generous to the needy and so held a place amongst generous persons of the past such as Bali, Jīmūtavāhana, Dadhīci, Vinayāṅkura and Śātavahana (9, 31). His fame travelled far and wide (1). He had countless virtues as he had countless enemies (27), who experienced the same miseries as copyists experienced while toiling (48). One graceful act on his part was to induce Puṣpadanta to write the Mahāpurāṇa and to offer him the necessary help for this purpose. In fact, instead of spending his wealth in building wells, lakes, ponds and Jain temples, he used it on the preparation and propagation of the Jain epic with the help of which he would cross the ocean of saṃsara with comfort (47).

The poet Puṣpadanta came of a Brahmin family of Kāśyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Siva, but were later converted to Jainism. Puṣpadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bhairava or Vīrarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheṭa, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāṣṭrakūṭas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaïya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāna so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāṇa in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Saka era, i. e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāṇa, i. e, the first thirty-seven saṃdhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodhana year of the Saka era, i. e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा–
मर्थालंकृतयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णीतयः ।
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते
द्वावेतौ भरतेशपुष्पदशनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ (37)

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābbārata to say—

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् ।

For the Mahāpurāṇa is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāṇa, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puṣpadanta and asked him to write two more poems in Apabhraṃśa, Jasaharacariu and Nāyakumaracariu. The glory of the Rāṣṭrakūṭas, however, soon came to the end. Their capital, Manyakheṭa, was plundered in 972 A. D., and the poet became destitute once more (केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः, 36).

WHAT IS A MAHAPURANA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Purvas and Aṅgas is lost; they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon, according to the Digambaras, consists of four divisions: (i) Prathamānuyoga, lives of Tīrthaṃkaras and other great men of the faith; in other terms, the kathā literature; (ii) Karananuyoga, description of the geography of the universe; (iii) Caraṇanuyoga, rules of conduct for monks and laymen; and (iv) Dravyanuyoga, philosophical categories or philosophy. According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahapurāṇa is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purāṇas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpurāṇa, on the other hand, describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jinasena uses the term Mahāpurāṇa as a synonym for Triṣaṣṭilakṣaṇa, while Hemacandra calls his work on the theme as Triṣaṣṭiśalākā-puruṣacarita, i. e., the lives of sixty-three prominent men (Salākāpuruṣa). Puṣpadanta uses the term Mahapurana to alternate with Tisaṭṭhimahāpurisaguṇalaṃkara, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term puraṇa is defined in the Hindu Literature as follows :—

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च ।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

The puraṇa deals with the five topics, viz., the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāṇa as well ; for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term. Jinasena who is a predecessor of Puṣpadanta in the writing of a Mahāpurāṇa says :—

तीर्थेशामपि चक्रेशां हलिनामर्धचक्रिणाम् ।
त्रिषष्टिलक्षणं वक्ष्ये पुराणं तद्द्विषामपि ॥
पुरातनं पुराणं स्यात्तन्महन्महदाश्रयात् ।
महद्भिरुपदिष्टत्वान्महाश्रेयोनुशासनात् ॥
कविं पुराणमाश्रित्य प्रसृतत्वात्पुराणता ।
महत्त्वं स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्यैर्निरुच्यते ॥
महापुरुषसंबन्धि महाभ्युदयशासनम् ।
महापुराणमाम्नातमत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20–23.

"I shall recite the narrative of sixty-three ancient persons, i. e., of the Tirthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins (i. e. Vasudevas) and of their opponents (i. e., of Prati-Vāsudevas). The work is called 'purāṇa' because it is a narrative of the ancients. It is called 'great' because it relates to the great (persons), or because it is narrated by the great (sages) or because it teaches (the way to) great bliss. Other writers say that, because it originated with the old poet it is called 'purāna' and it is called 'great' because of its intrinsic greatness. The great sages have called it a Mahāpurāṇa because it relates to great men and because it teaches the bliss." A Tippana on I. 9. 3 of our text seems to make a distinction between *aihāsa* and *purāna* and says that *aihāsa* means the narrative of a single individual while *purāṇa* i. e. Mahāpurāṇa means narratives of sixty-three great men (अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टि-पुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि). The Mahapurāṇa therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importanee as the Mahābharata or the Rāmāyana in Hinduism. The Mahāpuraṇa however lacks the unity of the Mahābhārata or of the Rāmāyaṇa and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term.

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāṇa are classified under five heads. I give their names below for ready reference :—

(a) The Tirthaṃkaras (24) : (1) वृषभ or ऋषभ ; (2) अजित ; (3) शंभव or संभव ; (4) अभिनन्दन ; (5) सुमति ; (6) पद्मप्रभ ; (7) सुपार्श्व (8) चन्द्रप्रभ ;

(9) पुष्पदन्त or सुविधि ; (10) शीतल ; (11) श्रेयांस ; (12) वासुपूज्य ; (13) विमल ; (14) अनन्त ; (15) धर्म ; (16) शान्ति ; (17) कुन्थु ; (18) अर ; (19) मल्लि ; (20) सुव्रत ; (21) नमि ; (22) नेमि ; (23) पार्श्व ; and (24) महावीर.

(b) The Cakravartins (12): (1) भरत ; (2) सगर ; (3) मघवन् ; (4) सनत्कुमार ; (5) शान्ति ; (6) कुन्थु ; (7) अर ; (8) सुभौम or सुभूम ; (9) पद्म ; (10) हरिषेण ; (11) जयसेन or जय ; and (12) ब्रह्मदत्त.

(c) The Vāsudevas (9): (1) त्रिपृष्ठ ; (2) द्विपृष्ठ ; (3) स्वयंभू ; (4) पुरुषोत्तम ; (5) पुरुषसिंह ; (6) पुरुषपुण्डरीक ; (7) दत्त , (8) नारायण ; and (9) कृष्ण.

(d) The Baladevas (9) : (1) अचल ; (2) विजय ; (3) भद्र ; (4) सुप्रभ ; (5) सुदर्शन ; (6) आनन्द ; (7) नन्दन ; (8) पद्म ; and (9) राम (बलराम).

(e) The Prati-Vasudevas (9): (1) अश्वग्रीव ; (2) तारक ; (3) मेरक ; (4) मधु ; (5) निशुम्भ ; (6) बलि ; (7) प्रह्लाद ; (8) रावण ; and (9) मगधेश्वर or जरासंध.

It is to be noted that Santi, Kunthu and Ara are Tīrthaṃkaras as well as Cakravartins.

WORKS ON SIXTY-THREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahapurāṇa or more accurately Adipurāna of Jinasena (*circa* 850–875 A. D.). Jinasena calls his work Triṣaṣṭilakṣaṇamahāpurāṇa-saṃgraha, and thus seems to have planned a complete Mahapuraṇa. He was however unable to complete it, probably on account of his death. We get from his hand forty-two parvans only of the Adipurāṇa, the remaining five parvans of the Ādipurana and the whole of the Uttarapurāṇa being written by his disciple Guṇabhadra and completed in 820 of the Saka era, i. e., in 898 A. D, at Vaṅkāpura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akālavarṣa *alias* Kṛṣṇa II (880–914 A. D.) This Mahapurana is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāthi translation by Kallappa Niṭve and again at Indore with a Hindi translation by Pandit Lalaram Jain. It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains.

The third work is the Triṣaṣṭiśalākāpuruṣacarita by Hemacandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last

works of Hemacandra and so may have been written about 1170–72 A. D. It was published by the Jaina Dharma Prasāraka Sabhā of Bhavnagar in 1905-9, and a reprint of it is being issued at present.

The Jain Granthāvalī published in 1965 of the Vikrama era, i. e. in 1907–8 records three works named Mahāpuruṣacarita on page 229. One of them is by Śīlācārya (*circa* 925 of the Vikrama era, i. e. 888 A. D.), is written in Prakrit and its Mss. are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No. 4 and also at Jesalmer Bhandar. The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Amrasūri on the authority of Bṛhaṭṭippaṇikā. It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutuṅga, Mss. of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad. I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Guṇabhadra, Puṣpadanta and Hemacandra, as also of Śīlācarya and Merutuṅga if these two last-named works become available to me.

THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts. The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss. or recorded in the margin of Mss., and also in the Tippana of Prabhācandra. The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit. I have culled it from the marginal notes in Mss. G, K, M and P, and also from the Tippaṇa of Prabhācandra. In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhraṃśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss. Extracts from Prabhācandra's Tippaṇa, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end. I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes. It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss. even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-

ed historical allusions (see for example, the gloss on कइवइ विड्डियमेड on page 8).

ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another, assisted me in the production of the present volume. I must thank in the first place the Trustees and the Secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Puṣpadanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century. After the plunder of Mānyakheṭa in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor, his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Puṣpadanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication. He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss. from Kāranjā and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across. To Pandit Nathuram Premi, the veteran savant of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heartfelt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now professor of Ardha-Māgadhi at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona
August 1937

P. L. VAIDYA

ग्रन्थ-परिचय

१ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलब्ध साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ स्फुट रचनाएँ जैन धार्मिक समाज में प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्संसार को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज में ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष में इस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज में आदर भी बढ़ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मैंने सन् १९२५ में कारंजा के भंडारों का अवलोकन किया और वहाँ के उपलब्ध दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची में प्रकाशित कराया, तथा इन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारंजा ग्रंथमाला की स्थापना कराई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन में अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे हैं।

२ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए हैं। वे भाषा की दृष्टि से सब से प्रौढ, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनता में, एक स्वयंभूके काव्यों को छोड़,सबसे पूर्व के प्रमाणित होते हैं। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये हैं उनमें से 'जसहर-चरिउ' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वैद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारंजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरिउ' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र-कीर्ति-सीरीज में प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज में प्रकाशित होने में अभी कुछ बिलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा में तैयार है। इसी से अवसर पाकर यह ग्रंथ इस ग्रंथमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण में एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की हैं जिन्हें आगे दो ग्रन्थों में प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडॉर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी में प्रकाशित

कराया है। इसमें उत्तरपुराण की बारह (८१-९२) संधियाँ हैं जो हरिवंशपुराण कहलाती हैं। जब जर्मनी से यह संस्करण प्रकट नहीं हुआ था तब विचार था कि डा. आल्सडॉर्फ द्वारा सम्पादित यह खण्ड भी एक ग्रंथ में स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित करा दिया जाय, और इसी विचार से मित्र आलसडॉर्फ ने बड़े ही परिश्रम से अपने संस्करण का पाठ नागरी लिपि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रजी अनुवाद कर डाला और नोट्स व अनुक्रमणिकादि भी बना कर भेज दीं। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विलम्ब हुआ, और इसी बीच जर्मनी से उनका रोमन लिपि में जर्मन भाषामय भूमिकादिसहित संस्करण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नागरी लिपि के संस्करण निकालने में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों को ग्रंथ उपलभ्य हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के क्रमबद्ध प्रकाशन में ही यथास्थान इस का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर उसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों पर से किया गया है। इनमें से पांच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद दिये गये हैं, और शेष तीन का यत्र तत्र उपयोग किया गया है, क्यों कि या तो उनके पाठ उक्त पाँच में से किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतियों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो बलात्कारगण-जैनमंदिर, कारंजा, की हैं; दो भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिटयूट, पूना, की और एक तात्यासाहिब पाटील, नांद्रणी (कोल्हापुर) के पास से प्राप्त। इनमें से कारंजा के बलात्कारगण-मंदिर की, संवत् १५७५ में लिखित प्रतिको प्रधान रूपसे साम्हने रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

४ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्त्वपूर्ण सहायता प्रभाचन्द्रकृत महापुराण-टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक को भांडारकर-इन्स्टिटयूट से प्राप्त हुई जिसमें संवत् का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तरपुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०२३ ईस्वी में, अर्थात महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उस समय मालवे में राजा भोज का राज्य था। प्रभाचन्द्र ने इस टिप्पण को 'सागरसेन सैद्धान्तिक से परिज्ञात करके तथा 'मूलटिप्पणिका' का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह मूलटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्पदंत की ही लिखी हुई हो।

५ संधियोंके प्रारंभके स्फुट पद्य

महापुराण की भिन्न भिन्न प्रतियों में कुछ संधियों के प्रारंभ में कवि के आश्रयदाता भरत की प्रशंसा के छंद पाये जाते हैं। इनमें से छह की भाषा प्राकृत और शेष सबकी

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्दिष्ट संधिमें ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रतिमें कहीं अन्यत्र, या तीसरीमें वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रक्खे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी संधि के प्रारंभ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ-नरेंद्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुत्थी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं संधि के प्रारम्भमें और जयपुर की प्रतिमें ४९ वी संधि के प्रारम्भमें, और तात्या साहिब वाली प्रतिमें कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेन्द्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पाइयलच्छी–नाम–माला' के उल्लेख परसे १०२९ संवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज ही समझमें आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पीछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म परिचय है; पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरिउ व णायकुमारचरिउ के उल्लेखों पर से भव्यात्मा भरत और उसके कुटुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के तुडिग, शुभतुंगराय और वल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्हों ने सन् ९३९ से ९६८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोट्टिगदेव सिंहासनारूढ हुए। उन्हींके राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण्ण मंत्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत कौण्डिन्य गोत्र के थे। उनके कुल में महामात्र पद परम्परागत था। पर बीच में इस कुटुम्ब को कुछ दुर्दिन भोगने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुल का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम 'अण्णय्य,' पिता का 'येयण' या 'ऐरण' तथा माता का 'देवी' था। इनके कोई भ्राता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम 'कुन्दव्वा' था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम-देवल्ल, भोगल्ल, नन्न, सोहन, गुणवर्म, दंगय्य और संतय्य थे। भरत का शरीर सुदृढ और शूरोचित था और वर्ण श्याम। वे कृष्णराजके मंत्री, सेनानायक और दान-विभाग के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वेषभूषा तथा व्यवहार बहुत सौम्य और शिष्ट था। वे सद्गुणों की खानि और विद्याप्रेमी थे। श्री और सरस्वती का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सर्वथा निर्दोष था। उनके भवन में काव्य-रचना, काव्य गायन, और काव्य-लेखन होता रहता था। वे बलि, जीमूतवाहन, दधीचि, विनयांकुर और शातवाहन जैसे महादानी थे। उनका यश सुविस्तृत था। वापी, कूप, तडाग व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुष्पदन्त को आश्रय देकर उनसे यह महान उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरने का साधन पा लिया।

७ कवि-परिचय।

कविराज पुष्पदन्त काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम केशव और माता का नाम मुग्धादेवी था। वे दोनों शिव के उपासक थे, किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुष्पदन्त का शरीर श्याम और कृश था। उनका विवाह हुआ हो ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न धन सम्पत्ति, किन्तु उनका मन बड़ा ऊंचा और विशाल था। वे पहले किसी भैरव या वीरराय नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रशंसा में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे मान्यखेट आगये, और वहाँ नगर के बाहर उपवन में ठहर गये। इन्द्रराज और अण्णइया नाम के दो नागरिकों ने उन्हे वहाँ देखा और इनसे नगर में आकर भरत से मिलने का आग्रह किया। पहले कविराज राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृदय कटु अनुभवों के कारण संसार से और धनिक समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आश्वसन दिया गया कि भरत मंत्री दूसरी ही प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे उनसे मिलने पर राजी हुए। भरत के यहां उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। उन्हीं के शुभतुंग-भवन में वे रक्खे गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महापुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का समुचित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने सिद्धार्थ शक ९५९ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि को फिर कुछ उद्वेग हुआ जिसका स्वयं सरस्वती देवीने निवारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण को क्रोधन शक ९६५ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और संतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि "इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय सब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य हैं वे पुष्पदन्त और भरत जिनको ऐसी सिद्धि मिलीं।" इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये विना नहीं रहता–

'यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्'

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा; जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह 'अंग' और चौदह 'पूर्व' में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेतांबर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थंकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौबीस तीर्थंकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रेसठ शलाका-पुरुषों अथात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने "तिसट्ठि-महा-पुरिस-गुणालंकार" नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि-लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शलाका पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहाँ कैसा मेल व बेमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुहृत् डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्हीं पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वानद्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के संशोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य-कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने विना नहीं रह सकते।

मैं उपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीनसौ रुपया खर्च हो चुका था, किन्तु पीछे इस ग्रंथमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिक्यचन्द्र-ग्रंथमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रंथमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रंथके प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिक्यचन्द्र ग्रंथमाला की ओर से मैं चवरे ग्रंथमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

१० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी, शास्त्रप्रेमी दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न रुकनेपर मुझे इस बात का दोषी बतलाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे श्रद्धेय मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विषयरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्हों ने इस सहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रंथ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हे विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्हींने ही विद्वत्संसारको दिया था।

मुझे आशा ही नहीं दृढ निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रंथ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकवि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जावेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रंथ जसहरचरिउ और णायकुमारचरिउ अलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम. ए. के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिक्यचन्द्रग्रंथमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रंथ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रंथ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती
२८-८-३७

हीरालाल जैन
सम्पादक और सहमंत्री

तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारु

णाम

महापुराणु

I

सिद्धिवहूमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु ॥
पणविवि विग्घविणासणु णिरुवमसासणु रिसहणाहु परमेसरु ॥ ध्रु० ॥

1

सुपरिक्खिय रक्खियभूयतणुं   पंचसयधणुण्णयदिव्वतणुं ।
पयडियसासयपयणयरवहं   परसमयभणियदुण्णयरवहं ।
सुहसीलगुणोहणिवासहरं   देविंदथुयं दिव्वासहरं ।
जुइणिज्जियमंदरमेहलयं   पविमुक्कहारमणिमेहलयं ।
सोहंतासोयरमियविवरं   उव्वासियबहुणारयविवरं ।
सुरणाहकिरीडपहिट्ठपयं   अइपउरपसायपहिट्ठपयं ।
णवतरणिसमप्पहभावलयं   णिरुदुस्सहदुम्मयभावलयं ।
हरिमुक्ककुसुमचित्तलियणहं   अरुहंतमणंतजसं अणहं ।

1. १. B देविंदथुवं. २. M °दुम्मह°. ३. MBP अरहंत°.

1. 1. सिद्धिरनन्तचतुष्टयप्राप्तिरिव वधूस्तस्या मनोरञ्जनश्चित्तरञ्जकः; णिरंजणु पापरहितः; णेसरु सूर्यः. 2. णिरुवमसासणु उपमातीतमतः; परमेसरु परा उत्कृष्टा मा समवसरणानन्तचतुष्टयादिलक्षणा बाह्याभ्यन्तरलक्ष्मीस्तस्या ईश्वरः. 3. *a* भूयतणुं भूतविस्तारः, पृथिव्यादिप्रपञ्चः. 4. *a* नयरवहं नगरमार्गम्; *b* दुण्णयरवहं दुर्णयाः सर्वथैकान्तप्रकाशकप्रमाणानि, तेषां रवाः प्रतिपादकशास्त्राणि तान् हन्ति निराकरोति यः तम्. 5. *b* दिव्वासहरं नग्नमुद्राकरम्, दिग्वासोधरम्. 6. *a* जुइ द्युतिः; °मंदरमेहलयं °मन्दरमेखलकम्; *b* °मणिमेहलयं °रत्नमेखलकम्. 7. *a* असोय अशोकः; °विवरं पक्षिश्रेष्ठम्; *b* °विवरं बिलम्. 8. *a* पहिट्ठपयं प्रघृष्टपादम्; *b* °पहिट्ठपयं आनन्दितलोकम्, (प्रहृष्टप्रजम्). 9. *a* °भावलयं °भामण्डलम्; *b* णिरुदुस्सहेत्यादि–णिरुदुस्सहा अतिशयेन सोढुमशक्याः प्रमाणविरुद्धत्वात्ते च ते दुर्मतभावाश्च मिथ्यागमप्रतिपादितार्थास्तेषां लयो निराकरणं यस्मात्. 10. *a* हरि इन्द्रः *b* अणहं निष्पापम्.

सीहासैणछत्तत्तयसहियं उद्धरियपरं सकिवं सहियं ।
दुंदुहिसरपूरियभुवणहरं बंधूअफुल्लसंणिहणहरं ।
पुरुपैवजिणं जियकामरणं दूरुज्झियजम्मजरामरणं ।
विरयं वरयं णियमोहरयं उज्झ्यभीमणियमोहरयं ।
पणमांमि रविं केवलकिरणं मत्तासमयं भणियं किर णं ।

घत्ता—अवरु वि पणविवि सम्मइं विणिहयदुम्मइं कोवपावविद्धंसणु ॥
जासु तित्थि मइं लद्धउ णाणसमिद्धउ णिम्मलुं सम्मइंसणु ॥ १ ॥

2

णिम्महियमाणमायामयाइं जिणसिद्धसूरिसुयैदेसयाइं ।
साहूण वि चरणंभोरुहाइं णहेंदरिसियसुरणयमुहाइं ।
कयहरिसु सरसु सुमहुरु चवंति कोमलपयाइं लीलाइ दिंति ।
गंभीर पसण्ण सुवण्णदेह कंतिल्ल कुडिल णं चंदरेह ।
सालंकारी छंदेण जंति बहुसैत्थअत्थगारव वहंति ।
चोदैहपुव्विल्ल दुवालसंगि जिणवयणविणिग्गैय सत्तभंगि ।
चउमुहमुहवासिणि सहंजोणि णीसेसहेउ सा सोहखोणि ।
दुक्खक्खयकारिणि सोक्खखाणि पणवेवि सरासइ दिव्ववाणि ।
धम्माणुसासणाणंदभरिउ पुणु कहमि णिरहु णाहेयचरिउ ।

४. MBP सिंहासण° ५. MB पुरएव°. ६. T notes पणयामिरविं as *p* and explains it as पणयामीति पाठे पणयो मोहः स एव यामी नाम रात्रिस्तस्या रविं स्फेटकम्. ७. M णिम्मल°.

2. १. M °जिणदेवयाइं, but सुयदेवयाइं in the margin. २. MBG णहे दरिसिय°. ३. M बहुअत्थगारवं संवहंति, but adds सत्थ in margin; P बहुअत्थगंथगारव वहंति. ४. M चोद्दह°; P [illegible]°; T चोद्दस°. ५. T मुणि° ६. M °विणग्गय°. ७. P सहत्थजोणि.

11. *b* उद्धरियपरं उन्मूलितमिथ्यावादिनं उद्धृतभव्यं वा. 12. *b* कारक्तनखमित्यर्थः. 13. *a* जियकामरणं जितकामसंग्रामम्. 14. *a* विरयं विरतं संयतम्; वरयं वरदम्; णियमोहरयं संयमोत्परतम्; *b* उज्झय° उद्धतनिजमोहरजसम्. 15. *a* मत्तासमयं परिग्रहसमकम्; मात्रा परिग्रहः तामस्यन्ति निराकुर्वन्ति ये ते मात्रासाः मुनयः तेषां मतम् अभीष्टम्; अथवा मत्ताना गर्वितानामा समन्तात् शमकं उपशमकम्; अन्यत्र मात्रासमकं छन्दः 16. सम्मइं वर्धमानम्.

2. 1. *b* °सुयदेसयाइं °श्रुतपाठकानामुपाध्यायानाम्. 2. *a* पञ्चपरमेष्ठिनामित्यर्थः; *b* °णय° °नत°. 4. *b* कुडिल कुटिला स्त्री, पक्षे वक्रोक्तिः. 7. *b* णीसेसहेउ° निःश्रेयसयुक्तिः; सा लक्ष्मीः; सोहखोणि, शोभाक्षोणिः, पक्षे, सा सोहखोणि सत्यौघक्षोणिः. 9. *a* धम्माणुसासणं धर्मप्रतिपादनम्; *b* णिरहु निष्पापम्.

घत्ता—अेण सुएण सुहोहइं तिहुयर्णखोहइं होंति चारुकल्लाणइं ॥
उप्पज्जंति पसत्थइं मुणियपयत्थइं मणुयहो पंच वि णाणइं ॥ २ ॥

3

तं कहमि पुराणु पसिद्धणामु सिद्धत्थवरिसि भुवणाहिरामु ।
उब्बद्ध[1]जूडु भूभंगभीसु तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।
भुवणेक्करामु रायाहिराउ जहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।
तं दीणे[2]दिण्णधणकणयपयरु महि परिभमंतु मे[3]पाडिणयरु ।
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु ।
दुग्गमदीहरपंथेण रीणु णवयंदु जेम देहेण खीणु ।
तरुकुसुमरेणुरंजियसमीरि मा[4]यंदगोंछगोंदलियकीरि ।
णंदणवणि किर वीसमइ जाम तहिं बिण्णि पुरिस संपत्त ताम ।
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्व भो खंड गलियपावावलेव ।
परिभमिरभमररवगुमगुमंति किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति ।
करिसरबहिरियदिक्चक्कवालि पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि ।
तं सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु वरि खज्जे[5]इ गिरिकंदरि कसेरु ।
णउ दुज्ज[6]णभउँहावंकियाइं दीसंतु कलुसभावंकियाइं ।

घत्ता—वर णरवरु धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥
खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे ॥ ३ ॥

८. P तिहुयणु खोहइं.

3. १. MP ओबद्ध° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्; B नबद्धजूड. २. M बंदीण°. ३. MP मेवाडि°. B मेवाड°. ४ K मायंदगोंदिगोंदालिय°. ५. MBP खज्जउ. ६ M हउँहावंकियाइं; BP भउहावंकियाइ.

10. सुहोहइं सौख्यसमूहाः. 11 पयत्थ पदार्थ.

3. 1. *b* सिद्धत्थवरिसि सिद्धार्थनामसंवत्सरे. 2. *a* उब्बद्धजूडु उद्बद्धजूटम्; *b* चोडहो चोडदेशनृपस्य. 3. *b* तुडिगु कृष्णराजः. 4. *b* यत्र मेलपाटीयनगरे. 9. *a* तेहिं ताभ्याम्. 11. *a* दिक्चक्कवालि दिशामण्डले; करिसर° गजस्वर°. 12. *a* अहिमाणमेरु पुष्पदन्तस्य बिरुदमेतत्. 14. धवलच्छिहे उज्ज्वललोचनायाः; सोणिमुह° कटिच्छिद्र°. 15 कुच्छियपहुवयणइं कुत्सितराजवदनानि; भिउडिय° भ्रुकुटित°.

4

खमराणिलउड्डावियगुणाइ आहिंसेयधोयसुयणत्तणाइ ।
अविवेयइ दप्पुत्तालियाइ मोहंधइ मारणसीलियाइ ।
सत्तंगरज्जभरभारियाइ पिउपुत्तरमणरसयारियाइ ।
विससहजम्मइ जडरत्तियाइ किं लच्छिइ विउसविरत्तियाइ ।
संपइ जणु णीरसु णिव्विसेसु गुणवंतउ जहिं सुरगुरु वि वेसु[1] ।
तहिं अम्हह लइ काणणु जि सरणु अहिमाणें सहुं वरि होउ मरणु ।
अम्मइयइंदराएहिं तेहिं आयेण्णिवि[2] तं पहसियमुहेहिं ।
गुरुविणयपणयपणवियसिरेहिं पडिवयणु दिण्णु णायरणरेहिं ।
घत्ता—जणमणतिमिरोसारण[3] मयतरुवारण णियकुलगयणदिवायर ॥
भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर ॥ ४ ॥

5

बंभंडमंडवारूढकित्ति अणवरयरइयजिणणाहभत्ति ।
सुहतुंगदेवकमकमलभसलु णीसेसकलाविण्णाणकुसलु ।
पाययकइकव्वरसावउद्धु[1] संपीयसरासइसुरहिदुद्धु ।
कमलच्छु अमच्छरु सच्चसंधु रणभरधुरधरणु[2]ग्घुट्ठखंधु ।
सविलासविलासिणिहिययथेणु[3] सुपसिद्धमहाकइकामधेणु ।
काणीणदीणपरिपूरियासु जसपसरपसाहियदसदिसासु ।

4. १. MBP देसु. २. MBP आयण्णिय, G आयण्णवि. ३. MB तिउरोसारण.

5. १. MBPK °वलुध्दु, but G °रसावउद्धु and marginal gloss रसावबुद्धः, T also रसाव-उध्दु and explains it as परिज्ञातरसः. २. MBP °धरणुग्घिट्ठखंधु ३. MP °धेणु.

4. 2. *a* दप्पुत्तालियाइ दर्पोद्वृत्तया, दर्पोत्तालया. 3. *a* °भारिया °भृता; *b* पिउपुत्त° पितृ-पुत्रभर्तृविषदायिकया, अथवा, पितृपुत्राभ्यां द्वाभ्यामपि क्रीडनासक्तया. 4. *a* विससहजम्मइ कालकूट-सहजन्मना; *b* विउसविरत्तियाए विद्वज्जनविरक्तया 5. *a* णिव्विसेसु अज्ञानभेदः, गुणागुणविचाररहितः; *b* वेसु द्वेष्यः. 7. *a* अम्मइय-इंदरायनामानौ द्वौ पुरुषौ. 8. *b* णायरणरेहिं चतुरनराभ्याम्. 10. तिमिरोसारण अज्ञाननिराकारकः.

5. 2. *a* सुहतुंगदेव कृष्णराजः, तत्प्रतिष्ठापितो जिनश्च. 4. *a* सच्चसंधु सत्यप्रतिज्ञः. 5. *a* °थेणु स्तेनः. 6. *a* काणीण° अकिंचित्कर°; °पसाहिय° °मण्डित°; °दिसासु °दिङ्मुखः.

परमणिपरंमुहु सुद्धसीलु उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु ।
गुरुयणपयपणवियउत्तमंगु [४]सिरिदेवियंबगब्भुब्भवंगु ।
अण्णइयतणयतणुरुहु पसत्थु हत्थि व दाणोल्लियदीहहत्थु ।
महमत्तवंसधयवडु गहीरु लक्खणलक्खंकियवरसरीरु ।
दुव्वसणसीहसंघायसरहु ण वियाणहि किं णामेण भरहु ।
घत्ता—[५]आउ जाहु तहो मंदिरु णयणाणंदिरु सुकइकइत्तणु जाणइ ॥
सो गुणगणतत्तिल्लउ[६] तिहुयणि भल्लउ णिच्छउ पइं संमाणइ ॥ ५ ॥

6

जो विहिणा णिम्मिउ कव्वपिंडु तं णिसुणिवि सो संचलिउ खंडु ।
आवंतु दिट्ठु भरहेण केम वाईसरिसरिकल्लोलु जेम ।
पुणु तासु तेण विरइउ पहाणु घरु आयहो अब्भागयविहाणु ।
संभासणु पियवयणेहिं रम्मु णिम्मुक्कडंभु णं परमधम्मु ।
तुहुं आयउ णं गुणमणिणिहाणु तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु ।
पुणु एवं[३] भणेप्पिणु मणहराइं पइं[४]रीणझीणतणुसुहयराइं ।
वरण्हाणविलेवणभूसणाइं दिण्णइं[५] देवंगइं णिवसणाइं ।
अब्भंतरसालइं भोयणाइं गलियाइं जाम कइवयदिणाइं ।
देवीसुएण कइ भणिउ ताम भो पुप्फयंत ससिलिहियणाम ।
णियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु गिरिधीरु वीरु[६] भइरवणरिंदु ।
पइं मण्णिउ वण्णिउ वीरराउ उप्पण्णउ जो मिच्छत्तराउ[७] ।

४. P सिरिअम्बदेवि° B सिरिदेविअब्व°. ५. M आउज्जाहुं. ६. P °भत्तिल्लउ though marginal gloss °चिन्तकः.

6. १. B omits this line. २. B omits *a* of this line. ३. M पुणु एण; P पुणु एम. ४. MBP पइखीणरीणतणु°. ५. B दिण्णाइं देवगइणिवसणाइं. ६. B वीरभइरव. ७. MBPK °भाउ, but GT मिच्छत्तराउ and gloss °रागः.

7. *b* उद्धरणलीलु उद्धरणस्वभावः. 9. *a* अब्बैयाकस्य तनयः ऐरण., ऐरणस्य पुत्रो भरतः. 10. *a* °धयवडु महामन्त्रिवंशध्वजपटः. 11. *a* सरहु अष्टापदः. 13. तत्तिल्लउ चिन्तकः; णिच्छउ निश्चयेन.

6. 3. *a* पहाणु मुख्यः. 4. *b* परमधम्मु जिनधर्मः. 9. *a* देवीसुएण भरतेन. 10. *b* भइरवणरिंदु वीरभैरवः अन्यः कश्चिद्दुष्टमहाराजो वर्तते, कथामकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति; P वीरभैरवः कश्चिन्मिथ्यादृष्टी राजा. 11. *a* वीरराउ शूद्रकः.

पच्छित्तु तासु जइ करहि अज्जु ता घडइ तुज्झु परलोयकज्जु ।
तुहुं देउ को वि भव्वयणबंधु पुरुएवचरियभारस्स खंधु ।
अब्भत्थिओ सि दे देहि तेम णिव्विग्धे लहु णिव्वहइ जेम ।
घत्ता—अइललियए गंभीरए सालंकारए वायए ता किं किज्जइ ॥
जइ कुसुमसरवियारउ अरुहु भडारउ सब्भावें ण थुणिज्जइ ॥ ६ ॥

7

सियदंतपंतिधवलीकयासु ता जंपइ वरवायाविलासु ।
भो देवीणंदण जयसिरीह किं किज्जइ कव्वु सुपुरिससीह ।
गोवज्जिएहिं णं घणदिणेहिं सुरवरचावेहि व णिग्गुणेहिं ।
मइलियचित्तहिं णं जर[1]घरेहिं [2]छिद्दण्णेसिहिं णं विसहरेहिं ।
जडवाइएहिं णं गयरसेहिं दोसायरेहिं णं रक्खसेहिं ।
आचक्खियपरपुट्ठीपलेहिं वरकइ णिंदिज्जइ हयखलेहिं ।
जो बालवुड्ढसंतोसहेउ रामाहिरामु लक्खणसमेउ ।
जो सुम्मइ कइवइ विहियसेउ तासु वि दुज्जणु किं परि मे होउ ।
घत्ता—णउ महु बुद्धिपरिग्गहु णउ सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ बलु ॥
भणु किह करमि कइत्तणु ण लहमि कित्तणु जगु जि पिसुणसयसंकुलु ॥७॥

8

तं णिसुणिवि भरहें वुत्तु ताव भो कइकुलतिलय विमुक्कगाव ।
सिमिसिमिसिमंतकिमिभरियरंधु मिल्लेवि कलेवरु कुणिमगंधु ।

---

८. M पुरएव°. ९. M जय.

7. १. T जरहरेहिं. २. PG ण.

---

13. पुरुएव° आदिनाथ°.

7. 1. *a* धवलीकयासु धवलीकृतास्यः. 2. *a* जयसिरीह जयश्रीलक्ष्मीवाञ्छकः. 3. *a* गोवज्जिएहिं वाणीरहितैः, पक्षे किरणरहितैः. 6. *a* आचक्खिय भक्षित. 7. *b* लक्खणसमेउ व्याकरणसमेतः, पक्षे, लक्ष्मणसमेतः. 8. *a* सुम्मइ श्रूयते; कइवइ विहियसेउ कपिपतिर्हनुमान् तेन कृतः सेतुः, पक्षे, प्रवरसेनो राजा–स प्रवरसेनो जैनः—तेन कृतं सेतुबन्धनाम काव्यं रामायणम्.

8. 1. *b* विमुक्कगाव विमुक्तगर्व. 2. *b* कुणिम कुथित.

ववगयविवेउ मसिकसणकाउ सुंदरपयपंति किं रमइ काउ ।
णिक्कारणु दारुणु बद्धरोसु दुज्जणु ससहावें लेइ दोसु ।
हयतिमिरणियरु वरकरणिहाणु ण सुहाइ उलूयहो उइउ भाणु ।
जइ ता किं सो मंडियसराहं णउ रुच्चइ वियसियसिरिहराहं ।
को गणइ पिसुणु अविसहियतेउ भुक्कउ छणयंदहु सारमेउ ।
जिणचरणकमलभत्तिल्लएण ता जंपिउ कव्वपिसल्लएण ।

घत्ता—णउ हउं होमि वियक्खणु ण मुणमि लक्खणु छंदु देसि ण वियाणमि ॥
जा विरइय जयधंदहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समाणमि ॥ ८ ॥

9

अकलंककविलकणयरमयाइं दियसुगयपुरंदरणयसयाइं ।
दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजलजलाइं अइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारवि भासु वासु कोहलु कोमलगिरु कालियासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।

8. १. MBP सुहाय. २. P उयउ. ३. P छणइंदहु. ४. P पयासमि but marginal gloss कथं समानयामि वर्णयामि.

9. १. B दत्तिल्ल°. २. MBP पायंजलि°. ३. M भारहिं; B भारहभासु. ४. MBP कालिदासु. ५. MP णालोयउ.

8. 3 *a* ववगयविवेउ नष्टविवेकः; °कसणकाउ °कृष्णशरीरः; *b* काउ काकः. 4 *b* ससहावें स्वस्वभावेन; लेइ गृह्णाति. 6 *a* मंडियसराहं मण्डितसरसाम्; *b* वियसियसिरिहराहं विकसितकमलानाम्. 7 *b* छणयंदहु पूर्णिमाचन्द्रस्य; सारमेउ कुक्कुरः. 8 *a* °भत्तिल्लएण °भक्तियुक्तेन; *b* कव्वपिसल्लएण काव्यराक्षसेन पुष्पदन्तेन. 9 लक्खणु व्याकरणम्; देसि देशी भाषा. 10 विरइय विरचिता; जयधंदहिं जगद्वन्द्यैः; समाणमि वर्णयामि.

9. 1 *a* अकलंक न्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकारः; कणयर वैशेषिकदर्शने मूलकारः; *b* दिय वेदपाठकः; सुगय बौद्धः; पुरंदर चार्वाकमते ग्रन्थकारः; णयसयाइं युक्तयोऽभिप्राया वा. 2. *a* दत्तिलविसाहिलुद्धारियाइं दत्तिलविसाहिलकृतानि संगीतशास्त्राणि; *b* भरहवियारियाइं भरतमुनिकृतं नाट्यशास्त्रम्. 3 *a* पायंजल पाणिनिव्याकरणभाष्यम्; *b* अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टिपुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि. 4 *a* भावाहिउ भावाधिकः अर्थगौरववान्; वासु व्यासो महाभारतकारः; *b* कोहलु कूष्माण्डः कश्चित्कविः 5. *a* चउमुहु कश्चित्कविः; सयंभु पद्धडीबद्धरामायणकर्ता आपलीसंघीयः.

णउ धाउ ण लिंगु ण गणु[6] समासु णउ कम्मु[7] करणु किरियाविसेसु[8] ।
णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति णउ जाणिय मइं एक्क वि विहत्ति ।
णउ बुज्झिउ आयमु[9] सद्दधामु सिद्धंतु धवलु[10] जयधवलु णामु ।
पडु रुद्दडु जडणिण्णासयारु परियच्छिउ णालंकारसारु[11] ।
पिंगलपत्थारु समुद्दि पडिउ ण कयाइ[12] वि महारइ चित्ति चडिउ ।
जसइंधु सिंधु कल्लोलसित्तु ण कलाकोसलि हियवउ णिहित्तु ।
हउं बप्प णिरक्खर कुक्खिमुक्खु णरवेसें हिंडमि चम्मरुक्खु ।
अइदुग्गमु होइ महापुराणु कुडएण मवइ को जलणिहाणु ।
अमरासुरगुरुयणमणहरेहिं जं आसि कियउ[13] मुणिगणहरेहिं ।
तं हउं मि कहमि भत्तीभरेण किं णहि ण भमिज्जइ महुयरेण ।
पडु विणउ पयासिउ सज्जणाहं मुहि मसिकुंचउ[14] कउ[15] दुज्जणाहं ।

घत्ता—घरे घरे भमिउ[16] असारउ दुण्णयगारउ विवरोक्खए किं अक्खइ ॥
लइ[17] मइं सो मोक्कलिउ[18] खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ ॥ ९ ॥

10

चारणावासकेलाससेलासिओ किंणरीवेणुवीणाझुणीतोसिओ ।
सामवण्णो सउण्णो पसण्णो सुहो आइदेवाण देवाहिभत्तो बुहो ।
गोम्मुहो[1] संमुहो होउ जक्खो महं चिंतयंतस्स पयं अमेयं कहं ।
विग्घविद्दावणी चारुचक्केसरी सत्थसारंभकल्लोलमालासरी ।
वेरिणिद्दारिणी[2] सुंभणी थंभणी आसि जम्मंतरे होंतिया बंभणी ।

६. BP गुण. ७. M कम्म. ८. MBP किरियाविसेसु. ९. M आयम°. १०. MBP धवलजयधवलणामु. ११. M णालंकारु सारु. १२. B कयाइ. १३. K कहिउ. १४. MB कुच्चउ. १५. M किउ. १६. G भमइ. १७. MB लइ. १८. MB. मोकल्लिउ.

10. १. MBP गोमुहो. २. MB °णिद्दारणी; P °णिद्दारणी.

7 *a* पयसमत्ति पदसमाप्तिः पदखण्डना. 9 *a* पडु पटुश्चतुरः; जडणिण्णासयारु जडत्वनाशकः. 12 *a* कुक्खिमुक्खु गर्भमूर्खः. 13 *b* कुडएण कुडवेन घटेन. 17 दुण्णयगारउ अन्यायकारकः; विवरोक्खए विपरोक्षे 18 दुब्बोल्लिउ दुर्वचनः.

10. 1 *a* चारणावास° मुनीश्वरवास°; °सेलासिओ °शैलाश्रितः; *b* झुणी ध्वनिः. 2 *a* सउण्णो सपुण्यः; सुहो शुभः; *b* अमेयं कहं महतीं कथाम्; एतां महतीं कथां चिन्तयतो मम गोमुखयक्षः संमुखो भवतु. 4 *b* सत्थसारंभ° शास्त्रमेव साराम्भः सुष्ठु जलम्. 5 *a* सुंभणी हिंसिका.

साहुवाणेण संजाइया जक्खिणी णाणसम्मत्तवंती गुणावेक्खिणी ।
उज्जयंतत्थलीकाणणावासिणी सव्वभासासमूहं समुब्भासिणी ।
सुंदरे मंदरे कंदरे कीलिरी तुंगणग्गोहपारोहहिंदोलिरी ।
पिक्कमायंदगोच्छेण डिंभं णियं संथवंती हसंती चवंती पियं ।
खुद्दवाईविवेयावहा वाइणी अंबिया गोरि गंधारि सिद्धाइणी ।
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई णायचूडामणी देवि पोमावई ।
कव्ववित्थारदुत्तारमग्गो सही ठाउ मज्झं मुहे देवया भारही ।
होउ बुद्धी महासत्थसामग्गिणी परिसो छंदओ भण्णए सग्गिणी ।

घत्ता–मइं णिम्मियहो उयारहो सद्दगहीरहो जो णरु भसइ णिबंधहो ॥
जणदुव्वयणहिं दड्ढहो तहो दुवियड्ढहो दुज्जसु होउ मयंधहो ॥ १० ॥

11

अहवा हउं णिग्घिणु पावयम्मु ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।
मिच्छाहिरामरंजियविवेउ ण वियाणमि जिणवरवयणभेउ ।
उग्गयरसभावणिरंतराइं अलियाइं जि कहमि कहंतराइं ।
लइ हत्थें झंपमि णहु सभाणु लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।
लइ तुच्छबुद्धि णिण्णट्ठणाणु लइ अक्खमि पउ महापुराणु ।
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण लइ कहमि कव्वु किं वित्थरेण ।
करिमयरमीणजलयरखमालि चललवणजलहिवलयंतरालि ।

३. P कीलिणी. ४. P °हिंदोलिणी. ५. MBP °गोंछेण. ६. B omits this foot. ७. BP उवयारहो and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा. ८. K होइ.

11. १. M पावकम्मु. २. MB मिच्छाहिमाण°; P मिच्छाहिमाण but gloss मिथ्याभिराम°. ३. M उग्गव° and gloss उत्कट. ४ MBP अइतुच्छ°. ५. MBP करमि.

7 *a* उज्जयंत ऊर्जयद्गिरि, गिरिनगरपर्वतः 8 *b* णग्गोह वटवृक्षः. 9 *a* खुद्दवाई° क्षुद्रवादिविवेकोपघातिका. 11 *a* पोमवत्ताहवत्ता पद्मपत्राभमुखी; *b* णायचूडामणी त्रिफणसर्पयुक्तमस्तका. 12 *a* सही सखी सहाया. 13 *a* महासत्थसामग्गिणी महाशास्त्रसामग्रीसहिता. 14 भसइ निन्दति; णिबंधहो महापुराणस्य. 15 दुवियड्ढहो दुर्विदग्धस्य; मयंधहो मदान्धस्य.

11. 2 *a* मिच्छाहिराम° मिथ्या असत्यं यच्चित्रकथादिकं तत्राभिरामः अत्यासक्तिस्तया रञ्जितो विवेको यस्य सः; *b* °भेउ °भेदो विशेषः. 3 *a* उग्गय उत्पन्नः. 4 *a* णहु सभाणु भानुयुक्तं नभः; *b* जलणिहाणु समुद्रः. 7 *a* °खमालि °कोलाहले.

दोवंवसुरपयडियपईवि जंबूतरुलंछणि जंबुदीवि ।
आरंभोणिहिसामीवसंगि सुरसिहरिहि संठिउ दाहिणंगि ।
सरिगिरिदरितरुपुरवरविचित्तु एत्थत्थि पसिद्धउ भरहखेत्तु ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ मगहदेसु जं वण्णहुं सक्कइ णेय सेसु ।
सुहि घुलइ जासु जीहासहासु जसु णाणि णत्थि दोसावयासु ।

घत्ता—सीमारामासोमहिं पविउलगामहिं गज्जंतहिं धवलोहहिं ॥
सोहइ हलहरसत्थहिं दाणसमत्थहिं णिच्चं चिय णिल्लोहहिं ॥ ११ ॥

12

अंकुरियइं णवपल्लवघणाइं कुसुमियफलियइं णंदणवणाइं ।
जहिं कोइलु हिंडइ कसणपिंडु वणलच्छिहे णं कज्जलकरंडु ।
जहिं उड्डिय भमरावलि विहाइ पवरिंदणीलमेहलिय णाइ ।
ओयरिय सरोवरि हंसपंति चल धवल णाइं सप्पुरिसकित्ति ।
जहिं सलिलइं मारुयपेल्लियाइं रविसोसभएण व हल्लियाइं ।
जहिं कमलहं लच्छिइ सहुं सणेहु सहुं ससहरेण वड्डउ विरोहु ।
किर दो वि ताइं महुणुब्भवाइं जाणंति ण तं जडसंभवाइं ।
जहिं उच्छुवणइं रसगब्भिणाइं णावइ कव्वइं सुकइहिं तणाइं ।
जुज्झंतमहिसवसहुच्छवाइं मंथामंथियमंथणिरवाइं ।
धवलुद्धपुच्छवच्छाउलाइं कीलियगोवालइं गोउलाइं ।
जहिं चउरंगुल कोमलतणाइं घणकणकणिसालइं करिसणाइं ।

६. M पुरवरु. ७. B मगहएसु. ८. M घुलय. ९. MB °रामहिं, P °रामारम्माहिं.

12 १ M अवयरइ; BPT उवयरइ. २ MBP कमलहुं सहुं. ३ P °गब्भिराइं. ४ M धवलुद्धपुच्छ°.

---

9 *b* सुरसिहरि मेरुः 11 *b* वण्णहुं वर्णयितुम्; सेसु धरणेन्द्रः (शेषः). 12 *b* दोसावयासु दोषावकाशः. 13 °सामहिं °श्यामले; धवलोहहिं बलीवर्दसमूहैः. 14. हलहरसत्थहिं कर्षकसमूहैः; णिल्लोहहिं निर्लोभैर्निर्मितलोहैश्च.

12. 2 *a* कोइलु कोकिलः; कसणपिंडु कृष्णवर्णः कृष्णशरीरः. 3 *a* विहाइ विभाति; *b* °मेहलिय °मेखला. 4 *a* ओयरिय अवतीर्णा; 5 *a* मारुयपेल्लियाइं वायुना प्रेरितानि, *b* हल्लियाइं कम्पितानि. 7 *a* महुणुब्भवाइं समुद्रमथनोद्भूतौ; *b* जडसंभवाइं जलजन्मानौ अज्ञानत्वाच्च जानन्ति. 8 *a* रस° इक्षुरसः शृङ्गारादिश्च. 9 *b* °मन्थणि° गोपी. 11 *b* कणिसालइं कणिसयुक्तानि.

घत्ता–तहिं छुहधवलियमंदिरु णयणाणंदिरु णयरु रायगिहु रिद्धउ ॥
कुलमहिहरथणहारिए वसुमइणारिए भूसणु णं आइद्धउ ॥ १२ ॥

13

संकेयागयविरहीयणाइं सासोयपवड्ढियकंचणाइं ।
बहुलोयदिण्णणाणाफलाइं णावइ कुलाइं धम्मुज्जलाइं ।
जहिं महुगंडूसहिं सिंचियाइं विंभरियाहरणहिं अंचियाइं ।
सीमंतिणिपयपोमाहयाइं वियसंतविडवबहुभंगयाइं ।
पियमाणियसुहयाणासणाइं जहिं संदरिसियबाणासणाइं ।
पडिखलियसूरभावियरणाइं उज्जाणइं णं भावियरणाइं ।
उक्कलियालइं णवजोव्वणाइं णिरु सच्छइं णं सज्जणमणाइं ।
जहिं सीयलाइं झलमाणियाइं परकज्जसमाणइं पाणियाइं ।
जहिं जणलुंचणु कंटयकरालु जलि णलिणें लिहक्कावियउ णालु ।
बाहिरि णिहियउ वियसंतु कोसु भणु को व ण ढंकइ गुणहिं दोसु ।
जहिं भमरु तहिं जि संठिउ सुहाइ संगहु सिरिणयणंजणहु णाइं ।

घत्ता—कुसुमरेणु जहिं मिलियउ पवणुल्ललियउ कणयवण्णु णहु भावइ ॥
दिणयरचूडामणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसंति but gloss विकसित. २ M उक्कलिवालइं. ३ PK जणुलुंचणु. ४ M B P उद्धुल्ललियउ and gloss in P उच्छलित.

12 छु ह सुधाचूर्णम्. 13 कु ल म हि ह र थ ण हा रि ए कुलपर्वता एव स्तनाः तान् धरति; आ इ द्ध उं गृहीतम्.

13. 1 *a* संकेएत्यादि–संकेतेनागता विरहिजना येषूद्यानेषु, कुलपक्षे संकेतेन नागता विरहिजना येषु; *b* सासोएत्यादि–वनपक्षे, अशोकवृक्षैः सह प्रवर्धिता काञ्चनवृक्षाः चम्पकवृक्षा येषु; अन्यत्र, अशोकैः हर्षैः सह प्रवर्धितानि काञ्चनानि सुवर्णानि यत्र. 3 *a* म हु गं डू स हिं मद्यचुलुकैः; *b* विं भ रि य विस्मृतानि आभरणानि वा. 4 *a* °प य पो मा ह या इं °पदपद्माहतानि; *b* वि ड व विटपाः शाखाः, अन्यत्र वि ड व विटा इव. 5 *a* पियेत्यादि–वनपक्षे, पिकानामभिमताः सुभगाः आणाशब्दास्तेषामसनं प्रचरणं येषु; युद्धपक्षे, प्रियाणां मानिताः अङ्गीकृताः सुभगानामाज्ञास्वना आदेशशब्दाः 'संग्रामं जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादयः येषु. 6 *a* पडिखलियेत्यादि-वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविवरणं यत्र; युद्धपक्षे, प्रतिस्खलितं शूराणां सुभटानां भा वि य र णं प्रतापप्रसरणं यत्र; *b* भा वि य र णा इं भावितं परिकलितं रणं यैः पुरुषैः. 7 *a* उ क्क लि या ल इं कल्लोलमालाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि. 8 *b* परकज्जेत्यादि–परकार्ये सति जनाः शीतलाः, स्वकार्ये उत्तापकाः (?). 9 *b* लिह क्का वि य उ गोपितम्. 13 प रि हि उ परिहितः.

14

जहिं कीलागिरिसिहरंतरेसु कोमलदलवेल्लिहरंतरेसु ।
सिक्खंति पक्खि दरदावियाइं विब्भमणियमम्मणुल्लावियाइं ।
जहिं पिक्कसालिछेत्तें घणेण छज्जइ महि णं उप्परियणेण ।
पंगुत्तें दीहें पीयलेण णिवडंतरिंछपल्लवचलेण ।
जहिं संचरंति बहुगोहणाइं जव कंगु मुग्ग ण हु पुणु तणाइं ।
गोवालबाल जहिं रसु पियंति थलसररुहसेज्जायलि सुयंति ।
मायंदकुसुममंजरि सुएण ह्यचंचुएण कयमण्णुएण ।
जहिं समयल सोहइ वाहियालि वाहणपयहय वित्थरइ धूलि ।
हरि भामिज्जंति कसासणेहिं अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं ।
णिज्जंति णाय कण्णारएहिं णाय व्व णायकण्णारएहिं ।
रुज्झंति गयासा ईरिएहिं सीस व्व गयासाईरिएहिं ।
आसयर दिंति सिक्खावयाइं णं मुणिवर गुणसिक्खावयाइं ।
कप्पूरविमीसु पवासिएहिं जहिं पिज्जइ सलिलु पवासिएहिं ।
घत्ता—ससिपहपायारहिं गोउरदारहिं जिणवरभवणसहासहिं ॥
मढदेउलहिं विहारहिं घरवित्थारहिं वेसावासविलासहिं ॥ १४ ॥

15

जं सोहइ जहिं अविहंडियाइं गयणं व केउसयमंडियाइं ।
सिरि[2] णिहियकणयकलसइं घराइं णावइ अहिसित्तजिणेसराइं ।

14. १ MP गाईहणाइं. २ MBP णिणाइं. ३ MBP महु; gloss in M मिष्टरसम् but in P इक्षुरसम्. ४ MBPK कुसासणेहिं but gloss in K तर्जनकेन. ५ MBP जलपरिहापायारहिं.

15. १ MBP गयणयलि. २ M सिरणिहिय°.

---

14. 1 *a* कीलागिरि° क्रीडापर्वत°; *b* वेल्लिहरंतरेषु वल्लीगृहान्तरेषु. 2 *a* दरदावियाइं ईषद्दर्शितानि; *b* °भणिय° रतिकूजितं विकासितकामोद्रेकवचनम्. 3 *b* छज्जइ छाद्यते; उप्परियणेण उपरितनेन वस्त्रेण. 4 *a* पंगुत्तें पंगुरणेन, *b* रिंछ° शुक°. 6 *a* रसु इक्षुरसः; *b* थलसररुह° स्थलकमल°. 7 *a* सुएण शुकेन; *b* कयमण्णुएण कृतमन्युना, भ्रमरैः सह संगः कस्मात्कृत इति कोपेन. 8 *a* वाहियाली वाह्याली राजमार्गः; *b* वाहण° अश्वादि°. 9 *a* हरि अश्वाः; कसासणेहिं तर्जनकेन. 10 *a* णाय नागा हस्तिनः; *b* णाय नागाः सर्पाः. 11 *a* गयासा गजा अश्वाश्च. आईरिएहिं आरोहकैः; *b* गयासाईरिएहिं गताशा आचार्यास्तेषां वचनैः. 13 *a* °विमीसु °विमिश्रम; पवासिएहिं पथिकैः, *b* पवासिएहिं प्रपाश्रितैः 14 ससिपहपायारहिं चन्द्रप्रभावत् प्राकारैः.

15. 1 *a* अविहडियाइं निरन्तराणि, अविच्छिन्नानि; *b* केउ केतुर्महो ध्वजा च, असंख्यातद्वीपापेक्षया केतुशतानि कथ्यन्ते. 2 *b* अहिसित्तजिणेसराइं अभिषिक्तो जिनेश्वरो यैस्ते, तेषां मस्तकेऽभिषेकार्थं कलशाः सन्ति.

अवियाणियकरदप्पणविसेसि माणिक्कखइयभित्तीपएसि ।
दीसइ सबिंबु महुमत्तियाहिं मण्णिवि सवत्ति हम्मइ तियाहिं ।
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु णिद्धाडिउ सासाणिलि घुलंतु ।
अंगणवावीसयदलहु जाइ जलकीलिरबालावयणि ठाइ ।
संजणियबहलमयरंदरंगु जहिं सररुहु संबोहइ पयंगु ।
तं चेय खुडइ मत्तउ विहंगु सिरिहरहो असुंदरु दुट्ठसंगु ।

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं भल्लउ णयरु णवल्लउ ससिरविअंतविहूसिउ ॥
उवरिविलंबियतरणिहे सग्गें धरणिहे णावइ पाहुडु पेसिउ ॥ १५ ॥

16

जहिं मणहरु सोहइ हट्टमग्गु बहुसंथउ णं जडचट्टवग्गु ।
जहिं णेहहो भरिउ विहाइ माणु पूरिउ पत्थेण कणेहिं दोणु ।
कामिणिकमवियलियकुंकुमेण णिल्हसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।
कणिरणियसुकिंकिणिणीसणेहिं गुप्पइ णिवडंतहिं भूसणेहिं ।
खुप्पइ गयमयहयफेणपंकि तंबोलुग्गालइ जणियसंकि ।
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ णं अमरविमाणु णहाउ पडिउ ।
जहिं धूवधूमकयमणवियार जलहरभंतिएं णच्चंति मोर ।
जहिं विजयवडहदुंदुहिसरेहिं सुव्वइ णं किं पि णारीणरेहिं ।
णवदिणयरकरतंबिरइ गोसि विरिंथिण्णइ जहिं पंगणपएसि ।

१ M °रविअंतिं विहूसिउ.

16. P पत्थेहिं. २ MBP कणिराणियकिंकिणी° ३ P सुम्मइ.

---

4 *a* सबिंबु स्वप्रतिबिम्बम्; *b* सवत्ति सपत्नी; तियाहिं स्त्रीभिः. 5 *a* अलयावलि कुरुलकेशपंक्तिः; *b* सासाणिलि मुखश्वासानिले. 6 *b* पयंगु पतङ्गः सूर्यः. 8 *a* विहंगु हंसः. *b* सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपतेः पुरुषस्य दुष्टसंगोऽतीव दुःखदः. 9. णवल्लउ अभिनवमपूर्वम्; ससिरविअंतविहूसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणिविभूषितम्. 10. तरणि सूर्यः; पाहुडु प्राभृतम्.

16. I *b* बहुसंथउ बहु रत्नवस्त्रादिकं तेन संस्तृतः; जडचट्टवग्गु मूर्खशिष्यवर्गः. 2 *b* पत्थेण प्रस्थेन, पक्षे पार्थेन बाणेन कृत्वा पूरितो द्रोणाचार्यः. 3 *b* णिल्हसइ स्खलति; जंतु गच्छन्. 4 *b* गुप्पइ पतति. 5 *a* खुप्पइ स्खलति. 6 *a* राउलु राजगृहम्; रेहइ शोभते. 7 *a* °कयमणवियार °कृतमनोविकाराः °कृतसंदेहाः मयूराः 8 *a* विजयवडह° विजयपटह°. 9 *a* गोसि प्रभाते.

घत्ता–कंदुउ जयसिरिसारहिं रायकुमारहिं चलचोवाणहिं ताडिउ ॥
अणियअणाणुरायहिं परकइवायहिं णावइ लोउ भमाडिउ ॥ १६ ॥

17

तहिं सेणिउ णामें अत्थि राउ गारुडगुरु व्व विण्णायणाउ ।
कज्जेसु दच्छु संजायवेउ रिउवंसडहणि णं जायवेउ ।
सीयामणु व्व रामाहिरामु सूरो इव परदुल्लंघधामु ।
णियसमयणिसेवियइट्ठकामु पावणि व पयंडुद्दामथामु ।
पविदंडो इव णिद्दलियलोहु मयमारउ व्व णासियमओहु ।
वयधारि व गुरुयणि मुक्कमाणु सुरवरकरि व्व अविहंडदाणु ।
जोईसरु व्व हयरोसहरिसु णं खत्तधम्मु थिउ होवि पुरिसु ।
जाणइ विग्गह संधाण ठाणु णं वेयायकरणु महापहाणु ।
सत्तंगु वि पालइ रज्जु केम पयईणिवहु णियदेहु जेम ।
पवणो इव फेडियमंदमेहु गोवालु व कयमहिसीसणेहु ।
मंडलियमउडपरिहिट्ठचरणु जिणणाहु व णिहिलणिरायसरणु ।

घत्ता—अवरेकहिं दिणि राणउ सो आसीणउ सिंहासणि दीहरकरु ॥
चेल्लिणिदेविए मंडिउ णं अवरुंडिउ वल्लरीए सुरतरुवरु ॥ १७ ॥

17. १ MBP विग्गहु संधाणु ठाणु. २ MBP वइयाकरणु. ३ MBP अवरेक्कहिं. ४ P सह आसीणउ. ५ M चेल्लणदेवी°; B चेल्लिणि° P चेल्लणदेविहि.

---

10 कंदुउ कन्दुकः; चोवाण गेडी (यष्टिः). 11 परकइवायहि मिथ्यादृष्टिकविभिः.

17. 1 *b* विण्णायणाउ न्यायकुशलः; पक्षे विज्ञातसर्पः. 2 *a* संजायवेउ शीघ्रकारी. 3 *b* परदुल्लंघधामु शत्रुभिरलंघ्यः, सूर्य इव अजिततेजाः 4 *b* पावणि पवनपुत्रो हनूमान् भीमो वा; पयंडुद्दामथामु उत्कटपराक्रमः 5 *a* पविदंडो वज्रदण्डः; णिद्दलियलोहु निर्दलितलोभः, पक्षे °लोहः; *b* मयमारउ व्याधः; णासियमओहु नाशितमदौघः, पक्षे नाशितमृगौघः. 6 *b* अविहंडदाणु अविखण्डदानः, दानं मदस्त्यागश्च. 7 *a* °जोईसरु महामुनिः. 9 *b* पयई° प्रकृतयो लोका वातपित्तश्लेष्माणश्च. 10 *a* °मंदमेहु °अल्पमेघः, पक्षे, अल्पमेधाः, मन्दमेधाः इतिकर्तव्यतामूढाः. 11 *a* °परिहिट्ठ° °परिघृष्ट°; *b* णिहिलणिरायसरणु निखिलनृराजशरणं, पक्षे, निर्गतरागाणां मुनीनां शरणम्. 12 अवरुंडिउ आलिङ्गितः.

18

अतुलिय[1]बलखलकुलपलयकालु जामच्छइ मेइणिसामिसालु ।
तामायउ तहिं उज्जाणवालु सिरसिहरचडावियबाहुडालु ।
अणवरयविहियसामंतसेव सो पभणइ भो भो णिसुणि देव ।
कुसुमसरपसरपसमणसमत्थु णीसेसमंगलासउ पसत्थु ।
अहिमयरख[2]यरपुरणामियपाउ तेल्लोक्कणाहु जिणु वीयराउ ।
आहंडलणिम्मियसमवसरणु चउदेवणिकायाणंदकरणु ।
चउतीसातिसयविसेसवंतु अरहंतु महंतु अणंतु संतु ।
परमप्पउ परमु महाणुभाउ तित्थयरु वीरु देवाहिदेउ ।
उप्पाइयकेवलु[3] विमलणाणु अट्ठविहपाडिहेराहिहाणु ।
जगदुरियतिमिरणिहणेक्कभाणु विउलइरि[4] पराइउ वड्ढमाणु ।
तं णिसुणिवि दुज्जणहिययसल्लु परपुरदावाणलु सुहडमल्लु ।
परिवड्ढियजिणधम्माणुराउ आसणु मुएवि रायाहिराउ ।
लहु पणविउ सत्तपयाइं गंपि एहउ थुइवयणु करंतु[5] किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुरगुरु जय तिहुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥
जय णिहयणियामय भरहणियामय पुप्फयंततेयाहिय ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सम्मइसमागमो णाम
पढमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १ ॥

॥ संधि ॥ १ ॥

18. १ B °बलु. २ M °खयरणिव°. ३ MB °केवलविमल°. ४ M विउलइर. ५ MBP कहंतु.

18 1 *b* जामच्छइ यावदास्ते. 2 *b* °बाहुडालु °प्रलम्बहस्तः. 4 *a* कुसुमसर° काम°; *b* णीसेसमंगलासउ निःशेषमङ्गलाश्रयः 5 *a* अहिमयर° आदित्य°. 6 *a* आहंडल° इन्द्र°. 7 *b* अणंतु शुद्धात्मद्रव्यापेक्षयानन्तः, संतु पर्यायापेक्षया सान्तः. 10 *b* विउलइरि विपुलाचले; पराइउ प्राप्तः. 13 *a* गंपि गत्वा; *a* करंतु उच्चरन्. 14 सयलपयाहिय सकलप्रजाहित. 15 णिहयणियामय निहतनिजरोग; भरहणियामय भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामकः; पुप्फयंततेयाहिय चन्द्रसूर्यादपि तेजोधिक.

II

पणिवाउ करेवि पसण्णमणु भत्तिरायरहसुच्छलिउ ॥
सो णरवइ सहुं णियपरियणिण पासु जिणिंदहु संचलिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

पहयाणंदभेरि बलु चलिउ पुरणारीयणु हरिसुप्पेल्लिउ ।
भाविणि का वि देवगुणभाविणी चलिय स कमलहत्थ णं गोमिणि ।
का वि सचंदण सहइ महासइ णं मलयइरिणियंबवणासइ ।
कुवलउ का वि लेइ जसधारिणि णं वरछायविसि रिउदारिणि ।
रुप्पयथालु का वि घुसिणालउ ससिबिंबु व संझारायालउ ।
पवरकसणगंधोहकरंबउ उवरजंतु व णंवरविबिंबउ ।
कणयवत्तु काइ वि करि धरियउ इंदणीलमउ मोत्तियभरियउ ।
जावइ णहयलु उडुविप्फुरियउ गुरुचरणारविंदु संभरियउ ।
का वि ससंख समुद्दसही विव का वि सकलस णिहाणमही विव ।
का वि सदप्पण वेसाविसि व का वि सरस कइकव्वपउत्ति व ।

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanza in praise of the poet and his patron:—

आदित्योदयपर्वताद्गुरुतराच्चन्द्रार्कचूडामणे-
रा हेमाचलतः कुबेरानिलयादा सेतुबन्धाद् दृढात् ।
आ पातालतलादहीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता
कीर्तिर्यस्य न वेद्मि भद्र भरतस्याभाति खण्डस्य च ॥

GK give it at the beginning of the third Samdhi and have उरुतरात् for गुरुतरात्; चूलामणेः for चूडामणेः and कीर्तिः कस्य न वेत्ति for कीर्तिर्यस्य न वेद्मि.

1. १ M पणवाउ. २ MB °रयसु°. ३ MBP रहसुप्पेल्लिउ. ४ MBP देवगुरुभाविणी. ५ MBP सहत्थकमल. ६ P णं रवि°.

1. 1 रहसुच्छलिउ हर्षेण उद्गतः 2 पासु पार्श्वम्. 3*b* उप्पेल्लिउ प्रेरितः 4 *a* भाविणि भामिनी स्त्री; °भाविणि °भावनायुक्ता; *b* गोमिणि लक्ष्मीः 5 *b* °वणासइ °वनस्पतिः. 6 *a* कुवलउ नीलोत्पलं पृथ्वीमण्डलं च. 7 *a* घुसिणालउ कुङ्कुमयुक्तम्; °रायालउ °रागयुक्तम्. 8 *a* °कसणगंध° कृष्णागुरु कस्तूरिकादि वा; *b* उवरजंतु राहुणा ग्रस्यमानम् . 9 *a* कणयवत्तु कनकपात्रम्. 10 *a* उडु° नक्षत्र°. 11 *a* ससंख शंखयुक्ता; समुद्दसही पृथिवी; *b* णिहाणमही निधानघटयुक्ता पृथ्वी. 12 *b* सरस इक्षुरसादियुक्ता शृंगारादिरसोपेता च.

का वि जिणिंदभत्तिपब्भारें　　णच्चइ भरहभाववित्थारें ।
काहि वि दिट्ठउ पयडु थणत्थलु　　णाइं णिरंगकुंभिकुंभत्थलु ।
मयणंकुसवणरेहाँरुणियउ　　समवंतेण पिएँण ण गणियउ ।
काहि वि घुलइ हारु मणिमंडिउ　　णावइ कामें पासउ मंडिउ ।
झल्लरिपडहमुइंगसहासहिं　　वज्जंतहिं जयजयणिग्घोसहिं ।

घत्ता—आरूढउ महिवइ मत्तगइ मयजलघुलियचलालिगणे ॥
णं मेंहिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्ललियतमालवणे ॥ १ ॥

2

चोइउ कुंजरु कमसंचारें　　गंडालीणभमरझंकारें ।
चामरचवलें छत्तंधारें　　गच्छमाणु सहुं णियपरिवारें ।
पत्तु णरेसरु तियसरवण्णउं　　दिट्ठउ समवसरणु वित्थिण्णउं ।
णिम्मिउं सइं सोहम्मपहाणें　　ठियउ एक्कजोयणपरिमाणें ।
माणखंभमणितोरणदामहिं　　कप्पियकप्पपायवारामहिं ।
जलखाइयधूलीपायारहिं　　तियससरासणवण्णवियारहिं ।
वेल्लीवणपरिभमियमरालहिं　　चेईहरणाणाणडसालहिं ।
सुरणरविसहरथोत्तवमालहिं　　खयरुक्खाइयकुसुमोमालहिं ।
गंभीरहिं भुवणयलाऊरहिं　　वज्जंतहिं बहुमंगलतूरहिं ।
स रि ग म प ध णी सरसंधायहिं　　तुंबुरुणारयगेयणिणायहिं ।
उव्वसिरंभाणच्चणभावहिं　　कणरणंतआलावणिरावहिं ।
जं रेहइ तहिं राउ पइट्ठउ　　परमेसरु सवडंमुहु दिट्ठउ ।

७ MBP °वणियउ. ८ BP पिएण व ९ MBP घुलिय. १० MBP आरूढु महीवइ.

2. १ M छत्तें धारें; P छत्ताधारें. २ P णिय सह परिवारें. ३ M वल्लिय° ४ MBP सुकुसुममालहिं.

---

13 *b* भ र ह भा व वि त्था रें संगीतभावविस्तारेण. 14 *b* णि रं ग कुं भि कुं भ त्थ लु काम एव गजस्तस्य कुम्भस्थलमिव. 15 *a* म य णं कु स° नख°; *b* स म वं ते ण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा भर्त्रा. 16 *b* पा स उ बन्धनपाशः. 17 *a* °स हा स हिं °सहस्रैः. 18 म त्त ग इ मत्तगजे. 19 म हि ह रि पर्वते.

2. 1 *a* क म सं चा रें चरणसंचरणेन. 2 *a* °च व लें °चपलेन. 3 *a* °र व ण्ण उं रम्यम्. 5 *b* क प्पि य° विकुर्वणया कृत°. 6 *b* ति य स स रा स ण° इन्द्रधनुः. 7 *b* ण ड सा ल हिं नाट्यशालाभिः. 8 *a* °व मा ल हिं °कोलाहलैः; *b* कु सु मो मा ल हिं कुसुमानामत्र समन्तान्मालाभिः. 11 *b* आ ला व णि वीणा. 12 *a* जं रे ह इ यत् समवसरणं शोभते; *b* स व डं मु हु संमुखः.

घत्ता—सीहा[५]सणसिहरासीणु जिणु णिम्मलु जणं[६]जणणत्तिहरु ॥
पारद्धउ थुणहुं णराहिविण भुवणंभोरुहदिवसयरु ॥ २ ॥

3

जय सयल- भुवणयल-।
मलहरण इसिसरण ।
वरचरण- समधरण ।
भवतरण जर[१]मरण-।
परिहरण जय वरुण-।
वइसवण- जमपवण-।
दणुदमण- सिरिरमण-।
दिवसयर- फणिसयर-।
ससिजलण- सिरणमण-।
मउडयल- मणिसलिल-।
धुं[२]यविमल- कमकमल ।
जय णिहिल- विहिकुसल ।
णयमुसल- हयपबल-।
सुयसबल- दियकविल-।
सिवसुगय- कइं[३]कुणय-।
वहद्दलण मयं[४]मलण ।
सवरहिय दुहं[५]रहिय ।

५ MBP सिंहासण°. ६ B जिणु जणणत्ति°

3. १ B जलमरण. २ BP धुवविमल. ३ MBP कयकुणय° but GK कइकुणय and T कवि-कुनय°. ४. MBP मयमहण. ५ B omits दुहरहिय.

13 °जणणत्ति °संसारदुःखम्. 14 थुणहुं स्तोतुम.

3. 2 *b* इसि° ऋषि°. 7 *a* दणुदमण° इन्द्रः, *b* सिरिरमण° विष्णु ; वरुणादिज्वलनपर्यन्तानां देवानां शिरोनमनमुकुटतलमणिसलिलधौतकमकमल. 12 *a-b* णिहिलविहि° सागारानागारसंबन्धि सकलमनुष्ठानम्. 13 *a* णयेत्यादि – नया एव मुसलास्तैर्हताः प्रबलद्विजादीनां कुनयपथा. येन. 16 *b* मयमलण मदचूर्णकर्ता. 17 *a* सवरहिय स्वपरहित,

मुणिमहिय महमहिय ।
सुरहिरस- विससरिस ।
कुसुमसर- अणवसर ।
जय दुरह- हरिसरह ।
बुहतिलय सुहणिलय ।
रइविलय जुइवलय- ।
जियतरणि जय करुणि ।
जडदमिर- मणभमिर- ।
घणतिमिर- हरमिहिर ।
जय सुमुह जय समह ।
जय सुमण जय[६] गयण- ।
चुयसुमण- पह[७]गमण ।
जय[८] चलियचमररुह जय ललियसुरकुरुह ।
जय[९] गहिरमहुरझुणि जय चरमपरममुणि ।
जय विसयविसिगरुल जयधवल जसधवल ।
जय रसियजसवडह गयगरुह जय अरुह ।

घत्ता—सीहासणछत्तालंकरिय उत्तारेप्पिणु चउगइहे ॥
जय[१०] मयमयणिवहमयाहिवइ मइं णेज्जसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥

६ MBP गयणयल°. ७ B णहगमण. ८ B omits this line. ९ B omits this line. १० MB जय जय मयणिवह°.

18 *b* महमहिय मखाः यज्ञाः मथिता येन, अथवा, महेसु पूजासु महितः पूजितो वाञ्छितो वा. 19 *a* सुरहिरस° गोदुग्धम्, °विससरिस विषं तत्र समः 20 *b* °अणवसर °अविषय. 21 *a–b* दुरहहरिसरह दुष्पापसिंहस्याष्टापद. 24 *b* करुणि करुणायुक्त. 25 *a* जडेत्यादि–जडानां मूर्खाणां दमकाः मनसा भ्रान्ति प्राप्नुवन्तः ये मिथ्यादृष्टयः ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य. 32 *a* विसयविसिगरुल विषयाः एव सर्पास्तेषां गरुड. 32 *b* जयधवल जगतां मङ्गलध्वज. 33 *b* गयगरुह अनिन्द्य. 35 मयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषां यूथम्; °मयाहिवइ सिंहः; पंचमगइ सिद्धावस्था.

4

इय [1]वंदिवि जिणु पालियरट्ठउ पयारहमइ कोट्ठि णिविट्ठउ ।
संभवंतभव[2]भारभयंगउ भूवइ भत्तिभारणवियंगउ ।
पुच्छइ महिवइ संजमधारा अक्खहि गोत्तमसामि भडारा ।
पावणासु चउवग्गाइण्णउं जेम महापुराणु अवइण्णउं ।
तं णिसुणिवि आघोसइ गणहरु वासारत्ति पत्ति णं जलहरु ।
सुणि सेणिय मयमोहविहीणहि अरहंतावलीहि वोलीणहि ।
णाइ णंतु भाविणिहि णिरुत्तउ एहउ वीरजिणिंदें वुत्तउ ।
पढमु समासमि कालु अणाइउ सो अणंतु जि[3]णणाणें जोइउ ।
जगपरिणामहु सो सहयारिउ अरसु अगंधु अरूउ अभारिउ ।
मुणइ को वि सम्मत्तवियक्खणु णिच्छयकालु पवत्तणलक्खणु ।

घत्ता—भो मुणिपयपंकयभमर णिव तच्चु ण कासु वि हउं रहमि ॥
ववहारकालु परमेट्ठिमुहिं जिह णिसुणिउं तिह तुह कहमि ॥ ४ ॥

5

अणुअंतरयरु समउ भणिज्जइ आवलि तेहिं असंखहिं किज्जइ ।
ऊसा[1]सु वि आवलिहिं दु संखहि सत्तूसासहिं थोवउ ले[2]क्खहि ।
सत्तहिं थोवएहिं ल[3]वु भाणियउं इह पियकारिणितणएं मुणियउं ।
होंति महामुणिचित्तावडियहि सड्ढ जि अट्ठतीस लव घडियहि ।

4. १ MBP वंदिय. २ MBP भवभाव°; K भवभाव° but corrects it to भवभार°; T भवभाव° but explains it as संसारे परावर्तोः प्रचुराः. ३ MBP जिणणाहें.

5. १ M ओसासु २ MBP लक्खहि. ३ MBP लउ.

4. 2 *a* संभवंतेत्यादि- उत्पद्यमानसंसारप्राचुर्यभयत्रस्तः. 4 *a* चउवग्गाइण्णउ धर्मार्थकाममोक्षैराकीर्णः. 5 *b* वासारत्ति वर्षाकाले. 6 *b* वोलीणहि व्यतीतायाम्. 7 *a* णाईत्यादि- भाविन्या अर्हदावल्या आदिरन्तश्च नास्ति. 8 *a* समासमि संक्षेपतः कथयामि. 9 *b* अभारिउ अगुरु स्पर्शरहितः. 10 *b* पवत्तणलक्खणु प्रवर्तनालक्षणो निश्चयकालः. 11 तच्चु तत्त्वम्; रहमि गोपयामि.

5. 1 *a* अणुअंतरयरु अण्वोरन्तरं एकमाकाशप्रदेशं परित्यज्य यावता कालेन एकः अणुः द्वितीयमाकाशप्रदेशं गच्छति स कालः समय इति कथ्यते; *b* असंखहिं असङ्ख्येयैः समयैः आवली; 2 *a* दु तु पुनः 3 *b* पियकारिणितणएं महावीरेण. 4 *b* सड्ढेत्यादि-घटिकायाः सार्धा एवाष्टत्रिंशल्लवा भवन्ति.

घडियहिं दोहिं मुहुत्तहु अवसरु तीसहिं तेहिं जाइ णिसिवासरु ।
तेत्तियहिं जि दिवसहिं विरइज्जइ मासु महारिसिणाहहिं गिज्जइ ।
बिहिं मासहिं उडुमाणु णिबद्धउ उडुहिं तीहिं पुणु अयणु पसिद्धउ ।
बिहिं अयणिहिं संवच्छरु वुच्चइ पंचहिं वच्छरेहिं जुगु वुच्चइ ।
बिहिं जुगेहिं दसवरिसइं जायइं दहगुणियइं सयसंखइ आयइं ।
सउ दहेहिं ताडिज्जइ जामहिं आवइ अद्दसहासु वि तावहिं ।

घत्ता—सो सहसु वि दहहउ दससहसु होइ समासिउ मइं णिउणु ॥
ते दह वि दहहिं जइ गुणइ गुणि तो उप्पज्जइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

6

संखाणाणिहिं णिम्मिउं चंगउ चउरासीलक्खहिं पुव्वंगउ ।
जाणिज्जइ फुडु अक्खियमेत्ती लक्खसएण जि कोडि पउत्ती ।
पुव्वंगें पुव्वंगु णिहम्मइ जइ तो इह अवरु वि अवगम्मइ ।
वरिसहं सत्तरि कोडिउ लक्खहं छप्पण्णेव ताउ सहसंखहं ।
परमागमि जं देवें बद्धउ पुव्वपमाणु एउ तं लद्धउ ।
पव्वु णउदु कुमुदु वि पउमक्खउ णलिणु कमलु तुडियउ वि ससंखउ ।
अडडु अममु हाहा हूहू तिह जाणहि जिणवरेण जाणिउं जिह ।
मउलय लय वि महालइयंगउ पुणु वि महालयणामपसंगउ ।
सीसपकंपिउ हत्थपहेलिउ अचलप्पु वि वीरें उम्मीलिउ ।
णाणाणामपमाणहिं भेज्जउ एत्तिउ कालु होइ संखेज्जउ ।

घत्ता—परमाणु अट्ठ जइ मेलवहिं तो तसरेणु समुब्भवइ ॥
अट्ठहिं तसरेणुहिं पिंडयहिं एक्कु जि रहरेणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिं. ५ MBP रिउमाणु ६ MBP वुच्चइ. ७ MBP दससहस.

6. १ K सहसक्खहं. २ M पुव्वे पमाणु. ३ B हत्थपहिल्लउ; P °पहिल्लिउ. ४ MBP रहरेणू.

---

7 *a* उडुमाणु ऋतुप्रमाणम्. 10. *a* ताडिज्जइ गुण्यते; *b* अद्दसहासु अब्दसहस्रम्. 11 दहहउ दशगुणितः.

6. 1 *a* संखाणाणिहिं गणितज्ञैः. 2 *a* अक्खियमेत्ती आख्यातमात्रेण. 3 *a* णिहम्मइ गुण्यते. 6 *a* पउमक्खउ पद्मसंज्ञम्. 8 *a* मउलय मृदुलता; लय लता; महालइयंगउ महालतिकाङ्गम् 9 *a* हत्थपहेलिउ हस्तप्रहेलिका, *b* अचलप्पु अचलात्मकम्; उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम्.10 *a* भेज्जउ भेद्यः.

7

अट्ठहिं रहरेणुयहिं समग्गहिं चिहुरग्गउ अट्ठहिं चिहुरग्गहिं ।
लिक्ख भणिय पुणु अट्ठहिं लिक्खहिं सियसिद्धत्थु कहिउ णिहयक्खहिं ।
अट्ठहिं सरिसवेहिं परिमाणिउ जवपमाणु देवागमि आणिउं ।
परमप्पयदिट्ठउ को दूसइ अट्ठजवंगुल सूरि समासइ ।
छंगुलु पाउ विहत्थि दुवाई दोहिं ताहिं किर रयणि वि हुई ।
चउरयणिल्लु दंडु मणि म वहि दंडहिं अट्ठसहासिहिं पावहि ।
जोयणु तं पि सयहिं गुणिज्जइ पंचहिं पुणु लोयहु दंसिज्जइ ।
एम महाजोयणु वक्खाणिउं जं जगमाणकरणु अहिणाणिउं ।
तस्स पमाणें खम्मइ खाणी परिवट्टुलिय सपरियरतिउणी ।
कत्तरियहि अविहायहिं सुहुमुहुं सा पूरिज्जइ सिसुअविरोमहुं ।
होउ पहुच्चइ लेक्खें म गणहि संवच्छरसइ एक्कु जि अवणहि ।
जइयहुं रोमरासि सा खिज्जइ तइयहुं पलिओवमु धुवु पुज्जइ ।
तेहिं असंखिहिं उद्धारुल्लउ दीवसमुद्दपमाण परुल्लउ ।
तं पि असंखगुणिउं अद्धारउ भवठिदिआउपमाणाधारउ ।
होइ समुद्दोवमु चुअणाडिहिं पल्लोवमदहकोडाकोडिहिं ।

घत्ता—तेत्तियहिं जि सायरसमहिं फुडु कालचक्कु मइं लक्खियउ ॥
लइ पउ वि अवरु वि पुणु भणमि केवलणाणें अक्खियउ ॥ ७ ॥

7. १ MBP लिहक्ख. २ MBP लिहक्खहिं. ३ M जाणिउ. ४ MBP पंचहिं लोयहु पुणु दरिसिज्जइ ५ MBP खोणी. ६ Tp सपरिरय and adds सपरिरयेति पाठेऽप्ययमेवार्थः ७ MBP अविभायहिं. ८ MP धुउ; B धुवु. ९ MBP हवइ तियआउ°.

7. 1 *b* चिहुरग्गउ रोमाग्रम्. 2 *b* सियसिद्धत्थु श्वेतसर्षपः; णिहयक्खहिं जितेन्द्रियैर्महामुनिभिः. 3 *a* परिमाणिउ एकत्र कृत्वा; *b* देवागमि जिनागमे. 5 *a* दुवाई द्वाभ्यां पादाभ्याम्, *b* रयणि हस्त. (अरत्निः). 8 *b* जगमाणकरणु लोकप्रमाणम्; अहिणाणिउं अभिज्ञातम्. 9 *b* सपरियरतिउणी स्वपरिधिना त्रिगुणा. 10 *b* अवि° मेषकः. 11 *b* अवणहि स्फेटय. 13 *b* परुल्लउ परम्. 14 *b* भवठिदि° भवस्थिति°. 15 *a* चुयणाडिहिं गलितघटिकाभिः; पल्योपमैर्दशकोटिभिः सागरोपमं स्यात्.

8

सुसमसुसमु अण्णेक्कु वि सुसमउ सुसमेदुसमु पुणु दुस्समसुसमउ।
दुस्समु अइदुस्समु पविहत्ता इय छक्काल वीरपण्णत्ता।
ए ओहामियदावियरिद्धिहिं परिभमंति जगि हाणिपवुड्ढिहिं।
भुयबलविहवसरीरसिरीरहिं धम्मणाणगंभीरिमधीरहिं।
वड्ढंतेहिं होइ उच्छप्पिणि ओहट्टंतएहिं अवसप्पिणि।
सायराहं विभियणिव्वाणहिं चउतिदुकोडाकोडिपमाणहिं।
तीहिं मि कालहिं तिण्णि विहत्तइं दहविहविडविपसाहियखेत्तइं।
दरिसियमाणवदेहारोयइं इच्छासंणिहमाणियभोयइं।
छच्चउदुधणुसहाससरीरइं बोरक्खामलमेत्ताहारइं।
तिण्णिदुएक्कपल्लथियजीवइं रयणाहरणविहूसियगीयइं।
उत्तिममज्झिमाइं णिकिट्ठइं भोयभूमिचिंधाइं पइट्ठइं।

घत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मित्तु तहिं सीहु गइंदें सहुं वसइ॥
लायण्णवण्णविब्भमभरिउ जणवयजोव्वणु णउ ल्हसइ॥ ८॥

9

बहुवोलीणइ तइयइ कालइ थियपल्लोवमअट्ठमभायालइ।
अट्ठारहधणुसयतणु थिरजसु पलिओवमदहमंसु चिराउसु।
पडिसुइ णामें जायउ कुलयरु पुणु तेरहसयचावपईहरु।
अममामियाउ राउ मंथरगइ अवरु वि हूयउ णामें सम्मइ।
पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ अट्ठसयाइं सरासणतुंगउ।

8. १ MP सुसमुसुसमु. २ MBP सुसमुदुसमु. ३ MBP दुस्समुसुसमउ. ४ P पवहंता but gloss प्रविभक्ताः पृथग्गुणिताः. ५ MBP छच उदुधणुसहास°. ६ MBP विहूसियगीवहिं.

---

8. 1 *a* अण्णेक्कु द्वितीयः. 2 *a* पविहत्ता प्रविभक्ताः, 3 *a* ए एते षट् कालाः; ओहामियदावियरिद्धिहिं स्फेटितदर्शितऋद्धिभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्; अवसर्पिण्यां ऋद्धिः स्फेट्यते उत्सर्पिण्यां ऋद्धिर्दृश्यते. 6 *a* सायराहं सागरोपमैः. 7 *b* दहविहेत्यादि–दशप्रकारैः कल्पवृक्षैर्मण्डितक्षेत्राणि; मद्याङ्गतूर्यभूषास्रग्ज्योतिर्दीपगृहाङ्गकाः। भोजनामत्राङ्गा दशधा कल्पशाखिनः. 8 *a* °आरोय °आरोग्य; *b* इच्छासंणिह° इच्छानुरूपाः. °माणिय° प्राप्त. 9 *b* °अक्ख° बिभीतकः. 10 *a* °पल्लथियजीवइं °पल्यस्थितिजीवितानि. 11 *b* पइट्ठइं प्रविष्टानि. 13 णउ ल्हसइ न पतति.

9. 1 *b* °अट्ठमभायालइ अष्टमे भागे काले. 2 *b* पलिओवमदहमंसु पल्योपमस्य दशमो भागः. 3 *b* पईहरु प्रदीर्घतरः. 4 *a* मंथरगइ मन्दगतिः.

अड्डपमाणियाउ खेमंकरु संभूयउ सुभूयखेमंकरु ।
सत्तसयाइं पंचसत्तरि धणु उच्छिउ अण्णु वि उप्पण्णउ मणु ।
खेमंधरु णामें णं दिग्गउ तुडियइइं जीवेप्पिणु सो मुउ ।
सयसत्तउ पंचासेंहिं जुत्तउ गत्तपमाणउ जासु पउत्तउ ।
कमलजीवि सीमंकरु भण्णइ तहु चरित्तु जइ सुरगुरु वण्णइ ।
णलिणाउसु किर को णउ मण्णइ बाणासणहं सरीरसमुण्णइ ।
सत्तसयइं पंचुत्तरवीसइं जासु जिणिंदभडारउ भासइ ।
सिरिकरपल्लवलालियकंधरु सो संजायउ पुणु सीमंधरु ।
पणुवीसुज्झियहिं दिहिगारउ कोवंडहं सयहिं गरुयारउ ।
तेत्तियहिं पुणु गुणमणिमंडिउ विमलवाहु हुउ पंडापंडिउ ।
पेकु वि पोमु जासु संजीविउ मुउ सुहकम्में सुरहरु पाविउ ।
छहसयपणहत्तरिइ पसाहिय जासु देहउच्छेहु पसाहिय ।
कम्मुयाहं कामिणिकयविब्भउ णामें सुपसिद्धउ चक्खुब्भउ ।
पउमंगाउ महीयलि अच्छिउ पच्छा खयकालेण णियच्छिउ ।
पुणु वि जसस्सि पुण्णचंदाणणु उप्पण्णउ पत्थिवपंचाणणु ।

घत्ता—उडुमाणइं सयइं कैणासणहं पण्णासाहियाइं गणमि ॥
तहु देहुच्चत्तणु पत्तडउ जीविउ कुमुदु एक्कु भणमि ॥ ९ ॥

10

पयहु अक्खियाइं जेत्तियइं जि पंचवीसरहियइं तेत्तियइं जि ।
पुणु जायहु बलतुलियगइंदहु धणुसयाइं अहिचंदणरिंदहु ।
कुमुयंगाउणिबद्धपमाणहु णिउ सो कालें अमरविमाणहु ।

9. १ MP मुउ. २ MBP पण्णासहिं. ३ MBP गत्तमाणु जगि जासु पउत्तउ. ४ MP जिणिंदु भडारउ. ५ MBP एक्कु पोमु जा सो संजीवउ. ६ MBP कामुयाहं. ७ BP बाणासणहं. ८ MBP गणिउं. ९ MBP देहुच्चत्तणु. १० MBP भणिउं.

6 *b* सुभूयखेमंकरु सुष्ठु प्राणिनां क्षेमकर्ता. 7 *b* उच्छिउ उच्छ्रितः. 10 *a* कमलजीवि कमलाङ्कप्रमाणायुः. 11 *a* णलिणाउसु नलिनाङ्कायुः 14 *a* दिहिगारउ धृतिकारकः. 15 *b* पंडापंडिउ पण्डा बुद्धिस्तया पण्डितश्चतुरः. 18 *a* कम्मुयाहं कार्मुकाणां धनुषाम्. *b* चक्खुब्भउ चक्षुष्मान्. 19 *b* णियच्छिउ निरीक्षितः. 21 उडु ऋतु; कणासणह धनुषाम्. 22 कुमुदु कुमुदाङ्कायुः.

10. 2 *a* बलतुलियगइंदहु गजेन्द्रबलनिर्दलनस्य.

पंचसयइं पुणु सयसंजुत्तइं चावहं जासु जिणेण णिउत्तइं।
णउदाउसु महिवइ संजायउ इह चंदाहु णाम विक्खायउ।
तहु पच्छइ गच्छंतें कालें उच्छिज्जंतें सुरतरुजालें।
अज्जवलोयहु आसि पहाणउ हुउ मरुएउ णाम बहुजाणउं।
सायवयीढहं सयइं महिट्ठिउ पंच पंचहत्तरइं पयट्ठिउ।
गउ सो णउयंगउ जीवेप्पिणु थिउ सुरहरि सुरबोंदि लएप्पिणु।
सहुं पंचसयइं रणचंडहं देहपमाणु जासु धणुदंडहं।
पव्वाउसु पय पालहुं आणइ पुणु हुउ मणु णामेण पसेणइ।
कंडमोक्खकरणाहं सउण्णउ पंचसयाइं सवायइं उण्णउ।
पुव्वकोडिजीवियसंपुण्णउ सुद्धबुद्धि सब्भावाउण्णउ।
तिहुअणभवणखंभु णं दिण्णउ संतत्तुज्जलकंचणवण्णउ।
गुरुउद्धरियवंसु वरमेहलु दावियकप्पतरुवरामयहलु।
भूसणरयणकिरणहयतममलु सयणुतेयउज्जोइयणहयलु।
मउडसिहरु हारावलिणिज्झरु सुरवरसेवाजोग्गधराधरु।
णं अवयरियउ जंगमु मंदरु णं णहणिवडिउ देउ पुरंदरु।
घत्ता—हुउ पच्छइ आयहं तेरहहं बाहुद्धारियभुवणभरु॥
जियलोयहो णाहि व णाहिपहु णरसंथुउ कुलयरु पवरु॥१०॥

11

णहयलि जंतजणेण णं याणिय पहिलएण रविससि वक्खाणिय।
अण्णु वि रुइरुक्खक्खइ दिट्ठइं बिंदुयबिंदुएहिं उवरिट्ठइं।

10. १ MBP चावहिं. २ MBP चंदाहणामु. ३ MBP उच्छज्जतें. ४ MBP add after this line दीहबाहु उरयलवित्थिण्णउ. ५ B °वसु णं मेहलु. ६ M °जोग°; BP °जोग्ग°. ७ MBP जंगममंदरु. ८ MBP °भुवणहरु. ९ MBP कुलयरपवरु.

11. १ M ण जाणिय.

7 *a* अज्जवलोयहु आर्यलोकस्य; *b* बहुजाणउ बहुश्रुतः. 8 *a* सायवयीढहं धनुषाम्. 9 *b* सुरबोंदि देवशरीरम्. 10 *a* रणचंडहं संग्रामप्रचण्डानां धनुर्दण्डानाम्. 11 *a* पव्वाउसु पर्वप्रमाणायुः. 12 *a* कंडमोक्खकरणाहं धनुषाम्. 13 *b* सब्भावाउण्णउ सद्भावपूर्णः. 15 *b* °अमयहलु अमृतफलम्. 16 *b* सयणुतेयेत्यादि–स्वतनुतेजसोद्योतितनभस्तलः. 19 आयहं एतेषाम्. 20 जियलोयहो जीववर्गस्य.

11. 1 *a* णहयलीत्यादि–आकाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणां बहुलतेजस्त्वात् न ज्ञातौ; *b* पहिलएण प्रथमकुलकरेण प्रतिश्रुतिना. 2 *a* रुइरुक्खक्खइ कल्पवृक्षस्य क्षयात्, ज्योतिरङ्गक्षयात्.

बीयएण वि लोयहु भयरिट्ठइं अहरत्तइं णक्खत्तइं सिट्ठइं ।
हूया जे मृग दारुण जइयहुं तइयएण ते साहिय तइयहुं ।
सिंगि णक्खि दाढि वि परिहरिया सोम्मैं सुलक्खण णियडेइ धरिया ।
चोत्थैयएण पुणु णउ उप्पेक्खिउ लोउ मृगेहिं खज्जंतउ रक्खिउ ।
ताडिय ते दढदंडपहारिहिं पंचमेण बहुबुद्धिपयारिहिं ।
वियलियफल तरु विरइयमेरइ अज्जव सुणिरोहिय णियकेरइ ।
पविरलदुमकालइ कुज्झंता फललोहें कोहें जुज्झंता ।
छट्ठएण मणुणा अणुयंधें वारिय णर कयसीमाचिंधें ।

घत्ता—कुलयरपवरेण वि सत्तमेण णियमइविहवें भाविउ ॥
पल्लाणिवि हयगयवरवसहभारारोहणु दाविउ ॥ ११ ॥

12

अट्ठमेण चंगउ उवएसिउ डिंभयदंसणभउ णिण्णासिउ ।
णवमएण सुयमुहससि दरिसिउ तं जोइवि जणु हियवइ हरिसिउ ।
खणु जीवेप्पिणु मुउ सोमालहुं दहमें केलि पयासिय बालहुं ।
एयारहमइ कुलयरि जायइ णंदणि माणवबंदहु हूयइ ।
जीउ ण वच्चइ कइवयदिवसइं बारहमइ हुइ बहुयइं वरिसइं ।
णंदइ पय पयाइ संजुत्ती तेरहमेण वियप्पिय वित्ती ।
विहियइं सरिसमुद्दजलजाणइं गयणलग्गगिरिवरसोवाणइं ।
तक्कालइ जायइं णिम्मग्गाइं कुसरि कुसायर कुकुहर दुग्गाइं ।

२ MBP बिग. ३ M सिंगि य णक्खि; B सिंगणक्खि. ४ MBP सोम. ५ B णियडयधरिया. ६ P चउथएण. ७ MBP बिगहिं. ८ MBP अणुबंधें. ९ P सत्तमइ. १० MBP भावियउ. ११ MBP दावियउ.

12. १ P जोएप्पिणु हियवइ. २ P दहमइं. ३ MBP माणवविंदहु.

---

3 *a* °रिट्ठइं उत्पाताः. 4 *b* साहिय साधिताः, मृगस्वरूपं कथितमित्यर्थः. 8 *a* °मेरइ मर्यादया; *b* सुणिरोहिय सुनिबद्धाः. 10 *a* अणुयंधें अनुबन्धेन आग्रहेण.

12 2 *a* सुयमुह° पुत्रमुख°. 3 *a* सोमालहुं सुकुमाराणाम्. 5 *a* जीउ जीवः. 6 *a* पयाइ पुत्रादिभिः; *b* वियप्पिय विकल्पिता रचिता, वित्ती जीविका. 8 *a* णिम्मग्गाइं निश्चितमार्गाणि; कुसरि कुनदी; कुकुहर कुपर्वत.

घत्ता—जाएं मणुणा चोद्दहमइण णरसिसुणालइ खंडियइं ॥
कसणब्भइं थियइं णहंगणइ चलसोदामणिमंडियइं ॥ १२ ॥

13

विसंकालिंदिकालणवजलहरपिहियणहंतरालओ ।
धुयंगयगंडमंडलुड्डावियचलमत्तालिमेलओ ॥
अविरलमुसलसरिसथिरधारावरिसभरंतभूयलो ।
हयरवियरपयावपसरुग्गयतरुतणणीलसद्दलो ॥
पडुतडिवंडणपडियवियडायलरुंजियसीहदारुणो ।
णच्चियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणणो ॥
गिरिसरिदरिसरंतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।
महियलघुलियमिलियदुंदुंहसयवयसालूरपोसणो ॥
घणचिक्खंल्लखोल्लखणिखेड्डयहरिणसिलिंबकयवहो ।
वियसियणवकंलंबकुसुमुग्गयरयपिंजरियदिसिवहो ॥
सुरवइचावतोरणालंकियघणकरिभरियणहहरो ।
विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥
पियपियपियलवंतबप्पीहयमग्गियतोयबिंदुओ ।
सरतीरुल्ललंतहंसावलिझुणिहलबोलसंजुओ ॥
चंपयचूयचारचवचंदणचिंचिणिपीणियाउसो ।
वुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जए सुहयारि पाउसो ॥

४ MBP जायएं. ५ MBP चउदहमइण.

13. १ MBP विसि° and gloss in P सर्पः २ P धुव°. ३ P °ताडिपडण°. ४ M डिंडुह; P डेंडुह; B डुंडुह. ५ MBP °चिक्खिल्ल°. ६ MBP °कयंब°. ७ MBP °बव्वीहय°. ८ P °बिंदओ. ९ MBP °धव°.

---

10 कसणब्भइं कृष्णमेघाः; °सोदामणि° विद्युत्.

13. 1 विस° विषवत्कृष्णमेघः; °कालिंदिकाल° यमुनासदृशकृष्णमेघः 2 °मेलओ मेलापकः समूहः. 3 °थिरधारा° अखण्डवृष्टिः. 4 °सद्दलो °पत्रयुक्तः. 5 °तडि° विद्युत्; वियडायल° विस्तीर्णपर्वतः; रुंजिय शब्दित. 7 °सरसर° °जलस्वर°. 8 दुंदुह° निर्विषः सर्पः. सयवय शतपदः सर्पः; सालूर भेकः. 9 खणिखेड्डय गर्तायां निक्षिप्ताः; सिलिंब शिशुः. 11 °घणकरि° मेघ एव हस्ती. 12 °रोसिय° कोपित. 13 °बप्पीहय° चातकः. 14 °हलबोल° कोलाहलः. 15 पीणियाउसो एषां वृक्षाणां प्राणसिञ्चनं कृतम्. 16 जस्स कालम्मि यस्य नाभिराजस्य काले; सुहयारि सुखकारी.

मुग्गाकुलत्थकंगुजवकलवतिलेसीवीहिमासया ।
फलभरणवियकणिसकणलंपडणिवडियसुयंसहासया ॥
ववगयभोयभूमिभवभूरुह सिरिणरवइरमासही ।
जाया विविहधण्णंदुमवेल्लीगुम्मपसाहणा मही ॥
घत्ता—तं पेक्खिवि[12] जणवउ संचलिउ मउ मेल्लेप्पिणु झत्ति तहिं ॥
लच्छीथणपेल्लियवच्छयलु अच्छइ णाहिणरिंदु जहिं ॥ १३ ॥

14

किं तडयडइ पडइ फोडइ धर विप्फुरंतु णिरु भेसावइ णर ।
वंकउं हरियारुणु किं दीसइ देव देव किं गज्जइ वरिसइ ।
गयकप्पद्दुम तेत्थु णिसण्णा एवहिं अवर के वि उप्पण्णा ।
अण्णइं कणभरियइं णिप्फण्णइं णिच्चमेव खगमृगसंचिण्णइं ।
अम्हइं जड उवायअवियाणा दीहरभुक्खायासें रीणा ।
भोज्जाभोज्जु तेत्थु किं होसइ तं णिसुणेप्पिणु महिवइ घोसइ ।
जो रसंतु वरिसइ सो णवघणु जं वंकउं दीसइ तं सुरधणु ।
जा गिरि दलइ चलइ सा विज्जुल चंचरीयचुंबियकोमलदल ।
सुरतरुवरविणासि सुच्छाया कम्मभूमिभूरुह संजाया ।
कडुयगरलु णीरसु वंचिज्जइ जं महुरउ सुसाउ तं चिज्जइ ।
खत्तियवंसत्थलथिरकंदें एम भणेप्पिणु णाहिणरिंदें ।
णिवडमाणु अब्भुद्धरियउ जणु हत्थिकुंभि किउ मट्टियभायणु ।

घत्ता—कणकंडणसिहिसंधुक्कणइं पयणविहाणइं भावियइं ॥
कप्पाससुत्तपरियट्टणइं पडपरियम्मइं दावियइं ॥ १४ ॥

१० MBP °सुयसमासया. ११ M °वण्ण°. १२ MBP पेच्छिवि.
14. १ MBP °मिग°. MB सिवघणु. ३ P पिज्जइ. ४ MBP परियट्टणइं. ५ P °पडियम्मइं.

17 कलव कलमशालिः सुगन्धशालिः; तिलेसी तिला अलसी च 18 °सहासया °सहस्रकाः. 19 णरवइ-रमासही राज्यलक्ष्मीसखी. 21 मउ मदम्.

14. 1 *a* तडयडइ शब्दं करोति; धर पर्वतान्. 4 *a* अण्णइं क्षेत्रे धान्यानि. 5 *a* उवायअवियाणा उपायाज्ञानाः; *b* भुक्खायासें क्षुधाक्लेशेन. 7 *a* रसंतु शब्दायमानः. 8 *b* चंचरीय° भ्रमराः. 10 *a* कडुयगरलु निम्बगुडूचीप्रभृति; *b* चिज्जइ भुज्यते. 11 *a* थिरकंदें मूलभूतेन. 12 *a* णिवडमाणु निपतन् म्रियमाणः. 13 सिहिसंधुक्कणइं अग्निप्रज्वालनविधिः; भावियइं उत्पादितानि. 14 °परियट्टणइं परिकर्षणानि; °परियम्मइं निष्पादनानि.

15

तासु घरिणि मरुएवि भडारी जाहि रूवसिरि अइगरुयारी ।
अमरहं पंतिइ पयपणवंतिइ लंघियाइं अम्हइं णहयंतिइ ।
कमयलरायं काइं ण विट्ठउ एम णाइं णेउरहिं पघुट्ठउ ।
पण्हिहिं रत्तउ चित्तु पदंसिउं अंगुलियहिं सरलत्तु पयासिउं ।
अंगुट्ठुण्णइइ जं गूढइं गुप्फइं तं किर पिसुणइं मूढइं ।
णीरोमउ विसिरउ वट्टुलियउ मसिणउ लोहियाउ उज्जलियउ ।
जंघउ कमहाणिइ ओहरियउ दिट्ठउ णं खलमित्तइं किरियउ ।
गूढइं णरवइमंताभासइं वायरणाइं व रइयसमासइं ।
णिविड्डसंधिबंधइं णं कव्वइं देविहि जण्णुयाइं अइभव्वइं ।
ऊरुयखंभ णराहिवदमणहु तोरणखंभाइं व रइभवणहु ।
जेण ससुरणरु तिहुयणु जित्तउ कामतच्चु जं देवहिं वुत्तउ ।
दिण्ण थत्ति तहु सोणीबिंबहु किं वण्णमि गरुयत्तु णियंबहु ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्झु किसु उयरु सतुच्छउ दिट्ठु मइं ॥
संसग्गवसें गुणु कासु हुउ जो णवि आयउ जम्मि सइं ॥ १५ ॥

16

तिवलीसोवाणेहिं चडेप्पिणु रोमावलिकुहिणी लंघेप्पिणु ।
सिहिणगिरिंदारोहणदोरइ लग्गउ वम्महु मोत्तियहारइ ।
पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ सुइसोहग्गु जाहि हत्थयलइ ।

15. १ T णहकंतीए but adds: णहयंतिइ इति पाठे आकाशादागत्येत्यर्थः २ MBP चित्तु पदरिसिउ; T चित्तु वृत्तत्वम् ३ MBP गुंफइं. ४ P दिट्ठा णं. ५ M °समाणइं ६ MBPK ऊरुखंभ. ७ MBP ससुरयणु. ८ M सवित्थरु.

15. 2 *b* णहयंतिइ आकाशादेत्या, अथवा नखकान्त्या. 3 *a* कमयलेत्यादि-नूपुरं इति हेतोः शब्दं करोत्यस्माकमवज्ञां विधाय चरणतलरागे किं दृष्टं देवपंक्त्या; काइं किम् ; ण विट्ठउं दृष्टम्. 4 *a* रत्तउ चित्तु भर्तरि रक्तं चित्तम्. 6 *a* विसिरउ शिरारहिता; *b* मसिणउ स्निग्धा. 7 *a* ओहरियउ अपकर्षं गता. 8 *a* गूढइं प्रच्छन्नानि; णरवइमंताभासइं राजमन्त्रसदृशानि; *b* रइयसमासइं षट् समासाः कर्मधारयादयः, पक्षे मांसयुक्तानि. 9 *a* णिविडसंधिबंधइं सुश्लिष्टपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च.

16. 1 *a* चडेप्पिणु आरुह्य; *b* °कुहिणी मार्गः. 2 *a* सिहिण° स्तन°; °दोरइ सूत्रे रज्ज्वाम्. 3 *a* पियवसियरणु प्रियवशीकरणम्; *b* सुइ° निर्मलम्.

णेहबंधु मेणिबंधि परिट्ठिउ लायण्णें समुंहु ण संठिउ ।
जाहि तणउं तं जणियवियारउं महुरउ इयरहु केरउ खारउ ।
कंठलीह णउ कंवुं पावइ परसासाऊरिउ कँह जीवइ ।
णियंइणिविट्ठउ जियससिकंतिहि धोयहि धवलहि दंतहु पंतिहि ।
अहरबिंबु रेहइ रायालउ मुत्तावलियहि णाइं पवालउ ।
अम्हहं ठाइ कयाँइ ण संमुहु उज्जुउ णासावंसु वि दुम्मुहु ।
भउंहउं वंकत्तणु वि ण सहियउ णयणहिं गंपि व कण्णहुं कहियउ ।
णिसि दिणि ससि रवि गयणविलंबिय बिण्णि वि गंडयलइ पडिबिंबिय ।
कुंडलसिरि वहंति धवलच्छिहि जिणजणणियहि सँलक्खणकुंच्छिहि ।
कुडिलालय भालयलि णिरंतर मुहकमलंहु घुलंति णं महुयर ।
अंवरु वि ताहं भारु विवरेरउ मुहससहरभएण णं तमरउ ।
तरुणिहे पंट्ठि पइट्ठुंउ दीसइ कुसुमरिक्खमीसियउ विहासइ ।

घत्ता—पँणवंतिउ अमरविलासिणिउ छाहिणिहेण णिहीणियउ ॥
चारुत्तणकंखइ सुंदरिहि पयणहदप्पणलीणियउ ॥ १६ ॥

17

तियसमहीरुहपिहियदसासइ भारहवरिसहु मज्झुद्देसइ ।
णं जियलोउ समुग्गयसंतिइ सरयागमु णं छणससिकंतिइ ।
णं सज्जणु गुणिलोयपसंसइ णं आलिंगिउ धम्मु अहिंसइ ।

16. MBP मणिबंधु. २ BP समुद्दु णं. ३ MB कंचुउ; P कंबुउ and gloss शंखः. ४ M कहिं. ५ M णिविड° ६ P कयावि. ७ MBP सुलक्खण°. ८ P °कुक्खिहि. ९ MB अविरुवि. १० K पुट्ठि. ११ P बइच्छउ. १२ BP पणमंतिउ.

4 *a* मणिबंधि प्रकोष्ठे; लायण्णें लावण्येन समुद्रः सदृशो न. 5 *a* जणियवियारउं जनितरोगादिकम् ; *b* इयरहु इतरस्य समुद्रस्य. 6 *a* कंठलीह कण्ठरेखा; *b* परसासाऊरिउ परश्वासपूरितः 7 *a* °ससियंतिहि चन्द्रकान्त्या. 9 *a* ठाइ तिष्ठति; *b* दुम्मुहु द्विमुखो दुर्मुखश्च. 14 *b* तमरउ तमःप्रवाहः. 15 *b* °रिक्ख° तारागण°. 16 छाहिणिहेण प्रतिबिम्बच्छद्मना: णिहीणियउ निहीनाः कृतं देव्याः. 17 पयणहदप्पणलीणियउ पदनखदर्पणे लीनाः.

17. 1 *a* तियसमहीरुह° कल्पवृक्षाः; °पिहियदसासइ °आच्छादितदशादिशि. 2 *a* समुग्गयसंतिइ समुद्गतशान्त्या.

पीवरपीणपयोहरकयकरु ताइ समउ सो पच्छिमकुलयरु ।
अच्छइ णाहिणरेसरु जइयहं सुयरइ सुरवइ णियमणि तइयहं ।
सुरणरवंदणिज्जु जगि सारउ गुरुसंसारमहण्णवतारउ ।
कामकंदकप्परणकुठारउ होसइ पयडु भवणि भडारउ ।
इय संचिंतिवि पुणु परिछिण्णउं इंदें धणयहु पेसणु दिण्णउं ।
धणय धणय लहु करि णिरु भल्लउ पुरवरु चउदुवारु सोहिल्लउ ।
ता तं पेसणु जक्खें लइयउं खणि साकेयणयरु पविरइयउं ।

घत्ता—जहिं पवणाइरियवसेण णंदणवणइं सुपत्ताइं ॥
णच्चंति फुल्लमुहमुक्केण मयरंदेण व मत्ताइं ॥ १७ ॥

18

जहिं सरवरि सिरिपयसंफासें वियसइ कमलु णाइं संतोसें ।
परभुत्तें विमुक्कतमदोसें अहवा णंदिउ को वे ण कोसें ।
तं तेहउ वि पीलु किं भंजइ महुयरउलु णं रोसें रुंजइ ।
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ अवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।
वडपारोहइ हिंदोलंतिहिं ओइउ जक्खिहिं दरपहसंतिहिं ।
जहिं कइ अइपहसणरसधारउ सुइ णियदिट्ठि धिवइ सवियारउ ।
रत्तउ सारसियहि जहिं सारसु को वि परिट्ठिउ अहिणवु सारसु ।
सहइ तमालंधारयसारिउ जहिं कलु कोइलु लवइ णिरारिउ ।

17. १ M पओरुह°. २ MPT सुमरइ; B सुअरइ and gloss स्मरति. ३ MBP जग° ४ B °समुण्णव°. ५ MB °कुढारउ; K °कुठारउ but corrects it to °कुढारउ. ६ MBP चउदुवारसोहिल्लउ. ७ MBP पवणायरिय°. ८ MBP °मुक्कएण.

18 १ M परिभुत्तें. २ P को वि. ३ P कइ. ४ BP कइवइ पहसण°. ५ M को ण. ६ MBP अहिणव° ७ MBP कलु.

4 *a* °कयकरु °कृतकरः; *b* समउ सह. 5 *b* सुयरइ स्मरति. 7 *a* °कप्परण° °छेदन°. 8 *a* परिछिण्णउं ज्ञातम्, निश्चितम्. 10 *a* लइयउं गृहीतम्. 11 पवणाइरिय° वायुरेव आचार्यः.

18. 1 *a* सिरिपयसंफासें लक्ष्मीपदस्पर्शेन. 2 *a* परभुत्तें हंसैः अन्यैश्च भुज्यते; विमुक्कतमदोसें पापोज्झितेन, अथवा, तमः क्रोधः, पक्षे तिमिरयुक्तरात्रिरहितेन: *b* कोसें कर्णिकया द्रव्येण च. 3 *a* पीलु हस्तिबालः; *b* रुंजइ शब्दं करोति. 5 *b* दर° ईषत्. 6 *a* कइ कपिः; अइपहसणरसधारउ अतिप्रहसनधारकः हास्यं कारयतीत्यर्थः; सुइ शुके. 8 *a* तमालंधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारस्य सा लक्ष्मीस्तस्या रिपुः; *b* णिरारिउ अनिवारितम्.

पवरंबयकलियहि डोइयकरु महिलहि को ण होइ चाडुययरु ।
जहिं भाविणि ण करइ परपइरइ बीउ धरित्तिहि को उं ण पइरइ ।
अट्ठारहवरसासविहत्तइं जहिं सयमेव सुपक्कइं छेत्तइं ।

घत्ता—जहिं धण्णइं कणभरपणँमियइं परिभमंति सच्छंद पसु ॥
वणसेरिहसिंगपहारचुउ महिसिहिं पिज्जइ उच्छुरसु ॥ १८ ॥

19

छुडु छुडु भोयभूमि जहिं वित्ती रिद्धिसमिद्ध विसुद्ध धरित्ती ।
चिंतिउ चिंतिउ देंति ण थक्कइ पुव्वब्भासु ण मेल्लहुं सक्कइ ।
जहिं थलि थलकमलोवरि सुप्पइ पइ पइ पउमहु पंके लिप्पइ ।
दक्खारसु णरेहिं चक्खिज्जइ फलु अउव्वु काइं मि भक्खिज्जइ ।
कुवलयधराणिउ णं णिवईहउ जहिं परिहाउ वहंति पईहउ ।
णं भविस्सजिणजम्मोयरियउ ण्हवणारंभहु णाणासरियउ ।
बहुमाणिक्कमऊहपहावहिं णं गयणंगणु सुरवइचावहिं ।
असियसियारुणवण्णवियारहिं जं सोहइ सत्तहिं पायारहिं ।

घत्ता—जं दियहि दिवायरकंत रविकिरणहिं सिहिभावहु गयउ ॥
तं णीवइ णिसि ससियरपुसियससिमणिजलधाराहयउ ॥ १९ ॥

८ P णउ. ९ MBP खेत्तइं. १० MBP पणवियइं.

19. १ BP °समिद्धिविसुद्ध. २ P मेलहुं. ३ MB पउमें पंकहु चिप्पइ; P पउमहु पंकेहिं चिप्पइ. ४ MB दक्खारसु णरेहिं जहिं पिज्जइ. ५ M adds after this line: मुहमहुरत्ति भिरिय भक्खिज्जइ, and gloss मुखस्य मधुरत्वे सति; P reads in its place मुहमहुलति भिरिय भक्खिज्जइ, and after it reads किंणरमिहुणिहिं लयहरि गिज्जइ, फलु अउव्वु काइं मि भक्खिज्जइ. ६ MB add after this line किंणरमिहुणिहिं लयहरि गिज्जइ, जिणु गाइज्जइ जिणु पुइज्जइ. ७ M जहिं परिहा वहंति पयईहउ. ८ MBP °पहावें. ९ MBP °चावें.

9 *a* अंबयकलिय आम्रकालिका. 10 *a* परपइरइ परपुरुषरतिम्; *b* बीउ बीजम्; पइरइ प्रकिरति; 11 *a* °सास° सस्य. 13 °सेरिह° महिषः. भरित्र्यामकृष्टपच्यानि धान्यानीत्यर्थः.

19. 1 *a* छुडु छुडु यदा यदा, वित्ती समाप्ता. 2 *b* पुव्वब्भासु कल्पवृक्षवद्वाञ्छितवस्तुप्रदानाभ्यासः. 3 *b* पंके मकरन्दकर्दमे. 5 *a* णिवईहउ नृपवाञ्छयेव. *b* परिहाउ खातिकाः; पईहउ प्रदीर्घाः. 7 *a* °मऊह° °किरण° 8 *a* असियसियारुण° कृष्णश्वेतरक्त°. 9 दिवायरकंत सूर्यकान्तमणयः; सिहिभावहु अग्निभावम्. 10 णीवइ विध्यापयति; °पुसिय °स्पृष्टाः; °ससिमणि °चन्द्रकान्तमणयः.

20

मरगयकयघरि पक्खविहूसिउ जहिं चंचुइ लक्खिज्जइ पूसउ।
इंदणीलघरि णहविप्फुरणें विमलें मोत्तियदामाहरणें।
आणिज्जइ सामा पहसंती णाहें णवकुंदुज्जलदंती।
कणयरइयमंदिरि वियरंती अवेरविसंझाराउ वहंती।
करकंकणु करफंसें जाणइ णेउरसद्देण जि अहिणाणइ।
दहिकुट्टिमयलि दइएं आणिउ कलरावेण हंसु परियाणिउ।
तहिं जि पडीवउं जहिं सियणिवसणु ठविउ ण पेच्छइ अइभोलउ जणु।
फलिहसिलालयमज्झि णिविट्ठउ पिहियकवाडु वि वहुवरु दिट्ठउ।
पोमरायमंडवि आसीणी जेत्थु का वि हरिणच्छि पहाणी।
घुसिणपिंडु ण णियंति विसूरइ जहिं सोहाइ ण सग्गु वि पूरइ।
चंदणचिक्खिल्लें पहु चिड्डइ जहिं कप्पूरधूलि णहि उड्डइ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु संविहिउ ॥
वइसवणें एक्केक्कु जि मिहुणु जहिं आणिवि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

21

मंदिरि मंदिरि सहसा भरियइं तोरणाइं रयणहिं विप्फुरियइं।
गिज्जंतें मंगलसंघाएं देवदिण्णपडुपडहणिणाएं।
घरसंचारियकलस वि दिट्ठा सरयब्भेसु वे चंद पइट्ठा।
णिग्घुप्पाइयसुरयणहरिसहि संमज्जियदप्पणयलसरिसहि।
विहुतारावलिदिणयरपंगणु दीसइ भूमिहि सयलु णहंगणु।
गुरुअब्भासणभयवसणडियउ णं सोहइ पायालइ पडियउ।

20. १ B पंख°. २ MBP अवरु वि. ३ MBP करफंसें. ४ M फलिहसिलायलमज्झि; BP °सिलायलि मज्झि. ५ MBP पउ but gloss in P पन्थाः.

21. १ MBP °संचारिम°. २ MBK य.

---

20. 1 *a* पक्खविहूसिउ पक्षयोर्विशिष्टा भूषा यस्य; *b* पूसउ शुकः. 5 *b* अहिणाणइ अभिजानाति. 6 *a* दहिकुट्टिमयलि धवलशिलोपरि; दइएं भर्त्रा. 7 *a* पडीवउं पतितम्. 8 *a* फलिहसिलालय° स्फटिकगृहम्; *b* वहुवरु वधूवरम्. 9 *b* पहाणी चित्रकारिणी स्त्री. 10 *a* ण णियन्ति रक्तत्वादपश्यन्ती; विसूरइ खिद्यते. 11 *a* पहु पन्थाः; चिड्डइ आर्द्रीभवति. 13 माणिवि मानयित्वा.

21. 1 *a* सहसा शीघ्रम्; भरियइं बद्धानि. 5 *a* विहु° चन्द्रः. 6 *a* अब्भासण° हीलना.

इहु सो दिट्ठउ इट्ठु महारउ इय णं भण्णिवि णयणपियारउ।
भवणसिहरखंडियं खे लंबिउ जहिं णवजलहरु मोरें चुंबिउ।
णउ चोरउलु [३]विरोहि ण राउलु सूलभिण्णु णउ दीसइ देउलु।
बंभणु वणिवरु ण हलु ण हालिउ णउ पासंडिउ को वि क[४]वालिउ।
धम्मु ण धणुहुं ण जि[५]णवइभासिउ प[६]सुवह वाहिं ण वेयं घोसिउ।
वेस ण कत्थइ वइसियजुत्ती अज्जव सव्वैं[७] णारि कुलउत्ती।
जहिं ण महव्वय पंचाणुव्वय कुच्छियकारिणि णउ कारुय पय।

घत्ता—सामण्णइं सयलइं माणुसइं जहिं एक्कु वि सुविसेसिउ॥
सियपुप्फयंतु सो [८]णाहिणिउ जो भरहेण विहूसिउ॥ २१॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उज्झाणयरीवण्णणं णाम दुइज्जो परिच्छेओ समत्तो॥ २॥

॥ संधि॥ २॥

---

३ P विरोहु. ४ P कपालिउ. ५ MBP जिणवर°. ६ M पसुवह वहणु ण; B पसुवहु वहणु ण; P पसु अहवाहणु. ७ MBP णारि सव्व. ८ K णाहिणिवु.

---

7 *b* °पियारउ °प्रियतमः. 8 *a* खे आकाशे. 9 *b* सूलभिण्णु शूलं कलशमध्ये प्रोतं काष्ठं तेन युक्तं देवगृहं चैत्यालयादि न दृश्यते. 11 *b* वाहिं व्याधेन. 12 *a* वेस वेश्या; वइसियजुत्ती वेश्यानां युक्तिर्वचनम्; *b* अज्जव आर्या. 13 *b* कुच्छियकारिणि कुत्सितकारिणी; कारुयपय शिल्पजीविनां प्रजाः. 14 सामण्णइं समानविभूतियुक्तानि. 15 सियपुप्फयंतु शुभ्रपुष्पतुल्यदन्तः; भरहेण भरतक्षेत्रेण, कारापकपक्षे भरतमहाभव्येन.

III

तहिं जाम मणोज्जु भुंजइ रज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥
मंडियसविमाणु कालपमाणु चिंतइ ताम सुरिंदु ॥ ध्रुवकं ॥

1

पेहहि महिणाहें माणियहे उयरइ मरुएविहि राणियहे ।
छम्मासहिं होसइ परमजिणु णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि गब्भासयसोहणु लहु करमि ।
लइ पउ जि कज्जु महुं तणउं दक्खालमि पेसणु घणघणउं ।
इयं चिंतिवि पुणु हियवइ धरिय छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर वर कंति कित्ति लच्छी य वर ।
छ वि एयउ चारु चवंतियउ पणएण णाएण णेवंतियउ ।
इंदीवरदीहरणेत्तियउ सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।
वेल्लहललयाँणिहगत्तियउ देविंदें झत्ति पउत्तियउ ।

घत्ता—आइवि णरलोउ भुंजियभोउ णाहिणरेसँहु गेहु ॥
जिणगब्भणिवासु दुक्कियणासु सोहहु देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुत्तरात् for which see footnote on Second Samdhi; MBP give the following stanza:—

बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।
संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

1. १ MBP भोज्जु. २ MP एयहि; B एवहि. ३ MBP छहिं मासहिं. ४ MBP इय चिंतेविणु हियवइ. ५ P णमंतियउ. ६ M °लयाणियवत्तियउ; BP °लयाणिय° ७ MBP °णरेसरगेहु.

---

1. 1 मणोज्जु मनोज्ञम्; णिच्चलु निश्चलम्. 2 मंडियसविमाणु मण्डितस्वविमानः इन्द्रश्चिन्तयति; कालपमाणु तृतीयकालस्यान्तः कियान् वर्तते. 4 *b* णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वार्थसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽवतरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति. 5 *a* सम्मत्तसमत्तणु सम्यक्त्वस्य समग्रत्वम्; संभरमि संस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थः; *b* °सोहणु °शोधनम्. 6 *b* घणघणउं सातिशयम्. 8 *a* ललियकर कोमलहस्ताः *b* वर पराः उत्कृष्टाः. 9 *a* छ वि एयउ एताः श्र्यादिषड्देवताः. 10 *a* इंदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्राः; *b* सुरणाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिरं, इन्द्रालयम्. 11 *a* वेल्लहललयाणिहगत्तियउ कोमललतानिभगात्राः; *b* पउत्तियउ प्रयुक्ताः.

2

ता संचलियउ सुररमणियउ मेहलरंखोलिरेरमणियउ ।
कयसग्गालयणिग्गमणियउ मयमंथरसिंधुरगमणियउ ।
तेल्लोक्कमारमणदमणियउ विरयाहुं मि रयमणदमणियउ ।
कुंडलचंचइयकवोलियउ णं मयणें बाणकओलियउ ।
जंतिउ जोयंति ण के सियउ अलिसंणिहभंगुरकेसियउ ।
तणुतेउज्जोइयअंबरउ घोलंतविचित्तवरंबरउ ।
णयसत्तभंगिविहिरसणियउ मिच्छामयहेउणिरसणियउ ।
णिरु सूहवदाणवारिरयउ णं भमरिउ दाणवारिरयउ ।

घत्ता—एयउ अण्णाउ सुरकण्णाउ धरिवि णिकामिणिवेसु ॥
आयाउ परेण भत्तिभरेण सिरिमरुएविहि पासु ॥ २ ॥

3

परमेसरि सुरवरलोयचुया कोमलमुणालवेल्लहलभुया ।
दीसइ सुरणारिहिं अज्जसुया णं विहिविण्णाणसमत्तिहुया ।
सव्वंगावयवसुलक्खणिया फणिसुरणरमणमुसुमूरणिया ।
वंदारयवंदियपायजुया अइललियहिं थोत्तसएहिं थुया ।

2. १ T reads °रंखोलन° but adds: रंखोलिरेति पाठ मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः. २ MBP विरयाहिं but gloss विरतानां यतीनाम्. ३ B कोंडलचेंचइय°; M °चिंचइय°. ४ B बाणकम्मु लियउ; P बाणकवोलियउ and gloss बाणकृतरेखा: ५ K मिच्छायम°; P मिच्छामय° but gloss मिथ्यागम°. ६ MBP आइयउ.

3. १ MBP °थुय. २ M विहिअण्णाण°.

2. 1 *b* मेहलेत्यादि–मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः 2 *a* कयेति–कृतं स्वर्गालयाभिर्गमनं याभिः; *b* मयमंथर° मदेन मन्थरो मन्दः; °सिंधुर° हस्ती 3 *a* तेल्लोकेत्यादि–त्रैलोक्यस्य मारमणा लक्ष्मीपतयः तेषां दमनिका.; *b* विरयाहु यतीनाम्; रयमणदमणियउ रते सुरते मनः रतमनः तद्ददातीति रतमनोदं मणितं यासाम्. 4 *a* °चचइय° भूषितौ. *b* मयणें बाणकओलियउ मदनेन कृताः बाणपंक्तयः इव.5 *a* जो यं ति ण के पश्यन्ति न के, अपि तु सर्वे मनुष्या देवा वा पश्यन्ति; सियउ श्रियः. 6 *a* अंबरउ आकाशम्; *b* °वरंबरउ देवाङ्गवस्त्रम् 7 *a* णयेत्यादि–नया नैगमादयः सप्तभङ्गी च तेषां विधि. रसनायां जिह्वायां यासां ताः; *b* मिच्छेत्यादि–मिथ्यामत तस्य हेतवः तेषां निरसनिकाः. 8 *a* दाणवारि° इन्द्रादयो देवाः; *b* दाणवारिरयउ मदवारिणि रताः, अथवा मदजले रयो वेगो यासां ताः. 9 णिकामिणि° मनुष्यस्त्री (नृकामिनी).

3. 1 *a* °चुया °च्युता; *b* °वेल्लहल° कोमल°. 2 *a* अज्जसुया भोगभूमिजस्य पुत्री; *b* विहिविण्णाणसमत्तिहुया विधिविज्ञानसमाप्तिभूता उत्तमरूपत्वात्. 3 *b* मणमुसुमूरणिया मनोद्रावि का. 4 *a* वंदारय° देवाः,

अव्वो जय जय जगगुरुजणणि जय थणयलविलुलियहारमणि ।
जय कम्मकाणणाणलअरणि जय धम्मविडवसंभवधरणि ।
पइं दिट्ठइ णिट्ठइ पावमलु संपज्जइ संचिंतिउ सयलु ।
पइं लद्धउं महिलाजम्मफलु तुह कुच्छिहि होसइ जिणधवलु ।

घत्ता—णिरु सरसु णडंतु पयहिं पडंतु विरइयपंजलिहत्थु ॥
संपाइय पइ इच्छइ सेव अमरविलासिणिसत्थु ॥ ३ ॥

4

क वि अलयतिलय देविहि करइ क वि आदंसणु अग्गइ धरइ ।
क वि अप्पइ वररयणाहरणु क वि लिप्पइ कुंकुमेण चरणु ।
क वि णच्चइ गायइ महुरसरु क वि पारंभइ विणोउ अवरु ।
क वि परिरक्खइ णिसियासिकरी क वि वारि परिट्ठिय दंडधरी ।
अक्खाणउं का वि किं पि कहइ दिण्णउं कणइल्लु का वि वहइ ।
क वि वारवार विणएं णवइ क वि सुरसरिसरसलिलहिं ण्हवइ ।
क वि मालउ चेलिउं उज्जलउ ढोयइ सवलहणु सुपरिमलउ ।
छम्मासु जाम संजणियदिहि पयडंतु समीहिय सोक्खणिहि ।
णिवपंगणंति णिहिणिहियधणु वुट्ठउ रयणिहिं वइसवणु घणु ।

घत्ता—हंसि वँ सरपोमि रम्मि सुहम्मि उरविलुलियहारावलि ॥
सोवंति समग्गि सयणयलग्गि सइं पेच्छइ सिविणावलि ॥ ४ ॥

३ P णट्टइ. ४ MBP विरइयअंजलि°. ५ MBP संपाइउ. ६ MBP इच्छियसेव.

4. १ P कणयल्लु. २ P चेलउ. ३ M ढोइय. ४ MBP समलहणु. ५ MBP °पंगणंति. ६ MB वइसवणघणु. ७ M हंसियवरपोमि; BP हंसि व वरपोमि. ८ MB पेच्छिवि. ९ MBP सुइणावलि.

5 *a* अव्वो हे मातः. 6 *a* °अरणि अग्न्युत्पादककाष्ठम्, कर्मदहनसमर्थकरदेवोत्पत्तिहेतुत्वात्; *b* °विडव° पादपः. 7 *a* णिट्ठइ नश्यति. 8 *b* जिणधवलु जिनवृषभः. 10 सेव सेवाम्; °सत्थु सार्थः समूहः.

4. 1 *a* अलयतिलय अलिके ललाटे तिलकम्; *b* आदंसणु दर्पणः 3 *b* विणोउ विनोदम्. 4 *b* वारि द्वारे. 5 *a* अक्खाणउं कथानकम्; *b* कणइल्लु क्रीडाशुकः. 7 *a* मालउ पुष्पमालाः; चेलिउ वस्त्रशाटी; *b* सवलहणु विलेपनम्. 9 *a* पंगणंति प्राङ्गणमध्ये; णिहिणिहियधणु निधिषु निहितं स्थापितं धनं येन; *b* रयणिहिं रत्नैः; वइसवणु घणु धनद एव मेघः. 10 सरपोमि सरोवरपद्मे; सुहम्मि शोभनप्रासादे; 11 समग्गि सम्मं अग्गं उपरितनभागो यस्य; सयणयलग्गि शयनतले अग्रे प्रधाने.

5

पत्तिया सणाहणेहरत्तिया ।
सुत्तिया णिमीलियच्छिवत्तिया ।
कामए णिसाविरामजामए ।
इच्छए सुहावहं णियच्छए ।
कंतयं चउप्पयारदंतयं ।
णिब्भरं झरंतदाणणिज्झरं ।
संसयं सरासणाहवंसयं ।
तुंगयं मिलंतमत्तभिंगयं ।
वारणं गिरिंदभित्तिदारणं ।
पंतयं बलेण ढेक्करंतयं ।
गोवइं अलद्धजुज्झगोवइं ।
दुद्धरं फुरंतणक्खपंजरं ।
भासुरं घुलंतकंधकेसरं ।
कोवणं जलंतपिंगलोवणं ।
भीसणं मुहा विमुक्कणीसणं ।
सीहयं विलंबमाणजीहयं ।
अंचियं दिसागएहिं सिंचियं ।
लच्छियं विबुद्धपंकयच्छियं ।
रुंदयं पहुल्लदामदंदयं ।
संमुहं समुग्गयं सुहारुहं ।
भाहरं सुदूसहं तमीहरं ।

5. १ PGT record a *p* अलद्ध and add: अलद्ध इति पाठे अलद्धो असुरो युद्धे गोपतिर्यस्य. २ M कोअणं. ३ MB °लोअणं. ४ MBP मुहोविमुक्क° ५ M °सिंचय. ६ MPT °दुंदयं.

5. 1 *a* पत्तिया पत्नी; *b* सणाह° स्वनाथ°. 2 *b* णिमीलियच्छिवत्तिया निमीलिताक्षिपक्ष्मा. 3 *a* कामए कामदे वाञ्छितप्रदे कामोद्रेकजनके वा; *b* °विरामजामए °पश्चिमयामे. 4 *a* इच्छए स्वेच्छया; *b* णियच्छए निरीक्षते. 5 *b* चउप्पयारदंतयं चतुर्दन्तमित्यर्थः. 7 *a* संसयं प्रशंसनीयम्; *b* सरासणाहवंसय धनुराकारपृष्ठम्. 11 *b* अलद्धजुज्झगोवइं अलब्धो युद्धार्थं गोपतिर्बलीवर्दो येन. 15 *b* मुहा विमुक्क° मुखेन मुक्तः. 17 *a* अंचियं पूजितम्; *b* सिंचियं स्नातम्. 18 *b* विबुद्धपंकयच्छियं विकसितपद्मनेत्राम्. 19 *a* रुंदयं गरिष्ठम्; *b* पहुल्ल° प्रफुल्ल°; °दंदयं °द्वन्द्वम्. 21 *b* तमीहरं रात्रिविनाशकं चन्द्रम्.

हंसयं खमाणसेक्कहंसयं ।
रत्तयं सरंतरे तरंतयं ।
रम्मयं चलं झसाण जुम्मयं ।
उब्भडं घियं[७]भकुंभसंघडं ।
मायरं प[८]फुल्लपंकयायरं ।
सायरं र[९]संतवारिभीयरं ।
आसणं म[१०]यारिरूवभू[११]सणं ।
सुंदरं पुरंदरस्स मंदिरं ।
सोहणं महाहिणो णिहेलणं ।
उं[१२]च्चयं मणेयर[१३]ण्णसंचयं ।
दित्तयं हुयासणं पलित्तयं ।

घत्ता—इय जोइवि मुद्ध पुणु पडिबुद्ध सिविणइ जं जिह दिट्ठु ॥
उइयइ पच्चूहे अरुणमऊहे रायहु तं ति[१४]हिं सिट्ठु ॥ ५ ॥

6

ता णरवइ णारीसारियहे अक्खइ मरुएविभडारियहे ।
दिट्ठेण गइंदें गुरुहुं गुरु होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।
गोणाहें गोमंडलु धरइ सीहेण सविक्कमु वित्थरइ ।
सिरिदंसणि लहइ तिलोयसिरि दामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।
पावइ पविहररइयण्हवणउं जं दिट्ठउ पइं मयलंछणउ ।

७ BT विंयंभ and gloss in T विंयंभोऽमृतजलम्. ८ P पफुल्ल°. ९ MBP सरंत°. १० M सयारि°. ११ MBP °भीसणं. १२ MBP उच्चयं. १३ B °रयण°. १४ B तिहे.

22 *a* हंसयं आदित्यम्; *b* खमाणसेक्कहंसयं गगनमेव मानसरोवरं तस्य हंसम्. 23 *a* रत्तयं अन्योन्यक्रीडारतम्. 24 *b* जुम्मयं युग्मम्. 25 *a* उब्भडं प्रकटम्; *b* घियंभ° घृतजलकुम्भयुग्मम्. 26 *a* मायरं लक्ष्मीकरम्. 27 *b* रसंतवारिभीयरं शब्दायमानजलभयानकम्. 28 *b* मयारि° सिंहः. 29 *b* पुरंदरस्स मंदिरं विमानम्. 30 *b* महाहिणो नागेन्द्रस्य; णिहेलणं गृहम्. 31 *b* रण्ण° रत्न°. 32 *b* पलित्तयं प्रदीप्तम्. 34 पच्चूहे आदित्ये; अरुणमऊहे आरक्तकिरणे.

6. 1 *a* णारीसारियहे स्त्रीमध्ये उत्तमायाः. 3 *a* गोणाहें वृषभेण; गोमंडलु भूमण्डलम्. 4 *b* पुरिसहरि पुरुषसिंहः. 5 *a* पविहर° इन्द्रः.

तं होसइ सुउ जणमणहरणु जं पुणु वि पेलोइउ खरकिरणु ।
तं मोहंधारविणासयरु भव्वयणणलिणवणदिवसयरु ।
झसजुयलें दोही सोक्खणिहि कुंभेहिं वि सुरअहिसेयविहि ।
कमलायरसायरेहि बिहिं मि गुणवंतु गहिरु भुवणहं तिहिं मि ।
सिंहासणेण पंचमिय गइ पावेसइ दंसणसुद्धमइ ।
दिट्ठेहिं तियसणायहं घरेहिं सेवेवेउ देविहिं विसहरेहिं ।
रयणोहें जिणसंपत्तिफलु णिड्डहइ हुयासें कम्ममलु ।

घत्ता—सिविणयफलु अज्जु णिरु णिरवज्जु कहमि ण रक्खमि गुज्झु ॥
जगलग्गणखंभु धम्मारंभु होसइ णंदणु तुज्झु ॥ ६ ॥

7

ता तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि कालम्मि णक्खत्तसोहंतगयणंतरालम्मि ।
कप्पद्दुमच्छेयपयणियवियारम्मि ससिबिंबरविबिंबधत्थंधयारम्मि ।
अवसप्पिणीसप्पिणीसंपवेसम्मि णरभोयपब्भारसुहमरियगासम्मि ।
मायामहामोहबंधणइं लुंचेवि साराइं पउराइं पुण्णाइं संचेवि ।
सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि जगणामियतित्थयरणामं समज्जेवि ।
इंदियइं णिंदियइं णिग्घिणइं भंजेवि तेत्तीसजलणिहिसमाणाउ भुंजेवि ।
अब्भंतराबद्धसुकियपहावेण हिमहारणीहारसियवसहरूवेण ।
आसाढमासम्मि किण्हम्मि बीयम्मि संपत्तए उत्तरासाढरिक्खम्मि ।
सव्वत्थसिद्धीविमाणाउ ओयरइ परमेसरो जणणिगब्भम्मि संचरइ ।

6. १ M पुलोइउ; P पलोयउ. २ MB सेवेव्वउ.
7. १ B सुक्कय°.

6 *b* खरकिरणु सूर्यः. 8 *a* झसजुयलें मत्स्ययुग्मेन, *b* सुरअहिसेय° देवाभिषेक°. 10 *a* पंचमियगइ मुक्तिः. 11 *a* °णायहं °नागानाम्. 14 जगलग्गण° जगदाधार°.

7. 2 *a* कप्पद्दुमच्छेयपयणियवियारम्मि कल्पद्रुमविच्छेदेन जनितविकारे; *b* धत्थंधयारम्मि ध्वस्तान्धकारे. 3 *a* अवसप्पिणीसप्पिणी° अवसर्पिणीकाल एव नागिणी; *b* °गासम्मि भोगग्रासे. 5 *a* सोलह दर्शनविशुद्ध्यादयः षोडश भावनाः; पहावेवि प्रभाव्य. 6 *b* °समाणाउ °समानं आयुः. 7 *b* हिम° अवश्यायो नीहारो वा; °सियवसह° धवलवृषभः. 8 *a* किण्हम्मि बीयम्मि कृष्णद्वितीयायाम्. 9 *b* संचरइ संचरणं प्रवेशं करोति.

सरयब्भमज्झम्मि रुइरुंदइंदु व्व सयवत्तिणीपत्तए तोयबिंदु व्व ।
आया सुरा गब्भवासं णमंसेवि सग्गं गया रायदेविं पसंसेवि ।
तव्वासराए व देवाहिवाणाइ रक्खिवणाइंदपालिज्जमाणाइ ।
जक्खेण माणिक्कवुट्ठी कया ताम मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्थु अवाहु वड्ढइ णाहु तणुकिरणइं पसरंति ॥
मरुदेविहि देहे णं णवमेहे णवरवियर णिग्गंति ॥ ७ ॥

8

मासम्मि चइत्ते पक्खे कसणे अहिमयरवारि फुडणवमिदिणे ।
उत्तरआसाढारिक्खवरे जोयम्मि बंम्हि बहुसोक्खयरे ।
जिणु तियसालावणीहिं झुणिउ मरुदेविइ णंदणु संजाणिउ ।
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।
णं विप्फुरंतु अरणीइ सिहि णं दिक्खालिउ धरणीइ णिहि ।
णं जीवसहाउ सिद्धसहए णं अत्थु महाकइकयकहए ।
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ णं गुणगणु पुंजेप्पिणु ठविउ ।
जगु णरयपडंतउ णाविं सहिउ णं धम्में पुरिसरूवु गहिउ ।

घत्ता—जणतमणिण्णासु लोयपयासु कित्तिवेल्लिघरकंदु ॥
मयमलपब्भट्ठु कुवलयइट्ठु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

२ M °रुंदयंदु व्व; T °इदु व्व. ३ MBP रायदेवी. ४ MBP जक्खिंद°, but T रक्खिंद° राक्षसेन्द्राः.

8. १ B चइत्तहो; P चइति. २ MBP फुडु. ३ MBP बंभि. ४ M मरुदेविं; B मरुदेवे; P मरुदेवी°. ५ P दिक्खालउ and gloss दर्शितः. ६ MP णरइ पडंतउ. ७ MB णउ.

10 *a* रुइरुंदइंदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 *a* तव्वासराए तद्दिनादारभ्य; देवाहिवाणाइ इन्द्रस्याज्ञया. 14 अवाहु बाधारहितः. 12 णवरवियर बालार्करश्मयः.

8. 1 *b* अहिमयरवारि रविदिने. 3 *a* तियसालावणीहिं त्रिदशवीणाभिः; झुणिउ गायितः. 4 *a* तवणीयछवि सुवर्णकान्तिः; *b* सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव. 6 *a* सिद्धसहए सिद्धसभया श्रेण्या, यथा सिद्धध्यानेनात्मा दृश्यते. 10 मयमल° मदाश्च मलाश्च, अन्यत्र मृगः एव मलः; कुवलय° पृथ्वीमण्डलं कुमुदसंघातश्च.

9

णाणत्तिएण णिएण णिरुत्तें[1] लक्खणवंजणचच्चियगत्तें ।
उप्पण्णे णाहे हयदप्पो जाओ इंदस्सासणकंपो ।
कप्पेसुं ससहावें णाया घंटाटंकारा संजाया ।
उद्दिय णिण्णासियदिण्णाया ओइसवासे सीहणिणाया ।
वेंतरदेवावासवएसुं[2] गज्जंते पडहा विवरेसुं[3] ।
संखरवो भावणभवणेसुं संपण्णो खोहो भुवणेसुं ।
णाउं णाणेणं णिप्पावं भूमीभाए हूयं देवं ।
तुट्ठो चित्ते धम्माणंदो चलिओ सक्को[4] सक्को चंदो ।
हत्थिंदो एरावयणामो[5] वेउव्वियसरीरपरिणामो ।
गलियकवोलमओलजलद्दो रणझणंतगेज्जावलिसद्दो ।
कच्छरिच्छमालाच्छुरियंगो कण्णचमरविणिवारियभिंगो ।
पत्तो[6] मत्तो मंदरमेत्तो लीलायंतो बहुविहदंतो ।
कंतिपसाहियणहमित्ताइं दंति दंति सरसयवत्ताइं ।
पत्ते पत्ते सुरतरुणीओ[7] णच्चंतीओ थोरथणीओ ।
इय दट्ठूणं तमिहमलंघं चडिओ सोहम्मीसो सिग्घं ।
सव्वत्थ वि धयछत्तरवण्णं सव्वत्थ वि चामरसंछण्णं ।
सव्वत्थ वि गयणाणाजाणं सव्वत्थ वि धावंतविमाणं ।
सव्वत्थ वि पसरियउल्लोवं सव्वत्थ वि जयदुंदुहिरावं ।
सव्वत्थ वि सरगेयरसालं सव्वत्थ वि उब्बाइयमालं ।
तरुपल्लवियं पिव णहवलयं सोहइ सुरवरपायाउलयं ।

9. १ MBP णिउत्तें. २ P °वएमु. ३ MBP विवरेसुं but gloss in P विपरेसुं विवरेषु गगनेषु T परेसुं उत्तमेषु. ४ MB सक्का सुक्को. ५ P अइरावय°. ६ MB पत्तो. ७ MBP सुरवरतरुणीओ.

9. पादाकुलकं छन्दः. 1 *b* लक्खण° शंखकुलिशादि; वंजण° तिलकमसकादि. 3 *a* णाया उपपन्नाः. 5 *a* °वएसुं पदेषु स्थानेषु; *b* विवरेसुं विवरेषु गगनेषु. 7 *a* णिप्पावं निष्पापम्. 8 *b* सक्को शक्रः; सक्को सार्कः आदित्यसहितः. 10 *a* °मओलजलद्दो मदप्रवाहजलेनार्द्रः. 11 *a* कच्छरिच्छमालाच्छुरियंगो कक्ष्यया वरत्रया नक्षत्रमालया च स्फुरिताङ्गः. 13 *a* कंतिपसाहियणहमित्ताइं कान्त्या प्रसाधिता मण्डिता नभोमित्रा आकाशादित्या यैः; *b* सरसयवत्ताइं सरसः उध्दृतानि कमलानि. 15 *a* तमिहं तं ऐरावतम् (तम्+इमम्); अलंघं अलंघनीयमतीवोच्चम्. 18 *a* पसरियउल्लोवं प्रसृतोल्लोचं चन्द्रापकम्. 20 *b* सुरवरपायाउलयं देवेन्द्रपादैराकुलम्, अन्यत्र पादाकुलकं छन्दः.

घत्ता—णवतणुरोमंचु दावइ उं[8]र्धु जिणभवि हरिसु वहंति ॥
तरु[9] चलदलपाणि णडइ व खोणि भावें बहुरसवंति ॥ ९ ॥

10

महिसेहिं मेसेहिं आसेहिं भासेहिं ।
हंसेहिं मोरेहिं कुं[1]ररेहिं कीरेहिं ।
सरहेहिं करहेहिं दु[2]रएहिं वसहेहिं ।
दीवीतरच्छेहिं [3]रिंछेहिं मच्छेहिं ।
सारंगसीहेहिं तरुगिरिहिं मेहेहिं ।
सिहि जम महाभीस णेरिय समुद्देस ।
मारु[4]य कुबेरंक ईसाण णीसंक ।
मज्झम्मि खामाहिं मुद्धाहि सामाहिं ।
छणयंदव[5]यणाहिं णवणलिण[6]णयणाहिं ।
थणघुलियहाराहिं पसरियवियाराहिं ।
धयरट्ठगा[7]मिणिहिं सोहंतकामिणिहिं ।
गयणोवडंतीहिं सरसं णडंतीहिं ।
वज्जंतवज्जेहिं कीलंतखुज्जेहिं ।
बाहूरविल्लेहिं दुक्कंतमल्लेहिं ।
बहुविहविलासेहिं मंगलणिघोसेहिं ।
संचल्लिया एम्व णाणाविहा देव ।

घत्ता—पावेवि अउज्झ [8]परमदुग्गेज्झ परियंचेवि तिवार ॥
फणि दि[9]णयर चंदु भणइ सुरिंदु जय णाहेय कुमार ॥ १० ॥

८ MBP उभु. ९ MBP तरु वरदलपाणि.

10. १ BP कुररेहि. २ MB दुरहेहि ३ MB रिच्छेहि. ४ B मारुव. ५ MBP °वयणेहि. ६ MBP °णयणेहि. ७ MBP गामणिहि. ८ MBP परदुग्गेज्झ. ९ MP °दिणयरु.

10. 1 *b* भासेहिं उलूकैः. 3 *b* दुरएहिं द्विरदैर्गजैः. 6 *b* समुद्देस वरुण. 7 *b* णीसंक इन्द्रः 8 *a* खामाहिं तुच्छोदरीभिः. 11 *a* धयरट्ठ° हंसः, 12 *a* गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभिः. 14 *a* बाहूरविल्लेहिं करास्फोटनशब्दैः 17 परियंचेवि प्रदक्षिणीकृत्य.

11

गयणग्गलग्गहिमणिहसिहरु पईसेप्पिणु णाहिणरिंदघरु ।
जंपिवि पियवयणइं णिवपवरे मायहि मायासिसु देवि करे ।
अमयासणगणसंमाणियए कड्डिउ देविइ इंदाणियए ।
सहसक्खें दिट्ठउ परमपरु कमेलसरे णं णवदिवसयरु ।
छज्जइ अण्णाणतमोहहरु णं अंकुरत्थि थिउ धम्मतरु ।
णं बद्धउ सिवसुहकणथरसु णं पुरिसरूवि संठियउ जसु ।
णं सयलकलायरु उग्गमिउ णं एक्कहिं लक्खणपुंजु किउ ।
देविइ दिज्जंतु णियच्छियउ सोहम्मिंदेण पडिच्छियउ ।
वरवंदारयवंदहिं णविउ पणवेप्पिणु अंकग्गइ ठविउ ।
को ण गणइ पुण्णपरिप्फुरिउ ईसाणें धवलछत्तु धरिउ ।
चमरइं घिवंति अमराहिवइ साणक्कुमारमाहिंदवइ ।

घत्ता—जगु जित्तउ जेहिं णिम्मिउ तेहिं अणुयहिं देवहु देहु ॥
तं सुइरु णियंतु दससयणेत्तु विम्हिउ पुलइयदेहु ॥ ११ ॥

12

पुणु पभणइ मइं हयकम्ममलु बहुलोयणत्तु जायउ सहलु ।
एहउं तिहुयणपरमेसरहो जं दिट्ठउं रूवु जिणेसरहो ।
इय घोसिवि पुणु पुणु जोइयउ इंदें अइरावउ चोइयउ ।
परमेट्ठि लएप्पिणु भमियगहे सच्छरु सामरु संचलिउ णहे ।
भयसयइं सणउयइं जोणयहं महि मुइवि ठाणु तारायणहं ।

11. १ M °णरिंदु घरु. २ MB पोमसरे. ३ BP सयलु कलायरु. ४ MB णिज्जतु. ५ MBP णमिउ. ६ MB पुण्णपविप्फुरिउ. ७ MBP विंभिउ.

12. १ T *p* णयसयइं and explains it as णयसयइं इति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

---

11. 1 *a* गयणग्गलग्ग° आकाशारूढ°; हिमणिह° हिमसदृशम्. 2 *a* णिवपवरे नाभिराजे; *b* देवि दत्वा. 3 *a* अमयासण° देवाः; *b* कड्डिउ आनीतः; 4 *a* सहसक्खें इन्द्रेण. 5 *a* छज्जइ शोभते. 8 *a* दिज्जंतु दीयमानः; *b* पडिच्छियउ स्वीकृतः. 9 *b* अंकग्गइ उत्सङ्गाग्रे. 10 *a* पुण्णपरिप्फुरिउ पुण्यप्रभावम्. 11 *a* घिवंति क्षिपन्ति. 12 जित्तउ जितम्; अणुयहिं परमाणुभिः. 13 सुइरु सुचिरम्.

12. 1 *b* बहुलोयणत्तु सहस्रनेत्रत्वम्. 4 *a* भमियगहे भ्रमितग्रहे आकाशे; *b* सच्छरु साप्सराः अप्सरोभिः सहितः; सामरु देवैः सहितः. 5 *a* भयसयइं सप्तशतानि; सणउयइं नवत्यधिकानि.

तेत्थाउ सुदूसहकरपसरु जोयणहिं पसाहियसरयसरु ।
उप्परि दहहिं जि रवि परिभमइ पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ ।
चउहु जि रिक्खोहु णिरिक्खियउ पुणु तेसिएहिं बुहु लक्खियउ ।
तिहिं सुक्कु तिहिं जि सुरगुरु भणमि तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि ।
सउ एम दहुत्तरु लंघियउ सुद्धायासु वि आसंघियउ ।
सहसाइं गंपि अट्ठाणवइ अवरु वि जोयणसउ तियसवइ ।
एत्तेण जि सोहइ दीहरिय जोयण पण्णास पैवित्थरिय ।
अद्धेव ससुण्णय हिमविमल अद्धिंदुसरिच्छी पंडुसिल ।
जहिं तहिं पत्तेण पवित्ततणु जय जय पभणंतें परमजिणु ।
देवाहिवेण तेल्लोक्कहिउ तहि उप्परि सीहासणि णिहिउ ।

घत्ता—पहु सहइ णिसण्णु कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु ॥
णं कुरुहकरेहिं वेल्लिहरेहिं मंदरु ढंकइ अंगु ॥ १२ ॥

13

जिणणाहहु भावें मेरुगिरि णं हरिसें दावइ णिययसिरि ।
णं पणमइ फलभरणमियतरु णं घेल्लइ चमरीमय चमरु ।
णं कोइलकलरवेण चवइ णं फलिहसिलासणाइं ठवइ ।
पक्खालंतु व पहुकमकमलु आणइ जवेण णिज्झरणजलु ।
लिंपइ व सविणय पणयवसेण करिणिहसणचुयचंदणरसेण ।
जोयइ व रूवु सु सियासियहिं अहिणवणलिणच्छिहिं वियसियहिं ।
णच्चइ व पणच्चियणीलगलु गायइ व रुणुरुणियरुणिय भसलु ।

२ P सुदूसहु. ३ B णिरेखियउ. ४ M सहसइं गंपिणु; BP सहसा गंपिणु. ५ M सवित्यरय; BP सवित्थरिय.
13. १ M पणवइ. २ M घल्लय. ३ M सुमुणिय°. ४ MBP °रुणिय.

6 *a* तेत्थाउ तस्मादागतः; *b* °सरयसरु शरत्कालसरोवरम्, अथवा सरोजले जातानि सरजानि पद्मानि तैरुपलक्षितं सरः. 7 *b* सइं स्वयम्. 8 *a* रिक्खोहु अश्विन्यादिसप्तविंशनक्षत्राणि. 9 *a* तिहिं त्रिभिः; सुक्कु शुक्रः; सुरगुरु बृहस्पतिः; *b* अंगारउ अङ्गारकः कुजो भौमः; सणि शनैश्वरः. 10 *b* सुद्धायासु शुद्धमाकाशम्; आसंघियउ आश्रितम्. 11 *a* सहसाइं सहस्राणि. 13 *b* अद्धिंदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकारा. 15 *a* °हिउ हितः. 16 सहइ शोभते; 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरैः; वेल्लिहरेहिं वल्लीधारकैः; मंदरु ढंकइ अंगु मेरुर्निजाङ्गं प्रच्छादयति.

13. 1 *b* णिययसिरि निजश्रीः. 2 *b* चमरीमय चमरीमृगः. 4 *b* जवेण वेगेन. 5 *b* करिणिहसण° हस्तिनिघर्षण°. 7 *a* °णीलगलु मयूरः.

णं कुसुमामोयं णीससइ णं रयणरयणपंतिहिं हसइ।

घत्ता—संठिउ मणिरंगि मंदरसिंगि चंपयवासविमीसे ॥
जिणु सासयसोक्खु णावइ मोक्खु थिउ तेलोक्कहु सीसे ॥ १३ ॥

14

ता हयाइं भेरिझल्लरीमुइंगसंखतालकाहलाइं वज्जयाइं ।
खिब्भिसेहिं पाणिपायकुंचियाइं णच्चियाइं वामणाइं खुज्जयाइं ॥
भूयजक्खकिंणरेहिं खेयरेहिं रक्खसेहिं णायणाइणीसएहिं ।
आयएहिं पूरियं णिरंतरं णहंतरं भवंतभावभाविएहिं ॥
बालहंसगामिणीहिं इंदवंदकामिणीहिं गाइयाइं मंगलाइं ।
दुब्भदोवपूयबीयमट्टियाकणेहिं ताइं णिम्मियाइं णिम्मलाइं ।
उद्धवद्धणिद्धचारुचीरमंडवे फुरंतमोत्तिएहिं मंडिऊण ।
लोयतावकारणाइं कुच्छियाइं वंछियाइं छंडिऊण ॥
सद्दिऊण णायरेण सायरेण सासणामरे वरे पओसिऊण ।
गंधधूवफुल्लदीवतोयतंदुलण्णजण्णभायए णिवेसिऊण ॥
सक्कचिक्खिकालणेरिअण्णवाणिले कुबेरसूलिणे समच्चिऊण ।
मंतपुव्वियं विहिं सुहावहं समागमे समासियं समासिऊण ॥
जीय देव णंद वद्ध सिद्ध बुद्ध सुद्धसील सामिसाल भाणिऊण ।
दोहएहिं दोधएहिं खंधएहिं चित्तवित्तसंथुईहिं माणिऊण ॥

14. GK mention at the beginning पिंगलाणंदो णाम दंडओ; MBP have पिंगलाणंदो णाम छंदो. १ M °मुयंग°. २ MB °काहलाइवजयाइं. ३ MB वावणाइं. ४ P °दोव्व° but gloss दूर्वा ५ K छंडिऊण. ६ M °जज्ञ°. ७ BP °सूलिणो. ८ KT दूहएहिं.

8 *b* रयणरयणपंतिहिं रत्नान्येव दन्तास्तेषां पंक्तिभि-: 9 मणिरंगि रत्नभूमौ.

14. 1 वज्जयाइं वाद्यानि. 2 खिब्भिसेहिं किल्बिषिकदेवैस्तूर्यवादिभिः; पाणिपायकुंचियाइं संकुचितहस्तपादाः. 3 णायणाइणीसएहिं नागनागिनीशतैः. 4 आयएहिं आगतैः; भवंतभावभाविएहिं संसारविनाशकपरिणामसहितैः उत्पद्यमानानुरागैर्वा. 6 °दोव° दूर्वा; °पूय° अपूपश्चरुर्वा; °बीय° बीज. 8 कुच्छियाइं दुःखकारणानि; वंछियाइं मानमायादीनि. 9 णायरेण व्युत्पन्नेन इन्द्रेण; सासणामरे शासनदेवान्; पओसिऊण प्रतोष्य. 10 °जण्णभायए यज्ञभागान्. 11 सक्केत्यादि–शक्रादीनष्टदिक्पालान्; °चिक्खि° अग्निदेवः; °काल° यमः; णेरि नैर्ऋत्यदेवः; °सूलिणे °ईशानान्; 12 समागमे समासियं समासिऊण जिनशासने प्रतिपादितं समाश्रित्य. 14 दोहएहिं दोहकदोधकाद्यैः वृत्तैः; चित्तवित्त° चित्रवृत्त°.

मंदरं[९] छिवंतियाइ बद्धदेवपंतियाइ खीरसायरंतियाइ ।
वोमयं कमंतियाइ धंतियाइ थंतियाइ जंतियाइ एंतियाइ ॥
हारदोर[१०]कंचिदामबंभसुत्तकंकणा[११]लिकुंडलाहिं भूसिएहिं ।
आइबीयकप्पपुंगमेहिं आसणासिएहिं सम्मयाहिलासिएहिं ॥
अट्ठजोयणोयरेहिं एक्ककंठवित्थरेहिं अब्भयं णिसुंभएहिं ।
हुंदहोपयच्छिएहिं पाणिणा पडिच्छिएहिं उग्गयंबुथें[१२]भएहिं ॥
चंदणेण चच्चिएहिं पुप्फदामवेढिएहिं णं घणेहिं संभएहिं ।
एक्कमेक्कढोइएहिं पोम[१३]पत्तछाइएहिं सायकुंभकुंभएहिं ॥
सिंचिओ पुणंचिओ णमंसिओ पसंसिओ पसाहिओ महाइदेवो ।
कामकोहमोहलोहमाणडंभच[१४]प्फलत्तवज्जिओ हयावलेवो ॥

घत्ता—जो णाणविसुद्धु जिणु सइंबुद्धु सो ण्हाविउ लइ ण्हाइ ॥
झसवासहु तोउ भत्तउ लोउ सूरहु दीवउ देइ ॥ १४ ॥

15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयउ　　मंगलहु जि मंगलु गाइयउ ।
परमेट्ठिहि जाणियसंवरहो　　किं अंबरु दिण्णु णिरंबरहो ।
किं भूसणु भूसणि संणिहिउ　　किं जगमंडणि[१] मंडणु लिहिउ ।
पविसूइइ ववगयभवरिणहो　　विंधेप्पिणु[२] सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छूढइं मणिमयकुंडलइं　　णं ससहरदिणयरमंडलइं ।
चवलब्भपिसायहु णट्ठाइं　　णाहेयहु सरणु पइट्ठाइं ।
किं कोसिएण जगसेहरहो　　सिरि सेहरु बद्धउ मणहरहो ।

९ MB मंदिरं; K मंदिरं but corrects it to मंदर. १० P °डोर.° ११ P कंकणाहि° १२ MBP °विंभएहिं, but gloss in P उद्गतोच्छालितजलबिन्दुभि॰. १३ P पोमवत्त°.१४ P °चप्पलत्त°.

15. १ P जगमंडणु मडणि. २ P विंधेविणु.

16 वोमयं कमंतियाइ व्योम व्याप्नुवत्या, धंतियाइ धावन्त्या. 18 आइबीयेत्यादि–आद्यद्वितीयकल्पपुंगवाभ्याम्. 19 एक्ककंठवित्थरेहिं मुखे एकयोजनविस्तीर्णैः; अब्भय णिसुंभएहि मेघपटलविध्वंसकैः. 20 हुंदहोपयच्छिएहिं 'गृहाण भोः' इत्येवं भणित्वा प्रदत्तैः; °थें भएहिं °बिन्दुभिः. 21 सभएहिं साम्भोभिर्जलयुक्तैः. 22 सायकुंभ° सुवर्ण°. 24 चप्फलत्त° बहुप्रलापित्वम्. 26 झसवासहु समुद्रस्य.

15. 2 *a* जाणियसंवरहो ज्ञातसंवरस्य. 3 *a* भूसणि भूषणभूते, *b* जगमंडणि त्रैलोक्यमण्डनस्य; मंडणु तिलकः. 4 *a* पविसूइइ वज्रसूचिकया. 5 *a* विच्छूढइं परिधापिते. 6 *a* अब्भपिसायहु अभ्रपिशाचो राहुस्तस्मात्. 7 *a* कोसिएण कौशिकेन इन्द्रेण.

गलरेहाजिसें वलियएण हेट्ठामुहेण परिघुलियएण ।
हियउल्लउ हारें सेवियउ जडजाएं किं पि ण भाँवियउ ।

घत्ता—जो सालंकारु किमलंकारु सुरवर तासु करंति ॥
मह्नु हियवइ भंति णउ लज्जंति रूवु काइं ँढंकंति ॥ १५ ॥

16

किं बुज्झि ण हूई सुरयणहो मणिबंधु महग्घउ कंकणहो ।
कडिसुत्तउ कडियलि वलइयउ किंकिणिसरु चवइ व पुलइयउ ।
किं सीहँणियंबहु एह सिरि लइ अच्छइ तं सेवंतु गिरि ।
कमजुइ संणिहियउ झणझणइ मंजीरजुयलु इय णं भणइ ।
जं भव्वजीवसंतइसरणु संसारमहाजलणिहितरणु ।
कोमलसरलंगुलिदलकमलु णहकिरणपसरहयतिमिरमलु ।
मइं लद्धउ जिणवरपयजुयलु मह्नु जायँउ भूसणत्तु सहलु ।
जं करणकालि सिहितावियउ तं तवहलु णं विहिदावियउ ।

घत्ता—सुरसायरतोउ णाहविओउ ण सहइ विरइयण्हाणु ॥
मंदरगिरिगुज्झि महिहँरहमज्झि णं घल्लइ अप्पाणु ॥ १६ ॥

17

दूराउ वहंतु णियच्छियउ सीसेँण सुरेहिं पडिच्छियउ ।
चंदिज्जइ जिणतणु पेँरिलुढिउ कक्करकंदरणिवँडणि सुढिउ ।

३ MBP जाणियउ. ४ BP ढकंति.

16. १ P सिंह°. २ M भूसणत्तु जायउ. ३ P महिहर°.

17. १ P सीसेहिं. 2 MBP परिढुलिउ. ३ K °णिवडणसुढिउ.

---

8 *b* हेट्ठामुहेण अधोमुखेन. 9 b जडजाएं जलजन्मना मुक्ताफलेन. 11 भंति विस्मयः.

16. 1 *b* मणीत्यादि–प्रकोष्ठः कङ्कणान्महार्घ्य इत्यर्थः. 2 *a* वलइयउ बद्धम्, *b* पुलइयउ रोमाञ्चितम्. 3 *a* एह एषा. 5 *a* °सतइ° °संततिः. 7 *a* सहलु सफलम्. 8 *a* सिहिताविय‌उ अमितापितम्. 9 सुरसायर° क्षीरसमुद्रः. 10 घल्लइ अप्पाणु आत्मानं निपातयति.

17. 1 *a* णियच्छियउ निरीक्षितं स्नानजलं वन्दितं च. 2 *a* °परिलुढिउ पतितम्; *b* कक्कर° कठिन°; सुढिउ दुःखितम्.

णिज्जइ देवेहिँ करेण करु गुरुसंगें को णउ होइ गुरु ।
पंकयकेसररयधूसरिउ कसीरयरायं पिंजरिउ ।
वणकुंजरकुंभत्थलखलिउ करडयलगलियमयपरिमलिउ ।
संचलियसिलिम्मुहविचलिउ णाणामणिकिरणहिँ संवलिउ ।
परिघोलइ सिहरिंदहु तणउं णं पंचवण्णु उप्परियणउं ।
णहिँ णहयरेहिँ महियलि णरेहिँ पायालि पडंतउ विसहरेहिँ ।
धावंतु थंतु वियलंतु चलु वंदिउ सव्वण्हुहि ण्हाणजलु ।

घत्ता—इच्छियगुरुसेव चउविह देव हरिसें कँहिं मि णमंति ॥
उट्ठंत पडंत पुरउ णडंत वारवार पणवंति ॥ १७ ॥

18

केण वि वाइत्तउं वाइयउ केण वि सुइमिट्ठउ गाइयउ ।
केण वि बहुसुक्किउ संचियउ केण वि भावालउ णच्चियउ ।
सवलहणउं केण वि ढोइयउ केण वि आहरणु णिवेइयउ ।
केण वि थोत्तइं पारद्धाइं केण वि तोरणइं णिबद्धाइं ।
पडिहारु को वि हुउ दंडधरु कु वि पासि परिट्ठिउ सम्मकरु ।
पढु पढइ का वि अणुराइयउ केण वि मालउ उच्चाइयउ ।
कासु वि आलावणि णिद्धतणु जहिँ छिप्पइ तहिँ तहिँ करइ मणु ।
सरलंगुलिताडिय रणझणइ णिज्जीव वि जिणवरगुण थुणइ ।
तहिँ अवसरि कयणाणावयणु थुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।
आयासु जि आयासहु सरिसु उवमाणु ण तुज्झु को वि पुरिसु

४ P करेहिँ. ५ PT कासीरय°. ६ MBP °सिलीमुह°. ७ MBP कहव. ८ MBP पणमंति.
18. १ B णाणावयणु तणु.

4 *b* कस्सीरय° काश्मीरजं कुङ्कुमम्. 5 *b* करडयल° गजकपोल°. 6 *a* °सिलिम्मुह° भ्रमराः; विचलिउ कर्बुरितम्. 7 *a* सिहरिंदहु मेरोः. 9 *a* थंतु तिष्ठत्; *b* सव्वण्हुहि आदिजिनस्य. 10 चउविह देव भुवनवासिव्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिनो देवाः.

18. 1 *a* वाइत्तउं वादित्रम्; *b* सुइमिट्ठउ कर्णामृतम्. 2 *b* भावालउ भावयुक्तम्. 3 *a* सवलहणउ विलेपनम्; *b* णिवेइयउ दत्तम्. 6 *a* अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्तः. 7 *a* आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेषः. 8 *a* कयणाणावयणु कृतानेकवक्त्रः; *b* दससयणयणु सहस्रलोचनः इन्द्रः. 10 *a* आयासु आकाशम्,

जइ पइं जि समाणउं पइं भणमि ता परमेसर किं पइं थुणमि।

घत्ता—जो कहइ कएण कइ कव्वेण जिणवर तुह गुणरासि ॥
सो णिरु लहुएण करचुलुएण मूढु मवइ जलरासि ॥ १८ ॥

19

तुह थोत्ताचिरस्स चित्तं णव देमि अहमसि धिट्ठत्तणेणेवं वंदेमि।
धणलाहेलोलेहिं संगहियसंगेहिं परणारिहिंसामुसाणंदियंगेहिं।
पसुमंसमज्जंबुधारावित्तुद्धेहिं कुलजाइविण्णाणगावावरुद्धेहिं।
मयघुम्मिरच्छीहिं मिच्छत्तिरूढेहिं कह दीसके तं महामोहमूढेहिं।
असिवत्तदुग्गंतराले घडंताण णरयम्मि धंते महंते पडंताण।
जमपासणिप्पीडियाणं सवाहीण जिण को करालंवणं देइ देहीण।
इणं मो जयंजम्मवासं णिहंतूण परमं पयं णेइ को तं पमोत्तूण।
जय कालकालग्गिजालावलीकंद जय इंदणाइंदलच्छीलयाकंद।
जय घोरसंसारकंतारणित्थार जय दव्वपज्जायसंभावणासार।
जय मारसिंगारपब्भारणिब्भेय जय दीहदालिद्ददोहग्गविच्छेय।
जय दुव्विणीयंतरंगाण दुण्णेय जय णाह णीराय णीसल्ल णाहेय।
जय देव कंठीरवुव्वूढपीढत्थ जय कूरचित्तेसु भत्तेसु मज्झत्थ।

घत्ता—जय मंथरगामि तिहुयणसामि पत्थिउ मग्गिउ देहि ॥
जहिं जम्मु ण कम्मु पाउ ण धम्मु तहु देसहु मइं णेहि ॥ १९ ॥

२ P णइ.

19. १ K वदामि. २ MBP °लाहलोहेहि. ३ MBP °गारावलुद्धेहिं. ४ M मिच्छत्ति°. ५ B जयजम्म°.

---

12 क इ कविः. 13 जलरासि समुद्रम्.

19. 1 *a* तुहेत्यादि—तव स्तोत्रमेव वृत्तमाचरणं तस्य स्तवनाचारस्य तव स्तोत्राचरणे नवीन चित्तमहं ददामी-त्यर्थः. 2 *a* संगहियसंगेहिं संगृहीतपरिग्रहैः. 3 *b* °गावावरुद्धेहि गर्वावरुद्धैः. 5 *a* असिवत्तदुग्गंतराले असिपत्रनरके; *b* धंते अन्धकारे. 7 *a* जयंजम्मवासं जगज्जन्मपाशम. 8 *a* कालेत्यादि—काले प्रलयकाले कालाग्निः प्रलयाग्निस्तस्य ज्वालानां कंदो मेघः. 9 *a* °णित्थार पर्यन्तप्रापक; *b* °संभावणा° घटना. 11 *a* दुव्विणीयंतरंगाण शठानाम् ; दुण्णेय ज्ञातुमशक्य. 12 *a* कंठीरवुव्वूढपीढत्थ सिंहासनस्थ. 13 मग्गिउ याचितम्.

20

देवं सुण्हविऊण भत्तीइ णविऊण ।
पडुपडहणाएहिं थ[1]गिदुगिगघाएहिं ।
दु[2]णिकिटिमटकेहिं झंझंसधोकेहिं ।
भं[3]भंतभंभाहिं ढक्काहुडुक्काहिं ।
करडाहिं काहलहिं झल्लरिहिं मद्दलहिं[4]
तालेहिं संखेहिं अण्णहिं असंखेहिं
बहिरियदसासेहिं जयतूरघोसेहिं ।
बहुवयणु बहुणयणु करपिहियपिहुगयणु ।
हरिसेण विच्छु[5]रिउ णियतरुणिपरियरिउ ।
विविहंगहारेहिं रसभावसारेहिं ।
उप्पयइ प[6]रिवडइ आहंडलो णडइ ।
धम्माणुराएण पयजुयणिवाएण ।
सुरमहिहरो फुडइ महिवीढु कडयडइ ।
परिभमइ थरहरइ णियदेहु संवरइ ।
रोसेण फुं[7]फुवइ फणि फरुसु विसु मुयइ ।
विसजलणु वित्थरइ धगधगइ हुरुहुरइ ।
तावेण कढकढइ जलयरकुलं लुढइ ।
जं[8]लही वि झलझलइ सेरं[9] समुल्लसइ ।

घत्ता—रिक्खइं णिवडंति दिसउ मिलंति महिविवरइं फुट्टंति ॥
णच्चंते इंदें णयणाणंदें गिरिसिहरइं तुट्टंति ॥ २० ॥

20. १ MB ठगदुगिग°; P थगदुगिग°. २ MB दुणिकिट्टिमटकेहि; P दुणिकिट्टमटकेहि. ३ MBP भंभंत°. ४ MBP मंदलहि ५ MBP विप्फुरिउ. ६ P पडिवडइ. ७ MB पुप्फुवइ. ८ MBP जलणिहि वि. ९ MB सरसं.

---

20. 2 *a* पडु सर्वैरव्यक्तशब्दवादित्रैरित्यर्थः. 4 *b* हुडुक्का वाद्यविशेषः. 8 *a* बहुवयणु शेषनागः; बहुणयणु इन्द्रः; *b* °पिहु° पृथु. 10 *a* अंगहारेहिं अङ्गविक्षेपैः. 18 *b* सेरं स्वेच्छया.

21

इय णविवि गिण्हिवि उसहसिरि आरूढु सवारणखंधि हरि।
सच्छरु सविबुहु लहु संचलिउ पवणंदोलियधयवडलुलिउ।
संगीयसद्दकोलाहलेण खे धावंतें सुरवरबलेण।
तणुकंतिभारवारियविहुणा उँ[1]प्परि एंतेण देवपहुणा।
दीसइ अहत्थु णक्खत्तगणु णं णेहसरि[2] फुल्लिउ कमलवणु[3]।
णं मोत्तियमंडवु मेइणिहि जिणु ण्हाणंतिहि मंदाइणिहि।
सियजलकणणियरु समुच्छलिउ णं दीसइ दसदिसासु घुलिउ।
उज्झाउरि झत्ति पराइयउ रायंगणि लोउ ण माइयउ।
उत्तरिवि करिहि हरि आइयउ मायापियरहुं सिसु ढोइयउ[4]।
तिहुयणपरिपालणपरमविहि संगहिउ तेहिं सो णाणणिहि।
विसु धम्मु तेण भाइ त्ति[5] पहु भासियउ पुरंदरेण विसहु।

घत्ता—जगभरहु समत्थु पुण्णपसत्थु णंदणु लेवि अदीण ॥
सुरसंथुयपाय हरिसिय माय पुप्फयंति[6] आसीण ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणजम्माहिसेयकल्लाणं णाम तइओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥

॥ संधि ॥ ३ ॥

21. १ P उप्परि यंतेण but gloss आगच्छता. २ B णहसिरफुल्लिउ; P णहसरफुल्लिउ. ३ K कुसुमवणु. ४ MBP add after this foot: संतोसवसेण पलोइयउ; G gives it in the margin in second hand, but K does not give it at all. ५ M ताइ त्ति. ६ BP पुप्फयंतआसीण.

21. 1 *a* उसहसिरि श्रीवृषभः, *b* सवारण° स्वकीयगज°; हरि इन्द्रः. 2 *a* सच्छरु सह अप्सरसां गणेन, सविबुहु देवैः सहितः. 4 *a* कंतिभारवारियविहुणा कान्तिभारतिरस्कृतचन्द्रेण. 5 *a* अहत्थु अधःस्थः 6 *b* मंदाइणिहे गङ्गायाः. 8 *a* उज्झाउरि अयोध्यायाम्. 10 *a* °परमविहि °परमो विधाता. 11 *a* भाइ शोभते; वृषो धर्मस्तेन शोभते प्रभुस्तेन कारणेन इन्द्रेण वृषभः इति कथितः; *b* विसहु वृषभः. 12 अदीण अदीना आनन्दिता मरुदेवी माता. 13 पुप्फयंति आसीण पुष्पैः पुष्पप्रकरैः कान्ते कमनीये स्थाने आसीना उपविष्टा.

IV

घरि पुणरवि सयणहिँ परियणहिँ जिणजम्मुच्छवु जो रइउ ॥
तं पेच्छेवि विसेहरु णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विम्हइउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

जंभेट्टिया—तणुअणुरुवइं रंजियरूवइं ॥
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोलंतउ मालइमालियाउ थणथण्णामयधारालियाउ ।
कंकेल्लिपल्लवाइयकराउ धाँईउ समप्पिवि अच्छराउ ।
किंकर गिव्वाण अणंत देवि सिसुणाहहु णिरु भावें णवेवि ।
तं गुरुजुयलुल्लउं विमलणाणि पुज्जेवि पसंसिवि कुलिसपाणि ।
पुच्छिवि गउ सयमहु सघरु जाम कोसलपुरि वड्डइ बालु ताम ।
उत्ताणसेज्ज णिम्मुक्कगंथु णं सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

सौभाग्यं शुचिता क्षमा भुजबलं शौर्यं वपुः सुन्दरं
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-
स्यैकेकं गुणमङ्गमूर्जितधियां पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

MBP have the following stanza:—

आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

1. १ MBP पेच्छिवि. २ M विसिहरु. ३ MB विंभयउ, P विंभियउ. ४ MBP धाइयउ. ५ MB तग्गुरु°. ६ P पुंछिवि. ७ P णिमुक्क°; K णिमुक्क° but corrects it to णिम्मुक्क°.

1. 3 *a* तणुअणुरूवइं शिशुशरीरयोग्यानि भूषावस्त्राणि; *b* रंजियरूवइं अनेकवर्णयुक्तानि. 4. *a* देवि दत्वा. 5 *a* घोलंतउ लोलायमानाः; *b* थणथण्णामय° स्तनदुग्धामृतम्. 6 *a* कंकेल्लि° अशोकः; *b* धाईउ धात्र्यः. 8 *a* गुरुजुयलुल्लउं नाभिराजमरुदेवीयुग्मम्. 9 *a* सयमहु शतमखः; *b* कोसलपुरि अयोध्यायाम्. 10 *a* णिम्मुक्कगंथु नग्नो बालः; *b* णियइ पश्यति.

वड्ढंतें वड्ढइ हिरिविसेसु खेलंतें खेलइ दिहिविलासु ।
वइसंतें वइसइ सिरि चलच्छि रंगंतें रंगइ समउ लच्छि ।
पसरंतें पसरइ सुथिरकंति उड्डीहोंतें उग्गमइ कित्ति ।
भासंतएण खलियक्खराइं बुद्धइं बावण्ण वि अक्खराइं ।
चिरु धेरियइं दरदेंतें पयाइं संभरियइं पुव्वंगहं पयाइं ।
जिणससिणा लेंतें तणुकलाउ विण्णायउ चउसट्ठि वि कलाउ ।

घत्ता—करणिड्ढिइ थिरसंभूयमइ मइइ सत्थु संमाणियउं ॥
तं [10]चिंतंतें परमेसरेण ओहिइ जगु परियाणियउं ॥ १ ॥

2

जंभेट्टिया—समदममूलउ जमसाहालउ ॥
सुकयहलुग्गमो जिण[1]कप्पद्दुमो ॥ १ ॥

अमरामयहिं सिंचिज्जमाणु सोहइ पुण्णेण पवड्ढमाणु ।
देहे णिच्चं चिय णिम्मलत्तु महिमंदरधरणु अणंतु सत्तु[2] ।
णिसेय[3]बिंदु सुरहित्तु पउरु[4] वणरुहु वि हारणीहारगउरु ।
वरवज्जरिसह[5]णारायणासु संघडणु[6] पहिल्लउ पवलधामु[7] ।
जहिं जहिं जि तहिं जि सोहाणिहाणु तहु[8] अवरु वि समचउरंससठाणु ।
[9]जगसारु सुरूउ सु[10]लक्खणत्तु पियहियमियवयणु[11] णिहित्तचित्तु ।

८ MBP खेलंतें खेलइ. ९ MBP चरियइं. १० MBP णं चिंतंतें.

2. १ B जिणु. २ MBP अणंतसत्तु. ३ MBP णिस्सेय°. ४ MBP पवरु but gloss in P प्रचुरः. ५ MBP °विसह°. ६ MBP संहणणु. ७ MBP पवलथामु but gloss in P प्रचुरतेजः बलं वा. ८ MB तहु; P तहुं. ९ MB जगसारसुरूवु; P जगसारसरूउ. १० MBP सलक्खणत्तु. ११ MB °वयणु विहत्त° and gloss in M निर्मलहृदयः P °वयणविहित्त° and gloss आरोपितचित्तः.

11 *b* दिहि° धृतिः संतोषः. 12 *b* समउ लच्छि लक्ष्मीदेव्या सह. 13 *b* उड्डीहोंतें उर्ध्वीभवता. 15 *b* पुव्वंगहं शास्त्राङ्गानि. 16 *a* लेंतें गृह्णता. 17 करणिड्ढिइ इन्द्रियवृध्या; थिरसंभूयमइ दृढबुद्धिः; सत्थु श्रुतज्ञानम्; संमाणियउ सिद्धिं नीतम्. 18 ओहिइ अवधिज्ञानेन.

2. 1 *a* सम° उपशमः; दम° इन्द्रियजयः; *b* जमसाहालउ यावज्जीवनियमशाखाकुलः. 2 *a* सुकयहलुग्गमो सुकृतफलपुष्पयुक्तः; *b* जिणकप्पद्दुमो जिन एव कल्पवृक्षः. 3 *a* °अमएहि अमृतैः. 4 *b* सत्तु वीर्यम्, अथवा सत्त्वं शक्तिः. 5 *a* णीसेय °निःस्वेद°; पउरु प्रचुरम्; *b* वणरुहु रुधिरम्; °गउरु शुक्लम्. 6 *b* पवलथामु प्रकृष्टसामर्थ्यं प्रचुरतेजो वा. 8 *a* सुरूउ सौरूप्यम्; *b* °णिहित्तचित्तु आरोपितहृदयः.

आइसय वह जासु परं पसिद्ध जम्मेण समउ धम्में णिबद्ध ।
णं पुरिसरूवपरिमाणु लद्धु विहिकरणब्भासविसेसुं सिद्धु ।

घत्ता—जसु को वि ण संणिहु भुवणयलि परमजिणिंदहु णिरुवमहो ।
ससि दिणयरु मंदरु मयरहरु किं उवमाणउं देमि तहो ॥ २ ॥

3

जंभेट्टिया-गुणगणसण्णयं वर्वगयतुण्णयं ।
तोसियजणमणं को वण्णइ जिणं ॥ १ ॥

जो ससहरु सो तहु कंतिपिंडु चिंतंतु व हुउ सकलंकु खंडु ।
दिणयरु तहु तेएं जित्तु णाइं णहयलि भमेवि अत्थवणु जाइ ।
जो सुरगिरि सो तहु ण्हवणवीढु जं महिमंडलु तं तेण गीढु ।
जं जगु तं तहु जसपसरठाणु जं णहु तं तहु णाणप्पमाणु ।
जो जलणिहि सो तहु कायकोंडु जो वम्महु सो भयमुक्ककंडु ।
जो वरकरि सो वाहणु मयंधु सीहु वि तहु सिंहासणि णिबद्धु ।
पसु कामधेणु हयसहियहेउ जो वग्घु सो वि पाविट्ठु जीउ ।
जो कप्परुक्खु सो कट्ठु कट्ठु देवेण समाणु ण को वि दिट्ठु ।

घत्ता—सुर किंकर दासिउ अच्छरउ सुरवइ घरि वावारि जहिं ॥
तिहुयणु कुडुंबु परमेसरहो सिरिविलासु किं भणमि तहिं ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेससिद्धु but gloss in P °विशेषः सिद्धः.

3. १ MBP °पुण्णयं but gloss in P सान्वयम्. २ MBP वजिय° but gloss in P व्यपगत°. ३ M णहयलु. ४ P तहु सो. ५ MBP ण्हाणपीढु. ६ MBT कायकुंडु; P ण्हाणकुंडु. ७ P वग्घु वि सो. ८ M पाविट्ठ°. ९ MBP तिहुयणपहुत्तु.

9 *b* जम्मेण समउ सहजोपनीताः. 10 *b* विहिकरणब्भासविसेसु ब्रह्मणः करणाभ्यासविशेषः. 12 मयरहरु समुद्रः.

3. 1 *a* गुणगणसण्णयं गुणगणानामन्वययुक्तम्, *b* ववगयतुण्णयं व्यपगतमिथ्यानयम्. २ *b* खंडु चन्द्रः 4 *b* अत्थवणु अस्तमनम्. 5 *b* गीढु गृहीतं स्वीकृतम्. 7 *a* कायकोंडु गात्रप्रक्षालनकुण्डम्; *b* भयमुक्ककंडु तद्भयान्मुक्तधनुष्यः. 8 *a* मयंधु मदान्धः 6 *a* हयसहियहेउ हतस्वहितकारणम्. 10 *a* कट्ठु कट्ठु काष्ठं निकृष्टम्; कल्पवृक्षः रत्नमयः पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठं कथ्यते कष्टमेव.

4

जंभेट्टिया—सेसवलीलिया कीलणलीलिया ।
पहुणा दाविया केण ण भाविया ॥ १ ॥
पविरइयुविविहकीलावियार समयं रमंति सुरवरकुमार ।
तणुतेओहामियतरणिबिंबु घग्घरमालालंकियणियंबु ।
धूलीधूसरु ववगयकडिल्लु सहजायकविलकोंतलजडिल्लु ।
णिवरमणिहिं लइउ महायरेण अमरिंदाणियहिं करंकरेण ।
णिज्जइ चिरसंचियसुकयरयणु जेण जि अवलोइउ मुद्धवयणु ।
सो तहिं जि णिबद्धउ केमँ ठाइ णवकमललुद्धउ भमरु णाइ ।
केण वि पहसाविउ हंसगामि केण वि बोल्लाविउ भव्वसामि ।
केण वि काइं वि खेलणउं दिण्णु कइ कीरु मोरु अवरु वि रवण्णु ।
गिव्वाणु को वि हुउ तंबचूलु कु वि वरतुरंगु कु वि दिव्वु पीलु ।
कु वि मेसु महिसु भुयबलमहल्लु कुँ वि अप्फोडइ होएवि मल्लु ।
सोवंतउ कु वि सुइहारएण परियंदइ अम्माहीरएण ।

घत्ता—होहुल्लरु जो[13] जो सुहुं सुअहि पइं पणवंतउ भूयगणु ॥
णंदइ रिज्झइ दुक्कियमलेण कासु वि मलिणु ण होइ मणु ॥ ४ ॥

5

जंभेट्टिया—धूलीधूसरो कडिकिंकिणिसरो ।
णिरुवमलीलउ कीलइ बालउ ॥ १ ॥

4. १ MBP °लबिय°. २ P चिरु. ३ MBP सुद्धवयणु. ४ M जेम. ५ MBP भसलु. ६ M हंसगमाणि. ७ MB खेल्लणउं. ८ MBP दिव्वु पीलु. ९ MBP महिसु मेसु. १० B omits this foot. ११ P परिइंदइ. १२ MB हुल्लरु. १३ M जो हो; BP होहो.

4. 1 *a* सेसवलीलिया शिशुत्वलीलाकेलिः. 3 *a* पविरइय° प्रविरचित°; *b* समयं सह. 4 *a* °ओहामिय° तिरस्कृतम्, °तरणि° सूर्यः, *b* °णियंबु °नितम्बः. 5 *a* कडिल्ल परिधानवस्त्रम्; *b* सहजाय° सहोत्पन्न°; °जडिल्ल °जटासहितः मुण्डनकर्मरहितत्वात्. 6 *b* अमरिंदाणियहिं देवेन्द्रपत्नीभिः. 7 *a* णिज्जइ नीयते; °सुकयरयणु सुकृतमेव रत्नं येन सः 9 *a* हंसगामि मन्दगमनः: 10*a* खेलणउं क्रीडनवस्तु; *b* कइ कपिः. 11 *a* तंबचूलु कुक्कुटः; *b* °पीलु गजबालः. 12 *b* अप्फोडइ करेण भुजं ताडयति. 13 *a* सोवंतउ सुप्तः सन्; सुइहारएण श्रोत्ररमणीयेन; *b* परियंदइ आन्दोलयति; अम्माहीरएण स्वदेशभाषाप्रसिद्धरागध्वनिना. 14 होहल्लरु जो जो 'होहो जय जय त्वम्' इति शब्दः. 15 रिज्झइ द्रव्यादिविभूतिं प्राप्नोति.

रंगंतु संतु जं किं पि धरइ इंदु वि ण हु[1] तं थामेण हरइ ।
धरणिंदु वि[2] चंदु व संवरेवि लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि ।
बलु जोक्खइ को[3] जि जिणेसरासु कंपावियमेइणिमहिहरासु ।
सो णीसासेण य जाइ तासु णहु लंघेवइ किर सत्ति कासु ।
पुणु चूलाकरणिज्जइ[4] कयम्मि उम्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि ।
संपुण्णचंदमंडलमुहेण मरुपविमहासइतणुरुहेण ।
देवंगवरवरणिवसणेण[5] घोलंतविविहमणिभूसणेण ।
भुयहेलंदोलियदिग्गएण[6] चलपाणिवेणुदंडग्गएण[7] ।
हउ कंदुउ गयणे समुल्ललंतु णं दीसइ सयमहघरहु जंतु ।
णिम्मुक्कजीउ णिहिट्ठमग्गु गुणिसंगें[8] को णउ लहेइ[9] सग्गु ।
णिवडंतउ संचारेवि णेइ समवयसहुं तं छिवहुं मि ण देइ ।
पहरें पहरें सो जाइ[10] केम दिसलाणिहे संमुहु सूरु जेम ।

घत्ता—पडिछंदउ पुरिसरूवकरणे णाइं विहाएं संगहिउ ॥
णवजोव्वणभावि जाम चडिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

6

जंभेट्टिया—कंचणगोरउ धीरो[1] गोरउ ।
परिरक्खियपउ णिववंदियपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुद्दामरंगु धरणिंदुच्छंगे णिवेसियंगु ।
वरुणोवरि पाय परिट्ठवंतु पवणामरि करपल्लव[2] चिवंतु ।

5.१ MBP तं ण हु. २ P वि चंदु वि. ३ MBP जो जि. ४ MBP °करणुज्जइ. ५ MBP देवंगवत्थवर°. ६ MBP भुयबलअंदोलिय°, but T हेला अनायासम्. ७ MBP दंडुग्गएण. ८ M गुणसंगें. ९ B लहइ १० M जाय.

6 १ MBP धीरउ. २ MBP °पल्लउ.

5. 3 *b* इंदु इन्द्रः. 4 *a* संवरेवि प्रगुणीभूय, *b* लहुयारी लघुतरा. 5 *a* जोक्खइ आकलयति. 7 *a* चूला° क्षौरम्; उम्मिल्लइ प्रकाशिते प्रकटीभूते; भल्लइ रम्ये. 10 *a* हेलंदोलिय° अनायासेन क्षिप्तः; *b* दंडग्गएण दण्डाग्रेण. 11 *a* हउ हतः; समुल्ललंतु सम्यगुच्छलन्. 13 *a* संचारेवि अग्रे गत्वा; *b* छिवहुं मि स्प्रष्टुमपि. 14 *a* पहरें प्रहारेण; सो कन्दुकः; *b* दिसलाणिहे दिङ्मर्यादायाः. 15 पडिछंदउ प्रतिबिम्बम्; विहाएं विधात्रा.

6. 1 *a* कंचणगोरउ सुवर्णवर्णः; *b* धीरो समर्थः; गोरउ ज्ञानरतः. 2 *a* परिरक्खियपउ प्रतिपालितप्रजः. 3 *a* रमणुद्दामरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णा रङ्गभूमिः.

पणॅवंति पुरंदरि दिट्ठि देंतु उव्वसिहि सरसु णाडउ णियंतु ।
जक्खिंदचमरविज्जिज्जमाणु समभाउत्तासियकुसुमबाणु ।
फणिदउवारियविणिरुद्धदारु आलोइयतियसत्थाणसारु ।
णं छणससि पवरुययायलत्थु जहिं अच्छइ पहु सिंहासणत्थु ।
तहिं पत्तउ कुलयरु भणइ एम्व भो णिसुणि णिसुणि देवाहिदेव ।
किं ण हवइ कद्दमि कमलसंडु पाहाणपुंजि णवकणयपिंडु ।
आसामुहि मिहिरु महामऊहु सिप्पिउडि विमॅलि मोत्तियसमूहु ।
हउं पिउ तुहु सुउ इयँ किमहिमाणु भुवणत्तइ किर णाणु जि पहाणु ।
णहभायहुं पासिउ को महंतु को तुज्झ वि अग्गइ बुॅद्धिमंतु ।
णियणेहें अहव जडत्तणेण हउं भणमि किं पि धिट्ठत्तणेण ।

घत्ता—बालत्तणु दूरुज्झिउ जइ वि तो वि ण णारिहि उवरि मइ ॥
किज्जइ विवाहु सुकुमार तुह जेण पॅवड्डइ लोयगइ ॥ ६ ॥

7

जंभेट्टिया—पविमलबोहिणा मोहविरोहिणा ॥
लद्धसमाहिणा हयदप्पाहिणा ॥ १ ॥

विहुणा उत्तं ताय ण जुत्तं ।
मण्णियमयणं एयं वयणं ।
कयसंसारं मोहंधारं ।
अट्ठिणिछण्णं किमिउलपुण्णं ।
पयालियमुत्तं मंसविलित्तं ।
णाउणिबद्धं अइणोणद्धं ।

३ MB पणवंत°. ४ MBP °वारु ५ MBP विमल°. ६ MBP इउ. ७ MP बुद्धिवंतु. ८ MBP पवत्तइ.

7 *a* °द उवा रि य° दौवारिकः प्रतिहारः. 8 *a* उ य या य ल त्थु उदयाचलस्थः. 10 *a* °सडु °संघातः. 11 *a* आ सा मु हि दिङ्मुखे; मिहिरु सूर्यः. 13 *a* णहेत्यादि–नभोभागपार्श्वात् को महान्, न कश्चिदित्यर्थः. 16 लो य ग इ लोकगतिः व्यवहारः.

7. 1 *b* मो ह वि रो हि णा मोहशत्रुणा. 2 *a* ल द्ध स मा हि णा प्राप्तपरमधर्मसमाधिना; °द प्पा हि णा गर्वः एव सर्पस्तेन. 3 *a* वि हु णा प्रभुणा. 5 *b* मो हं धा रं अज्ञानतिमिरजनकम्. 6 *a* अ ट्ठि णि छ ण्णं आस्थिबद्धम्. 8 *a* णाउ° नहारु° (स्नायु°); *b* अ इ णो ण द्धं अजिनावबद्ध चर्मणा वेष्टितम्.

लालागिल्लं रुहिरजलोल्लं ।
बहुमलकलुसं धरियपुरीसं ।
कुच्छियगंधं णवविहरंधं ।
णिद्दासत्तं पडइ पमत्तं ।
णिसि णिद्दाणं मडयसमाणं ।
उट्ठइ मुद्धं धणकणलुद्धं ।
पहसमसंतं कारिमजंतं ।
हिंडइ दियहे णिवडइ विरहे ।
तरुणियणकए असुहरणहए ।
वाहिविलीणं भुक्खारीणं ।
पित्तपलित्तं सेंभपसित्तं ।
पवणपहग्गं माणवियंगं ।
सेवंताणं गुणवंताणं ।
होइ ण सोक्खं वड्डइ दुक्खं ।

घत्ता—परसंभउं वाहासयसहिउं विच्छिण्णउं रयबंधयरु ॥
इहँ जं सुहुं लद्धउं इंदियहिं तं कह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

8

जंभेट्टिया—ता कुलकारिणा णायवियारिणा ।
सुहहलसाहिणा भणियं णाहिणा ॥ १ ॥
भो भो कयसुरणरखयरसेव सब्बउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।
वंछइ सुहुं भुंजइ णवर दुक्खु वेड्डंतें विहडइ बुद्धिचक्खु ।

7. १ MB णिद्दामत्त. २ MBP विद्दाणं and gloss in P ग्लानम्. ३ B पहसमसत्तं. ४ B कारिमजत्तं. ५ MBP °हरणभए. ६ MP सिंभपसित्त; B सिंभपलित्तं. ७ MBP इय.

8. १ M वुड्ढते; BP वुड्ढत्तें.

9 *a* °गिल्लं °भक्षकम्. 10 *a* ° कलुसं °मलयुक्तम्. 13 *a* णिद्दाणं निद्रायुक्तम्, *b* मडय° मृतक°. 15 *a* पहसमसंतं मार्गश्रमश्रान्तम्; *b* कारिमजंत कृत्रिमाश्वादियन्त्रसमानम्. 18 *a* वाहिविलीणं व्याधिभिर्नष्टम्. 19 *b* सेंभ° श्लेष्मा. 20 *a* °पहग्गं °प्रभग्नम्; *b* माणवियंगं मनुष्यस्त्रीणां शरीरम्. 23 परसभउं पराधीनम्; विच्छिण्णउं सान्तरं सच्छिद्रम्; रयबंधयरु अष्टविधकर्मबन्धकरम्. 24 विउसु विद्वान्.

8. 1 *b* णायवियारिणा न्यायविचारिणा. 2 *a* °साहिणा °वृक्षेण.

चुक्कइ ण कयंतहो मरणभीरु सच्चउ जि असुइसंभउ सरीरु ।
सच्चउ इंदियसुहुं सुहु ण होइ सच्चउ तुहुं परलोयावलोइ ।
सच्चउ संसारु असारु जइ वि लइ महु उवरोहें बप्प तइ वि ।
कलहंसवाणि वरवयणकमलु परिणहि सयणय पणइणिहिं जुमलु ।
तं णिसुणिवि जिणु णियसीसु धुणिवि थिउ हेट्ठामुहु भवियव्वु मुणिवि ।
चिंतइ परमेसरु अवहिवंतु णयविणयचारि सिरिघरिणिकंतु ।
अज्ज वि महु चरियावरणु कम्मु तेसट्ठिलक्खपुव्वहं अगम्मु ।
ता जाणिवि णियतणयंतरंगु समहिच्छियरमणीरमणसंगु ।
सहसा कुलणाहें पेसिएहिं रयणाहरणोहविहूसिएहिं ।

घत्ता—ता कच्छमहाकच्छाहिवइधूयउ थणभरभग्गियउ ॥
फलपत्तफुल्लपल्लवकरिहिं मंतिहिं जाइवि मग्गियउ ॥ ८ ॥

9

जंभेट्टिया—कयमहिराहहो तिहुयणणाहहो ।
दिज्जउ सवलयं कण्णाजुयलयं ॥ १ ॥
ता कच्छमहाकच्छाहिवेहिं घरु आइवि सिरपणवियपएहिं ।
दिण्णउ णाहेयहु सुंदरीउ कामालवालरुहवेल्लरीउ ।
पारद्धहु परमेसहु विवाहु आयउ सुरयणु हरिकरिविवाहु ।
गय कुसुमंजलिहर लोयवाल सुहि बंधव पुण्णमणोहराल ।
कुंअरिहि करि अंगुत्थलउ ढूढु पहिलउ पेमंकुरु णं विरूढु ।
गुमुगुमियभमियचलमहुयरोहु कउ मंडउ विविहकुवारसोहु ।

२ MB सयणहं; P मयणह. ३ MBP जुयलु. ३ MBP °विणयधारि. ४ MB चरियाचरणु. ५ MBP °रमणरंगु.

9. १ P °पणामिय°. २ K °वेल्लरीउ. ३ MBP कय°. MP °कुसुमंजलियर. ४ MBP मणोरहाल ५ MP कुवरिहि, B कुवेरिहि.

---

6 *b* परलोयावलोइ परत्र वांछाकुशल·. 7 *b* उवरोहें आग्रहेण. 10 *b* सिरिघरिणिकंतु लक्ष्मीपति·. 11 *b* अगम्मु दुर्लंघ्यम्. 12 *a* °अंतरंगु मन·. *b* समहिच्छिय° समभिलषित°. 14 °धूयउ कन्ये; °भग्गियउ नम्रीभूते.

9. 1 *a* °राह शोभा. २ *a* सवलयं सकङ्कणम्. 4 *b* °आलवाल° वृक्षमूलजलस्थानम्. 5 *b* हरिकरिविवाहु अश्वाः गजाः पक्षिणश्च वाहु वाहनं यस्य सुरगणस्य. 7 *b* विरूढु प्रादुर्भूतः

माणिक्कमुत्तझुंबुक्कफुरिउ णवसायकुंभखंभेहिं धरिउ।
चंदोवचीणपट्टेहिं छइउ महिदेविइ णावइ मउडु लइउ।

घत्ता—अमलिंदणीलमणिपंतियहिं णिविडकरोलिहिं भूसियउ।
णं तिमिरहु रवियरतासियहो सरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभेट्टिया—भम्मपसाहिउ विद्दुमसोहिउ।
संझामेहउ णं महिमागउ ॥ १ ॥

कत्थइ रुप्पयभित्तिहिं सुहाइ सरयब्भखंड णिम्मविउ णाइं।
कत्थ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु णं गंगतरंगु पवित्तियंगु।
कत्थ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ णं णक्खसंचिउ गयणभाउ।
कत्थ वि हरियारुणमणिवरिट्ठु आहंडलधणुमंडलु व दिट्ठु।
अहिणवदुमपल्लवतोरणेहिं णावइ वसंतु माणिउ वणेहिं।
पवणुद्धुयणहयलघुलियकेउ णरणिहयतूरमंगलणिणाउ।
पाडहियकरंगुलिणिहसणेण दंकुंदकुंदकयणीसणेण।
पडहुल्लउ कुंडुवें छित्तु तेम झं धो त्ति दो त्ति रउ हुयउ जेम।

घत्ता—भंभाभेरीसरसंखुहिउ पहु पुण्णाणिलेण चलिउ।
आवेप्पिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १०॥

६ MBP सरण°.

10. १ M संझसमेहउ. २MBP महि आगउ. ३ MB °तरंगपविसिय°. ४ MBP हरियारुणु. ५MBP दकुकुंदिकुंदि. ६ MBPT कुडवें.

9 *a* °मुक्त° मौक्तिकानि; झुंबुक्क° स्तबका.. 11 अमलिंदणील° निर्मल: इन्द्रनीलमणि·; °करोलिहिं किरणपंक्तिभि:.

10. 1 *a* भम्म° काञ्चनं सुवर्णम्. 3 *b* सरयब्भखंड शरन्मेघपटलम्. 4 *a* भूमिरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णः प्रदेशः; *b* पवित्तियंगु पवित्रीकृतगात्र: 5 *a* °दिण्णछाउ °दत्तशोभः 6 *b* °धणुमंडलु °धनुर्विस्तारः. 7 *b* माणिउ अवतारित: 9 *a* पाडहिय° पटहवादक·; °णिहसणेण °ताडनेन; *b* °णीसणेण शब्देन. 10 *a* कुडुवें वादनकाष्ठेन; छित्तु स्पृष्टः ताडित:.

11

जंभेट्टिया—हवइ[1] सुहद्दउ करडासद्दउ ।
रसइ मुइंगउ हसइ अणंगउ ॥ १ ॥

दं दं दं दं टिविलाइ उंचु[2] जिणु भणइ हउं मि दंदेण भुत्तु[2] ।
अणुहुंजिउ जं भवसइ[3] भमंतु णं भासइ तं तं तं भणंतु ।
संसारु जि वीणाणिक्कलत्तु मणि संजोयइ[4] वल्लहु[5] कलत्तु ।
वहुछिद्दवंसु जं विद्धु जेण तं कहइ णाइं महुरें रवेण[6] ।
किं मद्दलु जो भोयणउ लहइ सो परु व्वि परस्स तलप्प सहइ ।
काहलवयणइं वित्थारियाइं णं मुहपवणेणोसारियाइं ।
आऊरिय णीसासेण संख वहिरंध मूय पंगु वि असंख ।
कंसालइं तालइं सलसलंति विहडेप्पिणु मिहुणा इव मिलंति ।
आलग्गदोरदेंटुल्लयाइं[7] णं तूरिय णरतरुफुल्लयाइं ।

घत्ता—संणद्धइं पहरपडिच्छिरइं आउज्जइं गज्जंति किह ॥
जिणणाहहु घरि रइरंगि हुए मयणरायसेण्णाइं जिह ॥ ११ ॥

12

जंभेट्टिया—का वि णियाणणं का वि सहीयणं ।
मंडइ वहुवरं का वि हु मंदिरं ॥ १ ॥
ता तियसपुरंधिहिं वहुवराहं णरणारीहिं मि पंकयकराहं ।

11. १ MBP हुवइ २ MBP वुत्तु. ३ MBP भवसयभमंतु. ४ BP संजोइय. ५ MBP वल्लह कलत्तु ६ MBP सरेण. ७ M °दोरहिं दुल्लयाइं; BP °दोरदिंडुल्लयाइं.

---

11. 1 *a* सुहद्दउ सुभद्रो डुंडिशब्दः. 2 *a* रसइ शब्द करोति. 3 *b* दंदेण नारीयुगलेन चित्तविक्षेपेण वा. 5 *a* °णिक्कलत्तु °शब्दः संसारमेव योजयति वल्लभ. कलत्रमिति कथयतीव. 6 *a* वहुछिद्देत्यादि-यच्छिद्रं विद्धं कृतं रागवादनाभिप्रायेण, तेन कथयतीव वधूरेव छिद्रं रमणस्थानम्; अन्यत्र बहुच्छिद्रो वंश.. 7 *b* तलप्प करप्रहारम्. 8 *a* काहलवयणइं रणतूर्यमुखानि. 9 *a* णीसासेण निःश्वासेन, अथवा निःस्वाः दरिद्राः अस्वेन द्रव्येणापूरिताः 11 *a* देंटुल्लयाइं वृन्तानि. 12 पहरपडिच्छिरइं प्रहारप्रतीक्षणशीलानि; आउज्जइं आतोद्यानि. 13 रइरंगि हुए रतौ अनुरागे संभूते सति.

12. 1 *a* णियाणणं निजाननम्.

पाडियउ स[1]लोणहं काइं लोणु		चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।
गाइज्जइ मंगलु अवरु धवलु		संणिहियउ कलसचउक्कु धवलु ।
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ विहाइ		णीसुत्तु ण जडसंगहु मुएइ ।
तरुणिहिं उब्भा[2]यवि कयउ ण्हाणु		गोरंगइ पाणिउ धावमाणु ।
सोहइ लायण्णें विप्फुरंतु		णावइ चामीयररसु गलंतु ।
सियसुहुमइं वत्थइं परिहियाइं		आहरणइं ससहररुइहियाइं ।
मंदा[3]रोमालिउ लइउ मउडु		दीसइ णं सुरगिरिसिहरु वियडु ।
देवहु देवयठवणाइ काइं		लोइयमग्गें णिहियाइं ताइं ।
आणंदें ण[4]च्चिउ सयणु बंधु		बद्धउ कंकणु णं णेहबंधु ।

घत्ता—भमरावलिजयारवमुहलु मणसंखोहण[5]पुलइयउ ॥
कंदप्पें रूसिवि जिणवरहो णिययसरासणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंभेट्टिया—विरइयठाणउ		संधियबाणउ ।
उग्गयरोमउ		विलसइ कामउ ॥ १ ॥

अमुणंतियाइ पुरिमिल्लु भाउ		हा किं रईइ पयडियउ राउ ।
हा वम्मह तुहुं[1] मि णिवारिओ सि		हा हे वसंत किं पेरिओ सि ।
किं वग्गहु लग्गहु अज्जु ईसि		णिवडेसहु कइहिं[2] वि तवहुयासि ।
णं गज्जिउ दुंदुहि भणइ एम्व		किं तुज्झु वि रिउ देवाहिदेव ।
फणिसुरणरखयरकउच्छवेण		विर[3]संततूरजयजयरवेण ।

12. १ M सलोयहुं; BP सलोणहुं. २ BP उब्बाइवि. ३ MB मदारमालउलइय°, P मंदारयमालउ लइय. ४ MBP णच्चिय सयणबंधु. ५ MBP मणसखोहणु.

13. १ MB तुहुं वि णिवारिओ. २ MBPT कइयवि. ३ MBP विलसंत°; K विरसंतु.

4 *a* पाडियउ दत्तम्; सलोणहं सलावण्ययोः; *b* संजणियमाणु संजनितमानं चामरं पूर्वमुन्नतस्यान्ते नाभिमानयुक्तं दृश्यते. 6 *a* सुत्तेण जि सुत्तिउ आवेष्टितेन सूत्रेण बद्ध इव; *b* णीसुत्तु श्रुतरहितो मूर्खः जडसंगं न त्यजति. 7 *b* गोरंगइ गौराङ्गे. 9 *b* ससहररुइहियाइं चन्द्रदीप्त्यनुकारीणि. 11 *a* देवयठवणाइ काइं कुलदेवतास्थापनया किम्; *b* लोइयमग्गें लौकिकाचारानुसारेण. 13 जीयारव° ज्याशब्द°.

13. 1 *a* °ठाणउ मुष्टिबन्धः, धनुर्धराणामालीढप्रत्यालीढवैणवाषाढादीनि बाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति; पक्षे चित्ते कृतस्थितिः. 3 *a* अमुणंतियाइ अज्ञातवत्या रत्या. 5 *a* ईसि जिने. 7 *b* विरसंत° शब्दायमानः.

संचालिउ परिणहुं जिणकुमारु आवंतहु तहु तहिं धरिउ धीरु[4] ।
णं संसारहु घोसिउ णिसेहु हा किं तुहुं परिणहि चरमदेहु ।
तहि देवि णिबंधु चवेवि[5] चारु भवणंति पइट्ठउ भुवणसारु ।
फेडिउ मुहवडु णं मेहपडलु दिट्ठउ मुहु णं छणयंदु[6] विमलु ।
कंपिउ कुंअरिहिं[7] णववरभएण करु धरिउ णाइं तिलरिणकएण ।
कच्छाहिवेण भिंगारु लेवि पालिज्जसु धवलच्छिउ भणेवि ।

घत्ता—जं पाणिउं छूढउं तासु करे विविहासासाहंचियउ ॥
णं तेण मणालवाल[8]णिलउ मोहमहातरु सिंचियउ ॥ १३ ॥

14

जंभेट्टिया—कयसियसेविहे जसवइदेविहे ।
वरहु अणिंदहे अवि य सुणंदहे ॥ १ ॥

णयणेसु णयण लग्गा तिरिच्छ मच्छेहिं णाइं पडिखलिय मच्छ ।
पियणेहाऊरिय वित्थरंति णावइ सुइसुसिरहिं पइसरंति ।
चित्ताइं चित्ति मिलियाइं केम गयवर णइसलिलइं सलिलि जेम ।
कमणीयकामिणीबद्धणेहि णियतणुपडिबिंबेउ[1] दइयदेहि ।
दिट्ठउ पडिवक्खासंकियाहिं तं कह व कह व बुज्झिउ पियाहिं ।
एक्केणुव्वाइय एक्क तरुणि बीएण भुएण दुइज्ज घरिणि ।
बेण्णि वि लेप्पिणु णीसरिउ णाहु णं कप्परुक्खु वेल्लीसणाहु ।
आसीससयहिं[2] संथुव्वमाणु वेइयमणिवट्टि अणेक्कभाणु ।
उक्कोइयकामरसोल्लियाहिं आसीणउ समउं वहुल्लियाहिं ।

घत्ता—वइसाणरु जासु गहेहिं सहुं पणवइ पय महियलि घुलइ ॥
सो वरइत्तु जि कुलसंतियरु होमें[3] धूमु जि संभवइ[4] ॥ १४ ॥

४ MBP वारु. ५ MB चरेवि. ६ P छणइदु. ७ MB कुवरिहिं; P कुमरिहिं. ८ MB मुणालवाल°.
14. १ MB पडिबिंबिउ. २ MBP आसीसएहिं. ३ M सोमें. ४ MBP संगिलइ.

8 *a* परिणहुं परिणेतुम्. 9 *a* णिसेहु निषेधः. 12 *b* तिलरिणकएण स्नेहऋणकृतेन. 14 छूढउं क्षिप्तम्; विविहासासाहंचियउ विविधा आशा वाञ्छा एव शाखा तया अञ्चितः सहितः. 15 तेण भृङ्गारजलेन; मणालवालणिलउ मनः एवालवालं तदेव स्थानं यस्य मोहमहातरोः.

14. 4 *b* सुइसुसिरहिं कर्णविवरेषु. 7 *a* पडिवक्ख° सपत्नी. 10 *a* आसीससयहिं आशीर्वादशतैः; *b* वेइय° वेदिका. 11 *a* उक्कोइय° प्रादुर्भूत°. 12 गहेहिं सहुं आदित्यादिनवग्रहैः सहितः; घुलइ पतति.

15

जंभेट्टिया—मत्ताचारयं विग्घणिवारयं ।
परिरक्खियजयं तह वि हु तं कयं ॥ १ ॥

देवासुरेहिं संगीयमाणु चलचामरेहिं विज्जिज्जमाणु ।
रमणिहिं सहुं रमणु णिविट्ठु जाम रवि अत्थसिहरि संपत्तु ताम ।
रत्तउ दीसइ णं रइहि णिलउ णं वरुणासावहुघुसिणतिलउ ।
णं सग्गलच्छिमाणिक्कु ढलिउ रत्तुप्पलु णं णहसरहु घुलिउ ।
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धएण णियरायपुंजु मयरद्धएण ।
अद्धद्धउ जलणिहिजलि पइट्ठु णं दिसिकुंजरकुंभयलु दिट्ठु ।
बुड्डउ णियछविरंजियसायरंभु णं दिणसिरिणारिहि तणउ गब्भु ।
आहिंडिवि भुवणु अलद्धवासु णं गयउ रयणु रयणायरासु ।
लच्छीहि भरंतिहि कणयवण्णु णिच्छुट्टवि कलसु व जालि णिमण्णु ।
वारिहिरहल्लिमालोवणीउ णं उल्हाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संझादेवयसदिस महि रंजिवि राएं विप्फुरिय ॥
कोसुंभु चीरु णं पंगुरिवि णाहविवाहइं अवयरिय ॥ १५ ॥

16

जंभेट्टिया—कज्जलसामलो उडुदसणुज्जलो ।
पत्तउ भीयरो तमरयणीयरो ॥ १ ॥

वियलंतउ मुक्कचउत्थपहरु तें[2] पीयउ संझारायरुहिरु ।
महिपंकयमयरंदु व घणेण आवंतें अलिउलसंणिहेण ।

15. १ MBP मंतुआरयं. २ P णिबद्धु. ३ MBP घुलिउ. ४ MBP गलिउ. ५ MBP अरुणच्छवि-रंजियसारयब्भु. ६ MB णिच्छुड्डिवि; P णिच्छुट्टिवि. ७ MBP णिवण्णु. ८ MBP कोसुंभचीरु. ९ MBP °विवाहे.
16. १ MBP पत्तो. २ MBP तं.

15. 1 *a* मत्ताचारयं यद्यपि जगत्स्वामी वर्तते तथापि मात्रा आचारः कृतः 5 *b* वरुणासावहु° पश्चिमाशैव स्त्री; °घुसिणतिलउ कुङ्कुमतिलकः. 6 *a* ढलिउ पतितम्. 8 *a* अद्धद्धउं अर्धबिम्बं सूर्यस्य. 11 *b* णिच्छुट्टवि स्खलित्वा. 12 *a* वारिहिरहल्लिमा° समुद्रलहरीलक्ष्मीः; °लोवणीउ लुप्तः; अथवा, वारिधिलहरीमालयोपनीतः.

16. 1 *b* उडुदसणुज्जलो नक्षत्रदन्तोज्ज्वलः.

पुणु भुवणु तिमिरछण्णउं विहाइ रविविरहें थिउ कालउं जि णाइ।
हालिद्दु वत्थु णं परिहरेवि थक्कउ णीलंबरु पंगुरेवि।
ता उइउ चंदु सुरवइदिसाइ सिरिकलसु व पइसारिउ णिसाइ।
सइं भवणालउं पइसंतियाइ तारादंतुरउ हसंतियाइ।
णं पोमाकरयललहसिउ पोमु णं तिहुयणसिरिलायण्णधामु।
सुरउब्भवविसमसमावहारु तरुणीथणविलुलिय सेयहारु।
णं अमयबिंदुसंदोहु रुंदु जसवेल्लिहि केरउ णाइं कंदु।
माणियतारासयवत्तफंसु णं णहसरि सुत्तउ रायहंसु।
आयासरंगि ससहावगीदु णं कामएवअहिसेयवीदु।
णं इंदहु धरियउ धवलछत्तु तहेविइ णं दप्पणु णिहित्तु।
घत्ता—वरतारातंदुल घिविवि सिरि ससि परिवट्टुलु रइणिलउ॥
दिसिरमणिइ णिसिहि वयंसियहि णावइ दहिएं कउ तिलउ॥ १६॥

17

जंभेट्टिया—ससहरकंतिइ दिसि पसरंतिइ।
सोहइ लोयउ दुद्धुं व धोयउ॥ १॥

ता णिसि पेक्खणउ विलासवंतु पारद्धु झसद्धयरिद्धि देंतु।
आउज्जहुं जेण मुहेण वासु सा पुव्विल्लीदिसिमंडवासु।
तद्दाहिणि उत्तरमुहणिविट्ठु गायणु तुंबरु देवेहिं दिट्ठु।
तहु संमुहियउ मउगाइयाउ उवइट्ठउ सरसइआइयाउ।
तहु दाहिणेण संठियउ सुसिरु तव्वामपासि वेणइयणियरु।

३ M सुरवरदिसाइ. ४ B सुरतुब्भव°. ५ P अमिय°. ६ MPT °संदोहरुंदु. ७ BP जय°. ८ MB °पीढु.
९ MP दिसरमणिइ.

17. १ M दुद्धु; BP दुद्धिं. २ MB °दिसि°. ३ MBP उत्तरमुहु.

5 *b* कालउं कृष्णम्. 8 *a* भवणालउ भवनं मन्दिरम्. 9 *a* पोमा लक्ष्मीः. 10 *a* सुरउब्भवविसमसमावहारु सुरतोद्भवविषमश्रमापहारो हारः; *b* सेयहारु स्वेद एव हारः. 11 *a* अमयबिंदुसंदोहु अमृतबिन्दुपुञ्जः; रुंदु विस्तीर्णः. 12 *a* तारासयवत्तफंसु तारा एव शतपत्र कमलं तस्य स्पर्शम्. 13 *a* ससहावगीदु स्वस्वभावयुक्तम्. 14 *b* तहेविइ इन्द्राण्या. 15 घिविवि क्षिप्त्वा. 16 दहिएं दध्ना.

17. 2 *b* दुद्धुं दुग्धेन. 4 *a* आउजहुं वादित्राणाम्; वासु वासः स्थितिः. 6 *a* मउगाइयाउ मृदुगायिकाः. 7 *a* सुसिरु शुषिरवांशिकवाद्यम्; *b* वेणइयणियरु वीणाकारनिकरः

इय एहउ अवणिणिवेसु गणिउ पच्चाहारु वि सो चेव भणिउ।
वज्जइं मज्जिवि साहारणाइ कम्मारवी य संमज्जणाइ।
सहसा सुइसोक्खुल्लोलएण उद्दिक्खणु किउ हिंदोलएण।
थिरवण्णछड्डयधाराविसेसु कउ णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु।
उव्वसिरंभाणामालियाहिं आहल्लामेणइवालियाहिं।

घत्ता—अमिल्लियणवकुसुमंजलिहिं देविहिं रंगि[६] पइट्ठियहिं॥
मोहिउ जणु मग्गणमोयणिहिं णं वम्महधणुलट्ठियहिं॥ १७॥

18

जंभेट्टिया–अहिणयकोच्छरो भुवणिहियच्छरो।
णच्चइ सुरवई डोल्लइ वसुमई॥ १॥
विरइय णडेहिं णाणावियार चारी बत्तीस वि अंगहार।
अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु करणहं अट्ठोत्तरु सउ वि दिण्णु।
चोद्दह वि सीससंचालणाइं भूतंडवाइं रंजियमणाइं।
णव गीवउ णयणसुहावियाउ छत्तीस वि दिट्ठिउ दावियाउ।
अंतिमरसविरहिय जणियहाव अट्ठ वि रस सच्चेयणसहाव।
एक्कें ऊणा पण्णास भाव अवर वि अउव्व भावाणुभाव।
फुरणइं वलणइं अणिवारियाइं णच्चंतहिं तहि अवयारियाइं।

४ MBP कइव. ५ MBP किउ. ६ B रंग°.

18. १ MBPT अहिणव°. २ KT भुय°. ३ MB चउदह. ४ BP गीयउ. ५ MBP दिट्ठउ. ६ MBPT °भाव. ७ P अपुव्व. ८ M करणइं. ९ MKT अवधारियाइं.

8 *b* पच्चाहारु स एव प्रत्याहार इति अन्यत्र प्रसिद्धः 9 *a* मज्जिवि मृदादिभिर्मार्जयित्वा; साहारणाइ युगपत्सर्ववाद्यविषयाय; *b* कम्मारवी सर्ववाद्यानां मृदादिसंमार्जनं कर्मारवी नाम. 10 *b* उद्दिक्खणु आलप्तिकरणहिंदोलकरागविशेष 11 *a* °वण्णछड्डयधाराविसेसु वर्णच्छटकधाराक्रमस्तालविशेषाः. 14 मग्गणमोयणिहिं कामबाणमोचनिकाभिः प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च.

18. 1 *b* अहिणयकोच्छरो अभिनयदक्षः; *b* भुवणिहियच्छरो भुजेषु निहिता अप्सरसो येन. 3 *b* चारी पदप्रचारः. 4 *a* अण्णण्णदेहपरिठवणभिण्णु परस्परं शरीरावयवेषु, यथा पादो हस्ते, हस्तः पादे; *b* करणहं शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य क्रियन्ते इति करणानि 5 *b* भूतंडवाइं भ्रूनृत्यानि. 6 *a* गीवउ ग्रीवाः; *b* दिट्ठिउ प्रेक्षितानि. 7 *a* अंतिमरस° शान्तरस°; जणियहाव जनितस्थायिभावाः.

पुणु पत्तइं वंदियपयरयाइं छंडणय[10]पओएं णिग्गयाइं ।
मुक्कइं पेम्मंधइं रूसवंतु णिण्णेहइं मिहुणइं तूसवंतु[11] ।
तारातारावइरुइ हरंतु विहडिय[12]चक्कउलइं मेलवंतु ।

घत्ता—उट्ठिउ रविबिंबु दियहसिरिए अरुणकिरणमालाफुरिउ ॥
उयय[13]इरि महारायहु उवरि णवरत्तउं[14] छत्तु व धरिउ ॥ १८ ॥

19

जंभेट्टिया-ससिपायाहया दुक्खं पिव गया ।
अलिरवरसणिया रुयइ[1] व भिसिणिया ॥ १ ॥
दंसइ पविमलं[2] ओसंसुयजलं ।
तं[3] पसरियकरो पुसइ व तमिहरो ॥ २ ॥
णं[4] सोहइ दीविय[5] जंबुदीउ णहमहिसरावपुडि[6] दिण्णु दीउ ।
अक्कुग्गमंतु णं लोयणयणु णं पंतहु सेसहु सीसरयणु ।
णं वाडवग्गि णहसायरासु णं दिसि[7]णिसियरिमुहमासगासु[8] ।
णं ताहि जि केरउ अहरबिंबु णं णिसिवहुवहि[9] पयमग्गु तंबु ।
णं वासरविडवंकुरु विणिग्गु णं जगकरंडि[10] पवलउ णिहित्तु ।
ता तहिं सोहणि संसारसारु कासु वि कडिसुत्तउ दोरु[11] हारु ।
कासु वि हयगयचेलिउ रवण्णु कासु वि घणु[12] धण्णु सुवण्णु अण्णु ।

१० MB छहुणयपओएं; PT छड्डुणयपओएं. ११ MBP रूसवंतु. १२ BP विहडियचक्कउ. १३ MBP उवयइरि. १४ MBP णं रत्तउ.

19. १ MBP रुवइ. २ BP पविउलं. ३ MBP ते. ४ MBP जं. ५ MBP दीवइ. ६ MBP °सरावि पुडादिण्णु. ७ MB दिसि°. ८ MB °मंसगासु; P °मंसु गासु. ९ MBP °वहुयहि. १० M जगकरंडवे विहुमु; B जगकरंडि धवलउ; P जागि करंडि विहुमु ११ MBP हारु दोरु. १२ M घणधण्णु; P धण्णु सुवण्णु.

---

10 *a* °पयरयाइं पदरजांसि; *b* छंडणय° नृत्योपसंहारहेतुस्तालविशेषः छड्डुणकप्रयोगः. 12 *a* तारावइ° चन्द्रः.

19. 2 *b* रुयइ रुदति; भिसिणिया पद्मिनी. 3 *b* ओसंसुयजलं अवश्यायः एव अश्रुजलम्. 4 *b* पुसइ मार्ष्टि; तमिहरो आदित्यः. 5 *a* दीविय दीप्तम्; *b* सेसहु धरणेन्द्रस्य. 7 *b* मासगासु मांसग्रासः. 9 *a* वासरविडवंकुरु दिवस एव वृक्षस्तस्याङ्कुरः; विणिग्गु विनिर्गतः. 10 *a* सोहणि शोभने महोत्सवे.

जो जं मग्गइ तं [१३]तासु दिण्णु काणीणदीणदालिद्दु छिण्णु ।
संमाणियाइं सुहिपरियणाइं चोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।
चित्तइ विवाहि विहवेण साहु थिउ रज्जु करंतु णएण णाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंदरायाणियहिं पणयं हियवइ भावियउ ॥
[१४]सियपुप्फयंतु सो [१५]रिसहपहु भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे कुमारविवाहकल्लाणं णाम
चउत्थओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ४ ॥
॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो तासु. १४ MBP सिरिपुप्फयंतु. १५ MBP रिसहु पहु.

14 *b* णएण न्यायेन. 16 सियपुप्फयंतु शुक्लकुन्दपुष्पवद्दन्ता यस्य.

V

पियमेलइ गयकालइ एक्कहिं दिणि सुहकारिणि ॥
णिरुवमसइ [1]सिंधुरंगइ णाहितणय[2]मणहारिणि ॥ ध्रुवकं ॥

1

रचिता—[3]छणसिसिरयरकिरणणिहदिहियरघर[4]सयणयलि सुत्तिया ।
पविमलसरलकमलदलवलयसुकोमललालियगत्तिया ॥ १ ॥

[5]ऊसवइ जसेणाहियं सोहमाणा णवणलिणहंसी व णिद्दायमाणा ।
सुरवहुपयालत्तयालित्ततीरं [6]णिवडियदरीरंधगंभीरणीरं ।
हरिसरहओरालिपूरियसुसाणुं [7]ससिकंतपब्भारणि[8]ज्झिर्त्तभाणुं ।
करिदसणणिब्भिण्णसोवण्णरायं सिविणयगयं पेच्छए सेलरायं ।
ससहरमलंकारभूयं णिसाए रविमवि मुहे णीहरंतं दिसाए ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

भ्रूलीलां त्यज मुग्ध संगतकुचद्वन्द्वादिकं वक्षसा
मा त्वं दर्शय चारुमध्यलतिकां तन्वङ्गि कामाहता ।
मुग्धे श्रीमदनिन्द्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुन्नतः
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गनां न भरतः शौचोदधिर्वाञ्छति ॥

MBP have the same stanza, but M reads °द्वन्द्वादिगर्वाक्षमा and BP read °द्वन्द्वादिगर्वाक्रियां for द्वन्द्वादिकं वक्षसा and MBP read शौचाम्बुधिः for शौचोदधिः.

1. १ MBP सिंधुर°. २ M °मयहारिणि. ३ M छणससिरयणकिरण°; B °ससिरयर°. ४ MB °सयणयल°. ५ MBP have before this line रमणीयलता नाम छंदो; GK have रमणीयलता. ६ M णिवडय°; P णिविडिय°. ७ MB ससीकंत°. ८ MB °णिब्भिण्णभाणुं.

---

1. 1 पियमेलइ श्रीआदिनाथमेलापके. 3 °सिसिरयर° चन्द्रः; सुत्तिया सुप्ता. 5*a* अहियं अधिकम्. 6 *a* °पयालत्तय° पादालक्तक°; *b* णिवडिय° निपतित°. 7 *a* °ओरालि° शब्दः; *b* ससिकंत° चन्द्रकान्तमणिः. 8*a* णिब्भिण्णसोवण्णरायं तिरस्कृतसुवर्णवर्णम्; *b* सेलरायं मेरुम्. 6 *b* दिसाए पूर्वदिशायाः.

सयदलदलालंबिरुंटंतो[9]भिंगं सरवरमसारिच्छतिगिच्छं[10]पिंगं ।
दसदिसि बहुप्पिच्छरंगंतभंगं जलखलणपक्खालियद्दिंदासिंगं ।
अमरिसझसप्फालणुट्ठंतसद्दं करिमयरमालारउद्दं समुद्दं ।
सयलमवि आ[11]लोयए संविसंतं णियवयणपोमम्मि छोणीयलं तं ।

घत्ता—इय पेच्छिवि परिहे[12]च्छिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥
कयरा[13]हहो गय णाहहो घ[14]रु पुरंधिचूडामणि ॥ १ ॥

2

रचिता—पभणइ सुणे[1]सु पुरिसहरि सुरगिरि ससि रवि सरवरो[2]यही ।
मइं णिसि सिविणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ घोसइ चक्कवट्टि तुह तणुरुहु होसइ ।
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ महिरायाहिराय गरुयारउ ।
ससहरेण सुहउ सोमाणणु कंतिवंतु कंतासुहमाणणु ।
सूरें सूरु पयावें दूसहु सरवरेण पयडियसिरिसंगहु ।
रयणायरेण सवंसपहायरु चंडि चारु चोद्दहरयणायरु ।
महिआहारें रिउ भंजेसइ छक्खंड वि मेइणि भुंजेसइ ।
कइहिं मि दियहहिं होइ णिरुत्तउ देवि[3] ण चुक्कइ जं मइं वुत्तउ ।
तो सव्वत्थसिद्धिअ[4]हिहाणहु सइं अहमिंदु चालिउ सविमाणहु ।
पुव्वपुण्णसंपयसंपुण्णउ जसवइदेविहि गब्भि णिसण्णउ ।

९ BP° रुंटंत°. १० M °तिग्गंछ°; BP °तिग्गिछि°. ११ B ममालोवए, P मालोयए. १२ MBP परियच्छिवि. १३ M कयरायहो. १४ M घर°.

2. १ MBP णिसुणि. २ MBP °वरोवही. ३ M देव. ४ MBP °अहिणाणहु.

10 *a* °रुंटंत° शब्दं कुर्वन्तः; *b* असारिच्छ° अनुपमम्; तिंगिच्छ° मकरन्दः. 11 *a* उप्पिच्छ° उल्बण°, *b* अहिंद° अहीन्द्र°. 12 *a* अमरिस° अमर्षः क्रोधः; *b* करिमयर° जलहस्ती. 13 *a* संविसंतं प्रविशत्, *b* वयणपोमम्मि वदनकमले; छोणीयलं पृथ्वीमण्डलम्. 14 परिहच्छिवि वितर्क्य; सुप्पहाइ सुप्रभाते. 15 कयराहहो कृतशोभस्य; पुरंधिचूडामणि यशोमती.

2. 4 *a* पियारउ सर्वेषां प्रियतमः. 5 *b* कंतासुहमाणणु कान्तायाः सुखं मानयति. 9 *b* पयडियसिरिसंगहु प्रकटितलक्ष्मीसंग्रहः. 7 *a* सवंसपहायरु कुलप्रभाकरः, *b* चडि हे तरुणि.

घत्ता—भुवणुब्भवि सिसुसंभवि जेहिं कयउ कालउ मुहुं ॥
ते दुज्जण अवरु वि थण णिवडिहिंति हेट्ठामुहु ॥ २ ॥

3

रचिता—सुयभरपसरमाणछिउउयरे[१] वियलियं वलित्तयं ।
तिहुयणवइजयंकरेहारहियं व कयं जयत्तयं ॥ १ ॥

राएं गब्भि[२] थिएण ण णायउ पंडुरु तोंडु[३] काइं संजायउ ।
दियहि पसत्थि मुहुत्ति सुणिम्मलि णियठाणुण्णइं गह गहमंडलि ।
जसवइयहि वियसियपंकयमुहु णवमासहिं उप्पण्णउ तणुरुहु ।
ता तहिं णहि सुरदुंदुहि वज्जइ णं संतोसें सायरु गज्जइ ।
दाणु देंति वारण वणि संठिय कीस ण माणुस हरिसुक्कंठिय ।
मेह सवंति सुगंधइं सलिलइं दिम्मुहाइं णिरु जायइं विमलइं ।
आयासु वि दीसइ मलवज्जिउ णीलउ भायणु णं संमज्जिउ ।
मंदरदंडएण विन्थरियउ[४] एक्कछत्तु णं कुवेरहु[५] धरियउ ।
तारामोत्तियदामहिं भूसिउ एहु जि राणउ सव्वहुं पासिउ ।
महि सइं खल खलंति चउपासिहिं णं वज्जरइ महाणइघोसिहिं ।

घत्ता—सरणलिणहिं णं णयणहिं पइ णियंति महु रुच्चइ ॥
मरुचलियहिं परिघुलियहिं वेल्लीभुयहिं पणच्चइ ॥ ३ ॥

५ T records a p सुयणुब्भवि and adds सुयणुब्भवि इति पाठे सुजनानामुत्कर्षस्य भवः.

3. १ M छउओयर°, BP छउउयर°, but gloss in P क्षामोदरे. २ MB गब्भित्थिएण; P गब्भित्थइ. ३ MBP तुडु ४ MBPK वेच्छुरियउ ५ MBP कुमरहु.

12 भुवणुब्भवि भुवनस्य उद्भवः उत्कर्षस्य प्रादुर्भावो यस्मिन्. 13 णिवडिहिंति निपतिष्यन्ति.

3. 1 छउउयरे क्षामोदर, वियलियं गलित विनष्टम्, वलित्रयापगमनेन उदरं समं जातमित्यर्थः. 2 तिहुयणवइ° त्रिभुवनपति°; जयकरेहा° जयचिह्नरेखा°. 3 *a* राएं रागेण राज्ञा च. 12 *a* महीत्यादि—मही पृथ्वी खलान् वारयन्ती महानदीखलखलघोषेण वज्जरइ कथयतीव यथा एष एव राजेति. 13 पइ पतिम्. 14 मरुचलियहिं वायुचालिते..

4

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधवलियणिवइवंसओ ।
विसरिससुकयसाहिसाहासिउ वड्ढइ रायहंसओ ॥ १ ॥

णामकरणचूलाकरणाइउ सव्वु वि कयउ विसेसविराइउ ।
जणणीजोव्वणफलगोंछो इव विहलियलोय कप्पवच्छो इव ।
बुहियवयणामयबिंदुपवेसु व मित्तवित्तसंगहणणिवेसु व ।
गुणसंसापयासमग्गो इव रोयसोयउज्झिउ सग्गो इव ।
पिउसहावसंचउ रूढो इव बंधुणेहबंधणवेढो इव ।
किंकरयणमणचिंतामणि विव अरिमहिहरसिरसोदामणि विव ।
णिहिलणायसब्भावणिही विव हरणकरणउद्धरणविही विव ।
भारसोढु गरुययरु मही विव भूरिभोयभारिल्लु अही विव ।
दुणिहालउ मज्झण्णरवी विव वज्जदेहु जंभारिपवी विव ।
लायण्णंवुपवाहसरो इव विलयावंदहुं कुसुमसरो इव ।

घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुइ जयसिरि जयकारिणि ॥
जसु णिवसइ मुहि सरसइ कित्ति तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥

5

रचिता—गिरिसरिकलसकुलिसकमलंकुसविसझसलक्खणाहिओ ।
सुरणरखयररमणिवीणारवगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

णं सोहग्गपुंजु णिव्वडियउ णाइं पयावें विहिणा घडियउ ।
जलिवि जलिवि उल्हाइ ण जीवइ जासु भएण णाइं सिहि णीवइ ।

4. १ M सुकय°. २ MBP णामकरणु. ३ P चूडा° ४ MBP °गुछो. ५ P विहासिय°. ६ MB बुह-वयणामय°; P बुहणयणामय°. ७ MBP धण°. ८ P °सिरि. ९ MBP गरुययरु. १० MBP भुयजुइ.

4. 1 °क र मं ज रि° किरणसंघाताः; °णि व इ वं स ओ °राजवंशः. 2 वि स रि स° अद्वितीयम्; °सु क य-सा हि सा हा सि उ पुण्यवृक्षशाखाश्रितः. 5 *b* °णि वे सु स्थानम्. 7 *a* पि उ स हा व° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो वा; रू ढो प्रसिद्धः. 9 *a* णा य° न्यायः; *b* °वि ही विधाता. 10 *b* °भो य° भोगाः फटाटोपश्च. 11 *b* जं भा रि° इन्द्रः. 12 *a* अं बु प वा ह स रो समुद्रः; *b* वि ल या वं द हुं वनितावृन्दस्य 13 अ सि द लि खड्गपत्रे; भु इ भुजे.

5. 1 वि स वृषभः; °अ हि ओ अधिकः. 2 °प सा हि ओ °मण्डित.. 3 *a* णि व्व डि उ कषोत्तीर्णः. 4 *a* ज लि वि ज लि वि प्रज्वल्य प्रज्वल्य; उ ल्हा इ ज्वालारूपतां परित्यजति, अङ्गारावस्थो भवति; ण जी व इ ज्वालारूपयैव नावतिष्ठति; *b* णी व इ विध्याति, अङ्गाररूपतामपि त्यजतीत्यर्थः

अइपमत्तु पुणरवि णासंघइ जडसंगु वि मज्जाय ण लंघइ ।
पालियवेलउ जसु मयरालउ जासु भएण जि थिउ जैउं कालउ ।
णायराउ खुल्लउ कीडुल्लउ चंदु वि जायउ चंदगहिल्लउ ।
पक्खि पक्खि सो दीसइ भग्गउ पवणु वि गमणब्भासइ लग्गउ ।
इंदु वि इंदेंधणुहु गुणि णाणइ अज्ज वि तं तेहउ जणु जाणइ ।
णियकरि पहरणु कहिं मि ण दावइ विणएण जि णवंतु घरु आवइ ।

घत्ता—अलिउलचल चुयमयजल महिहरभित्तिवियारण ॥
अविहियसर कुंचियकर जसु तसंति दिसिवारण ॥ ५ ॥

6

गचिता—करिसिरदलियरत्तलित्तुग्गयमोत्तियखइयकेसरो ।
मिसुमसिकुडिलचडुलविज्जुज्जलदाढाजुयलभासुरो ॥ १ ॥

एहओ वि हरि विप्फुरियाणणु जासु भएण व सेवइ काणणु ।
णवजोव्वणि चडंतु परमेसरु सुरवरकरिकरथिरदीहरकरु ।
सो सिक्खविउ मपिउणा सव्वइं कालक्खरइं गणियगंधव्वइं ।
णाडयाइं बहुभावरसत्थइं णरणारिहिं लक्खणइं पसत्थइं ।
तब्भूसायरणाइं विचित्तइं वम्महचरियइं हियवहुचित्तइं ।
गंधपउत्तिउ रयणपरिक्खउ मंत तंत वरहयगयसिक्खउ ।
कोंतगयासिघायसंताणइं चक्कचावपहरणविण्णाणइं ।
देसदेसिभासालिविठाणइं कइवायालंकारविहाणइं ।

5 १ B पमुत्त २ MBP व. ३ MP जसु ४ M इदधणुहि गुण; BP गुणु. ५ MBP दिसवारण.
6 १ MBP णरणारी°. २ P हयवरगय°

5 *b* जडसंगु जडेन जलेन सह संगो यस्य; मज्जाय मर्यादाम्. 6 *a* जसु यस्य भरतस्य, *b* जउ यमः. 9 *a* गुणि णाणइ गुण नारोपयति, प्रत्यञ्चां नानयति. 12 अविहियसर अकृतशब्दाः; कुंचियकर संकोचितशुण्डादण्डाः.

6. 1 °रत्तेत्यादि–°रक्तलिप्तोद्गतमौक्तिकजटितकेसर.. 3 *a* एहओ ईदृशः, हरि सिंहः 5 *b* कालक्खरइ मषीलिखिताक्षराणि. 7 *a* तब्भूसायरणाइ नरनारीभूषणकरणानि, *b* वम्महचरियइं कामशास्त्रम्; हियवहुचित्तइं हृतस्त्रीचित्तानि. 10 *a* देसदेसिभासा° देशानां सम्बन्धिनी देशभाषा, लिवि लिपिः; *b* कइवायालंकारविहाणइ कविवागलंकारविधानानि.

जोइसछंदतक्कवायरणइं मल्लगाहजुज्झइं कयकरणइं।
वेज्जणिघंटोसहिवित्थारु वि बुज्झिउ सव्वलोयवावारु वि।
चित्तलेप्पसिलवरतरुकम्मइं एवमाइ अवराइं मि रम्मइं।

घत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइं जि वक्खाणइ।
अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ॥ ६॥

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि णेहवसेण भासए।
गिरिथणिधरणितरुणिपरिपालणविहिविसयं पयासए॥ १॥

पभणइ पहु भो पढमणरेसर अत्थसत्थु णिसुणहि भरहेसर।
ववसाएं सुसहाएं संपय होइ णिरुत्तउ पयपाडियपय।
अलसत्तें खलसंगें णासइ सा मइ एहउ तुह सुय सीसइ।
असहायहु जगि किं पि ण सिज्झइ हत्थि वि सुत्तसमूहें बज्झइ।
जाइ णाव मारुइण विलग्गें जलइ जलणु तासु जि संसग्गें।
मंति सूरु दुहसहु सुहि सहयरु तासु करेज्जसु कज्जि महायरु।
जगि कज्जु जि मित्तारिहि कारणु तेण ण किज्जइ तहिं अवहेरणु।
तं पि बुद्धिदारेण समुब्भइ बुद्धि वि बुड्ढहं सेवइ लब्भइ।

घत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुइ जराइ णिब्भच्छिय॥
जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइं इच्छिय॥ ७॥

३ B वेज्ज. ४ MBP सयल

7. १ MBP णिसुणिहि २ MBP हत्थि वि. ३ MB सुहदुहसहु; P दुहसुहसहु. ४ MBP बुद्धि° चारेण. ५ B बुहसेवइ. ६ MP सिरि पलियहि, B सरे पलियहिं. ७ MBP मुय.

11 *b* कयकरणइं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि. 12 *a* वेज्ज° वैद्यकम्; णिघंट° कोशः. 13 *a* तरुकम्मइं काष्ठकर्माणि.

7. 1 णिवरिसि राजर्षिः. 2 गिरिथणि° गिरिः स्तनः यस्याः सा पृथ्वी. 3 *b* अत्थसत्थु नीतिशास्त्रम्. 4 *a* सुसहाएं सुसहायेन. 5 *b* एहउ ईदृशम्; सीसइ कथ्यते. 7 *a* मारुइण विलग्गें वायुना पृष्ठतो लग्नेन. 8 *a* सूरु सुभटः; दुहसहु दुःखस्य सोढा; सुहि सुहृत्; सहयरु मित्रम्; *b* महायरु महादरम्. 9 *b* अवहेरणु अवगणनम्. 10 *a* समुब्भइ विचार्यते. 11 मुइ मुग्ध; णिब्भच्छिय तिरस्कृतस्वरूपाः. 12 कम्मत्थइ कर्मकरणे.

8

रचिता—णियमइणयणविहवपविलोइयपरणरछिद्दचारिणो ।
पहुविरइयविसालदोसेसु पिहाणय राहयारिणो ॥ १ ॥

बुद्धितुलातोलियमहिमंडल मंतचारणिम्महियाहंडल ।
बुद्धा जेहिं ण सेविय भत्तिइ णउ मुच्चंति कयाइ वि यत्तिइ ।
ते सुंदर जाणसु दुवियड्डा कुलबलसिरिमयजलणें दड्ढा ।
होंति अवुह बुहसंगें बुद्धा चंपयवासें तिलें वि सुयंधा ।
बुहसेवाए बुद्धि उप्पज्जइ सा सत्तविह कुमार कहिज्जइ ।
सुस्सूसा सवणु वि संधारणु मोयणु गहणु णाणु णिच्छयमणु ।
तिविह होइ मंतहु संबंधिणि सा वि कहवि तिजगचिंतामणि ।
णिसुणिक्खाउवंसमंडणधय गुरुयणगय सुयगय णियमणगय ।
ताइ मंतु अवसें णिप्फज्जइ सो पंचविहु कहंति महामइ ।

घत्ता—आढत्तइ कम्मत्तइ पढमुवाउ चिंतेवउ ॥
णरसत्ति वि धणजुत्ति वि देसु कालु जाणेवउ ॥ ८ ॥

9

रचिता—अवि य सहरिस पुरिस दढपोरिस सुकयावायरक्खणं ।
अविरलमिलियविउलफलसिद्धि वि जाणसु मंतलक्खणं ॥ १ ॥

सुयणुद्धरणु दुट्ठणिग्गहणु वि णाएं छट्ठभायसंगहणु वि ।
जणवयदोससमणु जा सुज्झइ दंडणीइ सा पुत्त पवुज्झइ ।
किसि पसुपालणु सहुं वाणिज्जें वत्त भणिज्जइ महिवइपुज्जें ।

8 १ MBP बहु°. २ MBP तिल व. ३ MBP कहंति. ४ MBP णिप्पज्जइ.
9. १ MBP दढपउरिस.

---

8. 1 °परणर° शत्रवः; °छिद्दचारिणो चारपुरुषा. 2 पहुविरइय° निजस्वामिविरचित°; पिहाणय पिधानभूता., राहयारिणो निजस्वामिशोभाकारिणः. 3 *b* यत्तिइ आर्त्या द्वन्द्वेन (च + अत्तिइ). 5 *a* दुवियड्ढा अपण्डिताः; *b* °मय° °मदा.. 8 *a* संधारणु कालान्तराविस्मरणम्, *b* मोयणु हर्ष.; णिच्छयमणु ऊहापोहविज्ञानानि. 11 *a* ताइ तया त्रिविधया बुध्या. 12 आढत्तइ कम्मत्तइ आरब्धे कार्ये; पढमुवाउ कार्यनिर्धारः.

9. 1 °सुकयावायरक्खणं सुकृतापायरक्षणम्. 3 *a* छट्ठभाय° षष्ठभागः करः. 5 *b* वत्त वार्ता नाम राजविद्या.

चउवण्णासमु धम्मु तइत्तिय अज्ज वि सुंदर हौति ण सोत्तिय।
ते अप्पणु पइं पुरउ करेवा हीण दीण दाणेण भरेवा।
ताहं कम्मु जगसंतिपयासउ जणियभूयगेहयणसंतोसउ।
अय तिवरिस जव तेहिं हुणेवउ जणहु जीवदयवयणु भणेवउ।
जं[3] जि पढेवउ तं जि करेवउ असि ण धरेवउ दाणु लएवउ।
दंसणणाणचरित्तु कहेवउ तिउणउं सुत्तु सरीरि ठवेवउ।
बंभचेरु अहवा कुलउत्ती अण्णणारि मइं ताहं ण उत्ती।
णिच्चण्हाणु जिणपडिमापूयणु णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु।
इय मज्जाय विलंघवि लंपड ते खाहिंति जीउ मारिवि जड।

घत्ता—सुयसंगहु करुणावहु दाणु धराणिजणधारणु॥
इय इट्ठउ मइं सिट्ठउ खत्तियकम्मवियारणु॥ ९॥

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुमग्गगयं परिक्खियं।
पसुसममिणमसेसमहिवलयमहो णरणाह रक्खियं॥ १॥

पढणहवणदाणइं वाणिज्जइं इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइं।
सुदहु भणु वत्ताणुट्ठाणु वि वण्णत्तयपेसणसंमाणु वि।
अवरु कुसीलकारुजीवित्तणु एम कम्मि संजोएवउ जणु।
कम्मरहिउ जगि भद्दु ण भुंजइ धम्मविवज्जिउ तं पि ण किज्जइ।

२ MBP गहगण°. ३ K तं जि पढेवउ जं जि करेवउ. ४ MBP दंसणु णाणु चरित्तु. ५ MBP धरेवउं.

10. १ T reads कमग्गगयं and explains it as पादाग्रे स्थितम्; it however records a *p* कुमग्गगयं and explains it as कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. २ M पसुसिमं. ३ MBP पढणइं धणदाणइं. ४ P पुणु. ५ MBP °पेसणु संमाणु.

---

6 *a* आसमु आश्रमाः; तइत्तिय त्रयी विद्या; *b* सोत्तिय विप्राः. 7 *a* पुरउ करेवा अग्रे कर्तव्याः. 8 *b* भूय भूत°. 9 *a* अय अजाः त्रिवर्षयवाः एव येषामङ्कुरोत्पत्तिर्न विद्यते. 11 *b* तिउणउं सुत्तु त्रिगुणं यज्ञोपवीतम्. 15 सुयसंगहु श्रुतसंग्रहः; करुणावहु दयामार्गः. 16 इट्ठउ इष्टम्.

10. 1 वियलियमलमईहिं विगलितपापमतिभिः; कुमग्गगयं कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. 2 पसुसममिणं पशुसदृशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं क्रियते. 4 *a* वत्ताणुट्ठाणु वार्तानुष्ठानम्.

मंतिठाणि कुलंबुद्धिइ चत्ता निक्ख पक्खपालणइ अभत्ता ।
अंतेउरि पमत्त कामाउर लुद्ध धणाहियारि पलरियकर ।
ण थविज्जंति काइं वित्थारें णासइ पहु दुट्ठें परिवारें ।
पडिवयणेण तासु मइपसरणु कलहे ण वि परियणपोरिसगुणु ।
सहवासेण सीलु जाणेवउ ववहारेण सउच्चु मुणेवउ ।
जाणेवा राएं पेसिवि चर कुद्ध लुद्ध माणिय भीरुय पर ।
सामभेयधणदंडसमागउ झत्ति रइज्जइ जं जसु जोग्गउ ।

घत्ता—णियकज्जु वि परकज्जु वि कम्मद्धक्खसुइत्तणु ॥
जाणेवउ माणेवउ एत्तउ पुत्त पहुत्तणु ॥ १० ॥

11

रविता—कुणसु सकलुसवइरिणिवपेसियपणिहीपडिविहाणयं ।
परियणसयणमित्तसंतोसयरं संमाणदाणयं ॥ १ ॥

दुविहु वि जणउवसग्गु हरेज्जसु तिविहसत्तिसब्भाउ करेज्जसु ।
भक्खिउं उप्पेक्खिउं वि मुणिज्जसु णिग्गहु अवरु अणुग्गहु देज्जसु ।
सत्तु मित्तु मज्झत्थु वि भावहि सव्वणिओयसुद्धि संदावहि ।
अवलंबेज्जसु गुरुहिययत्तणु मुयसु दिट्ठकामुयकामित्तणु ।
चवलत्तणु अयालगामित्तणु खलसंगु वि दुव्वसणपवत्तणु ।
णारि जूउ मइरा मयमारणु कामुप्पण्णउ चउविहु दारुणु ।

६ M मंतिट्ठाणेसु सुबुद्धिए चत्ता, BP मंतिट्ठाणि कुबुद्धिइ चत्ता, ७ MBP एत्तिउ.
11. १ MBP विहावहि. २ MBP धिट्ठ° but gloss in PT दृष्टे स्त्रीजने. ३ MBP अयाले.

---

7 *a* मंतीत्यादि–मान्त्रिस्थाने कुलबुद्धिहीना न कर्तव्याः; *b* तिक्ख तीक्ष्णा हिंस्रा ये ते ग्रामनगरादिरक्षणे न स्थापनीयाः 8 *b* धणाहियारि भाण्डागाराधिकारे. 10 *b* कलहे संग्रामकाले. 11 *b* सउच्चु निर्लोभिता. 12 *b* पर शत्रवः. 13 *a* °समागउ °प्राप्तम्. 14 कम्मद्धक्खसुइत्तणु कर्माध्यक्षाणामधिकारिणां शुचित्वं निर्लोभत्वम्.

11. 1 °पणिहीपडिविहाणय चारपुरुषप्रतिविधानकम्. 3 *a* दुविहु मराकादि देवकृतं धाटीप्रमुखं मनुष्यकृतम्; *b* तिविहसत्ति मन्त्रोत्साहप्रभुत्वशक्तय· 4 *b* णिग्गहु दण्डम्; अणुग्गहु प्रसादम्. 5 *b* णिओयसुद्धि संदावहि यत्कर्म येन नियोगिना कर्तव्यं तत्तस्य दर्शय. 6 *b* दिट्ठकामुयकामित्तणु दृष्टे स्त्रीजने ये कामुकाः काममेवोत्सुका· तेषु अभिलाषं मुञ्च. 8 *a* मयमारणु मृगया.

अण्णाएं ण दविणु णासेवउ तिक्खदंडु सुंफरुसु भासेवउ ।
रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं मइं महिवइसासाणि विण्णायउं ।
इय सत्तविहु भरेण ण किज्जइ रिउछव्वग्गहु हियउं ण दिज्जइ ।

घत्ता—मुइ कोहु वि मउ लोहु वि माणु हरिसु सहु कामें ।
गुरु घोसइ सिरि होसइ पयहु खयपरिणामें ॥ ११ ॥

12

रचिता—एक्कंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु भणंति सूरिणो ।
तासु महंति मंतु पहुपेसिय गूढा लिंगधारिणो ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहिं जाणेवा जे विरुद्ध ते तहिं णिहणेवा ।
कीरइ कालि गमणु ववगयमलि आसणु बहुकणतणजलमहियलि ।
विग्गहु हीणें अहव समाणें बलवंतेण संधि कयदाणें ।
दुग्गासिएँण समाणु वि किज्जइ मित्तु वि पडिवक्खत्तु ण णिज्जइ ।
एम अलद्धउ लब्भइ मंडलु परिरक्खिज्जइ कय चिंतियफलु ।
उप्पाइज्जइ दव्वु पसत्थहं तं दिज्जइ अट्ठारहतित्थहं ।
तित्थहिं धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ रायाइल्लउ खयहु ण गच्छइ ।
सामि अमच्चु रट्ठु धणु सुहि बलु भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिबलु ।
इउ सत्तंगु जेम्व णउ खिज्जइ तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ ।

घत्ता—इय भाविउ सिक्खाविउ चक्कवट्टिलच्छीहरु ॥
णियजणणें णं तवणें वियसाविउ कमलायरु ॥ १२ ॥

४ MBP सुफरसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पण्णु वसणु णिहणेव्वउ. ६ P adds after this line: णिच्छउ मइं हियवइ संभाविउ. ७ MP वित्तु.

12. १ MBP णेरंतरु. २ MBPK दीणें. ३ M कयमाणें. ४ MBP दुग्गासिए संमाणु जि किज्जइ.

10 *a* रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं अन्यायेन द्रव्यनाशः, तीक्ष्णदण्डः, परुषवचनं चेति रोषोत्पन्नं त्रिभेदं व्यसनम्. 11 *a* भरेण आतिशयेन. 12 मुइ मुञ्च.

12. 1 एक्कंतरिउ एकदेशान्तरस्थं राजानं मित्रम्; णिरंतरु समीपस्थं शत्रुम्. २ तासु महंति मंतु तस्य शत्रोः भिन्दन्ति मन्त्रम्; लिंगधारिणो विविधवेषधराः. 5 *a* विग्गहु संग्रामः. 6 *a* दुग्गासिएण समाणु दुर्गाश्रितेन सह संधिः क्रियते; *b* पडिवक्खत्तु शत्रुत्वम्. 9 *b* रायाइल्लउ अनुरागयुक्तम्. 10 सुहि सुहृत्. 11 *b* वसुमइ पृथ्वी. 13 तवणें सूर्येण.

13

रचिता—गुणमणिकिरणपसरभरपसमियदुण्णयतिमिरमेलओ ।
हुउ वइसवणपवणजमससिरविहुयवहवरुणलीलओ ॥ १ ॥

धम्मत्थेसु कुसलु तेयंसिउ हियमियमहुरभासि णिवसंसिउ ।
अपिसुणु बद्धुच्छाहु अरूसणु सुइ सुधीरु बलवंतु महासणु ।
मइदिहिहरु समत्थु जिर्त्तिदिउ सहसुप्पण्णबुद्धि जगवंदिउ ।
दूरालोउ अदीहरसुत्तउ पुरिसण्णउ पसण्णु गुरुभत्तउ ।
थिरु संभरणसीलु णिम्मलवउ सच्चु अजिंभचित्तु अइसुहउ ।
थूललक्खु मेहावि सयाणउ किं वण्णिज्जइ भारहराणउ ।
पुणु सव्वत्थविमाणहु आयउ वसहसेणु णामें संजायउ ।
जसवइदेविहि बीयउ णंदणु पुणु वि अणंतविजउ रिउमद्दणु ।
अवरु अणंतवीरु पुणु अच्चुउ वीरु सुवीरु मत्तकरिकरभुउ ।

घत्ता—गयभंगहं चरिमंगहं पुण्णपहावपउण्णउं ॥
गुणजुत्तहं सउ पुत्तहं एवमाइ उप्पण्णउं ॥ १३ ॥

14

रचिता—घणथणणयणवयणकरकमयलसयलावयवसोहिया ।
समियसविसयविरसविसवेहणि सीलसिरीपसाहिया ॥ १ ॥

धीय सलक्खण कोमलगत्ती णक्खकंतिणिज्जियणक्खत्ती ।
जसवइसइसरीरि संभूई बंभी णामें अवर वि हूई ।

13. १ GK have दुवई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Samdhi. २ P पयसमिय. ३ B मइविहिहरु. ४ B संतरणसीलु. ५ MBP सच्चु. ६ B आजिंभचित्तु. ७ BP अच्चउ but gloss in P अच्युत. ८ MBP सुधीरु. ९ MBPT गयरंगहं.

14. MB °कणयवयण°. २ MB °विरसवेहणि. ३ P सालसिरी°. ४ MB °पहासिया.

---

13. 3 *a* धम्मत्थेसु धर्मार्थयोः; तेयंसिउ तेजस्वी; 4 *b* महासणु गम्भीरशब्द; 5 *a* मइदिहिहरु मतिधृतिगृहम् ; 6 *a* दूरालोउ दूरालोची दीर्घदृष्टि.; अदीहरसुत्तउ शीघ्रकार्यकर्ता; *b* पुरिसण्णउ पुरुषविशेषज्ञः; 7 *a* संभरणसीलु स्मृतिशीलः; णिम्मलवउ निर्मलव्रतो निर्मलवपुश्च; *p* अजिंभचित्तु अकुटिलचित्तः; 8 *a* थूललक्खु बहुदाता वदान्यः; सयाणउ सज्ञानः 12 गयभंगहं गतभङ्गानामपराजितानाम्.

14. 2 समियेत्यादि–शमिता उपशमं नीता स्वविषयविरसविषस्य वेदना यया सा.

वियलियसोयहि भुंजियभोयहि पुणु वि सुणंदहि णंदियलोयहि ।
हुउ सव्वत्थसिद्धि परमेसरु हुउ मणहरु णं मरगयमेहिहरु ।
सिसु अविपिक्कवंससुच्छायउ बालउ बाहुबलि वि तहि जायउ ।
तुच्छबुद्धि अप्पउ अवगण्णमि पहिलउ कामएउ किं वण्णमि ।
गज्जमाणजलहरजलणिहिसरु फलिहपईहथोरकरपंजरु ।
पुण्णमियंकवयणु जसहलतरु सिरिकीलागिरिंदसमभुयसिरु ।
पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु विससद्दूलखंधु अवियलबलु ।
दलियासामयगलगलसंखलु णीलणिद्धमउपरिमियकुंतेलु ।
तणुमज्झप्पएसि रइरंगउ अंगें सहु जि अउव्वु अणंगउ ।
वियडणियंबु तंबबिंबाहरु उच्छुचावजीयासंधियसरु ।

घत्ता—णवजोव्वणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंडहिं ॥
पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंडहिं ॥ १४ ॥

15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवससुसियंगेहिं कालिया ।
विलवइ चलइ घुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि बालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयणियतुट्ठिहिं मउलियललियहिं वलियहिं दिट्ठिहिं ।
का वि पएसु पडंती दीसइ का वि सविणय किं पि संभासइ ।

५ M °गिरिवरु. ६ MBP °सच्छायउ. ७ MBP कामदेउ. ८ M °गलगयसंखलु. ९ P °कोंतलु.
15. १ MBP चवइ. २ MPK चलियहिं.

7 *a* अविपिक्कवंससुच्छायउ अपक्ववंशवत्सुकान्ति. 9 *b* फलिहपईह° अर्गलावत्प्रदीर्घ°. 10 *a* ॖण्ण-मियंकवयणु पूर्णचन्द्राननः; *b* गिरिंदसमभुयसिरु गिरीन्द्रसमानोन्नतांसः. 11 *b* विस° वृषभः; अवियलबलु स्थिरबलः. 13 *a* दलियासामयगलगलसंखलु दलिता आशामदकलानां दिग्गजानां गलशृंखला येन. 13 *a* रइरंगउ रतेः रङ्गभूमिः 14 *a* वियड° विकट°; तंबबिंबाहरु ताम्रं रक्तं यद्बिम्बीफलं तद्वद्रक्त ओष्ठो यस्य; *b* उच्छुचावजीयासंधियसरु इक्षुचापप्रत्यञ्चासंधितशरः. 15 पंचहिं तेहिं तैः पञ्चभिः पुत्रैः, कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणैः. 16 कोसुमकंडहिं पुष्पमयैर्बाणैः.

15. 1 °मयणेत्यादि– कामाग्निना जनितो यो रसः प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अङ्गानि यस्याः, अत एव कालिया श्यामवर्णा. 2 घुलइ पतति; सुहयस्स कए सुभगस्य कृते. 3 *b* मउलिय° मुकुलित°, सलज्जतया किंचित्संकुचिताभिरित्यर्थः.

का वि भणइ दिज्जउ आलिंगणु जइ मेल्लेसइ[३] मेरउ प[४]गणु ।
ता होसइ तुह तायहु केरी आण सुरिंदभयाइं जणेरी ।
चंचालि चेलंचलइ विलग्गइ क वि सोहग्गभिक्ख तहिं मग्गइ ।
कंठाहरणउं रयणणिउत्तउ का वि देइ कंकणु कडिसुत्तउ ।
तग्गयणयण णियइ अवचित्ती क वि आमायहु साइउं देंती ।
क वि तेल्लेणं[५] पाय पक्खालइ धूवइ दुद्धु तक्कु ण णिहालइ ।
दोरि[६] विलंबिउ[७] कं वि भीभूयइ घडु मण्णंति घिवइ सिसु कूवइ ।
काइ वि जोयंतिइ मयरद्धउ वच्छु भणिवि घरि मंडलु बद्धउ ।
काहि वि णीवीबंधणु ढलियउ पेम्मसालिल्लु ऊरू[८]यलि गलियउ ।

घत्ता—पइ भल्लउं कडउल्लउं का वि देइ करि णेउरु ॥
उद्दामें इय कामें संताविउ सयलु वि पुरु ॥ १५ ॥

16

रचिता—कुलधणसयणमोहमाणुण्णइवीलाहरणववसियं ।
इसिवयमिव वहंति[१] रमणीयउ जस्स सिणेहविलासियं ॥ १ ॥

जिह जिह सुंदरु खेल्लइ रच्छइ तिह तिह हियवउ हरइ वरच्छहिं ।
सोम्मु[२] सुदंसणु पढमु कुमारउ पेच्छंतिइ बाहुबलि कुमारउ ।
काइ वि कउ कवोलि करु कोमलु तणुतावेण कढइ सरकोमलु ।
काहि वि विरहासिहिं[३] पउलिउ पलु धवलु वि कमलु हुवउ णीलुप्पलु ।
सहइ कामु महुसमयागमणें णिहय का वि पियसमयागमणें ।

३ MBP मेल्लेसहि. ४ MBP पगणु. ५ M तिल्लेण. ६ MBP दोर°. ७ B काविलीभूयइ. ८ P उरुयायालि°
16 १ B हति. २ MBP सोमु. ३ P विरहसिहिहिं.

5 *b* मेल्लेसइ मुश्चति. 6 *b* आण शपथः. 7 *a* चेलचलइ वस्त्राञ्चले. 8 *a* रयणणिउत्तउं रत्नजडितम्. 9 *a* अवचित्ती उद्भ्रान्तमनाः; *b* साइउं आलिङ्गनम्. 10 *b* धूवइ वग्घारयति प्रलेहनिमित्तं 'कढी' इति. 11 *a* भीभूयइ भयानके; *b* घिवइ क्षिपति. 12 *b* मंडलु कुक्कुरः श्वा ग्रामशार्दूलः. 14 पइ पदे.

16. 1 °वीलाहरण° व्रीडापरित्यागः. 2 इसिवयमिव वहंति ऋषिव्रतमिव, यथा मुनिदीक्षायां कुलधनादिकं न मन्यते. 3 *b* वरच्छहिं सुन्दरलोचनायाः. 4 *b* कुमारउ कौ पृथिव्यां मारः कामः. 5 *b* सरकोमलु सरोवरजलम्. 6 *a* विरहसिहिं विरहाग्निना; पउलिउ प्रज्वलित दग्धम्; पलु मांसम्. 7 *a* महुसमयागमणें वसन्तागमनेन; *b* पियसमयागमणें आगो दोषः; समय स्वमदेन प्रियविषये कृतमागस्तेनोपलक्षितं मनः तेन; प्रियसमये आगमनेन वा.

मउलिय फुल्लिय मल्लिय काणणि मंडणु देइ पुरंधि ण काणणि ।
णिम्मय पल्लव णवसाहारहु मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु ।
पइ मेल्लेप्पिणु लवइ व कोइल सुहयत्ते किर भूसइ को इल ।
मुहमरुपरिमलमिलियसिलिम्मुह जे ते णं कंदप्पसिलिम्मुह ।
का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती अज्जु गइय महु दुक्खें रत्ती ।
का वि भणइ पिय करि केसग्गहु वियलउ मालइकुसुमपरिग्गहु ।
का वि कहइ लइ चुंबहि वयणउं अवरु मं देहि किं पि पडिवयणउं ।

घत्ता—णउ मेल्लइ क वि बोल्लइ म करहि काइं वि विप्पिउ ॥
घरु वित्तु वि णियचित्तु वि सयलु वि तुज्झु समप्पिउ ॥ १६ ॥

17

रचिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयरु मणरुहविसिहसल्लिया ।
पिययमवयणकमलरसलंपडि तरुणीमहुयरुल्लिया ॥ १ ॥

जो सूहउ महिलहिं माणिज्जइ कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ ।
गब्भि सुणंदहि रूवरवण्णी तासु बहिणि अवर वि उप्पण्णी ।
णवजोव्वणि चडंति सा छज्जइ चंदु कलंकें वयणहु लज्जइ ।
रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ ।
भूवंकत्तणु थणथड्डत्तणु अहरहु केरउ अइराइत्तणु ।
पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु जणमारण णयणहुं मि चलत्तणु ।

४ B मंडलु. ५ K सिलीमुह. ६ MBP म किं पि देहि.
17. १ M अइरत्तत्तणु; BP अइरायत्तणु.

8 *b* ण का ण णि का स्त्री मण्डनं न ददाति आनने मुखे, अपि तु सर्वा ददाति. 9 *b* सा हा र हु स्वाहारस्य; अथवा सा हा र हु हारस्य. 10 *b* इ ल पृथ्वी. 11 *a* °सिलिम्मुहु भ्रमरः; *b* °सि लि म्मु हु बाणः. 15 वि प्पि उ विप्रियमनिष्टम्.

17. 1 रु णु रु ण इ सकाममव्यक्तशब्दं करोति; म ण रु ह वि सि ह° कामबाणाः. 2 त रु णी म हु य रु-ल्लि या तरुण्येव मधुकरी भ्रमरी. 4 *b* ता सु बाहुबलेः. 6 *a* प य सो ह इ पदकमलशोभया. 7 *a* थ ण थ ड्ड त्त णु स्तनकठिनत्वम्; *b* अ ह र हु अधरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्वं दोषः, ओष्ठे तु गुणः. 8 *a* प डि-आ य हं पूर्वमेकवारं पतिताः पुनरुद्गतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्वं कथम्.

तुच्छोयरवासिहि गंभीरिम णाहिहि अवरु णियंबहु वड्डिम ।
कंचीदा[2]मएण दढबंधहु रहियंगहु परलोयविरुद्धहु ।
सीसारूढकेसकुडिलत्तणु पुरिसोवरि माणसकढिणत्तणु ।
दिट्ठदोसु अवसें असमेहलु मज्झु अमज्झत्थु व हुउ दुब्बलु ।
तुंगपयोहरविलुलियघणघण चलहारावलिमोत्तिय जलकण ।
सिंचिय तेहिं णाइं मइ सीसइ रोमराइ णववेल्लि व दीसइ ।
इय रूवें जगणारिहि सुंदरि जाणिवि ता[3]एं कोक्किय सुंदरि ।

घत्ता—एक्कुत्तरु रणदुद्धरु सउ तणयहं दुइ धूयउ[4] ॥
कयसेट्ठिहिं परमेट्ठिहिं जायउ अणुवमरूवउ ॥ १७ ॥

18

रचिता—जयवइजणणचरणमूलम्मि महारिउवंदि[1]मइणा ।
बहुसुयणियरधरणपरिणयमइ जाया सयलणंदणा ॥ १ ॥

भावें णमसिद्धं पभणेप्पणु दाहिणवामकरेहिं लिहेप्पिणु ।
दोहिं मि णिम्मलकंचणवण्णहं अक्खरगणियइं कहियइं कण्णहं ।
अत्थें सद्देण वि सोहिल्लउ गहु अगहु दुविहु कव्वुल्लउ ।
सक्कउ पायउ पुणु अवहंसउ वित्तउ उप्पाइउ सपसंसउ ।
सत्थकलासिउ सेग्गणिबद्धउ[2] णाडउ अक्खाइय कहरिद्धउ[3] ।
अणिबद्धउ गाहाइउ अक्खिउ गेयवज्ज[4]लक्खणु वि णिरिक्खिउ ।
बंभें सइं वक्खाणिउं जं जिह कुं[5]अरीजुयलें बुज्झिउ तं तिह ।

२ M कंचीदामणएण. ३ B ताइएं. ४ MBP धीयउ.

18. १ MBP °विंद°. २ MBP सग्गि णिबद्धउ. ३ MBP कहरुद्धउ. ४ MBP गेयवज्जु लक्खणु. ५ MBP कुमरी°.

9 *a* तुच्छोयरवासिहि तुच्छं स्वल्पं यदुदरमध्यं तस्मिन्वसनशीलस्य गम्भीरिमा दोषो नाभेस्तु गुणः. 10 *b* रहियंगहु प्रच्छादितस्वरूपस्य; परलोयविरुद्धहु परलोकेन मोक्षेण परपुरुषावलोकनेन वा विरुद्धस्य. 12 *a* असमेहलु असमामीहां चेष्टां लातीति अमध्यस्थः पक्षपाती वा. 13 *a* विलुलियघणघण लुठितसघनमेघः. 15 *b* ताएं पित्रा तातेन; कोक्किय नाम दत्तम्.

18. 1 जयवइ° जगत्पति°. 2 बहुसुयणियर° प्रचुरश्रुतसमूहः. 5 *b* अगहु पद्यम्. ६ *a* अवहंसउ अपभ्रंशम्; *b* वित्तउ वृत्तम्. 7 *a* सत्थकलासिउ शास्त्राश्रितं द्वासप्ततिकलाप्रतिपादितम् ; *b* कहरिद्धउ कथामृतम्. 8 *a* अणिबद्धउ सर्गबन्धेन अरचितं गाथादिकम्; *b* गेयवज्जलक्खणु गीतवाद्यलक्षणशास्त्रम्. 9 *a* बंभें वृषभेण.

सुयइं महंतु कहंतु अणेयइं विण्णाणइं णाणइं बहुभेयइं ।
एम भडारउ अच्छइ जइयहुं भग्गी पय दुक्काले तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घरु आइय चवइ जिणेण णिरिक्खिय ॥
पहु दहविह सुरमहिरुह अवसप्पिणियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियविमलवारिणा ।
धुयकमकमलजुयल परमेसर पइं मि महारिवारिणा ॥ १ ॥

कप्पंघिवविणासि संहारहु णउ परिरक्खिय भुक्खामारहु ।
जिण्णइं अंबराइं मलमलिणइं कालें विहडियाइं आहरणइं ।
तणु लायण्णु वण्णु परिल्हसियउ जढरहुयासें रुहिरु वि सुसियउ ।
लग्गणखंभु अण्णु को अम्हहं एवहिं सरणु पइट्ठा तुम्हहं ।
असणवसणभूसणसंपत्तिहि भवणजाणसयणासणजुत्तिहि ।
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि करि णिच्चिंत असेसहि वित्तिहि ।
तं णिसुणेवि जायकारुण्णें देवें पउरणाणसंपण्णें ।
करिसणकरणु धरणु मयाणिवहहं हरिकरिमेसमहिसविसकरहहं ।
पइ घड भोयणु भायणु रंजणु घरु पर्यणविहि पीढु मणरंजणु ।
सेज्ज सरीरताणु जलधारणु हारु दोरु केऊरु सकंकणु ।
असि मसि सिप्पु वि जं जिह जेहउ अक्खिउ लोयहु तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परमेसरु सुंधरियधरु आइपुरिसु कमलासणु ॥
जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥

19. १ MBP ° °रिणा. २ MB संघारहु but PGKT संहारहु. ३ MBP को वि ण उ अम्हहं. ४ K णिप्फत्तिहि. ५ P णिब्भंत. ६ K °संपुण्णें. ७ M °वस°. ८ MBP परियणु वि. ९ MBT जलवारणु, but T records a *p* जलधारणु and remarks 'जलवारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु वापीकूपतडागादिकम्'. १० MBP सुधरियधरु.

---

11 *b* पय प्रजा.

19. 2 पइं मि त्वयापि; महारिवारिणा महादुःखनिवारकेण. 3 *a* संहारहु प्रलयकालात्; *b* भुक्खामारहु क्षुधामारीसकाशात्. 5 *a* परिल्हसियउं हीनं जातम्; *b* जढरहुयासें जठराग्निना. 6 *b* एवहिं इदानीम्. 8 *b* वित्तिहि जीविकायाम्. 11 *a* रंजणु अलंजलः अलिंजरो वा; *b* पयणविहि पचनविधिः 12 *a* सरीरताणु कवचादिकम्; जलधारणु छत्रादिकम्; 14 सुधरियधरु सुधृतभूमिः.

20

रचिता—अवर वि भणिय वणियवर हलहर सुयरियकहियकुलवहा ।
अइ परिवडियधम्म चंडाल वि पयडियविविहपसुवहा ॥ १ ॥

लेहउ लोहयारु कुंभारु वि तिलपीलउ मालिउ चम्मारु वि ।
जेहिं जं जि णियकम्मु पयासिउ ताह तं जि कुलदेवें भासिउ ।
पल्लव सेंधव कोंकण कोसल टक्का हीर कीर खस केरल ।
अंग कलिंग गंग जालंधर वच्छ जवण कुरु गुज्जर वज्जर ।
दविड गउड कण्णाड वराड वि पारस पारियाय पुण्णाड वि ।
सूर सुरट्ठ विदेहा लाड वि कोंग वंग मालव पंचाल वि ।
मागह जट्ट भोट्ट णेवाल वि उड्ड पुंड हरि कुरु मंगाल वि ।
देवमाउसासुब्भव ससलिल साहारण अणूव पर जंगल ।
गिरितरुसरिदुग्गेहिं दुसंचर अडइदेस वसिकयधर ससबर ।

घत्ता—वइधरियहिं वणहरियहिं महि सोहइ चउपासिहिं ॥
कयँगामहिं आरामहिं छेत्तहिं एकदुकोसहिं ॥ २० ॥

21

दुवई—चउविहगोउराइं चउदाराइं णयरइं भूमिभूसणो ।
कारावइ पुराइं पुरुएवजिणो सुरेंदिण्णपेसणो ॥ १ ॥

---

20. १ K पडिवडिय°. २ P °पसुविहा; MB °वसुवहा. ३ MBP वग. ४ MBP बब्बर. ५ MBP भट्ट. ६ MBP वसिकयवर. ७ MB कयगामिहिं. ८ MBP खेत्तहिं.

21. १ MBP call this couplet रचिता; GK call it दुवई which it is. २ MB पुरएव°. ३ B सुरवरदिण्णपेसणो.

---

20. 1 सुयरिय° सुचरिताः सज्जनाः; °कुलवहा कुलमार्गाः. 2 परिवडियधम्म धर्मात्पतिताः; पयडियविविहपसुवहा प्रकटितनानापशुवधाः. 3 *a* लेहउ चित्रकारो लेखकश्च. 10 *a* देवमाउसासुब्भव मेघवृष्टिजनितसस्याः; ससलिल नदीजलसेकादिना निष्पन्नसस्याः; *b* साहारण नदीजलसेकादिना मेघवृष्ट्या वा निष्पन्नसस्याः; 11 *b* ससबर शबरैः भिल्लैः सहिताः. 12 वइधरियहिं वृतियुक्तैः.

21. 1 भूमिभूसणो आदिनाथः.

खेडइं थियदुवासगिरिसरियइं कव्वडाइं महिहरपरियरियइं ।
पंचगावँसयसहियमडंबइं रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं ।
दोणामुहइं जलहितीरत्थइं संवाहणइं अद्दिसिहरत्थइं ।
सुणिरूवियसविणयसेवायर वइरायरपहुइ जे आयर ।
पयणियरायसुरिंदाणंदें ते रक्खाविय कुलयँरचंदें ।
वण्णचउक्कमग्गु उवएसिउ दंडें दोसु असेसु पणासिउ ।
तिहुयणरायहु महिरायत्तणु कवणु गहणु तहु मणुयपहुत्तणु ।
कम्मभूमिसंपय दरिसंतहु कणयरयणधारहिं वरिसंतहु ।
पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइयहुं वज्जु पट्टु जगणाहहु तइयहुं ।
णाहिणरिंदामरसंघायहिं कच्छमहाकच्छाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासणि णिवसासणि आसीणउ परमेसरु ॥
जयसिरिसहि पालइ महि बहुहलहरउवणीयकरु ॥ २१ ॥

22

खंडिता—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरखयरभूयरो ।
अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि छुहवेविरतणु उब्भियकरयलु णीसेसु वि जणु ।
घरि उच्छुरसु पियहुं जेणायउ पहु इक्खाउवंसु तें जायउ ।
सोमप्पहु कोक्किउ कुरुराणउ सो जायउ कुरुवंसपहाणउ ।
हरि हरिकंतु कहि वि हरिवंसहु कउ पुरिमिल्लु पुरसु सपसंसहु ।
कासवु मघवु भणेप्पिणु घोसिउ उग्गवंसमूलिल्लु पयासिउ ।
अवरु अकंपणु सिरिहरु भाणिउ णाहवंसि सो पहिलउ जाणिउ ।
चोद्दहमयकुलयरापियणंदणु मरुएवीमणणयणाणंदणु ।

४ MBP °गाम°. ५ K कुवलयचंदें.

22. १ MBP पुरमिल्लु. २ MBP उग्गवंसु. ३ MBP चउदह°.

3 *a* दुवास° द्विपार्श्व°. 5 *b* अद्दिसिहरत्थइं पर्वतशिखरस्थानि. 6 *b* वइरायरपहुइ वज्राकरप्रभृति; *a* आयर आकराः खनयः. 7 *b* ते आकररत्नानि. 14 उवणीय° उपढौकित°.

22. 1 हयमल° हतमलः परमेश्वरः; °भूयरो मनुजः. 6 *a* हरि हरिनामा पुरुषः; हरिकंतु कहि वि चन्द्रवत् कान्त इति भणित्वा, *b* पुरिमिल्लु आद्यः. 7 *b* °मूलिल्लु प्रथमपुरुषः.

फणिवरसिरमणिहयपयणेउरु सकलत्तउ सपुत्तु संतेउरु ।
कहियणरेसरकुलहिं विराइउ अच्छइ रज्जु करंतु महाइउ ।

घत्ता—पय पालइ दक्खालइ णायमग्गु भाभासुरु ॥
सिरिअरुहें सहुं भरहें पुप्फयंतु रिसहेसरु ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे आइदेवमहारायपट्टबंधो णाम
पंचमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ५ ॥

॥ संधि ॥ ५ ॥

४ M °णरेसरकुलेहिं; K णरेसकुलेहिं

11 कहियणरेसरकुलहिं पूर्वोक्तचतुष्प्रकारराजकुले : b महाइउ महार्घिक· 13 सिरिअरुहें श्रीयोग्येन.

VI

अण्णहिं दिणि सभवणि सुरवरहिं संथुउ संपयगारउ ॥
फणिदणुयहिं मणुयहिं सेवियउ थिउ अत्थाणि भडारउ ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

मलयविलसिया—कंचणघडियइ मणिगणजडियइ ।
हरिवरधरियइ पहविप्फुरियइ ॥ १ ॥

आसणि आसीणउ परमपहु अम्हहिं किं वण्णिज्जइ रिसहु ।
दिण्णइं चाउरिपट्टासणइं सुविचित्तदित्तवेत्तासणइं ।
रयणंचियाइं लोहासणइं दंडुण्णयाइं दंडासणइं ।
एक्केक्क पहाणा खणि मिलिय तहिं संणिसण्ण बहु मंडलिय ।
कु वि णरवइ घुसिणें समलहिउ णं सिरिकामिणिराएं गहिउ ।
कु वि दीसइ चंदणधूसरिउ पंडुरु णं णियजसेण भरिउ ।
मयणाहिविलित्तउ को वि णरु ससिरविभीयउ धरइ व तिमिरु ।
णिवि कहिं मि घुलइ हारावलिय कसणइ णं जलहरि विज्जुलिय ।
कासु वि पडंति चमरइं चलइं णं कित्तिसुभिसिणिहि सयदलइं ।
कप्पूरधूलिबहलुच्छलइं रुणुरुंटइ तहिं महुयरु घुलइ ।
सो केण वि पंतु णिवारियउ तंबोलहु पाणि पसारियउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:

श्रीर्वाग्देव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि सतत लक्ष्म्यै ।
भरतमनुगम्य सांप्रतमनयोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

GK do not.

1. १ MBP चाउरिवित्तासणइं. २ MBP सुविदित्तचित्तपट्टासणइं. ३ G खणमिलिय. ४ MBPT कु वि णिवरु.

1. 1 सभवणि स्वप्रासादे; संपयगारउ सपत्तिकारकः. 2 अत्थाणि आस्थाने सभायाम्. 4 *a* हरिवर° सिंहवरैः; *b* पह° प्रभया. 6 *a* चाउरि° गादीति देशी. 7 *b* दंडुण्णयाइं दण्डवदुन्नतानि. 8 *b* संणिसण्ण उपविष्टाः. 9 *b* सिरिकामिणिराए लक्ष्मीप्रेम्णा. 11 *a* मयणाहि° कस्तूरिका. 12 *a* णिवि नृपे; *b* कसणइ कृष्णशरीरे मेघे. 13 *b* कित्तिसुभिसिणिहि कीर्तिरेव शोभना पद्मिनी तस्याः; सयदलइं पद्मानीव. 14 *b* रुणुरुंटइ शब्दं करोति. 15 *a* सो भ्रमरः.

घत्ता—खगसामिहिं कामिहिं सयलहि वि वंदारयबंदियणहिं ॥
पणवंतहिं संतहिं रईणिवहिं जहिं विरोहु मणिकिरणहिं ॥ १ ॥

2

मलयविलसिया—जत्थ णिसण्णो पणयपसण्णो ।
सिंगारहरो रामाणियरो ॥ १ ॥

णियमंति जणं जहिं भत्तियर कट्ठियहर परपडिहारणर ।
पहुअग्गइ सेवादूसणउं णिट्ठीवणु जिंभणु पहसणउं ।
कमकंपणु अद्दु णिहालणउं हिक्कारउ भउंहाचालणउं ।
खासणु धम्मिल्लामेल्लणउं करमोडि परासणपेल्लणउं ।
अवठंभणु दप्पणदंसणउं अइजंपणु सगुणपसंसणउं ।
सवियारउ कायणियच्छणउं इट्ठागमदेवदुगुंछणउं ।
संकेयवयणअवयारणउं परणिंदणु पायपसारणउं ।
अवरु वि जं विणएं विरहियउं तं म करह गुरुयणगरहियउं ।
मण्णहु माणुसु सामिहि तणउं ढंकहु दीणत्तणु अप्पणउं ।

घत्ता—इय लक्खिउ अक्खिउ सेवयहो अहिमाणिहिं वणु चंगउ ।
दउवारियपेरियदंडएण मा छिप्पउ नहु अंगउं ॥ २ ॥

3

मलयविलसिया—सुरवरसारउ एम भडारउ ।
अच्छइ जावहिं सुरवइ तावहिं ॥ १ ॥

५ MBP कामिहि कामि.णहि. ६ P रुईणिवहि.

2\. १ MBP वर°. २ M भउहा°. ३ M करहि. BP करहु. ४ MBP माणमु. ५ MB अहिमाणहि.

3\. १ MBP जइयहु. २ MBP तइयहु

16 कामिहिं देशगजादीनां वाञ्छकैः, वंदारय° देवाः. ण्व बन्दिजनाः ते. 17 रइणिवहि प्रीतिसमूहैः.

2\. 3 *a* णियमंति निषेधयन्ति, *b* कट्ठियहर यष्टिधराः. 5 *a* अद्दु णिहालणउ वक्रावलोकनम्; *b* भउंहा° भ्रूः 9 *a* संकेय° संदेशः. 11 *a* मण्णहु मानयत. 12 अहिमाणिहिं वणु चंगउ अहंकारिणां वन चारु न हु सभा.

संचिंतइ अवहीणाणधरु बारहरविसंणिहकुलिसयरु ।
पुव्वहं परमेसरेण रमिय कुमरत्तें वीस लक्ख गमिय ।
भुंजंतहु महि तेसट्ठि गय अज्जु वि अवलोयइ चवल हय ।
अज्जु वि माणि मण्णइ मत्त गय इच्छइ अज्जु वि संदण सधय ।
अज्जु वि घरि रइ किंकरणिवहि अज्जु वि ण विरप्पइ कामसुहि ।
को हुयवहु इंधणेण धवइ सरिसलिलें सरिणियराहिवइ ।
को भोएं जीवहु करइ दिहि बलवंतउ सव्वहुं कम्मविहि ।
जाणंतु वि मुज्झइ देउ जहिं अण्णाणु अवरु किं भणमि तहिं ।

घत्ता—रइराविउ भाविउ एउं जगु किं पि ण याणइ जुत्तउ ॥
सकलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवडइ हेट्ठाहुत्तउ ॥ ३ ॥

4

मलयविलसिया—तुट्ठे धिट्ठे डज्झसु तिट्ठे ।
ण तुह घणेणं तित्ति इमेणं ॥ १ ॥

अज्जु वि णउ फिट्टइ भोयरइ अज्जु वि णउ चिंतइ परम गइ ।
अज्जु वि पहुहियउ णउ उवसमइ माणवरमणीरमणउ रमइ ।
सरणिहिसमाहं मइ पयडियउ अट्ठारहकोडाकोडियउ ।
णट्ठाइं धम्मकम्मंतरइं दंसणणाणइं चरियइं वरइं ।
आयारइं पंचमहव्वयइं अणुवयगुणवयसिक्खावयइं ।
ण पयासइ णवपयत्थसहिउ सिद्धंतु अणाइ अरुहें कहिउ ।
इय चिंतिवि इंदें जाणियउं अवहिए भवियव्वु पमाणियउं ।

३ MBP रइ घरि. ४ B °णिवहो. ५ B कामसुहो. ६ M सरणियरा°. ७ MBP सव्वहं बलवंतउ. ८ MBP जाणतउ. ९ K एहु. १० MBPK एम. ११ MP ण जाइ; B ण जाणइ. १२ MBP हेट्ठाहुंतउ.

4. १ MBP ण उवसमइ. २ T सरिणिहि°. ३ B Omits this foot. ४ MBP °महावयइं. ५ MB अरुहकहिउ.

3. 6 *b* संदण रथाः. 7 *a* किंकरणिवहि सेवकसमूहे. 8 *a* धवइ ध्मापयति; *b* सरिणियराहिवइ समुद्रः. 9 *b* कम्मविहि कर्मप्रकारः, कर्मैव विधाता. 11 राविउ रञ्जितम्; भाविउ पुनः पुनः प्रकर्षं नीतम्.

4. 1 *b* तिट्ठे हे तृष्णे. 5 *a* सरणिहिसमाहं सागरोपमानाम्.

णाहहु अज्जु जि चरियावरणु धुउ णिम्मइ गेण्हइ तवचरणु ।
पुण्णाउस णीलंजस णडइ गयजीविय जइ अम्गइ पडइ ।
तो होइ विरायहु कारणउं इह दुविहु संजमुद्धारणउं ।
जिणधम्मपवत्तणु होइ जणे इय संभरेवि पुणु पुणु वि मणे ।

घत्ता—णीलंजस रइवस मृगणयण इंदें भणिय अणिंदहो ॥
तुहुं गच्छहि पेच्छहि कमजुयलु णच्चहि पुरउ जिणिंदहो ॥ ४ ॥

5

मलयविलसिया—ता तुंगथणी सयमहरमणी ।
रयणमयघरं साकेयपुरं ॥ १ ॥

आया णहेण छउओयरिय विज्जुलिय णाइं चलविप्फुरिय ।
पोडहियगाणसुरपरियरिय णाहयणिहेलणि अवयरिय ।
पणवेप्पिणु पहु ओलग्गियउ पेक्खणयहु अवसरु मग्गियउ ।
णाडयपारंभि पढमु भणिउं वीसंगु वि पुव्वरंगु जणिउ ।
वाइयउ तिपुक्खरु सुंदरउ सुपसिद्धउ सोलहअक्खरउ ।
चउमग्गु दुलेवणु छक्करणु तियनिल्लउ तिलयउ मणहरणु ।
तिगेयउ तिपंचारु तिजोयरु तिकरिल्लउ पंचपाणिपहरु ।
तिपसारउ अवरु तिमज्झणउं वीसालंकारसलक्खणउं ।
अट्ठारहजाइहिं मंडियउ पयहिं गुणेहिं अवरुंडियउ ।
वज्जउड्डु भाणिउं पुणु चावउड्डु छप्पियपुत्तु वि मणहारि फुडु ।
इय तालेहिं तीहिं अलंकरिउ बहुयहिं तब्भेयहिं परियरिउ ।
वामुद्धालिंगियसंणियउं ओणद्धउं वज्जउं वण्णियउं ।

६ MBP तवयरणु ७ P पुव्वाउम. ८ P तो ९ MBPK इय but G इह with gloss संमारे. १० MBP मयणयण.

5. १ MBP पाडहिं गायण°. २ MB पेक्खणहो. ३ MB तिगइयउ. ४ MB तिचारु; P तिमचारु; T तियचारु. ५ MBP तिजोयधरु. ६ MB छप्पिउ वुत्तु; P छप्पिउड्डु वुत्तु ७ MB ताडहिं.

10 *b* धुउ ध्रुवं निश्चयेन; णिम्मइ क्षयोपशम याति. 12 *b* दुविहु सजमु इन्द्रियसंयमः प्राणसंयमश्च; अथवा निश्चयव्यवहाररूपः. 13 *b* संभरेवि चिन्तयित्वा. 14 मृगणयण मृगनेत्री; अणिंदहो सर्वज्ञस्य.

5. 1 *b* सयमहरमणीं इन्द्राणी. 3 *a* छउओयरिय क्षामोदरी. 5 *a* ओलग्गियउ सेवितः. 14 *b* ओणद्धेत्यादि–इत्थंभूतं यदवनद्धं वाद्यं तत् त्रिप्रकारं वर्णितं वाम ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति.

घत्ता—जहिं लोयण तिहुअणु जलहिसम सुइसंखाइ सुललियहिं ॥
चलबद्धहिं[8] अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयविलसिया—विरई[1]पुसिरे वंज्जे[2] सुसिरे ।
णं[3]कयपसंसे जा[4]यउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जे[5]त्थु झुणंति सुअ[6]त्थसुइ थिय मुक्कंगुलि व सुअट्ठसुइ ।
कंपंति[7]थाइ उग्ग[8]मु तिसुइ मुक्कंगुलियइ हूयउ दुसुइ ।
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय से[9]हुं सज्जें मज्झिमपंचमय ।
सरिसहुं धे[10]वउ कंपंतियए [11]सामण्णसरंतरसंणियए ।
गंधारणिसायवि[12]चलिययाइ अद्धइ मुक्कइ अं[13]गुलिययाइ ।
पयणियवेणू णाणायरेहिं तुंबरुणारयसंणिहसुरेहिं ।
पयडियउ जि देवागमि भणिउं णिक्कलु ते[14]प्पु वि तंतीरणिउं ।
घणु कंसतालजुयलाइयउ स[15]महत्थु देविं ज[16]हिं चालियउ ।
अमरहिं जि[17]णमणसंमाइयहिं पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।
उप्पण्णउ उरठाणंतरए बा[18]वीस सुईउ णहंतरए ।
कमरइयपमाणहिं संछिवइ वड्ढंतु णाउ वुड्ढिहि घिवइ ।
सुइसु वि स रि ग म प धे[19] णी यणाम सर सत्त तेसु दोण्णि वि जि गाम ।

८ MBP चवलद्धहिं; T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्ताभिः.

6. १ MBP विरइयपुसिरे. २ MBPT वज्जियसुसिरे. ३ MBP णिकयपसंसे. ४ MBP जाओ. ५ MBP जेसु. ६ P सुअत्थवई. ७ BP कपंतियाउ. ८ MBP उग्गउ. ९ P सहुं मज्झें. १० MBP धेवउ T धइवउ. ११ M सामण्णे सरंतरसंतियए, B सरंतरसनियए, सरंतरसंणियए. १२ M विचलियाइ; B विवलियाइ, P णिचलियाइ. १३ MB अंगुलियाइ; P अंगुलियाइ. १४ P तिपुव्वि. १५ MB समहत्य. १६ K सचालियउ. १७ P जिणसमण°. १८ MBP बावीस वि सुइउ. १९ MP °पधणीसणाम; B °पधणिणाम.

16 वत्तावत्तंगुलियहिं उक्तविशेषणविशिष्टाभिरव्यक्तव्यक्ताङ्गुलिभिः.

6. 1 *a* विरईपुसिरे विरतिप्रोञ्छके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थः. 3 *a* सरु स्वरः. 5 *b* सज्जें षड्जेन सह. 6 *b* सामण्णसरंतरसंणियए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 8 *a* णाणायरेहिं नानादरैर्ज्ञानादरैर्वा. 6 *b* णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउं तन्त्रीवाद्य द्विविधं निष्कलं त्रिपंच (तेप्पु). 12 *b* णहतरए आकाशे. 13 *b* णाउ नादः.

घत्ता—सुरपुज्जइ सज्जइ किंणरहिं जाइउ सें[१०]स पउत्तउ ॥
पयारह सुयरह मज्झिमइ पीणियजणवयसोत्तउ ॥ ६ ॥

7

मलयविलसिया—सत्तेयारह इय अट्ठारह ।
जाइणिबद्धहं लै[१]क्खविसुद्धहं ॥ १ ॥

अंसहं सउ चालीसाहियउ पक्कत्तरु तं पि पसाहियउ ।
तहिं होंतउ सवणरवण्णियउ गाईउं[२][३] पंच उप्पाणियउ ।
सुद्धा भिण्णा पुणु वेसरिय गउडी साहारणिया सरिय ।
तहिं गामराय अवर वि भणिया भयवयमयगुत्तितच्चगणिया ।
इय तीस कमेण जि संगहिय उड्डमाण जि माणवसवणहिय ।
पहिलारउ टं[४]क्कराउ कहिउ अणुवेक्खासमभासहिं सहिउ ।
अट्ठहिं पंचमु वि पयासियउ [५]विहिं वि विहासहिं भूसियउ ।
आवाहियमोहियजगविलउ हिंदोलउ चउभासाणिलउ ।
मालविकेसिउ छहि बुक्कियउ अवराहिं मि दोहिं मि अंकियउ ।
सुद्धउ सज्जु वि सत्तहिं कलिउ ककुहु मि तिहिं भासहिं संवलिउ ।

घत्ता—सुविहासहिं सरसहिं विहिं सहिउ सो गाइउ सुइलीणउ ॥
मणहरियउ किरियउ दावियउ जहिं परिगयपरिमाणउ ॥ ७ ॥

१० BP सुणपउत्तउ.

7\. १ MBP लक्खु वि सुद्धह. २ MBP गायउ पन्चउ. ३ MBP भणिय. ४ MBPT ठक्कराउ. ५ MP बिहिं चेय विहासहिं; B तिहि चेय हिहासहिं.

16 सुयरह स्मर्यताम्; °सोत्तउ °कर्णा..

7\. 1 *a* सत्तेयारह सप्त एकादश च. 2 *b* लक्खविसुद्धहं गीतप्रयोगविशुद्धानाम्. 3 *a* अंसह अंसानाम्; 4 *a* सवणरवण्णियउ श्रवणसुखदाः. 5 *b* सरिय स्मृताः. 8 *b* अणुवेक्खासमभासहिं द्वादशभाषासमन्वितः. 10 *a* आवाहिये त्यादि–आवाहिता आकारिता मोहिता विह्वलीकृता जगविलउ जगति स्त्रियो येन एतादृशो हिंदोलकरागः.

8

मलयविलसिया—दह चउगुणिया संखा भणिया।
भासाणं सा छह वि विहासा ॥ १ ॥

भणियउ रंजियबुहयणमणउ एयारह दहवर मुच्छणउ।
एक्कुणवण्णास वि ताण जहिं किं वण्णमि गेयारंभु तहिं।
संजोय ताण बहुदिण्णरस णीलंजस णच्चइ विमलजस।
भणु कासु ण सा दिट्ठिहि भरइ णच्चंती जणहियवउ हरइ।
तेरहविहु सीसु पणच्चियउ छत्तीस दिट्ठि परियंचियउ।
णवतीवि ँउ परिपालियरइउ अट्ठ वि रइयउ दंसणगइउ।
तेत्तियविहु पुणरवि भावियउ णंदप्पयारु फुडु दावियउ।
भू सत्तभेय परहिययहर छव्विह णासा कवोल अहर।
सत्तविहु चिवुँउ चउ मुहहु राय णव गल चउसट्ठि वि करण भाय।
सोलहविहु तिविहु चउव्विहु वि किउ करणमग्गु भुउ दहविहु वि।
उरु सरविहु पासजुयलु तिविहु पोट्टु वि पायडियउ तं तिविहु।
कडियलु जंघा कमकमलाइं तव्विहइं जि णिहियइं विमलाइं।
सउ करणहं वसुसंखाहियउ बत्तीसंगहारमियउ।
चउ रेयय णडगुरुकित्तिधय सत्तारह पिंडीबंध कय।
चारिउ सोलस दुअसंखियउ णच्चियउ जियक्खहिं अक्खियउ।
वीस वि मंडलइं पँयासियइं ठाणाइं तिण्णि संदरिसियइं।

घत्ता—संचरियहिं धरियहिं थाँइयहिं भावहिं णडइ अणेयहिं ॥
भाँसाइहिं जाइहिं णवरसहिं दावियणाणाभेयहिं ॥ ८ ॥

8. १ MT विउज; B चिवउ; GK चिउबु. २ M पसासियइं; P पसाहियइं. ३ MBP आइयहिं. ४ K हासाइहिं.

8. 2 *b* विहासा विभाषाः षड् भवन्ति. 8 *a* परिपालियरइउ पोषितरागाः. 9 *b* णंदप्पयारु नवनन्दास्तेषां प्रकारः. 10 *a* भू भ्रुकुटी. 11 *b* करण भाय हस्तानां भेदाः. 12 *b* भुउ भुजः. 13 *a* सरविहु पञ्चप्रकारम्. 16 *a* णडगुरुकित्तिधय नटानां गुर्व्याः कीर्तेर्ध्वजाः. 17 *b* जियक्खहिं जितेन्द्रियैर्गणधरैर्देवादिभिः. 19 थाइयहिं भावहिं स्थायिभावै रत्यादिभिः.

9

मलयविलसिया—वियलियहरिसं स हि णवमरसं ।
झत्ति धरंती दिट्ठ मरंती ॥ १ ॥

जिणणाहें सा णीलंजसिय णं केण वि चित्ति लिहिवि पुंसिय[1] ।
कंदप्पकंति णं पंमुसिय[2] लायण्णतरंगिणि णं सुसिय[3] ।
णं खणि विद्धंसिय रइहि पुरि णं हय जणणयणणिवाससिरि ।
णं रंगसरोवरि[4] पउमिणिय कम्मेण कालरूवें लुणिय ।
णं चंदरेह णहि अत्थमिय णं सुरधणुसिरि मरुणा समिय ।
रसवाहिणि दिण्णरवण्णसुह णं णासिय पिसुणें सुकइकह ।
णउ थण णउ[5] गुण णउ वयणु णउ विउलु रमणु संचियमयणु ।
णउ केसभारु णउ हारलय णउ जाणहुं सुंदरि कहिं मि गय ।
सुण्णउं पंगणु हरिणीलयलु णं विज्जुविवज्जिउ मेहउलु ।
अमराहिवणारिरयणु मुयउ तं पेच्छिवि कोऊहलु हुयउ ।
हा हा भणंतु सोयं लइउ अत्थाणु असेसु वि विंम्हइउ[6] ।

घत्ता—तहिं मरणें करुणें[7] कंपियउ भरहजणणु सवियक्कउ ॥
तुण्हिक्कउ थक्कउ तिजगगुरु कुसुमयंतु[8] रइमुक्कउ ॥ ९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णीलंजसाविणासो णाम
छट्ठओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥
॥ संधि ॥ ६ ॥

9. १ MB फुमिय. २ MBP पयपुसिय. ३ MB सुसुय. ४ MBP सरोवर°. ५ MBP णउ कर-कम. ६ M विंभइउ, B विंभयउ, P विभियउ. ७ MBP करणें. ८ MBP कुसुमयंत° and gloss in P कुसुमवद्दन्ता या नीलंजसा तस्या रतेर्मुक्तः.

9. 1 *b* स सा नीलजसा, हि स्फुटम्, णवमरसं शान्तरसम्. 3 *b* पुसिय प्रोञ्छिता. 4 *a* पंमुसिय प्रमुषिता. 7 *b* मरुणा पवनेन. 9 *b* जाणहु ज्ञायते. 11 *a* हरिणीलयलु इन्द्रनीलमणिबद्धतलम्. 14 सवियक्कउ सविस्मयः. 15 कुसुमयंतु कुसुमवद्दन्ता यस्य तादृश आदिनाथः; रइमुक्कउ रतेर्मुक्तः.

VII

कयतिहुयणसेवें चिंतिउ देवें जगि धुउ किं पि ण दीसइ ।
जिह दावियणवरस गय णीलंजस तिह अवरु वि जाएसइ ॥ १ ॥

I

खंडयं—इह संसारदारुणे बहुसरीरसंधारणे ।
वसिऊणं दो वासरा के के ण गया णरवरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसमु पयासइ धणु सुरधणु व खणद्धे णासइ ।
हय गय रह भड धवलइं छत्तइं सासयाइं णउ पुत्तकलत्तइं ।
जंपाणइं जाणइं धयचमरइं रविउग्गमणे जंति णं तिमिरइं ।
लच्छि विमल कमलालयवासिणि णवजलहरचल बुहउवहासिणि ।
तणु लायण्णु वण्णु खणि खिज्जइ कालालिं मयरंदु व पिज्जइ ।
वियलइ जोव्वणु णं करयलजलु णिवडइ माणुसु णं पिक्कउ फलु ।
तूयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।
जो महिवइ महिवइहि णविज्जइ सो मुउ घरदारेण ण णिज्जइ ।

घत्ता—किर जित्तउ परबलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥
इयँ जाणिवि अद्धुउ अवलंबिवि तउ णिज्जणि वणि णिवसिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza:-

हंहो भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता
कोऽयं श्याम' प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्तः
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

MB read हंहे for हंहो; प्रचण्डाधनि° for प्रचण्डावनि°; and °संख्यात° for °संख्यान°. GK do not give it.

1. १ M reads खंडियं throughout. २ T ससमु but adds सुसमु वा शोभनोपशमयुक्तः. ३ P खणद्धं. ४ MBP तियहिं. ५ B इउ. ६ B अधुवु, P अद्धउ. ७ MBP अवलंबियभुउ but gloss in P तपो गृहीत्वा.

---

1. 3 *a* संसारदारुणे दारुणे संसारे. 4 *a* वसिऊणं उषित्वा. 5 *a* सुसमु शोभनोपशमयुक्तः द्वादशानुप्रेक्षारूपं वा. 7 *a* जंपाणइं पालखीति देशी. 8 *b* बुहउवहासिणि पण्डितद्वेषिणी. 9 *b* कालालिं कालभ्रमरेण यमभ्रमरेण. 11 *a* तूयहिं स्त्रीभिः; *b* तणि उत्तारिज्जइ तृणे तृणसंस्तारके तृणोपरि स्थाप्यते, मृते तृणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थः. 13 जित्तउ जितम्. 14 अवलंबिवि गृहीत्वा.

2

खंडयं—वइरिरायदप्पहरणं किं जोयइ भुयपहरणं ।
मण्णइ अप्पाणं घणं सरणविरहियं जयमिणं ॥ १ ॥

जइ वि धरंति वीर णर किंणर अरुण वरुण सपवण वइसाणर ।
गरुड जक्ख रक्खस विज्जाहर भूय पिसाय णाय ससि दिणयर ।
पडिबलकुलकाणणकालाणल इंद पडिंदहमिंद महाबल ।
पण्णारहखेत्तुब्भव जिणवर कुलयर चक्कवट्टि हरि हलहर ।
जइ वि धरंति देहभा भासुर पवराउहपवीण देवासुर ।
जइ पइसइ मयरहरब्भंतरि किंकरहरिकरिरहवूहंतरि ।
सरसरिगिरिदरिकक्करकंदरि दुप्पवेसकुलिसायसि पंजरि ।
बहलतमंधयारमहिमूलइ जइ पइसरइ गंपि पायालइ ।
तो वि जीउ कड्ढिज्जइ कालें हरिणा हरिणु व भिउडिकरालें ।

घत्ता—इय बुज्झिवि असरणु रुंभिवि तियरणु जेण चरित्तु ण चिण्णउं ॥
तं माणुसवेसें वायविसेसें भमइ कलेवरु सुण्णउं ॥ २ ॥

3

खंडयं—मित्तसयणसंजोयओ होउं होइ विओयओ ।
एक्को च्चिय जगि जीयओ भमइ सकम्मविणीयओ ॥ १ ॥

एक्कु जि जडु जच्चंधु णउंसउ दुग्गउ दुट्ठु दुबुद्धि दुरासउ ।
हुयउ कुमाणुसात्ति दुणिहालउ एक्कु जि जीउ चंडु चंडालउ ।
एक्कु जि धणुहरु सवरु वणंतरि एक्कु जि सुरवरु मणिमयसुरहरि ।

2, १ MBP पण्णारस°. २ MBP देव भाभासुर. ३ MBP कुलिसायस°. ४ MBP °तमधयारि. ५ M कड्ढिजइ.

3. १ P संजोयए. २ P विओयए.

2. 1 *b* भुयपहरणं भुज च प्रहरणं च. 2 *a* घणं समर्थं अत्यर्थं वा; *b* जयमिणं इदं जगत्. 3 *b* अरुण आदित्यसारथि . 8 *a* मयरहर° समुद्र : *b* °वूहंतरि व्यूहान्तरे. 11 *b* हरिणा हरिणु व सिंहेन मृग इव. 12 तियरणु मनोवाक्कायक्रिया ; चिण्णउ अनुष्ठितम्. 13 वायविसेसें वाचाविशेषेण वायुप्रेरणेन वा.

3. 1 *b* होउं भूत्वा. 2 *b* °विणीयओ प्रेरितः. 3 *a* णउंसउ नपुंसकः; *b* दुग्गउ दरिद्रः; दुरासउ दुष्टचित्त:. 4 *a* दुणिहालउ दुष्प्रेक्ष्य:. 5 *a* धणुहरु सवरु धनुर्धारी भिल्ल:; *b* °सुरहरि °विमाने.

अप्पउ पुण्णहीणु पडिवज्जइ सयमहविहवपलोयणि झिज्जइ ।
एक्कु जि णहि णहयरु थलि थलयरु एक्कु जि बिलि बिलहरु जलि जलयरु ।
एक्कु जि मृगजोणिहि उप्पज्जइ पैरिहि तलिवि पउलिवि खणि खज्जइ ।
एक्कु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ णरयविवरि णारइयहिं हम्मइ ।
एक्कु जि तरइ मरइ वइतरणिहि चरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि ।

घत्ता—एक्कु जि भवकद्दमि णिवडइ दुद्दमि रइसुहपंकयछप्पउ ॥
एक्कु जि तवताविउ णाणें भाविउ होइ जीउ परमप्पउ ॥ ३ ॥

4

खंडयं—इय णिसुणिवि पयत्तणं गाढं णियमइ णियमणं ।
एक्कु जि जीउ वरायओ सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिबज्झइ अण्णु जि पिंडु गब्भि संबज्झइ ।
अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु अण्णु जि सुकियउ अण्णु जि तहु फलु ।
अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ अण्णु जि को वि पुत्तु णिप्फज्जइ ।
अण्णु जि मित्तु सैयज्जि कयायरु अण्णु जि होइ सणेहउ भायरु ।
अण्णु जि भिच्चु होइ धणलोहें जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहें ।
अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।
अण्णहिं जंति खणद्धें रहवर हयवरगयवरचिंध सचामर ।
परमत्थें ण को वि जगि कासु वि एक्कलउ जि जाइ पुहईसु वि ।

घत्ता—राएण णिबद्धउ इंदियलुद्धउ सुहु अण्णु जि मैहुं भावइ ॥
ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कंखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

३ MBP मिगजोणिहि. ४ M परिहि तलिज्जइ पउलिवि खज्जइ. ५ B खिजइ.

4. १ MBP सुकिउ. २ MBP पुत्तु को वि उप्पजइ. ३ MBP सकज्जि. ४ M सणेहें. ५ MBP एक्किलउ. ६ MB जणि; P मणि.

---

6 *b* झि ज्ज इ खिद्यते. 8 *b* प रि हि परैर्विप्रैः. 11 ए क्कु जि असहाय एव; °पं क य छ प्प उ कमले भ्रमरः. 12 त व ता वि उ तपस्तापित..

4. 1 *a* ए य त्त ण एकत्वम्. 2 *a* व रा य ओ वराकः; *b* अ ण्णु जि भिन्न एव, लो य ओ लोकश्चेतनाचेतनपदार्थसंघातः. 3 *b* पिं डु देहः. 4 *b* सु कि य उ सुकृतम्. 5 *b* पु त्ते त्या दि–आत्मा वै पुत्र इति वेदवाक्यं वृथेत्यर्थः. 7 *a* भि च्चु भृत्यः. 8 *a* म त्त उ विवेकशून्यः. 10 *a* पु ह ई सु वि पृथ्वीशोऽपि. 12 स स हा उ निजस्वरूपम्; म हा व इ महापत्ति महतीमापदम्.

5

खंडयं—चउकसायरसरासियओ मिच्छासंजमवसियओ ।
णाणाजेम्मु वियारए आहिंडइ संसारए ॥ १ ॥

णरयगइहिं उप्पण्णउ जइयहुं णारयणियरिहिं रुंभिवि तइयहुं ।
तिलु तिलु छिंदिवि दिसिहिं विहाइउ कवलिउ धुणिउ वणिउ विणिवाइउ ।
वारवार पच्चारिउ जूरिउ विज्जुतरलतरवारिवियारिउ ।
एक्कु जि बहुयहिं तहिं पारंभिउ खलिउ दलिउ पयमालिउ णिसुंभिउ ।
ओहामिउ भामिउ ओणामिउ सूलि कयंतदंति संकामिउ ।
अच्छोडिउ मोडिउ महिं पाडिउ विरसमाणु करवत्तहिं फाडिउ ।
लूरियंतु कोंतेहिं विहिण्णउ रुंदोदूहलि मुसलहिं छुण्णउ ।
सत्तिहिं हूलिउ जंतिहिं पीलिउ जलियजलणजालोलिहिं जालिउ ।
घम्मविहट्टणेहिं दुव्वोलिउ सेल्लभल्लिवावल्लहिं सल्लिउ ।
पूयकुंडि उप्पेल्लिवि घल्लिउ रुहिरोहालियदेहु ओणाल्लिउ ।

घत्ता—माणि रोसु धरंतहं रणि पहरंतहं लग्गइ गत्तु विहत्तु वि ॥
सुहु णत्थि तमंधहं णारयसंढहं णयणणिमीलणमेत्तु वि ॥ ५ ॥

6

खंडयं—सिंगीसु य पक्खीसु य दाढीसु य णक्खीसु य ।
भुंजंतो भवसंगमं ण लहइ जीवो णिग्गमं ॥ १ ॥

कायकंककोइलकारंडहिं सारसचासभासभेरुंडहिं ।
सीहसरहसूयरसालूरहिं घारमोरमंडलमज्जारहिं ।

5. १ MBP संजमि वसियउ. २ MBP °जम्म° ३ MB दिसहि. ४ MBP मुसलें. ५ M °विहट्टणेण.

5. 1 *a* °रस° परिणतिः; °रसियओ आमक्त. 4 *a* विहाइउ विभक्त. *b* धुणिउ कम्पितः, वणिउ व्रणितः, विणिवाइउ पातित. 5 *a* पच्चारिउ प्रचारित, जूरिउ दुर्वचनैर्निर्भर्त्सितः. 6 *b* णिसुंभिउ प्रक्षिप्तः. 7 *a* ओहामिउ अभिभूत, ओणामिउ ऊर्ध्वमुखो नामित. 9 *a* लूरियतु विदारितान्त्रः; विहिण्णउ विभिन्नः; *b* रुंदोदूहलि महोदूखले. 10 *a* हूलिउ प्रोतः. ११ *a* दुव्वोल्लिउ दुर्वचनैरुक्त, *b* °वावल्लहिं सर्वलोहमयैः. 12 *b* रुहिरोहलियदेहु रुधिरप्रक्षालितशरीर, ओणल्लिउ अधः पातितः. 13 विहत्तु विभक्तं खण्डीकृतम्.

6. 2 *a* भवसंगमं ससारसंबन्धम्. 3 *a* °कारंड° चक्रवाकः.

कीरकुररकुंजरसारंगहिं लीवयपारावयहिं तुरंगहिं ।
कुक्कुडमक्कडमहिसमरालहिं मेसवसहखरकरहसियालहिं ।
सेढौसरढतरच्छहिं रिछहिं मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं संभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।
बलणिम्मंथणु णियलणिबंधणु भारारोहणु णौणाबंधणु ।
छिंदणु भिंदणु ताडणु तासणु उक्कत्तणु सरीरविद्धंसणु ।
खरपाहाणसंघसंघट्टणु लोट्टणु आवट्टणु परिवट्टणु ।
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु पीलणु पउलणु दारणु मारणु ।
छुहतिण्हाकिलेससंतावणु भारारूढदेसपुरगौमणु ।
एव दुक्खलक्खाइं सहेप्पिणु जीउ तिरियगइ कह व मुएप्पिणु ।

घत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु बब्बरु सिंहलु ॥
हुणखीणणिवासउ अमणुयभासउ णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥

7

खंडयं—मेच्छो ण कुणइ णियहियं करइ दुलंघं दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउद्दए णिवडइ णरयसमुद्दए ॥ १ ॥

जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
खमदमसमसंजमसंजुत्तहं तो वि ण लहइ संगु गुणवंतहं ।
कुगुरुकुदेवकुमग्गें मुज्झइ जिणवरवयणु कया वि ण बुज्झइ ।
जडविडकहियहु मयवहधम्महु लग्गइ काइं मि कुच्छियकम्महु ।
लुद्ध मुद्ध चंडिइ मंडिवि मिसु पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6. १ M लायय°. २ B कुकुड°. ३ MBP सेहा°. ४ MP °रिच्छहिं. ५ MBP णासाविंधणु. ६ MBP छुहतण्हा°. ७ M °गावणु. ८ MBP सिंघलु. ९ MBP अमुणियभासउ, but gloss in P नरभाषारहितः.

7. १ MBP मुणइ. २ B णरइ समुद्दए. ३ P °कुसम्में. ४ MBP °कम्महु. ५ MBP °धम्महु.

---

10 *b* उक्कत्तणु उत्कर्तनम्. 12 *a* मुसुमूरणु पिण्डीकरणम्. 15 ° वसायउ अधीनः. 16 अमणुयभासउ नरभाषारहितः; अज्जवकुलु आर्यकुलम्.

7. 1 *a* मेच्छो म्लेच्छः. 2 *a* विहुरावत्त° दुःखावर्तः. 3 *a* अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम्. 6 *a* मयवह° मृगवधः. 7 *a* चंडिइ मडिवि मिसु चण्डिकामिषं कृत्वा.

पसुबलि देंतहं ण खमइ वइवसु मारउ मरिवि होइ पुणरवि पसु।
विरसंतहं सिरकमलु लुणिज्जइ सो वि तहिं जि अण्णें मारिज्जइ।
पुव्वणिबद्धउ अग्गइ धावइ जो जं करइ सो जि तं पावइ।

घत्ता—पसु फाडिवि खज्जइ वारुणि पिज्जइ सग्गु मोक्खु पाविज्जइ॥
जइ एण जि कम्में ता किं धम्में पारद्धिउ सेविज्जइ॥ ७॥

8

संडयं—हुयवहहुणिया सग्गयं जंति परावरमग्गयं।
जाया देवा जइ अया परिसया दियवरणया॥ १॥

वेयकहियमंतहिं आयामइ तो अप्पाणउ कांस ण होमइ।
सोत्तिउ सग्गसोक्खु किं णेच्छइ किं कुसरीरें बद्धउ अच्छइ।
णियडिभइ मुइ धाहहि कंदइ छायँलु छावउ छम्मिउ छिंदइ।
ताडिज्जइ संरुज्झइ बज्झइ वच्छु णिरोहिवि अण्णें दुँज्झइ।
खाइ पुरीसु विबुद्धि वराई दुरियहलेण सुरहि संभूई।
लोयहु देवि भणिवि वक्खाणइ धुत्तु अधुत्तहं वंचहुं जाणइ।
गाइ चउप्पय तणयरि जेही सूयरि हरिणि वि रोहिणि तेही।
हा हा बंभणेण माराविय रायहु रायविच्ति दरिसाविय।
पियरपक्खु पक्खु णिरिक्खइ मंसखंडु दियपंडिय भक्खइ।
धोयंतउ दुद्धें पक्खालउ होइ कहिं मि इंगालु ण धवलउ।
एहु देहु किं सलिलें धुप्पइ हिंसारंभें डंभें लिप्पइ।

१ MBT विलुज्जइ.

8. १ P हुयवहु. २ M सग्गभोग्गु, B सग्गजोग्गु; P सग्गभोगु. ३ MBP छायलछावउ. ४ MB दुब्भइ. ५ MBP अधुत्तहं वचइ. ६ MBP हरिणी रोहिणि. ७ MBP दिउ पंडिउ. ८ MBP हिंसारंभि डंभि तो लिप्पइ.

---

8 *a* वइवसु यमः. 11 वारुणि मद्यम्.

8. 1 *a* हुयवहहुणिया अग्नौ होमिताः; *b* परावर° मोक्षः. 2 *a* अया अजाः; *b* दियवरणया द्विजानामभिप्रायाः. 3 *a* आयामइ मुखमध्ये वस्त्रादिकं मुक्त्वा प्राणादिरोधं करोति. 5 *b* छम्मिउ वधकः. 7 *a* विबुद्धि विगतबुद्धिः, *b* सुरहि गौः 9 *a* चउप्पय चतुष्पदीः तणयरि तृणचरी. 11 *a* पियरपक्ख पितृपक्षः श्राद्धादिकम्, *b* दियपंडिय द्विजपण्डितः.

अण्णण्णें रंगें रंगिज्जइ परमागमरसेण णउ भिज्जइ ।
मूढु जिणिंदसेव कहिं पावइ सवणु गहणु धरणु वि ण विहावइ[1] ।

घत्ता—मायारउ मण्णइ मुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिवज्जइ ॥
माणुसु वि हवेप्पिणु पाउ करेप्पिणु पुणु संसारि णिमज्जइ ॥ ८ ॥

9

खंडयं—ईसि[1] णिउंचिय जोव्वणं कामकोहलवभावणं ।
काउं सेवइ जो वणं सो पावइ तं भावणं ॥ १ ॥

अवरुम्पि जायउ उववणठाणइ जोइसकप्पणिवासविमाणइ ।
वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु वाइत्तयवायउ सब्भेयरु ।
णच्चणु गायणु सुद्दे[2]सुहदावउ अण्णु वि होइ असम्मयभावउ ।
णवर मरंतु संतु उव्विज्जइ वेवइ चलइ[3] घुलइ परिखिज्जइ ।
हा कप्पद्दुम हा माणससर हा णीहारहारसंणिहघर ।
हा अच्छरउलमणसंमोहण हा परियणपडिवक्खणिरोहण ।
हयँवलि[4]पलियरोयसयसंचय[5] हा हा दिव्वदेह हा णववय ।
हालंकार[6]सार सहसंभव हा गंधार महुर वीणारव ।
हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल हा मंदारदाम चल सभसल ।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुक्कहु अवसें हियउ ण सुज्झइ ॥
सग्गग्गु मुयंतहु पलयहु जंतहु कासु[7] सरीरु ण डज्झइ ॥ ९ ॥

१ M विभावइ.

9. १ MT इसी and gloss मुनिर्भूत्वा, P ईसि. २ MP सुद्दसहदावउ. ३ MBP बलइ. ४ MBP हा वलि°. ५ MBP °सचुय but gloss in P देह. ६ सोलंकार°. ७ MB कासु ण हियवउ; P कासु वि हियउ ण.

15 *b* वि हा व इ विभावयति प्राप्नोति. 16 मा या र उ मातृरतं विप्रं संमानयाति.

9. 1 *a* ई सि ईषत्; णि उ चि य सवृतं कृत्वा. 2 *b* भा व णं भवनवासिदेवत्वम्. 4 *a* उ व व ण ठा ण इ व्यन्तरदेवस्थाने. 4 *b* स ब्भे य रु भण्डो भवति सभ्यादितरः. 6 *a* उ व्वि ज्ज इ चिन्ता करोति. 9 *a* °सं च य देह. 10 *b* गं धा र गीतम्.

10

खंडयं—सुललियमइलियचेलयं अइओहुल्लियमालयं ।
भोयविरायणिबंधयं जायं मह खयचिंधयं ॥ १ ॥

सयलजिणाहिसेयधुयमंदर धूवधूमधूवियगिरिकंदर ।
हा हे कुलिसपाणि जगसुंदर पइं मि ण रक्खिउ देव पुरंदर ।
हा मइं माणुसेण होएवउ किमिमलभरियइ गब्भि वसेवउ ।
सोणिविणिग्गमि दुक्खु णिएवउ णारिउरोरुहछीरु पिएवउ ।
हा हा देवलोय कहिं पेच्छमि कुहियकलेवरि वासु ण इच्छमि ।
आउ मसाणहु तं मणुयत्तणु वर वणि होसमि चंदणु वंदणु ।
अट्टरउद्दभावसंचोइय मिच्छादिट्ठि सुदिट्ठिविओइय ।
हा हा हा भणंतु उब्भियकर एम मरंत होंन्ति सुर तरुवर ।

घत्ता—जिणधम्मपरंमुहु दुण्णयसंमुहु खयकाले अच्छोडिउ ॥
बहुविहमयमत्तें इय मिच्छत्तें को भवगहणि ण पाडिउ ॥ १० ॥

11

खंडयं—तिप्पयारसंठाणयं चोद्दहरज्जुपमाणयं ।
जीवाजीवसुसंकुलं विस्सं णिच्चं णिच्चलं ॥ १ ॥

थिउ आयासि अणंताणंतइ केवलणाणविलोयणखेत्तइ ।
गाढु गाढु छहिं दव्वहिं भरियउ केण वि कियउ ण केण वि धरियउ ।
पुग्गलजीवभावकयभेयहिं कालवसेण जाइ पज्जायहिं ।

10. १ MBP °विराय°. २ B °भरियगब्भि. MK °खीरु. ४ MBP किं. ५ MBP वरि. ६ MBP °संचोइउ. ७ MBP °विओइउ. ८ MBP °करु. ९ M एम मरेवि होइ सुरु तरुवरु; BP एम मरेवि होइ सुरतरुवरु; १० MBP इह.

11. १ MP चउदह°. २ P adds after this line: अच्छइ सयलु वि जीवहं भरियउ घियघडउल्लउ जिम तिम धरियउ.

10. 1 *b* अइओहुल्लिय° अनिम्लान°. 2 *a* °णिबंधयं कारणम्; *b* मह मम; खयचिंधयं क्षयचिह्नं मरणचिह्नम. 7 *b* कुहिय कुथित°. 8 *b* वंदणु वृक्षविशेषः; पिप्पल इत्यन्ये. 10 *b* होंति सुर तरुवर देवा वृक्षा भवन्ति. 11 अच्छोडिउ कवलितः. 12 °मयमत्तें जात्यादिमदमत्तेन.

11. 1 *a* तिप्पयार° शरावाद्याकृतिर्लोकः. २ *b* विस्सं विश्वं जगत्.

पहिलउ दाणवणरयणिवासउ   पल्हत्थियसरावसंकासउ ।
बीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु   वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ   तइयउ जगु मुइंगसारिच्छउ ।
मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयरु   जो तं पत्तउ सो अजरामरु ।
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खमि   संसारियहु सोक्खु किं अक्खमि ।

घत्ता—चउगइहि भमंतें[3] पुणु पुणु होंतें विहसिवि देवें वुत्तउ ॥
सुहदुक्खणिरंतरि तिजगब्भंतरि जीवें काइं ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

12

खंडयं—सारमेयवुड्ढिंगयं[1]   सारमेयसिवजोग्गयं ।
एसो कम्मकलेवरं   भण्णइ तह[2] वि कलेवरं ॥ १ ॥

अट्ठिलट्ठिकुड्डयलणिउत्तउ   दीहरणाउणिबंधणवंतउ[3] ।
पासुलियातुलाहिं[4] घणघडियउ   संधिहि संधिहि खीलेयजडियउ[5] ।
पट्ठिवंसखंभुण्णयमाणउ   जंघाजुयलु समोड्डियथूणउ[6] ।
मज्जमंसचिक्खिल्लविलित्तउ[7]   णवदुवारु[8] लोहियसंसित्तउ ।
सेयसुक्कमत्थिक्कदुगंधउ[9]   छिरतुंदाहिजालसंरुद्धउ[10] ।
वोक्कयंतकिमिउलमलपोट्टलु   वियलियरसवसवीसढु[11] विट्टलु ।
अब्भंतरि किर केण पलोइउ   बाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।
णिद्धमुत्तलालाजलथिप्पिरु   रोइ पूइ अब्भुउ संताविरु ।

३ M भवंतें; BP भमंतें.

12. १ MBP सारमेयवुड्ढीगयं. २ P तह व. ३ MBP णिबंधणवत्तउ. ४ MB पंसिलिया°, P पंसुलिया°. ५ MBP खीलिहिं. ६ BP समोड्डेय°. ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार°. ९ B °मंथिक्क°. १० P थिर°; K छिर° but corrects it to थिर°. ११ MBP °वीसजि and gloss in P बीभत्सं अपवित्रम्.

7 *b* पयत्थपरिघोलणु पदार्थानां जीवानां वा परिघोलनं प्रवृत्तिर्यस्मिन्. 8 *a* °णेवच्छउ मण्डनम्. 10 *a* परमाणुमेत्यादि– परमाणुमात्रमपि संसारिणां सुखं न.

12. 1 *a* सारमेयवुड्ढिंगय प्रचुरमेदसा वृद्धिं गतम्; *b* सारमेयसिवजोग्गयं श्वानशिवादियोग्यम्. 2 *a* एसो जीवः; कम्मकले संसारे; *b* कलेवरं शरीरम्. 3 *a* °कुड्डयल कुड्यतल°; *b* °णाउ स्नायु°. 4 *a* पासुलिया° पार्श्वास्थिसंघातः. 5 *b* समोड्डियथूणउ भमस्तम्भवत्. 7 *b* छिरतुंदाहिजाल° शिरा एव गण्डूपदास्तेषां समूहैर्भृतम्. 8 *b* °वीसढु बीभत्समपवित्रम्. 10 *b* रोइ सरोगम्.

सेंभपित्तमारुयदोसायरु भूयगामदेहिहि देहु जि घरु ।
रमणीरमणरायरहसुच्छवु[१२] असुइ जि भक्खइ असुइसमुब्भवु ।

घत्ता—करिमयरहिं माणिइ गंगावाणिइ ण्हाणिउ ण्हाणिउ मुज्झइ ॥
मयकामें कोहें मायामोहें मइलिउ देहु ण सुज्झइ ॥ १२ ॥

13

खंडयं—दुविहतवम्मि सुलीणयं जइ करेह अप्पाणयं ।
असुइमिणं मणुयत्तयं ता हो होइ पवित्तयं ॥ १ ॥

पंचिंदियसुहि मणु चोयंतहु तहु आसवइ कम्मु अतवंतहु ।
णाणावरणिउ[१] पंचपयारउ दाँवियपडपंगुरणवियारउ ।
णवविहदंसणु[२] गुणविणिवारउ तं णिज्जियणिसिद्धिपडिहारउ ।
दुविहु जि वेयणीउ गयसयणु व अमहु म्महु असिधारालिहणु व ।
मोहणीउ मइरा इव मोहइ अट्ठावीसभेउँ[३] जिणु ईहइ ।
चउविहु चउगइगामिहिं ढुक्कइ आउमु हडि व णिरुंभिवि थक्कइ ।
दोचालीसणामु णामंकउ चित्तवण्णपरिणामासंकउ ।
दोविहु मइलसमुज्जललीलउ गोत्तु कुलालभाणभावालउ ।
अंतराउ चउएक्कविहायउ लग्गइ कारिहिं वारियदायउ ।
पयडिट्ठिदिअणुभाँगपएसहिं[४] बज्झइ चप्पिवि बंधविसेसहिं[५] ।

१२ M रमणीरमणु रायरहसुब्भउ B °रहसुच्छउ P °रहसुब्भउ but gloss उत्सव .

13. १ MBP णाणावरणउ. २ T दंसिय°. ३ MBP °भेय. ४ M ° अणुभाग°. ५ M बंधवसेसहिं.

11 *b* भूयगाम° पृथ्वीप्रमुखचतुर्विधभूतसमूह एव देहो विद्यते यस्य. 12 *a* °उच्छवु आनन्दः. 13 गंगा-वाणिइ गङ्गाजले

13. 2 *a* मणुयत्तय मनुजत्वम. *b* हो हे नरा 4 *b* दाविये त्यादि- दर्शित. पटप्रावरण इव विकारो येन; यथैव पटेन प्रच्छादनेन सत्यात्मनोऽर्थापरिज्ञानलक्षणो विकारो भवति तथा ज्ञानावरणे प्रच्छादने. 5 *b* णिज्जिये-त्यादि- निर्जितनिषेधकरप्रतिहारसदृशम्. 6 *a* गयसयणु व रोगयुक्तस्य शयनीयमिव. 8 *b* आउमु आयुष्कर्म; हडि व खोटक इव. 9 *b* चित्ते त्यादि-चित्रवर्णपरिणतिविज्ञानारूपतया शङ्क्यते. 10 *a* मइलसमुज्जललीलउ मलिनं समुज्ज्वलं चेति द्विप्रकारम. *b* कुलालभाणभावालउ कुलालस्य कुम्भकारस्य भाणानां भाजनानां भावोऽल्पमहत्त्वादिपरिणामः, तस्य आलउ आश्रय. 11 *a* चउएक्कविहायउ पञ्चभेदम, *b* कारिहि कारकस्य; वारियदायउ निवारितदातव्य दुष्टभाण्डागारिवत् 12 *b* चप्पिवि हठात्.

घत्ता—गुणवंतु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगणिबद्धउ ॥
जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्ढगामि संसिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खंडयं—एंतहु पावहु णिब्भरं जे विरयंति ण संवरं ॥
ताणं दुक्खदवक्कडी पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रुज्झइ चित्तु झाणवित्थारें फासविलासु धरणिसंथारें ।
रसु पसुपिंडग्गहणायारें दिट्ठि ण घेप्पइ कहिं मि वियारें ।
सवणु सुसरि दुसरेसु वि सरिसउ कीरइ पयलियरइआमरिसउ ।
णासारंधु गंधअविहत्तिइ मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।
दुरियहु सुयरिउ रक्खणु दिज्जइ रोसु खमाइ होंतु णियमिज्जइ ।
अविणयगारउ माणु मउत्तें मायाभाउ समुज्जुयचित्तें ।
लोहु सुपत्तदाणपविहाएं अहवा सव्वसंगपरिचाएं ।
मयविब्भमु परगुणसंभरणें जिप्पइ हरिसु होंतु सुथिरमणें ।
देप्पु वि घोरवीरतवचरणें राउ रंसियरामापरिहरणें ।

घत्ता—पिहियासवदारहु जुत्तायारहु अहिणउं कम्मु ण पइसइ ॥
जं चिरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसें णासइ ॥ १४ ॥

15

खंडयं—मणमेत्ते वावारए एसो कीस ण कीरए ।
सासयसुहओ संवरो होहं होमि दियंबरो ॥ १ ॥

६ MBP उद्धगामि.

14. १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्धः, तहु पावहु तस्य पापस्य. २ P °दुवक्कडी. ३ MBP °विलासु. ४ MB रसपसु, P रस पसु°. ५ MBP गंधु अ°. ६ MBP एंतु. ७ M समुज्जल°. ८ P मइविब्भमु. ९ B omits this foot. १० MBP रसिउ रामा°.

15. १ मणमेत्तए.

13 दुअंगणिबद्धउ तैजसकार्मणशरीरबद्धः. 14 भवतणुमेत्तउ यद्भवे यच्छरीरं गृहीत तन्मात्रः.

14. 1 *a* एंतहु आगच्छतः, 2 *a* °दवक्कडी असह्याशानिपातः; *b* तडी विद्युत्. 4 *a* रसु जिह्वा; पसुपिंडग्गहणायारें पशुवत्पिण्डग्रहणेन मुन्याचारेण. 5 *b* पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम्. 6 *a* गंधअविहत्तिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धविभागाकरणेन; *b* °दुरीह दुष्टेच्छा. 9 *a* °दाणपविहाएं अतिथिसंविभागेन. 10 *a* मय° मदः. 13 अपोसिउ अपुष्टम्.

15. 1 *a* मणमेत्ते मनोमात्रे. 2 *a* °सुहओ सुखदः.

पुणु परमेसरु सव्वउ सुचइ काले अहव उवाएं पिच्चइ ।
जिह धरणीरुहहलु तिह दुक्किउ कामाकामियाणिज्जरतक्किउ ।
तणयराहं सुसहावें सोम्महं बंधणदारणमारणगम्महं ।
दूसहदुक्खभावभयभरियहं होइ अकामें णिज्जर तिरियहं ।
विरइज्जइ वेरग्गपहाणहिं कामें णिज्जर रिसिसंताणहिं ।
सिसिरायासणिवासायरणहिं रुक्खमूलअत्तावणकरणहिं ।
थियपलियंकथिचमहिदंडहिं गोदुहआसणेहिं गयसोंडहिं ।
पक्खमासवरिसंतुववासहिं देज्जविसिसंखाविण्णासहिं ।

घत्ता—ढोइयणीसासहि मुणितणुमूसहि खरतवजलणें तत्तउ ॥
जीविउ हेमुज्जलु थक्कइ केवलु बहुकम्ममलें चत्तउ ॥ १५ ॥

16

खंडयं—कुवहे जंतं रुंभए णाणंकुसिण णिसुंभए ।
वयपायवणिल्लूरणं साहू णियमणवारणं ॥ १ ॥

एक्कगासदोगासाहारहिं विविहावग्गहरसपरिहारहिं ।
दीहमंसुलोमहिं मलधरणहिं आयंबिलचंदायणचरणहिं ।
वोसट्टंगमुक्करइरंगहिं वज्जियघरपुरदेसपसंगहिं ।
सुण्णावासमसाणागारहिं हयणेहहिं अणियत्तिविहारहिं ।
दंसमसयछुहतण्हासोसहिं खलकयकण्णकडुयआकोसहिं ।
वायवद्दलुकंपियकायहिं सीउण्हहिं परपहरणिहायहिं ।

२ P पच्चइ. ३ MBP ससहावें. ४ BP सोमहं. ५ MBP °पहाणहं. ६ M सिरिसंताणह; BP रिसिसंताणहं. ७ MBP °वरिसद्धुव°. ८ MB वेज्ज°. ९ कम्ममलें परि°.

16. १ MBP कुपहे. २ P एक्कग्गासदुगासा°. ३ M अणियट्टि°.

3 *b* पिच्चइ पक्वं भवति. 4 *b* कामाकामियेत्यादि– कामो बुद्धिपूर्वको व्यापारस्तदभावोऽकामस्तौ विद्येते यस्याः सा तथाविधा निर्जरा तर्किता कलिता येन तादृशम्. 7 *b* रिसिसताणहिं मुनिप्रवाहैः. 10 *b* देज्जेति- देयाहारस्य वृत्ति सख्या तस्या विन्यासा विरचनास्ताभिः. 11 मुणितणुमूसहि मुनिशरीरमेव मूषा तस्याम्. 12 जीविउ इत्यादि– जीवस्वरूप तदेव हेम सुवर्णं उज्ज्वलं निर्मलम्; सुवर्णं हि किट्टकालिकालक्षणमलरहितत्वादुज्ज्वलम्; जीवस्वरूपं तु द्रव्यभावकर्मलक्षणमलराहितत्वादिति.

16. 1 *b* णिसुभए वश्यं करोति. 2 *a* °णिल्लूरणं °निर्मूलनम्. 5 *a* वोसट्टग° विसृष्टाङ्ग° कायोत्सर्गः. 6 *b* अणियत्तिविहारहिं आनियतविहारैः. 8 *b* परपहरणिहायहिं परप्रहारनिर्घातैः.

केसालुंचणणिब्बेलसहिं   कंचणतणसुहिरिउसमचित्तहिं ।
विसमपरीसहसहणब्भासहिं   रोयातंकहिं कासहिं सासहिं ।
जम्मणमरणणिबंधुद्धाइउ   एम खविज्जइ कम्मु पुराइउ ।

घत्ता—जिह हयणिज्झरणें बद्धें वरणें रविकरेहिं सरु सोसइ ॥
तिह णियमियकरणें रिसितवचरणें भवकिउ कम्मु पणासइ ॥ १६ ॥

17

खंडयं—इय काऊण णिज्जरं   जे हणंति भवपंजरं ।
णीरोयं अजरामरं   ते लहंति सोक्खं वरं ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु तं पाविज्जइ   सो धम्मंघिउ एहउ गिज्जइ ।
खेमखमायलंतुग्गयदेहउ   मद्दवपल्लउ अज्जवसाहउ ।
सच्चसउच्चमूलु संजमदलु   दुविहमहातवणवकुसुमाउलु ।
चउविहचायपसारियपरिमलु   पीणियभव्वलोयछप्पयउलु ।
दियसंदोहसद्दकयकलयलु   सुरवरणरखेयरसुहसयफलु ।
दीणाणाहदीहसमणिग्गहु   सुद्धु सोम्मुं तणुमेत्तपरिग्गहु ।
बंभचेरछायाइ सुहासिउ   रायहंसणियरेहिं समासिउ ।
एहउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ   जीवदयावइइ रक्खिज्जइ ।
झाणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ   मिच्छामयहुं पवेसु ण दिज्जइ ।
सीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ   एम पयत्तें वड्ढारिज्जइ ।

४ MBP° तिण°. ५ MB णिबंधे आइउ; P °णिबंधइ आइउ. ६ K हर° and gloss हृत°.

17. १ BPK परं. २ M खमखमायलतग्गयदेहउ, B खमखमायलु तुंगयदेहउ; P खमखमायलु-तुगयदेहउ. ३ MBP सुरणरवर°. ४ MBP सोमु. ५ MP झाणठाणु; B झाणट्ठाणु. ६ B पवत्ते. ७ M पहारिज्जइ, B वड्ढाविज्जइ.

11 *a* णिबंधुद्धाइउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्धाइउ प्रवृत्तम्. 12 हयणिज्झरणें हृतनिर्झरणेनः वरणें पालिबन्धनेन.

17. 1 *b* भवपंजरं संसार एव बन्दिगृहं संसारसंघातश्च. 3 *b* धम्मंघिउ धर्मवृक्षः, गिज्जइ प्रतिपाद्यते. 4 *a* खमखमायलंतुग्गयदेहउ क्षमैव क्षमातलं पृथ्वीतलं तदन्तान्मध्यादुद्गतः प्रादुर्भूतो देहो यस्य. 6 *a* चउविहचाय° अणुव्रतं महाव्रतं श्रुतदानमभयदानं च. 7 *a* दियसंदोह° मुनिसमूहः पक्षिसंघातश्च. 8 *a* °दीहसम° दीर्घश्रमः. 9 *a* सुहासिउ सुष्ठु शोभितः. 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थाणुम्; *b* मिच्छामयहुं मिथ्यात्वमृगाणाम्.

घत्ता—कोवाणलचुक्कउ होइ गुरुक्कउ जाइं रिसिंदहिं सिट्ठइं ॥
जगि ताइं सुहंकरु धम्ममहातरु देइ फलाइं सुमिट्ठइं ॥ १७ ॥

18

खंडयं—जहिं हो[1]हिम्मि भवे भवे तहिं देहम्मि णवे णवे ।
दुक्खलक्खणिण्णासणे होउ[2] भत्ति जिणासासणे ॥ १ ॥

अवरु णिरंतरु उज्झियगव्वें इयँ[3] मग्गेवउ मणुएं भव्वें ।
चित्तु धुत्तसिद्धंतपरंमुहुं भवि भवि होउ जिणागमि संमुहुं ।
पंचिंदियपडिभडबलु भज्जउ भवि भवि विमलबुद्धि उप्पज्जउ ।
विसयकसायरायपरिचत्तउ भवि भवि होउ तिगुत्तिपँ[4]उत्तउ ।
आसापासणिबंधणु तुट्टउ भवि भवि मोहजालु ओहट्टउ ।
संजयसाहु[5]संगसोहियमालि भवि भवि होउ[6] जम्मु सावयकुलि ।
रयँ[7]मूढह संबोहणगारा भवि भवि रिसि गुरु होंतु भडारा ।
दीणि करुण उप्पेक्ख दयंतइ भवि भवि रइ वड्ढउ गुणवंतइ ।
वयजोग्गउ सरीरु संपँ[8]ज्जउ भवि भवि तवसिहितावें झिज्जउ ।
धणु परियणु पुरु घरु मा ढुक्कउ भवि भवि उरि उवसमासिरि थक्कउ[9] ।
ण रमउ णारिरूवि हियउल्लउ भवि भवि हवँउ[10] णिरहु णीसल्लउ ।
ओसारियदहपंचपमाएं भवि भवि दियह जंतु सज्झाएं ।
दंसणणाणचरित्तपयासें भवि भवि मरँणु[11] होउ संणासें ।

घत्ता—लद्धाइ समाहिइ भवि भवि बोहिइ जीवउ जीउ विरत्तउ ॥
संसारुत्तरणइं जिणवरचरणइं भवि भवि मणि सुमरंतउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP होहम्मि. २ B होइ. ३ P इउ. ४ MBP °पयत्तउ. ५ B °साहुसंगि. ६ MBP जम्मु होउ. ७ MBP रइमूढहु, T रयमूढहो. ८ MBP उप्पज्जउ. ९ M थक्किउ. १० MBP होउ. ११ MK मरण.

---

18. 8 *a* संजये त्यादि–संयनाश्च ते साधवश्च तैः संग संमर्गस्तेन शोधितः स्फेटितो मल पापं यस्मिन्. 9 *a* रयमूढह ज्ञानावरणादिरजःप्रच्छादितत्वेन विवेकशून्यस्य. 10 *a* दयतइ दयाशून्ये. 11 *b* तवसिहि-तावें तप एवाग्निस्तस्य तापेन. 13 *b* णिरहु निष्पाप निर्वाञ्छं वा. 16 समाहिइ रत्नत्रयैकाग्रतायाम्; बोहिइ रत्नत्रयप्राप्तौ.

19

खंडयं—इय जो चिंतइ णियमणे अणुवेक्खाओ थिउ वणे ।
मोत्तूणं भवसंपयं सो पावइ परमं[1] पयं ॥ १ ॥

महु पुणु सरणउं सिद्ध भडारा दढ[2]किम्मीरकम्मविणिवारा ।
अक्खसोक्खपक्खे[3] णिरु णिच्छिह[4] भवसिप्पीरभारहुयवहसिह ।
इय[5] चिंतंति वहंति समत्तणु पउणंती रइभूमिणियत्तणु ।
सक्कें जिणमइ जाणिय जावहिं लोयंतिय संपाइय[6] तावहिं ।
बंभसग्गलोयंतकयालय देहकंतिदीवियदिप्पालय[7] ।
पुव्वजम्मिकयधम्मपहावण अणुदिणु संभाविय सुहभावण ।
घल्लियकुसुमंजलिकेसररय[8]- रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।
ते भणंति भावें मउलियकर जय देवाहिदेव परमेसर ।
पइं ण मुणिउं जं तं किर केहउ किं गिरि किं परमाणुउ[9] जेहउ ।
सुसिरु अणंतु तिलोयणिवासउ किं आयासु अलक्खपएसउ ।
जीउ कम्मु पोग्गलें[10]वित्थिण्णउ भणु तुह णाणें काइं ण भिण्णउ ।
तुहुं सइंभु[11] संसमाहि[12]विसुद्धउ चारु चारु जं सइं पडिबुद्धउ ।
इंदियपाणासंजमु छंडिवि अप्पउ सीलगुणोहें मंडिवि ।

घत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्चु सुमच्छउ अक्खहि ॥
पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19. १ B परमप्पयं. २ P दिढ°. ३ MBP °पक्खइ. ४ M णिप्पिह. ५ MBPT चिंतंति, gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयन्ति सति. ६ B संपावियभाविहिं; P संपाइय ताविहिं. ७ MBP °दिव्वालय and gloss in MT दीप्तविमानाः, but T दिप्पालय दशादिक्पालाः. ८ P °केसरिरय°. ९ MBP परिमाणुउ. १० BP पोग्गलु. ११ MBP सयंभु. १२ MBP सुसमाहि°.

19. 3 *b* °किम्मीर° विचित्रम्. 4 *a* अक्खसोक्खपक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे; णिच्छिह निःस्पृहाः; *b* °सिप्पीरभार° पलालसघातः. 5 *a* चिंतंति चिन्तयति सति; *b* पउणती प्रकुर्वती, रइभूमिणियत्तणु रतेर्भूमेश्च निवर्तनम्. 9 *a b* केसररये त्यादि–केसररजसि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तैः कृत्वा शबलितानि प्रभुपदानि यैर्लौकान्तिकैर्देवैः. 12 *a* सुसिरु अलोकाकाशम्, *b* आयासु लोकाकाशम्.

20

खंडयं—तुह वयणंसुपसाहिए जगकमले संबोहिए ।
कुसमयखलखज्जोयया होंति देव हयतेयया ॥ १ ॥

मोहजलणजालावलि णिरसहि धम्मामयअंबुहर पवरिसहि ।
पाववज्जलेवंतणिहित्तइं जरकसरा इव कद्दवि खुत्तइं ।
उत्तारहि परमप्पय भूयइं रंगणडा इव णाणारूवइं ।
एम भणेप्पिणु गय लोयंतिय देवें परहियबुद्धि विचिंतिय ।
तहिं अवसरि बुहयणिहिं समत्थिउ भरहु महीसरेण अब्भत्थिउ ।
पुत्त पुत्त लइ पालहि वसुमइ मइं पुणु साहेवी पंचम गइ ।
तं णिसुणेवि कुमारें वुत्तउं देव देव किं भणहि अजुत्तउं ।
जं तुहुं भुत्तुज्झियआहारें तं ण सोक्खु भोयणवित्थारें ।
जं तुह णियडासणइ णिविट्ठहु तं ण सोक्खु हरिवीढि वइट्ठहु ।
जं महु तुह अग्गइ धावंतहु तं ण सोक्खु गयखंधहिं जंतहु ।
जं पायडियउ तुह पयछाहिइ तं ण सोक्खु महु छत्तहु छाँहिइ ।
मंतिमहासेणावइपुज्जें पइं रहिएण ताय किं रज्जें ।

घत्ता—जंपियउ जिणेसें णाउ विसेसें जइ पहुपयहि ण जुज्जइ ।
तो लोउ रउद्दें जुज्झवि मद्दें मच्छें मच्छु व खज्जइ ॥ २० ॥

21

खंडयं—कुरु कुरु धरणीपालणं णायाणायणिहालणं ।
धरि धरि महिवइसासणं एयं चिय मह पेसणं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णिरुत्तरु जायउ थिउ तणुरुहु संभूयविसायउ ।

---

20. १ MBP धम्ममहामयजलहर वरिसहि. २ MBP °वज्जलेवत्त°. ३ MBP कद्दमि, ४ MBP भणिउं. ५ B तुह भुत्तु उज्झिय° ६ P पयछाए ७ P छाएं. ८ K जुंजइ.

---

20. 1 *a* वयणंसु° वचनकिरणे. 2 *a* कुसमयखलखज्जोयया मिथ्यामतदुर्जनखद्योतकाः. 4 *a* पाववज्जलेव° पापमेव वज्रलेप., *b* जरकसरा जीर्णबलीवर्दा., कद्दवि कर्दमे. 11 *b* हरिवीढि सिंहासने. 15 णाउ ज्ञात्वा. 16 मद्दें हठात्.

21. 3 *b* संभूयविसायउ उत्पन्नविषादः.

सोणंदेयहु दिण्णु सुहंकरु पोयणउरु पविहिण्णवसुंधरु।
अण्णेक्कहुं अण्णण्णइं दिण्णइं मंडलाइं ढोइयधणधण्णइं।
एत्थंतरि संपेसिय राणा देवें जे एक्केक्क पहाणा।
छक्खंडावणिपसरियतेयहु लग्गा रायमहाअहिसेयहु।
णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं वज्जंतहिं चामीयरतूरहिं।
धवलिहिं मंगलेहिं गिज्जंतिहिं खुज्जयवावणेहिं णच्चंतिहिं।
कामिणिमित्तगत्तरोमंचहिं होमदाणपारंभपवंचहिं।
ससहरमणिमएहिं णिक्कलुसिहिं सयलतित्थजलभरियहिं कलसहिं।
जय भूयाहिराय पभणंतहिं अहिसिंचियउ भरहु सामंतिहिं।
हाससरसंककाससंकासइं पैरिहाविउ सुहसुब्भइं वासइं।
कण्णहि कुंडलाइं आइद्धइं चंदाइच्चइं तेयसमिद्धइं।
करि कंकणु गलि हारु विलंबिउ सिरि सेहरु महुयरमुहचुंबिउ।
कडियलि रयणकिरणविप्फुरियइ बद्धउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ।
बंभसुत्तु उरि चारु चडाविउ तिलएं तइयउ णयणु व दाविउ।
हरिकरिससिरविरूवणिबद्धइं उब्भियाइं विमलइं कुलचिंधइं।
परिमुक्कमलइं धवलइं छत्तइं णं जिणकित्तिभिसिणिसयवत्तइं।
मय मायंग तुरंग सलक्खण पुज्जिय गह काणीण वियक्खण।

घत्ता—उच्चाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिघोसहिं॥
सिरिभरहकुमारहु महिभत्तारहु बद्धउ पट्टु णरेसहिं॥२१॥

22

खंडयं—सीहासणसिहरासिओ सोहइ भुअणपसंसिओ।
गिरिकडए धुयकेसरो केसरि व्व भरहेसरो॥१॥

21. १ MBP °वावणेहि. २ BMK कामिणिसित्त°. ३ MBP पहिराविउ. ४ MBP °विच्छुरियइ. ५ B पहु°.

4 *a* सोणंदेयहु सुनन्दापुत्रस्य बाहुबलेः 5 *b* मंडलाइं देशाः. 8 *a* कोण° वादनकाष्ठम्. 10 *a* °मित्त मित्र°; *b* °पवंचहिं विस्तारैः. 11 *a* णिक्कलुसिहिं निर्मलैः. 16 *b* भिसिणिसयवत्तहिं कमलिनीकमलैः. 21 आयहिं एतैः; पइअणुरायहिं पत्यनुरागैः.

22. 2 *b* केसरि व्व सिंह इव.

दसदिसिवहसंपाइयसुरवरु तहिं अवसरि दीसइ विउलंबरु ।
बहुविमाणभारें णं णवियउ धयवडेहिं णावइ पल्लवियउ ।
आयवत्तुं फुल्लहिं णं फुल्लिउ तरुणीथणहलेहिं ओणल्लिउ ।
थियहंसहंसचासवाहणगणु णावइ जिणवरपुण्णमहावणु ।
णं तुरयहिं धावंतहिं धावइ संदणेहिं रविभरियउ णावइ ।
कुंजरेहिं णं मेहहिं छइयउ असिवरेहिं णं विज्जुवलइयउ ।
हरियारुणरुइल्लु णं सुरधणु णं अवलंबइ णवपाउसगुणु ।
विहुणिक्खवणपयासणयालइ एम परायउ सुरयणु लीलइ ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ रंजियसहु रिसहणाहु णिण्णाहु महापहु ।

घत्ता—कमलासणु केसवु ससहरु वासवु सिद्धु बुद्धु हरु दिणयरु ॥
चामीयरघडियइ रयणहि जडियइ पट्टि णिसण्णउ जिणवरु ॥ २२ ॥

23

खंडयं—केण वि गहिरं वाइयं केण वि महुरं गाइयं ।
केण वि सरसं णच्चियं पहुपयजुयलं अंचियं ॥ १ ॥

अमरविलासिणिकरसंगहियहिं ण्हविउ देहुं घियदुद्धहिं दहियहिं ।
इंदजलणजमणेरियवरुणहिं पवणकुबेरतिसूलुद्धरणहिं ।
णलिणबंधुणाइंदहिं चंदहिं रुंदाणंदहरेहिं णरिंदहिं ।

22. १ B °दिसिवइ°. २ MBP सपाइय. ३ M धयवडेण ४ MBP आयवत्त ५ M तरुणीथणहरेहिं ओहुल्लिउ; B थणहारेहि ओहुल्लिउ, P थणहलेहि सुफलिल्लिउ, but T ओणल्लिउ. ६ B भावइ. ७ P °पावस घणु. ८ M रजियसुहु. ९ MBP केमउ.

23. १ MBP देउ. K देहु but corrects it to देउ. २ M घय°. ३ T तिसूलधरणु. ४ M °भरेहिं.

3 *a* °दिसिवह° दिक्षु मार्गा , *b* वि उ ल व रु विस्तीर्णमम्बरम. 9 *a* °रु इ ल्लु दीप्तियुक्तम 11 र जि य स हु रञ्जितसभः, *b* णिण्णाहु निर्नाथः, अयमेव सर्वेषां नाथ इत्यर्थः. 12 क म ला स णु कमलाया लक्ष्म्या निवासस्थानत्वात्; के स वु हितोपायदर्शकत्वेन जगतां रक्षाहेतुत्वात्, स स ह रु संसारदुःखस्फेटकत्वाज्जगत्कुवलयप्रबोधकत्वाच्च; वा स वु परमर्द्धिसंपत्तित्वाच्चतुर्निकायदेवस्वामित्वाच्च. सि द्धु कृतकृत्यत्वात्; बु द्धु हेयोपादेयविवेकसम्यक्त्वाच्च; ह रु कर्मणां तत्प्रभवसंसारस्य प्रलयविधायकत्वात्; दि ण य रु भव्यपद्मप्रबोधकत्वादन्यतमोविध्वंसकत्वाच्च.

23. 4 *b* ति सू लु द्ध र णु ईशान.. 5 *a* ण लि ण बं धु आदित्यः; *b* रुं दा णं द° महानानन्दः.

वयणुग्गीरियथोत्तवमालहिं णिग्गयखीरवारिधारालहिं ।
कंचणकुंभसहासहिं सित्तउ देसलयद्धलक्खणसंजुत्तउ ।
सण्हउं तिहुयणसामिहि जोग्गउ किं वण्णिज्जइ अंगि वि लग्गउ ।
ढोइउ णिवसणु पुणु पंगुरणउं तणुतावइ णं णाणावरणउं ।
भूसणाइं दिण्णाइं ण मण्णइ मोहणिबंधणाइं अवगण्णइ ।
संतहु किंह रुच्चंति रसोल्लइं वम्महपहरणाइं फुडु फुल्लइं ।
होउ पहुच्चइ संभावइ जिणु मलविलेवसारिच्छु विलेवणु ।

घत्ता—पज्जलियपईवहुं ससिरविभावहुं धूयंगारयधूमउ ॥
णिग्गंतउ दीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेवउ ॥ २३ ॥

24

खंडयं—दहिदूवंकुरचंदणं सियसिद्धत्थयवंदणं ।
वंदिवि मयणवियारओ सिवियारूढु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयवंदहिं पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिं ।
तेत्तियइं जि भावेण णवंतहिं वरविज्जाहरेहिं विहसंतहिं ।
उट्टियदेवमहाकुलकलयलि पुणु वंदारएहिं णिय णहयलि ।
चल्लिउ अणुमग्गे सियसेविइ णाहिणराहिउ सहुं मरुएविइ ।
आरणालणवदललिलयंगउ जसवइणंदउ पच्छइ लग्गउ ।
दोण्णि वि णावइ मोहणवेल्लिउ णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।
पियविच्छोयसोयखिज्जंतउ णयणंजणमलमइलिज्जंतउ ।
वरकंचीकलावगुप्पंतउ तणुपासेयबिंदुथिप्पंतउ ।
तुरिउ चलंतु खलंतु विसंठुलु णीससंतु चलमोक्कलकोंतलु ।
घणथणजुयलणिवेसियकरयलु णिवडमाणअणिहालियमेहलु ।

५ MBP दह°. ६ P विलग्गउ. ७ MBP किं. ८ M °विलेविउ.

24. M दूवंकुरु वदणं; BPK दूवंकुरवदणं. २ M वसंतु व सबुलु; B खलतु व सठुलु. ३ M णिवड-माणु; P णिविडमाणु.

6 *a* °वमाल° कोलाहल. 13 ससिरविभावहुं शशिरवीणां भां दीप्तिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेषाम्.

24. 1 *a* °चंदण रक्तचन्दनम्. 7 *a* आरणाल° कमलम्. 9 *a* विच्छोय° वियोगः. 11 *a* विसंठुलु शिथिलम्.

पयचालणझंकारियणेउरु धाइउ णिरवसेसु अंतेउरु ।
एक्कवार णिउ णिब्भरभावहिं मंदरि ण्हाणिवि आणिउ देवहिं ।
पुणु तेण जि कमेण आवेसइ णरवइ एत्थु जि पुरि णिवसेसइ ।

घत्ता—पउरयणें वुत्तउ मुणिउ णिरुत्तउ एवहिं दुक्करु आवइ ॥
जडमइलकुचेली धरणिमहेली णाहें विणु किह जीवइ ॥ २४ ॥

25

खंडयं—भरहबाहुबलिसंणिहं गलियंसुयधारामुहं ।
चालियं चोइयहयगयं एक्कूणं णंदणसयं ॥ १ ॥

पराइओ जिणेसरो घणंवणालयं सुपोमसंपयाजसोघणं वणालयं ।
विसालवेल्लिजालरुद्धभाणुभावहं महामुणिंदजोग्गयं सपावभावहं ।
फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं पियाविवज्जियाण कामुयाण बाणरं ।
लयाहरत्थकिंणरीसुरत्तमाणवं असोयचंपयाइरुक्खमाणवं ।
परूढबालकंदकंदलेहिं कोमलं पसूणरेणुपिंगपंझरंतकोमलं ।
दिसुच्छलंतदंतिदाणवारिवासयं रमंतणायरायदाणवारिवासयं ।
महूहिं थिप्पिरं पसमियावणीरयं समाणियामरिंदचंदभाविणीरयं ।
महीरुहग्गसंणिसण्णमोरसारसं पएहिं इच्छिएहिं लोयदिण्णसारसं ।
वहंतमंदगंधवाहकंपमाणयं जलम्मि पोमिणीण जत्थ कं पमाणयं ।

४ MP णरवइ इत्थ णयरि, B णरवइत्थ णयरे. ५ MP जड°, B जर°.

25. १ P °पसोहणं. २ P विलासवेल्लि°. ३ MB पमूय°. ४ MB °पब्भरत°. ५ P पसम्मिया°.

14 *a* णिउ नीत .

25. 3 *a* घणवणालय घना निरन्तरा आम्रा नालकाश्च वृक्षविशेषा यत्र. *b* सुपोमेत्यादि–शोभनपद्मानां सपया सपत्तिस्तया यशः ख्यातिस्तया घनम्, अथवा, सुपोमसपयायसोहणं सुपत्रलक्ष्मीवृक्षैः शोभनम्; वणालय वन जलमाममत्ता लताश्च यत्र. 4 *a* °भाणुभावह आदित्यप्रभापथम; *b* सपावभावहं स्वपापभावघातकम. 5 *b* बाणरं बाणवेधम. 6 *b* °रुक्खमाणव °वृक्षाणा मा लक्ष्मीस्तया नव प्रत्यग्रम्. 7 *b* पसूणेत्यादि–प्रसूनरेणुना पुष्पमकरन्देन पिङ्ग पीतवर्णं प्रझरत् कोमल पानीय यत्र. 8 *a* दाणवारिवासय मदजलेन सुगन्धि. *b* °दाणवारिवासय दानवानामरीणां च वसतिर्यत्र. 9 *a* °अवणीरय भूमिधूलि., *b* समाणिय° कृतम्, °भाविणीरय स्त्रीरतम्. 10 *b* °सारस लक्ष्मीरसम्, अथवा सार स्व द्रव्यम्. 11 *a* °गधवाहकपमाणयं वायुना कम्पमानम्; *b* जलम्मीत्यादि–यत्र वनालये जलमध्ये पद्मिनीनां कं (किं) प्रमाणम्, नास्ति प्रमाणमित्यर्थः, अथवा, कं जलं पमाणय परिमितमित्यर्थ..

अलीहिं चंचलेहिं छण्णकंजकेसरे तरंति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे।
पलोइऊण तं सरीतुसारसीयलं णहंगणावइण्णओ रिसी वसी यलं।

घत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि णिसण्णउ णिव्विण्णउ णरजोणिहे॥
ससिबिंबसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्धु व सिवपयखोणिहे॥ २५॥

26

खंडयं—विविहक्खणविहिकारिणा विप्फुरंतपविधारिणा।
अइरावयकरिगामिणा पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा॥ १॥

परमसिद्ध णियचित्ति धरेप्पिणु मुट्ठिउ पंच झडत्ति भरेविणु।
जाइं ताइं ससहावें कुडिलइं धुत्तविलासिणिकुलइं व कुडिलइं।
आलुंचेविणु घित्तइं केसइं एम मुणंति धम्मु जगि के सइं।
चिहुर लुक्क जे हयतमपडलें लेवि पुरंदरेण मणिपडलें।
जणवयसंदरिसियझसमुद्दइ घित्त तुरंतें खीरसमुद्दइ।
परिसेसियउ मउडु रइरंगउ णं वम्महसिहरेहि सिहरग्गउ।
मुक्कइं कुंडलाइं मणिजडियइं रविससिबिंबइं णं णिव्वडियइं।
कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें सहुं णिज्जिय मियंकु णीहारें।
मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं छुरियइ विज्जुलया इव णहविप्फुरियइ।
अंबराइं मुक्काइं अमोल्लइं जाइं सरीरहु सुट्ठु सुहिल्लइं।
संसारासारत्तु मुणेप्पिणु पंचमहव्वय चित्ति धरेप्पिणु।
किमलंकारें देहहु भारें अप्पउ भूसिउ वयपब्भारें।
मोहजालु जिह मेल्लिवि अंबरु झत्ति महामुणि हुवउ दियंबरु।

26. १ MBP मुक्क. २ MB सिहरंगउ. ३ BP णिव्विडियइं. ४ MB मियंक. ५ BP विज्जुलदा. ६ MB अइविप्फुरियइ. ७ M सुद्ध.

---

12 *a* छण्णकंजकेसरे प्रच्छादितपद्मकेसरे; *b* तरंती त्यादि–यत्र वनालये सुरासुराः के न तरन्ति, सर्वेऽपि तरन्त्येव; सरे सरोवरे. 13 सरीतुसारसीयल नदीजलविप्रुषा शीतलम्; *b* रिसी ऋषि., वसी जितेन्द्रियः; यल च+अल अत्यर्थम्. 14 णिव्विण्णउ विरक्तः 15 सिवपयखोणिहे मोक्षस्थानपृथिव्याम्.

26. 1 *b* °पविधारिणा इन्द्रेण. 5 *b* केसइ के स्वयम्. 6 *a* लुक्क लुप्ता:. 7 *a* जणवये त्यादि–लोकानामसदर्शितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोदाभ्यामन्यसमुद्रेषु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्, अथवा झसकुमत्स्यमुक्तं उदकं यत्र.

उत्तरसाढरिक्खि णवमिइ दिणि महुमासहं पक्खम्मि सियचंदिणि ।
दुविहु वि मणि पडिवण्णउ संजमु गउ णियवासहु हरि हुयवहु जमु ।
परियंचिवि सामिउ णियमन्थउ अवरु वि जणु णामियणियमत्थउ ।
रायहं णेहालोइयवइयइं खणि चालीससयइं पावइयइं ।
अजयमल्लु महुणयरु पराइउ णियपुरवरु बाहुबलि पराइउ ।
गय णियगेहहु णयणाणंदण अवर वसहसेणाइय णंदण ।
पियविरहाणलेण अइतत्तउ[११] णारीयणु असेसु परियत्तउ ।
जो वण्णहुं सक्किउ णाहीसें समउं तेण ताएं णाहीसें ।

घत्ता—रणवडहहु केरउ जगभयगारउ देंतु दिसहिं भरहे सरु ॥
थिउ गंपि अउज्झहि वइरिदुसज्झहि[१२] पुप्फयंतु भरहेसरु ॥ २६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणणिक्खवणकल्लाणं णाम
सत्तमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ७ ॥
॥ संधि ॥ ७ ॥

---

८ MBP णवमइ. ९ MBP अचादिणि and gloss in P कृष्णे १० MBP पव्वइयइ. ११ MBK अइअत्तउ. १२ M वइरिदुगेज्झहि.

---

16 *b* सियचंदिणि श्वेततारके, कृष्णपक्षे इत्यर्थः. 18 *a* परियंचिवि प्रदक्षिणीकृत्य. 19 *a* णेहालोइयवइयइं स्नेहालोकितपतिकानि, *b* पावइयइ प्रव्राजितानि. 22 *a* अइतत्तउ अतीव तप्तः. 23 *a* णअहीसें सर्पराजेन वर्णयितुमशक्य इत्यर्थः. *b* णाहीसें नाभिराजेन. 24 भरहे भरतक्षेत्रे, सरु श्रेष्ठम्.

VIII

सीहासणु णरवइसासणु महियलु तेणु अवियप्पिवि ॥
गुणवंतहे तवसिरिकंतहे थिउ अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

आवली—धरिऊणं इसी मुणिग्गंथवेसयं
दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।
तिस्सा रइकएण परिसेसियंगओ
एयत्तं भरेण झाणालयं गओ ॥ १ ॥

चिरु चरियइं चरियइं संभरेवि जगसामिणि गोमिणि परिहरेवि ।
मणमारहु मारहु करिवि छेउ अइसच्चहु तच्चहु मुणिवि भेउ ।
तणुभरणइं करणइं णिज्जिणेवि मयसिमिरइं तिमिरइं णिद्धुणेवि ।
घरवासहु पासहु णीसरेवि विहडंतउ जंतउ मणु धरेवि ।
सहुं लोहें मोहें वहिवि खेरि णियजणणि व बहिणि व गणिवि णारि ।
संकुज्झिवि बुज्झिवि सइं जि सिक्ख सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः
एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।
एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदा
द्वावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जनाः for विदाम् and भूषणौ for भूषणम्. At the commencement of this Samdhi they read the following:—

मातर्वसुधरि कुतूहलिनो समेत-
दापृच्छत. कथय सत्यमपास्य साध्यम् (शाठ्यम् ?) ।
त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यतुल्यः ॥

1\. १ MBP सिंहासणु. २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तृणमिव गणयित्वा. ३ P गुणवतहो. ४ P °कंतहो. ५ M तस्सा. ६ MBP एयत and gloss in P एकान्तम्. ७ MB जयणी.

1\. 1 तणु अवियप्पिवि शरीरमविगणय्य. 5 तिस्सा रइकएण तस्यास्तपःकान्तायाः संभोगार्थम्; परिसेसियंगओ त्यक्तकायः. 6 एयत्तं एकत्वम्, 7 *b* जगसामिणि लक्ष्मीः; गोमिणि पृथ्वी. 9 *b* मयसिमिरइं मदस्य सैन्यानि. 11 *a* खेरि वैरम्. 12 *a* संकुज्झिवि शङ्कामुज्झित्वा; *b* जइणी जैनी.

छम्मासमेरु मुणि मेरुधीरु अणसणु अवसणु गेण्हिवि गहीरु ।
कमजुयलि पाविमालि विहत्थिमेत्तु णेरंतरु अंतरु करिवि जुत्तु ।
ओट्ठुउडणिउडसंपुडियवयणु आसासियणासियणिसियणयणु ।
भूभंगावंगपसंगरहिउ खयरिंदफणिंदणरिंदमहिउ ।
णिद्दंदु णिंयंदु विमुक्कतंदु लंबियभुउ सुरथुउ जिणवरिंदु ।

घत्ता—वरतणुसिरि णं कंचणगिरि जगगुरु दुक्कियमंथउ ॥
थिउ सग्गहु अवि थपवग्गहु णं आरोहणपंथउ ॥ १ ॥

2

आवली—विसयवसा तिसाछुहातावसोसिया
भीसणवग्घसिंघसरहेहिं तासिया ।
जे समयं वयम्मि लग्गा महारहा
ते भग्गा दिणेहिंमसहियपरीसहा ॥ १ ॥

अणब्भत्थसत्था महामंदमेहा पयंपंति एवं समोरुद्धदेहा ।
ण ण्हाणं ण फुल्लं ण भूसा ण वासं पहू पाणियं लेइ णाहारगासं ।
ण सीउण्हवाएण जित्तो महंतो ण णिद्दाइ भुक्खाइ तण्हाइ संतो ।
ण जंपेइ णालोयए कं पि भिच्चं णिउब्भो थिरं संठिओ एम णिच्चं ।
ण याणामि किं चिंतए चित्तमज्झे मई कम्मि संजोयए संदुसंज्झे ।
ण दुक्खंति पाया फुडं वज्जकाओ ण ओमिज्जए केम रायाहिराओ ।

८ MBP ओट्ठउडणिविड°. ९ MB °सपुरिय°. १० MBP णियदु

2. १ MBP दिणेहिं असहिय°. २ GK have before this line भुजंगप्पयावो णाम छंदो, MB have भुअंगप्पयावो णाम छदो P भुयगप्पयाणाम छदो. ३ MBPT समं रुद्धदेहा. ४ MBP कं पि भिच्चं. ५ T संदुगेज्झे, ६. MB उव्विजए, P उव्विजई

13 *a* छम्मासमेरु षण्मासमर्यादम्. *b* अवसणु अव्यसन दु सक्रियशमित्यर्थ . 14 *a* विहत्थिमेत्तु वितास्तिमात्रम्. 15 *a* ओट्ठुउडणिउड° निष्पुट निश्छिद्रसलग्नमोष्ठपुटं कृत्वा सकोचितवदनः. *b* आसेति–आस्यानासिकान्यस्यनयनः. 16 *a* अवंग° °अपाङ्ग 17 *a* नृयदु नृचन्द्र : विमुक्कतदु आलस्यरहितः.

2. 1 विसयवसा विषयवशात्. 3 समयसह महारहा महारथाः उत्तमसत्त्वाः. 5 *a* अणब्भत्थसत्था अनभ्यस्तशास्त्राः, *b* समोरुद्धदेहा श्रमेण अवरुद्धदेहाः व्याप्तशरीराः. 6 *a* वासं वस्त्रम्. 7 *b* संतो श्रान्तः. 8 *b* णिउब्भो नियमेनोर्ध्वः. 10 *b* ओमिज्जए उन्मृज्यते.

अहो हो किमेयस्स एएण होही वणंते कहं वा णिसाहाइं णेही[७]।
पुणो पट्टणं किं व जाही ण जाही मणोहारि रज्जं पि काही ण काही।
ण कंताकुडुंबेण मोहं विणीओ ण सद्दूलपंचाणणाणं पि भीओ।
जडाजालधारी सपारोहसोहो घुलंतंगसप्पो वडो णं कुरोहो।
मणूमण्णणिज्जो णियारी णिसुंभो इमो देवदेवो परो आइबंभो।
इमस्सेरिसो धीरधीरावहारो[८] परं दुव्वहो चारुचारित्तभारो।

घत्ता—जं[९] धवलें अइअतुलबलें दुग्गु खुरेहिं[१०] णिभिण्णउं॥
तेहिं[११] कसरहिं विहुणियसुसिरहिं[१२] एक्कु वि पउ णउ[१३] दिण्णउं॥२॥

3

आवली—उब्भियधवलचिंधमहिमावसारओ
करिवरजूहणाहपल्लाणभारओ।
परजम्मंतरे वि परिरूढनेयओ
पियसहि रासहाण कह[१] होइ णेयओ॥१॥

गयगंडकंडु[२]कंडुयणवाह को वि सहइ किडिदाढावलेह।
को वि सहइ फणिमुहचुंबियाइं ताणं चिय कंठोलंबियाइं[३]।
को वि सहइ दूसह दंस मसय पोसियकसाय दुव्वार विसय।
को वि सहइ णग्गत्तणु णिरासु णिच्चं णिरसणु गिरिदुग्गवासु।
पाउसजलधाराविप्पियाइं को वि सहइ विज्जुझडप्पियाइं।
को वि सहइ [४]सिसिरि पडंतु सिसिरु उण्हालइ दिणयरकिरणपसरु।

७. B णीही. ८ MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणां धैर्यापहारकः; P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहार. ९ MB जें. १० MB खुरहिं णिब्भिण्णउ. ११ P जरकसरहिं. १२ M °सुसिरहिं. १३ MBP ण वि.

3. १ P किह. २ MBP °चंड°. ३ B कंठालंबियाइ. ४ MB ससिरि but gloss in M शीतकाले.

---

11 *b* णिसाहाइं अहोरात्राणि. 13 *a* विणीओ विनीत. प्रापितः. 14 *b* कुरोहो वृक्षः. 15 *a* मणूमण्णणिज्जो मनुभिरपि पूज्यः. 16 *a* धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहारः. 17 धवलें धुर्यवृषभेण. 18 कसरहिं वत्सतरैः.

3. 3 परिरूढतेयओ प्रख्यातप्रभाव.. 4 रासहाण गर्दभानाम्. 3 *a* वाह बाधा, *b* किडिदाढावलेह सूकरदंष्ट्राविदारणम्. 8 *a* णिरासु फलानपेक्षम्. 9 *b* °झडप्पियाइं पतनानि. 10 *a* सिसिरि शीतकाले; सिसिरु शीतम्.

परलोयकहाणी केण दिट्ठ को वि सहइ एयहु तणिय णिट्ठ ।
अण्णेण उत्तु किं एत्थु मरमि घरु जाइवि तं णियरज्जु करमि ।
अण्णेण उत्तु संभरमि पुत्तु घरु जाइवि आलिंगमि कलत्तु ।
अण्णेण उत्तु अलिचुंबियाइं सलिलइं मयरंदकरंबियाइं ।
सरवरि पइसेप्पिणु पियमि ताम तण्हाइ ण वंचइ[5] जीउ जाम ।

घत्ता—अण्णेक्कें माणगुरुक्कें विहसिवि[6] एहउ वुच्चइ ॥
परमेसरु ओलंबियकरु एक्कल्लउ[7] वणि किह मुच्चइ ॥ ३ ॥

4

आवली—झिज्जंते[1] ससिम्मि झिज्जइ ससो सयं
वड्ढंतम्मि जाइ वुड्ढीपयं पियं ।
अच्छामो वणम्मि सहिऊण दंडणं
णरवइचरियमेव भिच्चाण मंडणं ॥ १ ॥

विसमे वियणे तरुगिरिगहणे ।
परलोयरइं[3] मोत्तूण पइं ।
गंतूण पुरं तं विविहघरं ।
भरहस्स मुहं पेच्छामु[4] कहं ।
सव्वेहि घणं पडिवण्णमिणं ।
सुरणवियपयं[5] दहपंचमयं[6] ।
उत्तुंगतणुं पणवंति मणुं ।
रंजियअलिहिं कुसुमंजलिहिं ।

५ B वंचइ. ६ MB वियसिवि. ७ MBP एक्कु जि.

4. १ MB झिज्जेंतें; K सिज्जतें, but crrrects it to झिजतें. २ MBP have before this line ललियलया णाम छंदो. GK have ललिया णाम छदो. ३ MBPT °गइ. ४ MBP पेच्छामि. ५ MBP °णमिय°. ६ M adds this foot in the margin and MB read after it णाहेयसुयं धणुपंचसयं सो दिव्वमयं; after दहपंचमयं P reads परिगलियमयं धणुपचसय.

11 *b* णिट्ठ अनुष्ठानपरमकाष्ठाम्.

4. 1 ससो शशः. 2 वुड्ढीपय उच्चैः पदम. 3 दडण लुञ्चनादिकम्. 4 *a* वियणे विजने. 6 *b* पइं पतिम्.

गयजम्मरिणं पुज्जंति जिणं ।
जंपंति इमं धीरो सि तुमं ।
ण मुएसि कमं गहियं णियमं ।
अम्हे चवला पविलीणबला ।
तुह मुग्गचुया हा किं ण मुया ।
मणँधरियगई इय भणिवि जई ।
अज्जवसवणा णिम्मियभवणा ।
थियहरिणगणे णिवसंति वणे ।
कंदं पवरं मूलं महुरं ।
मालूरदलं भक्खंति फलं ।
सीयं विमलं पपियंति जलं ।
सिग्घुलियजडा वियरंति जडा ।
किर ते वि मुणी ता दिव्वझुणी ।
ससिरविसयणे उग्गय गयणे ।
मा लुणह तरुं मा धुणह मरुं ।
मा खणह महिं मा कुणह सिहिं ।
मा विसह सरं मा हणह परं ।
एसा ण विही जइ णत्थि दिही ।
ता णिवसणयं तणुभूसणयं ।
गेण्हह तुरियं दुट्ठं दुरियं ।
असुविद्दवणे भवसंकमणे ।
जं आसि कयं तं जाइ खयं ।

घत्ता—जिणलिंगें उज्झियसंगें जं किउ पाउ दुरासें ॥
तं तुट्टइ कँह वि ण फिट्टइ जीवहु जम्मसहासें ॥ ४ ॥

७ P मणि. ८ MBP °हरिणयणे. ९ MP विरयंति. १० MBP कह व.

19 *b* °भवणा गृहाणि. 20 *a* थियहरिणगणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र. 23 *a* मालूरदलं बिल्वपत्रम्. 26 *a* ससिरविसयणे आकाशे. 27 *b* मरुं पवनम्. 29 *a* सरं सरोवरं पानीयम्. 35 पाउ पापम्. 36 जम्मसहासें जन्मसहस्रेण.

5

आवली—ता लग्गा णराहिवा भासियक्खरे
दुमदलमंगपिच्छवक्कलधरा परे ।
थियजिणवरणिगेहणिट्ठोहयट्ठिया
णाणाविहवियारवेसेहिं संठिया ॥ १ ॥

तो[3] कच्छमहाकच्छहं तणूय पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।
कामियकामिणियणकामकील मयमत्तचंडसोंडाललील ।
परबलवलगलहत्थणसमत्थ दोण्णि वि भायर करवालहत्थ ।
आया तहिं जहिं णिम्मुक्कडंभु थिउ पडिमाजोएं सइं सयंभु ।
पासहिं परिभमिवि महारिजूर णं जंबूदीवहु चंदसूर ।
णामें णमि विणमि णिबद्धणेह णं गिरिहि णियडणिसण्ण मेह ।
जयकारिवि तेहिं पवुत्तु एव णियसुयहं विहंजिवि पुहइ देव ।
दिण्णी अम्हहुं दिण्णउ ण किं पि महिमंडलु गोप्पयमेत्तु जं पि ।
पइं पालियखत्तियसासणेण पेसणयरपेसियपेसणेण ।
एवहिं पच्चुत्तरु किं ण देमि भणु कवणु दोसु गुणरयणरासि ।
परमेट्ठि पियामह तिजगनाय अम्हारउ दुट्ठु ण होइ राय ।

घत्ता—तुह चलणहं णं णवणलिणहं मणमहुयरु रुणुरुंटइ ॥
उम्मेलहि काइं ण बोल्लहि जाम ण हियवउ फुट्टइ ॥ ५ ॥

6

आवली—पुणु पुणु पहुपसायदाणुग्गमे रया
पाएसुं पडंति गाढं कुमारया ।

5. १ MBP °पिंछ°. २ M°णिट्ठपहट्ठिया, B णिट्ठाहपठिया ३ MBP ता. ४ M °गलघल्लण; B °गलत्थल्लण°. ५ P °णिमुक्क°. ६ MBP णियडणिविट्ठ ७ MBP पणवेप्पिणु ८ M तिजगभाय.

5. 3 थियेत्यादि- स्थितस्य जिनस्य निरोधनिष्ठा निश्चलस्थितिस्तया हत स्थित स्थान येषां ते. 5 *a* तणूय पुत्रौ. 6 *b* °सोंडाल° हस्ती 8 *b* सयंभु आदिनाथ . 16 रुणुरुटइ अनुराग करोति. 17 उम्मेल्लहि अवलोकय.

6. 1 रया रता.,

सोहइ गुरुयणम्मि कयमाणवज्जणं
गिरिवरदारणम्मि करिदसणभंजणं ॥ १ ॥

रयणमयमइंदासणसमेउ पोमावइपरमाणंदहेउ ।
जिणपुण्णपवणपरिछित्तकाउ तहिं अवसरि कंपिउ णायराउ ।
णियणाणु पउंजिवि तेण मुणिउं जं सालएहिं जिणु पुरउ भणिउं ।
मग्गंति बाल किं भुअणभाणु जइ देइ देइ ता तिजगदाणु ।
पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु पारद्धउ विमलु मुणिंदधम्मु ।
सामंतमंतिसेविउ णरेसु महिवइ संतोसिउ देइ देसु ।
देसवइ गामु गामवइ छेत्तु छेत्तवइ किं पि कुडेएण भत्तु ।
घरवइ पुणु ढोवइ कूरमुट्ठि तिहुयणवइ पाडइ पयहिं सिट्ठि ।
जइ पत्थिज्जइ ता को वि गरुउ लहुपत्थणाइ पर होइ चरुउ ।
लइ कयउ कुमारहिं जुत्तु साहु सो पत्थिउ जो तेलोक्कणाहु ।
सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु ।

घत्ता—णिच्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पडिवण्णउं ॥
मोक्खत्थिउ सो जं पत्थिउ तं हउं करमि अँसुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलोयम्मि ते हमिह खोहकारणं
जायं किं भणामि सुकयावयारणं ।
अचवंता वि देंति तरुणा महाहलं
सुपुरिसदंसणं पि ण हु होइ णिप्फलं ॥ १ ॥

6. १ MBP मुंदरेहि जिणपुरउ. २ MBP देउ. ३ P खेत्तु. ४ P खेत्तवइ. ५ MB कुलएण, P कुडएण in second hand. ६ MB तइलोक्क°. ७ MBP ण सुण्णउ
7. १ MBP भणेमि.

6 *b* णायराउ नागराजो धरणेन्द्र. 10 *a* णरेसु नराणामीशः, अथवा, पुरुषेषु. 11 *b* कुडएण प्रस्थेन. 12 *b* सिट्ठि जीवसृष्टिः त्रिभुवनम. 13 *b* चरुउ हितकर..
7. 1 णरेत्यादि– नरलोके तौ नमिविनमी तिष्ठतः, हमिह अहं तु पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारणं जातौ

दुवई—तो णिग्गमणमेव धरणेण कयं संभरियजिणवरं ।
फारफणाकडप्पफुक्कारुल्लोलियसमहिमहिहरं ॥ १ ॥
महिहररुंदकंदरायंपणणिग्गयकूरहरिवरं ।
हरिओरालिरोलवित्तासियणासियमत्तकुंजरं ॥ २ ॥
कुंजरचडुलचरणपडिपेल्लणपाडियपयडभूरुहं ।
भूरुहखंधघुंघखरणिहसणरुहपज्जलियहुयवहं ॥ ३ ॥
हुयवहविप्फुलिंगजालावलिजलियसमत्तकाणणं ।
काणणसंणिसण्णमुणितावसंकियसयलसुरयणं ॥ ४ ॥
सुरयणभरियजलयजलधाराऊरियसुविउलंवरं ।
अंबरयलफुरंततडिदंडाहंडलचावकब्बुरं ॥ ५ ॥
कब्बुरदिव्ववत्थवित्थिण्णुलोवयछइयसंदणं ।
संदणयलविलग्गविसहरमुहलालियविज्झचंदणं ॥ ६ ॥
चंदणकुसुमघुसिणफलदलजलतंदुलउवणियच्चणं ।
अच्चणकामसामफणिरामारंभियसरसणच्चणं ॥ ७ ॥
णच्चणमिलियललियलीलामरललणालुलियमेहलं ।
मेहलियाविलंबिचलकिंकिणिकलकलयलसुपेसलं ॥ ८ ॥
इय वरविवरकुहरतरुणहयलजलथलकंपकारिणा ।
वियडफणाहिरूढचूडामणिकुवलयभारधारिणा ॥ ९ ॥
पहुकमकमलणमियणमिविणमिणराहिवचोज्जदाइणा ।
झत्ति समागएण दिट्ठो रिसहो गरलहरराइणा ॥ १० ॥

२ P तो. ३ MBP °फडा°. ४ P °उल्लासिय°. ५ MBP °परिपेल्लण°. ६ MBP °समत°. ७ M °तावससंकिय°, B °तावसरसकिय°; P °तावसंकिय° and gloss तापशङ्कित. K °तावासकिय°, but in second hand °तावससंकिय°. ८ MBP °सविउल° ९ MBP °वलग्ग°. १० MBP अंचण°.

6 °कडप्प° सघात:. 7 °आयंपण °आकम्पनम्. 8 हरिओरालि° सिंहध्वनिस्तस्य रोल कोलाहल:. 10 °खरणिहसणरुह° अत्यन्तनिघर्षणप्रादुर्भूत:. 12 °तावासकिय° तापशङ्कित:. 13 °भरियजलय° भृतमेघा. 14 °कब्बुरं चित्रवर्णं यथा भवति. 15 °उल्लोवय° चन्द्रोपकम्, °णंदणं देवविमानम्. 16 °लालिय° चुम्बिता:. 18 °साम° श्यामा. 21 °कुहर° पर्वत:. 22 °अहिरूढ° स्थित:. 23 °चोज्ज° आश्चर्यम्. 24 गरलहरराइणा नागराजेन धरणेन्द्रेण.

घत्ता—आवेप्पिणु कर मउलेप्पिणु थुउ मुणिंदु थुइलक्खहिं ॥
मुहं[११]घुलियहिं अक्खर[१२]लोलियहिं जीहहिं द[१३]ससयसंखहिं ॥ ७ ॥

8

आवली—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं
भुवणवणं डहेइ मोहो मलीमसं ।
जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं
ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

[१]दूसियघरासमो भूसियणियागमो ।
तोसियमईमलो पोसियमहीयलो ।
मयगयणियत्तओ कयवयपयत्तओ ।
भावियजयत्तओ ताविय[२]सयत्तओ ।
खंचियाविसायओ संचियविरायओ ।
लुंचियसिरोरुहो वंचियदुरग्गहो ।
कुंचियगईवहो अंचियजसावहो ।
मावईखोहओ आवईरोहओ ।
छंडियकुसंगओ खंडियअणंगओ ।
दंडियसईदिओ पंडियपवंदिओ ।
तवयरणपरियरो जमकरणभयहरो ।
समसरणजोयओ भवतरणपोयओ ।
सज्झाणणग्गणी सिद्धचिंतामणी ।
संपयासंगमो धम्म[३]कप्पद्दुमो ।

११ P मुहि. १२ MBP °वलियहिं. १३ P दुसहससखहि.

8. १ GK have before this line:-अमरपुरा छंदो, MBP have अमरपुरी नाम छंदो. २ M °सगत्तओ. ३ B omits this foot.

8. 1 लालस लम्पटम्. 4 मयणसिहिणा पलित्तय कामाग्निना प्रदीप्तम्. 5 *b* °घरासमो गृहस्थाश्रमः. 7 *b* °पयत्तओ प्रयत्नः. 8 *b* °सयत्तओ °स्वगात्रः 11 *a* °गईवहो °गतिमार्गः, *b* अंचियजसावहो श्लाघितयशोधारकः. 12 *a* मावई° लक्ष्मीपति.. 15 *a* °परियरो सामग्रीः *b* जमकरण° मरणं रोगो वा. 16 *a* समसरण °उपशमगृहम्, *b* °पोयओ प्रवहणम्.

भवविणासी भवो सिवपयासी सिवो।
चित्ततमहो इणो दोसविजई जिणो।
पावहारी हरो तं पराणं परो।
देवदेवो तुमं ताहि दीणं ममं।
णिग्गुणो णिद्धणो[4] दुम्मई णिग्घिणो।
परहरावासओ गहियपरगासओ[5]।
माणओ मेच्छओ रोहिओ रिंछओ।
जायओ हं भवे णारओ रउरवे।
तुम्ह पडिकूलिमा जा कया सा कमा।
एम भुत्ता मए आसि काले गए।

घत्ता—जिणु वंदिवि अप्पउ णिंदिवि णाएं तमु पक्खालिउ॥
णमिरायहु विणमिसहायहु मुहससिबिंबु णिहालिउ॥ ८॥

9

आवली—तेहिं पयंपियं सया सुहावणं
महिमहि दारिऊण पत्तो सि किं वणं।
कस्स तुमं सुसील अम्हाण संमुहं
अणिमिसलोयणेहिं किं पेच्छसे मुहं॥ १॥

णीसिम्मेतामियामियणरिंदु[1] तं णिसुणिवि[2] पडिजंपइ फणिंदु।
हउं भुवणि पसिद्धउ णायराउ जंभारिणमंसिउ तिजगताउ।
लोउत्तमु कुसुमसरंतयालु इहु देउ महारउ सामिसालु।
जइयहुं णिव्वेइउ मुक्करज्जु[3] तइयहुं जि एण महु कहिउ कज्जु।
तं पेसिय[4] केण वि कारणेण विहलियजडजीउद्धारणेण।

४ MB णिद्धुणो ५ MP add after this जीवआमागओ करणबलपोसओ, B adds only जीवआसासओ.

9. १ MBP णीमाम°. २ B णिमुणवि ३ MB मुक्कु रज्जु. ४ MBP संपेसिय.

---

20 *a* चित्ततमहो चित्ततमोघातक ; इणो आदित्य अथवा, चित्तस्य तमोऽन्धकारस्तस्य सूर्यः. 22 *b* ताहि रक्ष. 27 *b* कमा क्रमात्. 29 णाएं धरणेन्द्रेण.

9. 1 सयासुहावणं सदा सुखकरम्. 2 महिमहि दारिऊण हे अहे, मही विदार्य. 5 *a* °अमिय° अमित°. 6 *b* जंभारि° इन्द्रः. 7 *a* कुसुमसरंतयालु कामघातकः. 8 *a* णिव्वेइउ वैराग्यं गतः.

एहिंति बे वि णमिविणमिणाम मइं मग्गिहिंति सिरिसोक्खकाम ।
तुहुं देज्जसु ताहं णयासणाउ खगसेढिउ उत्तरदाहिणाउ ।
आसणथरहरणें ढलिउ संचु मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु ।
पायालु मुइवि अवयरिउ एत्थु हउं अरुहदेवपेसणसमत्थु ।
जो खंडइ लिंपइ सुराहिएण देवें णिज्झाइयणियहिएण ।
एवहिं सो दीसइ धुवु समाणु परिचत्तउ पुव्विल्लउ विहाणु ।

घत्ता—लहु आवहं काइं चिरावहं जोइ मुएवि सखयरइं ।
मइं सिट्ठइं पहुउवइट्ठइं भुंजह णाणाणयरइं ॥ ९ ॥

10

आवली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छियं
णवर णहयले विमाणं णियच्छियं ।
मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं
गुणिणा झत्ति णायणाहेण णिम्मियं ॥ १ ॥

णविऊण सदोसारंभहरं सुरवरभवणेण सरंभहरं ।
जुज्झियहिंडियविसहरिणउलं दुवंकुरपीणियहरिणउलं ।
गयणंगणलग्गासिरं गरुयं ओसहिहयसत्तसिरंगरुयं ।
उक्खयपुलिंदकंदारुणयं हरिणहहयकरिकंदारुणयं ।
सीहाणुलग्गभीयरसरहं सुररमणीवाहियहंसरहं ।

५ MBP अरुहदासपेसण°. ६ MBP धुउ.

10. १ All Mss. have before this line: मात्रासमक. २ MBP जुज्झिरहिंडिर°. ३ MBP दुव्वंकुर°.

11 *a* णयासणाउ नगाश्रिते द्वे श्रेण्यौ. *b* खगसेढिउ विद्याधरश्रेण्यौ. 12 *a* °थरहरणें कम्पनेन; संचु शरीरबन्धः. 14 *b* °णियहिएण मोक्षेण. 16 चिरावहं चिरं कुरुताम्; सखयरइं विद्याधरसाहितानि.

10. 5 *a* सदोसारंभहरं स्वदोषारम्भविनाशकम्, *b* सुरवरभवणेण विमानेन, सरंभहरं सरोवरजलधारकं विजयार्धं रम्भायुक्तगृहं वा. 6 *a* °विसहरिणउल वृषसिंहनकुलम्; *b* °हरिणउलं मृगसंघातम्. 7 *a* गरुयं महान्तम्. *b* सत्तसिरंगरुयं सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुजं व्याधिम् 8 *a* °कंदारुणय कन्दैर्मूलैररुणं रक्तम्; *b* कंदारुणयं मस्तकैः कृत्वा दारुणं रौद्रम्. 9 *a* °सरहं अष्टापदम्; *b* °वाहियहंसरहं वाहितो हंसयुक्तो रथो यस्मिन्.

तीरासियखयरीवाहणयं दुमघट्टणहुयहुयवाहणयं ।
णेउररवभरियलयाहरयं वरखेयरपीयपियाहरयं ।
संदरिसियवहुरत्तामरसं रवियरवियसावियतामरसं ।
वीसरियहारभारियमहियं जिणपडिमाकयमहिमामहियं ।
चारणमुणिदेसियधम्मसुहं झरझरियणिज्झरावाहसुहं ।
फणिवयणविमुक्कविसग्गिवहं दरिदाविंयविविहविसग्गिवहं ।
णरजुयलमलद्धपियालवणं णीयं सेलं सपियालवणं ।
पुव्वावरजलहिविलग्गसिरो कंदरमुहेहिं वणयरगसिरो ।

घत्ता—भडभीसहिं णमिविणमीसहिं गिरि वेयड्डु पलोइउ ॥
रयणालए सायरवेलए तुलदंडु व संजोइउ ॥ १० ॥

11

आवली—वियसियविडविकुसुमकिंजक्कपिंजरो
मणिमयकडयमंडिओ णं महीकरो ।
रयणायरपसारिओ सहइ सोहणो
रयणायरविलुद्धओ हवइ थीयणो ॥ १ ॥

णं जगसिरिणट्टाधारवंसु अहवा गोगाइसरीरवंसु ।
गंगासिंधूहिं विहिण्णदेहु पडिगयसंकिरगयणिहयमेहु ।
रुक्खहुं णावइ रुक्खाउवेउ देवहुं वल्लहु णं सग्गलोउ ।

४ M °लयाहरह. ५ M °पियाहरय ६ P मदरसिय°. ७ MBP दरिसाविय°.

10 *a* °खयरीवाहणय विद्याधरस्त्रीणा वाहन यस्मिन, *b* °हुय° उत्पन्न , *b* °हुयवाहणय हुतवाहनमाग्निम्. 11 *a* °लयाहरय लतागृहम, *b* °पियाहरय °प्रियाधरम्. 12 *a* मदरिसियेत्यादि– सदर्शितं वधूरक्तानाममराणां स सुख येन *b* तामरगं पद्मम 13 *a* °महिय महीज वृक्षम; *b* °महिमामहियं माहिम्ना पूजितम्. 15 *a* फणीत्यादि– फणिवदनैर्विमुक्ताद्विषाग्नेर्वधो मरण यत्र. *b* दरीत्यादि–दरीषु दर्शितो विविधैर्विभिः पक्षिभिः स्वर्गिणां पन्था यत्र. 16 *a* णरजुयल नमिविनमियुग्मम. अलद्धपियालवण न लब्धं वृषभनाथस्य प्रियं आलपनं येन. *b* सपियालवण प्रियालाश्वरवृक्षास्तद्वनैः सहितम 17 *b* °गसिरो ग्रसनशील:. 19 रयणालए रत्नस्थानके.

11. 1 °किंजक्क° मकरन्द . 2 कडय° कङ्कणं गिरितट च. 4 रयणायरविलुद्धओ रत्नानामाकरे आश्रये पुरुषे विशेषेण लुब्धः, अथवा रते नागरे विदग्धपुरुपे विशेषेण लुब्ध· 5 *b* गोगाई° पृथ्वी एव धेनु·. 7 *a* रुक्खाउवेउ वृक्षायुर्वेदः वृक्षाणां वृध्द्युपायप्रदर्शक शास्त्रम्.

उवलोसहिरसासिहिजोयवण्णु रसवाइ व सई णिवडियसुवण्णु ।
णिसि चंदयंतसलिलेहिं गलइ वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।
माणिक्कपहादिण्णावलोउ जहिं चक्कवाय ण मुणंति सोउ ।
रययमउ सव्वु रयणियरभासु पण्णास मूलि वित्थारु जासु ।
गयणंगणलग्गविचित्तसिंगु जो पंचवीसजोयणइं तुंगु ।
दोवासहिं तासु थियाउ ताम दीहत्ते लवणसमुद्दु जाम ।
उत्तरदाहिणियउ मणहराहं सेढीउ दोण्णि विज्जाहराहं ।

घत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि दहजोयणवित्थिण्णी ॥
एक्केक्की विहवगुरुक्की णाणारयणरवण्णी ॥ ११ ॥

12

आवली—तत्थ चउत्थकालठिदिसंविहाणयं
पंचधणूसयाइं मुणिरयणिमाणयं ।
णीणं कम्मभूमिपरिणामजोयओ
परविज्जाहलेण अहिओ विहेयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ दूसहतवताववसंगयाउ ।
पुव्वाउ ताउ णिच्चं हियाउ अवराउ पयत्तें साहियाउ ।
सहिउवसग्गें धीरें समेण सुइदेहें होमें संजमेण ।
पारंभियमुद्दामंडलेण चरुगंधधूवपुप्फच्चणेण ।
विज्जाहराहं णियमें वएण विज्जाउ होंति ससहावएण ।

11. १ MBP गयणग्गलग्गसुविचित्त°. २ B °सेंगु. ३ MB मेढिउ दोण्णि वि, P सेढिउ बेण्णि वि. ४ MBP णाणाणयर°.

12. १ P °कालट्ठिदि°. २ T भयराणिमाणयं, but notes a p मुणिरयणाति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ३ MBP कम्मभूमिणाम°. ४ MBP सहिओवसग्गधीरें. ५ MP °पुप्फच्चणेण, B पुप्फच्चणेण. ६ MBP कमेण.

8 *a* उवल° धातुपाषाण. 11 *a* रयणियरभासु चन्द्रकान्ति.. 13 *a* दोवासहिं द्वयोः पार्श्वयोः. 15 मोइवि मुक्त्वा; वरि उपरि.

12. 1 चउत्थेत्यादि—चतुर्थकालस्थितेः शरीरोत्सेधादिलक्षणायाः सम्यग्विधानम्. २ मुणिरयणिमाणय सप्तहस्तप्रमाणम्. 3 णीण नृणां मनुष्याणाम्; कम्मभूमिपरिणामजोयओ कृष्यादिकर्मयोगजः. 7 *a* सहिउवसग्गें सोढोपसर्गेण. 9 *a* वएण व्रतेन.

सिद्धउ पण्णत्तिपहुइयाउ आणत्तु करिंति परीइयाउ[7] ।
जहिं धम्मा इव संदिण्णकाम णीरंतर[8]सीमाराम गाम ।
जहिं दक्खामंडवयलि सुयंति पहि[9] पंथिय दक्खारसु पियंति ।
धवलुढजंतपीलिज्जमाणु पुंडुच्छुखंडरसु[10] पवहमाणु ।
कइकव्वरसु व जणु पियइ ताम तित्तीइ होइ सिरकंपु जाम ।
जहिं पिक्ककलम[11]कणिसइं चरंति सुय दूयत्तणु हलिणिहि करंति ।

घत्ता—सिरिसयणहिं णं बहुवयणहिं विलसंती[12] दिणि रायइ ॥
जहिं पोमिणि कलमहुयरज्झुणि णं भाणुहि गुण गायइ ॥ १२ ॥

13

आवली—कंकणहारदोरकडिसुत्तभूसिया
णिच्चं गंधधूवमल्लोह[1]वासिया ।
लच्छि भुंजिउं णरा देवयाणियं
सोक्खं जं लहंति तं केण माणियं ॥ १ ॥

कुसुमियणंदणवणसंकडाइं कीलागिरिंदसिहरुब्भडाइं ।
परिहातिपहिं परियंचियाइं पवणुध्दुयधयमालंचियाइं ।
बहुदारगोउर[2]ट्टालयाइं सोवण्णरयणरइयालयाइं ।
मुहसालातोरणसोहियाइं दाहिणसेढिइ जसाहियाइं ।
सोहासमूहमोहियसुराइं एयइं पण्णास जि पुरवराइं ।
पहिलउ किंणर णरगीउ बीउ बहुकेउ पुणु वि पुरु पुंडरीउ ।
हरिकेउ सेयकेउ[3] वि रवण्णु सप्पारिकेउ णीहारवण्णु ।
सिरिवहु सिरिहरु लोहग्गलोत्तु[4] अण्णेक्कु अरिंजउ सग्गलीत्तु ।

७ MBP सुहुइयाउ. ८ MBP णेरतर°. ९ M जहिं १० MBP रसपवहमाणु. ११ M °कलमकणसइं; BP कलवकाणिसइं. १२ MBPK विसयती.

13. १ MBP °मल्लेहिं वासिया; T °मल्लोह° and gloss पुप्पसमूह . २ P °गोउरुट्टालयाइं. ३ MBP सेउकेउ. ४ MB लोयग्गलील, P लोहग्गलालु and gloss लोहार्गलायुक्तम्.

10 *a* पण्णत्तिपहुइयाउ प्रज्ञप्तिप्रभृतयः; *b* आणत्तु आज्ञाम्. 12 *b* पहि मार्गे. 13 *a* धवलुढ° वृषभवाहितानि. 15 *b* सुय शुकाः; हलिणिहि कर्षकस्त्रियाः. 16 सिरिसयणहिं पद्मैः; रायइ शोभते.
13. 2 मल्लोह° पुष्पसमूहः. 3 देवयाणियं विद्यासंपादिताम्. 6 *a* परियंचियाइं परिवेष्टितानि.

वज्जग्गलु वज्जविमोउ अवरु महिसारु पुरं जयपुरु वि पवरु ।
सोलहमी पुरि सयडमुहि होइ चउमुहि बहुमुहि जाणंति जोइ ।
रयविरयपउरखगजम्मखोणि आहंडलणयरि विलासजोणि ।
अपराजिउ कंचीदामु दोण्णि सविणय णहु खेमैयरीउ तिण्णि ।
झसइंध कुसुमपुरि संजयंति सुक्कउरु जयंती वइजयंति ।
विजया खेमंकरु चंदभासु रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।
सुविचित्त महाघण चित्तकूडु अण्णु वि तिकूडु वइसवणकूडु ।
ससिरविपुरि विमुही वाहिणी वि सुमुहीपुरि णिच्चुज्जोइणी वि ।
मज्झइ रहणेउरचक्कवालु तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।
जायउ जयमंगलजयरवेण णमि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एक्केक्की पुरहिं विरिक्की गामकोडिपडिबद्धी ॥
णमिरायहु थुयणाहेयहु धम्में संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

14

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया
परउवयारवावडा होंति धीरया ।
एक्को अहव दोण्णि पायालराइणा
सरिसा णत्थि भद्द धरणिंदभोइणा ॥ १ ॥

वारुणासामुहाओ फुडं जाणिमो वामसेढीपुराणावलिं भाणिमो ।
अज्जुणी वारुणी वइरिसंघारिणी अवि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।
विज्जुदित्तं पुरं गिलिगिलं पट्टणं चारुचूडामणी चंदभाभूसणं ।
वंसवत्तं पुरं कुसुमचूलं पुरं हंसगब्भं पुरं मेहणामं पुरं ।

५ B जउपुरु. ६ B सयडंमुहि ७ M खेपुरीउ; BP खेमपुरीउ. ८ MBP सुक्कउरि ९ P वइवसण°. १० P णेउरु चक्कवालु. ११ MBP जायउ. १२ M विहवगुरुक्की; BP पुरहिं गुरुक्की.

14. १ M सरसा. २ MBP भद्द णत्थि. ३ MBP पुराणावली. ४ P विज्जदत्तं. ५ MBP किलिकिलं. ६ MP वंसवंतं; B वंसवंसं.

23 पुरहिं विरिक्की पुरैः विभक्ता.

14. 1 सुधीरया सुबुद्धिरताः. 2 वावडा व्यापृताः. 5 *a* वारुणासामुहाओ पश्चिमदिशामुखतः प्रारभ्य.

संकरं लच्छिहम्मं पुरं चामरं विमलमसुमक्कयं सिवसमं मंदिरं ।
वसुमईणामयं सव्वसिद्धत्थयं सूरसत्तुंजयं केउमालं कयं ।
इंदकंतं णहाणंदणासोययं वीयसोयं विसोयं सुहालोययं ।
अलयतिलयं च णहतिलययं मंदिरं कुमुदकुंदं च णहवल्लहं सुंदरं ।
जुइतिलयमवणितिलयं सगंधव्वयं मुक्कहारं पुरं अणिमिसं दिव्वयं ।
अग्गिजालापुरं गरुयजालापुरं सिरिणिकेयं च जयसिरिणिवासं पुरं ।
रयणकुलिसं वरिट्ठं विसिट्ठासयं दविणजयमवि सभद्दं च भद्दासयं ।
फेणसिहरं पि गोखीरवरसिहरयं वेरिअक्खोहसिहरं च गिरिसिहरयं ।
धरणि धारणि सुदंसणपुरं रुद्दयं दुग्गयं दुद्धरं हारिमाहिंदयं ।
विजयणामं पुरं पुणु सुगंधिणिपुरं सुरयणायरपुरं रयणपुरमवि पुरं ।
सट्ठिगामाण कोडीहिं सहुं हारिणा सेट्ठि तुट्ठेण सुविसिट्ठसुहयारिणा ।

घत्ता—इय णयरइं णिवसियखयरइं धणकणजणपरिपुण्णइं ॥ २० ॥
अणुराएं रिसहपसाएं णाएं विणमिहि दिण्णइं ॥ १४ ॥

15

आवलि—जाओ सो णहयराणं पहू पिओ
णेहणिबद्धओ ससुहिणा समं थिओ ।
सुयणुद्धारभारधरणुज्जुयंगओ
ते आउच्छिऊण धरणो घरं गओ ॥ १ ॥

भुवणहु मंडणु अरहंतु देउ माणिणिमुहमंडणु मयरकेउ ।
वेसहि मंडणु वइसिउ णिरुत्तु ववहारहु मंडणु चायवित्तु ।
कुलमंडणु सीलु सुयस्स वुद्धि तवचरणहु मंडणु मणविसुद्धि ।

७ MBP सूरसंतुज्जयं. ८ MBP महा°. ९ MBP कुमुमकुंद व्व. १० M जुवइतिलय सत्ताणियं; P जुवइतिलमं सविणिय. ११ MBP गरुयआलापुर. १२ P रुद्दय. १३ M सुरयणारय° १४ MBP सुट्ठ. १५ P सुविसुद्ध° but gloss सुविशिष्ट.

15. १ B सुसुहिणा. २ P धरणुज्जयगओ, but gloss ऋजुशरीरः. ३ BP वायवित्तु, and gloss in P वचनप्रतिपालनम्.

19 *a* हा रि णा मनोज्ञेन. 21 णा ए धरणेन्द्रेण.

15. 6 *a* व इ सि उ वैशिकं वेश्यावृत्तिः.

कुलवहुमंडणु भत्तारभत्ति असि रायहु मंडणु मंतसत्ति।
माणहु मंडणु अदीणवयणु भवणहु मंडणु वरणारिरयणु।
कइमंडणु णिव्वाहियणिबंधु गयणहु मंडणु ससि कमलबंधु।
पियपेम्महु मंडणु पणयकोउ आरंभहु मंडणु खलविओउ।
किंकरमंडणु पहुकज्जकरणु णरवइमंडणु पाइक्कभरणु।
सिरिमंडणु पंडियँयणु णिरुत्तु पंडियमंडणु णिम्मच्छरत्तु।
पुरिसहु मंडणउ परोवयारु धरणिंदें पालिउ णिव्वियारु।
उद्धरिय बे वि णमि विणमि भाय को पावइ एयहु तणिय छाय।
अहवा किं होसइ किर परेण परिणवइ दइउ सव्वायरेण।

घत्ता—किं किज्जइ अण्णें दिज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ॥
तें कित्तणु भरहपहुत्तणु पुप्फयंतगँयगामिउ॥ १९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णमिविणमिरज्जलंभो णाम
अट्ठमो परिच्छेओ सम्मत्तो॥ ८॥
॥ संधि॥ ८॥

४ M सोहइ. ५ MBP होइ. ६ MBP °गइ°.

10 *a* °णिबंधु काव्यम्; *b* कमलबंधु सूर्यः. 18 तें पुण्येन, कित्तणु कीर्तिर्यशः; पुप्फयंतगयगामिउ आकाशगामि सर्वलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्.

IX

ता झाइउ णिण्णेहु णियमणपसरु पराज्जिउ ॥
पुण्णइ छट्टइ मासि णाहें जोउ विसज्जिउ ॥ १ ॥

I

हेला—परिचिंतइ जिणेसरो दुक्कियं खवंतो ।
महिमापारमासिओ सुद्धही महंतो ॥ १ ॥

जिह तेल्लेण दीवु तरु णीरें   तिह माणुससरीरु आहारें ।
आहारु वि जो परहु णिमित्तें   सिद्धउ लद्धउ कालें भवंतें ।
उज्झिउ आहाकम्मुद्देसहिं   पुव्वं पच्छा संथुइभासहिं ।
अज्झोवज्झहिं पूईकम्महिं   देवयचरुयहिं वियलियधम्महिं ।
लिंगिणीसणरसत्तुगारहिं   चोद्दहमलवित्थारवियारहिं ।
जीववहाइअसंजममीसहिं   परभयवसउच्छाइयगासहिं ।
गणहरगणियहिं छायालीसहिं   वज्जिउ अवरेहिं मि बहुदोसहिं ।
णीरसु सरसु ण किं पि भणेवउ   रसणु रसें रसंतु णिहणेवउ ।
रूवतेयबलचिंताचत्तउ   संजमजत्तामेत्तु समत्तउ ।

MBP give, at the beginning of this Samdhi, the stanza एको दिव्यकथाविचारचतुरः etc. for which see notes on page 121.

1. १ BP °पसरपरज्जिउ. २ GK call this couplet हेलादुवई only at this place; throughout the rest of the Samdhi they call it हेला. ३ MBP सुद्धधी. ४ MBP कालि. ५ P भमतें. ६ B थुइसंभासहिं. ७ M °सत्तुग्गारहिं. B सत्तुउग्गारहिं, P सत्तुगारहिं. ८ MP चउदह°. ९ M पयभर°. १० MBP रसे रमतु. ११ MBPT °मेत्तसमत्तउ.

1. 1 झाइउ ध्यातः, पराज्जिउ पराजितो निर्जितः. 2 जोउ षण्मासकायोत्सर्गः. 4 सुद्धही शुद्धबुद्धिः. 6 *b* कालु युक्तं कालम्. 7 *a* आहाकम्मुद्देसहिं अध कर्म नीच कर्म स्वयंपाकादिकम्, उद्देशिकं कर्म मुनिमुद्दिश्य पाककरणम्. 8 *a* अज्झोवज्झहिं मुनिं दृष्ट्वा अधिश्रयणे अधिकजलस्य तंदुलानां वा निक्षेपैः: 9 *a* णीसनिस्वो दरिद्रः; *b* चोद्दहमल° चतुर्दशमलविस्तारविकारैर्वर्जितम्, ते च मलाः—नहरोमजन्तुअट्ठिकणकुंडपूयरुहिरमसचम्माणि । फलफुल्लबीयमूलाछण्ण मला चउदस भवन्ति 11 *a* छायालीसहिं षोडश उद्गमदोषाः, षोडश उत्पादनदोषाः, दश एषणादोषाः, संयोजनदोषः, इंगालदोष, धर्मदोषः, प्रमाणदोषश्चेति षट्चत्वारिंशद्दोषाः. 13 *b* संजमजत्तामेत्तु संयमयात्रार्थमेव.

सुक्खु लुक्खु सउवीरब्भुक्खिउ[12] णवकोडीविसुध्दु सुपरिक्खिउ[13]।
पाणिपत्ति सइं मइं भुंजेवउ चरियाचरणु जगहु दरिसेवउ।

घत्ता—जइ हउं अच्छमि अज्जु केम वि ण करमि भोयणु ॥
तो जिह ए णर भग्गा[14] तिह भजिहइ तवोवणु ॥ १ ॥

2

हेला—आहारें वओ[1] तिणा तवो तिणा जियक्खो।
अक्खाणं जए समो होइ तेण मोक्खो ॥ १ ॥

इय हियइ घेत्तूण जोयं पमोत्तूण।
सिद्धत्थणामाउ तम्हा वणंताउ।
विहरेइ परमेट्ठि जुयमेत्ति[2] गयदिट्ठि।
जीवे[3] ण दुम्मेइ पेच्छंतु पउ देइ।
रमणीयथामेसु णयरेसु गामेसु।
तं विणयणयभरिय पणमंति णायरिय।
अब्भुवरसालीण जोयंति[4] गामीण।
भइयाइ कंपंति अण्णे पयंपंति।
एसो महीराउ एसो महादेउ।
धणकणयधण्णाइं एएण दिण्णाइं।
मंडलिय[5] महियलइं काऊण बहुहलइं।
पयस्स पडिवत्ति उवयरह सहस त्ति।
इय भणिवि सद्दलइं विविहाइं फलदलइं।

१२ MBP सउवीरें भुक्खिउ; K सउवीरब्भक्खिउ. १३ M परिक्खिउ. १४ MBP भग्ग.

2. १ MBP तवें. २ MBP जुयमेत्तु. ३ MB जीव ण दूसेइ; PT जीवं ण दूसेइ: ४ MBP जोयंत. ५ MBP मंडलइं.

14 *a* सउवीरब्भुक्खिउ काञ्जिकेनाभ्युक्षितम्; *b* णवकोडीविसुद्धु मनोवाक्कायैः कृतकारितानुमतसंयुक्तैर्विशुद्धम्. 17 तवोवणु तपोवनं मुनिसंघातः.

2. 1 वओ वपुः; तिणा तेन; जियक्खो जितेन्द्रियः. 2 समो कर्मक्षयः. 5 *b* जुयमेत्ति चतुर्हस्तमात्रे. 10 *a* भइयाइ भयेन. 15 *a* सद्दलइं आर्द्राणि.

भमराहिरामाइं णवकुसुमदामाइं ।
कुंकुमइं चंदणइं भायणइं भोयणइं ।
सुरहियइं सीलयइं भिंगारवरजलइं ।
सीसेण गहिऊण पंथम्मि णिहिऊण ।
णाहस्स ते देंति बाला ण याणंति ।
अण्णे पसत्थाइं देवंगवत्थाइं ।
क[6]डिसुत्तकेऊरु म[7]णिहारु मंजीरु ।
कंकणइं कुंडलइं णं सूरमंडलइं ।
गलियावलेवस्स उवणेंति देवस्स ।
अण्णे कुलीणाउ मज्झम्मि खीणाउ ।
लायण्णपुण्णाउ ढोयंति कण्णाउ ।
ण[8]रवरहतुरंगाइं माय[9]ंगतुंगाइं ।
णिसि[10]याइं पहर[11]णइं उववणइं पट्ट[12]णइं ।
वाइत्तजुत्ताइं चमरायवत्ताइं ।
स[13]सिसंखपंडुरइं चिंधाइं मंदिरइं ।
अण्णे समप्पंति अण्णे प[14]भासंति ।
भो मयणमयवाह भो णाणजलवाह ।
भो तरुणमिहि[15]राह भो तवसिरीणाह ।
भो देवदेवेस भो परम परमेस ।
णिण्णग्गवेसेण णि[16]यदेहसोसेण ।
णालवसि किं भव[17]सि णउ हससि णउ रमसि ।
इय भणिवि अज्जेहिं चडुय[18]म्मसज्जेहिं ।

६ MB करिसुत्तकेऊर; P कडिमुत्तकेऊर. ७ MBP मणिहार मंजीर. ८ M*p* वररह°. ९ MBPT मायंगतुंगाइ and gloss in T समूहा. १० B omits णिसियाइ पहरणइं; P adds it in the margin in second hand. ११ M adds after this· जोयंति किंकरइ; P adds it in the margin in second hand. १२ MBP add after this. पणयाइं परियणइं. १३ MBP ससिखंड°. १४ MBP पहासंति. १५ MBPT °मिहराह. १६ B णिव°. १७ MBP भमसि. १८ M चडुयम्मसहेहिं.

27 *b* °तुं गा इ वृन्दानि समूहा., 32 म य ण म य वा ह काममृगस्य व्याध. 28 *a* त रु ण मि हि रा ह बालसूर्यसमान. 37 *b* च डु य म्म स ज्जे हिं चाटुकारसज्जैः.

बोल्लाविओ जइ वि पहु चवइ णउ तइ वि ।
पराणिहियणियचित्तु महिवीढु विहरंतु ।

घत्ता—हिंडइ जाम जिणिंदु चरियामग्गि पइट्ठउ ॥
ता सेयंसणिवेण गयउरि सिविणे[1]उं दिट्ठउ ॥ २ ॥

3

हेला—पल्लंकासिएण मउलंतणेत्तएणं ।
रयणिविरामजामए संपसुत्तएणं ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजम्मिणा भवाणुबद्धधम्मिणा ।
णिसायरो दिवायरो करीसरो सरोवरो ।
महण्णवो सुरंधिओ बलुद्ध[1]रो मयाहिओ ।
सबाहुजित्तसंगरो रिऊण छेयणंकरो ।
भरक्ख[2]मेक्ककंधरो महाभडो धणुद्धरो ।
घुलंतपु[3]च्छपच्छलो विसो विसाणउज्जलो ।
णियच्छिओ सकंदरो घरे विसंतु मंदरो ।
इमो सुदंसणोहओ पणट्ठदिट्ठिमोहओ ।
णिसंतए पलोइओ समाणसे विवेइओ ।
पहायए महाउणो समासिओ सभाउणो ।

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहे[4]लु आहासइ ॥
को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

१ BP सुइणउं.

3. १ M बलद्धुरो. २ MBP भरेक्कमेक्ककधरो. ३ MPK °पुंछ. ४ MBP °फलु.

3. 3*a* ससिप्पहाणुजम्मिणा सोमप्रभस्य लघुभ्रात्रा. 5 *b* बलुद्धरो मदोत्कटः; मयाहिओ मृगाधिपः. 7 *a* भरक्खमेक्ककंधरो भरक्षमैकस्कन्धप्रदेशः. 9 *b* विसंतु प्रविशन्. 10 *a* सुदंसणोहओ शोभनस्वप्नसंघातः. 12 *a* पहायए प्रभाते; महाउणो महायुषः. 13 कुरुणाहु सोमप्रभः.

४

हेला—ससिरविसुहडसीहसरसरहिगोगुणालो।
जंगममंदरु व्व गइहसियपीलुलीलो॥ १॥

णीलजडाकलावओमालिउ सिहरि व जलहरमालइ कालिउ।
एरावयकरसंणिहबाहउ णग्गोहु व ललंतपारोहउ।
तावण्णहिं दिणि णयरि पइट्ठउ णारीणरहिं णिरंजणु दिट्ठउ।
धावमाणजणपयसंमद्दें उट्ठिउ कलयलु जयजयसद्दें।
को वि भणइ अवलोयहि एत्तहि हउं पंजलियरु अच्छमि जेत्तहि।
को वि भणइ सामिय दय किज्जउ एक्कवार पच्चुत्तरु दिज्जउ।
को वि भणइ मेरउ घरु आवहि भिच्चभत्ति पहु किं ण विहावहि।
चंदु व रिक्खि रिक्खि वियरंतउ जइवइ गेहि गेहि पइसंतउ।
घरिणिहि घरपंगणु संप्राइउ ताउ व भाउ व देउ पलोइउ।
णिग्गयाउ मणि तोसु वहंतिउ एम चवंति ताउ पणवंतिउ।
मज्जणु मज्जणहरि संजोइउ पोत्ति तेल्लु आसणु वि पढोइउ।
ण्हाहि णाह लइ तणुउवयरणउं चंगउ चेलिउ हेमाहरणउं।
बइसहि पट्टि सुसरससमग्गउ भुंजहि भोयणु तुज्झु जि जोग्गउ।
बोल्लावियउ ण किं पि वि भासहि भुवणुबंधु किं अप्पउ सोसहि।

घत्ता—पुरि कलयलु णिसुणेवि ससिभासें अहियारिउ॥
कंचणदंडविहत्थु पुच्छिउ णियदउवारिउ॥ ४॥

4. १ M °सरभूरुहगुणालओ; B सरसरेणे गुणालओ, P सरसरहिणा गुणालओ; T सरहि समुद्रः. २ MBP ° पीलुलीलओ. ३ MBP अइरावय°. ४ M °करि°. ५ M घरपगणु मपाइउ, B घरिणिघरपंगणु संपाइउ; P घरु पंगणु सपाइउ. ६ MBP हरिसु. ७ M सरमु सुसमुग्गउ, B सुरमु समुग्गउ. ८ M सुयणबंधु.

4. 1 °सरहि° समुद्र·, °गो° वृषभः. 3 *b* कालिउ कलितः कल्मषः. 9 *b* विहावहि चित्ते किं न रोचयसि. 15 *a* सुसरसमग्गउ षड्रसयुक्तं भोजन समग्रं च. 17 ससिभासें सोमप्रभेण. 19 कंचणदंडविहत्थु काञ्चनदण्डविशिष्टकरः.

5

हेला—ता पडिहारएण भणियं भवावहारो।
जो लच्छीकडक्खविक्खेवे वि णिव्वियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ जो तियसेसरेण सइं ण्हवियउ।
जेण पयासियाइं मइगम्मइं बहुभेयइं जणजीवणकम्मइं।
भरहहु तुम्हहुं मेइणि दिण्णी जेण णवल्लविचि पडिवण्णी।
सो आयउ तेलोक्कपियामहु तं णिसुणिवि उट्ठिउ सोमप्पहु।
सहुं सेयंसकुमारें णिग्गउ ताम पलंबपाणि णं दिग्गउ।
संमुहुं एंतु णिहालिउ जिणवरु णं वसुहंगणाए पसरिउ करु।
णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु णं जगभवणखंभु भयमयमहु।
सामि सणेहंभरेण भरेप्पिणु कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु।
सोमप्पहेण पलद्धपसंसे देवि पयाहिण तहु सेयंसे।
मुहुं जोइयउ णेत्तसयवत्तहिं हरिसंसुयओसाकणसित्तहिं।

घत्ता—अइपसण्णमुहु होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥
पुव्वभवंतरणेहु जणदिट्ठिए जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवलोइऊण कुमरेण लोयसारो।
सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो ॥ १ ॥

पउद्धो असेसो सवासो सदेसो।
मुणीणं पहाणं वराहारदाणं।

5. १ MBP भणियं. २ MBP °विक्खेवणिव्वियारो. ३ MBP पसरियकरु. ४ MBP भयमयवहु. ५ MB सणेहु भरेण. ६ BP अइपसण्णु. ७ P जणदिट्ठें.

6. १ MBP कुमरेण. २ M has before this line सोमराई छंद; BPGK have सोमराई; MBPK पबुद्धो. ३ MBP सदेसो.

5 3 *a* सुरायलि मेरौ. 4 *a* मइगम्मइं मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि. 9 *b* भयमयमहु भयानां मदानां च विनाशकः. 12 हरिसंसुयओसाकणसित्तहिं हर्षाश्रुमिहिकाकणासिक्तैः.

6. 3 *a* पउद्धो प्रबुद्धः.

भवे जं विइण्णं कयाणंतपुण्णं ।
समाहूयसक्कं मणे तं पि थक्कं ।
पुणो तेण उत्तं अहो हो णिरुत्तं ।
इयं मज्झ णाणं पणायं पुराणं ।
असूई अराई अँमाई अणाई ।
अमाणो अमोहो अकोहो अलोहो ।
अछेओ अभेओ अणेओ वि णेओ ।
विमुक्कंधयारो अणंगावहारो ।
पवित्तो महंतो अणंतो रुहंतो ।
असंगो अभंगो जहाजायलिंगो ।
बुहाणं विहाओ सुहाणं उवाओ ।
अहाणं विणासो महाणं णिवासो ।
अँभावो असावो इमो देवदेवो ।
कयत्थो विवत्थो समत्थो पसत्थो ।
सया वंदणिज्जो इँमो पुज्जणिज्जो ।
परो मोक्खगामी इमो मज्झ सामी ।
सुराहिंदपूओ इमो पत्तभूओ ।

घत्ता—जगगुरु गुरुयणपुज्जु मोणव्वइ दिव्वासउ ॥
पँहु आहारणिमित्तु भमेइ समग्गपयासउ ॥ ६ ॥

४ M अजाई अमाई and adds: अणाई; B reads अजाई अमाई. ५ P वि एओ and gloss एकः. ६ M अताओ अभाओ and adds: अराओ असोओ; P अताओ अभाओ अराओ असाओ. ७ M सया. ८ MBP पहु. ९ B भणइ.

8 *a* पणायं प्रज्ञातम्; पुराणं वृत्तान्तम्. 9 *a* असूई अस्तवकः; *b* अणाई आगो दोषस्तेन रहितः. 11 *b* अणेओ वि णेओ गुणपर्यायापेक्षयानेकोऽपि द्रव्यपर्यायापेक्षयैकः. 14 *b* जहाजायलिंगो नग्नः. 15 *a* विहाओ विधाता. 16 *a* अहाणं पापानाम्; *b* महाणं तेजसाम्. 17 *a* अभावो क्रोधादिभावरहितः; असाओ सातरहितः. 21 *b* पत्तभूओ पात्रभूतः. 22 दिव्वासउ शुद्धहृदयः दिशावस्त्रधारको वा. 23 एहु एषः; समग्गपयासउ स्वमार्गो यतिमार्गस्तस्य प्रकाशकः.

7

हेला—अंबरमणिपसंडिदाणाइं देंति लोया ।
ताइं इमे ण लेंति परिमुक्ककामभोया ॥ १ ॥

कण्ण लेइ जो कामें गेत्थउ भूमि लेइ जो लोहें घेत्थउ ।
मंचयसेज्जायलइं ब्भवणइं गेण्हइ जो माणइ रइरमणइं ।
गाइ देहि देहि त्ति पघोसइ जो घएण अप्पाणउं पोसइ ।
वित्तु लेइ जो इंदिय पुज्जइ मंसु खाइ जो पुट्ठि समज्जइ ।
बंभण तावस सँवसणभग्गा पावयम्म संसारहु लग्गा ।
दुद्धरजीहोवत्थहिं दंडिय अप्पउ परु वि हणिवि पासंडिय ।
दुक्कियभरपरियँड्डणरीणा सूईमुहि णिवडंति अयाणा ।
जे लेंता ते विड विड देंता णँउ जाणहुं कें गुणहिं महंता ।
पत्थरणाव ण पत्थरु तारइ अवस कुपत्तु भवण्णवि मारइ ।
जासु अबंभारंभपरिग्गहु सरइ कया वि ण इंदियणिग्गहु ।
धम्माभासु पाउ जो भावइ अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ ।
कत्थइ मिच्छामग्गि पइट्ठउ कुच्छियपत्त रिसीसहिं सिट्ठउं ।
सीलें सम्मत्तेण वि उज्झिउ हवइ अवत्तु सइं जि मइं बुज्झिउ ।
सद्दहाणु णव पंचहुं सत्तहुं करइ पयाहुं जिणेसपवुत्तहुं ।
ईसीसि वि वउ जेण ण पालिउ तं जँघण्णु[11] मइं पत्तु णिहालिउ ।
मज्झिमु देसचरित्तालंकिउ सम्मदंसणि कहिं मि ण संकिउ ।
दूरुद्धुय[12]सदप्पकंदप्पहिं णाणचरियसम्मत्तवियप्पहिं ।
भूसिउ संचियसासयसोक्खहिं सीलगुणहिं चउरासीलक्खहिं ।
उत्तमु पत्तु पउ पणविज्जइ एयहु पाँसुय[13]भोयणु दिज्जइ ।

7. १ MBP घत्थउ. २ MB गुत्थउ; P गत्थउ. ३ P पेय खाइ. ४ MBT अवसण°. ५ MBP परु हणेवि. ६ M °परियट्टण°; P °परिवड्डण° but gloss परिकर्षण°. ७ B णं जाणहु. ८ MBP किं. ९ MB °रंभु परिग्गहु. १० MP दिट्ठउ. ११ MBP जहण्णु. १२ MBP दूरुज्झिय. १३ MB फासुय.

7. 1 °पसंडि सुवर्णम्. 3 *b* घत्थउ ग्रस्तः. 6 *a* पुज्जइ पोषयति. 7 *a* सवसणभग्गा स्वव्यसनभग्नाः. 10 *a* विडेत्यादि— विटाः ये ददति तेऽपि विटाः. 15 *b* अवत्तु अपात्रम्; 16 *a* णव तत्त्वानि; पंचहुं पञ्चास्तिकायानाम्; सत्तहुं सप्तानां पदार्थानाम्. *b* पयाहुं पदार्थानाम्. 19 *a* दूरुद्धुय° दूरोद्धूत°.

घत्ता—[१४]कुच्छियवत्ति कुभोउ दिण्णु अवत्तइ णासइ ॥
[१५]तेहिं पत्तहिं फलु तिविहु इय सुंदरु आहासइ ॥ ७ ॥

8

हेला—मज्झिमु मज्झिमेण अहमो अहमेण णे[१]ओ ।
उत्तमु उत्तमेण दाणेण होइ भोओ ॥ १ ॥

णिल्लोहत्तें चाएं भत्तिइ [२]खेमविण्णाणें सुद्धइ भत्तिइ[३] ।
एहिं गुणेहिं जुत्तु दायारउ मज्झण्णइ [४]अवलोयइ दारउ ।
मउलियकरयलु अइ[५]अवमत्तउ अच्छइ तिविहपत्तगयचित्तउ ।
गुणवंतउ परलोयासत्तउ सो पडिगाहइ [६]पंगणपत्तउ ।
[७]ठाहँ भणिवि पणवियसिरु भासइ उच्चठाणि गउरविइ णिवेसइ ।
करइ चाइ संतहुं धण्णउं जणु चरणधुवणु अच्चणु पुणु पणमणु ।
मणवयतणुसुद्धिइ सुद्धासणु देइ भरंतु जिणिंदहु सासणु ।
भेसहु सत्थु अभयदाणें सहुं देइ सजीविउ चलु मण्णिवि लहु ।
बहिरंधलयहं मूयहं ल्लहं काणकुंटमंटहं वाहिल्लहं ।
सव्वभूयहियका[८]रणें गण्णें असणु वसणु दीणहं कारुण्णें ।
परमारा पाविट्ठ मुएप्पिणु णियदव्वाणुसारु [९]सुयरेप्पिणु ।
देइ ण जो घरत्थु सो केहउ घरयारउ चिडउल्लउ जेहउ ।
[१०]णियडिंभउं णियपोट्टु जि पोसइ मुवउ ण जाणहुं कहिं जाएसइ ।

घत्ता—माणसु जं णि[११]द्धम्मउ तहिं उप्पेक्ख रइज्जइ ॥
[१२]दुत्थिअम्मि अणुकंप गुणवंतउ पणविज्जइ ॥ ८ ॥

१४ MB कुच्छियपात्ति. १५ MBP तिहिं.

8. १ M णओ; BP णाओ. २ MBP खमविण्णाणइ सद्धइ भत्तिइ. ३ MBP add after this सीलवतु जिणपेगणयारउ सारासारसहत्वविद्यारउ. ४ MBP अवलोयइ दारउ. ५ T अपमत्तउ; ६ MP पंगणु पत्तउ; B पगणे पत्तउ. ७ MBP ठाहु. ८ MBP °कारणगण्णं. ९ MP सुमरेप्पिणु. १० MBP णिय-डिंभइं. ११ MBP णिद्धम्मु. १२ MBPK दुत्थियम्मि.

22 कुच्छियेत्यादि—कुपात्रे दत्त कुभोग ददाति, अपात्रे दत्त नश्यति.

8. 1 णेओ ज्ञेय.. 6 *a* °अवमत्तउ निरहंकार.. 10 *b* भरंतु स्मरन्. 12 *a* ल्लहं अस्फुटवाचाम्; *b* मटहं निकृष्टमिनः. 13 *a* गण्णें परिज्ञानेन. 14 *a* परमारा परमारकान्. 15 *b* घरयारउ गृहकारकः; चिडउल्लउ चटक..

9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समग्गं ।
दाययदेज्जपत्तववहारसारमग्गं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवंगणिवसणणियत्थेण जलभरियदलपिहियभिंगारहत्थेण ।
परिदिण्णधाराजलुद्दूअतावेण सद्धम्म[1]सद्धावसुप्पण्णभावेण ।
भव[2]भरणसंभरियमुणिदाण[3]यम्मेण वरचरमदेहेण विच्छिण्णजम्मेण ।
पियजंपणालोयणुब्भूयणेहेण धरणीसनासेण गुणरयणगेहेण ।
इसिकहियसुय[4]सूइसंभिण्णसोत्तेण चंदक्कचारित्तचंचइयगत्तेण[5] ।
कुरुजंगलावणि[6]वइलहुयभाएण मउमहुरणाएण सेयंसराएण ।
आओ गुरू सो ज्जि णंतेण सीसेण ठाभणिउ जिणु णमिउ पणवंतसीसेण ।
ता सरइ हिययम्मि रइकुमुइणीजूरु तूसविय जगणालिणु इयमलिणु रिसिसूरु
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु तवयरणतावेण खंतीइ मलहरणु ।
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु लयविरमु सुहुं[7] परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।

घत्ता—इय चिंतिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥
चिरु सेयंसवसेण सेयंसें पर लद्धउ ॥ ९ ॥

10

हेला—एवं कस्स ठाइ भवणम्मि भुअणणाहो ।
केण भवंतरम्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगब्भाणिउं कुरुणाहें पल्हत्थिउ पाणिउं ।

9. १ BP °सब्भावसुपसण्ण°. २ MBP भवदिण्ण° ३ P °दाणधम्मेण. ४ MBP °सुइसुइ°. ५ MB °गोत्तेण but gloss in M भूषितं गात्रम्. ६ MBP °वणिवणिव°. ७ M सुइपरमु.

---

9. 3 *a* °णियत्थेण नेपथ्येन. 5 *a* भवभरण° भवस्मरणम्. 6 *b* धरणीस° राजानः. 7 *a* °सुयसूइ° श्रुतज्ञानसूचि . 9 *a* णतेण नम्रेण. 10 *a* °जूरु सकोचकः. 11 *a* ताइ तया तन्वा; *b* खतीइ मलहरणु क्षमया पापनाशो भवति. 12 *b* लयविरमु अविनश्वरम्. 14 सेयसवसेण पुण्यविशेषवशेन; सेयंसें श्रेयसा, पर मोक्षः.

10. 2 अमोहो सफलं परिपूर्णम्.

जससलियरधवलियकुरुवंसें पय पक्खालिय सिरिसेयंसें ।
वंदिउ पायतोउ सुहगारउ जम्मजरामरणावहहारउ ।
इंदचंदणाइंदपियारउ उब्भासणि संणिहिउ भडारउ ।
कुसधारहिं उच्छलियतुसारहिं चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं ।
फुल्लहिं फुल्लंधुयझंकारहि अक्खयहिं बहुगंधपयारहिं ।
दीवयचरुयहिं धूवंगारहिं करमरमाहुलिंगमालूरहिं ।
अंबयहलहिं जंबुजंबीरहिं पण्णहिं पूयप्फलकप्पूरहिं ।
णेउरणिहच्चुयवम्महणियलउ पुज्जिउ परमेट्ठिहि पयजुयलउ ।
पुणु पणिवाउ करेप्पिणु भावें जो छंड्डिउ णं वम्महचावें ।
जइवरतवसंदरिसियभंगें जो पुणु धणुहि ण णिहिउ अणंगें ।
सो उच्छुरसु णिवारियदोसहु णं संमहुं णिउ सुतवहुयासहु ।
जुवराएं घडेण करि ढोइउ वारवार जिणणाहें जोइउ ।

घत्ता—देहालइ मणकुंडे रसु पिज्जंतउ भाणियउ ॥
मयणसरासणसारु झाणजलणि णं हुणियउ ॥ १० ॥

11

हेला—ता दुंदुहिरवेण भरियं दिसावसाणं ।
भणियं सुरवरेहिं भो साहु साहु दाणं ॥ १ ॥

पंचवण्णमाणिक्कविमिट्ठी घरंप्रंगणि वसुहार वरिट्ठी ।
णं दीसइ ससिरविबिंबच्छिहि कंठभट्ठ कंठिय णहलच्छिहि ।

10. १ P पाय. २ M reads after this line. चदणकुकुमेहिं घणसारहिं, पयसंमलियइं तेहिं कुमारहिं, B also reads चदणकुकुमेहि घणसारहिं, पयसमलियइं तेहिं कुमारहिं; P reads चंदणकुंकुमेण घणसारहिं, चपयसिंदूरहि मदारहिं, फुल्लहिं फुलंधुवझकारहिं, पय समलहियइ तेहिं कुमारहिं. ३ MBT फुल्लंधुय°; P फुल्लंधुव°. ४ MBP अक्खएहि. ५ P चरुवहिं दीवय°. ६ MP छंडिउ ण वम्महु; B खंडिउ णं वम्महु. ७ MB संमुहं. P समुहु. ७ P झाणजले but gloss ध्यानाग्नौ.

11. १ M भाणिय. २ MBP घरपगणि.

5 *a* पायतोउ पादजलम्. 7 *a* कुसधारहिं जलधाराभि.. 8 *a* फुल्लंधुय भ्रमराः. 10 *b* पण्णहिं पत्रैः. 12 *a* °णिह° व्याजेन. 12 *b* जो रस·. 13 *a* जइवरेत्यादि–यतिवरतपसा सदर्शितो भङ्गो यस्य तेन. 14 *b* सम्महुं णिउ उपशमं नीत..

मोहे[३]बद्धणवपेम्महिरी विव सग्गसरोयहु णालसिरी विव ।
रयणसमुज्जलवरगयपंति व दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।
सेयंसहु घणएण णिउंजिय एक्कहिं उडुमाला इव पुंजिय ।
पूरियसंवच्छरउववासें अक्खयदाणु भणिउं परमेसें ।
तहु दिवसहु अत्थेण[४] समायउ अक्खयतइय णाउं संजायउ ।
घरु जायवि भरहें अहिणंदिउ पढेमु[५] दाणतित्थंकरु वंदिउ ।
पइं मुएवि को गुरु संमाणइ पत्तविसेस[६]दाणविहि जाणइ ।
पइं मुएवि को चिंतहुं सक्कइ परमप्पउ कहु मंदिरि थक्कइ ।
पइं मुएवि दिसिपसरियजसैयरु[७] अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयरु ।
जय सेयंसदेव पभणंतहिं संथुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियलि धम्मरहासु एयइं तोसियसकइं ॥
जिणसेयंसकयाइं वयदाणइं[८] वरचक्कइं ॥ ११ ॥

12

हेला—धम्ममहारहो विलंबियदयावडाओ ।
एयहिं बिहिं मि वहइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेप्पिणु गउ भरहेसरु एत्तहि महि विहरंतु जिणेसरु ।
तिहिं णाणिहिं सुद्धें परिणामें अचलचित्तु मणपज्जवणामें ।
अड्ढाइज्जहिं दीवहिं जं जं माणसु[१] चिंतइ जाणइ तं तं ।
उज्जुयवंकहियमुणियत्थउ देउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।
पंचवीसवयमायउ भावइ तिहिं गुत्तिहिं अप्पाणउं गोवइ ।

३ MBPT मोहणिद्ध°. ४ M adds after this line:-अहिय पक्ख तिण्ण सविसेसें । किंचूणे दिण कहिय जिणेसें । भोयणवित्ती लहीय तमणासें । दाणतित्थु घोसिउ देवीसें. ५ MBP पढम°. ६ MBP पत्तविसेसु. ७ MB °जयसरु. ८ MBP तवदाणइं.

12. १ M माणस; BP माणुसु.

11. 5 *a* मोहे त्यादि–मोहेन बद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ ह्रीरिव लज्जेव. 9 *a* अत्थेण समायउ अन्वर्थकम्; *b* णाउं नाम. 15 धम्मरहासु धर्मरथस्य.

12. 1 विलंबियदयावडाओ अवलम्बदयापताकः. 2 णिहयंगयारिराओ निहताङ्गजारिराजः, 7 *a* पंचवीसे त्यादि–एकैकस्य हि व्रतस्य स्थैर्यार्थं पञ्च पञ्च भावनाः पञ्चविंशतिव्रतमातरः.

इरियादाणु किं पि णिक्खेवणु करइ कहिं मि कयसुकयालोयणु ।
रोसु लोहु भउ हासु पणासइ संगे[2] विवज्जइ सुत्तु जि भासइ ।
मिउ जोग्गउ अणुणायउ गेण्हइ भत्ति पाणि संतोसु जि मण्णइ ।
णारीकहदंसणसंसग्गहु करइ णिवित्ति पुव्वरइरंगहु ।
भुंजइ कहिं मि सुणिव्वियडिल्लउ बंभचेरु थिरु धरइ गुणिल्लउ ।

घत्ता—इंदियखलहं मिलंतु परमजोइ मेलावइ[3] ॥
खुब्भंतउ मणडिंभु रिसि णाणें खेलावइ[4] ॥ १२ ॥

13

हेला—हो हे चित्तडिंभ मा रमसु णारिरूवे ।
गमिऊणं[1] दड त्ति पडिहीसि मोहकूवे ॥ १ ॥

जीवाजीय[2]वत्थुभेयालइ करणपोसणत्थि विरसालइ ।
संजमवायवुड्ढजमसिहिसिहु[3] णिद्धंधसु[4] णित्तामसु णिप्पिहु ।
दिहिखमझाणजोयकयसंगहु वीसदुसंखपरीसहभरसहु ।
दंसण णाण चरिय तव वीरिय आयार वि जे पंच समीरिय ।
तेहिं भडारउ अणुदिणु वड्ढइ हियएहु[5] तिण्णि वि सल्लइं कड्ढइ ।
अणसण[6] वुत्तिसंख[7] ओमोयरु रसपरिचाउ कालजोयायरु ।
इय बाहिरतवु[8] चरइ सुदारुणु अंतरंगसुद्धिहि सो कारणु ।
वेज्जावच्चि विणइ सज्झायइ तणुविसग्गि पच्छित्तणिओयइ ।
अब्भंतरतवि अप्पउ जोयइ[9] धम्मझाणु चउविहु णिज्झायइ ।

२ MBP सग. ३ B मेळावइ. ४ BP खेळावइ.

13. १ MBB भमिऊण. २ MBP जीवाजीव°. ३ MBP °जमसिहिं सद्दुं. ४ P णिद्धवस्सु; T णिद्धंसु and gloss निष्परिग्रहः. ५ P हिययहि. ६ P अणसणु. ७ MBP वित्तिसंख ओमोयरु. ८ MP तव. ९ MBP जोवइ.

9 *b* सुत्तु जि भासइ आगममेवान्तर्जल्पेन परामृशति. 10 *a* मिउ मित परिमितम्; अणुणायउ अनुज्ञातम्. 12 *a* सुणिव्वियडिल्लउ सुष्ठु निर्विकृताहारम्. 13 मेलावइ ध्याने मेलयति.

13. 3 *a* °भेयालइ °भेदाश्रये, *b* करण° पञ्चकुलमिन्द्रियाणि च, विरसालइ कुलपक्षे विशिष्टो रसो विरसः, नारीपक्षे विरामविरसता. 4 *a* संजमेत्यादि–संयमवातेन वृद्धा वृद्धिं नीता यमशिखिशिखा व्रताग्निज्वाला येन; *b* णिद्धधसु निष्परीषहः. 8 *b* कालजोयायरु त्रिकालयोगादरः. 10 *b* तणुविसग्गि कायोत्सर्गे.

आणाविचउ णामणिग्गंथउ　　पुणु अवायविचयं पि महत्थउ।
अवरु विवायविचउ वित्थारइ　　थिरु संठाणविचउ अवहारइ।

घत्ता—इय विहरंतु धरग्गि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥
वरिससहासें णाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तो दिट्ठं लवंगलवलीलयाहरालं।
अलियालं पियालमालूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडंगणेवत्थहिं छइयउ　　पियमाणुसु व सरसकंटइयउ।
णिच्चासोयउ कंचणवंतउ　　बंधुपुत्तजीवेहिं महंतउ।
रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ　　रक्खसपुरु व पलासणिउत्तउ।
सुरभवणु व रंभाइ पसाहिउ　　उज्झाउ व सुयसत्थहिं सोहिउ।
सुइवयणु व चंगउ णिप्फलु　　संगामु व वणवियसियउप्पलु।
णयणु व अंजणेण सोहिल्लउ　　थणजुयलु व चंदणिण पियल्लउ।
रमणिणिडालु व तिलयालंकिउ　　बहुबाहु व करवंदहिं संकिउ।
तालें तूरु व सज्जें गेउ व　　मद्दें सोहइ णिवइणिकेउ व।

१० B अवायविरयं.

14. १ B तो. २ M विडगणे कत्थहि, B विणंगणेवच्छहि. ३ MBP °माणुसु. ४ P सरसु. ५ MB णिच्चासोय. ५ P समुण्णय°. ६ MBP सुयसत्थें. ७ MP रमणिणिलाडु. ८ P मंद्दें.

12 *a* आ णा वि च उ आज्ञाया द्वादशाङ्गाद्यागमस्य विचयस्तदर्थानां चेतासि स्वरूपपरिभावनम्, णा म णि ग्गं थ उ शब्दोच्चारणरहितम्, *b* अ वा य वि च य मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्रेभ्यः कथं जीवस्यापायः स्यादिति चिन्तनमपायविचयः; म ह त्थ उ संवरनिर्जरालक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम्. 13 *a* वि वा य वि च उ कर्मविपाकपरिचिन्तनम्; *b* सं ठा ण- वि च उ लोकसंस्थानपरिचिन्तनम्. 14 ध र ग्गि धराग्रे.

14. 2 अ लि या लं भ्रमरयुक्तम्. 3 *a* वि डं ग णे व त्थ हिं वनपक्षे, विडङ्गवृक्षा एव नेपथ्यं आभरणानि तैः; प्रियमनुष्यपक्षे, विटानां कामुकानामङ्गनेपथ्यैराभरणैर्नखादिव्रणैर्वा. 6 *b* सु य स त्थ हिं शुकसमूहैराकर्णित- शास्त्रैश्च, अथवा, श्रुतानि शास्त्राणि यैश्छात्रैस्तैः. 7 *b* व ण वि य सि य उ प्प लु जले विकासितं पद्म, अन्यत्र व्रणे विकासितमूर्ध्वमुच्छासितं पलं मांस यत्र. 9 *b* ब हु बा हु सहस्रबाहुः; क र वं दें हस्तवृन्देन करवंदीवृक्षैर्वा; सं कि उ संकीर्ण सेवितम्. 10 *a* स ज्जें सर्जरसवृक्षेण षड्जेन च; *b* म द्दें बलात्काररणेन.

णायवेल्लिरुद्धउ पायालु व रत्तयंददाविरउ वियालु व ।
अवसद्दु व कईवंदें[9] लुक्कउ असि व सुणीरें णेय विमुक्कउ ।
महिमाणिणिमुंहुं[10] व महुलित्तउ सरयणभमियभुयंगहिं भुत्तउ ।

घत्ता—कुसुमामोयमिसेण जं संमुहउं[11] पवंचइ[12] ॥
णाणापक्खिसरेहिं पहुहि थोत्तु णं सुचइ ॥ १४ ॥

15

हेला—तहिं णंदणवणम्मि णग्गोहरुक्खमूले ।
आसीणो सिलायले णिम्मले विसाले ॥ १ ॥

णवकणियारकुसुमरयवण्णउ सुयरइ[1] पहु पलियंकणिसण्णउ ।
णत्थि सोक्खु संसारि विसिट्ठउ सोक्खायारु दुक्खु मइं दिट्ठउ ।
णट्ठु[2] अजिण्णणासु णउ चंगउ आहरणें भारिज्जइ अंगउ ।
कासु देहघट्टणु[3] रीणत्तणु गेयमिसेण रुयइ[4] मूढउ जणु ।
तं सिवसारु किं पि भाविज्जइ जेण ण जीउ गब्भि उप्पज्जइ ।
सोवंगाहु[5] वीरिउ सुहुमत्तणु सहुं समत्तें णाणु सदंसणु ।
अगुरुयलहुयउ[6] अव्वाबाहउ झायइ वसुविहु सिद्धगुणोहउ ।
एम सामि संभावियमग्गउ अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ ।
तहिं दहपयडिहिं मुक्कउ जावहिं खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं ।
लग्गउ सुक्कझाणि पहिलारइ भेयवंति ससुए सवियारइ ।
इसिणा संठिएण सविहत्तउ अणियट्टिहि[7] छत्तीस जि जित्तउ ।

९ MBP कइवंदहिं. १० MBP °मुह इव. ११ M समुहउ. १२ B परचइ.

15. १ MP सुमरइ. २ M णट्ठु व जिण्ण°. B णट्ठु अजिण्ण°. ३ MBP °घट्टण°. ४ MBP रुवइ. ५ P सोवग्गहु. ६ MBP अगुरुग°. ७ MP अण्णियट्टिहि.

13 *b* °भुयंगहिं सर्पैर्विटैश्च.

15. 4 *b* सो क्खा या रु सौख्याकारम्. 2 *a* ण ट्ठु अ जि ण्ण णा सु नाश्यं अजीर्णस्य नाशकम्. 7 *a* सि व सा रु सौख्यसारम्. 9 *b* व सु वि हु सि द्ध गु णो ह उ अष्टविधः सिद्धगुणसमूहः–अवगाहः, वीर्यम्, सूक्ष्मत्वम्, समत्वम्, ज्ञानम्, दर्शनम्, अगुरुलघुत्वम्,अव्याबाधः इति. 10 *a* सं भा वि य म ग्ग उ सम्यक्परिभावितमोक्षप्राप्त्युपायः. 11 *a* द ह प य डि हिं अनन्तानुबन्धिचतुष्कादिदशप्रकृतिभिः. 12 *b* भे य वं ति वितर्कविचारलक्षणभेदयुक्ते; स सु ए श्रुतज्ञानबलेन.

सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु तेण जि झाणें लोहु हणेप्पिणु।
पुणु जायउ उवसंतकसायउ कययहलेण जलु व मुणिरायउ।
खीणकसायचरिउ पडिवण्णउं बीयउ सुक्कझाणु अवइण्णउं।
तं सवियक्कु एक्कु संवियारउ सोलहपयइरयक्खयगारउ।

घत्ता—इय तेसट्ठिपईहिं पहयहिं णाणसरूवउ ॥
परमप्पयहु सहाउ अमणु अणिंदिउ हूवउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता दिट्ठं जिणेण तिजगं[1] पि एक्कखंधं।
तिमिरुज्जोयवज्जियं गयणममियरंधं[2] ॥ १ ॥

कमसाहणपडिखलणविहीणें एक्कें भावाभावपमाणें।
सुहुमइं दूरंतरियइं दव्वइं पेक्खइ[3] जाणइ सहसा सव्वइं।
भाणु व भूरिकिरणसंताणें सोहइ केवलि केवलणाणें।
तहिं अवसरि जिणणाहभएण[4] व वीस तिण्णि अवरइं भणियइं णव।
असहंताइं व गव्वु[5] अणिंदहं आसणाइं कंपियइं सुरिंदहं।
सुरतरु साहाकर णच्चंति व कुसुमइं संतोसेण मुयंति व।
संजायहिं[6] दसदिसिवहपूरहिं कप्पि कप्पि घंटाटंकारहिं।
कण्णवडिउ णउ काइं वि सुम्मइ जोइसवासहिं विणिहयदुम्मइ[7]।
णिग्गय सीहणाय गयदिग्गय वंतरेहिं[8] पडुपडह समाहय।
संखझुणीहिं णाय संखोहिय अण्णें[9] अण्ण देव संबोहिय।

८ P छंडिवि. ९ MBP °चडिउ. १० MBP अवियारउ.

16. १ MBP तिजगं. २ MBP add after this: फग्गुणमासि किण्हएयारसि, उत्तराढरिक्खि (P उत्तरसाढि रिक्खि) जइ जाणसि । तहिं उप्पण्णु णाणु परमेट्ठिहि, लोयालोयपयासणसेट्ठिहि. ३ MBP जाणइ पेच्छइ. ४ MB जिणु णाह°. ५ MB गव्व. ६ MB सइं जायहिं. P सहजायहिं. ७ P विणिहिय° but gloss विनिहत°. ८ MBP वितरेहिं. ९ MBP अण्णहिं.

15 *b* कययहलेण कतकफलेन; मुणिरायउ मुनिराजः. 17 *a* सवियक्कु सवितर्कम्; *b* सोलहेत्यादि- षोडशप्रकृतिरजःक्षयकारकम्.

16. 2 अमियरंध अलोकाकाशम्. 5 *a* कमेति—क्रमेणार्थसाधनानीन्द्रियाणि तैः प्रतिस्खलन् युगपद्बोधार्थपरिच्छित्तिप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन. 6 *b* वीसेत्यादि-द्वात्रिंशादिन्द्रा इत्यर्थः.

घत्ता—उग्गइ णाणससंकि अमियगुणेहिं पउंजिउ ॥
बहुविहतूररवेण जगसमुद्दु णं गज्जिउ ॥ १६ ॥

17

हेला—ता सक्केण चिंतिओ पीणियालिविंदो ।
संपत्तो जवेण एरावओ गइंदो ॥ १ ॥

हारणीहारसुरसरितुसारप्पहो अद्धयंदाहविद्दुमविहाणिहणहो ।
गलियकरडयलमयकसणगंडत्थलो अमरगिरिसिहरसंकासकुंभत्थलो ।
कामचिंतागई कामरूवी चलो पवलपडिवक्खबलदलणदुम्महबलो ।
कंठकंदलपएसम्मि परिवट्टुलो दसणजुयलेहिं णयणेहिं महुपिंगलो ।
तंबतालूमुहो चारुतुच्छोयरो दीहरकरंगुलि सरो व्व वरपुक्खरो ।
दीहयरमेहणो दीहउट्ठासओ दीहयरवालही दीहणीसासओ ।
सवणपल्लवपवणपडियमहुलिहउलो चलणपडिवेलणखलखलियपयसंखलो ।
चाववंसो महारावदुंदुहिसरो घुलियघंटाझुणी तसियदिसकुंजरो ।
मुक्कसिक्कारकणसित्तसुरमेलओ लक्खणसुवंजणणिरंजणगुणालओ ।
घित्तसिंदूरधूलीरयालोहिओ कक्खणक्खत्तगेज्जावलीसोहिओ ।
लक्खजोयणमहावड्डिमावड्डिओ दंसियारेहिं वीरेहिं परियड्डिओ ।
झत्ति कल्लाणपयई समुद्धाइओ जत्थ संकंदणो तत्थ संप्राइओ ।

घत्ता—मयणिज्झरण झरंतु चमरहंसकुलसुंदरु ॥
णं मायंगमिसेण आयउ बीयउ मंदरु ॥ १७ ॥

१० MBP अमय°.

17. १ P अद्धइदाह°. २ P °करडयलकसण°. ३ MB दीहरंगुलि°. ४ MBP सरो व्व वरपुक्खरो. ५ MBPT °मेहुणो. ६ M सवणपवणाहयपडियमहुलिहउलो; B सवणपडिवयणहयपडिय°; P सवणपवणाहयपाडियमहु°. ७ B °पडिचलणखलिय°. ८ M °दिसिकुजरो. ९ MP सुविंजण°; B °सुवेंजण°. १० MBP सपाइओ.

13 अमियगुणेहिं अमृतगुणैरनन्तगुणैश्च.

17. 2 जवेण वेगेन. 3 *b* विद्दुमविहाणिहणहो विद्रुमप्रभामदशनखः. 4 *b* °संकास° °सदृशः. 7 *b* °पुक्खर° शुण्डाग्रम्. 8 *a* °मेहणो शिश्नम्, °उट्ठासओ ओष्ठाश्रयाश्चिबुकम्; *b* °वालही पुच्छम्. 14 *b* संकंदणो इन्द्रः, संप्राइओ संप्राप्तः.

18

हेला—बत्तीसवरवयणसोहिल्लओ रसंतो ।
वयणविवरविणिग्गयंट्टुदंतवंतो ॥ १ ॥

दंति दंति सरु सरि सरि पोमिणि　　पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइं　　तीस दोण्णि छडेयणरवरम्मइं ।
णलिणि णलिणि तेत्तियइं जि पत्तइं　　णावइ जिणवरलच्छिहि णेत्तइं ।
पत्ति पत्ति एक्केक्की अच्छर　　णच्चइ हावभावरसकोच्छर ।
तं पेच्छिवि सुच्छायउ सेंधुरु　　सच्छरु सामरु चडिउ पुरंदरु ।
इंदसमिंदसमाण जि साहिय　　तायत्तिंस किर मंति पुरोहिय ।
परिसदेव देवेसकुमारा　　आदरक्ख पुणु असिवरधारा ।
चलिय अणीयतियससेणा इव　　लोयवाल दुग्गंतणिवा इव ।
खिब्भिससुर पाडहिय पियारा　　अभिओय वि चलिय कम्मारा ।
अवर पइण्णय पउर पयाणिह　　रिक्ख मियंक सूर तारा गह ।
जक्ख रक्ख गंधव्व महोरय　　किंणर किंपुरिसा वि पिसायय ।
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि　　अग्गिवाउतडिथणियकुमार वि ।
दिक्कुमार तवणीयकुमार वि　　णायकुमार वि असुरकुमार वि ।
आइय आवेंतहं सविमाणहुं　　पेल्लावेल्लि जाय णहि जाणहुं ।

घत्ता—संदाणियउ गयहिं हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥
ससि करडयलणिहट्टु मयंचिक्खल्लें लित्तउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP °ट्टुदंतो. २ MB छडयणरविं रम्मइं. ३ MB °कुच्छर. ४ MBP सिंधुरु. ५ MB इंदमहिंदसमाण. ६ MBP °सेणावइ. ७ MB णिवावइ; P णिवासइं. ८ MBP मयंक. ९ MB आवर्ते; P आवेंतहुं and gloss आगच्छताम्. १० K °चिक्खल्लें.

18. 3 *b* °गोमिणि लक्ष्मीः. 4 *b* छडयण° षट्चरणो भ्रमरः. 6 *b* °कोच्छर दक्षा मनोज्ञा वा. 8 *a* इंदसम इन्द्रसमाः; इंदसमाण इन्द्रस्य सामानिकाः 9 *b* आदरक्ख आत्मरक्षकाः. 14 *a* उवहिकुमारा; उदधिकुमाराः. *b* थणियकुमारा मेघकुमाराः. 16 *a* पेल्लावेल्लि ठेलाठेलीति देशी; *b* जाणहुं यानानाम्. 17 संदाणियउ संघट्टितः.

19

हेला—अज्जि वि सो सुहाइ तेण य कालियंगो।
जिणजत्ताहलेण मलिणो वि को ण तुंगो॥ १॥

को वि भणइ मृगु किं पहि ढोयहि वग्घु महारउ एंतु ण जोयहि।
को वि भणइ भो हत्थि म चोयहि जाउ सीहु किं मुहुं अवलोयहि।
को वि भणइ लइ अच्छमि लग्गउ हंसहु पक्खु वलहें भग्गउ।
को वि भणइ किं मूसउ चालहि महु मज्जारु एंतु ण णिहालहि।
को वि भणइ मा वाहहि विसहरु पेक्खहि किं ण णउलु कररुहकरु।
को वि भणइ भो सणियउ चल्लहि चलेंउ रिंछु गवएण म पेल्लहि।
को वि भणइ संकडि किं पइसहि सरहें महुं सारंगु म तासहि।
को वि भणइ आवेहि समिच्छउ पूसउ पूसएण सहुं गच्छउ।
मोरें मोरु सवक्खीहूयं जाउ उलूवउ समउ उलूयं।
को वि भणइ वेसाणरदूरें वहउ वरुणु किं एत्थ वियारें।
को वि भणइ मारुय तुहुं ओसरु मा भंजहि मेरउ जलहरतरु।
को वि भणइ वोलउ आहंडलु पविरलतियसु होउ णहमंडलु।
पच्छइ पुणु अम्हइं जाएसहुं जिणचरणारविंदु पणवेसहुं।

घत्ता—काइ वि देविइ लइयउ करि णीलुप्पलु दीसइ॥
मउडुग्गयहिं सिएहिं ससिमणिकिरणहिं विहसइ॥ १९॥

20

हेला—अवरा सुरविलासिणी गहियकुसुममाला।
णं वालासरूविणी मयणसत्थसाला॥ १॥

19. १ MBP अज्ज. २ MB तेणेय. ३ MBP मिगु. ४ MB जासु. ५ M महुं. ६ MBP मज्जारउ. ७ MBP चरउ. ८ MB समुच्छउ, P सइमुच्छउ, but gloss सम्यगिच्छामि. ९ MBP अम्हइं पुणु.
20. १ MBP सुरूविणी.

19. 1 तेण य तेन गजमदेनैव. 8 *a* सणियउ शनैः. 16 *a* समिच्छउ अहं सम्यगिच्छामि. 17 सिएहिं सितैः शुक्लैः.

अवरेक्का वि सचंदण दीसइ णं मलयइरिणियंबवणासइ ।
सोहइ अवर वि कुंकुमपिंडें पुव्वदिसा इव सिसुमत्तंडें ।
अवर सदप्पण णं मुणिवरमइ अवर मयरचिंधें सरि णं रइ ।
अक्खयधारिणि णं मोक्खहु सहि थणदुहडी णं सुहधणणिहि महि ।
अवर सुसेयदेह णं सुरसरि अवर सहंसमोर णं गिरिदरि ।
मलविरहिय अवर वि विज्जा इव अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व ।
णच्चइ अवर सरसु भावालउ गायइ अवर कूडताणालउ ।
वायइ अवर तंतिवज्जंतरु वण्णइ अवर परमतित्थंकरु ।
एम पसण्णपसाहियवयणहिं अच्छरकोडिहिं चलमंगणयणहिं ।
सोहम्माहिउ सत्तावीसहिं ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहिं ।
एम देव संचलिय जावहिं धणएं समवसरणु किउ तावहिं ।
इंदाणइ तं णिम्मिउं जेहउ मइं जडेण किं सीसइ तेहउ ।

घत्ता—बारहजोयणरुंदु हरिणीलें तलु बद्धउ ॥
परिवट्टलउ विसुध्दु धूलीसालउ णद्धउ ॥ २० ॥

21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहचावलीलो ।
रयणपंसुविणिम्मिओ सहइ धूलिसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छच्छवि कहिं मि विरेहइ कत्थइ अंजणपुंजु व सोहइ ।
कत्थइ लोहिउ संझाराउ व कत्थइ पंडुरु कुंदणिहाउ व ।
अब्भंतरि जगईउ पहाणउ ताउ होंति सोलह सोवाणउ ।

२ MB मलयगिरि°. ३ MBPT add after this line: का वि गहियकत्थूरय (P कत्थूरिय) वरइ, सामलंगि णावइ घणघणतइ (B घणवणतइ); T also notes a *p*: घणघणतइ ति पाठे निबिडमेघपंक्तिः. ४ MP °तालालउ. ५ MBP °मिग°. ६ B णट्ठउ.

21. १ P पसुणिम्मिओ. २ MB °पिंछ; P पुंछ. ३ MBP सोहइ.

20. 3 *b* °वणासइ वनस्पतिः. 6 *b* थणदुहडी उन्नतस्तनी. 8 *b* सुरहि सुरभिः. 9 *b* कूडताणालउ कूटतानालयं विस्मृततानमाना. 10 *a* वज्जंतरु वाद्यविशेषः. 14 *a* इंदाणइ इन्द्रादेशेन. 16 °सालउ प्राकारः; णद्धउ वेष्टितः.

21. 2 रयणपंसु° रत्नधूलिः. 4 *b* °णिहाउ निवहः. 5 *a* जगईउ उपर्युपरि त्रीणि पीठानि.

चउगोउरभूसियउ तिसालउ पसरियणाणामणियरजालउ ।
माणखंभ ताहुप्परि संगय सँधय सँचामर सघंटा णं गय ।
चउहुं मि दिसहिं चयारि समुण्णय दंसणमेत्तेण जि हयजयमय ।
अरुहणाहपडिमापरिवारिय फणिदाणवमाणवजयकारिय ।
पुणु वाँवीउ सकमल ससलिलउ खगमाणियउ णाइं खगमहिलउ ।
तीररयणकरमंजरिदित्तउ चउपइयापरियम्मविचित्तउ ।
कुवलयधारिउ णं णिवसत्तिउ भमियरहंगउ णं रहजुँत्तिउ ।
दिसधाइयपाणियकल्लोलउ पुणु खाइयउ रमियझसमालउ ।

घत्ता—पहसियसररुहएहिं वाउग्गयतिगिंछिहिं ॥
परिहउ णाइं णियंति देवागमणु चलच्छिहिं ॥ २१ ॥

22

हेला—जँहिं महिउ रईए हंसीहिं मत्तहंसो ।
सुरवहुकेँरिणियाहिं सुरहत्थिहत्थफंसो ॥ १ ॥

पुणरवि अंतरि णवदुमवेल्लिउ कुसुमालउ णं वम्महभल्लिउ ।
पँत्तिहिं रत्तउ णं वरवेसउ फलणमियउ णं सुहिपरिहासउ ।
कंटइयउ णं पिययममिलियउ णच्चंति व मारुयसंचलियउ ।
णं वरकइवायउ कोमलियउ लाडालावहुं पासिउ ललियउ ।
वित्थरियउ अहिणवरसभारउ णं कामुयमईउ सवियारउ ।
का वि वेल्लि तहिं वेढइ कंचणु सयल वि णारि समीहइ कंचणु ।
लग्गी का वि ललंति असोयइ जिँहे तृय तिह किर रमइ असोयइ ।

४ B मवय. ५ MBK सचमर. ६ MBP वावियउ. ७ M णिवजुत्तिउ; B °जोत्तिउ. ८ M तिंगिच्छिहिं; B तिग्गिछिहिं; P तिगिछहिं.

22. १ P जाहिं and gloss यासु खातिकासु. २ M हंसहिं. ३ MBP कराणियाहिं. ४ MBP पत्ताहिं. ५ MB जिह तिह किर; P जिह तिय तिह and gloss यथा स्त्री; K तृय but corrects it to तिय.

10 *a* वावीउ वाप्यः. 11 *a* °करमंजरि° किरणसंघात°; *b* चउपइया° चतुष्पथिकाः चतुर्दिक्सोपानाः. 12 *b* °रहंगउ रथाङ्गचक्रं चक्रवाकश्च; रहजुत्तिउ रथयुक्तयः. 15 णियंति पश्यन्ति.

22. 1 महिउ वाञ्छितः; रईए रतिनिमित्तम्. 6 *b* लाडालावहुं लाटालंकारालापमिव. 7 *b* सवियारउ विचारसहिताः, अन्यत्र सविकाराः. 8 *a* कंचणु चम्पकवृक्षः.

लच्छी का वि गंपि पुण्णायहु होइ णियंबिणि फुडु पुण्णायहु ।
क वि मायंदहुं संगु ण संचइ णिवरोहिणिहि लील णं संचइ ।

घत्ता—किसलयदलफलगोंछुं चलचंचुइ णिल्लूरइ ॥
अमरु कीरवेसेण तेत्थु को वि रइ पूरइ ॥ २२ ॥

23

हेला—चिंतियवेसधारिणो जणियकामभावा ।
वेल्लीवणलयाहरे जहिं रमंति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्णरइयउ रुइरिद्धउ णं जिणेण वयपरियरु बद्धउ ।
अप्पवेसु णं कामकडक्खहु गुरुपायारु पारु णं दुक्खहु ।
जहिं चउगोउराइं संविहियइं जहिं बहुमंगलदव्वइं णिहियइं ।
अट्ठोत्तरसयसंखासद्दइं णव वि णिहाणइं हयदालिद्दइं ।
तहिं वितर पडिहारसमत्था भीयरकुलिसगयासणिहत्था ।
पुणु पणिहिउ उहयम्मि विसालउ चउदिसु दो दो णाडयसालउ ।
ताउ तिभूमिउ णवरसजुत्तउ णाइं पउत्तिउ सुकइपउत्तउ ।
बहुवज्जउ वइरायरभूमिउ आयउ णं ओलग्गहुं सामिउ ।

घत्ता—उहयदिसहिं कुहिणीहि पुणु वि कया वि ण णिट्ठिय ॥
दो दो दिण्णसधूव तहिं धूवहड परिट्ठिय ॥ २३ ॥

६ MBP अवसें णारि होइ पुण्णायहु. ७ BP खचइ. ८ M अंचइ. ९ B गोच्छु. १० MBP अमरु वि कीरमिसेण.

23. १ B वल्लीवण°. २ MT पणिही; BP पणहीउ. ३ MBP सुकइणिउत्तउ. ४ MB सुधूय; P सुधूवा. ५ M धूवहडण.

10 *b* पुण्णायहु पुरुषप्रधानस्य. 11 *a* मायंदहुं वल्लीपक्षे आम्राणाम्, अन्यत्र मा लक्ष्मीश्चन्द्रश्च तयोः; *b* णिव° चन्द्रः.

23. 4*a* अप्पवेसु अप्रवेशः. 8 *a* पणिहिउ मार्गाः. 9 *a* तिभूमिउ त्रिभूमियुक्ता. 10 *a* बहुवज्जउ बहुवादित्रा बहुहीरकाश्च. 11 कुहिणीहि मार्गस्य. 12 दिण्णसधूव दत्तस्वधूपाः; धूवहड धूपघटाः.

24

हेला—दीसइ गयणमंडले णीलधूमरेहा ।
णं जिणकम्मकालिया भमइ मुक्कदेहा ॥ १ ॥

पुणु खयरामररामारमियइं चउणंदणवणाइं परिभमियइं ।
वणि वणि विमलइं सरिसरपुलिणइं कीलागिरिवरकेलीभवणइं ।
चउगोउरतिसालपरियरियउ पीढु तिमेहलु मणिविप्फुरियउ ।
तित्थु असोउ असोयवणंतरि तहु पडिमाउ चयारि दियंतरि ।
कोहमोहमयमाणें चत्तउ सीहासणछत्तत्तयजुत्तउ ।
अत्थि अणेयदेवकयपुज्जउ णिहयणिरंगउ णिरु णिरवज्जउ ।
संझा इव सुवण्णरुइरोइय पुणरवि चउदुवारवणवेइय ।
पुणु दिसि दिसि दह धय सुरसंथुय थिय गयणयललग्ग पवणुद्धुय ।
मालावत्थमोरकमलंकहिं हंसगरुडहरिविसकरिचक्कहिं ।
भूसियपडिधयपहपइरिक्कहु अट्ठोत्तरु सउ सउ एक्केक्कहु ।

घत्ता—अण्णहु कासु तिलोए सोहइ णहि घोलंतउ ॥
कुसुममालधउ तासु कुसुमाउहु जें जित्तउ ॥ २४ ॥

25

हेला—कहइ व किंकिणीण घोसेण घोलमाणो ।
अहमिह सकुसुमो वि ण हु होमि कुसुमबाणो ॥ १ ॥

देव देव मा महु रूसेज्जसु कुसुमकरालहु करुण करेज्जसु ।
जो अंबरु तवचरणि ण भावइ अंबरचिंधु तासु धुंवु आवइ ।
जो सिहिवेसु कया वि ण इच्छइ सिहिजयंति सो अवसें पेच्छइ ।
जो णिवकमलहि होइ परंमुहु तहु कमलद्धउ णिच्छउ संमुहु ।

24. १ MBPT add after this: कक्केलीचपयसत्तयलहिं, संछण्णहिं साहारहिं सरलहिं. २ MBP राइउ. ३ MBP वेइउ.
25. १ MBP धुउ.

24. 12 *a* °प इ रि क्क हु प्रचुरतरस्य.
25. 5 *a* सि हि वे सु स्त्रियाः वेषः *b* °ज यं ति पताका ध्वजः.

परमहंसु जो सव्वउ बुज्झइ हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।
अमयबंभपउ जो जइ दावइ विणयासुयवडाय सो पावइ ।
सीहेणेव जेण वणु सेविउ सीहचिंधु तहु केण ण भाविउ ।
जेण ण पसु घाइउ णियमग्गइ तासु जि वसहु थाइ चिंधग्गइ ।
पसुवइ सो जि भडारउ वुच्चइ दुट्ठु अवरु किं अप्पउ सुच्चइ ।
जो पंचिंदिय दुद्दम पीलइ पीलु तासु धयवडु अणुसीलइ ।
मोहचक्कु जें चप्पिवि चूरिउ चक्कुं चिंधु तहु होइ अवारिउ ।

घत्ता—पुणु पायारु विचित्तु चउदुवारु सुपसत्थ ॥
जहिं थिय णायकुमार मरगयदंडविहत्थ ॥ २५ ॥

26

हेला—पुंणु वि धूवदोहडी पवरणट्टसाला ।
अहिणवभावसोहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उव्वसिरंभतिलोत्तिमणामउ जहिं णडंति तियसाहिवरामउ ।
पुणु दीहर दहविह कप्पद्दुम दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।
पुणु वेइय कलहोयहु केरी पियकंता इव सुहइं जणेरी ।
पुणु वि दुवारइं पुण्णपवित्तइं दरिसावियबहुमंगलवत्तइं ।
णिच्चु जि कीलियसुरसंघायहं भंभाभेरिपडहणिग्घोयहं ।
पुणु पओलि लंघिवि पासायहं पंति हारतारासुच्छायहं ।
पुणु थूहइं मणितोरणमालउ पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ कप्पदेवपरिरक्खियदारउ ।
सुद्धायासफलिहसंपत्तिउ तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिउं ।

१ MBP चक्कचिंधु.

26. १ MBP पुणरवि धूयदोउटी. २ B कलहोइय. ३ MBP णिण्णायहं. ४ MBP पुणु तोरण°. ५ B तित्तिउ.

8 *b* विणयासुय° गरुडः. 11 *a* पसुवइ पशुपति. शिवः.

26. 1 °दोहडी द्विघटी घटद्वयम्. 2 अहिणवेत्यादि उव्वसिरंभादीनां विशेषणम्. 5 *a* कलहोयहु सुवर्णस्य. 9 *a* थूहइ रत्नस्तूपा.;

घत्ता—तहिं मंडवमज्झत्थु वेरुलिएहिं समारिउ ॥
सोलहपयठवणेहिं पीढु सुहाइ णिरारिउ ॥ २६ ॥

27

हेला—चउदिसु तासु उवरि कल्लाणदविणसारा ।
जक्खसुराहिवा वि सिरिधम्मचक्कधारा ॥ १ ॥

अवरु हिरण्णवीढु तहु उप्परि अट्ठकेउपरिमिउ पयडियसिरि ।
रयणरहंगदुरयगोधारिहिं आरणालसुसिचयहरिणारिहिं ।
उरयवइरिदामयतणुअंकहिं सोहइ धयहिं गलियमलपंकहिं ।
पुणु वि तितीरु रइउ पीढुल्लउ तासुप्परि सीहासणु भल्लउ ।
जंबुणयचामीयरघडियउ विमलु समंतभद्दमणिजडियउ ।
मरगयणिम्मियदीहरदिव्वहिं सहइ लट्ठि कक्केयणपव्वहिं ।
छत्तइं तिण्णि ताइं उद्धरियइं णिम्मलाइं णं णाहहु चरियइं ।
दिसिगयपंडुरकरणिउरुंबइं तिण्णि वि णावइ ससहरबिंबइं ।
भामंडलु मंडलु णं भाणुहि अइ आसंकेप्पिणु सब्भाणुहि ।
णिण्णासियदुद्दंसणदिट्ठिहि सरणु पइट्ठउ णं परमेट्ठिहि ।
रत्तपुप्फथवएहिं पसाहिउ जिणमणणिग्गउ राउ व राइउ ।
कंकेल्लि वि पल्लवसोहिल्लउ मत्तसकुंतमिहुणु रमियल्लउ ।
जिह जिह देवहुं दुंदुहि वज्जइ तिह तिह धम्मजलहि णं गज्जइ ।

घत्ता—णं आघोसइ एम दुंदुहिसरेण गहीरें ॥
पणवहो तिहुयणणाहु जें मुच्चहु संसारें ॥ २७ ॥

27. १ M सुसिवय°; B ससिवय°. २ MPK सिंहासणु, B सिंघासणु. ३ MB विमल°. ४ B सुब्भाणुहि. ५ B रत्तउ पुप्फ°. ६ MBP जिणमय°. ७ MBPT राहिउ. ८ MBP वि. ९ M मत्तसुकुंभसिहु णरमियल्लउ, BP मत्तसकोंतमिहुणु रमियल्लउ, but T सकुंता पक्षिणः. १० MBP पणवइ.

12 समारिउ वृतम्.

27. 4 *a* रयणरहंग रत्नचक्रवाक', दुरय हस्ती, गोधारि वृषभः; *b* आरणाल कमलम्; सुसिचय शोभावस्त्रम्. 5 *a* उरयवइरि गरुडः, दामय पुष्पमाला. 6 *a* तितीरु उपर्युपरि त्रिभिस्तीरैर्युक्तम्. 7 *a* जंबुणय° सुवर्णम्; चामीयर° रूप्यम्. 8 *b* कक्केयण° स्फटिकः. 11 *b* अइआसकेप्पिणु अतीव भीत्वा; सब्भाणुहि स्वर्भानो राहोः. 13 *b* राइउ शोभितः. 14 *b* मत्तसकुतमिहुणु हृष्टपक्षियुग्मम्; रमियल्लउ क्रीडनयुक्तम्.

28

हेला—अविरलकुंदकुडयमंदारपंकयाइं ।
सभसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमइं पडियइं गयणहु तिह तिह करसरणिवडियमयणहु ।
णवपसंडिदंडइं सपसंसइं पीयपासपडियाइं व हंसइं ।
जक्खकरयलंदोलणचवलइं गुणठाणारुहणाइं व विमलइं ।
खीरतरंगा इव परिघुलियइं कित्तिहि अंगा इव संचलियइं ।
पंडुरइं चमरइं सुविसिट्ठइं दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्ठइं ।
जं जं सुंदरु लच्छिहि अंगउ जं जं कोइं मि तिहुयणि चंगउ ।
तं तं मयणु वि तहिं जि समप्पिउ को वण्णइ जंभारिवियप्पिउ ।
णियपहणिज्जिइयचंदक्कउ समवसरणु गयणंगणि थक्कउ ।
पंचसहसधणुउच्छयमाणइं सेणियं कहियउ जिणवरणाणइं ।

घत्ता—जो उच्छेहु जिणिंदें धणुपंचसएहिं घेल्लिउ ॥
तरुघरगिरिखंभाहं सो बारहगुणु बोल्लिउ ॥ २८ ॥

29

हेला—अट्ठगुणेण रुंदभावेण संपउत्तो ।
गाढं थूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणएं वेउव्विउ जायहिं इंदें णविउ भडारउ तावहिं ।
जय जिण कण्ह रुद्द चउराणण जय तवरामारइसुहमाणण ।

28. १ MB पियपायसपडियाइः P पिथपासपडियाइ. २ MBP तिहुयणि काइं मि. ३ MBP उण्णयमाणें. ४ MP add after this: विंससहससोवाणविहाणें, चउदिसविरइयहत्थपमाणें; B adds these after सेणिय कहियउ जिणवरणाणइ. ५ MBP सेणिय कहिउ जिणें वरणाणें. ६ MBP पघल्लिउ; T पव्वुल्लिउ. ७ P पव्बुल्लिउ and gloss कथितम्.

29. MBPK अट्ठउणेण.

28. 4 *a* °पसंडिदंडइं कनकमया दण्डाः; *b* पीयपासपडियाइं पीतपाशबन्धकनकदण्डैः पाशस्य उपमा धृता. 12. उच्छेहु उत्सेधः; घल्लिउ कथितः.

जय केलिकलिलसलिलसोसणरवि जय वासरईसरदेहच्छवि ।
जय मणतिमिरभारहरणक्खम तियसकिरीडमउडमंडियकम ।
जय तिसल्लवेल्लीवणछिंदण जय कंदप्पदप्पभडमद्दण ।
कोहकलंकपंकओसारण जय माणइरिसिहरमुसुमूरण ।
मायापावभावविद्दावण जय लोहंधयारउड्डावण ।
तिट्ठारयणीयरिसंघारण जय सत्तभयकुरंगवियारण ।
जय मयमयगलकुलकंठीरव जय जगबंधव महियतिगारव ।
पढमपुरिस परमप्पय संकर जय जय रिसहणाह तित्थंकर ।

घत्ता—वंदिउ एम जिणिंदु तहिं बत्तीसहि सक्कहिं ॥
उज्जोइयभरहेहिं पुप्फयंतणामंकहिं ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे रिसहकेवलणाणुप्पत्ती णाम
णवमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ९ ॥
॥ संधि ॥ ९ ॥

२ M कयकलिल°. ३ M तिसल्लवल्ली°. ४ MBP °भावउड्डावण ५ MBP °धयारविद्दावण, P लोहंधयारि विद्दावण.

29. 5 *a* °कलिल° पापम्. *b* वासरईसरदेहच्छवि वासरो दिवसस्तस्य ईश्वर आदित्यः तस्य देहस्य छविः कान्तिराकारो वा यस्य. 6 *b* °किरीड° त्रिशेखरो मुकुटविशेष . 10 *a* तिट्ठारयणीयरि° तृष्णैव रजनीचरी राक्षसी. 11 *b* महिय° मथितानि.

X

परमेसरु थुणिउ पुरंदरेण परिसेसिय[1]भवभयमरणरिण ॥
परमप्पय महु पसीय सुसम [2]समवसरणपरियरिय जिण ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुवई—तुह पहु वंदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहसि मच्छरं ।
तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहसुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुहुं वीयराउ णिद्धूयकम्मु तुहुं हिंसावज्जिउ परमधम्मु ।
जो पइं सेवइ तहु होइ सोक्खु तुह पडिकूल[3]हु संभवइ दुक्खु ।
तुहुं पुणु दोहिं मि मज्झत्थभाउ इह[4] एहउ फुडु वत्थुहि सहाउ ।
णिंदिज्जइ रवि पित्ताहिएहिं चंदु वि वाएण णिवाइएहिं ।
ते दोण्णि वि पयहं किं करंति ससहावें णहयलि संचरंति ।
ससिसूरोसहिसंघाउ जेम भुवणोवयारि जिण तुहुं मि तेम ।
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ वारि तहु तण्हइ णिवडइ तिव्वमारि ।
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु सरवरहु ण एण ण[5] तेण कज्जु ।
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि तिह तुहुं वि सहावें दुरियहारि ।
अणवरउ भडारा भूयसामि जहिं तुम्हइं[6] तहिं हउं समउ जामि ।

All Mss. have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

जगं रम्मं हम्मं दीवओ चंदबिंबं
धरत्ती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्था ।
पिया णिद्दा णिच्च कव्वकीला विणोओ
अदीणत्त वित्तं ईसरो पुप्फयंतो ॥

MBP however read धरित्ती for धरत्ती; सुवत्थं for सुवत्था; and पुप्फदंतो for पुप्फयंतो in the above stanza.

1. १ MB °भवभवणरिण; P °भवभमणरिण. २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण. ३ MBP पडिकूलहं. ४ M इय. ५ K णं तेण. ६ B तुम्हइं तहिं हउं सउं; P तुम्हइं हउ समउ.

---

1. 4 अणयपणयाण अनतानां प्रणतानां च. 8 *a* पित्ताहिएहिं पित्ताधिकैर्नरैः; *b* णिवाइएहिं पीडितैः 12 *a* रसइ आस्वादयति, तिसणासु तृषानाश·; सज्जु सद्यः. 13 *a* गरुलमंतु गरुडमन्त्रः; गरलंतयारि विषविनाशकः.

जहिं तुहुं तहिं ससुरु समग्गु सग्गु जइं हउं तहिं मणिमउ भूमिमग्गुं ।

घत्ता—तहिं समवसरणि जंभारिकए परहियबुद्धिइ संचरइ ॥
सुरणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ ॥ १ ॥

2

दुवई—आरूढो वरम्मि उवयद्दिसिरम्मि व हरिणलंछणो ।
सोहइ सेंधुरारिवीढम्मि विहट्टियकम्मबंधणो ॥ १ ॥

अइसय दह जाया सह भवेण चउवीस अवर णाणुब्भवेण ।
जगि अरहंतहु पर संभवंति जं ते एहा गणहर कहंति ।
गव्वूइसयाइं चयारि जाम वित्थरइ सुहिक्खु सुखेउ ताम ।
ण वि कासु वि पाणिहि प्राणणासु गयणयालि गमणु परमेसरासु ।
णउ भुत्ति पवत्तइ णोवसग्गु सरलक्खिपक्खपक्खेउ भग्गु ।
छाहियइ विवज्जिउ होइ गत्तु अवरु वि असेसु विज्जेसरत्तु ।
परिमिय थिय कररुह णील केस भूएसु मेत्ति पिसुण वि ण वेस ।
भास वि णीसेससरीरिगम्म णाणाभासहिं परिणवइ रम्म ।
महु तित्त कडुय परिणइवसेहिं जलधारा इव बहुदुमरसेहिं ।

७ MBP जहिं तुहुं तहिं, K जइं हउ but corrects it to जहिं; ८ MBP add after this the following line: पइं दिण्णाणइ वइसरामि जामि, तुह वयणामइ तित्ति ण जामि. ९ MBPT परिचिंतिय-सुवियारसहु and gloss in T भव्यैश्चिन्तितार्थानां शोभनो विचारः सभाया यस्य, शोभन विचारं वा सहते क्षमते यः स तथोक्तः, but P records in the margin a p परहियबुद्धिइ संचरइ. १० MBP चउ-देवणिकायहिं (M °णिकायह) परियरिउ आसणसठिउ दिट्ठु पहु, but P records in the margin a p सुरणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ.

2. १ MBP सिंधुरारि°. २ B णाणुब्भरेण. ३ L °चयारि सयाइं. ४ MBP सुभिक्खु. ५ MBP पाणिहि पाण°. ६ M ण व. ७ MBP °विक्खेउ. ८ MBPT असेस°. ९ P °दुमसरेहिं.

15 *a* ससुरु देवैः सह.

2. 1 उवयद्दिसिरम्मि उदयाद्रिशिखरे. 2 सेंधुरारिवीढम्मि सिंहासने; विहट्टिय° विघटित°. 4 *a* पर केवलम्. 5 *a* गव्वूइ° गव्यूतिः. 7 *b* °पक्खपक्खेउ पक्ष्मणां प्रक्षेपो मेषोन्मेषगतः. 8 *b* असेसु विज्जेसरत्तु परिपूर्णं विद्येश्वरत्वं केवलज्ञानमागमो वा. 9 *b* वेस द्वेष्याः. 10 *a* °गम्म परिच्छेद्या.

छक्कालसमयसंपयकरेण महिरुह णमंति गुरुफलभरेण।
आदंसणसंणिह महि विहाइ परमाणंदें जणु जगि ण माइ।
मंथरु सीयलु तरुसुरहिसारु जोयणपमाणु वियरइ समीरु।
अणुगच्छंतउ[10] णाहहु सुहाइ पच्छइ लग्गउ णेहेण णाइ।

घत्ता—जलें[11] दुध्दु वहंति तरंगिणिउ सामिउ विहरइ जहिं जि जहिं॥
तणें[12] कंटय कीडय पत्थर वि धूलि पणासइ तहिं जि तहिं॥२॥

3

दुवई—सुरवइपेसणेण परिमलमिलियालिकुलेहिं माणियं।
थणियकुमार मेह वरिसंति[1] महावर[2]गंधवाणियं॥१॥

पहुअग्गइ पच्छइ परिघुलंति णलिणाइं सत्त सत्त जि चलंति।
जहिं देइ पाउ तहिं कणयकमलु सुरसंजोइउ संचरइ[3] विमलु।
एवड्डु[4] पहुत्तणु भुवणि कासु[5] हरि कुलिसधारि घरि जासु दासु।
अट्ठारह वरधण्णइं धरंति रोमंचिय णच्चइ णं धरित्ति।
णहु सदिसु वि रेहइ मलविहीणु धोयंबणीलमाणिक्कभाणु।
दिव्वझुणि पवियंभइ पवित्ति वसुसमसहासधणुमाणछेत्ति।
जक्खिदसिरारूढउ विचित्तु रयणारर[6]त्तु रविबिंबु दित्तु।
लीलासंबोहियभव्वचक्कु[7] तहु अग्गग्गइ[8] गच्छइ धम्मचक्कु।
जो पेच्छइ दूरहु माणु खंभु[9] तहु विहडइ माणकसायडंभु।
णिज्जियबहुसमयणयंतराइं परवाइ वि देंति ण उत्तराइं।

१० MBP अणुगच्छंतहु. ११ MB जलु दुध्दु. १२ B तिण.

3. १ P वरिसत. २ MBP महारव°. ३ P सचलइ. ४ B एवड्डु° ५ MBP कासु. ६ MBP रयणारादंतुरदिव्वदित्तु. ७ MB °चक्खु. ८ MBP अग्गइ. ९ MB माणखंभु.

---

12 *a* छक्काल° षड्ऋतवः. 14 *a* मंथरु मन्दः; तरुसुरहिसारु तरूणां सुरभिः सौरभं तेन सार उत्कृष्टः. 15 *a* सुहाइ सुखायते.

3. 3 *a* परिघुलंति विलसन्ति. 6 *a* अट्ठारह वरधण्णइं गोधूमशालियवसर्षपमाषमुद्गश्यामाककङ्गुतिलकोद्रवराजमाषाः। कीनाशनालमथ वैणवमाढकी च शिम्बा कुलत्थचणकादि सुबीजधान्यम्. 7 *a* सदिसु दिशासहितम्; *b* °भाणु भाजनम्. 9 *b* रयणाररत्तु रत्नमयैररैः सहितं अत एव रक्तम्; 12 *a* णिज्जियबहुसमयणयंतराइं निर्जितानि बहुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि युक्तिविशेषा यैः.

पडिहाहय[10] भइयइ[11] थरहरंति अविहंडिउ मोणव्वउ वहंति।
अवियारु[12] पहादूसियछणिंदु दीसइ चउदिसहिं मुहारविंदु।
बारहकोट्ठेसु वि जे वसंति ते ते मुहुं[13] महु संमुहु भणंति।

घत्ता—मउलियकरउ[14] पणवियसिरउ सच्छउ[15] गव्वविमुक्कियउ॥
परिवाडिइ[16] कोट्ठि णिविट्ठियउ[17] तहिं पयाउ हयदुक्कियउ॥ ३॥

4

दुवई—गणहर कप्पवासिसुररमणिउ अज्जियसंघे[1] गइरई।
देविउ वणणिवासदेवाण वि भावणतरुणिसंतई॥ १॥

पुणु दह कुमार वेंतरसुरिंद पुणु जोइस कप्पामर णरिंद।
पुणु तिरिय वियडदाढाकराल[2] केसरि कुंजर सद्दूल कोल।
वइसंति[3] गणेसाइ[4] व कमेण जिणभत्तिवंत भूसिय समेण।
णव णव पंचविहहिं रूढएहिं सव्वहिं सविमाणारुढएहिं।
सीहासणु मेल्लिवि खइयभाउ अहमिंदहिं थुउ[5] विद्धत्थराउ।
जसरवितोसियजगपंकएहिं उग्घोसियकुलणामंकएहिं[6]।
मउडावलिचुंबियमहियलेहिं घोलंतकुसुममालाचलेहिं।
उवगीइगाहाखंधएहिं उच्चारियललियथुईसएहिं।
संथुउ सोहम्मीसाणएहिं अवरेहिं मि तियसपहाणएहिं।

१० MBP पडिभा°; T परिहा° and gloss प्रतिभा. ११ B भइए. १२ MB अवियारपहा°, B अविहारपिया°. १३ MBP महु महु समुहु. १४ MBP °करउ. १५ BP सव्वउ. १६ MP परिवारिए. १७ MB णिविट्ठउ.

4. १ MBPK °सघु. २ MBP फुरिय°. ३ M वइसंत. ४ MBP गणेसाइय. ५ M संथुउ. ६ P °णामंकिएहिं.

13 *a* पडिहाहय आसूत्रप्रतिपत्तिः प्रतिभा सा हता येषाम्, *b* अविहंडिउ परिपूर्णम्. 14 *a* अवियारु अविकारः. 17 परिवाडिइ परिपाटिकया क्रमेण, पयाउ प्रजाः.

4. 1 गइरई ज्योतिष्कस्त्री. 2 वणणिवास° व्यन्तरा देवाः; भावण° भवनवासिनो देवाः; संतई श्रेणी. 5 *a* गणेसाइ गणधरादयः. 6 *a* रूढएहिं प्रसिद्धैः. 7 *a* खइयभाउ क्षायिकभावो जिनेश्वरः. 10 *a* °खंधएहिं स्कन्धकवृत्तैः.

घत्ता—जय दुम्महवम्महणिम्महण दोसरोसपसुपाससिहि ॥
जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविसहरवि[१]लयविरहिया ।
जयँ भगवंत संत सिव सकिव णिवंचियचरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुक[२]इकहियणीसेसणाम भीमंथण णियरिउवग्गभीम ।
वामाविमुक्क संसारवाम जय तिउरहारि हर हीरधा[३]म ।
जयप्पयडियधुयसस[४]यंभुभाव जय जय सयंभु परिग[५]णियभाव ।
जय संकर संकर विहियसंति जय ससहर कुवलयदिण्णकंति ।
जय रुद्द रउद्दतवग्गगामि जय जय भवसामि भवोवसामि ।
महएव महागुणगणज[६]साल महकाल पलयकालुग्गकाल ।
जय जय गणेस गणवइजणेर जय बंभ पसाहियबंभचेर ।
वेयंगवाइ जय कमलजोणि आईवराह उद्धरियखोणि ।
सहिरण्णविट्ठिपडिवण्णगब्भ जय दुण्णयणिहणण हिरण्णगब्भ ।
जय परमाणंतचउक्कसोह भावंध[७]यारहर दिवसणाह ।
जय अण्णपुरिस पसुअण्णणासि रिसिसंस[८]हिंसाधम्मभासि ।

5. १ MBP वलय°. २ P सुकय°. ३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रसन्न, अथवा हीरो रत्नविशेषस्तद्वन्मनोज्ञ. ४ MBP °ससइंभु°. ५ B परिगलिय°. ६ P °गणविसाल. ७ M पावधपारहर; BP पावंधयारहर. ८ M रिससंस अहिंसा°, BP रिसिसंस अहिंसा°.

12 °पसुपाससिहि पशुप्राशः पलालं तस्य शिखी अग्निः. 13 हरणकरणउद्धरणविहि हरणं मिथ्यादर्शनादेः; करणं सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरण दुर्गतिकूपे पतनामुध्दृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिर्विधानं यस्मात्.

5. 1 °कंदल° कपालम्; °विलय° विलया वनिता स्त्री. 3 *b* भीमंथण भयहारक. 4 *a* वामाविमुक्क स्त्रीविमुक्त; संसारवाम संसारप्रतिकूल; *b* तिउरहारि जातिजरामरणस्य मिथ्यादर्शनादेर्वा त्रिपुरस्य विनाशक; हीरधाम धैर्यस्य धाम. 5 *b* परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ. 6 *a* संकर शंकरः सुखंकरः. 7 *a* रउद्दतवग्गगामि उग्रतपसामग्रगामी, *b* भवोवसामि ससारोपशमकः. 9 *b* गणवइजणेर वृषभसेनादीनां शिष्याणां जनक. 10 *b* वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन्. 12 *a* °अणंतचउक्क° अनन्तचतुष्टयम्, *b* भावंधयार° अज्ञानम्. 13 *b* रिसिसंस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभिः प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक.

जय माहव तिहुवणमाहवेस महुसूयण दूसियमहुविसेस।
जय लोयणिओइय परमहंस गोवद्धण केसव परमहंस।
जगि सो केसउ जो रायवंतु तुह णीरायहु कहिं केसवत्तु।
के सव ते सव जे पइं हसंति जड पावपिंड रउरवि वसंति।
जय कासव का सवविहि तुमम्मि णेरंतरु चित्ति णिरोहु जम्मि।

घत्ता—जय गयण हुयासण चंद रवि जीवय महि मारुय सलिल॥
अट्ठंगमहेसर जय सयल पक्खालियकलिमलकलिल॥ ५॥

6

दुवई—जय जय सिद्ध बुद्ध सुद्धोयणि सुगय कुमग्गणासणा।
जय वइकुंठ विट्ठु दामोयर हयपरवाइवासणा॥ १॥

णामाइं पसिद्धइं जाइं जाइं तुह देव अवंझइं ताइं ताइं।
इंदें चंदें उरयाहिवेण तुह णामहु लक्खिउ छेउ केण।
मइविहवविहीणहिं आरिसेहिं किं थुव्वसि तुहुं अम्हारिसेहिं।
तावेत्तहिं पउरजसालएहिं कंचुइधम्माउहवालएहिं।
एक्कहिं खणि भरहहु कहिय वत्त भुंजहि महि महिवइ एक्कछत्त।
सयरायरवत्थुवियप्पजाणु परमेट्ठिहि अचलु अणंतु णाणु।
राणियहि पुत्तु पप्फुल्लवयणु आउहसालहि वरचक्करयणु।
उप्पण्णु भडारा पुण्णवंतु तुहुं जासु जणणु अरहंतु संतु।
ता राएं अवरेहिं मि णरेहिं पणविउ जिणवरु सिरकयकरेहिं।

९ MBP चित्तणिरोहु. १० MBP जीव मही.

6. १ MBP मइं विभव°. २ MBP ता एत्तहि. ३ P पवर°. ४ MB °बालएहिं, P °पालएहिं ५ MBP एयछत्त. ६ MBP °सालइ

14 *b* दूसियमहुविसेस मधु मद्यं क्षौद्रं दानवश्च 15 *b* गोवद्धण ज्ञानवर्धक 16 *a* सो केसउ जो रायवंतु यः केशेषु रागवान् स केशव. *b* केसवत्तु केशवत्वम्. 17 *a* केसवेत्यादि— के शवा? ते शवा; ये त्वां हसन्ति. 18 *a* सवविहि मृतकाचार. 19 जीवय यजमान. 20 अट्ठगमहेसर गगनाद्यष्टाभिस्तनूभिर्युक्तो महेश्वर; सयल परमौदारिकशरीरयुक्त.

6. 3 *b* अवंझइं सफलानि. 4 *b* छेउ प्रान्त. 5 *a* आरिसेहिं अव्युत्पन्नै.. 8 *a* सयरायरवत्थुवियप्प° सचराचरस्य सक्रियनिष्क्रियस्य चेतनाचेतनस्य च वस्तुनो विकल्पा भेदाः.

पुणु चिंतिउ किं जोयमि रहंगु किं तणयतोंडुं दरियारिभंगु ।
मज्झत्थु सच्छु णिम्मुक्कसंगु किं वंदमि मुणि सुद्धंतरंगु ।
धम्मेण सुरत्तु कलत्तु पुत्तु पहरणु वि होइ णिद्दलियसत्तु ।
धम्में संपज्जइ पुहविरज्जु कराणिज्जु पहिलउं धम्मकज्जु ।
गंभीरणायणिम्महियवेरि देवाविय लहु आणंदभेरि ।

घत्ता—मायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥
वेयालियकयकलयलमुहलु भरहणराहिवु णीसरिउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—पत्तो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारणं ।
मयराणणविणित्तमुत्ताहलमालालुलियतोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवासणासीणगत्तु तिउणियससिसमसेयायवत्तु ।
पउलोमीपियसेविज्जमाणु चउसट्ठिचमरविज्जिज्जमाणु ।
जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण णं णेसरु णवपंकयसरेण ।
णं मत्तमऊरें वारिवाहु णं वाइएण रससिद्धिलाहु ।
णं सिद्धें संभावियउ मोक्खु णं हंसें माणसु जणियसोक्खु ।
कंपावियदिक्चक्काहिवेण पारद्धु थुणहुं चक्काहिवेण ।
जय भुवणभवणतिमिरहरदीव जय सुइसंबोहियभव्वजीव ।
जय भासियपयाणेयभेय जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय ।
सकयत्थइं कमकमलाइं ताइं तुह तित्थु पसत्थु गयाइं जाइं ।
णयणाइं ताइं दिट्ठो सि जेहिं सो कंठु जेण गायउ सरेहिं ।
ते धण्ण कण्ण जे पइं सुणंति ते कर जे तुहुं पेसणु करंति ।

७ MBP °तुंडु. ८ MP भरहु णराहिउ, B भरहणराहिउ.

7. १ MBP °सरण असुहहरण; KT °सरणमसुहरसरण. २ B °विलित्त°. ३ BK °ललिय°. ४ M तुव.

12 *b* दरियारि° दृप्ताः शत्रवः. 16 *a* °णाय° नादः. 18 वेयालिय° भट्टचारणादिकाः.

7. 1 असुहहरण अशुभनाशकम्. 2 °विणित्त° विनिर्गतः. 3 *b* तिउणिय° त्रिगुणितः. 4 *a* पउलोमी° इन्द्राणी. 5 *b* णेसरु सूर्यः. 6 *a* वारिवाहु मेघः; *b* वाइएण रसायनकारकेण. 8 *a* दिक्चक्काहिव लोकपालाः. 9 *b* सुइ° श्रुतिरागमः. 11 *b* तित्थु समवसरण निष्क्रमणादिस्थानं वा.

ते णाणवंत जे पइं मुणंति ते सुकइ सुयण जे पइं थुणंति ।
तं कव्वु देव जं तुज्झु रइउ सा जीह जाइ तुह णाउं लइउ ।
तं मणु जं तुह पयपोमलीणु तं धणु जं तुह पूयाइ खीणु ।
तं सीसु जेण तुहुं पणविओ सि ते जोइ जेहिं तुहुं झाइओ सि ।
तं मुहुं जं तुह संमुहउं थाइ विवरंमुहुं कुच्छियगुरुहुं जाइ ।
तेल्लोक्कताय तुहुं मज्झु ताउ धण्णेहिं कहिं मि कह कह व णाउ ।
णिट्ठवियदुट्ठकम्मट्ठ सिट्ठ दुट्ठोवसग्गणिहणेक्कणिट्ठ ।

घत्ता—पंचाणणकुंजरजलजलणविसविसहररुयपयजुयणियलखला ॥
पइं संभरिएण जि परमजिण उवसमंति कयकलहखला ॥ ७ ॥

8

दुवई—जय वइसमणचमरवेरोयणअसुरामरपसंसिया ।
सुरगुरुसुक्कसवुहअंगारयगहणहयरणमंसिया ॥ १ ॥

चरणइं तेरहगइभाविराइं णयणाइं पंच पहदाविराइं ।
एयारह सिंगइं उण्णयाइं उज्झियइं तिण्णि किर णिण्णयाइं ।
सीसाइं पंच अह भणमि एक्कु चउहुं मि परियरियउ तं जि थक्कु ।
बारह चोद्दह ढेक्कारियाइं अंगाइं दह विउसवियारियाइं ।
रोमइं चउरासीलक्ख जासु दुग्गोवइकुल संजणिय तासु ।

५ MBP णामु. ६ MBP तइलोक°. ७ BPKT °कट्ठकम्मट्ठ. ८ MB °विसहरपय°; T रुय रोगाः. ९ MBPK °णियल. १० MBPK खल.

8. १ MBP वइसवण°. २ MBP °वइरोयण°; K वैरोयण. ३ MB परियरिउ. ४ MPK चउदह. ५ MBP अगाइं.

19 *a* °ताय रक्षक; ताउ पिता. 20 *a* सिट्ठ हे श्रेष्ठ. 21 °रुय° रोगाः.

8. 1 °चमरवेरोयण° चमरवैरोचनौ असुरेन्द्रौ. 3 *a* तेरहगइ° पञ्चव्रतानि, पञ्च समितयस्तिस्रो गुप्तयः; *b* णयणाइं पंच मतिश्रुतावधिमनःपर्यायकेवलानि. 4 *a* एयारह सिंगइं सम्यक्त्वाद्येकादशगुणस्थानानि शृङ्गाणि; *b* तिण्णि णिण्णयाइं मायामिथ्यानिदानानि शल्यानि, मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्राणि वा त्रीणि निम्नानि, वृषभपक्षे, स्कन्धकुटीमस्तकानि निम्नानि. 5 *a* सीसाइ पंच सामायिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातानि पञ्च चारित्राणि, पञ्च महाव्रतानि वा; अह भणमि एक्कु अथवा एकं अहिंसाव्रतम्, सर्वसावद्ययोगविरतोऽस्मीति सामायिकं वा. 6 *a* बारह द्वादश अङ्गानि; चोद्दह चतुर्दश पूर्वाणि वा; ढेक्कारियाइं शब्दाः; *b* अंगाइं दह उत्तमक्षमादिदशप्रकारो धर्मः. 7 *b* दुग्गोवइ दुष्टा गोपतयः सर्वथैकान्तवादिनः.

जो कामधेणु सेविउ सुधामु जें तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।
दुद्धरवयभारधुरग्गु धरिवि अपवत्तियतित्थवहेण चरिवि ।
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु वीसमिउ असोयहु मूलि धीरु ।
जें लंघिउ भवदुप्पहु[६] दुलंघु जो धवलु धवल[७]वंदहु महग्घु ।
तहु वसहहु कयपणिवाउ[८] भाउ णियणिलइ णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु भत्तिहरिसवियसियवयणु ॥
संसारदुक्खणिव्वेइयउ जोयवि[९] मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता णिग्गंतधीरदिव्वज्झुणितोसिय[१]फणिणरामरो ।
जीवाजीवणामकयभेयइं तच्चइं कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सभवाभव[२] जीव दुभेय होंति ते सभव सकम्में परिणमंति[३] ।
चउरासीजोणिहिं परिभमंति[४] अण्णण्णदेहराएं रमंति ।
वियलिंदिय सयलिंदिय अणेय एक्किंदिय भासिय पंचभेय ।
आहारसरीरिंदियमणाहं आणाभासापरमाणुयाहं ।
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु तं पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु ।
तं छव्विहु परमेसें पउत्तु अहमेण ठाइ अंतोमुहुत्तु ।
जिह णारएसु तिह सुरवरेसु दसवरिस[५]सहासइं वसइ तेसु ।
परमें तितीस सायरसमाइं मणुएसु तिण्णि पलिओवमाइं ।
एइंदिएसु चत्तारि होंति वियलिंदिएसु पंच जि कहंति ।
ता जाम असण्णिउ पंचकरणु सण्णिउ पज्जत्तीछक्कधरणु ।

६ MB ° दुप्पउ. ७ M धवलचदहु; B धवलवंदहु; P धवलविंदहु and gloss समूहस्य. ८ MBPK कयपाणिवायभाउ. ९ MB जाएवि.

9. १ B °तासिय°. २ M भव वाभव. ३ MBP परिणवंति. ४ MBP चउरासिलक्खजोणिहिं भमंति. ५ BP दहवरिस°.

8 *b* °दामु बन्धनम्. 9 *b* अपवत्तियतित्थवहेण अवसार्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमार्गेण. 11 *a* °दुप्पहु दुर्मार्गः. 14 जोयवि दृष्ट्वा.

9. 11 *a* चत्तारि आहारशरीरेन्द्रियोच्छ्वासनिश्वासलक्षणाः पर्याप्तयः.

एयहिं जे पज्जप्पंति णेय ते जंति अपज्जत्ता अणेय ।
पज्जप्पंतहु लग्गइ खणालु जगि सव्वहु भिण्णमुहुत्तु कालु ।

घत्ता—ओरालिउ तिरियहुं माणवहुं सुरणारयहुं विउव्वियउ ॥
आहारअंगु कासु वि मुणिहि कम्मु तेउ सयलहं वि थियउ ॥ ९ ॥

10

दुवई—तिरिय हवंति दुविह तस थावर थावर पंचभेयया ॥
पुहवी आउ तेय वाऊ वि य बहुविह हरियकायया ॥ १ ॥

मसुरिय कुसजल सूईकलाव परिधाविरधयसंठाण भाव ।
तोरणतरुवेइयगिरियलेसु सुरहरवसुखामहियलेसु ।
णाणाविहसोयरि सरिसरेसु पण्णारह जिणभवभूयलेसु ।
अवरेसु वि बहुछेत्तंतरेसु बंभंतपरिट्ठियणहयलेसु ।
अइसरसरसातोयासएसु एयाण कमेण जि होइ वासु ।
खरजलिण ण भिज्जइ वालुयाइ सण्ही सिंचियँ खणि बंधु लेइ ।
दुविह वि मट्टिय किर पंचवण्ण जइ होइ होउ संकिण्ण अण्ण ।

घत्ता—कसिणारुण हरिय सुपीयलिय पंडुर अवर वि धूसरिय ॥
एही महिकायहुं मउय महि पंचवण्ण मइं वज्जरिय ॥ १० ॥

11

दुवई—कंचण तेउंय तंब मणि रुप्पय खरपुहई पयासिया ।
वारुणिखीरखारघयमहुसम जलजाई वि भासिया ॥ १ ॥

६ MBP पज्जत्तहु लग्गइ इय खणालु. ७ MBP विउव्विउ. ८ MBP थिउ.

10. १ K पुहई. २ MBP सायर°. ३ MBP जिणवरमाहियलेसु. ४ MB सित्तिय; P सेंचिय. ५ MBP कसणारुण. ६ P महिकायहुं जीवहं मउय मही.

11. १ MBP तउय.

---

14 *b* भिण्णमुहुत्तु अन्तर्मुहूर्तः. 15 ओरालिउ औदारिकम्.

10. 4 *a* तोरण° द्वारादितोरणम् ; *b* वसुखामहियलेसु अष्टपृथिवीषु. 6 *b* बंभंत° लोकान्तः. 8 *b* सण्ही मृदुः; *b* संकिण्ण मिश्रा.

दूरहु दरिसावियधूममलिणु　　　　असणी तडि रवि मणि जोइ[2] जलणु ।
उक्कलि मंडलि गुंजाणिणाउ　　　　दिसि[3]विदिसाभेएं भिण्णु[4] वाउ ।
गुच्छेसु गुम्मवल्लीतणेसु　　　　पव्वेसु रुक्खसाहाघणेसु ।
सुपसिद्धु[5] वणासइकाउ एसु　　　　उप्पज्जइ जइ[6] घोसइ जईसु ।
पज्जत्तेयर सुहुमेयरा वि　　　　दुमसाहारण पत्तेय के वि ।
साहारणाहं साहारणाइं　　　　आणापाणइं आहारणाइं ।
पत्तेयहुं पत्तेयइं गयाइं[7]　　　　छिंदणभिंदणणिहणं[8] गयाइं ।
बारहसहाससंवच्छराहुं　　　　सुहुमाहुं दह जि दह दो खराहुं ।
आउहि परमाउसु सत्त झुणइ　　　　अहरत्तइं त्रिच्चिहि तिण्णि भणइ ।
तइयद्दसहासइं गंधवाहु　　　　दहसहसाइं जि वणसइसमूहु ।
परमेण जि अइअवरेण उत्तु　　　　सव्वहं जीविउ अंतोमुहुत्तु ।
तुंदाहि[9] कुक्खि किमि खुब्भ संख　　　　बीइंदिय[10] मइं भासिय असंख ।
तीइंदिय[11] गोभिपिपीलियाइं　　　　चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं ।

घत्ता—परिवाडिए किं पि णाणभवणु एयहं जुत्तिइ सावडइ ।
रसु गंधु णयणु फासहु उवरि एक्केक्कउं इंदिउ चडइ ॥ ११ ॥

12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तट्ठ प्राणया ।
तेसिं होंति एम पभणंति महामुणि विमलणाणया ॥ १ ॥

पंचिंदिय सण्णि असण्णि दोण्णि　　　　मणवज्जिय[1] जे ते धुवु असण्णि ।

---

२ MB °मणिजाइ. ३ MBP दिसि°. ४ M दिण्णु; P भिण्णवाउ; ५ M सुवासिद्ध°; BP सुपसिद्ध°. ६ M जिइ, P जिउ. ७ MBPT पत्तेयगयाइं. ८ MBP णिहणइं. ९ M रुदाहि सुक्खि, रुंदाहि कुक्खि; T तुंदाहि गण्डूपदः. १० MBM बेइंदिय. ११ MBP तेइंदिय.

12. १ M मणि.

---

11. 4 *a* °गुजाणिणाउ घोषशब्दयुक्तः. 6 *b* जइ जगति. 9 *b* णिहण विनाशम्. 10 *b* दह जि-दह दो द्वाविंशतिसहस्राणि; 11 a आउहि अपाम्; *b* त्रिच्चिहि अग्नेः. 12 *a* तइयद्दसहासइ त्रीणि वर्षसहस्राणि. 13 *a* अइअवरेण अतिजघन्येन. 14 *a* तुदाहि गण्डूपदः. 16 णाणभवणु ज्ञानाश्रयम्; सावडइ संपद्यते.

सिक्खालावाइं ण लेंति पाव अण्णाणगूढेदढमूढभाव।
असु णव जि समत्तिउ पंच ताहं वज्जरइ जिणिंदु असण्णियाहं।
छहिं पज्जत्तिहिं पज्जत्तएहिं संफासणलोयणसोत्तएहिं।
मणवयणकायरसघाणएहिं आणापाणाउ अप्पाणएहिं।
दहहिं मि जियंति सण्णिय तिरिक्ख अक्खमि णाणाविह दुण्णिरिक्ख।
जलयर झसाइ पंचप्पयार कच्छव मयरोहर सुंसुयार।
णहयर समुग्ग फुडवियडपक्ख अण्णेक्क चम्मघणलोमपक्ख।
थलयर चउपय चउविह अमेय एक्कखुर दुखुर करिसुणहपाय।
उरसप्प महोरय अजगराइ किं ताहं गइंदु वि कवलु होइ।
भुयसप्प वि वक्खाणिय सभेय सरडुंदुरगोधाणामधेय।

घत्ता—जलयर जलेसु खग तरुगिरिसु थलयर गामपुरेसु वणे॥
दीवोयहिमंडलमज्झि तहिं पढमु दीवु भासंति जणे॥ १२॥

13

दुवई—जोयणलक्खु लक्ख बहुपविउल पुणु गयगणियमेरया।
अत्थि असंखदीववरसायरवलयायारधारया॥ १॥

जंबूदीवो धादइसंडो पुक्खरवरदीवो मिगचंडो।
मइरो खीरो घयमहुणामो णंदीसो अरुणोरुणधामो।
कुंडलसण्णो संखो रुजगो भुजगवरो अवरो वि हु कुसगो।

२ MB मूढ धणगूढभाव, K मूढ घणगूढभाव but corrects it to गूढ धणमूढभाव. ३ MBP °पाणाउ. ४ MBP अपाणएहिं. ५ M अहयर. ६ M पड°; BP फड; ७ MBP दुक्खुर. ८ M महोयर. ९ MBP किर. १० MBP सरिसप्प. ११ MBP पढमदीउ. १२ M जिणे: K जिणे but corrects it to जणे.

13. १ MBP तह. २ P धाइयसंडो. ३ MBP मिगचंडो. ४ MBP णामें. ५ MBP धामें.

12. 4 *b* अण्णाणेत्यादि—न विद्यते ज्ञान यस्मात्तदज्ञानं तेन गूढं प्रच्छादनं तस्माद् दृढा मुग्धभावा येषाम्. 5 *a* समत्तिउ पर्याप्तय॰. 6 *a* पज्जत्तएहिं परिपूर्णैः. 9 *b* उहर जलचरविशेषः.

13. 1 गयगणियमेरया गतगणितमर्यादाः. 4 *b* अरुणधामो रक्तच्छविः. 5 *a* रुजगो रुचकः.

कोंचो एवं दीवसमुद्दा दूणपिहुँ दावियणियमुद्दाँ ।
एएसुं तिरियाणं ठाणं जलयरथलयरणहयरयाणं ।
वियलिंदियपंचिंदिययाणं एण्हि वोच्छं कायपमाणं ।
साहियजोयणसहसुच्छेहं पउमं दीसइ वड्डियदेहं ।
अवि य दुकरणो को वि वरिट्ठो बारहजोयणदीहो दिट्ठो ।
होइ तिकोसो तिकरणवंतो चउकरणिल्लो जोयणमेत्तो ।

घत्ता—लवणण्णवि कालण्णवि विउले होंति सयंभूरमणि झस ॥
सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

14

दुवई—जाणसु जोयणाइं अट्ठारह लवणसमुद्दमच्छया ।
णंव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालोए दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहण्णवि जे वहंति ते जोयण पंचसयाइं होंति ।
गयणंगणचरहं थलंभचरहं संमुच्छिमगब्भसरीरधरहं ।
कइवयचावइं काहं मि गणंति तणुमाणु एम मुणिवर भणंति ।
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु पज्जत्तिल्लहु जोयणसहासु ।
जलगब्भजम्मि मवियाइं ताइं पंचं जि जोयणइं सयाहयाइं ।
पयहं तीहिं मि संमुच्छिमाहं परिवज्जियपज्जत्तीकमाहं ।
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि परमेणोगाहण णरविहत्थि ।
थलगब्भयदेहि तिगाउयाइं परमेण माणभावहु गयाइं ।
सुहुमहु बायरहुं मि धुवुं पवण्णु अंगुलअसंखभायउ जहण्णु ।

६ MBP दूण पि हु. ७ MB add after this: लवणोवहि कालोवहि सामें, सेस समुद्द (B सो समुद्द वि) वि दीवहु णामें.

14. १ M णवर सरी°; BP णव जि सरी°. २ BP वसंति. ३ P काहिं. ४ MBP पंच वि. ५ M विहत्थि; BP वियत्थि. ६ MPT विअत्थि. ७ MB धुउ; P धुव°; K धुवु.

6 दूण पि हू द्विगुणपृथवः; दा वि य णि य मु द्दा दर्शितनिजाकाराः. 10 *a* दु क र णो को वि शंखः. 11 *a* ति-क र ण वं तो खज्जरकः; *b* च उ क र णि ल्लो भ्रमरः.

14. 1 स री मु हे सु गङ्गादीनां समुद्रप्रवेशस्थानेषु. 2 दि स च्छ या दिशां प्रच्छादकाः. 5 *a* का ह मि केषांचित्. 7 *b* स या ह या इं शतगुणितानि. 9 *a* वि अ त्थि विगतास्थि. 10 *a* ति गा उ या इं तिस्रो गव्यूतयः.

घत्ता—जगि सुहुमणिगोयसमुब्भवहं अवि यसमत्तहुं ण वि रहिउ ॥
णिकिट्ठु कुसुमयंतें पहुणा उंत्तिमु जलयराहुं कहिउ ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे तिरिक्खोगाहणो णाम
दसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १० ॥
॥ संधि ॥ १० ॥

८ M णिकिट्ठकुसुमपयत्तें. ९ M उत्तम°; P उत्तमु. १० MBP तिरिक्खोगाहणा.

12 यसमत्तहुं य + असमत्तहुं अपर्याप्तानाम्. 13 णिकिट्ठु सर्वजघन्यम्.

XI

पुणु इंदियभेउ वम्महपसराणिवारएण ॥
भासियउ असेसु लोयहु रिसहभडारएण ॥ ध्रुवकं ॥

I

जाणइ सण्णिउ जो पज्जत्तउ पुट्ठउ सुणइ सद्दु [1]गयसोत्तिउ ।
णिल्लो[2]यणतिउ [3]पुट्ठपविट्ठउ रूवु[4] णियच्छइ अप्परिमट्ठउ ।
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ बारहजोयणेहिं सुइ पावइ ।
[5]सत्तेतालसहस्सइं दिट्ठिट्ठइं अवरु वि दोण्णि[6] सयइं तेसट्ठइं ।
चक्खिदियहु विसउ वक्खाणिउ जेहउ केवलणाणें जाणिउ ।
गंधगहणु [7]अइंवत्तसमाणउं सवणु वि जवणालीसंठाणउं ।
दिट्ठिइं[8] पडिम णिपज्ज मसूरी अक्खिय जीहे[9] खुरुप्पायारी ।
[10]हरियत[11]सदेहेसु पयासउ फासु अणेयरूवविण्णायउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

सूर्यात्तेज गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्रेर्विधोः
सौम्यत्वं कुसुमायुधाच्च सुभगं त्यागं बलेः संभ्रमात् ।
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डकवेर्वल्लभः ॥

M reads विधौ for विधोः; MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाच्च सुभग, and खण्डः कवेर्वल्लभः for खण्डकवेर्वल्लभः.

GK do not give it.

1. १ MP गयसुत्तउ; B गयसोत्तउ. २ MB णिल्लोयणु. ३ B तिउपुट्ठु. ४ MBP रूउ. ५ MBP सत्तेचालीससहसइं. ६ MBP बिण्णि. ७ MBP अइमुत्त°. ८ MBP दिट्ठिहि. ९ M जीय. १० BT सुहरिय°. ११ MB तसदेवेसु.

---

1. 3 *a* सण्णिउ समनस्कः, *b* पुट्ठउ स्पृष्टः; गयसोत्तिउ श्रोत्रगतः. 4 *a* णिल्लोयणतिउ नेत्रं विना त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणानि, पुट्ठपविट्ठउ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकाद्याकारघ्राणेन्द्रियप्रदेशैः स्पृष्टं गन्धादिकं जानाति; *b* अप्परिमट्ठउ अस्पृष्टम्. 5 *a* णवहिं जि भावइ नवयोजनात् स्पर्शं गन्धं रसं जानाति. 6 *a* दिट्ठिट्ठइं चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि. 8 *a* अइंवत्तसमाणउं अतिमुक्तकपुष्पाकारम्; *b* जवणालीसंठाणउं यवकणसम्बनालिकासदृशम्. 10 *a* °हरिय° वनस्पतिकायः.

समचउरंसु[12] ठाणु सुरसत्थहु हुंडु वि णारयगणहु अहत्थहु ।
मणुयतिरिक्खहु छ[13] प्पि पवुत्तइं भोयभूमिवियलहु पढमंतइं ।
खुज्जउ[14] वावणंगु णग्गोहउ उब्भासिउ तिरिक्खणररोहउ ।
एइंदिय णारइय[15] सुसंपुड- जोणिहिं होंति सकम्मसमुब्भड ।
वियलिंदिय वि वियडजोणीहव संपुड वियड होंति गब्भुब्भव ।
पासुय[16]जोणि देवणारइयहं मीसा गब्भणिवासें लइयहं ।
सीयलुण्ह उण्हेव हुयासहं ताहं विहि मि तिविहा पुणु सेसहं ।
मंथरगमणहं ससहरवयणहं संखावत्तजोणि थीरयणहं ।

घत्ता—तहिं जीव अणेय णउ लहंति संपुण्ण तणु ॥
णियकम्मवसेण होंति मरेप्पिणु जंति पुणु ॥ १ ॥

2

होंति अरुह कुम्मुण्णयजोणिहिं केसव राम चक्कि सुहखोणिहिं ।
अवरहिं जोणिहि रुहिरावत्तहि पायडजणवयवंसावत्तहि[1] ।
इंदियजुयल जियंति सहरिसइं मइं विण्णायउ बारहवरिसइं ।
तीइंदियहु मि राइविमीसइं एकुणवण्णास[2] जि किर दिवसइं ।
चउरिंदियहु आउ छम्मासिउ णिसुणहि पंचिंदियहु वि भासिउ ।
मच्छहु पुव्वकोडि उवइट्ठी कम्मभूमिभूयरहं मि दिट्ठी ।
वासहं बायालीससहासइं उरय जियंति जायजीयासइं[3] ।
पक्खिहिं ताइं दुसत्तरि भणियइं पलिओवमइं[4] तिण्णि परिगणियइं ।

१२ MB °चउरंम°. १३ MBP छ प्पि य उत्तइं. १४ K reads this line before line 12. १५ MBP णारयसुरसंपुड. १६ MBP फासुय°.

2. १ P °जणवइ. २ MBP एकुण°. ३ P °जीवासइ. ४ M °ओवम्मइ.

11 *b* अहत्थउ अधोलोकवर्तिनः. 12 *b* भोयभूमिवियलहु पढमंतइ अत्र यथाक्रमसंबन्धो भोगभूमिजानां प्रथमं समचतुरस्रसंस्थानं विकलेन्द्रियाणामन्त्य हुंडसस्थानम्, 14 *a–b* सुसंपुडजोणिहिं सवृतयोनौ. 16 *a* पासुय अचित्ता; *b* मीसा सचित्ताचित्ता. 17 *a* सीयलुण्ह केषांचिच्छीता केषांचिदुष्णा, उण्हेव हुयासहं तेजस्कायिकानामुष्णैव योनिः; *b* ताहं बिहिं मि देवनारकाणाम्, तिविहा शीता उष्णा मिश्रा च; सेसहं देवनारकतेजस्कायेभ्योऽन्येषाम्.

2. 3 *a* इंदियजुयल द्वीन्द्रियाः. 4 *a* राइविमीसइं रात्रिविमिश्रितानि. 6 *b* भूयरहं भूचराणाम्. 7 *b* आयजीयासइं जाता जीविताशा येषु तानि.

खेत्तावेक्खइ कहिं मि तिरिक्खहं एहउ उत्तमाउ पंचक्खहं ।
मायाविय कुपत्तदाणेण वि एए होंति अट्टझाणेण वि ।

घत्ता—इय कहिय तिरिक्ख एवहिं माणव वज्जरमि ॥
पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि ॥ २ ॥

3

तिरियलोय[1]मज्झत्थु सुहासिउ मणुउत्तरगिरिवलयविहूसिउ ।
जोयणाहं णरखेत्तु रवण्णउ पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ ।
जंबूदीउ सव्वदीवेसरु एक्कु लक्खु जोयणपरिवित्थरु ।
[3]छावीसाइं पंच अहिययरइं जोयणसयइं विहियणरणयरइं ।
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारें एरावउ भणु तेणायारें ।
उत्तरदाहिणाहं वेयड्ढहं पण्णास जि पिहुलत्तु गुणड्ढहं ।
पंचवीस उच्छेहु समासिउ एक्कु सहसु हिमवंतहु भासिउ ।
सहुं बावण्णहुं वित्थरु साहिउ सउ तुंगत्तें सिहरि वि साहिउ ।
पंचुत्तरसएण सहुं लक्खिय दोण्णि सहस हिमवइयहु अक्खिय ।
अवरहिरण्णवंतु तम्माणउ साहिउ दोहिं मि एक्कु पमाणउ ।
होइ महाहिमवहु रुंदत्तणु चउसहासअहियउ उद्धत्तणु ।
दोण्णि दहोत्तराइं धुवु सिट्ठउ [11]रुम्मियगिरिंदि वि तेत्तिउ दिट्ठउ ।

घत्ता—खेत्तहुं[12] गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो ॥
मा भंति करेज्ज वयणु ण चुक्कइ जिणवरहो ॥ ३ ॥

3. १ MBP तिरियलोउ. २ MBP एक्कलक्खु जोयणहं पवित्थरु. ३ MBP छव्वीसाइं. ४ MBP अइरावउ. ५ MB तेणुपयारें; P तेण पयारें. ६ MB पयासिउ; T पसाहिउ. ७ MB हइमवयहु. ८ MBP अवरु. ९ MBP एक्क°. १० MBP धुउ. ११ MBP रुम्मिहि दुविहु वि. १२ P खेत्तहु चउगुणु खेत्तु गिरि वि चउगुणु गिरिवरहो, T seems to have the same reading: खेत्तेत्यादि- क्षेत्राद्गुरुःगुणं (?) क्षेत्रं गिरेर्गिरिश्चतुर्गुणः.

12 णवइ छ षण्णवतिः, तथाहि- लवणोदकस्योभयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिश्चतुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदस्यापि.

3. 4 *a* अहिययरइं अधिकतराणि. 5 *b* तेणायारें तेन आकारेण. 6 *a* वेयड्ढहं विजयार्धानाम्. 8 *a* साहिउ साधिकः, *b* साहिउ कथितः. 10 *a* तम्माणउ तत्प्रमाणम्; *b* दोहिंमि द्वयोरपि हैमवत-हिरण्यवतोः.

4

चउसयाइं दिहंतिसहासइं एक्कवीस जोयणइं पयासइं।
अहियइं किं पि होंति हरिवरिसहु तं जि माणु रम्मयहु सहरिसहु।
अट्ठसयइं सोलहसहसालइं ताइं जि जाणहि बाएतालइं।
साहियाइं णिसिहहु पिहुलत्तणु सायरसयइं भणिउं तुंगत्तणु।
णीलिहिं तं जि ण कोइ णिवारइ विहिं मि विदेहहं रुंदिम ईरइ।
परमेसरु तेत्तीससहासइं उडुसयाइं चउरासीमीसइं।
अट्ठसयाइं सबायालीसइं अण्णु वि भणु पयारहसहसइं।
उत्तरकुरुसुरकुरुहुं पउत्तउ एउ माणु णउ ल्हसइ णिरुत्तउ।

घत्ता—छह खेत्तइं पम भोयभुत्तिसंतोसियइं ॥
इह जंबूदीवि तिण्णि जि कम्मविहूसियइं ॥ ४ ॥

5

पोमु णाम हिमवंतसरोवरु पंचसयाइं तासु परिवित्थरु।
एक्कु सहसु दीहत्तणु सुच्चइ दहजोयणइं गहीरिम वुच्चइ।
पयहु अक्खिउ आगमि जेत्तिउ सिहरिमहापुंडरियहु तेत्तिउ।
अवरु महाहिमवंतु वरिल्लउ ओइल्लहु विउणारउ भल्लउ।
तिविहेण वि गुणेण उवलक्खिउ णामु महापोमु जि मइं अक्खिउ।
तिंगिंछसरु वि णिसहासीणउं होइ महापोमक्खहु विउणउं।

---

4. १ MBP होंति किं पि. २ MB रुम्मयहु. ३ MBP बाइत्तालइ. ४ MBP णिसहहु. ५ MBP णीलहु. ६ BP तेत्तीस°.

5. १ MBP पोमणामु. २ MBP हिमवंति. ३ MBP उवरिल्लहु. ४ MBP ओलक्खिउ. ५ MB तिगिच्छि वि सरु; P तिगिंछि वि मरु. ६ MBP महापउमक्खहु.

---

4. 1 *a* दिहतिसहासइ अष्टसहस्राणि. 2 *a* अहियइ तद्योजनभागेनैकेनाधिकानि. 3 *b* बाएतालइं द्विचत्वारिंशत्. 4 *a* साहियाइ तद्योजनभागद्वयेनाधिकानि; *b* सायरसयइं चत्वारि शतानि. 6 *b* उडुसयाइं षट्शतानि; °मीसइं युक्तानि. 8 *a* °सुरकुरु° देवकुरव:, *b* ल्हसइ चलति न्यूनं भवति.

5. 4 *b* ओइल्लहु उपरितनस्य. 5 *a* तिविहेण विस्तारदीर्घत्वावगाहेन.

णिद्धणीलणयरायणिविट्ठउ तेवड्डु जि केसरिसरु दिट्ठउ ।
सोहइ रम्मरुम्मिकयठाणें पुंडँरीउ तहु अद्धपमाणें ।

घत्ता—सिरिहिरिदिहिकंतिकित्तिलच्छिणामालियउ ॥
देवीउ वसंति सरवरि सुंकयकीलियउ ॥ ५ ॥

6

पोममहापोमहं तिंगिंछंहं केसरिदोपुंडरियहं सच्छहं ।
जलपूरियगिरिकंदरदरियउ सुणसु महाणईउ णीसरियउ ।
गंगासिंधु रोहि भंगाली रोहियास मंथरगइ लीली ।
हँरि हरिकंत सीय सीओयय णारी णरकंता वि महोयय ।
कँणयकूँल रुप्पयकूलाली रत्ता रत्तोया वि झसाली ।
एयउ भणियउ चोँद्दह सरियउ वयगुणियउ सत्तरि वित्थरियउ ।
अड्ढाइज्जहं पंच जि मंदर बहुवेयड्ढखयरकुलसुंदर ।

घत्ता—वक्खारागिरिंद कुंडलरुजगिरि सुकारगिरि ॥
खेत्तंतहिं अत्थि बहुविहसिहरुद्धरियासिरि ॥ ६ ॥

7

जंबूदीवहु बाहिरि थक्कइं ठाणइं जाइं सहावामुक्कइं ।
पढम सुसंकिण्णइं पुणु रुंदइं ताइं होंति मंल्लयपडिछंदइं ।
कँयतिहेयगुणणें संजुत्तइं कम्मभोयभावेण विहत्तइं ।

७ P महापुडरीउ तह अद्ध°. ८ MK °दिहिकित्तिबुद्धिलच्छि°. ९ M सुहकयकीलउ; BP सुहकयकीलियउ.

6. १ MBP तिगिंछहं. २ B omits this line. ३ B omits this line. ४ P कसयकूल. ५ MP चउदह.

7. १ M सल्लइपडि°. २ B कयतिहेण गुणणे; P कयतिभेयगुणण्णे.

---

7 *a* °णयराय° नगराजः पर्वतः.

6. 3 *a* भंगाली कल्लोलयुक्ता. 9 खेत्तंतहिं क्षेत्राभ्यन्तरेषु.

7. 1 *b* ठाणइ अन्तर्द्वीपाः; सहावामुक्कइं अपरित्यक्तस्वरूपाणि. 2 *b* मल्लयपडिछंदइं शरावाकाराणि. 3 *a* °तिहेय° उत्तममध्यमजघन्याः, अधोमध्योर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा; *b* कम्मभोयभावेण कर्मभूमिभावः स्वचेष्टया फलाहारादिग्रहणं तेन.

लवणसमुद्दि अट्ठचालीसइं कालोयइ तेत्तियइं जि देसइं।
बहुजोयणसयमाणविसेसइं संति कुभोयभूमिआवासइं।
थीपुरिसइं दो दो रइरत्तइं भद्दसहावइं मणहरगत्तइं।
विगयाहरणइं णिच्चेलकइं कँण्हइं[3] धवलइं हरियइं सकइं।
रम्मइं सोमइं णिच्चपहिट्ठइं जिर्णणाहेहिं[4] जिणागमि सिट्ठइं[5]।

घत्ता—एक्को रुयधारि पुंछँधारि[6] तहिं सिंगधर॥
पुव्वादिसु होंति उत्तरदिसि णिब्भास णर॥ ७॥

8

सक्कुलिकण्ण कण्णपावरण वि लंबकण्ण ससकण्ण कुमणुय वि।
हरिमुह करिमुह झससामलमुह आदंसणमुह जैलहर[1] कइमुह।
सद्दूलाणण मेसविसाणण सत्तारहतरुहलरसमाणण।
सयल वि उज्जय पंकयलोयण एक्कोरुय गिरिमट्टियभोयण।
अट्ठारहजाईहिं रवण्णा छण्णवइहिं खेत्तेहिं विहिण्णा।
एक्कु जि पलिओवमु[2] जीवेप्पिणु होंति भवणवणवासि मरेप्पिणु।
हरिहिमलोहियपीयलवण्णा तिसुभोयभूमिवित्थिण्णा[3]।
हारदोर[4]कंकणकुंडलधर दिव्ववत्थ सिरवलइयसेहर।
मइरंगहिं वीणापडहंगहिं विविहविहूसणंगजुइअंगहिं।
भायण[5]भोयणंगभवणंगहिं अंबरदीवकुसुममालंगहिं।
एयहिं[6] कप्परुक्खहिं महि छज्जइ[7] भोउ[8] णिरंतरु मणुयहिं भुंजइ[9]।
अहममज्झिम[10]उत्तिमसुहसंगइं ललियसहावइं णिरु ललियंगइं।

३ MBP किण्हइं. ४ MBP जिणणाहेण. ५ MBB दिट्ठइं. ६ MBP पुच्छधारि.

8. १ P जलहरमुह कइ°. २ MPK पलियओवमु. ३ MBP °उप्पण्णा. ४ P °डोर°. ५ MBP भोयणभायणंग°. ६ MBP एहिं. ७ MBP रजइ. ८ B भाउ. ९ P भुजइ. १० BBP °भुत्तम°.

6 *b* भ द्द स हा व इं स्वभावमार्दवादियुक्तानि. 7 *b* स क्क इं रक्तवर्णानि.

8. 3 *b* स त्ता र ह त रु ह ल र स मा ण ण सप्तदशप्रकारास्तरुफलरसाहाराः. 4 *b* ए क्को रु य एकपादाः. 9 *a* म इ रं ग हिं मद्याङ्गैः.

एक्कु दु तिण्णि पल्ल जीवेप्पिणु होंति कप्पवासेसु चएप्पिणु[11] ।

घत्ता—तीसविह[12] पउत्त भोयभूमि धुअ मणुय जिह ॥
सइं कालवसेण अद्भुव[13] दहविह होंति तिह ॥ ८ ॥

9

दहपंचविह कम्मभूमाणुस अज्ज मेच्छ इच्छामाणियरस ।
मेच्छ चीण हुण पारस बब्बर[1] भासारहिय णिरूह णिरंबर ।
इड्डिअणिड्डिवंत अज्जणवर इड्डिवंत जिणवर चक्केसर ।
वासुएव वलएव महाबल चारण विज्जाहर उज्जलकुल ।
होंति अणिड्डिवंत णाणाविह लिविदेसिभासावक्खण बुह ।
जिणु अहमेण जियइ बाहत्तरि अहिउ सहसु वरिसइं जीवइ हरि ।
तहु अहिययरउ सीरि पउत्तउ सत्तसयाइं चक्कि णिक्खुत्तउ ।
पुव्वहं चउरासीलक्खेयहं परमाउसु जिणहरिबलरायहं ।
पुव्वकोडिसामण्णु वि थिरकरु जीवइ कम्मभूमिजायउ णरु ।
पक्खु मासु अयणइं संवच्छर के वि जियंति कईवय वासर ।
णर णिसट्टदवियंगकउग्गम ते सज्जो मरंति संमुच्छिम ।
गब्भेसु वि गलंति तणु लेप्पिणु अवर वि कइवय दियह जिएप्पिणु ।
उत्तमेण धणुलयहं णिसीहा पंच सवायइं सयइं पईहा ।
सत्तहत्थ चउहत्थ तिहत्थ वि णिकिट्ठेण पउत्त दुहत्थ वि ।
तम्हाओ वि होंति लहुययरा अइरहस्स वामण खुज्जयरा ।

घत्ता—मणुएसु ण होंति सत्तममहिणारय विसम ॥
जिह ए तिह ते उ वाउकायकयभावतम ॥ ९ ॥

११ MBP मरेप्पिणु. १२ P तीस वि इह उत्त. १३ MBP अद्धुय.

9. १ P वच्छर; but it records a *p* वब्बर. २ M अहउ. ३ M वरिसइं. ४ MBP °बल-एवइं. ५ B णिसइ°; P बिसइ°. ६ M धणुण्णयहं. ७ MB सवाइं सयाइं; P सयाइं सवाइं. ८ MB णाराय.

9 2 *b* णिरूह परस्परविवादरहिता निर्विचारा.. 7 *b* णिक्खुत्तउ निश्चितम्. 8 *a* एयहं एतेषाम्. 11 *a* णिसट्टदवियंगकउग्गम निसृष्टं प्रस्वेदादिद्रव्यं तस्मादुत्पन्ना.. 13 *a* णिसीहा नृसिंहाः, *b* पईहा प्रदीर्घाः. 15 *b* अइरहस्स अतिलघवः.

10

होंति के वि दूसहणिट्ठावस जोइसवणभवणंतहिं तावस ।
चरयपरिवायय बंभामर आजीव वि सहसारालय सुर ।
जंति तिरिक्ख वि तं जि जि वयहर णर सम्मत्ताराहणतप्पर ।
सावयवयहलेण सोलहमउ सग्गु लहइ माणुसु दुहविरमउ ।
रिसिवएहिं विणु पुणु तहु उप्परि को वि ण भुंजइ अहमिंदहं सिरि ।
सत्तुमित्ततणमणिसमचित्तें संजमेण सुद्धें चारित्तें ।
जिणलिंगेण होंति वयभरधर अभविय उवरिमगेवज्जामर ।
आ सव्वत्थसिद्धि णिग्गंथहं होइ सूइ सम्मत्तपसत्थहं ।
णारउ मरिवि ण णारउ जायइ सुरु वि ण सुरु मुणिणाहु विवेयइ ।
अमरु ण णरयहु णारउ सग्गहु वच्चइ सविहिविहंसियमग्गहु ।
होइ तिरिक्खु वि चउगइगामिउ जिह तिह माणउ दुक्खायामिउ
पमियाउहुं तिरियहुं तिरियत्तणु अविरुद्धउ मणुयहुं मणुयत्तणु ।

घत्ता—तिहिं गइहिं ण होंति मणुय तिरिक्ख सोक्खचुयहिं ॥
पलिओवमजीवि सग्गु लहंति सइंभुवहिं ॥ १० ॥

11

संखाउस जे जीवाहारिय अण्णोण्णेण वियारिय मारिय ।
सरिसव जंति पढम बीयावणि पक्खि तइय वालुप्पह दुहखणि ।
पुहइ चउत्थी जंति महोरय पंचमियहि केसरि मयमारय ।

10. १ MBPT चारय. २ MP जंत निरिक्ख त जि जि. ३ MBP वयधर. ४ MBP सव्वट्ठ°. ५ M दुक्खायामिउ. ६ MT सयभुवहिं.

11. १ P विमणस सरड पढम°. २ K वालुयपह. ३ P महोयर. ४ MP मिगमारय, B मियमारय.

---

10. 2 *a* चरयपरिवायय आहिंडिकपरिव्राजकाः, *b* आजीव काञ्जिकाहाराः, 8 *b* सूइ सूतिरुत्पत्तिः. 10 *b* सविहिविहंसियमग्गहु स्वविधिना हिंसादिविधानेन विध्वंसितः स्वर्गप्रापको धर्मलक्षणो मार्गो यस्य, देवैस्तु नरकाप्रापकधर्मारम्भकचेष्टितविधानेन नरकमार्गो विध्वंसितः. 11 *b* °आयासिउ पीडितः. 12 *a* पमियाउहु प्रमितायुषाम्. 14 सइंभुवहिं स्वोपार्जितपुण्यैः.

महिलउ छट्ठहि वि हुरक्कमियहि होंति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।
आयउ मघविहि लहइ णरत्तणु को वि अरिट्ठहि देसवयत्तणु ।
णिग्गउ अंजणाहि किर णिव्वुइ को वि कहिं मि पावइ पंचमगइ ।
सेलहि वंसहि घम्महि आइउ होइ को वि तित्थयरु महाइउ ।
णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु णउ लहंति णिम्मलु जसकित्तणु ।
सव्वत्थ वि माणुसु उप्पज्जइ एम पउत्तइ सुत्तु पउंजइ ।
राम उड्डगइ सोक्खहु सामिय केसव सव्व अहोगइगामिय ।

घत्ता—पडिसत्तु कयंत णउ णारायण पीणकर ॥
णरयहु णिग्गिवि होंति ण हलहर चक्कहर ॥ ११ ॥

12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ तिरियत्तु वि जिणबुद्धें बुद्धउ ।
बायरपुहइ तोय पत्तेयहं देवें चवेवि होंति किर एयहं ।
णउ लहंति सुरणियर सतामस पुण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।
अक्खमि णरयवासु भीसावणु णाणादुक्खलक्खदरिसावणु ।
पढमासीयहिं सिट्ठु सहासहिं पुणु बत्तीसहिं अट्ठावीसहिं ।
चउवीसहिं वीसहिं बिहिं अट्ठहिं अट्ठहिं णाणसहाउवइट्ठहिं ।
एम सहससंखाहिउ घणु भणु खरपंकयलक्खु जि मंदत्तणु ।
आयामु वि असंखु संखेवें पुहइहि पुहइहि अक्खिउ देवें ।
रयणसक्करप्पह वालुयपह पंकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्ठिहि. ६ MP हुरक्किमयहि. ७ K देसवइत्तणु; P सव्वइवइत्तणु. ८ P महावउ. ९ K माणउ सु.

12. १ B पत्तेय वि. २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहुं; B होंति समागय देवत्तहु कि वि; P देवत्तणु ण होइ किर एयहं. ३ MBPT पुण्णसलायत्तणु. ४ B सिद्धु समासहिं. ५ MB केवलणाण°; M records a *p* अट्ठहिं for केवल°. ६ B omits this foot; P reads it after 8 *b*; MBP add after this. सोलह चोरासी सहस जि गुणु, एक्केक्कउ जि लक्खु रुंदत्तणु. ८ MBP रयणप्पह सक्कर वालुप्पह.

11. 4 *a* हुरक्कमियहि दुःखव्यासायाम्. 5 *a* मघविहि षष्ठयाः; *b* अरिट्ठहि पञ्चम्याः. 6 *a* अंजणाहि चतुर्थ्याः. 7 *a* सेलहि तृतीयायाः; वंसहि द्वितीयायाः, घम्महि प्रथमस्याः.

12. 1 *a* तिहिं कायहिं पृथिव्यब्वनस्पतिभिः. 2 *a* पत्तेयहं प्रत्येकवनस्पतिकायानाम्. 3 *b* पुण्णसिलोयत्तणु पुण्यश्लोकत्वं शलाकापुरुषत्वं च. 6 *a* बिहिं अट्ठहिं षोडशभिः. 7 *a* घणु पिण्डः; *b* खरपंकयलक्खु खरभागे षोडश सहस्राणि पङ्कभागे चतुरशीतिसहस्राणि; मंदत्तणु पिण्डत्वम्.

अवर वि अंतिमिल्ल तमतमपह णिच्चपउंजियबहुणारयवह ।
एयउ घणतमजालणिरुद्धउ सत्त णरयधरणीउ पसिद्धउ ।

घत्ता—पुहईसु बिलाहं होंति सहावभयंकरहं ॥
घणतिमिरहराहं अगणियजोयणवित्थरहं ॥ १२ ॥

13

तीस पुणु वि पणवीस जि लक्खइं पुणु पण्णारह दावियदुक्खइं ।
दह पुणु तिण्णि एक्कु पंचूणउं लक्खु बिलाहं पंच अहिठाणउं ।
णारइयहं तहिं भत्थायरइं दंसियहरिकरिरूवियारइं ।
महिमयाइं परिमउलियवत्तइं हेट्ठामुहओलंबियगत्तइं ।
लोहकीलकंटालिकरालइं दुग्गंधइं दुग्गमतिमिरालइं ।
एत्थु सुकिण्हणीललेसावस उप्पज्जंति तिरिय अह माणुस ।
लेंति देहु सहसत्ति मुहुत्तें वेउव्विउ णिउत्तु हुंडत्तें ।
हवइ विहंगणाणु तहिं मेच्छहं अवहिसहावें जिणमयदच्छहं ।
कालिंगालपुंजसंणिहयर पयडियदंतपंति दट्ठाहर ।
विरइयभीमभिउडि रोसुब्भड कविलकेस परमारणकक्खड ।
जिह जिह ते मुणंति अप्पाणउं तिह तिह तं तं संभवठाणउं ।
दाढाभीसणु मुहुं णिव्वायइ अहवा पाउ किं ण किर घायइ ।

घत्ता—हेट्ठामुह झत्ति ते पडंति असिपत्तवणे ॥
सइं अण्णु हणंति अण्णहिं पडिहम्मंति रणे ॥ १३ ॥

९ B °भयकरइं १० MB °वित्थरइ

13. १ P बिलागइ. २ MPT अहठाणउ, B आहिठाणइ. ३ M णरइयह, BP णेरइयहिं. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ P °कटाल°. ७ P सुमरइ ठाणउं. ८ P कं ण ९ MB अण्ण.

---

13 बिलाह बिलानाम्

13. 2 *b* अहिठाणउ सप्तमनरक 3 *a* भत्थायारइ भस्त्राकाराणि. 4 *a* महिमयाइं पार्थिवानि. 5 *a* °कटालि° कण्टकपङ्क्ति°. 8 *a* विहंगणाणु विभङ्गज्ञानम् , *b* जिणमयदच्छहं जिनमतोच्छेदकानाम्. 9 *a* कालिंगाल° कृष्णाङ्गार°. 10 *b* °कक्खड निष्ठुरहृदया°.

14

णउ मज्झत्थु मित्तु उवयारिउ   जो जो दीसइ सो सो वइरिउ।
खेत्तसहाउ तेत्थु किं भण्णइ   जं सुयकेवलिसमु वि ण वण्णइ।
सूइणिह तणु दुद्धरु भूयलु   उण्हु सीउ दुद्धरु चंडाणिलु।
जं करेण लेंतहुं जि मरिज्जइ   वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ।
खंडियकरचरणाणणगत्तइं   रुक्खहं खग्गसमाणइं पत्तइं।
फलइं वज्जमुट्ठि व्व कढोरइं   वरि पडंति णिद्दलियसरीरइं।
महिहरकुहरहिं विप्फुरियाणण   खंति विउव्वणाइ पंचाणण।
कुहिणिउ जलणजालपज्जलियउ   जहिं वच्चइ तहिं खलयणु मिलियउ।
ण्हाइ जहिं जि तहिं दूमियपिंडइं   पूयरुहिरकिमिभरियइं कोंडइं।
जिहिं तिहिं पंचहिं पीडिवि धरियहु   ण्हायहु पूयदहहु णीसरियहु।

घत्ता—उक्कत्तिवि तासु दिज्जइ कत्ति णियासणउं॥
आयसवलयाइं सिहितावियइं विहूसणउं॥ १४॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणु   बइसइ जहिं जि तहिं जि सूलासणु।
भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइं   णीरसाइं फरुसाइं विरुद्धइं।
आहरियइं पुग्गलइं अकामहु   असुहत्तेण जंति परिणामहु।
णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइं   फंसइ जहिं जि तहिं जि खरसयणइं।
जं चक्खइ तं तं विरसिल्लउ   जं चिंतइ तं तं मणसल्लउ।
जं अग्घायइ तं कुणिमंगउ   णारयखेत्ति णउ काइं मि चंगउ।
उद्धसासु अइखासु जलोयरु   अच्छिकुच्छिसिरवियण महाजरु।

14. १ P दुत्तरु. २ MBP जें. ३ MBP कठोरइं. ४ M वर; P उवरि. ५ MBP महिकुहरंतरि. ६ MBPT दुम्मिय°. ७ MBP कुंडइं. ८ MBP कित्ति. ९ MBP °तावियउं.

15. १ P जहिं तहिं जि. २ MBP कुणियंगउ. ३ MB णरयखेत्ति. ४ MBP उद्धखासु.

14 3 *a* सूइणिह सूचीसदृशम्. 8 *a* कुहिणिउ मार्गाः. 9 *a* दूमियपिंडइं पीडितस्य शरीराणि. 11 कत्ति चर्म; णियासणउं परिधानम्. 12 सिहितावियइं अग्निना तापितानि.

15. 7 *b* °वियण वेदना.

संभवंति दुक्कियहलगेहइ सव्वउ वाहिउ णारयदेहइ ।

घत्ता—अणुमीलणु कालु सोक्खु ण लब्भइ किं पि जहिं ॥
सारीरउं दुक्खु काइं कहिज्जइ राय तहिं ॥ १५ ॥

16

हउं णारायणु पडिणारायणु हउं महिवइ होंतउ सुहभायणु ।
एंम भणंतु कयंतु व कुप्पइ माणसिएं दुक्खें संतप्पइ ।
दाणवणिवहहिं पडिचोइज्जइ जुज्झमाणु सो एम भणिज्जइ ।
तुहुं अणेण चिरभवि सरदारिउ वरमहिमहिलाकारणि मारिउ ।
विंझमहागिरिगिरुयपिंजरु सीहें एण हयउ तुहुं कुंजरु ।
पक्खि एण गिलिउ तुहुं विसहरु महिसें णेण दलिय तुहुं हयवरु ।
अविरलखरणहरेहिं णिरुद्धउ वग्घेणेण हरिणु तुहुं खद्धउ ।
हणु हणु एहु एम पच्चारिउ णं वाएण जलणु संचारिउ ।
जुज्झइ णारउ णारय गोंदलि णिवडमाणु कोंतासणि सव्वलि ।

घत्ता—कंपणकणयहिं लंगलमुसलहिं रिउ दलइ ॥
णियदेहु जि ताहं पहरणरूवहिं परिणमइ ॥ १६ ॥

17

अण्णें अण्णु सुसलें सलिउ अण्णें अण्णु मुसुंढिइ पेल्लिउ ।
अण्णें अण्णु तिसूलें भिण्णउ अण्णें अण्णु रहंगें छिण्णउ ।
अण्णें अण्णु हुआसणि घित्तउ अण्णें अण्णु पसु व्व विहित्तउ ।
अण्णें अण्णु खुरुप्पें खंडिउ अण्णें अण्णु वियारिवि छंडिउ ।

५ BP अणुमीलणकालु. ६ MBP सारीरिउ

16. १ MBP कुंतासणि. २ MBPK कप्पण°, but GT कपण°. ३ MP परिणवइ.

17. १ MBP सुसेल्लें. २ MBP मुसंढिइ. ३ MBP read this line as अण्णें अण्णु रहंगें छिण्णउ, अण्णें अण्णु तिसूलें भग्गउ. ४ MBP विहत्तउ

---

16. 3 *a* दाणवणिवहहिं दैत्यसमूहैः पडिचोइज्जइ प्रेर्यते. 8 *b* संचारिउ उद्दीपितः. 9 *a* गोंदलि संग्रामे मेलापके वा; *b* सव्वलि सर्वलोहमयी धार्या (?) तस्याम्.

अण्णहु अण्णे खग्गु विहाइउ　　तहु केरउ जि मासु तहु ढोइउ।
लइ[5] लइ एवहिं काइं णिरिक्खहि　　मृग[6] वराय मारिवि किं भक्खहि।
तउ अउ तंबउ सीसउ ताविउ　　अण्णहु मज्जु भणेप्पिणु दाविउ।
पिवसु पिवसु अरहंतु ण याणइ　　चंगउ कउलु तुज्झु वक्खाणइ।

घत्ता—उम्मग्गे जंति ण णिवारिय णिद्धम्ममइ ॥
परघरिणि रमंति जिह पइं रमिय णिबद्धरइ ॥ १७ ॥

18

अग्गिवण्ण तत्तिय[1] अइरत्ती　　लोहविणिम्मिय णं तुह रत्ती।
तिह एवहिं आलिंगहि माणिणि　　एह करिंदकुंभपीणत्थणि।
मण्णिवि णवजोव्वण परवाली　　अवरुंडहि सामरि कंटाली।
खेत्तुब्भउ मोणसु[2] तणुजायउ　　असुरोईरिउ अण्णोण्णायउ।
एउ एम पावोहें लइयहं　　पंचपयारु दुक्खु णारइयहं।
तेत्थु ण णारि ण पुरिसु सुयंसउ　　णग्गउ णिंदु असेसु णउंसउ।
पढमहि पुढविहि[3] णारयगत्तइं　　भयधणुतिरयणिछंगुलमेत्तइं।
बीयहि पण्णोरस[4] दोवारहं　　धणुरयणिउ अंगुलइं वियारहं।

घत्ता—भवहरदेहाउ पहरंतहु रणि रणरणइ ॥
गरुयारउ होइ णारयदेहु विउव्वणइ ॥ १८ ॥

19

तइयहि एक्कतीसधणुतुंगइं　　एक्करयणि भणु कयदुरियंगइं।
चोत्थियाहि रयणीदुयजुत्तइं[1]　　धुउ चावइं बासट्ठि पउत्तइं।
पंचमियहि धणुसउ पणवीसउ　　वड्डिउ वउ आवइ आभीसउ।

५ MP लइ तइ एवहिं. ६ MBP मिग.

18. १ MBP तत्ती. २ MBP माणुस. ३ MBP पुहरहि. ४ MBP पण्णारह.

19. १ B रयणीअजुत्तइं.

17. 5 *a* विहाइउ विभक्तः. 8 *b* कउलु चार्वाकः.

18. 3 *a* परवाली परस्त्री, *b* सामलि कूटशाल्मलीतरुः. 4 *a* माणसु मानासिकम्. 6 *b* सुयंसउ शोभनशरीरावयवः. 9 रणरणइ अरतिजनके.

छट्टियाहि चावइं[2] जिणभणियइं दोण्णि सयइं पण्णास जि गणियइं ।
देहुच्छेहु दुहोहदु[3]गमियहि पंचसयाइं होंति[4] सत्तमियहि ।
एक्कु पहिल्लइ दुक्कियदुज्जइ जलहिपमाणइं तिण्णि दुइज्जइ ।
तिज्जइ णरइ सत्त चोत्थइ दह सायराइं पंचमि सत्तारह ।
छट्टइ पुणु बावीस ण रहियइं सत्तमि तीस तिअहियइं कहियइं ।

घत्ता—कंदंत कणंत महिहि घुलंत सुहंतरिय ॥
जीवंति हयास णारय तिलु तिलु कप्परिय ॥ १९ ॥

20

ते जियंति अहमेण अरम्महि फुडु दहवरिससहासइं घम्महि ।
जं घम्महि उत्तिमु[1] तं वंसहि आउ जहण्णउं दलियसुहंसहि ।
जं वंसहि उत्तिमु तं सेलहि आउ जहण्णउं रउरवरोलहि[2] ।
जं सेलहि उत्तिमु णिद्दिट्ठउ अंजणाहि तं किर णिकिट्ठउ ।
जं अंजणाहि परमु पवियप्पिउ तं जि अरिट्ठहि अहमु वियप्पिउ[3] ।
जं जि अरिट्ठहि किर परमाउसु तं मघविहि देसिउ अविराउसु ।
जं पूरउ मघविहि दुहतवियहि तं आसण्णु मरणु माघवियहि ।
विकिरियासरीरविण्णासइं होंति[4] अहोहो दीहाउस्सइं ।
होंति[5] अहोहो रुंदइं विवरइं होंति अहोहो मंदइं तिमिरइं ।
होंति अहोहो रणइं दुवेक्खइं[6] होंति अहोहो तिव्वइं दुक्खइं ।

घत्ता—जुज्झंतहं ताहं पहरणकोडिहिं णिद्दलिय ॥
तणुलव लग्गंति सूयलवा[7] इव संमिलिय ॥ २० ॥

२ MBP चावइ ३ B °दुग्गमियहि. ४ PK होइ.

20. १ MBP उत्तमु and also elsewhere in this kadavaka. २ P °लोलहि. ३ MBP पयपिउ. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP दुपेक्खइं. ७P पारलवा.

19. 9 सुहंतरिय सुखरहिताः.

20. 2b °सुहंसहि °सुखाशायाम्. 8 b दीहाउस्सइं दीर्घाणि आयूंषि. 12 सूयलवा पारदस्य कणाः.

21

अक्खमि सुर दहवसुपंचविह वि सोलह दु णव पंचविह पुणरवि ।
पयहि रयणप्पहहि धरित्तिहि विवरंतरि बहुरइरसथत्तिहि ।
असुरवरहं चउसट्ठि समक्खइं णायघरहं चउरासीलक्खइं ।
बाहत्तरि लक्खाइं सुवण्णहं भवणहं भूरिभाससमाइण्णहं ।
दीवसमुद्दथणियतडिणामहं आसाणलकुमारवरधामहं ।
एक्केकहु लक्खाइं छहत्तरि अक्खइ एम मयणमयकेसरि ।
लक्ख णवइ लेसाहिय धीरहं आवासाहं समीरकुमारहं ।
कोडिउ सत्त दुहत्तरि लक्खइं पिंडीकयइं होंति पच्चक्खइं ।
भावणभवणइं एम पउत्तइं चउदह सोलह सहस णिरुत्तइं ।
भूयरक्खसावासविसेसइं वीणावेणुपणवणिग्घोसइं ।
अवराइं मि पविमलसिरिहारइ वणगयणयलजलहिसरितीरइ ।
वेंतरणयरइं अयरमणीयइं होंति गणंतहं संखाईयइं ।

घत्ता—जोयण सय सत्त अण्णु वि णवइ मुएवि धर ॥
णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिच्चर ॥ २१ ॥

22

अद्धकविट्ठसरिससंठाणइं संखारहियइं होंति विमाणइं ।
पंचवण्णरयणावलिखइयइं बाहल्लत्तें पुणरवि रइयइं ।
जोयणसइ खेत्तम्मि दहोत्तरि अयलइ माणुसलोयहु बाहिरि ।

21. १ MBP धगत्तिहि. २ MBP असुरघरइं. ३ MBP °भाइण्णह. ४ M बहत्तरि. ५ K चोद्दह. ६ K ।णउत्तइं. ७ MB परिमल°. ८ MBP सरितीरइ. ९ MBP विंतर°. १० MBP अइ°; K अय° but eorreets it to अइ°.

22. १ MBPT वाहालत्तें पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि. २ MBP जोयणसय°.

21. 3 *a* समक्खइं सर्वज्ञस्यावधिज्ञानिना वा प्रत्यक्षाणि. 4 *a* सुवण्णहं सुपर्णकुमाराणाम्; *b* भूरिभाससमाइण्णहं प्रचुरप्रभाससमाकीर्णानाम्. 5 *b* आसाणलकुमार° दिक्कुमाराणामग्निकुमाराणां च. 7 *a* लेसाहिय षडधिकाः. 10 *b* °पणव° पटहः. 11 *a* पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारके.

22. 3 *a* जोयणसइ खेत्तम्मि योजनशतक्षेत्रे.

अवरइं लंबियघंटायारें थियइं असंखदीववित्थारें ।
बत्तीस जि लक्खइं सोहम्मइ अट्ठावीसीसाणि सुरम्मइ ।
दुदहं सणकुमारि माहिंदइ अट्ठलक्ख परिभामियसुरिंदइ ।
अत्थि विमाणहं उवणियसोक्खइं बंभि सबंभुत्तरि चउलक्खइं ।
पण्णास जि लंतवि काविट्ठइ सहसइं होंति जिणाहिवसिट्ठइ ।
सुक्कमहासुक्कइ चालीस जि छह सयारसहसारहिं सहस जि ।
आणय पाणय आरण अच्चुय चउकप्पहिं सत्तसय संथुय ।
हेट्ठिमगेवज्जइ एयारह अवरु वि सउ सुरपवरागारहं ।
सत्तुत्तरु मज्झिमहि भणिज्जइ णवइ एक्कु उवरिमहि गणिज्जइ ।
णव जि णउत्तरि पंचाणुत्तरि पंच विमाणइं सोक्खणिरंतरि ।
चउरासीलक्खाइं णिकेयहं सत्ताणउदिसहासइं एयहं ।
एक्कीकयइं ण लेक्खिं विरुद्धइं अण्णु वि तेवीसइं लइ लद्धइं ।

घत्ता—गेहहं तुंगत्तु बिहिं कप्पहिं कवडेण विणु ॥
जोयणहं सयाइं उब्भमाणइं वज्जरइ जिणु ॥ २२ ॥

23

पंचसयाइं बिहिं मि उवरिल्लहिं चउ अड्ढ जि बिहि ताहं पेहिल्लहिं ।
उप्परि बिहिं चत्तारि सउद्धइं घरइं वरइं णाणामणिणिद्धइं ।
पण्णासयइं तिण्णि बिहिं अक्खमि सयइं तिण्णि पुणु बिहिं जि णिरिक्खमि।
पुणु चउकप्पहं हम्मुच्छेहउ अड्ढाइज्जसयाइं सरेहउ ।
पुणु दुइ दुइं दियड्ढु पुणरवि सउ पुणु पण्णास समीरिउ उच्छउ ।
पुणु उद्धत्तें उवरि विमाणइं पंचवीसजोयणइं पहाणइं ।

३ K अवरें. ४ MBP दोदह सणकुमारि ५ MBP सुबंभोत्तरि. ६ P काविट्ठइ. ७ MBP सत्तसवइं. ८ MP सत्ताणवदि°. ९ MBP लेक्खविरुद्धइ. १० P अण्णु वि पुणु तेवीसइ लद्धइ. ११ K तेवीस जि लइ. १२ K वज्जरिइ.

23 १ MBP अड्ढु. २ MBP पइल्लहिं ३ MBP सुरेहउ, K सुरेहउ but corrects it to सरेहउ. ४ MBP पुणु. ५ MBP दिवड्ढु.

6 *a* दुदह द्वादश.

23. 2 *a* चत्तारि सउद्धइं चतुःशतोर्ध्वानि. 4 *a* हम्मुच्छेहउ गृहस्योच्छ्रयः; *b* सरेहउ सशोभः.

सव्वट्ठहु चूलिय लंघेप्पिणु बारहजोयणाइं जाएप्पिणु ।
तम्मि तिलोयहु सिहरि णिसण्णी पणयालीसलक्खवित्थिण्णी ।
ससहरहिमणिहछत्तायारी सिद्धत्थत्ति भव्वयणपियारी ।
जोयणाइं जोइय णीसल्लें अट्ठमपुहइ अट्ठ बा[6]हल्लें ।

घत्ता—सविमाणहु मज्झि स[7]यणि महारुहि समयमणु ॥
उववादसहावे भिण्णमुहुत्तें लेंति तणु ॥ २३ ॥

24

मउडेहिं हारेहिं केऊर[1]दोरेहिं ।
कंचीकलावेहिं मंजीररावेहिं ।
भूसा[2]पहासेहिं अइसुरहिसासेहिं ।
वेउव्वियंगेहिं लक्खणपसंगेहिं ।
चउरंसठाणेहिं माणवणिवाणेहिं ।
अ[3]णमिसहिं णयणेहिं ससिसो[4]म्मवयणेहिं ।
विच्छिण्णतो[5]वेण पुण्णप्प[6]हावेण ।
कणयं व गयलेव जा[7]यंति खणि देव ।
णक्खाइं चम्माइं ण सिराउ रोमाइं ।
रत्ताइं पित्ताइं ण पुरीसमुत्ताइं ।
मीसियउ मासाइं ण वलासकेसाइं ।
मत्थिक्कसुक्काइं णउ अत्थि वोक्काइं ।
सोहग्गगेहम्मि देवाण देहम्मि ।

६ MBP बाहुल्लें. ७ MPT सयणु.

24. १ P °डोरेहिं. २ P °पसाहेहिं. ३ MBP अणिमिसहिं. ४ MBP °सोम°. ५ MBP °तावेहिं. ६ MBP °प्पहावेहिं. ७ MK जायत.

11 सयणि महारुहि शयने चित्रशालिकायां महार्हे; समयमणु समयमनुकृत्य प्रतिसमयं समयमारभ्य भिन्नमुहूर्तं यावत्तावत्कालेन परिपूर्णं शरीरं गृह्णातीत्यर्थः.

24. 5 *a* चउरंसठाणेहिं समचतुरस्रसंस्थानैः; *b* माणवणिवाणेहिं मानवाकारैः. 8 *a* कणयं व सुवर्णमिव. 11 *a* मीसियउ श्मश्रुः दाढिका; *b* वलास श्लेष्मा. 12 *b* वोक्काइं कालिजा (?).

उवहरकवाडाइं सहुं होंति वियडाइं ।
हरिसेण वग्गंति सहस त्ति णिग्गंति ।
सुरजोणिसंपुडहु मणिकिरणपायडहु ।
जय देव देविंद जय णाह चिरु णंद ।
एवं पघोसंति परियणइं तूसंति ।
सव्वहिं मि तणुमाणु उद्दिट्ठु जिणणाणु ।

घत्ता—असुरहं पणवीस दह सेसाहं सवंतरहं ॥
देहहु दीहत्तु सत्त जि धणु जोइसुरहं ॥ २४ ॥

25

बिहिं रयणीउ सत्त बिहिं छह भणु पुणु बिहिं पंच समुण्णउ सुरयणु ।
पुणु चउहुं मि चत्तारि जि गीयउ पुणरवि आहुट्ठ जि बिहिं णीयउ ।
तिण्णेव य रयणिउ सवियप्पहिं दहपंचमसोलहमयकप्पहिं ।
दो पुण अड्ढ पढमगेवज्जहि मज्झत्थियहि दोण्णि जंगपुज्जहि ।
होइ दियड्ढ रयणि उवरिल्लहि अमरवोंदिपरिमाणु सुहिल्लहि ।
णव पंचाणुत्तरहं मि सारउ एक्कु जि रयणि पउत्तु सरीरउ ।
अणिमामहिमालघिमापत्तिहिं ईसत्तणवसित्तगईसत्तिहिं ।
जुत्तकामरूवें कामाउर कीलालोललील सयरामर ।
णउ खुज्जय वामण वड हुंडय णारी पुरिस जि णउ ते पंडय ।
आईसाणकप्पसंभवणउं जावच्चुउ ता देविहिं गमणउं ।
भावणाइं णाणातणुधारा आईसाण कप्पपडिचारा ।

८ M णिरु.

25. १ MBP पुणु चहुं, T पुणु बिहि २ MBP जगि पुजहि. ३ MBP परमाणु. ४ MBP एक. ५ MB °मइसत्तहिं ६ MBP मयलामर. ७ MBP वावण. ८ M संढय. ९ MBP कायपाडि°.

14 *a* उवहर° वासगृहम्. 19 *b* उद्दिट्ठु जिणणाणु कथितं जिनज्ञानेन.

25. 1 *b* पुणु बिहिं पंच ब्रह्मब्रह्मोत्तरयोर्लान्तवकापिष्ठयोर्द्वयोर्द्वयो. कल्पयुगलयोः पञ्च रत्नयः. 2 *a* चउहुं मि शुक्रमहाशुक्रशतारसहस्रारेषु कल्पेषु, *b* आहुट्ठ अर्धचतुर्थ. 7 *b* गइ प्राकाम्यम्. 8 *b* सयरामर सकलामराः 9 *a* वड न्यग्रोधसंस्थाना., हुंड विकलावयवा; *b* पंडय नपुंसकाः. 10 *a* °संभवणउं उत्पत्तिः.

घत्ता—फासें पडिचारु सणकुमारमाहिंदरुह ॥
रूवेण करंति उवरिम चउकप्पय विबुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुब्भव सुरवर होंति सद्दपडिचार सुहंकर ।
वरि चउकप्पहिँ मणपडियारा एत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।
सप्पडियार णिप्पवि अणिंदहु अतुलसोक्खु णिहिलहु अहमिंदहु ।
अहमिंदहु पासाउ जिणिंदहु गयरायहुं तिरायवइवंदहु ।
कम्मि आउ तियसहं सुहसंगमु असुर जियंति एक्कु सायरसमु ।
णायहुं पल्लइं तिण्णि वियाणसु वणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।
अड्ढाइज्ज पल्ल सोवण्णहं दीवहं दोण्णि पुण्णपरिपुण्णहं ।
सेसहं होइ दिवड्ढु णिरुत्तउ चंदु जियइ लक्खें संजुत्तउ ।
एक्कु पल्लु सहुं सहसें वरिसहुं जीवइ दिणयरु वड्ढियहरिसहुं ।
एक्कु जि सुक्कु सएण समेयउ तारारिक्खहुं ऊणउ णेयउ ।
पंच सत्त पुणु णव एयारह तेरह पण्णारह सत्तारह ।
एक्कुण एक्कवीस तेवीस वि पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।
चउँत्तीसेक्कताल अडदाल वि पंचावण्ण जि पल्लइं जगरवि ।
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं आउ अच्चुयंतहं सुरविलयहं ।

घत्ता—बे सत्त दसेव चोद्दहठारह वि ॥
वीस जि बावीस उड्डु एक्कु वड्ढिमु केह वि ॥ २६ ॥

26. १ MBPK अतुलु. २ MB णिराय°. ३ MBP पल्ल परिपुण्णहं. ४ MBP चउतीसे°. ५ MBP अडताल. ६ P सच्चुयंतहं. ७ MBP चउदह छद्दह अट्ठारह. ८ MBP उड्डु एक्कु. ९ K कहमि.

---

26. 2 *a* वरि उपरि. 4 *b* तिरायवइवंदहुं त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम्. 8 *a* सेसहं विद्युदग्निवातस्तनितोदधिदिक्कुमाराणाम्. 10 *a* सएण समेयउ शतवर्षाधिकं पल्यमेकं शुक्रो जीवति; *b* ऊणउं किंचिदूनम्. 13 *b* जगरवि जगद्भास्करः. 14 *a* सतिलयहं सतिलकानां देवीनाम्; *b* सुरविलयहं सुरवनितानाम्.

27

ताम जाम तेत्तीससमुद्दइं सव्वट्ठम्मि आउ कयभद्दइं ।
कप्पहं कप्पाईयहं पहउ अक्खमि णाणविसेसु वि जेहउ ।
सक्कीसाणइं अवहि पधावइ जाम पढममहिमंतु विहावइ ।
पुणु दोसग्ग देव बीयहि तलु पेच्छंति वि जाणंति वि णिम्मलु ।
भणु चउकप्प तियस तइयावणि चउसंभूय चउत्थी मेइणि ।
आणयपाणय सुर पंचमियहि आरणच्चुयामर छट्ठमियहि ।
णव गेवज्ज मुणंति महंतउ ताम जाम सत्तमणरयंतउ ।
सुद्धइ ओहिइ अणुदिस सुंदर तिजगणाडि पेक्खंति अणुत्तर ।
उप्परि णियविमाणचूडामणि जा ता देव मुणंति महागुणि ।
पंचवीस जोयणइं वणेसहं संखाजुत्तइं जोइसवासहं ।
अवरु वि हवइ ओहि कयसमरहं गणियउ जोयणकोडिउ असुरहं ।
जिह असुरहं तिह रिक्खहं तारहं चंदहं सूरहं गुरुअंगारहं ।
सुक्कइ पुणु मेइं अक्खिउ भल्लउ संखाहिउ ओहिविसउल्लउ ।

घत्ता—णारय वि मुणंति जोयणेक्कु रयणप्पहहि ॥
गाउय अद्धद्धु होइ हाणि सेसेहि महिहि ॥ २६ ॥

28

कम्माहारु असेसहं जीवहं णोकम्माहरु वि भवभावहं ।
लेवाहारु वि दीसइ रुक्खहं कवलाहारु णरोहतिरिक्खहं ।

27. १ MBP तेतीस°. २ MBPT सव्वट्ठहमि. ३ MBP °महिअंतु. ४ K छमियहि. ५ P ते जिगणाडी. ६ MBP अवर. ७ P वहइ. ८ MB तिक्खहं. ९ MBP सइं. १० MP सखाई ओहीविसयल्लउ; B संखाईउ ओहिविसयल्लउ. ११ MBP जोयणेक्कु. १२ M णीसेसहि.

28. १ B लेवाहारु.

27. 1 *b* सव्वट्ठम्मि सर्वार्थसिद्धौ; कयभद्दइ कृतसौख्यानि कृतकल्याणानि वा. 3 *a* पधावइ प्रवर्तते; *b* °महिमंतु पृथिव्या अन्तः. विहावइ विभावयति जानाति. 8 *a* अणुदिस नव अनुदिशदेवाः. *b* अणुत्तर पञ्च अणुत्तरदेवाः. 10 *a* वणेसह व्यन्तराणाम्. 11 *a* कयसमरहं नारकयुद्धकारिणाम्. 13 *b* ओहिविसउल्लउ अवधिज्ञानविषयः.

28. 1 *b* णोकम्माहारु षण्णां पर्याप्तानां त्रयाणां शरीराणां योगपुद्गलादानं नोकर्माहारः; भवभावहं शरीरयुक्तानाम्.

ओजोहारु पक्खिसंघायहं मणभोयणु चउदेवणिकायहं ।
अहमिंद वि करंति तेत्तीसहिं वोलीणहिं वरवरिससहासहिं ।
बत्तीसेक्कत्तीस पुणु तीसहिं एक्कुणतीसहिं अट्ठवीसहिं ।
एक्केक्कउ जि एम पडिहम्मइ सोलहमे बावीसहिं जिम्मइ ।
आउणिबंध महोवहिसंखहिं णीससंति तेत्तियहिं जि पक्खहिं ।
पल्लजीवि पुणु भिण्णमुहुत्तें णीससंति अह ताहं पुहत्तें ।
ऊससंति केइ वि पक्खेण जि असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।
सरसइं सुरहियाइं अइमिट्ठइं सुहुमइं सुद्धइं णिद्धइं इट्ठइं ।
आहरंति दवियाइं सइत्तें परिणमंति सहस त्ति तणुत्तें ।

घत्ता—संसारिय जीव चउविह चउगइभिण्ण जिह ॥
इंदियभेएण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

काएं छव्विह चवलथिरेण वि तिविह तिविहजोएं वेएण वि ।
जलणिहिविहे वि कसाएं जाया अट्ठभेय णाणें विण्णाया ।
संजमदंसणेण तिचउव्विह लेसापरिणामेण वि छव्विह ।
भव्वत्तेण विविह सम्मत्तें सण्णि असण्णी दो सण्णित्तें ।
आहारें आहारिय जे जे चउसु वि गइसु परिट्ठिय ते ते ।

२ MBPK ओजाहारु. ३ MBP तेतीसहिं. ४ MBP °सेक्कतीस. ५ MBP पविहम्मइ. ६ MBPK सोलहमइ. ७ MBP आउ णिबद्धु. ८ MBP पुणु. ९ MBP केइ जि पक्खेण वि. १० MBP सहसेण वि.

29. १ MBP छव्विह थिरेण तसेण वि; T चवलछिरेण चपलस्वभावानां स्थिरपृथिव्यादीनाम्. २ MBP °विह व. ३ MB कसायं. ४ MBP असण्णि दोण्णि.

3 *b* मणभोयणु मानसाहारः. 4 *b* वोलीणहिं व्यतिक्रान्तैः. 6 *a* पडिहम्मइ प्रतिहन्यते. 8 *b* अह ताहं पुहत्तें अथवा तेषां भिन्नमुहूर्तानां पृथक्त्वेन आगमभाषया त्रयाणामुपरि नवानामधः निश्वसन्ति. 9 *b* असंति अश्नन्ति भोजनं कुर्वन्ति. 11 *a* दवियाइं पुद्गलद्रव्याणि; सइत्तें स्वचित्तेन; *b* तणुत्तें तनुरूपेण.

29. 1 *a* काएं छव्विह षड्जीवनिकायेन; चवलथिरेण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च. 2 *a* जलणिहिविह चतुर्विधाः; *b* अट्ठभेय णाणें पञ्चज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि तैरष्टभेदः. 3 *a* संजमेत्यादि— त्रयः संयमासंयमसंयमासंयमाः; तथा चत्वारः क्षायिकौपशमिकासंयमाः अथवा सामायिकच्छेदोपस्थापनसूक्ष्मसंपरायययथाख्याताः परिहारविशुद्धेरभावात्; दंसणेत्यादि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशमिकक्षायोपशमिकानि; तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि. 4 *a* भव्वत्तेण विविह भव्याभव्यौ द्विविधौ.

केवलिसमुहय विग्गहगइगय अरुह अजोइ सिद्ध परमप्पय ।
ते ण लेंति आहारु वियारिय सेस जीव जाणहि आहारिय ।
मग्गणठाणइं चोद्दहभेयइं णिसुणहि गुणठाणाइं मि पयइं ।
मिच्छादिट्ठि पहिल्लउं गीयउं सासणु बीयउं मीसु वि तीयउं ।
अविरयसम्माइट्ठि चउत्थउं पंचमु विरयाविरउ पसत्थउ ।
छट्ठउ पुणु पमत्तसंजमधरु सत्तमु अप्पमत्तु गुणसुंदरु ।
अट्ठमु होइ अउव्वु अउव्वउं अणियत्तिल्लउ णवमु अगव्वउं ।
दहमउं सुहुमराउ जाणिज्जइ एयारहमुवसंतु भणिज्जइ ।
बारहमउ परिखीणकसायउ तेरहमउं सजोइजिणु जायउ ।
उज्झियतिविहसरीरभरंतरु उवरिल्लउं अजोइ परु अक्खरु ।

घत्ता—णारय चत्तारि चत्तारि जि पुणु सुरपवर ॥
तिरियंच वि पंच णीसेसंम्मि चउंति णर ॥ २९ ॥

30

कम्मविहम्ममाण ससरीरा सासयकरणुज्जय विवरेरा ।
दंसणणाणसहावपहट्ठा होंति जीव उक्किट्ठणिकिट्ठा ।
ताहं चेट्ठ जा होइ समासम सा तद्दलियगहणभावक्खम ।
जेम तेल्लु सिहिसिहपरिणामहु तेम कम्मपोग्गलु वि णिसामहु ।
जीवें लइयउ जाइ जियत्तहु तिव्वकसायरसेहिं पमत्तहु ।

५ MBPK चउदह° ६ MBPK मिच्छाइट्ठि. ७ MBP °संजमहरु. ८ MBP आणियट्टिल्लउ णवउं. ९ MBP परिहीण°. १० MBP णीसेसह मि.

30. १ MBP कम्मु पोग्गलु. २ MB जाय जियत्तहु; P जियंतहु.

6 *a* केवलीत्यादि—केवलिनो यदा समुद्घातं कुर्वन्ति दण्डकपाटप्रतरपूरणत्वेन त्रैलोक्यं भरन्ति तदाष्टसमयादनाहारकाः, अन्यदा आहारका एव. 10 *b* विरयाविरउ विरताविरतो देशसंयतः. 12 *a* अउव्वउं अनुपमम्, *b* अणियत्तिल्लउ अनिवृत्तिकरणम्. 13 *a* सुहुमराउ सूक्ष्मसांपरायम्; *b* उवसंतु उपशान्तकषायम्. 15 *a* °तिविहसरीर° औदारिकं तैजसं कार्मणं च; *b* अक्खरु अविनश्वरं सिद्धस्वरूपम्.

30. 1 *a* ससरीरा संसारिणः; *b* सासयकरणुज्जय शाश्वतकरणाः शाश्वतपरिणामास्तेषूद्यताः; विवरेरा विपरीताः; सिद्धा इत्यर्थः. 3 *a* चेट्ठ चेष्टा मनोवाक्कायव्यापारः; समासम प्रशस्ता अप्रशस्ता च; *b* तद्दलियेत्यादि–तया शुभाशुभचेष्टया दलितो विभक्तः अनेकप्रकारः योसौ ग्रहणभावः कर्मादानपरिणामः तत्र क्षमाः समर्थाः. 5 *a* जाइ जियत्तहु जीवत्वं गच्छति.

जिह सिहिभावहु वच्चइ इंधणु तिह कम्मेण जि कम्महु बंधणु ।
असुहें असुहु सुहें सुहु संधइ सिद्ध[3]भडारउ किं पि ण बंधइ ।
अभव जीव जिणणाहें इच्छिय एक्कु ण ते वि अणंत णियच्छिय ।
मइसु[4]ओहिमणपज्जव केवल णाणावरणविमुक्क सु[5]णिक्कल ।
णिद्दाणिद्दा पयलापयला थीणगिद्धि णिद्दा पुणु पयला ।
चक्खुअचक्खुदंसणावरणउ अवही केवलदंस[6]णवरणउ ।
तेहिं विणासिउ णवसंखायउ वेयणीयदुगु सायासायउं ।
दंसणमोहणीउ सम्मत्तु वि मिच्छत्तु वि सम्मामिच्छत्तु वि ।
दुविहु चरित्तमोहु विक्खायउ णोकसाउ णामेण कसायउ ।
तं कसायजायउ सोलहविहु इयरु भणेसमि पच्छइ णवविहु ।
पढमकसायचउक्कु सुभीसणु सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थ[7]यरु ॥
उवसमहुं ण जाइ जइ वि पबोहइ तित्थयरु ॥ ३० ॥

31

अवरु अपच्चक्खाणु गुरुक्कउ पच्चक्खाणु च[1]उक्कु विमुक्कउ ।
संजलणु वि जलंतु उल्हा[2]विउ थीपुंसंढराउ उ[3]ड्डाविउ ।
भ[4]यरइयरइदुगुंछउ जित्तउ हासु वि स[5]हुं सोएण णिहित्त[6]उ ।
सुर णर ण[7]रय तिरिय चउआउ वि बायालीसविहेयउं णाउं वि ।
गइणामउ वि जा[8]इणामु वि भणु तणुणामउं पुणु तणुहि णिबंधणु ।
तणुसंघाउ तणुहि संठाणउं त[9]णुअंगोअंगु वि णामाणउं ।

३ MBP सिद्धु भडारउ; K सिद्धभडारउ but corrects it to सिद्धु. ४ MBP °सुइओहि°. ५ MBP सुणिम्मल. ६ MBP °दसणहरणउ. ७ K दुक्खयरु but corrects it to दुत्थयरु.

31. १ MBP चउक्क. २ P उण्हाविउ. ३ MBPT उद्दाविउ. ४ MBP भइरइअरइ°. ५ MBP सह. ६ P विहित्तउ. ७ P णिरय. ८ MBP जाइणाउ. ९ MBP तणुअंगोवंगु वि णिम्माणउ.

7 *a* संधइ उपार्जयति. 17 दुत्थयरु दुःखतरः.

31. 1 *b* विमुक्कउ विमुक्त सिद्धैः. 2*b* °राउ उड्डाविउ °भाववेदः क्षपितः. 3 *b* णिहित्तउ विनिक्षिप्तः. 4 *b* बायालीसेत्यादि—पिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशन्नामप्रकृतयः. 5 *a* गइणामउ नरकतिर्यङ्मनुष्यादिगतिनाम. 6*b* णामाणउं निर्माणम्.

तणुसंघंडणु[१०] वण्णगंधिल्लउं[११] रसणामउं अवरु वि फासिल्लउं ।
आणुपुव्वि अगुरुलहु[१२] लक्खिउ उवघाउ वि परघाउ वि अक्खिउ ।
ऊसासु वि आदाउज्जोयउ[१३] अण्णु विहायगइ वि तसकायउ ।
थावरु थूलुसुहुमु पज्जत्तउ अण्णु वि मण्णिउं अप्पज्जत्तउ[१४] ।
पत्तेयंगणाउं साहारणु थिरु अथिरु वि सुहणाउं सकारणु ।
असुहु सुभगु दुब्भगु सुसरिल्लउ दुस्सरु आदेज्जउ जगि भल्लउ ।
णाउं अणादेज्जउ जसकित्ति वि तित्थयरत्तु णिमिणु मलकित्ति वि ।

घत्ता—चउगइजम्मेण गइणामउं अट्ठविहु ॥
इंदियइं गणेवि जाइणामु भणु पंचविहु ॥ ३१ ॥

32

हणिवि पंच णामइं पंचविहइं एक्कु तिभेयउ दो[१] दो दुविहइं ।
दो छह पुणु दो चउ अट्ठविहइं उच्चारुयइं जाइं एक्कविहइं ।
समलामलइं दोण्णि जगि गोत्तइं ताइं मि जेहिं दूरि परिचत्तइं ।
दाणभोयउवभोयणिवारउ वीरियलाहु[२] हेउसंघारउ ।
अंतराउ पंचविहु धुणेप्पिणु अडयालीसउं सउ विहुणेप्पिणु[३] ।

१० K संघदणु. ११ P वण्णु गंधिल्लउ. १२ MBP अणुपुव्विय अगरुगलहु. १३ MBP आदाउज्जोयउ. १४ MB अप्पज्जत्तउ.

32. १ M दो पुण दुविहइं. २ MBP °लाह°, K लाहु but corrects it to लाह. ३ MBP विहुणेप्पिणु.

9 *a* आदाउ आताप· 12 *b* आदेज्जउ दीप्तिसहितम्. 13 *a* अणादेज्जउ अनादेयम्; *b* णिमिणु निर्म नीचम्; मलकित्ति अयश-कीर्ति 14 अट्ठविहु चतुर्भेदं चतुर्गतिरित्यर्थः. 15 जाइणामु एकद्वित्रिचतुः-पञ्चेन्द्रियजातिनाम, पंचविहु पञ्चप्रकारम—तथाहि, औदारिकवैक्रियिकाहारकतैजसकार्मणशरीरनाम पञ्चविधम्.

32. 1 *a* पंच णामइं पंचविहइं औदारिकादिशरीरनिबन्धननामानि पञ्च, तथा औदारिकादिशरीराणां संघातनामानि पञ्च, तथा कृष्णनीलश्वेतरक्तपीतवर्णनामानि पञ्च, तथा कटुतिक्तकषायाम्लमधुररसनामानि पञ्च; इति पञ्च नामानि पञ्चविधानि, *b* एक्कु तिभेयउ औदारिकवैक्रीयकाहारकशरीराङ्गोपाङ्गनाम त्रिभेदम्; दो दो दुविहइं सुरभिदुरभिगन्धनाम प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिनाम च. 2 *a* दो छह समचतुरस्रवल्मीकन्यग्रोधकुब्जवामनहुंडस्थान-नाम षड्विधम्, वज्रर्षभनाराचवज्रनाराचनाराचअसंप्राप्तासृप्टादिकादिसंघट्टननाम च षड्विधम्; दो चउ नरक-गत्यादिनाम नरकगत्याद्यानुपूर्वीनाम च चतुर्भेदम्, अट्ठविहइं कर्कशमृदुगुरुलघुशीतोष्णस्निग्धसूक्ष्मस्पर्शनामान्यष्ट-विधानि.

पयडिहिँ माणवंगु मेल्लेप्पिणु सुद्धसहाउ सइंभु लहेप्पिणु ।
जे गय जीव परमणिव्वाणहु दुहविरहिहु सासयठाणहु ।
चरमसरीरमाण किंचूणा ववगयरोयसोय अविलीणा ।
णिम्मल णिरुवम णिरहंकारा जीवदव्वघण णाणसरीरा ।
उड्ढगमणसहावें गंपिणु उड्ढलोउ सयलु वि लंघेप्पिणु ।
अट्ठमपुहईवट्ठि णिविट्ठा अभव जीव जिणदेवें दिट्ठा ।

घत्ता—ते साइ अणाइ दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥
ते पुणु ण मरंति णउ पडंति संसारमुहे ॥ ३२ ॥

33

णउ बाल णउ वुड्ढ णउ मुक्ख सुवियड्ढ ।
णीसास णित्ताव णिग्गाव णिप्पाव ।
णाणंग णिम्मेह णिण्णेह णिद्देह ।
णिक्कोह णिल्लोह णिम्माण णिम्मोह ।
णिव्वेय णिज्जोय णीराय णिब्भोय ।
णिद्धम्म णिक्कम्म णिच्छम्म णिज्जम्म ।
णीराम णिक्काम णिव्वाह णिद्धाम ।
णिव्वेस णिल्लेस णिग्गंध णिप्फास ।
णीरस महाभाव णीसद्द णीरूव ।
अव्वत्त चिम्मेत्त णिच्चिंत णिव्वित्त ।
ण छुहाइ घेप्पंति ण तिसाइ छिप्पंति ।
ण रुयाइ झिज्जंति ण रईइ सिज्जंति ।

४ B सिद्धसहाउ. ५ MBP सयभु. ६ MB गय परम जीव. ७ MBP दुक्खविमुक्कहु. ८ K उड्ढं गमणु. ९ K अट्ठमि.

33. १ P णीसास. २ MBP णीताव. ३ MBP रुवाइ.

6 *a* माणवंगु नरशरीरम्, *b* सइंभु सहजः. 8 *b* अविलीणा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपाः. 11 *a* °वट्ठि °पृष्ठे. 12 साइ अणाइ अनादिसादिकालद्वयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्यार्थिकनयापेक्षया वा.

33. 3*a* णिम्मेह निर्मेधसः पञ्चेन्द्रियज्ञानरहिताः केवलज्ञानिनः. 8*a* णिव्वेस निर्द्वेषाः. 12 *b* सिज्जंति पीड्यन्ते.

णाहारु भुंजंति ओसहु ण जुंजंति ।
ण मलेण लिप्पंति ण जलेण धुप्पंति ।
णिदं ण गच्छंति अणयेणा वि पेच्छंति ।
अमणा वि जाणंति सयरायरं झत्ति ।
सिद्धाण जं सोक्खु तं कहइ चम्मक्खु ।
किं माणवो को वि सुरु खयरु देवो वि ।

घत्ता—पंचिंदियमुक्क परमप्पइ हूयँउ विमले ॥
जं सिद्धहं सोक्खु तं णं वि कासु वि भुवणयले ॥ ३३ ॥

34

एहा दुविह जीव मइं अक्खिय कहमि अजीव वि जेम णिरिक्खिय ।
धम्मु अधम्मु दो वि रूवुज्झिय आयासें कालें सहुं बुज्झिय ।
गइठाणोग्गहवत्तणलक्खण के वि मुणंति सुणाण वियक्खण ।
संतु अणाइ समउ वट्टंतउ तीउ कालु अगामि अणंतउ ।
तासु ठाणु भण्णइ णरलोयउ धम्माधम्महं सव्वतिलोयउ ।
विहिं मि लोयणहमाण वियप्पउ आयासु वि अणंतु सुसिरप्पउ ।
तं जि अलोउ जोइपण्णत्तउ पोग्गलु होइ पंचगुणवंतउ ।
सद्दें गंधें रूवें फासें जुत्तउ भिण्णवण्णविण्णासें ।
खंधु देसु अद्धद्धपएसु वि परमाणुउ अविहाइ असेसु वि ।

घत्ता—तं सुहुमु वि थूलु थूलुसुहुमु पुणु थूलु भणु ॥
थूलाण वि थूलु चँउपयारु महुं मुणइ मणु ॥ ३२ ॥

४ B भुजति, P हुजति and gloss योजयन्ति. ५ MBP अणयण जि. ६ MBP सुरु. ७ MBP हूयइ. ८ MBP णउ.

34, १ MBP रूउज्झिय. २ P वट्टतउ. ३ MB तीयउ, P तइयउ. ४ MBP धम्माहम्महं सयलु. ५ MBPK माणु वि अप्पउ, T लोयणमाणु. ६ MBP अद्धद्धु. ७ M सुहुमुसुहुमु तह सुहुमु वि पुणु; B चउपयारु सुहु मुणइ मणु, P सुहुमु सुहुमु तह सुहुमु पुणु

19 परमप्पइ परमपदे मोक्षस्थाने.

34. 4 *a* संतु मान्तः, अणाइ अनादिः; समउ वट्टंतउ वर्तमान. कालः समयः. 5 *a* तासु उक्तव्यवहारसमयस्य. 6 *a* लोयणहमाण लोकाकाशपरिमाणम्; *b* सुसिरप्पउ शुषिरस्वरूपम्. 9 *b* अविहाइ अविभाज्यः.

35

गंधु वण्णु रसु फासु संसद्दउ सुहुमु थूलु वज्जरइ समद्दउ ।
थूलुसुहुमु जोण्हाछायाइउ थूलु सलिलु वीरेण णिवेइउ ।
थूलुथूलु पुणु धरणीमंडलु सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मलु ।
सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं मणभासावग्गणपरिणामइं ।
वण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं परिणमंति संजोयविओयहिं ।
पूरणगलणसहावाणिउत्तइं पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।
भासिज्जंतउ परमजिणिंदें णिसुणिवि धम्मु सुधम्माणंदें ।
वसहसेणु सुहभावें लइयउ पुरिमतालपुरवइ पव्वइयउ ।
सोमप्पहु सेयंसणरेसरु थिउ पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।
इय रिसहहु परिमुक्कविसाया णिव चउरासी गणहर जाया ।
बम्ही सुंदरि अज्जिय संघहु कंतियाउ जायाउ महग्घहु ।
दंसणमोहणीयपडिरुद्धउ एक्कु मरीइ णेय पडिबुद्धउ ।
तावस कंदाहारु मुएप्पिणु थिय कच्छाइय रिसिव्वउ लेप्पिणु ।
मोक्खमग्गगामिहि परमेसरु हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥
भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत पैंइ जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महावत्थुणिद्देसो णाम
एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥
॥ संधि ॥ ११ ॥

35. १ M सुसद्दउ. २ MBP add after this: सुहुमुसुहुमु परिमाणुविसेसइं; लग्गहिं णिवडवि अप्पपएसइं. ३ P पव्वइयउ. ४ MBP सेयसु णरेसरु. ५ MBP बंभी. ६ K °परिरुद्धउ. ७ MBP पइ; K पइ but corrects it to एइ and gloss एतस्मिन् जिने.

35. 1 *b* समद्दउ मार्दवयुक्तः उपशमार्द्रो वा. 4 *a* सणामइं ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि. 12 *b* एक्कु मरीइ एको भरतपुत्रो मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्तः, 16 एइ जिणि एतस्मिन् जिने.

XII

अरिवरणिद्दारणि खत्तुद्धारणि तिजगलच्छिविजयाणउं ॥
विहलियसाहारणि मेइणिकारणि भरहें दिण्णं पयाणउ ॥ १ ॥

I

छुडु छुडु सरयागमि अप्पमाणु णहु णाइं धोयहरिणीलभाणु ।
णं दीसइ ओमंन्थिउ अपण मरयभ्भद्धहियखंडहुं कपण ।
णं जगहरि णीलुल्लोउ बद्धु तारामोत्तियझुंबुक्कणिद्धु ।
अइ दसं वि दिसा सइं गयरयाइं णं चारित्तइं सज्जणकयाइं ।
ससिकुंभगलियजोण्हाजलेण पक्खालियाइं णं णिम्मलेण ।
णिड्डहंइ कमलु सरए ससंकु तहु तेण जि लग्गउ पिंडपंकु ।
सो अज्ज वि दीसइ मलविरुद्धु णियडिंभपराहवि को ण कुद्धु ।
तेण जि रोसें रवि तिव्वु तवइ सररुहसुहि किं चिक्खिल्लु खवइ ।
पंकक्खइ सुक्कइ णलिणणालु अइउग्गत्तणु बंधवहं कालु ।
कुवलयदिहिगारउ णाइं राउ कयबंधुजीवसुच्छायभाउ ।
तरु कुसुमामोएं महमहंति रयकविलइं सलिलइं वणि वहंति ।
अलि रुणुरुणंति पावाहपिंड महुमत्ता णं गायंति सोंड ।

घत्ता—सारयमयलंछणु रुइरंजियजणु जँइ मयमलिणु ण होंतउ ॥
तो हुँउं कयसंतिहि जिणजसयंतिहि एहु जि उप्पउं देंतउ ॥ १ ॥

1. १ MPT खंत्तुद्धारणि but gloss क्षत्रियधर्मप्रकटने. २ MBP दिण्णु. ३ P ओम्मात्थिउ. ४ P अइदिस°. ५ MBP णिद्दहइ. ६ MBP बिंबि पंकु. ७ MBP सुक्खइ. ८ T दिहिहारउ धृतेरपहारको धरकश्च. ९ MBP °सच्छाय°. १० P पावोह°. T पायोह°. ११ MP जइय. १२ MBP हु.

---

1. 1 अरिवरणिद्दारणि प्रचण्डशत्रून्मूलने, खत्तुद्धारणि दुष्टनिग्रहशिष्टप्रतिपालनलक्षणक्षात्रियधर्मप्रकटने, °लच्छिविजयाणउ °लक्ष्मीविजययो प्रापकम्. 4 *a* अपण भजेन ब्रह्मणा. 5 *a* णीलुल्लोउ नीलचन्द्रोपकम्. 10 *b* सररुहसुहि सूर्य. कमलबान्धव·, खवइ महते विनाशयति वा. 12 *a* राउ राजा चन्द्रो वा. 14 *a* पावाहपिंड पापसदृशशरीरा:, कृष्णवर्णा इत्यर्थ ; *b* सोंड मद्यपा·. 16 उप्पउ उपमा.

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस अवठंभिवि रुंभिवि सयल देस ।
आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।
मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।
दालिद्दु रउद्दु पवासियाहं काणीणहं दीणहं देसियाहं ।
णिहणिवि वरेण चामीयरेण णाणाविलाससंतोसायरेण ।
मंतिवि अहंगु पंचंगु मंतु को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।
परियाणिवि माणिवि वुड्ढ चारु ओहारिवि धारिवि रज्जभारु ।
अइवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु भणु केण ण केण वि मुक्कु दप्पु ।
भुयदंडचंडविक्कमभरण छक्खंडमंडलावणिकएण ।
गंभीरतूरलक्खइं हयाइं दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं ।
कयसमरहं अमरहं थरहरंति गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।
असुरिंदहं णाइंदहं पियाइं पायालइं विउलइं कंपियाइं ।
तुट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं झलझलियइं वलियइं सरिजलाइं ।
थिरभावहं देवहं जाय संक रवपेल्लिय डोल्लिय रवि ससंक ।

घत्ता—तहु तिजगविमद्दहु तूरणिणद्दहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥
परमंडलसाहणु गहियपसाहणु खणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिववलं धरियहलसव्वलं
कणयकुंतुज्जलं चंदणसुपरिमलं ।

2. १ MBP भयगयाइ. २ MB झलिझलियइं. ३ MBP चलियइं. ४ MBP रह°. ५ MP जेल्लिय. ६ M परमंडलु.
3, १ MB °कंतुज्जलं.

2. 1 *b* अवठंभिवि हठादाक्रम्य; रुंभिवि प्रतिग्राहयित्वा. 4 *d* देसियाहं परदेशजनानाम्. 6 *a* अहंगु अभङ्गोऽविकल.; पचगु मंतु सहायाः साधनोपायो देशकालबलाबलौ । विपत्तेश्च प्रतीकार. पञ्चाङ्गो मन्त्र इष्यते. 7 *b* ओहारिवि अवधार्य. 8 *a* अइवग्गिउ अतिगर्वित.. 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्तारणसमर्थम्.
3. 1 *b* °सव्वलं तिलपीडनायुधं घाणी.

सरसघुसिणारुणं　　खयंतरणिदारुणं[2] ।
तुरुतुरियकाहलं　　सुहडकोलाहलं ।
मुक्कहुंकारयं　　फुंसियअसिधारयं[3] ।
बद्धतोणीरयं　　अहियखोणीरयं ।
गहियसंणाहयं　　णवियणियणाहयं ।
वलइयसरासणं　　परिहियविहूसणं ।
वूढजंपाणयं[4]　　चोइयविमाणयं ।
जंतजक्खामरं　　चलियचलचामरं ।
खुहियणाणाणिवं　　जाणियगमणुच्छवं ।
कामिणीसुललियं　　किंकिणीमुहलियं ।
रहियवाहियरहं　　छत्तछाइयणहं ।
वंदिवण्णियगुणं　　दिण्णमणिकंकणं[5] ।
पवणधुयधयवडं　　गिरिगरुयगयघडं ।
गहियमयगारवं　　रणियघंटारवं ।
परिभमियमहुयरं　　मुक्कढक्कासरं ।
मलियफणिसेहरं　　काललीलाहरं ।
णडियसुरणरणडं[6]　　चडुलहयवरथडं ।
बहलधूलीरयं　　घुलियमणिहारयं ।

घत्ता—कयरिउवहुविरहें जगजसभरहें[7] चलियएण पधाइउ[8] ॥
वररहमायंगहिं[9] भडहिं तुरंगहिं सेण्णु ण कत्थइ माइउ[10] ॥ ३ ॥

4

मणी कागणी कामिणी दंडरण्णं　　णिसीसक्कमाणिक्कभाभारभिण्णं ।
रहंगं णरिंदंगतुंगं पहारं　　अजेयं सुतेयं करालं किवाणं ।

२ MBP खयतरुणि°. ३ MP फुरिय°. ४ M रूट° ५ MBP °कचणं. ६ MBP °सुरवरणई. ७ MBP °जयभरहें चलतेण, T जगजसभरहें, but records a p जगजयेति पाठे जगति जयेनोपलक्षितो भरतस्तेन. ८ P पधाइयउ. ९ MBP वररहवरमायंगहिं. १० P माइयउ.

---

3 *b* खयतरणिदारुणं प्रलयकालसूर्यसदृशम्. 6 *a* °तोणीरयं तूर्णार, *b* अहियखोणीरयं शत्रुभूम्यासक्तम्.
4. 1 *b* णिसीत्यादि–चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमाणिक्यानां भासस्तासां भारेण भिन्नं कर्बुरिताङ्गम्. 2 *a* णरिंदंगतुंगं चक्रवर्तिशरीरप्रमाणम्.

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं महावीरखंधारवित्थारवंतं ।
हरीकीरपिंछोहकंतिल्लकाओ करी णिज्जियाणिंददेविंदणाओ ।
पुरोहो णिरोहो व्व भीमावयाणं णिवासो पयासो पयासंपयाणं ।
समे वेसमं वेसमे सामकारी चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।
गिही को वि देवो महिड्डीसमिद्धो महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चोद्दहरयणहिं सहुं णरणाहहु इच्छइ ॥
हयगयरहवाहणु चलिउ साहणु सयलु रहंगहु पच्छइ ॥ ४ ॥

5

मणिरहवरे चडिउ णं इंदु णहि वडिउ ।
दढकढिणभुयजुयलु अइवियडवच्छयलु ।
किं भणमि पुरिसहरि बलतुलियकुलसिहरि ।
सद्दूलवरखंधु बहिरंधजणबंधु ।
अलिणीलधम्मेल्लु तेलोक्कपडिमल्लु ।
दूवंकुरालेण दहिचंदणालेण ।
उक्खित्तसेसेण मंगलणिघोसेण ।
संचलिउ भरहेसु णं मयणु णरवेसु ।
धउ धइण पडिखलिउ णरु हरिहिं दरमालिउ ।
भेसिउ अहद्देण करहस्स सद्देण ।
करि धुणइ णियकंठु महि णिवडिओ मेंठु ।
भरओ रउद्देण घित्तो बलद्देण ।
भग्गाइं भायणइं चुण्णाइं गोहणइं ।

4. १ B °पिच्छोह°. २ M गिरी. ३ MBP महद्धी. ४ MP चउदह°.
5. १ MB णहवडिउ. २ MBP °धम्मिल्लु. ३ P दलमालिउ. ४ MBP मेट्ठु.

3 *b* देविंदणाओ ऐरावणो हस्ती. 5 *a* भीमावयाणं भीमानामापदाम्; *b* पयासो प्रकटम्; पयासंपयाणं प्रजानां संपदाम्. 6 *a* वेसमं विषमम्. 7 *a* गिही गृही भाण्डागारिकः. 8 *a* °किम्मीर° विचित्रम्; *b* णिकेऊहकारो सूत्रधारः स्थपतिः.

5. 10 *a* भेसिउ भयं नीतः; अहद्देण अभद्रेण.

णवणलिणणेत्ताइ वेसैरि णिहित्ताइ ।
परिगलियचेलाइ हा भणिउ बालाइ ।
खैरवइणपडियाइ मडुसीहुघडियाइ ।
रसवणिय जूरंति कह कह व वियरंति ।
अच्चंतपोढेण तेल्लोक्करूढेण ।
थिरथोरवाहेण सेणाहिणाहेणँ ।
पप्फुल्लवयणेण दढदंडरयणेर्णं ।
गिरिणो दलिज्जंति मग्गा रइज्जंति ।
दूरं समग्गेण चक्काणुमग्गेण ।
संतोसपुण्णाइं गच्छंति सेण्णाइं ।
णयणाहिरामाइं गामाइं सीमाइं ।
विसमाइं मंठाइं विझोवकंठाइं ।
हलहराणिवासाइं लंघंतु देसाइं ।
पविसंतु रोहंतुं अहिणो विरोहंतु ।
णिक्खवियणियसत्तु सुरवरसरिं पत्तु ।

घत्ता—पंडुर गंगाणइ महियलि घोलइ किंणरसरसुहभंतहो ॥
अवलोइय राएं छुडु छुडु आएं साडी णं हिमवंतहो ॥ ५ ॥

6

णं सिहरिघरारोहणणिसेणि णं रिसहणाहजसरयणखाणि ।
णिम्मल णावइ जिणणाहवाय मयरंकिय णं वम्महवडाय ।
णं विसमविडप्पभउत्तसंति धरणीयलि लीणी चंदकंति ।
णं णिद्धधोयकलहोयकुहिणि णं कित्तिहि केरी लहुय बहिणि ।

५ MBPK वेसर°. ६ MBPT खरचडुल°. ७ MBP add after this: णवणलिणणयणेण. ८ MP add after this. वज्जेण घडिएण. ९ MBP सठाइ. १० MB गेहंतु. ११ P °भत्तहो.

6. १ MBP वम्महपडाय. २ P विडप्पइ भउ तसंति. ३ G सिद्ध° but gloss स्निग्ध.

16 *a* खर° गर्दभ.. 25 *a* मठाइं निम्नोन्नतानि. 27 *b* अहिणो विरोहंतु नागान् विरोधयन्. 30 साडी परिधानवस्त्रम्.

6. 3 *a* °विडप्पभउत्तसंति राहुभयादुत्त्रस्यन्ती. 4 *a* °धोयकलहोय° अतिनिर्मलं रूप्यम्.

गिरिरायसिहरपीवरथणाहि णं हारावलि वसुहंगणाहि ।
विर्यलियकंदरदरिवडिय सच्छ धरणिहरकरिंदहु णाइं कच्छ ।
सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह णं चक्कवट्टिजयविजयलीह ।
आयासहु पडिय धरित्तियाइ सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।
पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ णियठाणभंसचिंताइ णाइं ।
णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय विसपउर णाइं णाइणि सुसेय ।
हंसावलिवलयविइण्णसोह उत्तैरदिसिणारिहि णाइं बाह ।

घत्ता—बहुरयणणिहाणहु सुद्धु सुलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥
सायरभत्तारहु सइं गंभीरहु मिलिय गंपि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहिं मच्छंपुच्छपरियत्तियाइं सिप्पिउडुच्छलियइं मोत्तियाइं ।
घेप्पंति तिसाहयगीयएहिं जलबिंदु भणिवि बप्पीहएहिं ।
जलरिट्ठहिं पिज्जइ जलु सुसेउ तमपुंजहिं णावइ चंदतेउ ।
सोहइ रत्तुप्पलदलरुईइ पुणु सो जि णाइं संझारुईइ ।
जहिं कीरउलइं कीलारयाइं दहिकुट्टिमि णावइ मरगयाइं ।
जहिं कंकहारणीहारछाय कल्लोल हंसपक्ख वि ण णाय ।
जहिं पाणिइ पंडुरु अच्छराइ उप्परियणु दिट्ठु ण जंतु जाइ ।
परिहाणु सहत्थें धरिउ ताइ जंपिउ हो ण्हाणें एत्थु माइ ।
मायंगहुं दाणें वहइ णेहु जा तहु धिवंति तवसि वि सुंदेहु ।
जडसंगें विउसु वि जडु जि होइ कमलावासेसु सुयंति भोइ ।

४ MBP विवरिय°. ५ MBP उत्तरदिस°. ६ MBP सलोणहु.

7. १ MBPK °पुंछ°. २ B °उडच्छलियइ. ३ MBP वव्वीहएहिं. ४ MBP जंतु ण दिट्ठु. ५ MBPK सदेहु.

6 *b* कच्छ कक्षा. 7 *a* भूइरेह भस्मरेषा. 10 *a* णयवम्मीयहु पर्वतवल्मीकात्; *b* विसपउर नदीपक्षे जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विषप्रचुरा. 11 *b* बाह बाहुः.

7. 1 *a* परियत्तियाइं अभिहतानि. 2 *a* तिसाहयगीयएहिं तृषया शुष्ककण्ठैः; *b* बप्पीहएहिं चातकैः. 3 *a* जलरिट्ठहिं जलकाकैः. 9 *a* मायंगहुं हस्तिनो चाण्डालानां च; णेहु चिक्कणत्वं रागश्च. 10 *b* भोइ सर्पाः.

सिररयण धणासइ धरइ ते वि धणवंत बहुप्पिय सविस जेवि।
दिव्वंगणघणथणजुयलखलिय जिणण्हवणारंभदिणम्मि गलिय।
उच्छलियबहलसीयलतुसार णं खीरमहोवहिखीरधार।

घत्ता—एयँहि महिणारिहि भुवणजणेरिहि ससिमणिरइयपहुज्जल॥
सायरगिरिरायहिं धरिवि सरायहिं णाइं णिबद्धी मेहल॥ ७॥

8

सरि पेच्छिवि महिपरमेसरेण पुच्छिउ सारहि भरहेसरेण।
झसणयणी विब्भमणाहिगहिर णवकुसुमविमीसियभमरचिहुर।
मज्जंतकुंभिकुंभत्थणाल सेवालणीलणेत्तंचलाल।
तडविडविगलियमहुघुसिणपिंग चलजलभंगावलिवलितरंग।
सियघोलमाणडिंडीरचीर पवणुद्धयतारतुसारहार।
वित्थिण्णमणोहरपुलिणरमण णइ णाइं विलासिणि मंदगमण।
कवणेह भणसु सियकोमलंगि रइ जणइ विहंगहं णं विहंगि।
तं णिसुणिवि रहियं वुत्तु एम कमणीयसुकामिणिकामएव।
धरणीसमउडमणिकिरणराइ रुइरंजियचरणणरेसराइ।
दालिद्दपंकसोसणदिणेस भुयबलकंपावियतिहुयणेस।
पणईयणपयणियपरमपणय णिसुणसु णरिंद णाहेयतणय।
सुंधराधरिंदभेयणसमत्थ णं मंतिहि केरी मइ महत्थ।
गंभीर पसण्ण सुलक्खणाल णं सुकइहि केरी कव्वलील।
रहवरसिरि व्व दरिसियरहंग किं ण वियाणहि णामेण गंग।
हिमवंतपोमसरणिग्गयंगि णं महिवहुयहि परियाणभंगि।

६ MBPT वहुपिय. ७ MBP एन्तहि.

8. १ M परमेसरेण २ MBP पवणुद्धुय°. ३ MBP कमणीयकामिणी°. ४ MB सधरा°. ५ MBP कव्वमाल. ६ MBPK परिहाण° and gloss in PK परिधानं.

11 *a* सिररयण सर्पाः, *b* बहुप्पिय वधूनां प्रिया., अथवा, बहूनां प्रियाः.

8. 2 *a* °विब्भम° जलावर्तः. 5 *a* °डिंडीर° फेन. 9 *b* णरेसराइ नरेश्वराणामादिः प्रथमचक्रवर्तीत्यर्थः. 12 *a* सुधराधरिंद° धराधराः पर्वता राजानश्च, शोभनाश्च ते धराधराः, तेषामिन्द्रः प्रधानः. 14 *a* °रहंग चक्रवाक.. 15 *b* परियाणभंगि गमनप्रकारः.

घत्ता—गिरिणइधराणियलहिं जलणिहिविवरहिं वहइ छाय ससिदित्तिहि ॥
भुवणत्तयगामिणि जणमणरामिणि एह सरिस तुह कित्तिहि ॥ ८ ॥

9

घणे जक्खिणी जक्खकीलावियारे तओ तम्मि गंगाणईचारुतीरे ।
पधावंतमायंगदाणंबुगंधं घुलंतुद्धपालिद्धयं चारुचिंधं ।
विसंकं जसंकं कयारिंदसंकं बलं रायसेणाहिवाणाइ थक्कं ।
पकीरंति दूरं समा भूमि एसा तडिज्जंति दूसाइं चंदोवहासा ।
गवक्खंतणिग्गंतधूमोहवासा रइज्जंति संचारिमा भूरिवासा ।
विमुच्चंति पल्लाणभारा हयाणं गयाणं पि ढक्कारवेणागयाणं ।
भरुम्मुक्कदेहा जहिच्छं वलद्दा गया रासहा रासहीदिण्णसद्दा ।
तरूणं तणाणं पधावंति दासा पलिप्पंति चुल्लीणिहित्ता हुयासा ।
पइज्जंति णाणाविहा भक्खभेया णरा के वि भुंजेवि णिस्संगसेया ।
सरिच्छेण दीहेण पंथेण भग्गा पसुत्ता सुहं गेहिणीकंठलग्गा ।
बलिज्जंति दिज्जंति गासा करीणं तणं भोयणं खाणलोणं हरीणं ।
पपेच्छंति अण्णे धयं साहिणाणं पयंपंति अण्णे पईहं पयाणं ।
ण संसंति अण्णे णरिंदस्स कामं भमामो कहं णिच्च गामाउ गामं ।
इमो वेसरो वेसरी लेउ चारं परेणेव वुत्तो परो वारवारं ।
कउद्धुद्धगीवा वणंते पयट्टा लयापल्लवं पाणियं लेंति उट्टा ।
हले होउ जत्ताइ पत्ता णिविग्घं पिए पेच्छ दूसाइं आगच्छ सिग्घं ।
इणं जत्थ केणावि रीणेण वुत्तं सवेसाणिवासं सचिंधोवउत्तं ।
सहट्टं सटेंटं सदेवं समिद्धं इमं एव राएण ठाणं णिबद्धं ।

८ MBPT °विवलहिं.

9. १ MBP झसकं. २ MB णिग्गंति. ३ MB वलिद्दा. ४ MBP पवचंति. ५ M खाणपाणं. ६ K ण पेच्छंति. ७ वयंसाहिणाणं. ८ M णमंसंति. ९ MBP णरिंदं सकामं. १० MB कओउद्धगीवा; P कओवुद्ध°. ११ PK उंटा. १२ MBP इम. १३ BP विबद्धं.

16 वहइ छाय शोभां धरति.

9. 2 *b* °पालिद्धयं वशवेष्टितपताका. 4 *b* चंदोवहासा मण्डपिका. 5 *a* °वासा गन्धाः. 9 *b* णिस्संगसेया निर्गताङ्गस्वेदाः. 11 *a* बलिज्जंति बलिदानेन तोष्यन्ते. 13 *a* कामं षट्खण्डपृथ्वीप्रभावना-भिलाषम्. 14 *a* चारं जीवन तृणं वा. 17 *b* सवेसाणिवासं वेश्यागृहसहितम्.

घत्ता—णियथवइ विरइयइ मणिगणखइयइ सइं सग्गइ उवइण्णउ ॥
णं [14]सुरवरसुंदरु देउ पुरंदरु पहु सउहयलि णि[15]सण्णउ ॥ ९ ॥

10

सामंत महासामंत जेवि मंडलिय महामंडलिय तेवि ।
सेणाहिवसिट्ठुद्देसणिलइ थिय रायपसायविइण्णपुलइ ।
हुय रयणि पुणु वि उग्गमिउ भाणु सगभत्थिजालजज्जलमाणु ।
गयमयमलेण मइलिज्जमाणु हरिलालाणीरें घुप्पमाणु ।
छत्तंधयारछाइज्जमाणु पहरणविप्फुरणहिं दीसमाणु ।
झल्लरिभेरीरवगज्जमाणु मणहरकामिणियणगिज्जमाणु ।
[1]णग्गोररेणुधवलिज्जमाणु वणधूलियाइ कवलिज्जमाणु ।
मग्गयपहाइ णी[2]लिज्जमाणु [3]सोंणंदु सविक्कमु साहिमाणु ।
[4]अंसहंतिइ भडयणभरु महंतु णं वसुहावणियइ पि[5]त्तु वंतु ।
अ[6]णडुहवज्जरखरमाणिएण णरणियरकरहसंदाणिएण ।
णाणावाहणरहसंकडेण चल्लियउ तुरिउ गंगा[7]तडेण ।
चक्कीसचमूवइपेरियंगु चक्कइ पच्छइ बलु चाउरंगु ।
आरुहिवि विजयगिरिवरकरिंदि के[8]सरिकिसोरु णं गिरिवरिंदि ।
खंधोवबद्धतोणीरजुयलु क[9]रेणिहियचावगुणरावमुहलु ।
संचलिउ विजयदुंदुहिणिणाउ सुरवइदिसाइ रायाहिराउ ।

घत्ता—उल्लंघिवि भीयरु उवरयणायरु पुणु थलमग्गें आइउ ॥
महिहर[10]दरिवासइं गोहणघोसइं पहु गोउलइ पराइउ ॥ १० ॥

१४ MBP सुरवरु सुदरु देव पुरदरु. १५ MP णिसाण्णिउ.

10. १ MBP णव°. २ B omits णीलिज्जमाणु. ३ B omits this foot. ४ B omits this line. ५ MP पित्तु वतु. ६ B omits अणडुह. ७ MBP गंगायडेण. ८ MP केसरकिसोरु. ९ MB करि णिहिय°. १० MBPT °दरवासइं.

10. 3 *b* सगभत्थिजाल° निजकिरणसघात·. 7 *a* णग्गोर° कर्पूरः. 9 *b* वसुहावणियइ वसुधावनितया; पित्तु वतु पित्तं वान्तम्. 10 *a* °वजर° वेगसरोऽश्वतरः. 13 *a* विजयगिरि हस्तिनामेदम्. 15 *b* सुरवइदिसाइ पूर्वादिशी. 16 उवरयणायरु उपसमुद्रः.

11

जहिं मंथिज्जइ अइ[1]थड्डु दहिउं थे[2]द्धत्तणु कासु वि होइ ण हिउं ।
जहिं कड्डिउ मंथउ गोवियाइ दीहें गुणेण णं पिउ पियाइ ।
चप्पेवि धरिउ मंदी[3]रएण परिभमइ णाइं घणथणकएण ।
हो हो हलि गो[4]किणि मइं जि रमइ मंथाणु ण तुह कामग्गि समइ ।
मा कड्डहि केयाकड्डणीइ इय गज्जिउ जहिं णं मंथणीइ ।
अइमहणें सिढिलीहूउँ[5] देहु किं दहिउं ण अण्णु वि मुयइ णेहु ।
तक्कइं एमेव जि जहिं घिवंति गामी[6]यण तक्कहिं किं करंति ।
घयदुद्धइं जँहिं[7] पंथिय पियंति गयपहसम सुहु[8] णिद्दइ सुयंति ।
जहिं गोविइ पेच्छिवि णरपहाणु वच्छुल्लउ मेल्लिवि[9] वद्धु साणु ।
मू[10]रविउ तक्कु [11]अविचित्तियाइ घिउ छड्डिउँ[12] तग्गयणेत्तियाइ ।
महिवइमुहपंकयरमणतण्ह जहिं संठिय णीसासुण्ह सुण्ह ।
जहिं कुणरिंदहं रिद्धीउ जेम [13]महिसिउ खलेहिं [14]दुज्झंति तेम ।
काहलियवंससद्दं सुणंति ण करइ घरक[15]म्मु वि सिरु धुणंति ।
वच्चइ संकेयहु गोवि का वि मज्झण्हपासि बहुडिंभया वि ।
जहिं देंति तालु कीलां[16]पयासु मंडलिय [17]गोव गायंति रासु ।
जहिं सिंगसमुक्खयतरुवरेहिं ढ[18]क्कारिउ धीरु धुरंधरेहिं ।

घत्ता—तं गोट्ठु मुयंतें गहणि चरंतें हरिणासिंगखयकंदरहिं ॥
मयमासाहारइं कुहरागारइं दिट्ठइं स[19]बरपुलिंदहिं ॥ ११ ॥

11. १ MBP अइथड्ड. २ MBP थड्डत्तणु. ३ B मीदीरएण. ४ MBP गोमिणि. ५ MBP सिढिलीहूय. ६ B गामीणय. ७ MBP पंथिय जहिं. ८ B सुहाणिद्दइ. ९ MBP मण्णिवि. १० MBP सूर-विउ. ११ MBP अवचित्तियाइ. १२ M छंडिउ. १३ MBP महिसीउ खलहिं. १४ MBPK दुब्भंति. १५ M घरकम्मु वि सिरं; BP घरकम्मु सिरं. १६ MBP कीलावयासु. १७ M गीय. १८ MBP ढेक्कारिउ चारु. १९ M समरपुरिंदहिं.

11. 1 *a* अइथड्ड आतिघनम्. 2 *a* मंथउ रविका; *b* णं पिउ पियाइ प्रियः प्रियया इव. 3 *a* मंदीरएण रविकानिरोधकलोहवलयादिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन. 5 *a* केयाकड्डणीइ वरत्राकर्षिण्या. 7 *b* तक्कहिं तत्त्वविचारणे तर्कैः. 9 *b* साणु श्वा. 10 *a* मूरविउ उत्कालितं तापितम्. 11 *b* णीसासुण्ह निश्वासैरुष्णा; सुण्ह वधूः. 16 *b* धुरंधरेहिं वृषभैः. 18 मयमासाहारहिं मृगमांसाहारैः.

12

दुवई[1]—वामणथ[2]द्धथोरव[3]लवलियकलेवरसंधिबंधणा ।
कढिणतिकंडचंडकोदंडकमागयजणणकुलहणा ॥ १ ॥
सुमडहथूलविरलदसणुज्जलमुहासिहिपि[4]च्छणिवसणा ।
गयमयपउरपंकचं[5]चिक्कियगुंजादामभूसणा ॥ २ ॥
झंपडकविलकेसरुहिरारुणदारुणतंबणयणया ।
तिक्खखुरुप्पपहरपविया[6]रियमारियमोरहरिणया ॥ ३ ॥
इसुहयदंतिदंतकयमंदिरसंचियचारबोरया ।
तल[7]तरुवत्तरत्तणीलुप्पलविरइयकण्णपूरया ॥ ४ ॥
दिसिपसरंतविमलससियरणिहणरवइजसभयंगया ।
वंसविसेसजायमुत्ताहलचमरीरुहकरग्गया ॥ ५ ॥
पीयसुसीयकुसुमरयसुरहियमहिहरकंदरंभया ।
सबरीवयणकमलरसलंपडसंधुद्धरियडिंभया ॥ ६ ॥
हरगलगरलमलिणणवजलहरछविसारिच्छकायया ।
आया पहुसमीवि मउलियकर विविहकिरायरायया ॥ ७ ॥
गुरुभयवसणिहित्तणियदेहमहीयललग्गभालया ।
ते अवलोइऊण करुणेण णवंतवणंतवा[8]ळया ॥ ८ ॥
ण्हंततरंतजक्खिथणघुसिणामोयमिलंतमहुयरं ।
चंचलसंगलंतकल्लोलगलत्थियखयरवहुवरं ॥ ९ ॥
कच्छवसुंसुयारमयरोहरपुंछुच्छालियणीरयं ।
पत्तो परियणेण सह महिवइ सुरवरसरिदुवारयं ॥ १० ॥

घत्ता—आवासिउ साहणु वणि सुपसाहणु णिसि पणविवि परमेसरु ॥
णं जिणु जिणसासणि थिउ दब्भासणि उववासेण णरेसरु ॥ १२ ॥

12. १ M has before this. छद पधटिका. २ MBP थड्ड. ३ MBP °चलवालिय°. ४ MBP °पिंछ°. ५ P °चिंचिकय°. ६ MBP °यारियतित्तिरमोर°. ७ M तिलतरु°; P तिलतरु but gloss ताड-वृक्ष°. ८ MBP ठिउ.

12. 2 °जणण° पिता; °कुलहणा कुलधनाः. 8 तलतरुवत्त° तालवृक्षपत्रम्. 11 °कंदरंभया °कन्दरजलाः. 14 °किराय° भिल्लाः. 20 °दुवारयं गङ्गायाः समुद्रानुप्रवेशस्थानम्.

13

अहिवासिउं राएं चक्करयणु जिह तं तिह अवरु वि दंडरयणु ।
सुयवण्णु अहंगु तुरंगरयणु करिरयणु लोहवलयंकरयणु[1] ।
उग्गमिउ णहंगणि दुमणिरयणु आरूढउ संदणि पुरिसरयणु ।
कइवयणरेहिं सह सूरसंसु णं माणसपंकइ रायहंसु ।
पहरणपरिपुण्णु[2] महामहंतु परिभमियचक्कचिक्कारु देंतु ।
चलपंचवण्णधयवडललंतु णाणामणिकिरणहिं पज्जलंतु ।
ओलंबियकिंकिणिरणझणंतु तियसिंदह माणि विम्हेउ[3] जणंतु ।
सलिलणिहिसलिलंधोइयपएहिं[4] मुहसंमुहघुलियतरंगएहिं ।
तक्कारिचम्मलट्ठीहएहिं रहु कड्ढिउ मारुयजवहएहिं ।
छक्खंडपुहइवलयाहिवेण अवलोइउ जलणिहि पत्थिवेण ।

घत्ता—हरिसेण व गज्जइ भरहु ण भज्जइ पहु ण कासु किर रुच्चइ ॥
मरुहयकल्लोलहिं चलभुयडालहिं रयणायरु णं णच्चइ ॥ १३ ॥

14

उक्खिवइ व मोत्तियतंदुलाइं तोयइं णं अग्घंजलिजलाइं ।
भीएण व रायहु लइय वेल दावइ व विउलसलिलंतसेल ।
णं ढोयइ[1] जलमयगल सरंत[2] जलणरकिंकरकररुहफुरंत ।
माणिक्कइं पवरपवालयाइं णं दरिसइ[3] तीरलयालयाइं ।
णं बोहइ वडवाणलपईवु[4] णं वेढिवि रक्खइ जंबुदीवु[5] ।
संखाऊरउ[6] जिह संखु धरइ पहुआणइ किंकरु किं ण करइ ।
उम्मुक्कविविहजलयरसणेहिं णं जंपइ पायालाणणेहिं ।

13. १ P °वलियंक°. २ MP °परिपुण्ण°. ३ MBP विंभउ. ४ MBP °सलिलमुणिहियपएहिं.

14. १ P ढोयइ. २ MBP रसत; K सरंत but corrects it to रसंत. ३ BP दरसइ. ४ MBP °पईउ. ५ MBP जंबुदीउ. ६ MBP संखाऊरिउ.

---

13. 1 *a* अहिवासिउं पूजितम्. 2 *a* सुयवण्णु शुकवर्णम्; अहंगु अभङ्गम्; *b* लोहवलयंकरयणु लोहवलयबद्धदन्तम्. 3 *a* दुमणि° आदित्यः. 9 *a* तक्कारि सारथिः; चम्मलट्ठी° कशा.

14. 7 *a* °सणेहिं शब्दैः; *b* पायालाणणेहिं वडवामुखैः.

कि विहुमराएं तुहुं जि राउ तेलोक्कपियामहु जासु ताउ।
मा जोयहि महिवइ तिक्खभल्लि तउ तणिय वाय मज्जायवेल्लि।
होएप्पिणु अच्छउं एत्थु ताम णउ लंघमि महियलि वसमि जाम।
तुह मुहइ अंकिउ हउं समुद्दु मा किं पि करहि मच्छरु रउद्दु।

घत्ता—खारत्तु ण मेल्लइ जणु किं बोल्लइ णत्थि सहावहु ओसहु॥
जसु णामु जि सायरु अवसें सायरु सो संभासइ णिययपहु॥ १४॥

15

तरुणीअंगाइं व सलवणाइं अहिसिंचियतीरलयावणाइं।
लंघेप्पिणु रयणायरवणाइं पइसेप्पिणु बारहजोयणाइं।
ढाएप्पिणु पुणु तेत्तियहिं तेहिं तंबेहिं सरोसहिं लोयणेहिं।
रिउभवणु पलोइवि णिववरेण अप्फालिउ धणुहुं धणुद्धरेण।
अंदोलिय तारागहपयंग महि चलिय विवरणिग्गयभुयंग।
अच्छोडियबंधण विवलियंग णिण्णासिय तासिय रवितुरंग।
थरहरिय धराहर धरण वरुण आसंकिय जम वइसवण पवण।
संचालिय सरिसरसायरंभ गय मयगल मुढियालाणखंभ।
णिवडिय पुरवर पायार गेह मुय कायर णर भयभंतदेह।
वरवीरहिं खग्गहु दिण्ण दिट्ठि अवर वि चवंति हा णट्ठ सिट्ठि।
दप्पिट्ठ दुट्ठ भुयबलविमद्द भडभीयरु भावइ भीमु सद्दु।
किं मंदरसिहरु सठाणल्हसिउ किं जगु कवलिवि कालेण हसिउ।

घत्ता—पायालि फणिंदहिं महिहि णरिंदहिं सग्गि सुरिंदहिं कंपिउं॥
धणुगुणटंकारें अइगंभीरें कासु ण हियउं विप्पिउं॥ १५॥

७ MBP तेल्लोक°. ८ MBP. होएविणु अच्छमि. ९ ण हु.

15. १ MBP धराधर. २ M आसंकय, BP आसकइ. ३ P भयवंत. ४ MBP मुट्ठि. ५ MBP भीमसद्दु. ६ B °ण्हसिउ. ७ MBP ण जगु. ८ PK कंपियउ. ९ P विप्पियउ.

13 सायरु सागरः, सायरु सादरः

15. 2 *a* °वणाइं जलानि. 8 *b* मुढिय° भग्नः. 11*a* भावइ चमत्करोति. 14 विप्पिउ भयम्.

16

धणुवेयजाणु परिछिण्णमाणु   बंधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।
णं कालें भासुरु कालदंडु   णरणाहें पेसिउ वज्जकंडु ।
धम्मुज्झिउ पलयहुयासलीलु   गुणकोडिविमुक्कउ णं कुसीलु ।
पिच्छंचिउ चंचलु णं विहंगु   उज्जयगइ णं सुयणंतरंगु ।
अइदूरगामि णं परमणाणु   अइसुद्धिवंतु णं सुक्कझाणु ।
अइदीहायारउ णं भुयंगु   अइप्राणहारि णं खलपसंगु ।
अइगुणिहि परंमुहुं होवि गयउं   णं माणुसु कुसमयभत्तिहयउ ।
अइलोहघडिउ णं लुद्धचित्तु   अइगयणगमणु णं खेयरत्तु ।
अइमोक्खगामि णं चरमदेहु   अइकढिणभेइ णं णइपवाहु ।
णावालउ णं तच्चिय महंतु   हुंकारें चोइउ णं सुमंतु ।

घत्ता—मागहहु णिहेलणि हरिणीलंगणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥
रुइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पप्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूभंगभीसभिउडीहरेण   विप्फुरियदसणइसियाहरेण ।
सुरसमरसहासभयंकरेण   दुणिरिक्खविवक्खखयंकरेण ।
देवेण समुद्दपरिग्गहेण   तं पेक्खिवि गज्जिउं मागहेण ।
भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह   भणु केण लुहिय खयकाललीह ।
णायउलवलयविलुलंतु गीढु   भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीढु ।
भणु केण कलिउ मंदरु करेण   उट्ठाविउ सुत्तउ सीहु केण ।
भणु केण चलिउ णाहि भाणु जंतु   णिव्विण्णउ प्राणहं को जियंतु ।
भणु कासु करोडिहि रिट्ठु रसिउ   भणु को कयंतदंतंति वसिउ ।

16. १ MB °जाण. २ MBP उज्जुय°. ३ MBP अइसिद्धिवंतु. ४ MBP °पाण°. ५ MBP होइ. ६ MBP °भंति°. ७ B लुद्धरत्तु.

17. १ MBP विलुलंत. २ M धरणिपीढु. ३ MBP पाणहं. ४ B रिद्धु. ५ P दंतंतवसिउ.

16. 4 *b* उज्जयगइ सरलगतिः. 7 *a* गुणिहि शरासनान्मुनेश्च. 10 *a* णावालउ नौयुक्तः, पक्षे नमनशीलः. तच्चिय नदीप्रवाहः तात्त्विकश्च; *b* सुमंतु परममन्त्रः. 12 जउंणाणइ° यमुनानदी.

17. 4*b* लुहिय प्रोञ्छिता. 5 *a* गीढु गृहीतम्. 8 करोडिहि शिरोस्थानि; रिट्ठु काकः,

भणु केण विहंडिउ मज्झु माणु केणेहु विसज्जिउ कुलिसबाणु ।

घत्ता—जेणेउं वियंभिउं रणु पारंभिउं सो महु अज्जु ण चुक्कइ ॥
णिब्भंगु जमाणणु भीयउ काणणु बिहिं वि एकु धुवु ढुक्कइ ॥ १७ ॥

18

इय भणिवि तेण कड्ढिउ करालु धारालउ णावइ मेहजालु ।
पडुताडणखंडियभडवमालु असि अरिकरिमोत्तियदंतुरालु ।
दढमुट्ठिणिवीडिउ वहइ वारि दासु व विझइरि व वंसधारि ।
वसुणंदउ ससिमंडलसरिच्छु उरि चप्पिवि उट्ठिउ लोहियच्छु ।
पहु पेच्छिवि केण वि लइउ कोंतु आरुट्ठु को वि हणु हणु भणंतु ।
मोग्गरु मुसुंढि परसु वि तिसूलु केण वि करि लइयउ भिंडिमालु ।
वावल्लु सेल्लु झसु सत्ति मुसलु हलु सव्वलु कंपणु जुज्झकुसलु ।
केण वि भुयंगु केण वि विहंगु केण वि तुरंगु केण वि मयंगु ।
केण वि अलियल्लि घुलंतजीहु केण वि खरणहरुकेरु सीहु ।
केण वि संचोइउ करहु सरहु कु वि आहवि धाइउ जाम सरहु ।

घत्ता—ता मागहमंतिहिं कयकुलसंतिहिं पणवेप्पिणु उच्चाइउ ॥
छणससहरवयणहिं तारहिं णयणहिं रायसिलिम्मुहु जोइउ ॥ १८ ॥

19

तहिं लिहियेइं दिट्ठइं अक्खराइं सुरमणुयखयरदेसंतराइं ।
जिणतणयहु विविहणिहीसरासु णियकालवट्टसंधियसरासु ।
रायहु भरहहु ण णवंति जाइं णिच्छउ दोहाइं मरंति ताइं ।

६ MBP धुउ.

18. १ MBP °कवालु. २ MBP कुंतु. ३ MBPK पट्टिसु तिसूलु. ४ P भिंडमालु. ५ MBP वावल्ल. ६ MBP कप्पणु.

19. १ P निहिं and gloss बाणे. २ MBP लेहियइ. ३ M °कालवट्टि. ४ M जे वि. ५ M ते वि.

11 णिब्भंगु अनिष्टम्.

18. 4 *b* लोहियच्छु रक्तलोचनः. 6 *b* भिंडिमालु गोलागोफणी (?). 7 *b* कंपणु सर्वलोहमयः कुन्तः 9 *a* अलियल्लि व्याघ्रः.

19. 2 *b* कालवट्ट° कालपृष्ठ नाम धनुः. 3 *b* दोहाइं द्विखण्डानि.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु   दक्खविउ ससामिहि गंपि बाणु ।
पुणु अक्खिउ खलयणमइयवट्टि   उप्पण्णउ महियलि चक्कवट्टि ।
भो मागह किं जुज्झग्गहेण   मुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।
जइ अज्जु ण इच्छहि तासु सेव   तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव ।
तुहुं एक्कु ण अक्खरइं सुरसयाइं   तहु मंदिरि दासत्तणु गयाइं ।
लिहियहु किं किरं कीरइ विसाउ   दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।
तें वयणें सो पैरिमुक्कदप्पु   थिउ मंतपहावें णाइं सप्पु ।
अवलोयवि सैरलिविपंतियाउ   भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउ ।

घत्ता—मागहिण अगावें सविणंयभावें चक्केण व दिवसेसरु ॥
पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हावियसयमहेण   विहसेप्पिणु बोल्लिउ मागहेण ।
जय भरह महागयलीलगामि   तुहुं इह जम्मइ मइु परमसामि ।
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु   तुहुं हुयवहु अरिवरदिण्णडाहु ।
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि भंति   तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।
तुहुं धणउ धणउ सुहिणिहियकामु   तुहुं पवणु पबलबलदलणथामु ।
ईसाणु मैहेसरणवियपाउ   तुहुं एक्कु जि जगि रायाहिराउ ।
तुह असिजलधारइ हरियछाय   अरिणिरवइ तरु के के ण जाय ।
तुह असिजलधारइ उद्धसासु   वड्ढारिउ भुवणंतरि ण कासु ।

६ B किंकर. ७ K पविमुक्क°. ८ MBP सरलियपंतियाउ. ९ MP add after this: भरहेसरायणामकियाउ, सुरणरखेयरभय(M सय)गारियाउ, ता तेण वि चित्ति चमक्कियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपंतियाउ, B adds: भरहेसरायणामंकियाउ, जुइणिज्जियरवियरकतियाउ, ता तेण वि चित्ति चमक्कियाउ, चक्कवइभरहणामकियाउ. १० M अकुडिल°.

20. १ MBP °विंभाविय°. २ MBP °दाहु. ३ MBP धणइं. ४ MBP महीसर°. ५ B omits this line. ६ MPK अहिणरवइ. ७ B omits this line. ८ MP उड्डसासु

5 *a* °मइयवट्टि सचूरकः. 6 *b* मुइ मुञ्च; गहेण पिशाचेन. 9 *a* लिहियहु भवितव्यतायाः. 11 *a* सरलिविपंतियाउ बाणलिखिताक्षरपंक्तयः.

20. 5 *a* धणउ लक्ष्मीदायकः कुबेरः. 7 *a* हरियछाय हतमहातमसः, अन्यत्र नीलवर्णाः. 8 *a* °सासु उच्छ्वासः सस्यं च.

तुह असिजलधारइ परिल्हसंति बहुसलिल वि रयणायर तसंति ।
तुह असिजलधारइ अइहुयाइं रिउवहुणयणंसुयबिंदुयाइं ।
तुह असिजलधारइ कुलि असोउ हूयउ णिवं विय भुत्तभोउ ।

घत्ता—तुहुं भरह पयावइ पढमममहीवइ महिणाहहिं मणि भाविउ ॥
ताराणक्खत्तहिं पय पणवंतहिं पुप्फंदंतु जिह सेविउ ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे मागहपसाहणं णाम
बारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १२ ॥
॥ संधि ॥ १२ ॥

९ MBP पढमु. १० M पुप्फयंतु, BP पुप्फयंत.

9 *a* परिल्हसंति गर्वं मुञ्चन्ति. 10 *a* अइहुयाइं अतीव भूतानि. 13 पुप्फदंतु जिनचन्द्रादित्यौ च.

XIII

साहिवि मागहु गेहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिणेयारहो ॥
संजिवि सीहु व वरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

धरणीसरो चलइ गरुडद्धओ घुलइ ।
सिमिरं समुल्ललइ धूली णहे मिलइ ।
सुरसिरिहरं कमइ पडिबलइं उवसमइ ।
हरिवयणलालाइ करिदाणवेलाइ ।
जणजणियसंकेण तंबोलपंकेण ।
चरणाइं लिप्पंति हारेहिं गुप्पंति ।
अइगरुयभारेण सामंतचारेण ।
दसदिसिवहं भमइ पुहईयलं णमइ ।
णाइणिहिं णउ रमइ विसवाणियं वमइ ।
कह कह व भरु सहइ मउ मुयइ गइ महइ ।
फणिपुंगमो तसइ लवण्णवो रसइ ।
णरवइभुए वसइ रणजयसिरी हसइ ।
पराणिवबलं गसइ विसमत्थलिं कसइ ।
वरवाहिणी चरइ दुग्गं पि पइसरइ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ P साहेप्पिणु. २ MB गाहिवि समु; P महिवि समु. ३ P सुरसिहरि संकमइ. ४ MBP कह वि. ५ M दुग्गे पि.

1. 1 ग ह वि स मु ग्रहे आक्रमणे विषमः; °णे या र हो° प्रापकस्य. 5 *b* प डि ब ल इं शत्रुसैन्यानि; 6 *b* °वे ला इ प्रवाहेण. 11 *b* वा णि यं जलम्. 12 *b* ग इ म ह इ कुत्रापि गन्तुं वाञ्छति. 15 *b* क स इ चूर्णीकरोति.

जलदुग्गमं तरइ तरुदुग्गमं हरइ ।
गिरिदुग्गमं समइ गयणंगणं कमइ ।
भडथडहिं तुरएहिं संदणहिं दुरएहिं ।
अमरेहिं खयरेहिं रिउवग्गखयरेहिं ।
छव्विह वि संकमइ [6]अरिपत्थिवे दमइ ।
रायस्स वसि करइ अवसो भिसं [7]रमइ ।

घत्ता—काणणि [8]वइजयंतिणियडे बलु आवासिउ परगहणायरु ॥
गज्जइ गज्जंतहिं गयहिं पलयकालि णं खुहियउ सायरु ॥ १ ॥

2

उवजलहिजलहिनीराइयउ गिरि[1]गेरुयरेणु[2]यराइयउ ।
सालालइ [3]णंदृसालसहिउ तालालइ तूरतालमहिउ ।
[4]उत्तुंगमड्डि कयमं[5]डुवरु [6]रत्तासोयंकि असोयधरु ।
कंचणवंतइ कंचणफुरिउ पुण्णायपउरि पुण्णायरिउ ।
ससिरीसि सिरीसपसाहियउ बहुवंसि णिवंसविराइयउ ।
[7]संठियं सुवेसि वेसाभवणु सभुयंगइ भमियभुयंगगणु ।
सिहिगलरवि मंगलरवगहिरु [8]सरिवहरिसु कूरवइरिवहिरु ।
सविसायइ अविसायउ सविहु माइंदथइइ मायंदणिहु ।

६ MBP परपत्थिवे. ७ MBP मरइ, K रमइ, but writes adove it मरइ. ८ MPT वइजयत°; B वइजयते.

2. १ M मेरुय°, but records a *p* °गेरुय°. २ P °रेणुविराइयउ. ३ दूसामाल°. ४ MB छत्तुगमड्डि. ५ MB °मड्डुधरु, P मडवरु. ६ P रत्तासोयकियसोय°. ७ MP सठिउ. ८ MBP सरिवाहिरिसु; K °वहरिसु but corrects it to वहिरिसु

19 *a* °थ ड हिं समूहैः 21 *a* छ व्वि ह षड्विध सैन्यम्. 22 *b* अ व सो भि स र म इ यो वश नागच्छति सोऽवश्यं प्राणैर्वियुज्यते. 23 व इ ज य ति णि य डि क्षीणसमुद्रानुप्रवेशद्वारसमीपे.

2. 3 *a* क य म डु व रु कृतबलात्कारवर बलम्. 4 *b* पु ण्णा य रि उ पुण्यमाचरित येन. 5 *a* स सि री सि शिरीषपुष्पयुक्ते, सि री स प सा हि य उ शिरीषैर्मुकुटबद्धैः प्रसाधितमलकृतम्. 7 *b* स रि व ह रि सु सरितां नदीनां कूटतटसहिते; कू र व इ रि व हि रु क्रूराणां शत्रूणा वधे आदृतम्. 8 *a* स वि सा य इ पक्षिभिः शाकवृक्षैश्च सहिते; स वि हु प्रभुसहितम्; *b* मा इं द थ इ इ आम्रस्थगिते, मा यं द णि हु लक्ष्मीचन्द्रसदृशम्, अथवा, मासि चन्द्रो माश्चन्द्र. सकल पूर्णश्चन्द्रस्तेन सदृशम्.

कइलुक्कइ कइहिं पसंसियउ थिय हेरिवरि हरिवरभूसियउ ।
परलच्छीगहणुक्कंठियउ वणि साहणु सयलु वि संठियउ ।
अत्थमिउ सूरु तमभरियदिसि थिउ णिसि उववासें रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समच्चियइं णियकुलचिंधइं चावइं चक्कइं ॥
झाइउ मंतु महारिहरु दीवकंवाडइं विहडिवि थक्कइं ॥ २ ॥

3

तहिं अवसरि दिणयरु उग्गमिउ भरहेसें जिणवरिंदु णमिउ ।
रहु वाहिउ सहसा तेण किह संपुण्णमणोहरु पुण्ण जिह ।
कसपहरतुरियपरियतुरउ मरुफंसफारफरहरियधउ ।
विरासियरहंगरोसियउरउ पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।
मणिघंटाजालहिं झणझणइ भडभारक्कंतउ णं कणइ ।
कइवयजोयणइं महासरहो जलु लंघिवि पुणरवि सायरहो ।
पव्वालंकरियउ णं वरिसु कोडीसरु किं ण जणइ हरिसु ।
सुविसुद्धवंसु गुणणमियतणु सुकलत्तु व पहुणा लइउ धणु ।
गुणु कड्डिवि लीलइ जे णियउ करु सवणि ससि व्व सहइ थियउ ।
रेहइ सरु दिणयरणिम्मलहो णवणालु व कुंडलसयदलहो ।

घत्ता—कहइ व जाइवि णरवइहि महु संगेण वि वहइ खलत्तणु ॥
गुणथिरकरपरियड्डियउ कण्णालग्गु चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

4

जीयाविमुक्क जीवियहरणु णं दिणयरु खरपसरियकिरणु ।
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ णं पेसिउ दूयउ अप्पणउ ।

९ MBP हरिवरेहिं हरि भूसियउ. १० MBP दो वि.

3. १ MBP ° मणोरह. २MBP जोजियउ. ३ MBP °लग्गचाव°.

4. १ MBP जीयाइ मुक्क. २ MBP दूवउ.

13 दीवकवाडइं जम्बूद्वीपकपाटानि.

3. 3 *a* कस° चर्मयष्टिका; *b* मरुफंस° वातस्पर्शः. 6 *a* महासरहो महान् सरः शब्दो जलं च यस्य स समुद्रः. 7 *a* पव्वालंकरियउ पर्वभिरमावास्यादिभिः ग्रन्थिभिश्च अलंकृतम्. 9 *a* णियउ नीतः; सवणि कर्णे श्रवणनक्षत्रे च.

4. 1 *a* जीयाविमुक्क प्रत्यञ्चया विमुक्तः. 2 *a* मग्गणउ मार्गणो बाणो याचकश्च.

णिवडिउ सहमंडवि वरतणुहि कह कह व ण लग्गउ तँहु तणुहि ।
कंचणपुंक्खेणुज्जोइयउ सो तेण लएवि पलोइयउ ।
सुरदणुयदप्पलीलाहरइं दिट्ठइं णरवइणामक्खरइं ।
अरविंदचंदविमलाणणहो मह्नु आइजिणेसरणंदणहो ।
भरहहु जो जो ण सेव करइ सो सो अहि णरु अमरु वि मरइ ।
ता तेण जि तं जि समिच्छियउ थोवउ णियपुण्णु दुगुंछियउ ।
गउ तहिं जहिं सइं अच्छइ भरहु मयरहरमज्झि खंचियसरहु ।

घत्ता—अक्खिवि णाउं सगोत्तु कुलु पणविउ सो महिँवइभत्तारहु ।
सुँरहं मि तुच्छधम्मफलिण लग्गइ सिरि करु परपडिहारहु ॥ ४ ॥

5

इंदीवरलोयणु सच्छमणु पभणइ वरतणुमहिलुलियतणु ।
तुह विग्गहु णिग्गहु विग्गहहो तुँह संधाणु जि कारणु महहो ।
पइं सामिय संधिउँ जासु सरु वैउसंधिउ भक्खइ तहु खयरु ।
पिउ जासु अणिंदु जिणिंदु सइं पुण्णहिं विणु पहु को लहइ पइं ।
लइ लइ पयउ हारावलिउ णं महिघुलियउ तारावलिउ ।
लइ सुरधरणीरुहसंभवइं कुसुमइं णिच्चं चिय णवणवइं ।
लइ णेउराइं लइ कंकणइं लइ दिव्वइं सत्थइं झणझणइं ।
लइ दिव्वंगैइं वत्थइं वरइं लइ खीरतरंगइं चामरइं ।
धम्मु व जीवहु अब्भुद्धरणु परमेसर तुहुं जि मज्झु सरणु ।
तं णिसुणिवि भरहें बोल्लियउ पउ वि अवरु वि मोक्कँल्लियउ ।
जज्जाहि लएप्पिणु णिययघरु अच्छहि महु होइवि आणयरु ।

३ M तउ. ४ MP °पुखेणु°. ५ MBP माहिवइभत्तारहु. ६ MBP सुरहम्मि धम्मतुच्छफलिण.
5. १ MBP तुहु. २ B संधिय ३ M चउसधिउ. ४ MBP देवंगइं. ५ MP मोकल्लियउ.

9 *b* °सरहु स्वरथः. 11 सुरहं मि देवानामपि.

5. 2 *a* विग्गहहो शरीरस्य, *q* महहो पूजायाः. 3 *b* वउसंधिउ वपुषः शरीरस्य संधयः संधिबन्धनानि, खयरु गृध्रः.

घत्ता—पूरइ महु महिवइ जसेण दविणविलासु वासु किं वण्णिउ ॥
उत्तमु जगि अहिमाणु धणु एउ वयणु किं पइं णायण्णिउ ॥ ५ ॥

6

पप्फुल्लियदुमरसदावणिय सुयपिंछरिंछकोड्डावणिय ।
वरतणु सुरु जिणिवि सुहावणिय वेइय धरेवि दीवहु तणिय ।
पुणु जयदुंदुहिसद्दहु मिलिउ सहुं राएं साहणु संचलिउ ।
पच्छिमदिसि संमुहु धाइयउ सव्वत्थ जि कहिं मि ण माइयउ ।
हयमुहपयलियफेणुज्जलउ सव्वत्थ जि भंडथडसंकुलउ ।
सव्वत्थ जि गयमयसिंचियउ सव्वत्थ जि धयमालंचियउ ।
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ सव्वत्थ जि वंदिविंदथुणिउ ।
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धदिसु सव्वत्थ जि सुरहिगंधसरसु ।
सव्वत्थ जि भमियभमिरभमरु सव्वत्थ जि चलियचवलचमरु ।
सव्वत्थ जि परिधाइयअमरु सव्वत्थ जि संचरंतखयरु ।
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुक्ख मलंतु दलंतु गिरि जलु सोसंतु णिवेण णिवेइउ ॥
साहणु पम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

7

अवलोइय राएं सिंधु किह विब्भमधारिणि वरवेस जिह ।
दावियमय णावइ हत्थिहड विबुहासिया वि संगहियजड ।
गिरितवसिहि णं परिघुलियजड रणवित्ति व सोहइ झसपयड ।

६ M विलास. ७ MBP अहिमाण°. ८ MBP पइं किं.

6. १ MP सुयरिच्छपिच्छ°; B सुयरिंछपिंछ°. २ B °दिससंमुहु. ३ B णडथड°. ४ M वंदविंद°. ५ MBP °गंधरसु. ६ MBP °भमरिभमरु. ७ M परिधाविय°. ८ B विओइउ, P णिवोइउ.

7. १ B हत्थिघड.

12 वासु व्यासो विस्तरः.

6. 1 *a* पप्फुल्लियेत्यादि—प्रफुल्लितैर्द्रुमैरुपलक्षिता रसायाः पृथिव्या दावणिया वेदिका; *b* °कोड्डावणिय कौतुकोत्पादिका. 8 *b* °सरसु शृङ्गारादियुक्तम्. 9 *a* °भमिर° भ्रमणशीलाः.

7. 1 *b* वरवेस वरा वेश्या.

अइकुडिल णाइं सुरमंतिमइ मलणासणि णं पंचमिय गइ ।
धणुलट्ठि व दीसइ मुक्कसर बहुरायहंसपिय णाइं धर ।
कमलेण कोसलच्छि व धरइ जा महिवइसिरिहि अणुहरइ ।
चलसारसजुयलपयोहरिय कणइल्लपक्खिपंतिहिं हरिय ।
रंगंतबयावलिपंडुरिय पवहंतकुसुमरयपिंजरिय ।
णं गहियविचित्तवरुत्तरिय अहवा णं मंडणकब्बुरिय ।
गयहयचंदणरसपरिमलिय चंदकवकलावसुकोंतलिय ।
जा मिलिय गंपि रयणायरहो रत्ती धुत्ति व रय णायरहो ।

घत्ता—ताहि तीरि मुक्कउ सिमिरु तामत्थइरिसिहरु संपत्तउ ॥
णं वारुणिदिसिकामिणिहि णिवडिउ मित्तु णिरारिउ रत्तउ ॥ ७ ॥

8

अत्थमिइ दिणेसरि जिह सउणा तिह पंथिय थिय माणियसउणा ।
जिह फुरियउ दीवयदित्तियउ तिह कंताहरणहदित्तियउ ।
जिह संझाराएं रंजियउ तिह वेसाराएं रंजियउ ।
जिह भुवणुल्लउ संतावियउ तिह चक्कउलु वि संतावियउ ।
जिह दिसि दिसि तिमिरइं मिलियाइं तिह दिसि दिसि जारइं मिलियाइं ।
जिह रयणिहि कमलइं मउलियइं तिह विरहिणिवयणइं मउलियइं ।
जिह घरहं कवाडइं दिण्णाइं तिह वल्लहखेवइं दिण्णाइं ।
जिह चंदें णियकरपसरु किउ तिह पियकेसहिं करपसरु किउ ।
जिह कुवलयकुसुमइं वियसियइं तिह कीलियमिहुणइं वियसियइं ।
जिह पीयइं पाणइं महुराइं तिह अहरइं महुरसमहुराइं ।

२ P सुरमंतमइ. ३ MP °णासिणि पंचमिय°. ४ MBP कोसु. ५ P °बहुत्तरिय. ६ MBP चंदक°. ७ MBP °सिहरि. ८ MBP वारुणादिसि°.

8. १ P दीवउ. २ B omits this foot. ३ MBP° खेमइं. ४ MB अवरइं महरइं; M records a *p* महुरइं for महरइं; P अहरइ महुरइ.

7 *b* कणइल्ल° शुकाः. 8 *a* °बयावलि° बकपक्तिः. 10 *b* चदकवकलावसुकोंतलिय मयूरपिच्छकुन्तला. 11 *a* रयणायरहो समुद्रम्; *b* णायरहो नागरपुरुष प्रति. 13 मित्तु सूर्यः; णिरारिउ अतिशयेन.

8: 1 *b* °सउणा निमित्तानि. 7 *b* °खेवइं आलिङ्गनानि.

जिह जिह गलंति जामिणिपहर तिह तिह विद्दण्ण मउरइपहर।
जिह णहि सुकुंग्गमु दरिसियउ तिह विढि सुकुंग्गमु दरिसियउ।

घत्ता—ता चक्कउलहं पंकयहं तंबकिरणपूरियभुवणोयरु॥
विरयहं णरणारीयणहं जीविउ देंतु समुग्गउ दिणयरु॥ ८॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे
कोइलकुलकलयालि वियसियसयदलि रंभवणे।
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ।
जंमंभउंहाभावइं चक्कइं चावइं जियरणइं
अहिअंचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं।
णं भूरिपहायरु चंदु दिवायरु णहवडिउ
मणिगणवेयडियइ कंचणघडियइ रहि चडिउ।
पेरिय जोत्तारें हरि हुंकारें तिक्खमइ
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ।
कयभडकडवंदेणु वाहियसंदणु चैंवलधउ
करिमयररउद्दहु लैंवणसमुद्दहु मज्झि गउ।
ता खंचिउं रहवरु भेसियजलयरु सलिलवहे
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जर्क्ख णहे।
राएं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ
थिरु ठाणु णिबंधिवि सरु गुंणि संधिवि पेसियउ।
अवरण्णवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे
तडिदंडु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे।

५ MP सुक्करग्गमु. ६ MP सुक्करग्गमु.

9. १ M चिक्कमइ; B चिंकमइ. २ P °मद्दणु. ३ MBP धवल°. ४ MBP मज्झि समुद्दहु सो जि गउ. ५ MBP खंचिय°. ६ MBP थक्क. ७ P गुणु.

12 *b* विडि विटे.

9. 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकरः. 8 °वेयडियइ खचिते. 9 जोत्तारें सारथिना. 15 सुइसोक्खर श्रुतिसुखदानि. 17 अवरण्णव° पाश्चिमसमुद्रः.

सो णिवडिउ महियलि सहसा करयलि ढोइयउ
सुरवइसंकासें बाणु पहासें जोइयउ ।
ता तम्मि विसिट्ठइं लिहियइं दिट्ठइं अक्खरइं
णं मत्ताविर्त्तइं मत्ताजुत्तइं णायरइं ।
हउं दाणवमद्दणु कासवणंदणु चक्कवइ
महु भरहहु केरी जगभयगारी सेव जइ ।
तुहुं करहि पियारी परिहवगारी तो जियहि
णं तो असिवाणिउ जयसिरिमाणिउ धुंवु पियहि ।
इय तेण पवाइउ कज्जु विवेइउ गयउ तहिं
अमरिंदसमाणउ पुहइहि राणउ थियउ जहिं ।
पविमुक्क[11]पहासें दिट्ठु पहासें भरहु किह
भविपं सपणामें सुहपरिणामें अरुहु[12] जिह ।

घत्ता—कुसुमइं कप्परुक्खफलइं वाहणइं[13] मि वरवाहणवाहहो ॥
रयणइं वत्थइं भूसणइं दिण्णइं तेण वसुंधरिणाहहो ॥ ९ ॥

10

सुरसिंधुसरिहिं देहलिय धरिवि   पइसरणु करिवि ।
पुव्वावरेसु परिसंठियाइं   वइरट्ठियाइं ।
वेयड्ढगिरिहि ओइल्लयाइं   सुधणिल्लयाइं ।
चंडाइ मेच्छखंडाइं ताइं   दोसाहियाइं ।
करवालें णिज्जिउ अज्जखंडु   पट्ठविवि दंडु ।

८ MBPK सुरवर°. ९ MBP ता. १० MBP धुउ. ११ MBP °सहासें and T स्वोपहासेन स्वमाहात्म्येन वा. १२ MBP अरुहु १३ P वाहणाइ वर°.
10. १ M देहल, BPT देहलि. २ MBP सुवणिल्लयाइं.

20 पहासें प्रभासनाम्ना नृपेण. 22 मत्ताविंत्तइं मात्रावृत्तानि आर्यादीनि; मत्ताजुत्तइं माला गुरुलघु गलअआइईत्यादिस्वराश्च.
10. 1 सुरसिंधुसरिहिं गङ्गासिंधुनद्योः; देहलिय मर्यादाम्; b पइसरणु करिवि पुव्वावरेसु पूर्वदिग्भागे प्रवेशनं कृत्वा. 2 b वइरट्ठियाइं वैरेणामर्षेण स्थितानि.

मालव मागह वंगंग गंग कालिंग कोंगे[३] ।
पारस बब्बर गुज्जर वराड कण्णाड लाड ।
आहीर कीर गंधार गउड णेवाल चोड ।
चेईस चेर मरु ढुंढरंडि[४] पंचाल पंडि ।
कोंकण केरल कुरु कामरूव सिंहल पल्लय ।
जालंधर जायव पारियाय णिज्जिणिवि राय ।
पच्चंतवासि णीसेस लेवि णियमुद्द देवि ।
हेलाँइ[५] तिखंडावणि हरेवि असि करि करेवि ।
विजयद्धहु संमुहु चलिउ राउ सेणासहाउ ।
दियहिहिं पत्तु तं[६] सिहरि केम मणि[७] मोक्खु जेम ।
दिट्ठउ महिहरु सुसरेण[८] सुसरु कुहरेण कुहरु ।
सरहेण विहंडिय भीमसरहु समहेण समहु ।
कडयंकिएण कडयंकियंगु[९] तुंगेण तुंगु ।
गुरुवंसु गरुयवंसुब्भवेण थावरु थिरेण ।
गज्जियगउ पडिगज्जियगएणं[१०] उब्भियधएण ।
हिंसियतुरंगु[११] सतुरंगएण सरओरएण ।
अच्चंतससावउ सावएण पालियवएण ।
आसंघिउ पत्थिउ पत्थिवेण विजयद्धु कएण ।

घत्ता—गिरि सोहइ दीहत्तणेण पुव्वावरसमुद्दु[१२] संपत्तउ ॥
तिहिं तिहिं खंडहिं मेइणिहि मेरादंडु व दइवें घित्तउ ॥ १० ॥

३ MBP कुंग. ४ MBP दहुरडि. ५ M हेलाइ वि खडावाणि. ६ MBP तहुं. ७ MBP मुणि; K मणि but corrects it to मुणि. ८ MB ससुरेण समुरु. ९ B कडियंकियंगु. १० GK add after it उब्भूयधउ. ११ MBPT सतुरगवयणु. १२ MB ममुद्द°.

16 *a* सुसरेण शोभनस्वरेण; सुसरु शोभनं सरः पानीयं सरोवरो वा यत्र, *b* कुहरेण पृथिवीधरेण पर्वतेन; कुहरु नृपः. 17 *b* समहेण पूजनया सहितेन; समहु मधुयुक्तः. 21 *b* सरओरएण सरजतो गिरिः तत्रानुरक्तेन. 22 *a* सावएण लक्ष्मीपदेन; *b* पालियवएण पालितप्रतिज्ञेन. 23 *a* पत्थिउ पृथ्वीविकारः. 25 मेरादंडु मर्यादाकरणो दण्डः.

11

तहिं अवसरि गुहदारहु दूरें सुरतरुवरकरढंकियसूरें ।
आवासिउ गहणि सडंगु बलु करिदसणपहरकलुसियउ जलु ।
महिसउलमइकइविउ सरु कम्मयरकुढारहिं छिण्ण तरु ।
आलुंखियाइं पिक्कइं फलइं णिलूरियाइं सद्दलदलइं ।
गोमंडलेहिं चिण्णइं तणइं मुसुमूरियाइं अंबयवणइं ।
उड्डावियाइं कोइलकुलइं भयतसियइं रसियइं णाहलइं ।
णिलुक्कइं मुक्कइं सयदलइं दसदिसु गयाइं सउणयकुलइं ।
मयवंदइं रुंदइं णिग्गयइं एत्तहिं तेत्तहिं सहसा गयाइं ।
सुत्तइं रत्ताइं रईहरहिं णरमिहुणइं णववेल्लीहरहिं ।
णिवकरिहिं वियारिय विंझकरि सुहडेहिं णिहय रुंजंति हरि ।

घत्ता—वणसिरि उव्वासिय सुहरु एवहिं जणवएण णिरु णिवसइ ॥
पेच्छिवि भरहाहिवणिवइ कुंदपुप्फयंतहिं णं विहसइ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे तिखंडवसुंधरापसाहणं णाम
तेरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १३ ॥
॥ संधि ॥ १३ ॥

11. १ MBP अवरगुहादारहु सदूरि. २ MBP °ढकियइ सूरि. ३ MB सडग°. ४ MBP कइामिउं. ५ MBPK छुक्कइं. ६ MBP सहसइ. ७ MBP रईयरेहि. ८ MBP °वल्लीहरेहिं. ९ MB रुंजंत; P रुजंति. १० BPK पुप्फदंतहिं.

11. 4 *a* आलुंखियाइं आस्वादितानि; 4 *b* सद्दल° सार्द्राणि. 5 *a* °मंडलेहिं संघातैः. 7 *a* णिलुक्कइं लोटितानि.

XIV

वरतणुमयमहेण जियमागहेण भुयबलणिद्दलियपहासें ॥
हयपरमहिवइहि सेणावइहि आएसु दिण्णु भरहेसें ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—स[1]सिविरु जाम तेत्थु पहु णिवसइ सिद्धतिखंडमंडलो ।
ता पत्तो मयासि मणिसेहरु सवणविलंबिकुंडलो ॥ १ ॥

सो पभणइ पणवियसिरु सं[2]हरिसु मुहससिकिरणप[3]सरधवलियदिसु ।
णवघ[4]णथणियमहुरमणहर[5]गिरु सुयणु भुयणभरधरु णिरुवमु थिरु ।
भो कयविजयविजयगिरि उत्तर- दिसि अवर वि सुर णर रवि तुह धर ।
सा[6] वि तिखंड चंडरिउखंडण भो णाहेयतणय कुलमंडण ।
सिहरिगुहादुवारु उग्घाडहि कुलिसदंडखरपहरें ताडहि ।
जइ तो[7] मग्गु भडारा होसइ पुण्णु तुहारउ गरुयउ दीसइ ।
जयगिरिवरसिहर[8]ग्गणिकेयउ जासु अहं पि दासु संजायउ ।
ता चमुपमुहहु वयणु णिरिक्खिउ जसवइपुत्तें पेसणु अक्खिउ ।
भो मेहेसर क[9]रहि महुत्तउ हणहि गिरिंदकवाडु णिरुत्तउ ।
णिविडु विहंडिवि पडउ विसट्टउ जिह हयदुज्जणमणु तिह फुट्टउ ।
स पहुमणोरहकरणुक्कंठिउ सो पसाउ पभणंतु समुट्ठिउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउब्भिण्णदन्तङ्कुरोहा
संसाहीबद्धमूला जलहिजससमुब्भूयाडिण्डीरवत्ता ।
बम्भण्डे वित्थरन्ती अमयरसमय चन्दबिम्बं फलन्ती
फुल्लन्ती तारओह जयइ णवलया तुज्झ भरहेस कित्ती ॥

M however reads °पिण्डीर° for °डिण्डीर°. GK do not give it.

1. १ MB संपइ जाम; P एत्तहि जाम. २ P सुहरिसु. ३ B °पसरि°. ४ MBPT °घणझुणिय°. ५ K °मणहरि. ६ MBP साधि. ७ MBP तउ. ८ P °सिहरणिकेयउ. ९ MBP करि महु वुत्तउ.

1. 1 °मयमहेण °मदमथनेन. 4 मयासि अमृताशी देवः. 11 *a* जयगिरिवर° विजयार्धः. 13 *a* महुत्तउ मया उक्तम्. 14 *a* पडउ पततु गच्छतु; विसट्टउ विकसितः.

[10]परिणयसुयतणुमरगयहरियइ णाणागमणविलासहुं भरियइ ।
वरभडसंगरपहरणपोढउ चडुलतुरंग[11]रयणि आरूढउ ।
जाप्पवि पट्ठि देवि गिरिदारहु धरिवि तुरउ संमुहुं खंधारहु ।

घत्ता—अवहत्थिवि छलेण णियभुयबलेण हुंकारिवि णिरु रत्तच्छें ॥
परणर[12]पडिखलणु महिहरदलणु उम्मुक्कु दंडु परिहच्छें ॥ १ ॥

2

दुवई—मुक्कइ पहरणम्मि हरि णिग्गउ खुरदरमलियकाणणो ।
वलपुंगमु वि णविउ णरणियरहिं जगजयपहसियाणणो ॥ १ ॥

ता दंडरयणणिट्ठुरपहारविहडियकवाडकिंकारसद्दसंमद्दखुद्दविद्दवियसप्पमुह-मुक्कफारफुक्कार[1]जालियविस[2]सिहिजालं ।

जालामालाकलावहेलापलित्तणासंतमत्तकरिचरणपेल्लणुल्ललियमणिसिलाव[3]डण-कुद्धरुंजंतसद्दूलरोलभीमं ।

भी[4]मुब्भापब्भारभरियकुहरंतणिग्गयाहिंदसुंदरीमुक्कसिचयपयडियपयोहरुल्लिहिय[5]-हिययरइरसियतावसुद्धरिय[6]चरियभारहारं ।

हा[7]रवमुयंतसबरीपुलिंदसिसुदीसमाणकेसरिकिसोरणहकुलिसकोडिदारिय-कुरंगरुहिरंभवाह[8]दुग्गं जायं गुहादुवारं ।

घत्ता—डज्झंतहं खगहं महिहर[9]मृगहं घोसेणप्पाणउं णिंदइ ॥
अमुणियवेयणु वि णिव्वेयणु वि णं दंडें ताडिउ कंदइ ॥ २ ॥

---

१० M परियण°. ११ MB °रयणआरूढउ. १२ P °परिखलणु महिहरदलमलणु.

2. १ MBP °जणिय°. २ M विसग्गिसिहि°. ३ MBP °वडणरुट्ठरुंजंत (P रुजंत) मत्तसद्दूल°. ४ MBP भीमुण्हा°. ५ B °ल्लिहियरइ°. ६ B °रियभार°. ७ P हाहारव°. ८ G °दुगं. ९ MBP °मिगहं.

---

16 *a* परिणयसुयतणु° तरुणशुकशरीरवन्नील. 18 *a* पट्ठि देवि पृष्ठे दत्वा. 19 छलेण हननविज्ञानकुशलेन. 20 परिहच्छें वेगेन.

2. 3 °संमद्द° कोलाहलः, 4 °विद्दविय° उपद्रुताः. 5 °हेलापलित्त° युगपत्प्रज्वलितः. 7 भीमुब्भा प्रचण्डस्तापः. 8 °पयडियेत्यादि–प्रकटितौ च तौ पयोधरौ ताभ्यामुल्लिखिते विदारितं हृदयं येषां ते; °रइरसिय रतिरसिकाः; °चरियभारहार चारित्रभारस्य हारो हरणं यत्र.

3

दुवई—ता मंजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो।
अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवइरिसासणो ॥ १ ॥

छड्डियावलेवो इच्छियंघिसेवो।
रिद्धिबुद्धिवंतो आगओ तुरंतो।
भूयभत्तिकामो तग्गिरिंदणामो।
सेलसिंगवासो सुद्धसेयवासो।
वंदिओ णरिंदो तेण वीरचंदो।
हारमिंदुधामं दिव्वपुप्फदामं।
कंकणं किरीडं कुंभअंभणीडं।
पंडुरं पसत्थं चारु हारि वत्थं।
कुंजरारिवूढं हेमरण्णवीढं।
हित्तकंजलीलं भम्मदंडणालं।
सव्वलोयमोल्लं किंत्तिवेल्लिफुल्लं।
चामरेण जुत्तं णिम्मलायवत्तं।
हासहंसवण्णं राइणो विइण्णं।
मंगलं पहाणं तित्थतोयण्हाणं।
रुक्खरोहियासे तम्मि भूपएसे।
अच्छिओ छमासं देवदारुवासं।
वल्लरीललंतं माणियं वणंतं।
णिग्गयग्गिजालं मंदधूममालं।

3. १ MB °संहट्ट°. २ MB छंडिया°. ३ P भूप°. ४ MB वीरवंदो. ५ MB °मंडणीडं. ६ MBP हेमवण्ण°.

3. 1 °केयूर° बाहुरक्षः. 2 °संघट्ट° मेलापक· संमर्दो वा; °सासणो सा लक्ष्मीस्तस्याः स्वनः आज्ञावचनं वा. 3 *b* इच्छियंघिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य सः. 5 *a* भूय° भूपः; *b* तग्गिरिंदणामो विजयार्धनामा. 9 *b* अंभणीडं जलसृतम्. 11 *b* हेमरण्णवीढं हेमरत्नपीठम्. 12 *a* हित्तकंजलीलं हृता अनुकृता कजस्य पद्मस्य लीला शोभा येन; *b* भम्म° सुवर्णम्. 17 *a* °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि. 19 *a* वल्लरी° वल्ली,

मुक्कदीहसासं णं महीहरासं ।
दावियंधयारं तं गुहादुवारं ।
णट्ठताववेयं सिट्ठमग्गभेयं ।
लग्गसीयवायं सीयलं च जायं ।

घत्ता—चंदणचच्चियउ कुसुमंचियउ ता पेसिउ पालियखत्तें ॥
आरासयफुरियउ सुरपरियरिउ संचलियउ चक्कु पयत्तें ॥ ३ ॥

4

दुवई—पुणु चक्काणुमग्गलग्गंतमहाभडकरितुरंगयं ।
चलियं साहणं पि रहभमियरहंगाहयभुयंगयं ॥ १ ॥

वसहकरहखरवरवलइयभरु हरिखुरदलियमलियवणतणतरु ।
मयगलमयजलपसमियरयमलु दसदिसिमिलियमणुयकयकलयलु ।
कसझसमुसलकुलिससरकरयलु जणवयपयभरपणवियमहियलु ।
असिवरसलिलपवहधुयपरिहवु सनिलयविलयवलयखणखणरवु ।
मसिणघुसिणरससुपुसियउरयलु पवणपहयधयचयचियणहयलु ।
चवलचमरचियलणपसरियकरु परिमललुलियललियमहुलिहसरु ।
मरुवहविगयखयरसुरवरघरु अमरिसकसणपिसुणजयसिरिहरु ।
सहपरिभमियजिमियसुरमियसहु पहुसुहजणणकहियमणहरकहु ।
पहरविहुरु सुमरिवि मयभययरु णिवबलु गिलइ व गुहमुहगिरिवरु ।

घत्ता—तेण जि रिउमहहो मग्गियपहहो घरु आयहु फणिवहुलालिउ ॥
भरहहु भयवसेण सगुहामिसेण णियहियवउं दक्खालिउ ॥ ४ ॥

७ MBP सिद्धमग्ग°.

4. १ B °भग्गलग्ग महा°. २ B °खरखुरवलइय°. ३ MBP °पणमिय°. ४ B °चुवपरि°. ५ M धयचयवियणहलु; P °धयचुंबियणहयलु. ६ P °वियलिण. ७ MBP पहसुह°. ८ MBP °विहुर. ९ MBP घर. १० MBP °हियवउं ण दक्खालिउं.

21 *b* महीहरास पर्वतमुखम्. 23 *b* सिट्ठमग्गभेद शिष्टमार्गभेदम्.

4. 7 *a* °चिय° प्रच्छादितम्. 9 *a* मरुवह° पवनमार्गः आकाशम्; °सुरवरघरु देवविमानम्. 10 *a* °सहु सखा.

5

दुवई—कज्जलणीलबहलतमपडलविणासियणयणमग्गए।
वच्चइ वाहिणीइ ण सुहेण महीहरकुहरदुग्गए ॥ १ ॥

इय चिंतिवि करि ढोइवि कागणि   चमुपमुहेण लिहिय ससि दिणमणि।
ते सोहंति विवरघरभित्तिहि   णावइं णयणइं णरवइकित्तिहि।
करणियरेण ताहं तमु सारिउ   णिसि दिवसइं सोहंति णिरारिउ।
वहइ सेण्णु जयदुंदुहि वज्जइ   पलयकालि णं जलणिहि गज्जइ।
उग्गमंतपडिरवगंभीरहिं   दुरयघडाघंटाटंकारहिं।
संदणमुक्कचक्कचिक्कारहिं   धाविरवीर[1]धीरहुंकारहिं।
महिहरविवरमग्गु णं फुट्टइ   रोलें तिहुयणु णाइं विसट्टइ।
इंदु वरुणु वइसवणु विसूरइ[2]   मेइणि कह व भारु साहारइ।
सायरु कह व ण महीयलु रेल्लइ   मंदरु कह व ण ठाणहु चल्लइ।
चंदाइच्चजुयलु णहि झुल्लइ   णीलु[3] णिसहु केलासु वि हल्लइ।
एम सेण्णु गच्छंतउ दिट्ठउ   अद्धगुहाधरणियलि[4] पइट्ठउ।

घत्ता—रायहु केरएण परिवारएण पहि जंतें परमयसाडें ॥
मणि आसंकियउ मुहुं वंकियउ फणिसंखकुलियकक्कोडें[5] ॥ ५ ॥

6

दुवई—किंणरगरुडभूयकिंपुरिसमहोरयजक्खरक्खसा।
पहुणो तण्णिवासि संजाया वेंतर[1] के ण के वसा ॥ १ ॥

तओ दोण्णि भूमीहरंते णईओ   सुकारंडभेरुंडलीलारईओ।
समुम्मग्गणिम्मग्गणामालियाओ   जलावत्तकीलंतमीणालियाओ।
तडालग्गडिंडीरपिंडुग्गयाओ   गिरिंदस्स गुज्झंतरा णिग्गयाओ।

5. १ MBP °धीरवीर°. २ MBP वि जूरइ. ३ B णीलि णिसहु; K णीलणिसहु. ४ K धरणियलु. ५ P कंकोडें.

6. १ MBP विंतर.

5. 2 वाहिणीइ सेनासंनाहः. 12 *a* झुल्लइ कम्पते. 14 परमयसाडें शत्रुमदविध्वंसकेन.

6. 2 के ण के के न के, अपि तु सर्वे. 3 *a* भूमीहरंते पर्वतमध्ये.

विसुल्लोलवेलावलीवंकियाओ पहे[2]स्संतरे राइणो थक्कियाओ ।
महाणायरायस्स णं णाइणीओ झ[3]सुप्पिच्छसिंधुस्सरीजाइणीओ ।
अभग्गाइं दुग्गाइं णित्थारएणं सविण्णाणिणा संकमेणं कएणं ।
सरीसारतीराइं संदाणिऊणं पुरो भिच्चसंचारयं जाणिऊणं ।
दरीमाणियं पाणियं लंघिऊणं परं पा[4]रमाधारमासंघिऊणं ।

घत्ता—गिरिकुहरंतरहो रमियामरहो णिग्गंतउ सालंकारउ ॥
सहइ महारुहहो वियलिउ मुहहो बलु कव्वु व सुकइहि केरउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—ता णिग्गंति भरहि भेरीरवकंपियमेच्छमंडलं ।
परबलदलणवीरकोलाहलमिच्छियसमरगोंदलं ॥ १ ॥

जं गुलुगुलंतचोइयमयंगपयभूरिभारभारिज्जमाणभूकंप[1]णमियणाइंदमुक्कपु[2]क्काररावघोरं ।

जं हिलिहिलंतवाहियतुरंगखरखु[3]रखयावणीचलियधूलिणासंततियसतरुणीविचित्तघोलंतचेलचित्तं ।

जं ह[4]णुभणंतपक्कलपदुक्कपाइक्कमुक्कलल्लं[5]क्कहक्करिउसुहडविहडणुग्घुट्ठरोलफुट्टंतगयणभायं ।

जं रहियमुक्कपग्गहविसेसरंगंत[6]रहरसाचलणपं[7]डियगुरुसिहरिसिह[8]रचुण्णजायचंदणकुचंदणोहं ।

२ M पहासतरे; B पहाभंतरे. ३ MB झसुप्पत्तिसिंधूसरी°; P झसोपित्थ सिंधूसरी°; T उपित्थ उल्बण. ४ BP पारमावार°.

7. १ MBPK °णविय°. २ MP °फुकार°, B °सुंकार, K °पुकार°. ३ MP °खुरखरखयावणी°. ४ MBP हणुहणुभणंत°. ५ MBP °ललक्क°. ६ P °रगतुरयरह°. ७ MP °चलणवडिय°; B °चलणचडिय°. ८ MBP °सिहरसयचुण्ण°.

---

6 *a* विसुल्लोल° जलकल्लोला:. 7 *b* झसुप्पिच्छ° मत्स्योल्बणा सिंधु., °जाइणीओ °गामिन्यः. 8 *b* सविण्णाणिणा कुशलेन स्थपातिरत्नेन, संकमेण जलरोधार्थं कृतेन सेतुबन्धेन. 9 *a* संदाणिऊणं रुद्ध्वा. 12 महारुहहो अतिमहतः कवेः.

7. 2 'गोंदल मेलापक.. 2 °पक्कल° समर्था:, °लल्लक्क° रौद्रः. 6 °पग्गह° रश्मयः; °कुचंदण° रक्तचन्दनादि.

जं हारदोरकेऊरकडयकंचीकलावमउडावलंबिमंदारदामसोभंतजक्खजक्खीविमाणछण्णं।

जं भीयरं[9] वराराकरालचक्काणुगामिमंडलियसूरसामंतकोंतकरवालचावसंघायसंकडिल्लं।

जं दंतिदाणधारापवाहपसमंतरेणुदीसंतदसदिसाणणभरंतसेणाणरुद्धरियविविहछत्तचिंधं।

जं भिच्चदेहपरियलियसेयणीसंदबिंदुहयफेणसलिलचिक्खल्लं[10]तल्लखुप्पंतसयडसंकिण्णकुहिणिदेसं।

घत्ता—तं पेच्छिवि पबलु उत्थरिउ बलु बोल्लिज्जइ[11] मेच्छकुलेसहिं॥
एवहिं को सरणु ढुक्कउ मरणु रिउ धाइय चउहुं मि पासहिं॥ ७॥

8

दुवई—गिरिदरिसरिमुहाइं जो लंघइ पहु सामत्थवंतओ।
सो अम्हारिसेहिं किं जिप्पइ णिज्जियदहदियंतओ[1]॥ १॥

बहुकालहु दइवेण णिवेइउ　　हा हा पलयकालु संप्राइउ[2]।
वयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं　　मेच्छमहामंडलमहिरायहं।
धीरें मंतें एउ पवुच्चइ　　आवइ[3]कालइ धाह ण मुच्चइ।
सव्वु सहिज्जइ जं जिह ढुक्कइ　　हयविहिविहियहु को वि ण चुक्कइ।
जहिं भंडणु तहिं अवसें खंडणु　　धीरत्तणु जि मणूसहु मंडणु।
विसहर परणरसेण्णवियारा　　ते तुम्हहं कुलदेव भडारा।
सुमरहु सामिसाल सब्भावें　　किं भएण किं किर बलगावें।
तेहिं मि ए आलाव विवेइय[4]　　णाय मेहमुह[5] मणि णिज्झाइय।

९ MB भीयरंबदाढाकराल°; P भीयरावदाढाकराल°. १० MBP °चिक्खल्ल°. ११ MBP वोलिज्जइ.

8. १ MBP °दहादिहंतओ. २ MBP संपाइउ. ३ MBP आवइकालि धाह णउ मुच्चइ. ४ MBP णिवेइय. ५ °मेहमुहु.

8 वराराº श्रेष्ठा आरा. 10 °णीसंद° निष्यन्दः.

8. 4 *a* आवत्तचिलायहं आवर्तकिरातनाम्नोः म्लेच्छराजयोः. 9 *b* बलगावें बलगर्वेण.

वियडफडाकडप्पदप्पुब्भड गरलाणलपलित्तगिरितडवड ।
उल्ललंततरु[६]धूममलीमस सिरमणिगणमऊहदीवियदिस ।
अग्घकुसुमरसवासुद्धाइय चल[७]वलंत ते झत्ति पराइय ।

घत्ता—बोल्लिउ उरगइणा विसहरवइणा किं पाडमि गहणक्खत्तइं ॥
कीलियसुरवरहो माणससरहो णिल्लूरमि किं सयवत्तइं ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता मेच्छाहिवेण भणिया फणिणो गज्जंतगयवरं ।
णिहणह[१] वेरिसेण्णमिणमो तरुणीकरचलियचामरं ॥ १ ॥

खंधावारहु उप्परि अहणिसु ता णायहिं वेउव्विउ पाउसु ।
मयउलु तसइ रसइ वरिसइ घणु पीयलु सामलु विलसइ सुरधणु ।
महिणीहरिउ हरिउ वड्ढइ तणु पवसियपियहि पियहि तप्पइ मणु[२] ।
फुल्लकलंबतंबु[३] दीसइ वणु तिम्मइ तम्मइ मणि जूरइ जणु ।
तडि तडयडइ पडइ रुंजइ हरि तरु कडयडइ फुडइ विहडइ गिरि ।
जलु परियलइ घुलइ घुम्मइ दरि अइरय सरइ भरइ पूरें सरि ।
जलु थलु सयलु जलु जि संजायउ मग्गु अमग्गु[४] ण किं पि वि णायउ ।
सरु कुसुमसरु णिरारिउ संधइ विरहें मंथिय पंथिय विंधइ ।

घत्ता—पाणिउ णीयगइ विज्जु वि डहइ धणु णिग्गुणु कुडिलु सुरिंदहो ।
पाउसु हयमणहो समु दुज्जणहो जो वरिसइ उवरि णरिंदहो ॥ ९ ॥

६ MBP उल्ललंतबहुधूम°, ७ K चलचलंत.

9. १ MB णिहणिवि. २ MBP तणु. ३ BP °कलंबु तंबु. ४ MBP अमग्गु वि किं पि ण णायउ.

12 *a* °तरुधूममलीमस वटवृक्षसमुद्धूतधूमवन्मलिनाः. 13 *a* °वासुद्धाइय °गन्धेन सत्वरमागताः. 14 उरगइणा सर्पेण.

9. 2 इणमो इदम्. 3 *a* अहणिसु अहर्निशम्, *b* पाउसु मेघः. 6 *b* तिम्मइ तम्मइ जलार्द्रीभवति खिद्यते च. 8 *b* अइरय शीघ्रवेगा; सरइ वहति. 11 णीयगइ निम्नेन गच्छतीति.

10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेल्लपडिपेल्लणहयदुमविगयरिंछओ ।
णवघणरावमुइयचंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ ॥ १ ॥

दीसइ लग्गउ वासारत्तउ सेणामहिलहि णावइ रत्तउ ।
असिजलि णिवडिवि जलु पुणु धावइ भडभुयदंडहु संमुहुं आवइ ।
ताहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ लोहें गिलियहु को किर लग्गइ ।
धुवइ किं पि अलिपिंछहिं दलियउ बहुमुहलिहियउ पत्तावलियउ ।
कोडमंडणु विसहइ रिउघरिणिहि ढालइ सिरसिंदूरइं करिणिहिं ।
धंस वंस तुहुं महं वड्डारिउ पवहिं परचिंधें वेयारिउ ।
महु सरु प्रेणहारि णावइ सरु इय गज्जंतु व पभणइ जलहरु ।
धोयइ मयमायंगहं दाणइं दुम्मेहहं रुच्चंति ण दाणइं ।
थक्क सचक्कवाय रह णं सर तोइ तरंति ण के के किर णर ।
तों पभणइ णरणाहपुरोहिउ लोउ देव उवसग्गें रोहिउ ।
पयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ अइंणु वारिवारणु चिंतिज्जइ ।
ता राएं बलवइमुहुं जोइउ तेण वि पेसणु झत्ति विवेइउ ।

घत्ता—णियमणि चिंतियउ तेलि घित्तियउं तं चम्मरयणु जणभरधरु ॥
उप्परि पुणु थविउ जगगउरविउ धवलायवत्तु जियससहरु ॥ १० ॥

11

दुवई—बारहजोयणाइं वित्थारें सिविरु कुलीरमाणिए ।
पविउलछत्तचम्मकयसंपुडि थिउ वेरिसंतु पाणिए ॥ १ ॥

10. १ K सलिलुच्छल्ल°. २ MB पाणहारि; P पाणिहारि. ३ MBP ताम भणइ. ४ M अयणुं. ५ MBP घत्तियउ. ६ K °आयपत्तु जिह ससहरु.

11. १ MBP वरिसंत.

10. 1 सलिलुत्थल्ल° जलेनोत्पाटितः; रेल्ल° चालितः. २ °चंदक्ककलावुद्धसियपिंछओ मुक्तचन्द्रकाणां मयूराणां कलापाः उद्ध्वसिताः. 3 *a* वासारत्तउ वर्षाकालः. 6 *a* धुवइ क्षालयति. 8 *a* धंस वंस हे ध्वजदण्ड. 10 *b* दुम्मेहहं दुष्टमेघानां दुर्मेधसां च. 13 *b* अइणु चर्मरत्नम्; वारिवारणु छत्ररत्नम्. 16 जियससहरु निर्जितः चन्द्रः येन तादृशम्.

11. 1 कुलीरमाणिए मत्स्यानां प्रीतिकरे.

गयणयलु धरणियलु गिरिसिहरु रेल्लियउ पडिएण पउरेण तोएण पेल्लियउ ।
अइणायवत्तेहिं रइए समुग्गम्मि णिवसंति णरवइणरा णाइं सग्गम्मि ।
ते दोण वरिसंति ते णेय जाणंति इट्ठाइं मिट्ठाइं सोक्खाइं माणंति ।
रयणोयरे साहणं जाम संचरइ अरविंदगब्भम्मि अलिउलु व रइ करइ ।
खलबलहरोवाय हिययम्मि संभरइ कागणिकयाइच्चससियरहिं वावरइ ।
सत्ताहरत्ते गए णवर कुद्धेहिं चूडामणिल्लेहिं मारणविरुद्धेहिं ।
इंगालहरिणीलकालिंदिकालेहिं मुहकुहरणिम्मुक्कगरलग्गिजालेहिं ।
उत्तुंगभूभंगभंगुरियभालेहिं सिसुससहरायारदाढाकरालेहिं ।
णिट्ठवियपरदंडजमदंडदीहेहिं आरत्तलोलंतचलजमलजीहेहिं ।
गरुयाहिमाणेहिं परिगहियमेच्छेहिं कलहिच्छदुप्पेच्छरोसारुणच्छेहिं ।
णीसासविसलवमलोलित्तचंदेहिं मरु मरु भणंतेहिं मरुगासिवंदेहिं ।
हरिकरिमहाजोहसामंतपब्भारु विउणयरु तिउणयरु वेढियउ खंधारु ।
रामाहिरामेण संगामधुत्तेण रूसेवि देवाहिदेवस्स पुत्तेण ।

घत्ता—परणरदुज्जयहो राएं जयहो वीरपट्टु सइं बद्धउ ॥
सो विसहरवरहं णवजलहरहं जुगखयकयंतु णं कुद्धउ ॥ ११ ॥

12

दुवई—ता सोलहसहासजक्खामरविरइयगंधवाहिणं ।
भग्गा सलिलवाह पीलू विव चलयरहरिणणाहिणं ॥ १ ॥

चक्के वइरिमहाभड छिण्णा दइवें णाइं दिसाबलि दिण्णा ।
तं अवलोयवि गय भयवस फणि गय णवघण गय सा सोदामणि ।
मेच्छणरिंदहिं सकरुणु रुण्णउं दोजीयेहुं किं किरं पडिवण्णउं ।

२ MBP °विलुद्धेहिं. ३ B °ससिहरायार°. ४ MBPK °घोलंत°. ५ MBP °मलालित्तदेहेहिं. ६ MBP मरुगासिमंडेहिं. ७ P °देवेसपुत्तेण. ८ MBP सइं वीरपट्टु सिरि बद्धउ. ९ MB °धरहं; P °धारहं. १० °हारहं; GK omit णवजलधरहं. ११ MBP जुगखइ कयतु.

12. १ MBP सोलस°. २ MBP दोजीहहिं. ३ MB किंकर.

4 *a* अइणायवत्तेहिं चर्मातपत्राभ्याम्; समुग्गम्मि संपुटे. 5 *a* दोण द्रोणमेघाः. 7 *b* खलबलहरोवाय दुष्टानां बलापहारिण उपायान्. 13 *b* मरुगासि° सर्पाः. 14 *b* विउणयरु द्विगुणतरम्.

वि[४]सँभरियहं किं किर सुयणत्तणु वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु ।
छिहं[५]ण्णेसिहिं को रंजिज्जइ अणिलासिहिं किं परु पोसिज्जइ ।
चरणविवज्जिउ को जसु पावइ णिब्भभुयंगहं णिब्भु जि आवइ ।
रणजइ जउ गज्जिउ घणणाएं घणणाउ जि सो[६] कोक्किउ राएं ।
सिरचूलाचुंबियभूभायहिं दूरंतरहु णमंसियपायहिं ।
दिण्णहिरण्णवत्थसंघायहिं दिट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं ।
साहिवि मेच्छराउ गंजोल्लिउ अणुतीरें सिंधुहि पुणु चल्लिउ ।
पहु हिमवंतु पराइउ जावहिं आइय सिंधु भडारी तावहिं ।
देवँथ दिव्वदेह णउ सा सरि सिंधुकुडवासिणि परमेसरि ।
राउ णिहालिवि कलसविहत्थइ लहु भद्दासणि णिहिउ पसत्थइ ।

घत्ता—सिंधूँ[७]देवयए जलयरधयए अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर ॥
दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुप्फयंतथिं[८]यमहुयर ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम
चोद्दहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥
॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियहं. ५ P छिद्दाणेसिहिं. ६ MBP कोक्किउ सो. ७ P सिंधुवदेवइ. ८ B °पियमहुयर.

12. 7 *b* अणिलासिहिं वायुभक्षैः सर्पैः. 8 *a* चरण° चारित्रं पादाश्च. 12 *a* गंजोल्लिउ रोमाञ्चितः उल्लसितः प्रभुः. 17 णवपुप्फयंत° नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्याम्; नवपुष्पाणां वा अन्तो मध्यम्.

XV

मेल्लिवि सिंधुसरि पणवेप्पिणु रिसहजिणिंदहो ॥
पुणु संचलिउ पहु भयरसु जणंतु अमरिंदहो ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

सेणासेणाहिवपरियरिय हिमवंतु धरेप्पिणु संचलिय ।
सोहइ गच्छंती पुव्वमुह कुरुवंसणाहपत्थिवपमुह ।
दीसइ सेलत्थलि काणणउं महिसीदुद्धु व साहाघणउं ।
णाणामहिरुहफलरसहरइं कत्थइ किलिगिलियइं वाणरइं ।
कत्थइ रइरत्तइं सारसइं कत्थइ तवतत्तइं तावसइं ।
कत्थइ झरझरियइं णिज्झरइं कत्थइ जलभरियइं कंदरइं ।
कत्थइ वीणियवेल्लीहलइं दिट्ठइं भज्जंतइं णाहलइं ।
कत्थइ हरिणइं उल्ललियाइं पुणु गोरीगेयहु वलियाइं ।
कत्थइ हरिणहरुक्कत्तियइं करिकुंभुच्छलियइं मोत्तियइं ।
कत्थइ सुम्मइ जक्खिणिझुणिउं खयरीकरवीणारणरणिउं ।
कत्थइ भसलउलहिं रुणुरुणिउं कत्थइ सुएण किं किं भणिउं ।

घत्ता—कत्थइ किंणरहिं गाइज्जइ सवणपियारउ ॥
रिसहणाहचरिउ फणिणरसुरलोयहु सारउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदन
कीर्तिर्यस्य मनीषिणा वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।
सौजन्य सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेमान्तरां निर्वृतिं
श्लाघ्योऽसौ भरतः प्रभुर्वत भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

MB read प्रेम्णोऽन्तरां for प्रेमान्तरां. G does not give it.
UK give it at the commencement of Samdhi XCV.

1. १ MB °महिरुहरुहरस°, P °महिरुहफलरस°, but records a *p* °महिरुहरुहरस°. 4 MBP किलिकिलियइं. ३ MBP °कुंभत्थलियइं.

1. 5 *b* साहाघणउं क्षीराग्रं तरिका तया घनं महिषीदुग्धम्, शाखाभिश्च घनं काननम्. 9 *b* णाहलइं शबराः. 11 *a* हरिणहर° सिंहस्य नखैः

2

णिक्खित्तसुरासुररइणियले हिमवंतकूडतलधरणियले ।
णवचंपयकुसुमावासियउ साहणु सडंगु आवासियउ ।
बहुदोरहिं दूसइं ताडियइं रणवडहसहासइं ताडियइं ।
करिसालाणडसालाहरइं उब्भियइं पउरसालाहरइं ।
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ णं घडदासीउ सुमुंडियउ ।
ठवियइं मणिमंडवियासयइं[1] अवराइं मि दिव्वइं आसयइं ।
दुव्वारवइरिमयपहरणइं[2] अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।
दक्खालियससहररयणियहि[3] पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि ।
कुससयणि पसुत्तउ सइं भरहु उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु ।
करि धरिउ सरासणु राणएण बहु विहरिउ मंडलराणएण ।
आरुहिवि रहंग्गि[4] ण संकियउ वइसाहठाणु सइं संकियउ ।
जो लोहवंतु परमग्गणउ सो गुणि संणिहियउ मग्गणउ ।
किं अच्छइ णवर उग्गयउ[5] हिमवंतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ सपंगणए[6] उप्पुंखु[7] बाणु अवलोइउ ॥
चिंतिउ तेण मणे को एहउ कालें चोइउ ॥ २ ॥

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।
दीहरजालामालाजलिउ पलयाणलु केण पडिक्खलिउ[1] ।
केसरिकेसरु उक्खूरियउ कालाणिलु[2] केण वियारियउ ।

2\. १ P read after this: मिहुणइ रमंति रत्तासयइं, अवराइं मि दिव्वइं आसयइं, णियपहाणिज्जयदेवासयहिं. २ MB read after this. मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, णियपहणिज्जियदेवासयइं. ३ BP ससिहररयणियहि. ४ P रहंगि. ५ MBP उद्धगयउ. ६ M पपगणए; B पसंगणए. ७ MB उप्पंखु.

3\. १ MBPK पडिखलिउ. २ MBP कालाणलु.

2\. 5 *a* समुंडियउ मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वयेन सहिताः. 6 *b* आसयइं आश्रया गृहाणि. 8 *a* दक्खालियेत्यादि—दर्शितः शशधरश्चन्द्र एव रत्नं चूडामणिरत्नं यया रजन्या; *b* रयणियहि रजन्याम्. 9 *b* भरहु नक्षत्रप्रच्छादकः. 10 *a* राणएण राः द्रव्यं तस्य आनयनग्रहणकारिणा राज्ञा. 11 *b* वइसाहठाणु वामपदजानुं भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वीकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते; संकियउं सम्यक् कृतम्. 13 *b* गयउ गदो रोगः.

3\. 3 *b* कालाणिलु प्रलयवातः.

किउ केण गरुडपक्खाहरणु भणु केण णिसुंभिउ जमकरणु ।
दलवट्टिउ माणु पुरंदरहो किं सिहरु पलोट्टिउ मंदरहो ।
णियहत्थें णिम्मंथिउ[3] जलहि पडिकूलिउ केण हवंतु[4] विहि ।
दिट्ठीविसवयणु णिरिक्खियउ कें[5] हालाहलु विसु भक्खियउ ।
जगि केण भाणु णित्तेइयउ महु केण रोसु उप्पाइयउ ।
को पारु पराइउ णहयलहो को सुपहुत्तउ णियभुयबलहो ।
किं ण मरइ करवालेण हउ ण वियाणहुं किं सो वज्जमउ ।
सरु मज्झु वि केण विसज्जियउ खयडिंडिमु[6] कासु पवज्जियउ ।

घत्ता—जेण विमुक्कु[7] सरु अइदीहु समाणु फणिंदहो ॥
सो महु मरइ रणे जइ पइसइ सरणु सुरिंदहो ॥ ३ ॥

4

इय तेण गज्जियउं पुणु कज्जु सज्जियउं ।
पिंछेहिं पत्तियउ दित्तीइ दित्तियउ ।
चित्तेण चित्तियउ[1] मंतेण मंतियउ ।
हिययम्मि चिंतियउ राएण घत्तियउ ।
गंधेहिं चच्चियउ फुल्लेहिं अंचियउ[2] ।
पुण्णेहिं संचियउ केण वि ण वंचियउ ।
हयवेरिसंताणु अवलोइओ बाणु ।
ता तम्मि लिहियाइं सुरणियरमहियाइं ।
णिज्झियदियंताइं परिछेयवंताइं[3] ।
वाईसिअंगाइं छंदाणुलग्गाइं ।
बिंदुयहिं चप्पियइं मत्तावियप्पियइं ।

३ M णिमत्थिउ, BP णिम्मत्थिउ. ४ P हणतु. ५ MBP किं. ६ MBP खयडिंडिमु. ७ M विमुक्क सरु.

4. १ MK चिंतियउ. २ M अच्चियउ. ३ MP परिच्छेयवत्ताइं.

5 *a* दलवट्टिउ खण्डितः. 9 *b* सुपहुत्तउ अतीव पर्याप्तः. 11 खयडिंडमु यमपटहः.

4. 1 *b* सज्जियउ प्रगुणीकृतम्. 6 *a* संचियउ उपार्जितः. 10 *a* वाईसि° सरस्वती. 11 *b* मत्तावियप्पियइं मात्रारचितानि.

वेल्लीहिं वलियाइं अक्खरइं ललियाइं ।
गाढं विसिट्ठाइं सरसाइं मिट्ठाइं ।
इट्ठाइं दिट्ठाइं हियए पयट्ठाइं ।
अरिसीहसरहस्स आणाइ भरहस्स ।
जो जियइ सो जियइ इयरस्स खयणियइ ।
अइरेण अवयरइ वइवसु वि धुवुं मरइ ।
पुणु पुणु वि जोएवि इय तेण वाएवि ।
सह समियसमरेहिं अंवरहिं मि अमरेहिं ।

घत्ता—दिट्ठउ चक्कवइ चमरहिं चामीयरदंडहिं ॥
रयणहिं मोत्तियहिं पणवंतें णियभुयदंडहिं ॥ ४ ॥

5

णरणाहें रयणहिं पुज्जियउ हिमवंतु कुमारु विसज्जियउ ।
सो किंकरत्तु मणि धरिवि गउ राणउ पुणु तिहुयणलद्धजउ ।
हरिसहसुभीमगुहाहरहो सइं आइउ वसहमहीहरहो ।
दीसइ गिरिमेहलघुलियघणु णं धरणिहि केरउ एक्कु थणु ।
णिज्झरजलदुद्धपवाहधरु णिरु णाहलडिंभहुं सोक्खयरु ।
रइगारउ णावइ कुसुमसरु भयवंतु णाइ कुपुरिसपसरु ।
रसवंतु णाइं णच्चणु पवरु बहुणावालंकिउ बहुविवरु ।
बहुविद्दुमोहु णं मयरहरु बहुफलपयासि णं पुण्णभरु ।
बहुकंकणु णं महिमहिलियरु बहुओसहिल्लु णं भिसयवरु ।
हरिसेविउ णं जिणु परमपरु ।

४ MBP पइट्ठाइं. ५ MBP धुउ. ६ MBP अवरेहिं अमरेहिं. ७ MBP पणवंतहिं.

5. १ MBP हिमवंत°. २ B किं करंतु. ३ MBP आयउ. ४ M एक्क. ५ MBP णच्चण°. ६ MBP महिलयरु.

12 *a* वेल्लीहिं आवलीभिः. 16 *b* खयणियइ क्षयकाल. 17 *a* अइरेण अचिरेण, शीघ्रम्. 18 *b* वाएवि वाचयित्वा.

5. 7 *b* बहुविवरु बहुच्छिद्र. बहुपक्षी च. 8 *a* विद्दुमोहु प्रवालौघः; मयरहरु समुद्रः. 9 *a* महिमहिलियरु पृथ्वीमहिलायाः करः; *b* भिसय° वैद्यः. 10 *a* हरिसेविउ इन्द्रेण सिंहैश्च सेवितः.

करिदसणमुसलणिभिण्णतणु णं को वि महाभडु रइयरणु ।
सुरदाणवरमणीमाणपिउ णं णिवजससासणखंभु थिउ ।

घत्ता—तहु महिहरहु तडु पच्छाइउ चउहुं मि पासहिं ॥
णरलिहियक्खरहिं गयपत्थिवणामसहासहिं ॥ ५ ॥

6

जहिं दीसइ तहिं अक्खरसहिउ मोक्खु व गिरिंदु मुणिगणमहिउ ।
चिंतइ भरहाहिउ बहुगुणउ कहिं णाम लिहिज्जइ महु तणउ ।
अण्णण्णहिं रायहिं भुत्तियइ इह पयइ वसुमइधुत्तियइ ।
बोलाविय के के णउ णिवइ मोहंधहु मुज्झइ तो वि मइ ।
धण्णउ परमेसरु एक्कु पर जो हुउ पव्वइयउ मुएवि धर ।
बहुणरवइकरयललालियइ हउं विणडिउ सिरिपुण्णालियइ ।
ससंगरज्जभारेण हय मयमइरइ मत्ती मुच्छ गय ।
धारागलंतलीलावयहिं अहिसिंचिय मंगलघडसयहिं ।
जा विज्जिय चलचमरहिं जियइ जा छत्तें छाइय णउ णियइ ।
असिपाणियकक्कसत्तु महइ अंकुससंगें वंकिम वहइ ।
चवलत्तणु कुलधयवडवरहो गुणु मेल्लिवि गमणु पासि सरहो ।
सिक्खियउ जाइ तहि गोमिणिहि आसण्णपुरिस णरयावणिहि ।
णिवडंति महंत वि झत्ति किह वारिहि करिणीरय पीलु जिह ।

घत्ता—ताएं भुत्त चिरु पुणु पुत्तें सहुं सुहुं अच्छइ ॥
वसुमइ झिंदुलिय जगि केण वि समउ ण गच्छइ ॥ ६ ॥

७ MBP °पाणपिउ.

6. १ MBP इय. २ MB °रज्जहारेण. ३ MBP आसिपाणिय°. ४ MBP °वडधरहो. ५ MBP परहो. ६ MP आसत्तु पुरिसु, B आसत्तपुरिसु. ७ MBPT झिंदुलिय.

6. 4 *a* बोलाविय अतिक्रामिताः त्यक्ताः. 6 *b* पुण्णालियइ पुंश्चल्या 8 *a* °लीलावयइं °लीलापयोभिः. 9 *a* विज्जिय वीजिता. 10 *a* महइ वाञ्छति. 11 *b* गुणेत्यादि—गुणं मुक्त्वा गच्छति शरपार्श्वात्. 12 *b* णरयावणिहि नरकभूमेः. 13 *b* वारिहि गजबन्धनगर्तायाम्. 15 झिंदुलिय पुंश्चली वेश्यावृत्तिः.

7

णक्खहु वि ण लब्भइ थत्ति जहिं   किं णाउं लिहिज्जइ एत्थु तहिं ।
मइं जेहा पत्थिव को गणइ   जे जे गय ते पुरोहु भणइ ।
परमेस महायणु जेण गउ   सो पंथु जयम्मि ण केण कॅउ ।
पर फेडवि झिड़ घेप्पइ पुहइ   तिह णामु वि फेडिज्जइ णिवइ ।
ता बालमरालललीलगइणा   वीलामलमलिणेण वि पइणा ।
राएं रायहु ओहारियउ   अण्णहु कासु वि उत्तारियउ ।
करकागणिरेहादावियउ   णियणाउं गिरिंदि चडावियउ ।
रिसहहु रइरमणखयंकरहो   हउं पुत्तु पढमतित्थंकरहो ।
णामेण भरहु भरहाहिवइ   बोल्लउ परु महियलि अत्थि जइ ।
हिमवंतजलहिपेरंत सइं   छक्खंड वि णिज्जिय वसुह मइं ।
ता तियसहिं साहुक्कारियउ   भरहेसरु जयजयकारियउ ।
पइं जेहउ को वि ण चक्कवइ   को एम ससंकि णाउं थवइ ।
कहु अग्गइ धावइ कमलकरि   कमलालय कमलाणणिय सिरि ।
दालिद्दहारि किर कासु वसु   तिजगंतगामि किर कासु जसु ।
असि कासु वइरिविद्धंसयरु   पइं मेल्लिवि को किर कप्पयरु ।
पइं मेल्लिवि णाणहु कवणु घरु   परमप्पु कासु देउ पियरु ।

घत्ता—रूवें विक्कमेण गोत्तें बलेण णयजुत्तें ॥
तुज्झु समाणु तुहुं किं अण्णें माणुसमेत्तें ॥ ७ ॥

8

सरवरजलकीलियसारसयं   दरिसावियचंपयसारसयं ।

7. १ P किउ. २ MB °मलिणाणण वि पइणा, P ° मलिणाणणपइणा. ३ MBP णियणामु. ४ MB पढमु. ५ P वहुअग्गइ. ६ M दारिद्दहरि. ७ MBP तिजगंत°. ८ MBP वइरिवीरतयरु. ९ MBP परमप्पु. १० MB कुलेण. ११ MBP णयजुत्तें.

7. 5 *b* वी ले त्या दि—लज्जामलमलिनेन स्वामिना. 6 *a* ओ हा रि य उं चित्ते अवधारितम्. 10 *a* °पे रं त पर्यन्ता.

8. 1 *b* °चं प य सा र स यं चम्पकवृक्षाणां मध्ये सारास्तेषां शतानि, चम्पकलक्ष्म्या रसो वा यत्र.

काणणपरिहिंडियकुंजरयं गयणंगणविगयणिकुंजरयं ।
फलभारोणयसुरतरुविडवं रइयरेणिलयहिं खेयरविडवं ।
ओसहिओसारियविसहरयं वणसुरहिसमीहियविसहरयं ।
मोत्तूण तममलं धरणिहरं सधयं सेण्णं परधरणिहरं ।
चलियं सह पहुणा पउरहयं सारहिकरकसचोइयरहयं ।
अहिमाणवंतु णीसंकमइ पुव्वादिसभायं संकमइ ।
हिमवंततलेण जि चिक्कमइ दियहेहिं जंतु वसुहं कमइ ।
गोगइहहरिकरिमहिसयल अवठंभिवि रुंभिवि महि सयल ।
णियवइहि णिहालिवि चंदबलु मंदाइणिपुलिणइ थियउ बलु ।
जगसंसियअसिधारासियहिं अणुयहिं णिवखंधारासियहिं ।

घत्ता—दीसइ पंडुरउ हिमवंतसिहरि सिंगग्गउं ॥
णं भरहहु तणउं जसविलसिउं सग्गि विलग्गउं ॥ ८ ॥

9

ससिरयणमए परिभमियमए ।
उववणगहिरे घणविहुरहरे ।
खगणियरहरे सुरसरिसिहरे ।
णिवसइ गुणिणी अमरवइरमणी ।
चलहारमणी जणमणदमणी ।
छणससिवयणा कुवलयणयणा ।

8. १ MBPT °णिलएहिं. २ MP add after this: सिंगग्गवत्तु धुयविसहरय, ज सहइ चक्कि-जसविसहरय; सइ सेवियविसहरसेहरयं, महिवहुसिरि ण मणिसेहरय, B adds after this. सइ सेवियविसहर-सेहरयं, सिंगग्गवत्तु धुयविसहरयं, ज सहइ चक्किजसविसहरयं, महिवहुसिरि णं मणिसेहरय. ३ MBP मोत्तूणं तममलधरणिहरं. ४ MP परयरणिहरं. ५ MBP मणुयहिं.

9. १ MK अमरवररमणी but T अमरवइरमणी.

2b °णि कुं ज र यं वृक्षसमूहपुष्परजः. 3 a °वि ड व शाखा. b र इ य रे त्या दि–रतिकरस्थानैः कृत्वा खेचरविटपालकम्. 4 b व णे त्या दि–वनसुरभिभिर्वनगोभिः समीहित वृषभाणां रतं सुरतं यत्र. 5 b प र ध र णि ह रं शत्रुभूमिहारकम्. 7 a णी सं क म इ निशङ्कमतिः; b सं क म इ स्थानात्स्थानान्तर चरति. 8 b क म इ लङ्घयति. 11 a अ सि-धा रा सि य हिं असिधारावन्निर्मलैः; b अ णु य हिं अनुगैः; °खं धा रा सि य हिं स्कन्धावारास्थितैः.

वरगयगमणा कयजिणण्हवणा ।
पविउलरमणा पी[2]वरसिहिणा ।
पं[3]कयचलणा सिरकयसुमणा ।
पसरियपुलया वणसुरकुलया ।
विरइयतिलया मणसियणिलया ।
णरणवियपया चलमयरधया ।
मुणिमइविमला हिमकरधवला ।

घत्ता—गंगा णाम सइ सुरसुंदरि णयणपियारी ॥
रूवें जोव्वणेण देवाहं मि वि[4]म्हयगारी ॥ ९ ॥

10

णरवइचरियं गुणविप्फुरियं ।
हि[1]यए धरियं चलिया तुरियं ।
तिवलितरंगा देवी गंगा ।
णिवसामीवं पीणियभावं ।
पत्ता धीरा सालंकारा ।
भुवणपसत्था मंगलहत्था ।
दुत्थियमित्तो परहियजुत्तो ।
जगगुरुपुत्तो पंकयणेत्तो ।
उत्तमसत्तो गुरु[2]यणभत्तो ।
जायविवेओ भावियभेओ ।
ढोइयदाणो कयसंमाणो ।
खलकुलचंडो दावियदंडो ।

२ K omits पीवरसिहिणा. ३ K omits पंकयचलणा. ४ MBP विंभय°.
10. १ MBP हियवइ. २ K गुणयणभत्तो.

---

9. 9 *b* °सुमणा पुष्पाणि. 10 *a* °पुलया पुलको रोमाञ्चः; *b* वणसुरकुलया व्यन्तरदेवकुले आला. 11 मणसिय° मदनः.
10. 4 *a* °सामीव °समीपम्; *b* पीणियभावं हृष्टचित्तम्.

भासियसामो ससिरविधामो ।
रामाकामो पायडणामो ।
हयसिरिघिरहो दिट्ठो भरहो ।
भत्तिभराए कुसुमकराए ।
थोत्तगिराए णवियसिराए ।
दिण्णासीए पुणरवि तीए ।

घत्ता—वरुणदिसासियहो णं पुण्णिमाइ ससिकंदहो ॥
अमयभरिउ कलसु पल्हत्थिउ सीसि णरिंदहो ॥ १० ॥

11

कडउल्लउ कडयाणंदु[1] करे कर मउलिवि मउल्लु[2] वि णिहिउ सिरे ।
मणहारु[3] हारु णीहारणिहु उरबंधु बंधु माणिक्कसिहु ।
हिमवंतसिहरिसिहरेसरिए[4] दिण्णउ देविइ सुरवरसरिए ।
जिह बंभसुत्तु तिह बंभसुए ण सहइ परम्मि आयारचुए ।
रसणा महुरसणा घंटियहिं मालउ[5] अलिमालारुंटियहिं ।
सोहंती दिण्णी णरवइहि उल्लंघियचउसायरवइहि ।
पंतीउ[6] विइण्णउ सुरयणहं रंजिउ हियउल्लउ सुरयणहं ।
छत्तइं सयवत्तइं सिरिलयहे वत्थइं णेवत्थइं भणमि तहे ।

घत्ता—इय गेण्हिवि णिवेण मणहरमरालल्लीलागइ ॥
पुज्जिवि पट्ठविय णियभवणहु गय गंगाणइ ॥ ११ ॥

11. १ MBP कडयाणंद. २ B मउलिवि. ३ MB मणहार. ४ MB °सिहरसिहरे°. ५ B मालइ. ६ B पत्तीउ.

13 *b* ससिरविधामो सौम्यस्तेजस्वी च. 19 वरुणदिसासियहो पश्चिमदिगवस्थितस्य; पुण्णिमाइ पूर्णिमया कन्या. 20 पल्हत्थिउ सीसि मस्तकोपरि विसर्जितः.

11. 1 *b* मउलु मुकुटः. 2 *b* उरबंधु बंधु उरोबन्धस्य ब्रह्मसूत्रस्य बन्धः. 4 *a* बंभसुए वृषभनाथ-पुत्रे, अन्यत्र ब्राह्मणे. 5 *a* महुरसणा मधुरशब्दाः, *b* °रुंटियहिं शब्दैः. 6 *b* उल्लंघिये त्यादि— उल्लंघिता पादाक्रान्ता या चतुःसागरा चतुःसमुद्रा पृथ्वी तस्याः पतिः तस्मै. 7 *a* पंतीउ मालाः; सुरयणहं शोभनरत्नानाम्; *b* सुरयणहं देवसंघातानाम्. 8 *b* तहे गङ्गायाः.

12

पहु विजयलच्छिआलिंगियउ भणु केण ण दंसणु मग्गियउ ।
सुरसरि साहेप्पिणु णीसरइ बलु दिण्णदाणु कयणीसरइ ।
सरितीरेण जि पुणु संचरइ हा हरिणवंदु तहिं किं चरइ ।
जहिं धूलि होंति गिरि तरुवर वि उल्ललियरओहें रहिउ रवि ।
सरि छज्जइ उग्गयपंकयहिं बलु छज्जइ चिंधछत्तसयहिं ।
सरि छज्जइ हंसहिं जलयरहिं बलु छज्जइ धवलहिं चामरहिं ।
सरि छज्जइ संचरंतझसहिं बलु छज्जइ करवालहिं झसहिं ।
सरि छज्जइ चक्कहिं संगयहिं बलु छज्जइ रहचक्कहिं गयहिं ।
सरि छज्जइ सरतरंगभरहिं बलु छज्जइ जलतुरंगवरहिं ।
सरि छज्जइ कीलियजलकरिहिं बलु छज्जइ चल्लियमयकरिहिं ।
सरि छज्जइ बहुजलमाणुसहिं बलु छज्जइ किंकरमाणुसहिं ।
सरि छज्जइ सयडहिं सोहियहिं बलु छज्जइ सयडहिं वाहियहिं ।

घत्ता—जिह जलवाहिणिय तिह महिवइवाहिणि सोहइ ॥
महिहरभेयणिहिं पयहिं किं किर को णउ बीहइ ॥ १२ ॥

13

अक्खिउ णिग्गमणपवेसु जहिं पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं ।
वेयड्ढगिरिंदहु पच्छिमहे जिह आसि तिमीसहि दुग्गमहे ।
मृगमग्गलग्गअलियल्लियहि कंडयगुहाहि पुव्विल्लियहि ।

12. १ MBI °आलिंगियउ. २ MBP दिण्णदाण. ३ MBP हरिणविंदु किं तहिं. ४ MBP गय. ५ MBP चिंधछत्त°. ६ M चक्कहिं हंसगयहिं. ७ P °तरंगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहे.. ८ M adds after this: बलु छज्जइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake. ९ MB किं किर. १० MBP णिववर°. ११ M महिहरभोयणिहिं. १२ MBP एयहं किर.

13. १ M णिग्गमणु. २ MBP मिग°.

12. 2 *b* कयणीसरइ कृता निःस्वानां दरिद्राणां रतिर्येन. 4 *b* उल्ललियेत्यादि—उच्छलितो यो रजःसंघातस्तेन रहिओ आच्छादितो रविः. 9 *a* सरतरङ्ग° जलस्य तरङ्गाः. 12 *a* सयडहिं स्वतटैः; *b* सयडहिं शकटैः. 13 जलवाहिणिय जलवाहिनी नदी; °वाहिणि सेना. 14 महिहर° पर्वता राजानश्च.

13. 2 *b* तिमीसहि तिमीससंज्ञायां सिन्धुगुहायाम्. 3 *a* अलियल्लि° व्याघ्रः.

तहिं णियडउ सेण्णु णिसण्णु किह ण विलग्गइ गिरिकुहरुम्ह जिह।
णिहिणाहें भणिउ बलाहिवइ तुहु जोग्गउ पेसणु दिण्णु लइ।
हणु दंडें पुंणु वि कवाडु तिह विहडेप्पिणु वच्चइ झत्ति जिह।
पच्चंतु पसाहिवि एहि लहु जज्जाहि तुरयसेण्णेण सहु।
छम्मास वसेवउ एत्थु मइं जाएसमि पडिआएण पइं।
असिजलधाराधुयजसवडेण ता चमुपमुहेण महाभडेण।

घत्ता—पुव्वकमेण पुणु हरिरयण चडेवि पयंडें॥
आरूसिवि हयउ गिरिगुहकवाडु पविदंडें॥ १३॥

14

जिणदंसणि जिह दुक्कियपडलु जिह दिवसयरुग्गमि तिमिरमलु।
जिह सुद्धसहावें मयणसरु जिह पिसुणें दूसिउ णेहभरु।
सुकइंदसमागमि कुकइ जिह विहडिउ कवाडु फुडु झत्ति तिह।
तहिं सहु भीमु जो णीहरिउ तहु भइयइ को वि ण थरहरिउ।
तेत्थु जि सिहरत्थलि रइयपुरु सिरिणट्टमालि णामेण सुरु।
पडिहारें रायहु दरिसियउ कमकमलालोयणहरिसियउ।
बलवइणा साहिय मेच्छमहि वसि हूई तहु जयलच्छिसहि।
आवेप्पि णमंसिय पहुहि पय तहिं णिवसंतहुं छम्मास गय।

घत्ता—ण वर गुहाकुहरु णरवइगइजोग्गउ आयउ॥
सव्वहं सीयलउ णं दीसइ कज्जु परायउ॥ १४॥

३ MBPK तिह. ४ MB °कुहरुभ, P कुहरुभु, K कुहरम्ह. ५ MBP पुव्वकवाडु. ६ P जाजाहि. ७ MBP तुरिय सेण्णेण ८ MBP हरिरयणि.

14. १ MBP णीसरिउ. २ MBP को व ण. ३ MBP °लोयणि. ४ MBP णिवसतहिं. ५ P °जोग्गा.

4 *b* गिरिकुहरुम्ह गिरिकुहरस्योष्मा.

14. 6 *b* कमेत्यादि– पदकमलयोरालोकनेन हर्षितः. 7 *b* जयलच्छिसहि जयलक्ष्म्याः सखी.

15

ता मंतिहिं गुज्झु[1] ण रक्खियउ   परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।
तुह माउयाहि मंथरगइहि   ते दोण्णि वि भायर जसवइहि ।
णामें णमि विणमि कुमारवर   गंभीर धीर रणभारधर ।
णहयरवइ हूयक अवियलहे   णिवसंति एत्थु गिरिमेहलहे ।
हल्लियसाहाफुल्लियवणइं   पण्णास सट्ठि खगपट्टणइं ।
उद्दामहं गामहं तेत्तियउ   कोड्डिउ धरणेण विहत्तियउ ।
भुंजंति रमंति गमंति दिणु   पणवंति तुहारउ जणणु जिणु ।
तं णिसुणिवि भूसियसमरधुर   पहुणा पेसिय गणबद्ध सुर ।
गय तेहिं भणिय खयराहिवइ   छक्खंडमंडलावणिविजइ ।
महियलि उप्पण्णउ चक्कवइ   जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ ।
तहु पुत्तु भरहु लहु अणुसरहो   अहिमाणु मडप्फरु परिहरहो ।

घत्ता—पत्थिववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥
गुरुहुं सडिंभेहं[2] मि दोसिल्लहं दंडु पउंजइ ॥ १५ ॥

16

तो[1] बंधुणेहभउ भावियउ   खयरिंदहिं कज्जु विहावियउ ।
हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ   पणएण णएण पयंपियउ ।
तणुतेयपूरपिंगलियणहु   जिह देवदेउ तिह पुणु भरहु ।
अम्हहं आराहणिज्जु हवइ   भणु तवणहु उप्परि को तवइ ।
भणु जलणहु उप्परि को जलइ   भणु पवणहु उप्परि को चलइ ।
भणु मोक्खहु उप्परि कवण गइ   भणु भरहहु उप्परि को णं[2]वइ ।
इय घोसिवि ताइं विसज्जियइं   आयइं अमरउलइं पुज्जियइं ।

15. १ MBP गुज्झु. २ P सडिंभरहं.
16. १ MBP ता. २ MBP णिवइ.

---

15. 2 *a b* माउयाइ भायर तव मातुर्यशोमत्या भ्रातरौ. 5 *a* हल्लियसाहा° चलितशाखाः. 8 *b* गणबद्धसुर अङ्गरक्षका देवाः. 11 *b* मडप्फरु मिथ्यागर्वः.

16. 3 *a* तणुतेये त्यादि-तनुतेजसो देहप्रभाया भरेण पिङ्गलितं नभो येन.

तूरइं गुरुरवइं वियंभियइं कुलचिंधसयाइं समुब्भियइं ।
चोइय हरिकरिवरसंदणइं आढ्यइं णियणियपरियणइं ।
खणि बे वि सहोयर णीहरिय दिब्भित्तिचित्तजाणहिं भरिय ।

घत्ता—खेयरकिंकरहिं परिवारिय देव समाणहिं ॥
जहिं णिवसइ णिवइ तहिं आइय रयणविमाणहिं ॥ १६ ॥

17

मउलियकरेहिं पणवियसिरेहिं पहु बोल्लिउ णमिविणमीसरेहिं ।
अम्हारउ णिव कुलसामि तुहुं पइं दिट्ठइ णयणहं होइ सुहुं ।
पइं दिट्ठइ आवइ ओसरइ पइं दिट्ठइं घरि सिरि पइसरइ ।
तुह तायहु हयवम्मीसरहो आएसें परमजिणेसरहो ।
चामीयरमणिणिम्मियघरइं अइरम्मइं खेयरपुरवरइं ।
अहिराएं आसि विइण्णाइं जइ एवहिं पइं पडिवण्णाइं ।
तो भुंजहुं णं तो तुहुं जि लइ अम्हहं पुणु दइयंबरिय गइ ।
तं णिसुणिवि राएं भासियउ अप्पाणउं जें ण विणासियउ ।
महु आणावयणु ण णिरसियउ तं तुम्हहिं चंगउ ववसियउ ।
जिह मउडग्गयचूडामणिणा चिरयालि महायरेण फणिणा ।
तिह एवहिं मइ वि समप्पियइं पालहि खेयरणयरइं पियइं ।

घत्ता—जिणवरणंदणहो बलवंतहु रिद्धिम्मणाहहो ॥
णमिविणमीसरेहिं पडिवण्ण सेव णरणाहहो ॥ १७ ॥

18

रायहु कंपावियतिहुयणहो पणवेप्पिणु गय सणिहेलणहो ।

३ P °दंसणइं. ४ MBP णीसरिय. ५ M दिहिभित्तिचित्त°, B दिहिचित्तिचित्त°; P दिब्भित्तिहि. ६ MBP अमरविमाणहिं.

17. १ M आवय. २ MBP तुहु मि लइ. ३ MB दईयंबरिय. ४ B णु. ५ B पहु°.

18. १ P कपाविउ.

---

10 *b* दिब्भित्तिचित्तजाणहिं दिश एव भित्तय. ता एव नानायानानि तैः.

17. 6 *a* अहिराएं सर्पराजेन धरणेन्द्रेण. 7 *a* दइयंबरिय दिगंबराणां गतिः.

ते बंधव सिरिधव पट्टविवि   रणधीरइं वइरइं णिट्ठविवि ।
संचल्लइ डोल्लइ धरणियलु   उद्धरियसूलकरवालहलु ।
मरुचलियलुलियचलचिंधवलु   गुहदारि उदारि ण माइ बलु ।
णउ जंपइ कंपइ फणिणिवहु   पहु वच्चइ णच्चइ तियसवहु ।
पउ गुप्पइ घिप्पइ आहरणु   परिघोलइ लोलइ पंगुरणु ।
अइमल्हइ मेल्लइ सहु करि   रहु थक्कइ वंकइ कंडु हरि ।
तहु दाणें फेणें समिय रय   चिक्खल्लइ खोल्लइ खुत्त पय ।

घत्ता—बंदिण पढिपहिं जयणंदवड्ढणिग्घोसहिं ॥
गज्जइ गिरिविवरु वज्जंतहिं पडहसहासहिं ॥ १८ ॥

19

जणु जूरइ पूरइ मग्गु ण वि   णरलिहियउ णिहियउ चंदु रवि ।
कागिणियइ घणियइ मट्टियइ   अंधारवियारविहट्टियइ ।
उज्जोयउ जायउ उज्जलउ   खंधारु वीरु धारियपुलउ ।
संकमेण कमेण जि संचरइ   सरभरियउ सरियउ उत्तरइ ।
तहु कुहरहु कुहरहु णिग्गयउ   केलासगिरीसहु लहु गयउ ।
सुरणियरहिं खयरहिं परियरिउ   णिज्झरझरंतवारिहिं भरिउ ।
गंधव्वहिं भव्वहिं सेवियउ   सिहिजालहिं चवलहिं तावियउ ।
तरुजालहिं णीलहिं छाइयउ   कइबुक्कारेहिं णिणाइयउ ।

घत्ता—सो महिहरपवरु दीसइ गयणंगणि लग्गउ ॥
णं महिकामिणिहि भुयदंडु पदंसियसग्गउ ॥ १९ ॥

२ MBP रणवीरइं. ३ P °चिंधउलु. ४ MBT उयारि; P उयरि. ५ B वंचइ णंचइ. ६ M खंधु, BP कंधु. ७ MBP चिक्खिल्लइ. ८ MBP वद्ध. ९ P गिज्जइ.

19. १ MBP कागणियइ मणिमइ. २ MB सकमेण. ३ MBP जलभरियउ. ४ MB णिण्णाइयउ.

18. 2 *a* सिरिधव लक्ष्म्या भर्तारौ. 7 *a* अइमल्हइ मन्दगमनं करोति.

19. 1 *a* पूरइ मग्गु ण वि परिपूर्णो मार्गो दृष्टिविषयो न भवति. 2 *a* घणियइ कठिनया. 4 *a* संकमेण सेतुबन्धेन; *b* सरभरियउ जलपूर्णाः. 5 *a* कुहरहु पर्वतस्य, कुहरहु गुहायाः.

20

जो अच्छरचित्तालिहियासिलु विसहरसिररयणारुणियबिलु ।
जो दरिसियसीहसिलिंबसुंडु सद्दूलपसाहियरुंदगुहु ।
जहिं दिट्ठइं द्रुमसाहागयइं किंणरवीसरियहारसयइं ।
अलि झंकारेहिं ण रडि मुयइ जहिं णाहलडिंभउ सुहुं सुअइ ।
जहिं सलहिज्जंति अमच्छरहिं सवरीरूवाइं वि अच्छरहिं ।
जहिं मणिभित्तिहि पेच्छिवि सयणु महिसिहिं कीरइ पडिवक्खमणु ।
जहिं दोमवीढु मण्णिवि तरुणु मरगयवट्टडु धावइ हरिणु ।
जहिं चंदणमहिरुहु परिहरिवि णहयरवहु सुत्ती संभरिवि ।
मुहसासवासु विसहरु पियइ अवरहु वि भुयंगहु एह मइ ।

घत्ता—पेच्छिवि जममहिसु जहिं जक्खिणिसीहु ण रूसइ ॥
जिणमाहप्पएण पडिवक्खपक्खि खम दीसइ ॥ २० ॥

21

जहिं इंदणीलछइरंजियउ सिहि मंजारें ण विभंजियउ ।
किं मोत्तिउ किं वि तुसारकणु जहिं संकइ संजउ सीलहणु ।
जहिं ओसहिदीवउ पज्जलइ रयणिहिं पुलिंदु सुहुं संचलइ ।
जहिं जायउ गुणगणमंडियउ मुणिसंगें सुयउलु पंडियउ ।
जिणणाहें घोसियं जीवदय जहिं पसु वि चिलाय वि धम्मरय ।
सुरहत्थिणि सेवइ जासु तडु जहिं हिंडइ चक्केसरिगरुडु ।

20. १ MBP °मुहु. २ MBP दीसहिं दुम°. ३ M °झंकारेण णं रडि, B °झंकारण णं रडि; P °झंकारेण ण रडि. ४ MB अमरच्छरहिं. ५ MBP °रूवाइं वरच्छरहिं. ६ MBP दोवपीढ. ७ MBP °महिरुह.

21. १ B मज्जारेण. २ MBPT विहंडियउ and gloss in T विवेचितः. ३ P च. ४ MBP पोसिय.

20. 2 *a* °सीहसिलिंब° सिंहशावकः. 4 *a* ण रडि मुयइ न रटनं मुञ्चति, गानमेव करोतीव अलिझंकारैः. 6 *a* सयणु स्वशरीरम्, *b* पडिवक्खमणु सपत्नीबुद्धिः. 7 *a* दोमवीढु दूर्वासंघातः; *b* °वट्टडु एकखण्डपाषाणम्. 8 *b* संभरिवि ज्ञात्वा. 9 *b* भुयगहु विटस्य. 11 पडिवक्खपक्खि खम दीसइ प्रतिपक्षपक्षे शत्रौ अपि क्षमा दृश्यते.

21. 1 *b* ण विभंजियउ न ज्ञातः. 2 *b* संकइ शङ्कते; संजउ संयतो मुनिः. 4 *b* सुयउलु शुककुलम्.

पोमावइहंसु कडक्खियउ जहिं वरुणहु मयरु णिरिक्खियउ ।
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ सिहि मेसें सहुं कीलाणिरउ ।
बारहकोट्ठेहिं अहिट्ठियउ जहिं समवसरणु सइं संठियउ ।

घत्ता—तहु गिरिवरहु तले धरणीसें सिविरु विमुक्कउं ॥
णावइ मंदरहो चउदिसु तारायणु थक्कउं ॥ २१ ॥

22

मणिमउडपट्टभूसणहरिहिं सुरवरकरिकरदीहरकरहिं ।
कंठोलंबियमुत्तावलिहिं उच्चाइयणवकुसुमंजलिहिं ।
तणुतेउज्जलियवणत्थलिहिं उवसमवंतहिं पसमियकलिहिं ।
कइवयणिवेहिं सहुं सुद्धमइ पहु गिरिसिहरारोहणु करइ ।
आवंतहु रायहु सो सिहरि णिज्झरजलधाराभरियदरि ।
सीहासणचमरीचामरइं छायादुमछत्तइं सुंदरइं ।
मयणिब्भर वर गज्जंत गय वणयर किंकर गंडय गवय ।
णं दरिसणु अग्घग्घइ ठवइ णं कोइल कलरवेण लवइ ।

घत्ता—तरुवत्तें गिरिणा फलु फुल्लु पत्तु णं दिण्णउं ॥
महिहरु महिहरहु अवसें पालइ पडिवण्णउं ॥ २२ ॥

23

आरुहिवि धराहरवरसिहरु अइरुंदचंदकररासिहरु ।
परमेप्पय पयपइ पइसरइ जिणसमवसरणि तहिं पइसरइ ।

५ P सिमिरु ६ MBP पमुक्कउ. ७ B थक्कइ.

22. १ MBP °हरहिं. २ B °णउकुसुमं°. ३ MBP सइ. ४ MBP सिंहासण°. ५ MB तरुवंतें.

23. १ MBP धराधर°. २ MB परमप्पय पइपइ पयसरइ; T पयपइ प्रजापतिः; P परमप्पय पयवइ पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्भरतः स्मरति.

---

9 *a* अहिट्ठियउ सहितम्.

22. 8 *a* दरिसणु प्राभृतम्. 9 तरुवत्तें तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन. 10 महिहरु पर्वतः; महिहरहु नृपस्य.

23. 1 *b* °कररासिहरु किरणसमूहाभिभावकम्. 2 *a* परमप्पय परमात्मानम्; पयपइ प्रजापतिर्भरतः.

दिट्ठउ परमेसरु णि[3]हयसरु तिसिएण व हरिणें कमलसरु ।
भरहें बहुछंदपसंगिरए थुउ सुद्धु [4]सलक्खणाइ गिरए ।
अरहंत अणंत भव्वभवइ तुह सेवइ सोक्खु समुब्भवइ ।
तिट्ठासरितीरु पराइयउ तुहुं कामें पर ण पराइयउ ।
पइं रोसे[5]जलणु उवसामियउ तुहुं रिसि भुवणत्तयसामियउ ।
पइं पेच्छिवि देउ अहिंसवरु ण हणइ दंडेण अहिं सवरु ।
णं[6] वि भक्खइ तं कया वि णउलु महिसंतयारि वग्घहं ण उलु ।

घत्ता—पइं संबोहियइं केलासवा[7]सिव्रउ लेप्पिणु ॥
थक्कइं खेयरइं केलासवास मेल्लेप्पिणु ॥ २३ ॥

24

तु[1]ह वयणु विणीसिउ काणणए णिसुणेप्पिणु इह गिरिकाणणए ।
ण पवत्तइ कत्थ वि जीववह जय संदरिसियपर[2]लोयपह ।
सीहु वि सरहु वि एक्कहिं वसइ सिहिचुयपिच्छइं[3] सवरी वसइ ।
कलु[4] गेउ ण गायइ सावयहो सा[5]मिय पइं लाइय सा वयहो ।
पइं मंसगिद्धि मज्जा[6]रयहं सोडत्तणु महुमज्जारयहं ।

३ BP णिहियसरु. ४ MBP सुलक्खणाइ. ५ K रोसु जलणु. ६ K णउ. ७ MBP °वासवउ.

24. १ MBP तुहु. २ K ° लोयत्रह. ७MBPK °पिंछइ. ४ MBP कलगेउ. ५ B सा चिय; P सा विय; T साविय स्वामिन्, अथवा साविय श्राविका; K सा मि य and gloss सा शबरी. ६ P मजारयहं.

3 *a* णिहयसरु निर्जितकामः. 4 *a* °छंदपसगिरए छन्दोऽभिप्रायः मालाप्रस्तारश्च तेन पसंगिरए संबन्धवत्या वाण्या. 5 *a* भव्वभवइ भव्या एव भानि नक्षत्राणि तेषां पतिश्चन्द्रः. 6 *a* तिट्ठा° तृष्णा. 8 *a* अहिंसवरु अहिंसा वरा यस्य, *b* अहिं सवरु अहिं सर्पं शबरो दण्डेन न हन्ति. उपलक्षणमेतत्; न कोऽपि किमपि केनापि हन्तीत्यर्थः. 9 *a* तं सर्पम्, णउलु नकुलः, *b* महिसतयारि महिषाणामन्तकारि न व्याघ्राणां कुलं समूहो भवति. 10 केलासवास हे देव कैलासपर्वतवासिन्; व्रउ लेप्पिणु व्रतं गृहीत्वा. 11 केलासवास मेल्लेप्पिणु केल मद्यभाजनं अल आसवो मद्य तस्य आशां त्यक्त्वा; अथवा के मस्तके लसन्तीति केलासा केशाः वासो वस्त्रं तानि मुक्त्वा.

24. 1 *a* विणीसिउ विनिर्गतम्, काणणए हे ब्रह्मन्, *b* गिरिकाणणए पर्वताटव्याम्. 3 *b* सिहिचुयपिंछइं सवरी वसइ शबरी पुलिन्दस्त्री परिधानं करोति, मयूरपिच्छैर्निजशरीरमाच्छादयतीत्यर्थः. 4 *a* सावयहो श्वापदस्य वधार्थम्, *b* सा शबरी, वयहो लाइय व्रतं ग्राहिता.

परँयारु वि वारिउ आरयहं तुहुं णाहु सुहु विआरयहं ।
जं अणुहरियउ अलियंजणहो तं गाढु पाउ अलियं जणहो ।
मुहणिग्गंतउ पइं खंचियउ तुह संभवि देवहिं खं चियउ ।

घत्ता—इय भरहेण थुउ परमेसरु जियपंचिंदिउ ॥
अमरासुरमणुयखगपुप्फदंतफणिवंदिउ ॥ २४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे उत्तरभरहपसाहणं णाम
पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥
॥ संधि ॥ १५ ॥

७ MBP परदारु णिवारिउ. ८ B जिउ पचि°. ९ MBP °पुप्फयंत°.

6 *b* विआरयहं रत्नत्रयविचारतानाम्. 7 *a* अणुहरियउ अलियंजणहो भ्रमरस्य कज्जलस्य च अनुकृतं, सदृशमित्यर्थः; *b* अलियं मिथ्या. 8 *b* खं चियउ आकाशं व्याप्तम्.

XVI

पणवेप्पिणु जिणवरकमकमलु ओयरेवि कइलासहो ॥
साकेयहु संमुहुं संचलिउ धराणिणाहु णियवासहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

आरणालं—रविणिहकण्णकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा ।
चलिया मंडलेसरा खयरसुरणरा कंठबद्धहारा ॥ १ ॥

होइ गिरित्थलु णिविसें समथलु किं ण किं ण किर कैहमियउं जलु ।
किं ण किं ण किर संचूरिउ वणु किं ण किं ण धूली जायउ तणु ।
किं ण किं ण देसंतरु लंघिउ किं ण किं ण दुग्गु वि आसंघिउ ।
किं ण किं ण पहरणु अवलोइउ किं ण किं ण पडिसेण्णु णिवाइउ ।
किं ण किं ण वरवाहणु वाहिउ किं ण किं ण परमंडलु साहिउ ।
कणयदंडमंडियपडिहारें आवंतें पहुखंधावारें ।
पुरणारिहिं आहरणु लइज्जइ मउ देवंगवत्थु परिहिज्जइ ।
कुंकुमेण छडउल्लउ दिज्जइ कप्पूरें रंगावलि किज्जइ ।
घिप्पइ कुसुमकरंबु ससैडयणु बज्झइ सुरतरुपल्लवतोरणु ।
घरि घरि गाइज्जइ जिणणंदणु दोवंदहियसिद्धत्थयचंदणु ।
दप्पणु कलसु धरिज्जइ अण्णहिं उग्घोसिउ मंगलु सुरकण्णहिं ।
सलहिज्जंतु महंतु सुरिंदहिं सहुं जक्खिदखगिंदणरिंदहिं ।
करिवरकंधरत्थु मणहारिहिं विज्जिज्जंतउ चामरधारिरिहिं ।

GMBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:–

प्रतिगृहमटति यथेष्टं बान्दिजनैः स्वैरसंगता वसति ।
भरतस्य वल्लभा सा कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

MBP read स्वैरसंगमा for स्वैरसगता; and वल्लभासौ for वल्लभा सा. K does not give it.

1. १ MBP खयरणरसुरा. २ M अवसें; B णिवसें; P णिवसिं and gloss निमेषेण; T णिविसें. ३ B कइबियउं. ४ M संचूलिउ. ५ MBP आवंतें. ६ M देवंगु वत्थु. ७ P ससयडणु but gloss सषट्चरणः. ८ MBP धाइज्जइ. ९ MB दुव्व°; P दोव्व°. १० MP दप्पण. ११ M मणिहारिहिं. १२ MBP °धारहिं.

1. 2 णियवासहो निजगृहं प्रति. 5 *a* णिविसें अक्षिनिमीलनमात्रेण. 6 *b* तणु तृणम्. 13 *a* घिप्पइ क्षिपति; कुसुमकरंबु नानावर्णकुसुमानां समूहः; ससडयणु षट्चरणैर्भ्रमरैः सहितः.

घत्ता—महि सयल वि खग्गें णिज्जिणिवि कयदिग्विजयविलासहिं[13] ॥
उज्झहि भरहाहिउ[14] पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥ १ ॥

2

आरणालं—णउ पइसरइ पुरवरे रयणमयहरे[1] जयसिरीवरंगं ॥
भंगुरभासुरारयं[2] णिसियधारयं राइणो रहंगं ॥ १ ॥

थक्कउ चक्कु ण पुरि परिसक्कइ कुकइहि कव्वु व णउ चिम्मक्कइ ।
णं कोवाणलजालामंडलु णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।
भक्खपयावें कायरिजायउ[3] भाणुबिंबु णं छज्जइ आयउ ।
इंदचंदपडिकूलणसीलउ धगधगंतु खयहुयवहलीलउ ।
एहु जि चक्कवट्टि अवलोयहु णयरें दीवु[4] धरिउ णं लोयहु ।
मणिमऊहमालावेलाउलु[5] रायदिवायरपुण्णयरुज्जलु ।
सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु णं णहसरि विहसिउ[6] रत्तुप्पलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु अवसें देइ धरणि करें[7] आयहु ।

घत्ता—तं चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियवियारउ ॥
हियउल्लउ[8] कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहिं. १४ MBP भरहेसरु.

2. १ MBP ° मयहरे. २ MB भासुरायय. ३ MBP कायरु जायउ. ४ MBP धरिउ दीउ. ५ K °वेलाजलु. ६ MBP वियसिउ. ७ MBPKT करु. ८ M हियडुल्लउ.

---

19 पइसरइ प्रतिसरति.

2. 3 *b* चिम्मक्कइ चमत्कृतिं करोति. 5 *a* कायरिजायउ कातरीभूतम्; *b* आयउ आगतम्. 6 *a* °पडिकूलणसीलउ अभिभवं कर्तुं समर्थम्. 7 *b* दीवु दीपो दिव्यं वा. 8 *b* रायेत्यादि—रक्तोत्पलं राजमाने- दिवाकरस्य पुण्यैः प्रशस्तैः करैरुज्ज्वलं विकसितं भवति, चक्रं तु राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिनः पुण्यान्येव करास्तै- रुज्ज्वलं भवति. 10 *a* वलयायारहु वृत्ताकारस्य चूडाकारस्य वा; *b* धरणि भूमिः श्रीर्वा; कर दण्डो हस्तश्च; आयहु अस्य चक्रस्य. 11-12 जणियेत्यादि—यथा धूर्तस्य हृदयं वेश्यायां न प्रविशति तथा चक्रं नगर्यां न प्रविशति.

3

आरणालं—फणिणरसुरपसंसियं जसविहूसियं गुणगणोहदित्तं ।
णं दुविणीयमाणसे पिसुणमाणुसे सुयणसच्छवित्तं[3] ॥ १ ॥

अक्कमियक्कउ बाहिरि थक्कउ णावइ दइवें खीलिवि मुक्कउ ।
णउ पइसइ पुरि चक्कु णिरुत्तउ सुइघरि णं अण्णायविढत्तउ ।
परपुरिसाणुराइ सइचित्तु व परदासत्तणम्मि सवसित्तु व ।
मायाणेहणिबंधणि मित्तु व पत्तदाणि पाविट्ठहु वित्तु व ।
चुणयविलीणइ दिण्णउ भत्तु व रइरसतुरियइ णवउ कलत्तु व ।
सुद्धसिद्धमंडलि जमकरणु व पत्थणिसेविरि रुयवित्थरणु व ।
णिब्बलणीसणिहेलणि सरणु व दुरियमलिणमणि पंडियमरणु व ।
उवसमिल्लि सामरिसायरणु व णिव्वियारि तणुभूसायरणु व ।
णिसिसमयागमि रविउग्गमणु व बुड्ढत्तणि तरुणीयणरमणु व ।
पुण्णहीणि जिणगुणसंभरणु व णिद्धणि णिग्गुणि विहलुद्धरणु व ।

घत्ता—थिउ चक्कु ण पुरवरि पइसरइ णावइ केण वि धरियउ ॥
ससिबिंबु व णहि तारायणहिं सुरवरेहिं परियरियउ ॥ ३ ॥

4

आरणालं—ता भणियं णिराइणा रूढराइणा चंडवाउवेयं ।
किं थियमिह रहंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ॥ १ ॥

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।
अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर देवदेव दुज्जय भरहेसर ।

3. १ M °माणुसे. २ B पिसुणु माणुसे. ३ M °चित्तं. ४ B °मियंकओ. ५ MP णिरुत्तरु. ६ M सुइघणि. ७ M णिच्चल°; BP णिव्वल°. ८ B reads this foot after 11*a*. ९ K भूसाकरणु. १० MBP तारामयहिं सुरणरेहिं.

3. 2 दुविणीय अगृहीतगुणशिक्षम्; सुयणसत्थवित्ते महामुनिसार्थस्य वृत्तं चरितम्, अथवा सज्जनसार्थः सत्पात्रसमूहस्तत्र वित्तं दानार्थम्. 3 *a* अक्कमियक्कउ आक्रमितार्कम्, अभिभूतादित्यम्. 4 *b* सुइघरि पवित्रगृहे. 5 *b* सवसित्तु स्ववशित्वं स्वातन्त्र्यम्. 7 *a* चुणयविलीणइ अरोचकपीडिते. 8 *b* रुयवित्थरणु रोगविस्तारः. 9 *a* °णीस° दरिद्रः.

4. 1 णिराइणा नृराजेन: रूढराइणा रूढप्रसिद्धं यथा भवत्येवं राजते.

भुयजुयबलपडिबलविद्दवणहं पयभरथिरमहियलकंपवणहं ।
तेओहामियचंददिणेसहं अणणदिण्णमहिलच्छिविलासहं ।
किंत्तिसत्तिजणमेत्तिसहायहं को पडिमल्लु एत्थु तुह भायहं ।
सेव करंति ण णहभाईवइं णाउ णवंति तुह पयराईवइं ।
देंति ण करभरु केसरिकंधर पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।
अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि पइसइ पट्टणि चक्कु ण तेण जि ।

घत्ता—रइवरु परमेसरु उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ॥
कासवतणुरुहु णवणलिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधरु ॥ ४ ॥

5

आरणालं—विलसियकुसुममग्गणो गरुयगुणगणो तरुणिहिययथेणो ।
असरिसविसमसाहसो वसि हयालसो णिहयवेरिसेणो ॥ १ ॥

अण्णु वि जसवइतणयहं जेट्ठउ पुत्तु सुणंदहि तुज्झु कणिट्ठउ ।
सायरु जिह तिह मयरधयालउ चावहं चारुवयणु चरियालउ ।
पंचसयाइं सवायइं तुंगउ भण्णइ संपहिं सो ज्जि अणंगउ ।
बालु बंभसुंदरिहि सहोयरु पिंडपयपयरुहरयरउ महुयरु ।
हरियंदेहु णं मरगयगिरिवरु अरिकरिदसणमुसलपसरियकरु ।
विमलकुलालवालसुरतरुवरु चरमदेहु सासयसुहसिरिहरु ।
गुरुचरणारविंदरइरसवसु मंदरकंदरंतगाइयजसु ।
दुत्थियदीणाणाहहं दिहियरु णरहरिसरणागयपविपंजरु ।
लीलादलियमहायलमयगलु कढिणबाहु बाहुबलि महाबलु ।

4. १ MBP पयथिरभर°.

5. १ MBP °वयण. २ MBP संपइ. ३ M बाल. ४ B पिउपयरुह°. ५ MBP हरियवण्णु. ६ K चरिम°. ७ BPK °महियलु.

8 *a* णहभाईवइं नखप्रभादीप्तानि, *b* पयराईवइं पदपद्मानि. 9 *a* करभरु दण्डस्य भारः प्राचुर्यम्; *b* मुहियइ मुधा वृथैव. 11 °रणपरियरु संग्रामसामग्रीकः.

5. 2 असरिसविसमसाहसो असदृशान्यद्वितीयानि विषमाणि मनसोऽप्यगोचराणि साहसानि अद्भुतकर्माणि यस्य; वसि जितेन्द्रियः. 4 *b* चरियालउ परनारीसहोदरः, चरितस्य वा काव्यविशेषस्याश्रयः. 5 *b* संपहिं संप्रति. 11 *a* °महायल° महापर्वतः.

घत्ता—सो अच्छइ उवसमु धरिवि मणे जइ राणि कई वि वियंभइ ॥
तो सहुं चक्कें सहुं साहणेण पइं मि णरिंद णिसुंभइ ॥ ५ ॥

6

आरणालं—जो जिप्पइ ण हारिणा कुलिसधारिणा पयडसुहडरोले ।
सो णिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देव कलहकाले ॥ १ ॥

हित्तभिण्णमहिवइसामंतें दसदिसिवहपेसियसामंतें ।
रूवरिद्धिरंजियरामोहें अइपरिवड्डियसुधरामोहें ।
णियभुयसत्तिपराजियभरहें तं णिसुणेवि पयंपिउ भरहें ।
जमहु जमत्तणु को दरिसावइ मइं मुएवि किर कवणु रसावइ ।
एम को वि किं जगि संतावइ को किर सिहिसिहाहि[1] सं तावइ ।
कहु महु तणउं पहुत्तु ण भावइ कें[2] पडिखलिउ जंतु णहि[3] भावइ ।
केर महारी को णावज्जइ एह पुहइ को[4] किर णावज्जइ ।
आसमुद्दमेइणिकरवालहु को णासंकइ महु करवालहु ।
को किर भिच्च महारा मारइ को विणिवारइ मज्झु वि मारइ ।
किं किरे[5] वण्णिएण कंदप्पें अणवंतहु णिवडइ कं दप्पें ।

घत्ता—इय जंपिवि राएं णिक्करुणु अविणयविहियमणोज्जहं ॥
सयलहं मि सयलसंपय[6]धरहं लेहु दिण्णु दाइज्जहं ॥ ६ ॥

८ MBP कह व.

6. १ MB °सेहाहि. २ MBP किं. ३ P णहु. ४ MBP किर को. ५ M करि. ६ MBP °संपयहरहं.

6. 1 हारिणा उत्तमेण. 3 *a* हित्तेत्यादि—हित्तौ गृहीतौ भिन्नौ उद्दालितौ महीपतीनां सामंतौ लक्ष्मीश्च मन्त्रश्च येन तादृशेन भरतेन. 4 *b* °सुधरामोहें शोभनायाः पृथिव्या मोहेन. 5 *a* भरहें भरतक्षेत्रेण. 6 *b* रसावइ पृथ्वीपतिः. 7 *b* सिहिसिहाहि संतावइ अग्निज्वालाभिः स्वमात्मानं तापयति; 8 *b* भावइ आदित्यः. 9 *a* णावज्जइ न गृह्णाति; *b* णावज्जइ न अर्जयति. 10 *a* °मेइणिकरवालहो मेदिनीकरग्राहकस्य. 12 *b* णिवडइ कं दप्पें कं मस्तकं दर्पेण सह निपतति. 13 अविणयविहियमणोज्जहं अविनयविधिना विनयाकरणेण अमनोज्ञानां द्वेष्याणाम्.

7

आरणालं—ता विगया बहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।
दुमदललुलियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहिं भणिय ते विणउ करेप्पिणु सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।
सुरणरविसहरभयइं जणेरी करहु केर णरणाहहु केरी ।
पणवहु किं बहुवेण पलावें पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें ।
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।
तो पणवहु जइ सुसुइ कलेवरु तो पणवहु जइ जीविउ सुंदरु ।
तो पणवहु जइ जरइ ण खिज्जइ तो पणवहु जइ पुट्ठि ण भज्जइ ।
तो पणवहु जइ बलु णोहट्टइ तो पणवहु जइ सुहु ण विहट्टइ ।
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टइ तो पणवहु जइ कालु ण खुट्टइ ।
कंठि कयंतवासु ण चुहुट्टइ तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ ।

घत्ता—जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुक्खु णिवारइ ॥
तो पणवहु तासु णरेसहो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

8

आरणालं—पुणरवि तेहिं गहिरयं सवणमहुरयं एरिसं पउत्तं ।
आणापसरधारणे धरणिकारणे पणविउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखंडु महिखंडु महेप्पिणु किह पणविज्जइ माणु मुएप्पिणु ।
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु वणहलभोयणु वरं सुंदरु ।

7. १ MBP वओहरा; T वउहरा दूताः. २ BPK °लुलिय°. ३ MBP बहुएण. ४ MBP तह and throughout elsewhere in this Kadavaka. ५ MBP सुथिरु but T सुसुइ. ६ MBP खिइइ. ७ MBP आउ. ८ MBP कयंतपासु. ९ MBP चहुट्टइ. १० MPB °दुक्खइं वारइ. ११ MP ता; B तहो. १२ MBPK णरेसरहो.

8. १ B omits धरणिकारणे; P महिहि कारणे. २ MBP वरि.

7. 1 बहुयरा बहुतरा वचोधरा दूताः. 7 *a* सुसुइ सुष्ठु शुचि. 9 *b* विहट्टइ विनश्यति. 11 *a* चुहुट्टइ लगति; *b* कालु आयुः.

8. 1 गहिरयं गभीरम्. 3 *a* पिंडिखंडु खलखण्डम्.; महेप्पिणु अभिलष्य.

वैर[3] दालिद्दु[4] सरीरहु दंडणु णउ[5] पुरिसहु अहिमाणविहंडणु ।
परपयरयधूसर किंकरसरि[6] असुहाविणि[7] णं पाउससिरिहरि[8] ।
णिवपडिहारदंडसंघट्टणु को विसहइ करेण उरलोट्टणु ।
को जोयइ मुहुं भूभंगालउ[9] किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।
पहु आसण्णु लहइ धिट्ठत्तणु पविरलदंसणु णिण्णेहत्तणु ।
मोणें[10] जडु भडु खंतिइ कायरु अज्जवु[11] पसु पंडियउ पलाविरु ।
अमुणियहियचारुगरुयत्तें कलहसीलु भण्णइ सुहडत्तें ।
महुरपयंपिरु चाडुयगारउ केम वि गुणि ण होइ सेवारउ ।

घत्ता—अइतिक्खहं धम्मगुणुज्झियहं वम्मे[12]वियारणवसणहं ॥
को बाणहं संमुहुं थाइ रणे को महिवइघरि पिसुणहं ॥ ८ ॥

9

आरणालं—अहवा तेहिं किं हयं जं समागयं दुलहं णरत्तं ।
तं जो विसयविसरसे[1] घिवइ परवसे[2] तस्स किं बुहत्तं ॥ १ ॥

कंचणकंडें जंबुउ विंधइ मोत्तियदामें मंकडु[3] बंधइ ।
खीलयकारणि देउलु मोडइ सुत्तणिमित्तु दिसु[4] मणि फोडइ ।
कप्पूरायरुरुक्खु[5] णिसुंभइ कोद्दवछेत्तहु वइ पारंभइ ।
तिलखलु पयइ डहिवि चंदणतरु विसु गेण्हइ सप्पहु ढोयवि[6] करु ।
पीयइ कसणइं लोहियसुक्कइं तक्कें विक्कइ सो माणिक्कइं ।

३ MBP वरि. ४ M दारिद्दु ५ MBP ण हि. ६ MBP °सिरि and a long note in M. यथा वर्षाकालनदी पर· अन्यहीनस्थाना झिल्लरादिपये· (?) मलिनै रजोभिः धूसरिता मलिना प्रवहति हिरि अतिलज्जाकारिणी, तथा किंकरश्री. शोभा परपदरजोभिः धूसरिता. ७ MBP असुहावणि. ८ MBP °हिरि; K °हिरि but corrects it to °हरि. ९ P भूसंगा°. १० MBP मउणें. ११ MBP अज्जउ. १२ KBP मम्म°.

9. १ P °रसो. २ P परवसो. ३ MBP मक्कडु. ४ MBP दित्तमणि. ५ MBP कप्पूरायरुक्ख. ६ MBP अप्पइ परु.

6 *a-b* परेत्यादि–यथा वर्षाश्रीधारिणी नदी सरजस्का सकर्दमा असुखावहा भवति, एवं किंकरसरि किंकरा एव नदी परस्य स्वामिनः पदरजसा धूसरा मलिना भवति. 13 °वसणहं °शीलानाम्. 14 पिसुणहं बाणानां खलानां च.

9. 1 तेहिं बाणैः पिशुनैश्च. 3 *a* जंबुउ शृगाल.. 5 *a* कप्पूरायरुरुक्खु कर्पूरवृक्षं अगुरुवृक्षं च; *b* वइ वृतिः.

जो मणुयत्तणु भोएं णासइ तेण समाणु हीणु को सीसइ ।
वित्तु समत्तणि णेय णियत्तइ पुत्तु कलत्तु वित्तु संचिंतइ ।
मरइ रसणफंसणरसदड्ढउ मे मे मे करंतु जिह मेंढउ ।
खज्जइ पलयकालसद्दूलें डज्झइ दुक्खहुयासणजालें ।
मंजरु कुंजरु महिसउ मंडलु होइ जीउ मंकडु माहुंडलु ।

घत्ता—केलासहु जाहुवि तवयरणु तापं भासिउ किज्जइ ॥
जेणेह सुदूसहतावयरि संसारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

10

आरणालं—इय भणियं कुमारया मारमारया समरमा पसण्णा ।
दरिवियरियवराहयं सवरराहयं काणणं पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्ठु तेहिं केलासि जिणेसरु संथुउ रिसहणाहु परमेसरु ।
जय रिसिणाह वसह वसहद्धय जय तियसिंदमउलिलालियपय ।
जय जाणियपरमक्खरकारण जय जिण मोहमहातरुवारण ।
जय सुहवास दुरासावारण जय ससहरसियवारिणिवारण ।
पुणु वि पंच परमेट्ठि णवेप्पिणु पंचमुट्ठि सिरि लोउ करेप्पिणु ।
पंचमहारिसिवयइं लएप्पिणु पंचासवदारांइं पिहेप्पिणु ।
पंचिंदियपमाउ वज्जेप्पिणु पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।
पंचायारसारु पावेप्पिणु पंचपंचविहु धम्मु धरेप्पिणु ।

७ M मिंढउ; BP मेढउ. ८ MBP मंकडु.

10. १ MBP भणिओ. २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ताः. ३ MP सवररायहं, but T सवरराहयं शबराणां भासो भा यत्र. ४ MP केलास°. ५ B लहेप्पिणु. ६ B °दारइं रुंभेप्पिणु.

9 *a* णेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति. 12 *b* माहुंडलु सर्पविशेषः. 14 संसारिणि तिस संसारतृष्णा विषयाकांक्षा.

10. 1 समरमा उपशमलक्ष्मीकाः, पसण्णा प्रसन्नाः. 2 °वियरिय° विचरिताः; सवरराहयं शबराणां राहा शोभा यत्र. 5 *a* परमक्खर° मोक्षः. 6 *a* सुहवास शुभस्य सुखस्य वा गृहरूप. 6 *b* ससहरेत्यादि—शशधरश्चन्द्रः तत्तुल्यं सितं शुक्लं वारिणिवारणं छत्रं यस्य. 8 *b* पंचासवदाराइं मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 10 *b* पंचपंचविहु दशविधः.

घत्ता—दढगुणि मणमग्गणु संणिहिउ मोक्खहु संमुहुं पेसिउँ ॥
संतहिं अरहंतहु तणुरुहहिं अप्पउ चरिएं भूसिउँ ॥ १० ॥

11

आरणालं—ता पत्तो चरो पुरं णिवइणो घरं भणइ सुणसु राया ।
इसिणो तुह सहोयरा सीलसायरा अज्जु देव जाया ॥ १ ॥

एक्कु जि पर बाहुबलि सुदुम्मइ णउ तउ करइ ण तुम्हहं पणवइ ।
तं णिसुणेवि पुरोहें उत्तउं भडसामंतमंतिसंजुत्तउं ।
कोसु देसु परियणु पयभत्तउ मणहरु अंतेउरु अणुरत्तउ ।
कुलु छलु बलु सामत्थु सुइत्तणु णिहिलजणाणुराउ जसकित्तणु ।
विणउ वियारहारि बुहसंगमु पोरिसु बुद्धि रिद्धि दइवुज्जमु ।
कुंजर णावइ महिहर जंगमु अत्थि तासु रह करह तुरंगमु ।
अत्थसत्थु जावज्ज वि ण सरइ जाम सहायसहासइं ण करइ ।
जाम ण लग्गइ खलसंसग्गे खत्तधम्मणिम्महणुम्मग्गे ।

घत्ता—जावज्ज वि चाउ ण करि धरइ तोणाजुयलु ण बंधइ ॥
णिम्मज्जिए भालसेयलवहि जाम ण गुणि सरु संधइ ॥ ११ ॥

12

आरणालं—ण हु मारइ महाहवे जा महाहवे दाइओ समत्थो ।
जा ण हरइ णिराउलं तुह महीयलं तिक्खखग्गहत्थो ॥ १ ॥

ताम तासु दूयउ पेसिज्जइ जइ पइं पणवइ तो पालिज्जइ ।
णं तो पुणु बाहुबलि धरिज्जइ बंधिवि कारागारि णिहिज्जइ ।
एम मंतु जं तेण पउंजिउ ता राएं तहु दूउ विसज्जिउ ।

७ MBP पेसियउ. ८ MBP भूसियउ.

11. १ MBP हरं. २ MBP स दुम्मइ. ३ MBP वुत्तउ. ४ MBP दोसु. ५ MB परयणु. ६ MBP बुह°. ७ M रिद्धि बाद्धिदइउज्जमु. ८ MBP णिम्मज्जिय°.

12. १ MBP दूवउ.

---

11. 6 *b* जसकित्तणु यशोवर्णनम्. 7 *a* बुहसंगमु बुधसंगमः. 11 चाउ चापम्.

12. 1 महाहवे महासंग्रामे, महाहवे महाधवान्, महाभटान्.

णियवइरत्तु सत्तुविद्धंसणु सुहडु सुलक्खणु सोमु सुदंसणु।
देसजाइकुलसुद्धु पसिद्धउ पंडिउ पडु पडुलच्छिसमिद्धउ।
विविहविसयभासाभासिल्लउ दिट्ठुत्तरु महिमाइ महल्लउ।
तेयवंतु रक्खियपहुतेयउ महुरवाणि आदेउ अजेयउ।
गेउ दूयउ परिचोइयपत्तउ पोयणपुरु बहुदिवसहिं पत्तउ।
जहिं वणतरुसाहहिं महु वियलइ चलकंकेल्लीपल्लवु विलुलइ।
अइदीहरपवाससममहियहिं पइसंतहिं वि समंतहिं पहियहिं।
रसविसेसधारामहमाहियइं जहिं खज्जंति फलाइं सुरहियइं।
पुप्फहिं गुंप्फइ माल विहिंडिर चउदिसु रुणुरुणंति इंदिंदिर।

घत्ता—सरु मेल्लिवि करेण णियड्डियउ रत्तु पवट्टुलु रसियउ।
बिंबीफलु अहरु व वणसिरिहे जहिं कणइल्लें हसियउ ॥ १२ ॥

13

आरणालं—वरकेदारदारए सालिसारए कसणधवलपिच्छो।
अणुझणझणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुंणंति रिंछा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चंदें दाविउ माणुसि कत्थइ णेय विहाविउ।
जहिं विहारु पासाउ पियारउ णउ णारियणकंठु रइगारउ।
उववासु वि चडएण रइज्जइ णउ रोएं दुक्कालिं किज्जइ।
जहिं केण वि कीरइ ण सुरागमु होइ गुणीण गुणेहिं सुरागमु।

२ M पत्तु विद्धंसणु. ३ MBP आदेय. ४ MBP गयउ दूउ. ५ MBP °दियहहिं. ६ MBP पल्लउ. ७ MBP समत्तहिं. ८ MP add after this. ण कामिणिवयणइं अइसरसइं, पुणु पिज्जहिं जलाइं सरिसरसहिं. ९ MBP गुंफइ. १० MBP विहडिर. ११ MBP पवट्टलु. १२ MBP बिंबीहलु.

13. १ MBP वरु; T केयार°. २ MBP °पिंछा. ३ MBP चरति. ४ MBP णारियणदेहु.

6 *a* णियवइरत्तु निजस्वाम्यनुरक्तः. 9 *b* आदेउ आदरवान्. 10 *a* परिचोइयपत्तउ वाहितवाहनः. 12 *b* समंतहिं समन्तात्. 13 *b* सुरहियइं देवहितानि सुगन्धानि वा. 14 *a* विहिंडिर पर्यटनशीलाः; *b* इंदिंदिर भ्रमराः. 15 सरु मेल्लिवि शब्दं कृत्वा. 16 कणइल्लें शुकेन.

13. 1 केदारदारए वप्रमार्गे. 2 अणु स्तोकम्. 3 *a-b* णिद्धणत्तु स्निग्धं ज्योत्स्नायुक्तं नक्तं रात्रिः, न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम्. 4 *a-b* विहारु पासाउ विहारशब्दवाच्यः प्रासादः, अथवा वीनां पक्षिणां धारकः प्रासादः, न तु नारीजनो विगतहारः. 5 *a* उववासु गृहमध्ये वासः आहारत्यागश्च; चडएण चटकेन पक्षिणा. 6 *a* सुरागमु मद्यागमः मद्यपानम्, *b* सुरागमु देवागमनम्.

दिट्ठु सिहाछेउ वि रिसिदिक्खहि णउ माणिक्कमऊहपरिक्खहि ।
असिलाहवरूउं जहिं लेप्पइ णउ विसिट्ठमारणसंकप्पइ ।
वहइ सया णवत्तु वणु जोवणु णउ णिरुवद्दउ णिवसंतउ जणु ।
जेत्थु कुसादूसणु णीसंगइ णासवारि णउ रायवयं गइ ।
थंढत्तणु णिवडणु थणउल्लइ धरणु णिवीडणु जहिं अहरुल्लइ ।

घत्ता—पुक्खरिणिहिं कीलागिरिवरहिं जलखाइयपायारहिं ॥
जं सोहइ मोत्तियतोरणहिं मंडिउ चउहुं मि दारहिं ॥ १३ ॥

14

आरणालं—तहिं सुरगुरुसुरूयओ रायदूयओ पट्टणे पइट्ठो ।
रायालयदुवारए हिययहारए णायरेहिं दिट्ठो ॥ १ ॥

कणयदंडयरु भल्लउ भाविउ तहिं पडिहारु तेण बोल्लाविउ ।
बुद्धिवंतु अब्भुयभूयउ भणु अच्छइ दुवारि पहुदूयउ ।
तं णिसुणिवि गउ लट्ठिविहत्थउ कहइ कुमारहु पणमियमत्थउ ।
अच्छइ दारि णरिंदवओहरु अत्थि णत्थि भणु सामिय अवसरु ।
ता कंदप्पें भणिउं म वारहि भायरकिंकरु लहु पइसारहि ।
ता कट्ठियहरेण जसणिम्मलु पइसारिउ पसण्णमुहमंडलु ।
बाहुबलीसु देउ कयमंडलु दूएं दिट्ठउ णं आहंडलु ।
संथुउ मउलियपंजलिपोमें को वसि ण कियउ तुह परिणामें ।

घत्ता—तुह धणुगुणटंकारएण केणँ ण माणु णिहित्तउ ॥
पइं वम्मह पंचहिं मग्गणहिं सयलु वि तिहुयणु जित्तउ ॥ १४ ॥

५ MBP °हवरूवउं, K °हवरूवउं but corrects it to °रूउं. ६ MBPT धणु. ७ MBP जोव्वणु. ८ MT कुसादूसण. ९ P णीसग्गइ. १० MBP थड्ढत्तणु.

14. MBPT सरूयओ. २ MB रायालए. ३ MBP °दंडकरु. ४ MBP पणमिय°. ५ MBP बारि. ६ M °टंकारवेण. ७ MBP केणहिमाणु ण चत्तउ; T णिहित्तउ त्यक्तः.

8 *a* असिलाहवरूउं आशिलाभव रूपम्. 9 *a* वहई त्यादि—वहति धरति णवत्तु अभिनवत्वं वनं यौवनं च, न तु जनो नवत्व चिरतनव्यवस्थात्यागं धरति. 10 कुसादूसणु कुः पृथ्वी, सा लक्ष्मीस्तयोर्दूषणम्; णीसंगइ मुनौ; *b* णउ रायवयं गइ राज्यपद प्राप्ते न, णासवारि अश्ववारेऽपि न.

14. 1 °सुरूयओ सदृशः. 4 *a* अब्भुयभूयउ आश्चर्यभूतः. 8 *a* कट्ठियहरेण द्वारपालेन. 9 *a* कयमंडलु रचितसभः.

15

आरणालं—पियवयणं पि भासियं सुइसुहासियं भुत्तकामभोया ।
तुह जयवडहसद्देणं जगविमद्देणं णउ सुणंति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रइरमणीवर अलिमालाजीयासंधियसर ।
पइं पेच्छिवि घोलइ उप्परियणु वियलइ णारिहि णीवीबंधणु ।
चिहुरभारु दढबंधु वि पसिढिलु हवइ रयंबु सवइ सोणीयलु ।
चलइ वलइ लोयणजुयलुल्लउ दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ ।
रंभा णयरंभा इव डोल्लइ रइवायं आहल्ल वि हल्लइ ।
देवें तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ विरहें उव्वसि उव्वेइज्जइ ।
मेणइ मीणि व थोवइ पाणिइ पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ ।
एम थुणंतहु दिण्णउं आसणु णिवसणु भूसणु किउ संभासणु ।
हिमइरिजलहिमज्झि महिरायहु कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु ।
कुसलु खेउं कुरुवंसणरेसहु कुसलु खेमु जलहरणिग्घोसहु ।
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु ।
दूवें वुत्तउ कुसलु णरिंदहु कुसलु णाह णिहिलहु णिवविंदहु ।
एक्कु जि अकुसलु सुहिउक्कंठिउ जं तुहुं देवें दूरि परिसंठिउ ।

घत्ता—दूरत्थहं बंधुहुं णेहु जइ णासइ पिसुणकयंतरु ॥
रवि मेल्लइ किरणइं पंकयहं ताइं णिवारइ जलहरु ॥ १५ ॥

16

आरणालं—भो भो दणुयणिम्महा सुणसु वम्महा कुणसु चारु चित्तं ।
सह गुरुएण भाइणा निजगताइणा रूसिउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

---

15. १ MB जयवडसद्देण. २ B सिढिलु. ३ P देवि. ४ MBP उव्वस. ५ MBP मीणइ. ६ MBP दूरि देव
16. १ M °णिम्मुहा. २ MBP गरुएण.

---

15. 5 *b* र यं बु शुक्रम्. 6 *b* वू ढ से उ ल्ल उ उत्पन्नस्वेदार्द्रम्. 9 *b* पि य प्रभो; र वि य र मा णि इ सूर्यकरसंतापेन. 16 पि सु ण क यं त रु पिशुनकृतचित्तभेदः.
16. 2 ° ता इ णा रक्षकेन.

को ससहरु को किर करमेलउ को समुदु को जलकल्लोलउ।
को तुहुं भरहु कवणु किर बुच्चइ एहउ बुहहं वियप्पु ण रुच्चइ।
कप्परुक्खु किं कुसुमहिं अंचमि रयणायरु करसलिलें सिंचमि।
सूरहु अग्गइ दीवउ बोहमि हउं णिहीणु किं पइं संबोहमि।
तायहु पच्छइ भरहु जि राणउ तुहुं जुयराउ जगेक्कपहाणउ।
माणें मरट्टु विसट्टु मुएप्पिणु जीवहु एक्कमेक्क अणुणेप्पिणु।
तरुणिकंठकंटइयपवट्टहिं अरिवरदंतिदंतपरिहट्टहिं।
आयड्ढियपईहकोदंडहिं आलिंगियउ जेहिं भुयदंडहिं।
तेहिं ण पुणरवि रणि जुज्झिज्जइ गुरुयणि अविणएण लज्जिज्जइ।

घत्ता—कुलसामि महाबलु सुयणु गुणि णउ णवंति जे राणउ॥
घरि ताहं होइ दालिद्दडउ अह जमपुरिहि पयाणउं॥ १६॥

17

आरणालं ... उयार ...
बुहयंतु अब्भुयभूयउ
तं णिसुणिवि ... पढमाणववरो पंकयच्छियाए।
...—जो वरचरमकुलयरो
जिणवंसो पयासिओ जेण भूसिओ रायलच्छियाए॥ १॥

जासु चक्कु रिउचक्कु णिसुंभइ जासु दंडु परदंडु णिरुंभइ।
जासु पुरोहु पुराइउ पेच्छइ तुरउ तुरिउ हियएं सहुं गच्छइ।
कागणि दिणमणि ससि वि दुगुंछइ थवइ थवइ तिहुयणु जइ इच्छइ।
छायइ छत्तु होंतु विवरेरउ असि असु कड्ढइ सत्तुहुं केरउ।
चम्मु चमू धरंतु अइभासइ सेणावइ सेणावइ णासइ।
मागहु वरतणु जेण पहासु वि णिज्जिउ सुरु वेयड्ढणिवासु वि।
जेण तिमीसकवाडु विहाडिउ सिंधुदेविअहिमाणु पलोट्टिउ।

३ MB हउं मि हीणु. ४ MP जगेकु पहाणउ. ५ MBPK माणु मरट्टु विसट्टु. ६ P परिवट्टहिं and gloss परिघृष्टैः. ७ MBP °पयड°. ८ MBP गुरुयण°.
17. १ MBP अइहासइ.

8 a मरट्ट दर्पः; विसट्टु चित्तभेदः. 8 b अणुणेप्पिणु अनुकूलं कृत्वा. 13 पयाणउं प्रयाणं गमनम्.
17. 3 b णिरुंभइ प्रतिबध्नाति. 4 a पुराइउ पश्चाद्भावि वस्तु. 5 b थवइ रचयति. 6 a छायइ आच्छादयति; b असु प्राणाः. 7 a अइभासइ अतिशयेन शोभते; b सेणावइ सेनाया आपदः.

दिण्ण केर हिमवंतकुमारहु पुणु आइउ वसहइरिसुतीरहु ।
तहिं अप्पणउं णाउं संणिहियउ छाहिछलेण व ससिणा गहियउ ।
तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ णिवणामंकिउ भमइ ससंकउ ।
विसहरउलइं सविसहरवरिसइं जित्तइं मेच्छउलइं सामरिसइं ।
णं पालेययसेलकिरीडहु पुणु भउ जणियउं गंगाकूडहु ।

घत्ता—ढुकी मंदाइणि कलसकर लोयं दीसइ केही ॥
थिय ण्हाणकरणमणणिवणियडि मज्जणवालिणि जेही ॥ १७ ॥

18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहियहियसल्ला ।
णमिविणमीसणामया णिरह णिम्मया जायया वसिल्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयड्ढु कुलिसें ताडिउ पुव्वेकवाडु जेण उग्घाडिउ ।
णट्टमालि साहिउ मालायरु पयजुइ पाडिउ णं पायडणरु ।
असमु वइरु किं तेण समाणउं जं माणुसु रित्तउ उत्ताणउं ।
पिंछकमंडलुमंडियहत्थहु रोसु जणइ तं मुणिवरसत्थहु ।
चक्कवट्टि गुणमणिरयणायरु आउ जाहुं अवलोयहि भायरु ।
मा पज्जलउ तासु कोवाणलु मा णिड्डहउ तुहारउ भुयबलु ।
हा मा दुरयरएहिं विहिज्जउ पोयणपुरपायारु दलिज्जउ ।
मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ हरिखुरखयखोणीधूलीरउ ।
मा धावंतु महंत महारह मा पिसुणहं पूरंतु मणोरह ।

२ MPB वसहइरिउ तीरहु. ३ MBP °णामंकउ. ४ MBP मिच्छाउलइं. ५ M records a *p* राएं for लोएं.

18. १ MB विहय°. २ M पुव्विकवाडु. ३ MP णं माणसु; B माणुसु. ४ MBP °कमंडल°. ५ MBP णिड्डलउ. ६ B वहिज्जउ. ७ BP हयखुर°.

10 *a* केर आज्ञा. 11 *b* छा हि छ ले ण छायाव्याजेन. 13 *a* स वि स ह र व रि स इं विसहरा मेघास्तेषां वर्षणेन सहितानि. 14 *a* पा ले य य से ल° हिमपर्वतो हिमवान्. 16 म ज्ज ण वा लि णि स्नानपालिका दासी.

18. 2 णि र ह निष्पापाः; णि म्म या निर्मदाः. 4 *b* पा य ड ण रु सामान्यमनुष्यसदृशः. 9 *a* दु र य- र ए हिं हस्तिनां दन्तैः; वि हि ज्ज उ विभज्यताम्. 10 *a* छ इ य दि स मे र उ आच्छादितदिङ्मर्यादम्.

काउ कंदलावलिहि म विरसउ पलयकालु सोणिउं मा करिसउ ।
देहि कप्पु णिदप्पुं हवेप्पिणु पेक्खु भरहु भावें पणवेप्पिणु ।
तं णिसुणेप्पिणु बाहुबलीसें पडिजंपिउं भूभंगविहीसें ।

घत्ता—कंदप्पु अदप्पु ण होमि हउं दूययकरउ णिवारिउ ॥
संकप्पें सो महु केरएण पहु उज्झिहइ णिरारिउ ॥ १८ ॥

19

आरणालं—जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं ।
तं मेह लिहियसासणं कुलविहूसणं हरइ को पहुत्तं ॥ १ ॥

केसरिकेसरु वरसइथणयलु सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ किं कयंतु कालाणलु जेहउ ।
हउं सो पणवमि को सो भण्णइ महिखंडेण कवण परमुण्णइ ।
किं जम्मणि देवहिं अहिसिंचिउ किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ सिरिसइरिणियइ किं रोमंचिउ ।
चक्कु दंडु तं तासु जि सारउ महु पुणु णं कुंभारहु केरउ ।
करिखुयररहवरडिंभयरहं णर णिहणमि रणि जे वि महारह ।
भरहु हरइ किं मज्झु भुयाभरु तइ चुक्कइ जइ सुंयरइ जिणवरु ।

घत्ता—तहु मेइणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदें दिण्णउं ॥
अब्भिडउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ पडिवण्णउं ॥ १९ ॥

८ MBP वरिसउ. ९ MBP णियदप्पु हरेप्पिणु.

19. १ MBP दिण्णउं. २ B omits त मह लिहियसासण. ३ M वरहइ, but records a p वरसइ°. ४ MBP पणवउ. ५ MBP °सइरिणियइ सो रोमंचिउ. ६ BP add after this· हरिगइहकिंकरमेलयणिह. ७ MBPT भरइ. ८ M भुयातरु, T भुयाहरु बाहुसामर्थ्यम्. ९ MBP ता. १० M सुमरइ. ११ MBP पडिवण्णउं.

12 *a* कंदलावलिहिं मनुष्यकपालपंक्तौ; विरसउ रटतु; *b* करिसउ कृषतु. 14 *b* भूभंगविहीसें भ्रूभङ्गभयानकेन.

19. 3 *a* वरसइथणयलु वरायाः सत्याः स्तनतलम्. 4 *a* छिवइ स्पृशति. 7 *b* °सइरिणियइ स्वैरिण्या पुंश्चल्या. 9 *b* महारह महारथाः. 10 *a* भुयाभरु भुजसामर्थ्यम्.

20

आरणालं—ता दूएण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा।
बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ   किं खरेण मायंगु खलिज्जइ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ   किं घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ।
गोप्पएण किं णहु माणिज्जइ   अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ।
वायसेण किं गरुडु णिरुज्झइ   णवकमलेण कुलिसु किं विज्झइ।
करिणा किं मयारि मारिज्जइ   किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ।
किं हंसें ससंकु धवलिज्जइ   किं मणुएण कालु कवलिज्जइ।
डेंडुहेण किं सप्पु डसिज्जइ   किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ।
किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ   किं पइं भरहणराहिउ जिप्पइ।

घत्ता—हो होउ पहुप्पइ जंपिएण राउ तुहुप्परि वग्गइ ॥
करवालहिं सूलहिं सव्वलहिं परइ रणंगणि लग्गइ ॥ २० ॥

21

आरणालं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा एत्थ काहिं मि जाया।
जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयम्मि राया ॥ १ ॥

वुड्ढउ जंबुउ सिवें सद्दिज्जइ   एण णाइं महु हासउ दिज्जइ।
जो बलवंतु चोरु सो राणउ   णिब्बलु पुणु किज्जइ णिप्पाणउ।
हिप्पइ मृगहु मृगेण जि आमिसु   हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु।
रक्खाकंखइ जूहु रएप्पिणु   एक्कहु केरी आण लएप्पिणु।

20. १ MBPK किं खज्जोएं. २ P सोखिज्जइ. ३ P मण्णिजइ. ४ MBP डिंडुहेण. ५ MBP भरहु. ६ MBP पहुचइ. ७ K रणंगणु मग्गइ.

21. १ MBP सिउ. २ M णिब्बल. ३ MBP णिप्पाणउ. ४ MBP मिगहु मिगेण. ५ P वूढु.

20. 5 *a* माणिज्जइ उपमीयते. 10 *a* णिहिप्पइ निक्षिप्यते. 11 वग्गइ विग्रहाय चेष्टते. 12 परइ प्रभाते.

21. 1 सहेउणा सयुक्तिकेन. 3 *b* एण णाइं अनेन न्यायेन. 5 *b* वसु धनम्.

ते णिवसंति तिलोइंगविट्ठउ सीहहु केरउ वंदु ण दिट्ठउ ।
माणभंगि वरं मरणु ण जीविउ एहउ दूय सुट्ठु मइं भाविउं ।
आवउ भाउं घाउ तहु दंसमि संझाराउ व खणि विद्धंसमि ।
सिहिसिहाहं देविंदु वि ण सहइ महु मणसियहु विसिहं को विसहइ ।
एक्कु जि परउव्वारु णरिंदहु जइ पइसरइ सरणु जिणयंदहु ।

घत्ता—संघट्टमि लुट्टमि गयघडहु दलमि सुहड रणमग्गइ ॥
पहु आवउ दावउ बाहुबलु महु बाहुबलिहि अग्गइ ॥ २१ ॥

22

आरणालं—ता दूउं विणिग्गओ णियपुरं गओ तम्मि णिवणिवासं ।
सो विण्णवइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं ॥ १ ॥

विसमु देव बाहुबलि णरेसरु णेहु ण संधइ संधइ गुणि सरु ।
कज्जु ण बंधइ बंधइ परियरु संधि ण इच्छइ इच्छइ संगरु ।
पइं णउ पेच्छइ पेच्छइ भुयबलु आण ण पालइ पालइ णियछलु ।
माणु ण छंडइ छंडइ भयरसु दयंवु ण चिंतइ चिंतइ पोरिसु ।
संति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि पुहइ ण देइ देइ बाणावलि ।
तुज्झु ण णवइ णवइ मुणितंडउ अंगु ण कड्ढइ कड्ढइ खंडउ ।
देव ण देइ भाइ तुह पोयणु पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।
ढोयइ रयणइं णउ करिरयणइं ढोएसइ भुउं णरउररयणइं ।

घत्ता— संताणु कुलक्कमु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ बुज्झइ ॥
मज्जायविवज्जिउ सामरिसु अवसें दाइउ जुज्झइ ॥ २२ ॥

६ B तिलोउ°. ७ MBP विंदु. ८ MBP वरि. ९ M भामिउ. १० MBPK राउ; G भाउ but writes adove it राउ in second hand. ११ M सिहसिहहिं देविंदु ण वि ण सहइ. १२ MT विसह. १३ MBPK जिणइंदहु.

22. १ MBP दूवउ. २ MB पणवउ; P पणविओ. ३ MBP दइउ. ४ BPP मग्गइ मग्गइ. ५ MBP भुउ.

10 *b* विसिह बाणाः. 11 *a* परउव्वारु परोद्धरणं रक्षणम्.

22. 1 सायरं सादरम्; सारसायरं सा लक्ष्मीः रसा पृथिवी, तयोः आकरम्. 8 *a* मुणितंडउ मुनिसमूहः. 10 *b* णरउररयणइं नरवक्षःस्थलविदारकानि. 12 दाइउ दायादः सपत्नीजातभ्राता.

23

आरणालं—ता परिल्हसिउ दिणमणी णं सिरोमणी गयणकामिणीए ।
अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जामिणीए ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ दिवसहु दिण्णु दीवुं सिहितत्तउ ।
णं चउपहरहिं वणु अहिकंतिहि जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।
णाइं पवालकुंभुं दिसणारिइ धरिवि मुक्कुं दिक्करिगणियारिइ ।
पउलिवि तलिवि दलिवि दलवट्टिवि जीवरासि जगभायणि घट्टिवि ।
दंडछुहियजणलोहियलित्ती कालेंडाँ विव दिसिवहि घित्ती ।
उग्घाडिवि ससहरमुह णिद्धहिं संमुहियहि तियसासामुद्धहि ।
णं सिंदूरकरंडु झसच्छिइ दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।
मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु णिउ वाएण वरुणमुहकमलहु ।
गोमिणीइ हरिरइरसभरिउं पोमरायवत्तु व वीसरिउं ।
अत्थमियउ जाइवि अवरासइ रत्तु मित्तु णं गिलियउ वेसइ ।

घत्ता—पुणु दीसइ संझारायएण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥
सहुं गिरिदरिसरिणंदणवणहिं लक्खारासि णं घित्तउ ॥ २३ ॥

24

आरणालं—आसोसियखमारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।
णं णरमाणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संझारायजलणु जो भमियउ सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।
संझारायघुसिणु जं संकिउ तं तमोहमयणाहें ढंकिउ ।

23. १ MBP दीउ. २ MBP कुंभ. ३ MBP मुक्क. ४ MBP मलिवि. ५ B कालिं दाविय. ६ MB दिसवहि; P दिवसहिः. ७ MBP °भरियउ. ८ MBP °पत्तु. ९ MBP वीसरियउ. १० MBP गिरिसरसरि°.

23. 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वतं प्रति समर्पितः; रुइविराइओ दीप्तिविराजितः; णाइ तया यामिन्या. 3 *a* मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु. 5 *b* दिक्करिगणियारिइ दिक्करिहस्तिन्या. 7 *b* कालेंडा विव दिसिवहि घित्ती कालेन अण्डमिव दिक्षु क्षिप्तम्. 11 *a* हरिरइरस° कृष्णक्रीडारसः; *b* पोमरायवत्तु पद्मरागभाजनम्. 12 *a* अवरासइ अपरदिशा.

24. 3 *b* समियउ पीडितः. 4 *b* °मयणाहें मृगेन्द्रेण.

संझारायविडवि जो[1] फुल्लिउ सो तमतंबेरमवइपेल्लिउ ।
चंदमइंदें तमकरि भग्गउ किं जाणहुं सो तासु जि लग्गउ ।
मयणिहेण दीसइ सुहयारउ तप्पवेसु वइरिहिं[2] भल्लारउ ।
विसइ गवक्खहिं थणयलि घोलइ वहुहारु व ससितेउ[3] णिहालइ ।
रंधायारें[4] थियउ अंधारइ दुद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।
रइपासेयबिंदु तेणुज्जलु दिट्ठु भुयंगहि णं मुत्ताहलु ।
दिट्ठउ कत्थइ दीहायारउ घरि पइसंतउ किरणुक्केरउ ।
मोरें पंडुरु सप्पु वियप्पिवि मुद्धें कँह व ण गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता—गंगासरि हंसपक्खदलइं पियविरहिणिगंडयलइं[6] ॥
जायइं ससियरपक्खालियइं धवलाइं जि णिरु धवलइं ॥ २४ ॥

25

आरणालं—मम्मणमणियजंपिरं मयणकंपिरं पणयविणयवंतं ।
रइरसरहसरंजियं[1] पिययमा पियं रमइ णिसि रमंतं ॥ १ ॥

केण वि घणथणि णिहियउ करयलु कणयकलसि णावइ रत्तुप्पलु ।
काइ वि को वि सुहउ[2] आलिंगिउ मइंमइमुहचुंबणु[3] मग्गिउ ।
णीहरंति पडिवहुरोसुब्भवि केण वि का वि धरिय करपल्लवि ।
पणयकलहि रमणीचरणंगउ को वि सकुंकुमेण पायं हउ ।
सोहइ विड्डु अइरा रिउ संकिउ णं मयरद्धयमुद्दइ अंकिउ ।
हारें बद्ध का वि सयणालइ ताडिय णाहें चंपयमालइ ।
विंबाहररसघयसंसित्तउ काँहं[4] वि मयणहुयासु पलित्तउ ।
उल्हाविउ रइसलिलपवाहें काइ वि किलिकिंचिउ उच्छाहें ।

24. १ MBP जं. २ P वेरिहि. ३ M सियतेउ. ४ B omits this foot. ५ M रंधायार. ६ M पियविरहिणं.

25. १ B °रहसजपिय. २ MBPK सुहडु: ३ MBP मडमंड. ४ MBP कासु.

5 *b* °तंबेरम° हस्ती. 7 *a* मयणिहेण मृगमिषेण. 9 *a* रंधायारु छिद्राकारः; *b* पयणइ प्रजनयति. 11 *a* दीहायारउ सर्पाकारः; *b* °उक्केरउ समूहः. 13 °पक्खदलइं पक्षयुगलानि.

25. 6 *a* °चरणगउ पादयोः पतितः. 7 *a* अइरा अचिरात्.

का वि रयावेसाणसमरीणी चंदणकद्दमवाविहि लीणी ।
को वि का वि सवहहिं रंजइ गुणि अक्कसमाण मज्झु परपणइणि ।
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ तावण्णहि को वयणु णियच्छइ ।
जणणि महेली मणि अवहारमि गुरुपय छिवमि ण पइं अवहेरमि ।

घत्ता—इयँ कवडकूडमउजंपियहिं दाणेण वँ वसिहूयउ ॥
णारीयणु रमिउ विडाहिवहिं वेढिवि णिरुवमरूवउ ॥ २५ ॥

26

आरणालं—दीहा वि रयमिहुणहं चक्कवियणहं पहियवंद्याणं ।
मउहा हवइ रयणिया चंदवयणिया रयविडिंदयाणं ॥ १ ॥

ता उग्गमिउ सूरु पुव्वासइ रइरंगु व दरिसिउ कामासइ ।
किंसुयकुसुमपुंजु णं सोहिउ णं जगभवणि पईवु पबोहिउ ।
चारु सूरु वंसहु णं कंदउ लोहिउ ससि रोसेण दिणिंदउ ।
मज्झु परोक्खइ आवइ पाविय कमलिणि वेल्लि भणिवि संताविय ।
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ ।
तंबु करोहउ रुहिरु णिसाडें चिंतिउ एंतु सछिद्दकवाडें ।
कुंकुमलोलु व मण्णिउं घरिणिइ रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ ।
मिलियउ सोहइ विद्दुममहियलि मिलियउ सोहइ कंकेलीदलि ।
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि ।
मिलियउ सोहइ जण अहरुल्लइ महिहरतीर धाउ जलरेल्लइ ।
राउ मुयंतु जि गुणसंजुत्तउ अरहंतु व रवि उण्णइं पत्तउ ।

५ P °रयावसाणि. ६ MBP वि.

26. १ MBP रइ°. २ MBP पईवउ बोहिउ. ३ MBP सूर°. ४ MBP दिणंदउं. ५ MB तंब. ६ M रुहिर. ७ MBP ककेल्लिहि दलि.

11 *a* °समरीणी °श्रमेण क्रान्ता. 12 *b* अक्कसमाण मातृतुल्या. 14 *b* गुरुपय छिवमि गुरुपादौ स्पृशामि; ण पइं अवहेरमि त्वां न वञ्चयामि. 16 वेढिवि आलिङ्ग्य.

26. 1 दीहा वि दीर्घापि; चक्कवियणहं चक्रवाकानां एव विगणानां पक्षिगणानाम्. 2 मउहा लघ्वी, रयविडिंदियाणं रतानां विटेन्द्राणाम्. 8 *a* णिसाडें निशाचरेण.

घत्ता— हयतिमिरें भरहपयासएण रविणा किं ण वि दाविउ ॥
सिरिरामासेवियसच्छसरपुप्फयंतु वियसाविउ ॥ २६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे बाहुबलिदूयसंपेसणं णाम
सोलहमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ १६ ॥

॥ संधि ॥ १६ ॥

८ MBP दावियउ. ९ MB वियसावियउ.

15 सिरीरामा दि—श्रीसेवितानां स्वच्छसरोवरपद्मानां मध्ये विकासितम्.

XVII

दूवागमि रविउग्गमि चलकरवालललावियजीहहो ॥
जाइवि णंदाणंदणहो भिडिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

ता समरचित्तु विसरिसु विरुद्धु विप्फुरियदसणडसियाहरुद्धु ।
कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु उद्धुयमीसियहयभउंहकोणु ।
तिवलीतरंगभंगुरियभालु णं सीहु कुडिलदाढाकरालु ।
अरुणच्छिछोहरंजियदियंतु णं पलयजलणु धगधगधगंतु ।
दूयवयणहिं वड्डियकसाउ जंपइ सरोसु रायाहिराउ ।
सुयरेप्पिणु तायहु तणउं चारु जइ कह व ण मारमि रणि कुमारु ।
तो धरिवि णिरुंभेवि करमि तेम अच्छइ करि जिह णियलत्थु जेम ।
महु कुद्धहु रणि देव वि अदेव सो ण करइ किं महु तणिय सेव ।
इय गज्जिवि असितासियसुरिंदु जा उट्ठिउ भरहु महाणरिंदु ।
तो मउडबद्ध मंडलिय वलय केऊरसकंठाहरणघुलिय ।
महिवडियकणयकंचीकलाव अइभीसण थिय णं कालभाव ।
एक्केक्क पहाण गिरिंद[11]धीर सहुं राएं लहु संणद्ध वीर[12] ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।
अत्यन्तवृद्धगतमपि भुवनं बम्भ्रमति तच्चित्रम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवर for कम्पिततनु; MP read विभ्रमति for बम्भ्रमति. GK do not give it.

1. १ MBP दूयागमि रविउग्गमणे. २ MBP विप्फुरियडसणु डसिया°. ३ M recods a *p* for this foot: धणुगुणे रोवि दिढवज्जबाणु. ४ MBP दूयहि वयणें. ५ MBP सुमरेप्पिणु. ६ P कह वि. ७ MB णिरुंभिवि; B णिरुंजिवि. ८ P करिवरु णियलत्थु. ९ MBP तो. १० MBP चलिय. ११ MBP णरिंद. १२ B धीर.

1. 3 *a* विसरिसु आद्वितीयम्; *b* अहरुद्धु अधरोपरितनभाग.. 6 *a* °छोह° विक्षेपः. 8 *a* चारु आचारः. 12 *a* वलय उत्थिताः. 13 *b* कालभाव यमस्वरूपाः.

घत्ता—संणज्झंतहु[13] तहु भडयणहु का वि णारि पभणइ जइ जाणहि ॥
किं पि महारउ उवयरिउ[14] तो पियतम सुररमणि म माणहि ॥ १ ॥

2

वहु का वि भणइ हत्थागएण किं कीरइ मणिकंकणसएण ।
अरिकरिदंतुब्भउ एक्कु जइ वि वलउल्लउ सोहइ हत्थि तइ वि ।
तं धवलउ तुह पोरिसजसेण आणेज्जसु पिय महु रइवसेण ।
वहु का वि भणइ एहु वि सुतारु किं तुज्झ पसाएं णत्थि हारु ।
तुह करणित्तिंसुक्कित्तिएहिं पर[1]कुंभिकुंभजुयमोत्तिएहिं ।
हउं किंत्तिलया इव कुसुमियंगि छेज्जमि[2] दाविज्जसु[3] एह भंगि ।
वहु का वि भणइ महिमाहरेण मइं विज्जहि किं वीरें[4] करेण ।
रिउचामरु[5] पिय उवयारकारि आणेज्जसु रयसमसेयहारि ।
वहु का वि भणइ अहिमाणगाहि लग्गिज्जसु पिय पडिवक्खणाहि ।
ऊणेण[6] हएण वि णत्थि लाहु उडुगणहु ण रूसइ तेण राहु ।
जिम मिहरहु[7] जिम हिमयरहु भिडइ बलिणा[8] हएण जसु चंदि चडइ ।
वहु का वि भणइ णीसंकयाइं तावियपिसुणइं पावियजयाइं ।

घत्ता—कइणा कव्वें[9] मणोहरए जेण भडेण महाभडगोंदलि ॥
दिण्णइं पयइं सुउज्जुयइं तासु किंत्ति भमइ[10] महिमंडलि ॥ २ ॥

१३ MBP संणज्झंतहु भडयणहु. १४ K उवरिउ but gloss उपकृतम.

2. १ MBP अरिकुंभि°. २ P पहिरेसमि सामिय एत्थ भंगि, but records a *p* छिज्जमि दाविज्जसु. ३ MBP दाविज्जसि. B वीरें करेण. ५ MBP रिउचामर. ६ MBP किं जणेण हएण. ७ MBP मिहिरहु. ८ MBP इय णाहएण, but M records a *p* in the margin: बलिणा हएण. ९ M कव्वेण. १० MBP हिंडइ.

16 उवयरिय उपकृतम्.

2. 5 *a* करणित्तिंसुक्कित्तिएहिं करानिस्त्रिंशोत्कर्तितैः. 6 *b* छज्जमि शोभे. 7 *a* महिमाहरेण माहात्म्यस्फेटकेन; *b* विज्जहि वीजय. 8 *a* उवयारकारि माहात्म्यजनकम्. 9 *b* पडिवक्खणाहि प्रतिपक्षनाथे प्रधाने. 10 *a* ऊणेण पदातिपुरुषेण.

3

ता रायवयणेण रणतूरलक्खाइं किंकर[1]कराहयइं तासियविवक्खाइं ।
सुरदंतिखयजलयजलणिहिणिणायाइं थं[2]गिथगिगिदुगिदुगिगि संदिण्णघायाइं ।
पडुपडहमद्दलमहारावरोलाइं किंकरक[3]रुब्भमियसल[4]सालियतालाइं ।
मुह[5]पवणतुरुतुरियकाहलवमालाइं गज्जंतभेरीहिं हल[6]मुहलबोलाइं ।
तडिवडणतडयडिय[7]गुरुकरडटिविलाइं विरसंतझल्लरिसरोसरियसेलाइं ।
णीसासभरेण पूरियइं विमलाइं हूहुहुयंताइं वरसंख[8]जमलाइं ।
अ[9]वरइं वि पहयाइं परियलियसंखाइं जयविजयसिरिकामिणीसोक्खकंखाइं ।
रुंजंतरुंजाइं भं[10]भंतभंभाइं हल्लावियाहिंदमहि[11]सायरब्भाइं ।
चलियाइं सेण्णाइं संणाहसोहाइं वरकुंजरारूढरणरूढजोहाइं ।
णरकरविमुक्कासखुरखयधरग्गाइं चलधूलिकवि[12]लाइं वि[13]प्फुरियखग्गाइं ।
परिमिलियमंडलियबलसारवंताइं धा[14]वंतपाइक्ककरधरियकों[15]ताइं ।
रहचक्कचिक्कारभेसियभुयंगाइं णिवछत्तछाहाहिं छाइयपयंगाइं ।
जक्खिंदखयरिंदभूमिंदभीमाइं खयकाल[16]कीलाहि कीला[17]विरामाइं ।

घत्ता—इय भर[18]हाहिउ णीसरिउ जाम समउ मंतिहिं सामंतहिं ॥
ता वेयालियचरणहिं विण्णवियउ बाहुबलि णवंतहिं ॥ ३ ॥

4

परियणजलेण णहु[1] महि पिहंतु उत्तुंगतुरंगतरंगवंतु ।
करिमयरपसारियचंडसोंडु सियपुंडरीयडिंडीरपिंडु ।
लायण्णपउरगंभीरघोसु दुग्गउं[2] चो[3]द्दहरयणाहिवासु ।

3. १ B °करहयइं. २ MBP ठगिदुगिगिठगिदुगिगि. ३ MBP °करुब्भमिय°. ४ B °सललिय°. ५ MBP °पवणहयकुहर (P कुहय) तुरुतुरियकाहलइं. ६ P °हलमुसल°. ७ MBP °खरकरड°. ८ MBP °जुयलाइं. ९ MBP अवराइं पहयाइं. १० MBP भंभंतभंभाहिं. ११ MBP °सायरंभाइं. १२ BP °कवलाइ. १३ MBP विप्फरिय° K विप्फरिय° but corrects it to विप्फुरिय°. १४ P धावंति. १५ MBP °कुंताइं. १६ MBK °कालकालाहि. १७ B कीराहिरामाइं. १८ भरहणराहिउ.

4. १ MB महि णहु. २ MB दुग्गमु. ३ MBP चउदह°.

3. 5 *b* सरोसरियसेलाइं °शब्देनोत्सारितपर्वतानि. 8 *a* °रुंजाइं वादित्रविशेषाः; *b* सायरब्भाइं सागराः अभ्राणि मेघाश्च. 10 *a* °विमुक्कास विमुक्ताः अश्वाः. 15 वेयालिय° वैतालिकाः.

संदणबोहित्थसमूहचवलु पंचंगमंतपायाल[4]विउलु ।
जसमोत्तियमंडियतिजगतीरु आणंदियणियकुलें[5] कुद्दहीरु ।
धयवडजलयरपरिघुलण[6]रंगु दूरयरणिहित्तमलोहसंगु ।
तुज्झुवरि देव असिझसरउद्दु उत्थल्लिउ[7] णरवइ बलसमुद्दु ।
सुविचित्तपत्त[8]पत्तियसरेण ता वुच्चइ बाहुबलीसरेण ।
हउं एक्कु वइरि किं पउर भणहि किं कालहु अग्गइ जीव गेणहि[9] ।
किं डज्झइ हुयवहु तरुवरेहिं किं खज्जइ खगवइ विसहरेहिं ।
किं कुसुमबाण जिणमणु हरंति गोमाउ मइंदहु किं करंति ।
छाइज्जइ किं भयणेहिं भाणु पउर वि रिउ महु ण मलंति माणु ।

घत्ता—एक्कु वि पउ ण समोसरमि णायायारहिं पंथु णिरुंभमि[10] ॥
आवंतहु णिवसायर[11]हो सरवरपंतिहिं वरणु[12] णिबंधमि[13] ॥ ४ ॥

5

गज्जंतु एम पलयक्कतेउ संणज्झइ सिरिबाहुबलिदेउ ।
जोयंतहु णियभुयथामसंचु[1] कासु वि वड्ढिउ रोमंचु उंचु[2] ।
हियवइ संणाहु ण माइ केम बहुलोहवंतु काउरिसु जेम ।
केण वि बद्धी जयकामएण असिधेणुय[3] रसणादामएण ।
केण वि इच्छिय संगामदिक्ख सरमोक्खहु केरी परमसिक्ख ।
केण वि गुणु वलइउ[4] कहिं वि चावि चप्पिवि[5] णं खलयणि कुडिलभावि ।
केण वि णिबद्धु तोणीरजुयलु णं गरुडें दाविउ पक्ख[6]जमलु ।
केण वि कड्ढिउ करवालु चंडु णं मेहें दरिसिउ[7] विज्जुदंडु ।

४ P पायालि. ५ MB °कुलछुद्दहीरु, P °कुलु छुद्दहीरु, K °कुलकुद्दहीरु but corrects it to °छुद्दहीरु T चद्दहीरु चंद्रारंगुस्थानम्. ६ MBP °घुलियरगु. ७ K उत्थल्लउ. ८ MBP °वत्तपत्तिय°. ९ MBP जणहि. १० BP णिरुंभिवि. ११ MBP °सायरबलहो. १२ MB वरुणु. १३ B णिबंधिमि; K णिरुंभमि.

5. १ G सतु; K थावसचु. २ MP उच्चु. ३ MBP असिधेणुव. ४ MBP लाविउ. ५ MBP चप्पेविणु खलयणकुडिलभावि. ६ Mपक्खजुयलु, BP पखजुयलु. ७ P दाविउ.

4. 4 *a* °बोहित्थ° नौः. 5 कुद्दहीरु चन्द्रः. 6 *b* °मलोहसंगु अन्यायमलसंगः. 11 *b* गोमाउ शृगालः. 12 *a* भयणेहिं नक्षत्रसमूहैः. 13 णायायारहिं सर्पाकारैः. 14 वरणं तटं सैन्यसमुद्रस्य.

5. 1 *a* पलयक्कतेउ प्रलयार्कतेजाः. 2 *a* थामसंचु सामर्थ्यसंचयः. 4 *b* असिधेणुय छुरिका.

भडु को वि भणइ परु हणमि अज्जु णिक्कंटउ सामिहि देमि रज्जु ।
पहु तुच्छु पउरु रिउ हउं वि धीरु भणु सुंदरि किं कीरइ वियारु ।
अवरुंडहि लहु दे देहि हत्थु को जाणइ पुणु संजोउ केत्थु ।
आयड्डिउ पहुहि पसाउ जेहिं रणि जुज्झमि अज्जु भुएहिं तेहिं ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहडु मुइ मुइ कंति ण एवहिं मंज्झमि ॥
णिग्गवि रायहु तणउ रिणु अज्जु सीसदाणेण विसुज्झमि ॥ ५ ॥

6

भडु को वि भणइ कयवणमुहेहिं जइ भिज्जइ उरु करिमुहरुहेहिं ।
जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहिं जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहिं ।
जइ अंतइं गिद्धइं लइवि जंति तो मरणमणोरह महु सरंति ।
भडु को वि भणइ हलि हत्थु देमि गयदंतमुसलु कड्ढेवि लेमि ।
कंडवि णरकण अवर वि करेणु उड्डावमि अयसतुसोहरेणु ।
भडु को वि भणइ हुइ खंडखंडि महु करु पेक्खेज्जसु पक्खितोंडि ।
सुंदरि गयणंगणि लंबमाणु अविमुक्कवेरि दावियकिवाणु ।
अह धरणिघुलिउ लइ रिउ विहत्तु तुह मंगलंसुकज्जलविलित्तु ।
जं पेच्छहि बहुरुहिरें किलिण्णु परिमुक्कदीहणारायभिण्णु ।
वच्छयलु महारउ तं जि लेहि सघुसिणु करयलु अहिणाणु देहि ।
हलि सामलंगि उप्फुल्लवयणु जंइ णिवडिउं पेच्छहि तंबणयणु ।

घत्ता—तो मेरउ सिरु तरुणि तुहुं चित्ततुलारोहेण विवेयहि ॥
सहुं पत्थिवपरिवालिएण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

---

८ K हणिवि. ९ MBP करमि. १० MBP मुज्झमि and gloss in MP मोह करोमि; K मज्झमि but मुज्झमि in second hand.

6. १ MBP गिद्ध. २ B मय. ३ K °मुसल. ४ M पेक्खिज्जहि. ५ MBP पक्खितुंडि. ६ MBP परमुक्क°; M records a *p* सरु मुक्क°. ७ M अहिणाहु. ८ MBP ओफुल्ल°. ९ M जं णियडउ; BP जं णियंडिउं. १० MBP सो. ११ MBP परिपालिएण.

---

13 मज्झमि मनोहरं करोमि.

6. 5 *a* कंडवि चूर्णीकृत्य; *b* अयस° अपयशः.

7

छुडु गज्जिय गुरु संगामभेरि णं भुक्खिय तिहुयणु गिलिवि मारि ।
छुडु णिग्गउ भुयबलि साहिमाणि छुडु एत्तहि पत्तउ चक्कपाणि ।
छुडु कालें णीणिय दीह जीह पसरिय माणुसमंसासणीह[1] ।
थिय लोयवाल जीवियणिरीह डोल्लिय गिरि रुंजिय गेहणि[2] सीह ।
छुडु भडभारें ढलहलिय[3] धरणि छुडु पहरणफुरणें हसिउ तरणि ।
छुडु चंदबलाइं[4] पलोइयाइं छुडु उंहयबलाइं[5] पधावियाइं ।
छुडु मच्छरचरियइं[6] वड्डियाइं छुडु कोसहु खग्गइं कड्डियाइं ।
छुडु चक्कइं हत्थुग्गामियाइं छुडु सेल्लइं भिच्चहिं भामियाइं ।
छुडु कोंतइं धरियइं संमुहाइं धूमंधइं[7] जायइं दिम्मुहाइं ।
छुडु मुट्ठिणिवेसियँ[8] लउडिदंडँ[9] छुडु पुंखुज्जल[10] गुणि णिहियँ[11] कंडँ[12] ।
छुडु गय कायर थरहरियप्राणँ[13] छुडु ढोइयँ[14] संदण णं विमाण ।
छुडु मेंठचरणचोइयमयंग[15] छुडु आसवारवाहियतुरंग ।

घत्ता—छुडु छुडु कारणि वसुमइहि सेण्णइं जाम हणंति परोप्परु ॥
अंतरि ताम पइट्ठ तहिं मंति चवंति समुब्भिवि णियकरु[16] ॥ ७ ॥

8

बिहिं बलहं मज्झि जो मुयइ[1] बाण तहु होसइ रिसहहु तणिय आण ।
तं णिसुणिवि सेण्णइं सारियाइं चडियइं चावइं उत्तारियाइं[2] ।
तं णिसुणिवि रहसाऊरियाइं वज्जंतइं तूरइं वारियाइं ।
तं णिसुणिवि धारापहसियाइं करवालइं कोसि णिवेसियाइं ।
तं णिसुणिवि णिद्धंगइं[3] घणाइं णिम्मुक्कइं कवयणिबंधणाइं ।

7. १ MB °मसाण सीह. २ MBP गहणसीह. ३ MBP ढलढलिय. ४ MBP चंड°. ५ MBP उभय°. ६ MBP °चडियइ. ७ MB धूवंधइ. ८ M °णिवेसिउ. ९ M °दंडु. १० MBP पखुज्जलु. ११ M णिहिउ. १२ M कंडु. १३ MBP °पाण. १४ P ढोयइ. १५ MBP मेट्ठ°. १६ M वररकरु; BP वरकरु.

8. १ MBP मुवइ. २ MBP खग्गइं पडियारि. ३ MBP णद्धंगइं; T णिद्धंगइं दीप्राणि णद्धंगइं वा बद्धानि.

7. 1 *a* छुडु शीघ्रम्. 3 *b* °मंसासणीह मांसाशनेच्छा 4 *b* गहणि वने.

8. 5 *a* णिद्धंगइं भास्वराणि.

तं णिसुणिवि मय मायंग रुद्ध पडिगयवरगंधालुद्ध कुद्ध ।
तं णिसुणिवि मच्छरभावभरिय हरि फुरुहुरंत धावंत धरिय ।
रह खंचिय कड्डिय पग्गहोह वारिय विधंत अणेय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणचरणसवहसंणिहियइं ॥
सेण्णइं उज्झियकलयलइं थक्कइं कुड्डि णाइं आलिहियइं ॥ ८ ॥

9

पणमियसिरेहिं मउलियकरेहिं बाहुबलि भरहु महुरक्खरेहिं ।
उग्गमियरोसपसमंतएहिं विण्णि वि विण्णविय महंतएहिं ।
तुम्हइं बिण्णि वि जण चरमदेह तुम्हइं विण्णि वि जयलच्छिगेह ।
तुम्हइं बिण्णि वि अखलियपयाव तुम्हइं बिण्णि वि गंभीरराव ।
तुम्हइं बिण्णि वि जगधरणथाम तुम्हइं बिण्णि वि रामाहिराम ।
तुम्हइं विण्णि वि सुरहं मि पयंड महिमंहिलहि केरा बाहुदंड ।
तुम्हइं बिण्णि वि णिवणायकुसल णियतायपायपंकरुहभसल ।
तुम्हइं बिण्णि वि जण जणहु चक्खु इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।
खरपहरणधारादारिएण किं किंकरणियरें मारिएण ।
किर काइं वराएं दंडिएण सीमंतिणिसत्थें रंडिएण ।
दोहं मि केरा मज्झत्थ होवि ओउहु मेल्लिवि खमभाउ लेवि ।

घत्ता—अवलोयंतु धराहिवइ एत्तिउ किज्जउ सुत्तु सुजुत्तउ ॥
तुम्हहं दोहं मि होउ रणु तिविहु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावराहिय; P मच्छरभारभरिय. ५ MB फुरफुरंत. ६ MB अणंत. ७ M चरणसवहसाल्हिहियइं; B °चरणवसहसंणिहियइं; T सवहसंणिहियइं. ८ P कोड्डि.

9 १ MBP उग्गमिउ रोसु. २ MBP read: तुम्हइं बिण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइ बिण्णि वि जण चरमदेह. ३ MB महियल केरा. ४ MBP आउह. ५ MBP किज्जइ सुट्ठु. ६ MBP धम्मु णाएण.

8 *a* पग्गहोह रश्मिसमूहः. 9 °सवहसणिहियइं शपथभृतानि. 10 कुड्डि कुड्ये भित्तौ.

9. 2 *b* महंतएहिं मन्त्रिभिः. 7 *a* णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ. 10 *b* सीमंतिणिसत्थें स्त्रीसमूहेन. 12 सुत्तु सुभाषितम्. 13 धम्मणाएण धर्मन्यायेन.

10

पहिलउ अवरोप्परु दिट्ठि धरइ मा पंत्तलपत्तणचलणु करइ ।
बीयउ हंसावलिमाणिएण अवरोप्परु सिंचहु पाणिएण ।
तइयउ पुणु णहि जोयंतु देव करु करि घिवंतं सुरदंति जेंव ।
जुज्झहु बिण्णि वि णिवमल्ल ताम एक्केण तुलिज्जइ एक्कु जाम ।
अवरोप्परु जिणिवि परक्कमेण गेण्हहु कुलहरसिरि विक्कमेण ।
तणुसोहाहसियपुरंदरेहिं ता चिंतिउ दोहिं मि सुंदरेहिं ।
किं दूहवियहि णवजोव्वणेण किं फलिएण वि कडुएं वणेण ।
किं सलिलें चंडालंकिएण किं दासें पेसणसंकिएण ।
किं राएं गुरुपडिकूलएण सुविणीयसुयणसिरसूलएण ।

घत्ता—जे ण करंति सुहासियइं मंतिहिं भासियाइं णयवयणइं ॥
ताहं णरिंदहं रिद्धि कंओ कहिं सीहासणछत्तइं रयणइं ॥ १० ॥

11

इय चिंतिवि इच्छिउ मंतिमंतु वुड्ढाणुगामि णीसेसु संतु ।
अवलंबिउ रोसु ण परियणेहिं आयंबकसणसियलोयणेहिं ।
सकसायभाव आसण्णु ढुक्कु दोहिं मि अवलोइउ एक्कमेक्कु ।
उद्धाणणु पहु भुयबलिहि तोंडु पेच्छइ रविबिंबु व किरणचंडु ।
हेट्ठिल्लि दिट्ठि उवरिल्लियाइ णिज्जिय दिट्ठिइ अविहल्लियाइ ।
णं होंति कुगइ पंचमंगईइ विसयासा इंव मुणिवरमंईइ ।

10. १ MP पत्तलयत्तणु चवलु; B पत्तलयत्तणु चलणु; T पत्तलयत्तणु. २ B करि करु. ३ MBP घिवंतु. ४ MBP अणुहुंजहु मेइणि. ५ T चंडालट्ठिएण. ६ MBP कहिं कहिं. ७ MB सिंघासण°, P सिंहासण°.

11. १ MBP आसण्ण ढुक्क. २ MBP एक्कमेक्क. ३ MBP तुंडु. ४ MBP पेक्खिवि. ५ P पंचमगयाइ. ६ MBP विव. ७ P °मयाइ.

---

10. 1 *b* पत्तलपत्तणचलणु पत्तलपक्ष्मचालनम्. 8 *a* चंडालंकिएण चाण्डालस्वीकृतेन. 9 *a* गुरुपडिकूलएण मन्त्रिपुरोहितप्रतिकूलेन. 10 सुहासियइं सुभाषितानि; णयवयणइं नीतिवचनानि.

11. 1 *b* वुड्ढाणुगामि वृद्धाश्रितम्; णीसेसु संतु सर्वमुत्तमम्. 5 *b* अविहल्लियाइ अविचालितया स्थिरया.

णं तावसि भग्गी विडरईइ णं सेलभित्ति गंगाणईइ।
णं कमलपंति ससियरतईइ कुमुओलि व मउलिय रविरुईइ।

घत्ता—ठिउ हेट्ठामुहुं चक्कवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्ठिपहावहिं॥
घल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संथुउ देवहिं॥ ११॥

12

मओमत्तमायंगलीलावहारा रमावासवच्छत्थलोलंतहारा।
फणिंदेण चंदेण इंदेण दिट्ठा पुणो दो वि राया सरंते पइट्ठा।
सरंतेहिं आलोइयं सच्छणीरं विसालं गहीरं तुसारोहतारं।
महापोमसुत्ताहिमाणिक्कदित्तं मरुध्दूयतिंगिच्छिधूलीविलित्तं।
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं मरालीपहालग्गलीलामरालं।
सिरीणेउरालावणच्चंतमोरं भिसाहारपूरंतचंचूचऊरं।
तरंतामरं रोयरारद्धकीलं जलुब्भंतमीणं लयापत्तणीलं।
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं समुत्तुंगफेणावलीछण्णतूहं।
झुणंतालिकोलाहलं सारसिल्लं इणुम्मुक्कपायावलीफुल्लफुल्लं।
सुयाणेयपक्खिंदजक्खिंदसद्दं पमज्जंतहत्थिंदसोंडाविमद्दं।

घत्ता—तहिं बिण्णि वि जण ओयरिय पहुणा घित्त जलंजलि भायहु॥
वियलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु॥ १२॥

८ P °रुईइ. ९ M णं कुमुउलि वररावियररुईइ; B ण कुमुउण्णिव णवरवि°; P णं कुमुउालिव णवरवि°.

12. १ MBP वच्छत्थलोलंबि°. २ M °तिंगिन्छ°; B तिगिंछि°; P तिगिंगछ°. ३ MB गेयपारद्ध° P खेयरारद्ध°; T रोयर चक्कवालं. ४ MBP °सिंहं. ५ M सारिसिल्लं. ६ MP °पेक्खंत°. ७ MBP णिमज्जंत°. ८ MBP सुडा°. ९ MBP वियरइ.

7 *a* विडरईइ विटरत्या. 8 *a* °तईइ °संतत्या; *b* कुमुओलि कुमुदपंक्तिः. 9 पडिभड° बाहुबलिः.

12. 1 *b* रमावास° लक्ष्मीनिवासम्. 2 *b* सरंते सरोवरमध्ये. 3 *b* °तार शुभ्रम्. 7 *a* रोयर° रुचिरम्. 8 *a* ससीछाहिसारंग° चन्द्रप्रतिबिम्बे स्थितं हरिणमुद्दिश्य; °डेवंत° धावन्; *b* °तूहं तटम्. 9 *b* इणुम्मुक्कपायावली° आदित्येन मुक्तानां किरणानां समूहैः.

13

वच्छत्थलु पाविवि पुणु[1] वि वलिय हेट्ठामुह खलमेत्ति व घुलिय[2] ।
कडियलि धावंती सुंदरासु दीसइ तारालि[3] व मंदरासु ।
णं मरगयमहिहरि चंदकंति णं णीलें[4]महीरुहि हंसपंति ।
डेवंती दीसइ सलिलधार णं कंठभट्ठ कंठिय सुतार ।
णं सुरसरि चंवलतरंगफार गयणुल्ललंत झससुंसुमार ।
आरूसिवि पुणु भरहहु विमुक्क णंदातणएं गुरुजलझलक्क ।
पच्छाइउ चउदिसु ताइ राउ धवलइ[5] जिणकित्तिइ णं तिलोउ ।
कणयइरि व सरयब्भावलीइ णं उययसिहरि ससहररुईइ ।
सलिलें णवसोत्तइं पूरियाइं बहुपरियणसयणइं जूरियाइं ।
उग्घोसिउ विजउ महासरेहिं बाहुबलिणराहिवकिंकरेहिं ।

घत्ता—सीसु धुणंतु भुयंतु[6] छलु सरवरवारिपवाहें सित्तउ ॥
पडिओसारियउ[7] पुहइवइ णाइं करिंदु करिंदें जित्तउ ॥ १३ ॥

14

जलभरियसुणासावंसएण वड्डियपडिभडबलसंसएण ।
वज्जिय[1]मंडलियकुरंगएण परिहच्छें सरतीरंगएण ।
रोसारुणच्छिरंजियदिसेण सप्पेण व अइआसीविसेण ।
सीहेण व उद्धुयकेसरेण णिब्भच्छिउ भाइ णरेसरेण ।
पीलिज्जइ तेरउ उच्छुचाउ रसु पिज्जइ सज्जइ गुलु सुसाउ ।
फुल्लसर वि कयधम्मेल्ल[2]सोह पइं जेहा कहिं लब्भंति जोह ।
अवियाणियखत्तियधम्मसार महिलाण गोहहो मोट्टियार ।
किं किरि[3] वयणेण पलोइएण जीवंतहं सलिलें ढोइएण ।

13. १ MB पुणु वलिया. २ MBP घुलिया. ३ MBP तारावलि मदरासु. ४ MP महिरुहि; B महीहरि. ५ MBP धवल°. ६ MBPK मुणंतु. ७ MBP °ओसरियउ.

14. १ MBI ' तज्जिय°. २ MBP °धम्मिल्ल°. ३ MB किंकरवयणेण.

13. 2 b तारालि ताराश्रेणी. 3 b °महीरुहि वृक्षे.

14. 1 b वड्डियेत्यादि—वर्धितः प्रतिभटाद्बाहुबलिनः सकाशाद्बले संशयो जयविषये यस्य. 2 b परिहच्छें वेगेन.

ए पहि देहि भुयजुज्झु तेम अज्जु जि पयंतरु होइ जेम।
ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि धणुबाण महारा काइं हसहि।
जाणंतु वि देवि[5] णिरत्थु भणहि पियविरहुव्वेइउ किं ण कुणहि।
माहेलाण गोहु हउं सयणमग्गि गोहाण गोहु कड्डियइ खग्गि।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मण्णियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा॥
णियधणकणमयकयविवस पत्थिव सयल होंति विवरेरा॥ १४॥

15

तओ भुयभंडणि भायर लग्ग णरिंदसिरोमणि घट्टपयग्ग।
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल पहाण महाबल बिण्णि वि मल्ल।
सुकंचणकुंडलमंडियगंड पसारियबाह सरोस पयंड।
चिराउस चंदचडावियणाम सुविक्कमवंत णराहिवकाम।
समत्थ सिरीण रईण णिकेय महारह भारह भक्खरतेय।
असंक खगंक झसंक विपंक जसंसुपसाहियपुण्णससंक।
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति धरेप्पिणु देह घडेवि पडंति।
पडंत जि गाहणिबंधणु देंति कडीयलु कंठु णिरुंभिवि ठंति।
विरुद्ध वि गाह बलेण मुयंति मुएप्पिणु उड्डिवि झत्ति वलंति।
अलंभुयजुज्झविहाणसयाइं पचप्पणकड्ढणवेढणयाइं।
करंति वि धीर अविद्धवियंग णिरंकुस णाइं मयंध मयंग।
पयाणभरस्स धरित्ति ण तिण्ण विमुक्क रवेण दिसाकरि बुण्ण।
फलोणयपायवपिट्ठु व छुण्ण णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण।
ण चल्लिय कुंचिय कूर फणिंद दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद।
तओ हयमाणिणिमाणमएण णरामरसंगरलद्धजएण।

४ P भुयजुयलु. ५ BK देव. ६ MBP कुणइ. ७ M मोहु, but records a *p* गोहु. ८ P कणयमय°.

15. १ K °घुट्ठ° and gloss घृष्ट. २ P सकचण°. ३ MBP बारहभक्खर°. ४ MBP घडेण. ५ MBP पडंति जि गाढ°. ६ MBP णिरुद्धु वि बाहु; K णिरुद्ध वि गाह. ७ MBP जंति. ८ MBP पचंपण°. ९ PK चुण्ण.

10 *a* जइणि जिनपुत्रः; भसहि असंबद्धं प्रलपसि.

15. 2 *a* कुकारणि पृथ्वीनिमित्तम्. 4*b* णराहिवकाम देवौ. 5 *b* भक्खर° आदित्यः. 6 *b* जसंसु° यशःकिरणाः. 12 *b* वुण्ण संकुपिताः. 13 *b* वणेयर मृगाः.

सुरिंदकरीकरथोरभुएण अणिंदजिणिंदसुणंदसुएण ।
पहुस्स करेण करा परताविं परेण थिरेण धरेविं[10] कमावि ।

घत्ता—कुंअरें[11] राउ समुद्धरिउ णायणियंबिणिसेवियकंदरु ॥
कयइच्छाकोउहलेण किं णं[12] पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥ १५ ॥

16

उद्धरिउ सुपुत्तें णं सुवंसु कमलायरेण णं रायहंसु ।
णं सुहपरिणामें जीवं[1] भव्वु णं सुयणसमूहें सुकइकव्वु ।
णं मुणिवरणाहें वयविसेसु णं णरवरिंदणाएण देसु ।
णं गमेण[2]वियारें बालभाणु णं वाएं चंपयकुसुमरेणु ।
णं कामुयसत्थें कामचारु णं सो जि तेण संसारसारु ।
खयरामरमाणविमद्दणेण पढमेण पढमजिणणंदणेण ।
अइलुद्धें बहुमण्णिय[3]धणेण कुद्धें अवगण्णियसज्जणेण ।
परिपालियसयलवसुंधरेण ता चिंतिउ चक्कु सुकंधरेण ।
जमदाढावलयहु अणुहरंतु उद्धाइउ चंचलु विप्फुरंतु ।
रविबिंबेण व जियविसमवेउ[4] तं परियंचिउ बाहुबलिदेउ[5] ।
थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ को पहउ किर णियकुलपईउ ।
को सुरयधुत्तिचित्ताणुवट्टि को एम जिणइ जगि चक्कवट्टि ।

घत्ता—विंभिउ भरहणराहिवइ बाहुबलीसु जगेण पसंसिउ ॥
गयणभाउ सुरमुक्कियहिं पुप्फ[6]दंतपंतिहिं णं पहसिउ ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहबाहुबलिजुज्झवण्णणं णाम
सत्तारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १७ ॥

॥ संधि ॥ १७ ॥

१० P धरेवि. ११ MBP कुमरें. १२ M णाइं, but T किं गिरिमंदरो पुरंदरेण नोध्दृतः.

16. १ MBP जीउ. २ MBP गयण°. ३ BP बहुमाणिय°. ४ K °विसमवेरु. ५ K बाहुबलिमेरु. ६ MBP पुप्फयंत°.

16. 4 *a* गमणवियारें गमनपरिणत्या आकाशेन वा; *b* वाएं वातेन. 5 *b* सो जि भरतः; तेण बाहुबलिना. 14 पुप्फदंतपंतिहिं पुष्पाणीव दन्तपंक्तयः ताभिः.

XVIII

णहु लंघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मवियउ ॥
करडिंभु व बंभहु तणउं सुउ उच्चाइवि पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

णं कमलसरु हिमोहयकायउ दवदड्डुउ रुक्खु व विच्छायउ ।
जं ओहुल्लियमुहु पहु दिट्ठउ तं बलि भणइ हउं जि णिकिट्ठउ ।
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ जेण महंत भाइ ओहामिउ ।
हा किं किज्जइ भुयवलु मेरउ जं जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।
महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ बंधवहुं मि विसु संचारिज्जइ ।
जिह अलि गंधें गउ संघारहु तिह रज्जेण जीउ तंवारहु ।
भडसामंतमंतिकयभायउ चिंतिज्जंतउ सव्वु परायउ ।
तंदुलपसयहु कारणि राणा णरइ पडंति काइं अवियाणा ।
डज्झउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ जइ सुहु तो किं ताएं मुक्कउ ।
सुहणिहि भोयभूमि संपयेयर कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।

घत्ता—दुल्लंघहु दुक्कियलंछणहो दूसहदुक्खदुरंतहो ॥
भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयंतहो ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

शशधरबिम्बात्कान्ति तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

GK do not give it.

1. १ P उच्चाविवि. २ P हिमहय° but gloss हिमाहत. ३ P दवदड्ढ व. ४ B ओहुल्लिय महुं. ५ MBP महंड्ड. ६ P हा जं जायउ. ७ P बंधवाहु विसु. ८ B दुक्खगुरुक्कउ. ९ P संपयधर. १० B दुल्लंघिय-दुक्किय°. ११ MB दूसहो.

1. 2 करडिंभु हस्ते बाल इव; थवियउ भूमौ मुक्तः. 4 *b* बलि बाहुबलिः. 5 *b* ओहामिउ अभिभूतः तिरस्कृतः. 6 *b* °दुण्णय° अविनयः. 9 *b* तंवारहु नरकम्.

2

कालभुयंगहु को वि ण चुक्कइ सुयणत्तणु जि एक्कु पर थक्कइ ।
मइं पइं जेहा बहु वेहाविय पुहइइ पुहइपाल वोलाविय ।
पयहिं अइअहिलासु ण गम्मइ जणणि जणणु भायरु किह हम्मइ ।
पडिवण्णउं ण केम पालिज्जइ किह हियवउ कलुसें मइलिज्जइ ।
जं माणुसु धम्मेण ण भिज्जइ सो णिक्किट्ठु तेण किं किज्जइ ।
देव मज्झु खमभाउ करेज्जसु जं पडिकूलिउ तं म रूसेज्जसु ।
अप्पउ लच्छिविलासें रंजहि लइ महि तुहुं जि णराहिव भुंजहि ।
णहणिवडियणीलुप्पलविट्ठिहि हउं पुणु सरणु जामि परमेट्ठिहि ।
तं णिसुणिवि भरहेसें बुच्चइ परिहवदूसिउ रज्जु ण रुच्चइ ।

घत्ता—अंतेउरसयणहं परियणहं णीसेसहं मि णियंतहं ॥
हउं जित्तउ पइं तुहुं सइ खेंविउं खम भूसणु गुणवंतहं ॥ २ ॥

3

जइ पइं णियभुएहिं अंदोलिउ भूमंडलि तडत्ति अप्फालिउ ।
तो किं चक्कु रयणु मइं रक्खइ पुणु जीयंतु को वि किं पेक्खइ ।
पइं जित्ती खमा वि खमभावें पइं तोसिउ कउसिउ सपयावें ।
पइं जिह तेयवंतु ण दिवायरु णउ गंभीरु होइ रयणायरु ।
पइं दुज्जसकलंकु पक्खालिउ णाहिणरिंदवंसु उज्जालिउ ।
पुरिसरयणु तुहुं जगि एक्कल्लउ जेण कयउ महु बलु वेयल्लउ ।
को समत्थु उवसमु पडिवज्जइ जगि जसढक्क कासु किर वज्जइ ।
पइं मुएवि तिहुयणि को चंगउ अण्णु कवणु पच्चक्खु अणंगउ ।

2. १ MBP णिक्किउ काइं तेण किर किज्जइ, K णिक्किट्ठु तेण काइं किर किज्जइ; but oorrects it to सो णिक्किट्ठु तेण किं किज्जइ. २ MBP खमिउ.

3. १ MBP महिमंडलि. २ MBP चक्करयणु. ३ MB पुणु वि जयंतु; PK पुणु वि जियंतु. ४ MB तोसिउ. ५ M पोउसिउ; B कोसिउ.

---

2. 2 *a* वेहाविय वञ्चिताः; *b* वोलाविय निष्कासिताः यापिताः. 5 *a* णभिज्जइ न अनुरज्यते.

3. 3 *a* खमा वि पृथिव्यपि; *b* कउसिउ इन्द्रः. 6 *b* वेयल्लउ वैकल्यम्.

अण्णु कवणु जिणपयकयपेसणु अण्णु कवणु रक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरहो इंदहु इंदु अणीयउ ॥
पर एक्कहु णंदाएविसुय तुह ण णिहालमि बीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं[1] दुव्वयणेहिं णिब्भच्छिउ जं दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।
जं सरवाणिएण णिरु सित्तउ जं जुज्झंतें पेल्लिवि घित्तउ ।
तं एवहिं [2]खेम करि महुं बंधव जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।
आउ जाहु उज्झाउरि पइसहि अज्जु जि तुहुं सिंहासणि बइसहि ।
पट्टु णिबंधमि भालि तुहारइ अक्ककित्ति जीवउ तुह केरइ ।
एवहिं रज्जु करंतउ लज्जमि एवहिं परमदिक्ख पडिवज्जमि ।
एवहिं इंदियछंदु विवज्जमि एवहिं पुण्णु ण पाउ समज्जमि ।
एवहिं कम्मणिबंध[3]ण भंजमि एवहिं जीएं प्राणं[4] विसज्जमि ।

घत्ता—बंधव वणवासहु पट्ठविवि धरणिमोहरसभंतें ॥
मइं एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइं जियंतें ॥ ४ ॥

5

सज्जणकरुणें सज्जणु कंपइ तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।
जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलिउ तइयहुं पइं वि किं ण परितोलिउ[1] ।
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउ[2] ।
जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ वंदणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ ।
जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि ता[3] जं दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4. १ MBP जं दुव्वयणेहिं. २ M महुं खम करि. ३ MBPK °णिबधणु. ४ MBP पाण.
5. १ MBP किं ण पइं मि. २ P adds after this. तुहुं जि जेट्ठु महु सामि महारउ. ३ MPK तो.

10 अणीयउ प्रतीन्द्रः, उपमां प्रापितो वा.

4. 7 *a* °छंदु °वशत्वम्.

5. 1 *b* भरहाणुउ भरतानुजो बाहुबलिः. 4 *b* भावईत्यादि—भोगस्तेषां विषमिव प्रतिभासते.

तहिं अवसरि वयणेहिं णिरोहिउ मंतिहिं भूमिणाहु संबोहिउ ।
सुउ संताणि थवेवि महाबलि गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता—वणु जंतु मुयंतु णरिंदसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ॥
साकेयहु राउ विसण्णमणु मंतिहिं मंडुइ आणिउ ॥ ५ ॥

6

एत्तहि गिरिवरि बाहुबलीसें अइदूराउ पणावियसीसें ।
णिट्ठाणिट्ठउ णट्ठाणट्ठउ दिट्ठउ भट्टदुट्ठकम्मट्ठउ ।
अइदट्ठोट्ठरुट्ठपाविट्ठहिं हेट्ठाकोट्ठगयहिं दप्पिट्ठहिं ।
जो णउ दीसइ कुंठियवायहिं [2] मंसासिहिं मज्जवहिं सवायहिं ।
वयणुग्गयगहीरजयकारें सो जिणु संथुउ तेण कुमारें ।
रोसु तुज्झु रोसेण व णिग्गउ राउ ण याणहुं कंझहि लग्गउ ।
पइं मेल्लिवि दोसु [3] वि दोसायरि थियउ कलंकमिसेण व ससहरि ।
तुह झाणग्गिभएण व णट्ठउ मोहु मोहणोसेहिहिं पइट्ठउ ।
पइं तासिउ वड्ढारियसंगउ लोहु वि सव्वलोहभावं गउ ।
कंदप्पहु वि दप्पु पइं साडिउ कालहु उप्परि कालु भमाडिउ ।
तुहुं णिग्गंथु अणीहियगंथउ तवणि [6] यमं थउ दावियपंथउ ।
विज्जा णावइं पइं जम्मंबुहि उल्लंघिउ तुहुं रवि हरि हरु विहि ।
एम देउ गरु भत्तिइ वंदिवि मिच्छादुक्किउ गैरहवि णिंदिवि ।
णावइ भवतरुमूलुप्पाडणु करिवि ससिरवरि चिहुरुप्पाडणु ।

४ MBP मंडइं.

6. १ MBP पणामिय°. २ G कुट्ठिय°. ३ P दोसु दोसार्थार. ४ MP मोहणोसहहिं. ५ MB सव्वु लोह°. ६ MBT °मत्थउ; T records a *p* तेम णिमत्थउ इति पाठे ज्ञानावरणविनाशकः. ७ MB गरहेवि; P गिरिहिं वि. ८ MBP ससिरि वरचिहुरु°.

---

9 अहिमाणिउ अभिमानवान्. 10 मडुइ बलात्कारेण.

6. 2 *a* णिट्ठाणिट्ठउ परमानुष्ठाने स्थित., णट्ठाणट्ठउ नष्टानर्थः. 3 *b* हेट्ठाकोट्ठ° अधोमुखम्. 4 *a* कुंठियनायहिं प्रमाणबाधितवचनैः, *b* मज्जवहिं मद्यपैः, सवायहिं श्वपाकैश्चाण्डालैः. 9 *b* लोहे त्यादि- लोभोऽपि सर्वलोहानि सुवर्णादीनि तन्मयत्वं गतः 11 *b* तवणियमं थउ तपसि नियमे च स्थितः. 14 *b* ससिरवरि समस्तके.

घत्ता—सर पंच वि घल्लिय वम्महेण धणु रइ विण्णि वि मुक्कइं ॥
पडिवण्णइं पंच महव्वयइं पयजुयपाडियसक्कइं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणहउ सयणासणु मुक्कउं छत्तु असेसु विहूसणु ।
विसहइ दंसमसयसीउण्हइं छुहजणदुव्वयणाइं सयण्हइं[1] ।
चरिय णिसेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि वहबंधणु गयजण वणवसइ वि ।
सीहु सरहु तणु लग्ग ण वारइ मुणि जच्चिण्णहि[2] चित्तु ण पेरइ ।
जल्लमलेहिं मि लित्तउ अच्छइ वउसक्कारु किं पि ण समिच्छइ ।
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ विविहातंक रोय अवगण्णइ ।
लोयकएहिं ण मुज्झइ दोहिं मि सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।
अहंसण[3] अलाहु रिसिसारउ पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।
वयसमिदिंदियरुंभणु लोउ वि अचेलकावासयजोउ[4] वि ।
ण्हाणविवज्जणु महिसंसोवणु दंताधोवणु[5] कयठिदिभोयणु ।

घत्ता—वणि णिवसइ दुक्खसयइं सहइ ण चवइ थोवउ जेवइ ॥
परमिट्ठि करइ णिद्द वि जिणइ मणु वेरग्गें भावइ ॥ ७ ॥

8

एम चरंतु चरित्तु सुदुद्धरु[1] महि विहरंतु पइट्ठु वणंतरु ।
तहिं थिउ एक्कु वरिसु लंबियकरु वेल्लीवलयहिं वेढिउ[2] णं तरु ।
जासु अंगि पयघट्टियसिंगहं कंडुविणोउ करइ सारंगहं ।
जासु वच्छि फणिमणि पविराइउ बहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7. १ MBP सतण्हइं; T सयण्हइ. २ B जच्चिहे. ३ MBP अदंसणु. ४ M अचेलक आवासयजोइ वि; B अचेलक पवासयजोउ वि. ५ MP दताधोयणु; B दंताभोयणु.
8. १ BP सुदुद्धरु. २ MBP णं वेढिउ.

---

7. 1 *a* उवाणहाउ उपानहौ. 2 *b* सयण्हइं सतृष्णानि. 4 जच्चिण्णहि याच्ञायाम्. 5 *b* वउसक्कारु शरीरसंस्कारः. 8 *b* पण्ण° प्रज्ञा. 9 *a* लोउ केशलोचः; *b* °आवासय° आवश्यकानि. 10 *a* °संसोवणु संस्वपनं शयनम्.

8. 4 *b* हाराइउ हार इवाचरितम्.

जासु गत्तु कयमयजलण्हवणउं आयउ करिहिं करडकंडुयणउं ।
चरणंगुट्ठयणक्खि णिहिज्जइ सरहलु वणयरणरहिं णिसिज्जइ ।
देहि चडंति जासु सुरघरिणिहिं उल्लूरिय लय णहयरतरुणिहिं ।
तणुकंतीइ जासु हयछाया हंस वि हरियवण्ण संजाया ।
जासु रत्तकंदासिइ वट्टइ पण्हिय सूयरु घोणइ घट्टइ ।

घत्ता—आसण्णइं जासु मुणीसरहो तवपहावउवसंतइं ॥
करि केसरि णउलइं फणिउलइं सह हिंडंति रमंतइं ॥ ८ ॥

9

एक्कहिं दियहि पउत्तु सपत्तिइ तासु भरहु गउ वंदणहत्तिइ ।
थुणइ णराहिउ पयपडियल्लउ पइं मुएवि जगि को वि ण भल्लउ ।
पइं कामें अकामु पारद्धउ पइं राएं अराउ कउ णिद्धउ ।
पइं बालें अबालगइ जोइय पइं अपरेण वि परि मइ ढोइय ।
पइं णियभुयबलेण हउं जोक्खिउ पइं जि पुणु वि कारुण्णें रक्खिउ ।
पइं महु दिण्णी पुहइ सहत्थें तुहुं परमेसरु जगि परमत्थें ।
परउवयारि धीर दमवंता मंहि मुएवि णियमेणुवसंता ।
पइं जेहा जगगुरुणा जेहा एक्कु दोण्णि जइ तिहुयणि तेहा ।
अत्थि रसणफंसणरसलालस अम्हारिस घरि घरि जि कुमाणुस ।
रोसवंत हियपर विस्संभर पावबहुल परवस अप्पंभर ।

घत्ता—हा मइं बहुकम्मपरव्वसेण विसयबलाइं ण महियइं ॥
एक्कहो णियजीवहु कारणिण जीवसयाइं वि वहियइं ॥ ९ ॥

३ MBPK कंदाराइ. ४ MB घोणें. P घोणिहि. ५ B घुट्टइ

9. १ BP °भत्तिइ. २ B सरे मइ. ३ M समत्थें, but records a p सहत्थें. ४ MB परमेसर. ५ MBP °उवयार°.

6 *b* सरहलु शरफलम्, णिसिज्जइ तीक्ष्णीक्रियते. 9 *a* रत्तकंदासिहि रक्तकन्दाशया; *b* पण्हिय पार्ष्णिः; घोणइ मुखाग्रेण.

9. 1 *a* सपत्तिइ स्वपदातिना. 2 *a* °पडियल्लउ पतितः. 3 *a* अकामु वैराग्यम्; *b* अराउ वीतरागता, णिद्धउ स्नेहल· पुष्टो वा. 4 *a* अबालगइ विद्वद्गतिर्मोक्षगतिः; *b* परि अर्हत्सिद्धस्वरूपे परमात्मनि. 11 महियइ मथितानि.

10

इंदचंदवंदारयवंदें तहिं अवसरि बाहुबलिमुणिंदें ।
एक्कहु जीवहु गुण मणि भाविय रॅय रोस दोण्णि वि उड्डाविय ।
तिण्णि वि सल्लइं हियउद्धरियइं तिण्णि वि रयणइं लहु संभवियइं ।
तिण्णि वि डंभ मुक्क संखेवें गारव तिण्णि विवज्जिय देवें ।
चउगइकम्मणिबंधणरसियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ ।
पंचमहव्वयाइं अविहंडइ पंचासवदारइं णिच्छंडइ ।
पंचिंदियइं कयाइं णिरत्थइं पंच वि णाणावरणइं गंथइं ।
छावासयउज्जमु सविसेसिउ छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ ।
छह लेसहं परिणामु वइट्ठइं छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं ।
सत्त भयाइं हयाइं गहीरें सत्त वि तच्चइं णायइं धीरें ।
अट्ठ वि मय णिट्ठविय अदुट्ठें अट्ठ सिद्धगुण भरिय वरिट्ठें ।
णवविहु बंभचेरु परिपालिउ णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ ।

घत्ता—दसविहु जिणधम्मु वियाणियउ एयारह हयजडिमउ ॥
अवियारहं धीरहं सावयहं बारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं तेरहभेय चरित्तइं गणियइं ।
चोद्दह गंथमला वि समुज्झिय चोद्दह भूयगाम सइं बुज्झिय ।
पण्णारह पमाय मेल्लंतें पुण्णपावभूमिउ जाणंतें ।
सोलहविह कसाय पसमंतें सोलहविहवयणेसु रमंतें ।

10. १ BP राय दोस. २ MBP समरियइ; K संभावियइं but corrects it to संभरियइं. ३ MBP वेय. ४ P रसियउ. ५ BP णिच्छंडइ. ६ B छावासउ. ७ PK सुविसेसिउ. ८ B उवट्ठइ. ९ MBP परिणामु. १० MB दहविहु. ११ MP वियारियउ. १२ M अवि बारह, but records a *p* अवियारहं.

11. १ B चउदह. २ MBP °वयणें सुमरंतें.

10. 1 *a* °वंदें वन्द्येन. 7 *b* गंथइं परिग्रहरूपाणि. 9 *a* वइट्ठइं उपदिष्टानि सर्वज्ञेन.

11. 4 *a* सोलहविह कसाय कषाया: क्रोधमानमायालोभा: प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पा: सन्त: षोडशविधा भवन्ति.

अवि य असंजमोह सत्तारह जाणिवि संपराय अट्ठारह ।
एउणवीस वि णाहज्झयणइं वीसविहइं असमाहीठाणइं ।
एक्कवीस सवल वि णिरु णीसहं सहिवि दुवीस दुसज्झ परीसह ।
तेवीस वि सुत्तयडइं सुत्तइं चउवीस वि जिणतित्थइं होंतइं ।
पंचवीस भावणउ धरंतें छव्वीस वि पुहवीउ णियंतें ।
सत्तवीस जइगुण सुमरंतें ।
अट्ठवीस णियचित्ति समप्पिवि पवँरायारकप्प पवियप्पिवि ।
एउणतीस वि दुक्कियसुत्तइं तीस मोहठाणइं बलवंतइं ।
एक्कतीस मलवाय धुणंतें जिणुवँएस बत्तीस मुणंतें ।

घत्ता—थिरु सुक्कझाणु आऊरियउ घाइचउक्कु पणट्ठउ ॥
उप्पाइउ केवलु मुणिवरेण लोयालोउ वि दिट्ठउ ॥ ११ ॥

12

ता सुर चलिय समउ सुरिंदें तारायणु चलिउ सहुं चंदें ।
णरवइ धाइय समउ णरिंदें उरय समागय सहुं धरणिंदें ।
तेहिं कसायविसायवियारउ संथुउ सिरिबाहुबलि भडारउ ।
रायचक्कु पइं तणु परिगणियउं कम्मचक्कु झाणाणलि हुणियउं ।
देवचक्कु तुह अग्गइ धावइ चक्कु वि चक्किहि रमणु ण भावइ ।
पइं दिट्ठइं रिसि[3] राउ ण वड्डइ पइं मुएवि को णरयहु कड्डइ ।
जीवरासि णिब्भरु विहडंती विहुरंभोहिविवरि णिवडंती ।
भोयासत्तएण पुहईसरु दिक्ख लेवि णिज्जिउ वम्मीसरु ।

३ P दुसज्झ दुवीस. ४ MBP संतइं. ५ P सुअरंतें. ६ MBP add after this: पुणु वि तेण मुणिणा भयवंतें. ७ P एम ण यारकप्प. ८ MBP जिणउवएस. ९ P लोयालोय.

12. १ MBP read the first two lines as: ता सुर चलिय समउ सुरिंदें, उरय समागय सहुं धरणिंदें; णरवइ धाइय समउं णरिंदें, तारायणु चालिउ सहुं चंदें. २ MB वयणु; P रयणु; T रमणु रमणीयम्. ३ MBP सिरिराउ. ४ MBP णिरु भवि हिंडंती. ५ MBK विवडंती. ६ P सुहईसरु. ७ BPK णिज्जिउ.

6 *a* एउणवीस वि णाहज्झयणइं उक्कोड–णागे–कुम्म–अंडय–रोहिणि–सेस–रुब–संघादे । मादंगिमल्लि–चंदिमा–तावद्दव–तिकी–तडौया–किञ्चे । सुंसुकेय–अवरकंके—णंदिफलं–उदगणाह–(मंडूक)–पुंडरिगोयाणि इत्येकोनविंशतिर्नाहज्झयणाइं.

12. 5 *b* रमणु रमणीयम्.

को फिर भणइ तुज्झ समाणउ　　तुहुं जि मुंडकेवलिहिं पहाणउ ।
एम थुणंतें बुद्धिसमिद्धें　　इंदें वेउव्वियउ खणद्धें ।

घत्ता— पेउमासणु धवलु चमरजुयलु एक्कु जि छत्तु मणोहरु ॥
दीसइ पप्फुल्लिउ पंडुरउ णं तवसरि इंदीवरु ॥ १२ ॥

13

पयणियजणणमरणविड्डमरइं　　संसमंतु भाउग्गयतिमिरइं ।
देंतु देसजइजइवरचरियइं　　संबोहंतु भव्वपुंडरियइं ।
पायपोमपाडियसंकंदणु　　भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु ।
गउ केलासहु पावपरंमुहु　　समवसरणि णियतायहु संमुहु ।
आसीणउ पसण्णु पसमियकलि　　देउ समाहि बोहि महु भुयबलि ।
आयरणाणेलंभसंतुट्ठउ　　पत्तहि णरणारीयणदिट्ठउ ।
उज्झाणयरिहि भरहु पइट्ठउ　　उरपमाणि हरिवीढि बइट्ठउ ।
वज्जंतहिं जयवज्जणिहायहिं　　गाइयणारयतुंबुरुगेयहिं ।
दरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं　　उव्वसिरंभाणट्टविणोयहिं ।
मंडलियहिं मंडियणियवक्खहिं　　अहिसिंचिउ मंगलघडलक्खहिं ।

घत्ता—चउसट्ठि सरीरइ लक्खणइं बहुवंजणइं अणिंदहो ॥
जं णिहिलहं भारहणरवइहिं तं बलु भरहणरिंदहो ॥ १३ ॥

14

वण्णु तत्ततवणीयपहायरु　　सासणु जासु चक्कलच्छीहरु ।
वज्जरिसहणारायणिबंधउ　　समचउरंसु ठाणु रुइरिद्धउ ।

८ K भण्णउं and gloss भणामि. ९ MBP हरियासणु धवलु.
13. १ MBPT सक्कंदणु. २ MBP णाणलंभि. ३ MBP °णारीयणि. ४ MBP खंडियसविवक्खहिं. ५ M बहुवेंजणइं; BP बहुविंजणइं. ६ M °णरवरहिं.
14. १ MBP चक्कु. २ MBP °णिबद्धउ.

13. 1 *a* विड्डुम° भयम्; *b* संसमंतु उपशमयन्. 3 *a* संकंदणु इन्द्रः. 8 *a* णिहायहिं समूहैः. 9 *a* °विहोयहिं विभोगैः. 11 लक्खणइं शंखकुलिशादीनि.
14. 1 *b* चक्कलच्छीहरु चक्रशोभाधरम्.

पुण्णपहावें अतुलु वि लद्धउ छक्खंडु वि महिमंडलु सिद्धउ ।
दोण्णि तीस सहसाइं सुदेसहं दोसत्तरि पुरवरहं पयासहं ।
णवइ णव जि दोणामुहसहसइं पट्टणाहं अडदाल सहरिसइं ।
खेडहं सोलह ताइ पउत्तइं चोद्दह संवाहणहं णिरुत्तइं ।
कलवकणिसभरभारियसीमहुं छण्णवइ जि कोडिउ वरगामहुं ।
सत्तसयाइं कुकुच्छिणिवासहं पंच तहं मि धरियपरिहासहं ।
अट्ठवीस वणदुग्गइं रिद्धइं छप्पण्णंतरदीवइं सिद्धइं ।
सहसट्ठारह मेच्छणरेसहं बत्तीस जि मंडलियमहीसहं ।

घत्ता—देवीहिं दुतीस बत्तीस पुणु मेच्छणराहिवदिण्णहं ॥
बत्तीससहस अंवरुद्धियहं णिरु णिरुवमलायण्णहं ॥ १४ ॥

15

घरि भावाणुविभावपयासइं णडहं णडंति दुतीससहासइं ।
चउरासीलक्खेइं मायंगहं तेत्तीयं जि रहाहं सरहंगहं ।
तइंकोडिउ किंकरहं अहंगहं अट्ठारह भणियाउ तुरंगहं ।
चुल्लिहिं कोडि रसायणरसियहं सट्ठइं तिण्णि सयइं भाणसियहं ।
करिसणि णंगरकोडि पयट्टइ फलभारेण धरित्ति विसट्टइ ।
कालणामु णिहि देइ विचित्तइं वीणावेणुपडहवाइत्तइं ।
णिवहु महाकालु वि संजोयइ पंडु देइ णाणाविहवण्णइं ।
सालिवीहिपमुहइं बहुधण्णइं असिमसिकिसिउवयरणइं ढोयइ ।
णेसप्पु वि सयणासणभवणइं वत्थइं पोमु पिंगु आहरणइं ।

३ MBP छक्खड. ४ MP पट्टणाइं *b* ५ MBP संवाहणइं. ६ MBP पचंतहं. ७ M मेंछ°. ८ P °सहासहं. ९ M मेंछ°. १० MBP °कण्णह. ११ MP अवरुद्धियहं.

15. १ M णडंतिउ, B णडंतिहु. २ MBP लक्खइं. ३ MBP तेत्तियइं. ४ MBP सारंगहं. ५ M तईयकोडिउ ६ B सट्ठइ. ७ MBP लगल°. ८ M धरत्ति°. ९ MBP omit this foot. १० MBP omit this foot. ११ MBP add after this. सव्वइं धण्णइं सव्वरमोहइं, पंडु वि णिहि वि देइ अविरोहइं.

8 *a* कुकुच्छिणिवासहं रत्नोत्पत्तिस्थानानाम्.

15. 4 *b* भाणसियह रसवतीकारपुरुषाणाम्. 5 *b* विसट्टइ स्फुटति. 9 *a* णेसप्पु नैसर्पो निधिः.

अत्थइं सत्थइं मा[12]णवु देंतउ　　संखु ण थाइ सुवण्णु वहंतउ ।
सव्वरयणणिहि सव्वइं रयणइं　　देइ सिरीवहु उरयलि णयणइं ।

घत्ता—असि चक्कु दंडु छत्तु वि धवलु पहरणसालहि जायइं ॥
कागणि मणि चम्मु वि सिरिभ[13]वणे सइं णरणाहहु आयइं ॥ १५ ॥

16

रुप्पयमहिहरि सोहियवयणहं　　संभउ हरिकरिणारीरयणहं ।
पच्छइ पुणु संपत्तइं णरवइ　　घ[1]रवइ थवइ पुरोहिउ बलवइ ।
चत्तारि वि हूयइं साकेयइ　　घरसिरधयवारियरवितेयइ ।
णव णिहि ते वि तहिं जि संभूया　　संपाइयइच्छियहलरूया ।
णिच्चमेव तणुरक्खालुद्धहं　　सोलहसहस सुरहं गणबद्धहं ।
विविहं[2]घरइं कणयधरणियलइं　　विविहासणइं विविहसयणयलइं ।
विविहइं छत्तइं मु[3]त्तादामइं　　विविहइं आहरणाइं सका[4]मइं ।
विविहइं वत्थइं कयव[5]उसोक्खइं　　विविहइं सरसइं भोयणभक्खइं ।
को सो[6] वंभु कासु सुकइत्तणु　　को वण्णइ चक्कवइपहुत्तणु ।
णारी रयण[7]त्तणविक्खायइ　　खेयररायवंससंजायइ ।
रूवें सोहग्गें लायण्णें　　णेहें रइयसुरयणेउण्णें ।
अब्भुयभूयइ जणमणमद्दइ　　सुहुं भुंजंतउ समउ सु[8]हद्दइ ।

घत्ता—सिरि[9]रमणीवरघणथणजुय[10]लसिहरुप्पेल्लियउरयलु ॥
थिउ उज्झहि भरहणराहिवइ पुप्फ[11]दंततेउज्जलु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहविलासवण्णणं णाम
अट्ठारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १८ ॥

॥ संधि ॥ १८ ॥

१२ MBP माणउ. १३ M °भुवणे.

16. १ MB घर घर. २ MBP विविहइं घरइं. ३ P मोत्तिय°. ४ MP संकामइ. ५ MB कय-उवसोक्खइं. ६ M सइ. ७ MBP रयणत्तणि. ८ M समुद्दइ. ९ MB °रवणी°. १० M °जुयलु. ११ MB पुप्फयंत°; P पुप्फयंतु.

13 सिरिभवणे भाण्डागारे.

16. 2 *b* घरवइ भाण्डागारिकः, थवइ स्थपतिः. 7 *b* सकामइं समीप्सितानि चित्तानुरागजनकानि वा. 8 *a* कयवउसोक्खइं कृतवपु-सौख्यानि.

XIX

चिंतइ भरहेसरु महिपरमेसरु दविणें किं किर किज्जइ ॥
जइ णियमियचित्तहं पउं सुपत्तहं दियहि दियहि णउ दिज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

एक्कहिं दिणि पयणावियणिवइ वसुहाहिवु णियमणि चिंतवइ ।
किं छज्जइ विणु चंदें गयणु किं छज्जइ छिण्णणासु वयणु ।
किं छज्जइ णाणु णिरुवसमउं किं छज्जइ रज्जु अविक्कमउं ।
किं छज्जइ तणयविरहिउ कुलु किं छज्जइ पिक्कउं कडुयफलु ।
किं छज्जइ भीरुहि गज्जियउं किं छज्जइ अडयणलज्जियउं ।
किं छज्जइ मयडहु भूसणउं किं छज्जइ अविणियरूसणउं ।
किं छज्जइ हिमहयकमलवणु किं छज्जइ सलिलविरहिउ घणु ।
किं छज्जइ परवसजीवें जणु किं छज्जइ तिट्ठालुयदाविणु ।

घत्ता—जं दिण्णु ण पत्तहु गुणगणवंतहु पहउं बुहयणु पेच्छइ ॥
मणयहु मलबंधणु तं ... अट्ठारह भाणय... गच्छइ ॥ १ ॥
चुल्लिहिं कोड्डि रसायणरसियहं. सावउं धणु मुंयहो पउ वि ण...

2

णउ ण्हाणु विलेवणु परिहणउं तूयाविंदु ण माणिउ घणथणउं ।
जवणोलतंवसित्थइं खरइं ताइं वि सीसक्कभारधरइं ।
एसीरसु दोण्णि कुलत्थकणं अच्छउ कंजिउ धाडिवि सयण ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

श्यामरुचि नयनसुभग लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।
भरतच्छलेन सप्रति काम· कामाकृतिमुपेतः ॥ १ ॥

1. १ MBP °णामिय°. २ MBP वसुहाहिउ. ३ M किं ण तासु. ४ MBP णिविक्कमउं. ५ MBP तणएं रहिउ. ६ MBP कडुयउ पिक्कफलु. ७ MBP विप्पियरूसणउं. ८ MBP सलिलें रहिउ. ९ MBPK °जीवि. १० B सचियधणु. ११ P मुयहहु पउ वि ण गच्छइ.

2. १ MBP तियविंदु. २ MB जवणालवंन. ३ M एरसीरसु. ४ MBP °कणु. ५ MBP सयणु.

1. 7 *b* अडयण° पुंश्चली. 12 पउ वि पदमात्रमपि.

2. 1 *b* तूयविंदु स्त्रीवृन्दम्. 2 *b* सीसक्क° कृकसं तुषम्. 3 *a* एसीरसु अलसीतैलम्.

असरालु लोहधणु धरिवि मणे जेवंति दीर्णं गरुए वि छणे।
रिणु मग्गमाण हिंडंति पुरे जणरंजणु पत्तु करेवि करे।
णिव्वरँयरु पूयफलु खंति किह पँक्केण जि रवि अँत्थवइ जिह।
पंचिंदियँत्थु सुहुं खंचियउं लुद्धहिं अप्पाणउ वंचियउ।
जरचीरणियासण फरुससिर दालिद्दिय सधण वि किविण णर।
ण वियाणइ ढुक्कंती णियइ णियहत्थहु हत्थु ण पत्तियइ।
बंधइ मेल्लइ पुणु पुणु मवइ वसु गुज्झँपवेसहिं पुणु ठवइ।
सा सेंट्ठि ण पूरइ किह भरमि मणि जूरइ काइं दइव करमि।
लोहिट्ठु दुट्ठु पाविट्ठु चलु पाहुणयहु उत्तरु देइ खलु।

घत्ता—गेहिणि गय गामहो इच्छियकामहो मँणु णं भल्लिइ भिज्जइ ॥
मज्झ वि दुक्खइ सिरु तुहुं आयउ घरु भणु एवहिं किं किज्जइ ॥ २ ॥

3

किं किज्जइ थेरें कामुएण किं सत्थें पावपुरिससुएण।
कुलेपुत्तएण किं णित्तवेण समएण वि किं किर णित्तवेण।
अवि विज्जाहरवरकिंणरेण णिव्विणएं समएं किं णरेण।
धरणियलरंधपँडिपूरएण किं लुद्धदविणपब्भारएण।
सा रीई जा ससिविप्फुरिय सा कंता जा हियवइ भँरिय।
सा विज्जा जा सर्यरु वि णियइ तं रज्जु जम्मि बुहयणु जियइ।
ते बुह जे बुँहहं ण मच्छरिय ते मित्त र्ण जे विहुरंतरिय।

६ P हीण. ७ M णिब्भरु पूयप्फलु; BP णिव्वरु पूयप्फलु. ८ MP एक्केण वि; B पक्केण वि. ९ MBP अत्थमइ. १० MBP 'दियत्थ° ११ MB गुज्झपएसहिं परिठवइ; P गुज्झपएहिं परिट्ठवइ. १२ M सिट्ठु. १३ MBP महु मणु भल्लिइ.

3. १ MBP पावपसंसिएण. २ MBPK कुलउत्तएण. ३ MBP °परिपूरएण. ४ B रयणी. ५ B हरिय. ६ MBP सयरु. ७ M वहहिं ण मउच्छरिय; BP बुहहिं ण मच्छरिय. ८ P जे वि.

4 *a* असरालु बहुलम्; *b* छणे पर्वणि महोत्सवे दीपोत्सवे वा. 6 *a* णिव्वरयरु निर्व्ययतरं जीर्णमित्यर्थः. 8 *a* °णियासण अधोवस्त्रम्. 10 *b* गुज्झपवेसहिं गुह्यप्रदेशप्रवेशैः. 11 *a* सट्ठि ण पूरइ षष्टिर्न पूर्यते.

3. 1 *b* सत्थें शास्त्रेण; °सुएण श्रुतेन. 2 *a* णित्तवेण निस्त्रपेण निर्लज्जेन व्रतरहितेन वा; *b* समएण सम्यक्त्वेन; णित्तवेण तपोरहितेन. 3 *b* समएं समदेन. 5 *a* राई रात्रिः. 6 *a* सयरु वि णियइ सकलमपि पश्यति. 7 *b* विहुरंतरिय दुःखे अन्तरिताः.

तं धणु जं भुत्तउं दिणि जि दिणि जं पुणरवि दिण्णउं विहलयणि ।
घत्ता—सा सिरि जा गुणणय गुण ते जे गय गुंणिहिं चित्तु हयदुरियउ ॥
गुंणि ते हउं मण्णमि पुणु पुणु वण्णमि जेहिं दीणु उद्धरियउ ॥ ३ ॥

4

इय चिंतिवि राएं दविणगइ हक्काराविय णाणा णिवइ ।
ते आइय संचियधम्मधण जे जोयकिरणगणसुद्धमण ।
तंगुणपरिक्खसुपयासिरयं सज्जीयवीयणित्तंकुरयं ।
तरुपल्लवपिहियं पंगणयं णं वणसिरिदिण्णालिंगणयं ।
चप्पंति ण ते विरया गिहिणो परिपालियसावयवयविहिणो ।
कय जेहिं तसंतहुं तसहुं दय परंताविरि अलियवायविरयं ।
णादिण्णउं कहिं वि समिच्छियउं णउ अण्णु कलत्तु णियच्छियउं ।
घरसंगपमाणु जेहिं गहिउ रयणीभोयणविरईसहिउ ।
दिसिविदिसागमणमाणकरणु भोगोवभोयसंखाधरणु ।
विरमणु अणत्थदंडासियउं भावियउं जेहिं जिणभासियउं ।
घत्ता—सामाइउं पोसहु अतिहिपरिग्गहु कामकोहपरिहरणें ॥
किउ जेहिं पसत्थहिं पवरघरत्थहिं सहुं सण्णासणमरणें ॥ ४ ॥

5

ते भरहें विप्प परिट्ठविय कर मउलिवि सइं सिरेण णविय ।
उववीयहु केरउ चिंधधरु दंसणहरि घल्लिउ एक्कु सरु ।

९ MBP गुणहिं १० M हउ गुण ते मण्णमि, B गुण हउं ते मण्णामि. P गुणि हउ ते मण्णामि.

4. १ MB ते गुण°. २ MBP परताविर°; K °ताविरि but corrects it to ताविर. ३ MP add after this: परधणु परवत्थु दुगुंछियउ. ४ MBP add after this: दिण्णउ णियजोग्गु (P °जोगु) पडिच्छियउ, कुलवतु विवाहिउ वछियउ. ५ B °गमणकरणु. ६ MBP °भोग°. ७ MBP समत्थहिं.

8 *b* विहल° दुःखितः. 9 गुणणय गुणेण नता.

4. 2 *b* °जोय° चन्द्र. 3 *b* °णित्तकुरय निर्गताङ्कुरम्. 6 *a* तसंतहुं त्रस्तानाम्; तसहुं त्रसजीवानाम्.

5. 2 *a* उववीयहु कार्पाससूत्रस्य, यज्ञोपवीतस्येत्यर्थः.

वयवंति णिरूविय दोण्णि सर सामाइयट्ठि पुणु तिण्णि सर ।
पोसहवंतइ चत्तारि सर सच्चित्तविरत्तइ पंच सर ।
अणिसाभोयणि उंडुमाण सर दढबंभचेरेधरि सत्त सर ।
आरंभविवज्जिइ अट्ठ सर अपरिग्गहि कय णवसुत्त सर ।
अणुमोयणमुक्कइ दह जि सर एयारह सर हयमयणसर ।
उद्दिट्ठचायकारिहि विहिय ए दियवर राएं सुहुं णिहियँ ।
तंवु बंभ जेण घोसंति जए बंभणकुलु संठिउ तेण वए ।

घत्ता—चिरु सव्वु जि माणुसु पुणु णीईवसु रिसहें खत्तु पवत्तिउ ॥
जिणपुज्जायारउ धम्मपियारउ भरहेण वि कउ सोत्तिउ ॥ ५ ॥

6

धणि वाणिज्जारउ जाणियउं किसियरु हलधारउ भाणियउ ।
सो सोत्तिउ जो जिणवरु महइ सो सोत्तिउ जो सुतच्चु कहइ ।
सो सोत्तिउ जो ण दुट्ठु भणइ सो सोत्तिउ जो णउ पसु हणइ ।
सो सोत्तिउ जो हियएण सुइ सो सोत्तिउ जो परमत्थरुइ ।
सो सोत्तिउ जो णे मासु गसइ सो सोत्तिउ जो ण सुयणि भसइ ।
सो सोत्तिउ जो जणु पहि थवइ सो सोत्तिउ जो सुतवें तवइ ।
सो सोत्तिउ जो संतहुं णवइ सो सोत्तिउ जो ण मिच्छु चवइ ।
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ सो सोत्तिउ जो वारइ कुगइ ।
सो सोत्तिउ जो जिणदेसियउ पण्णासतिकिरियहिं भूसियउ ।

5. १ MB उदुमाण. २ P °चेरु धरि. ३ MBP संणिहिय. ४ MBP तउ बभु. ५ MBP पवत्तियउ. ६ MBPK धम्मवियारउ.

6. १ M सुतच्च. २ P पसु णउ. ३ MBP हियवयणु सुणइ. ४ M परमत्थ मुणइ, P परमत्थु मुणइ. ५ B मासु ण.

9 *a* तवु बंभ तपो द्वादशविधं व्रतानुष्ठानं वा ब्रह्म परमात्मस्वरूपम्; घोसंति प्रतिपादयन्ति; *b* वए व्रते पदे वा.

6. 9 *b* पण्णासतिकिरियहिं त्रिपञ्चाशता क्रियाभिः, ताश्च सम्यक्त्वमेकम्; अणुव्रतानि पञ्च; गुणव्रतानि त्रीणि; शिक्षाव्रतानि चत्वारि; अनस्तमित–सयम–जिनपूजा–ध्यानानि चत्वारि; चत्वारि दानानि; षड्विधं बाह्यं तपः; षड्विध प्रायश्चित्तम्; चतुर्विधो विनयः; नवविधं वैयावृत्यम्; पञ्चविधः स्वाध्यायः; द्विविधो व्युत्सर्गः; इति त्रिपञ्चाशत् क्रियाः.

घत्ता—जो तिलकप्पासइं दव्वविसेसइं[६] हुणिवि देव गह पीणइ ॥
पसु जीव ण मारइ मारय वारइ परु अप्पु वि समु जाणइ ॥ ६ ॥

7

सो सोत्तिउ जाणसु एक्कु जिह लक्खाइं दिएसहं तेण तिह ।
वण्णासमकोडिचडावियइं गुणगणणाभेयं भावियइं ।
दिण्णाइं ताहं सुद्धासयइं भूसेप्पिणु वरकण्णासयइं ।
दिण्णाइं ताहं परतीरयइं सियसुहुमइं सिचयइं णीरयइं[१] ।
दिण्णाइं ताहं मणिराइयइं कडिसुत्तकडयमउडाइयइं ।
दिण्णाइं ताहं मणमोहणइं घडपूरणदुद्धइं गोहणइं ।
दिण्णाइं ताहं देसंतरइं हयगयरहछत्तइं पंडुरइं ।
दिण्णाइं ताहं जियससहरइं धणकणभरियइं विविहइं घरइं ।
दिण्णाइं ताहं करभरधरइं सासणलिहियग्गहारपुरइं ।
आरामगामसीमइं सरइं दिण्णाइं ताहं णयरायरइं ।

घत्ता—महि कसणरवण्णी धवलि[२] वि दिण्णी विप्पहं जिणतणुजाएं ॥
तिह जिह णउ खिज्जइ अज्जि[३] वि दिज्जइ णिहिलें णिवइणिहाएं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं दिणि सुत्तें[१] सयणहरे णरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।
दिट्ठी[२] दुक्किय सिविणावलिय आगामिदोसजुत्ति व मिलिय ।
सुपहायकालि गउं[३] सज्जियउ केलासु गंपि जिणु पुज्जियउ ।
संथुउ परमेसरु परमपरु जिण तुहुं चिंतामणि अमरतरु ।
तुहुं सरसु[४] रसायणु अमयमउ तुहुं मयरकेउ रणि[५] लद्धजउ ।

६ MBP दब्भविसेसइ.

7. १ B णीरियइ. २ MBPK धवल वि. ३ MBP अज्ज.

8. १ MBP सुत्तइ. २ MBP दिट्ठिय. ३ MP गमु. ४ MBP सुरसु. ५ MB रण°.

---

11 मारय मारकान्.

7. 1 *b* दिएसहं द्विजेशानाम्. 2 *a* °कोडि° परमप्रकर्षम्. 5 *a* मणिराइयइं रत्नजडितानि. 10 *b* °आयर° आकराः. 11 कसणरवण्णी कर्षणेन रमणीया, कृष्णा रमणीया च. 12 °णिहाएं °समूहेन.

तुहुं कामधेणु अक्खीणणिहि　　तुहुं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।
तुहुं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि　　तुह णामें णउ भक्खइ अहि वि ।
तुह णामें णासइ मत्तकरि　　कउं देंतु वि थक्कइ णरहु हरि ।
तुह णामें हुयवहु णउ डहइ　　परबलु गयपहरणु भउ वहइ ।
तुह णामें संतोसियखलउ　　तुट्टेवि जंति पयसंखलउ ।
तुह णामें सायरि तरइ णरु　　ओसरइ कोहकंदप्पजरु ।
तुह णामें केवलकिरणरवि　　णीरोय होंति रोयाउर वि ।

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुवणभवणुक्किट्ठइ ॥
पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइं दिट्ठइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुंच्छइ भरहवइ　　मइं दियवर णिम्मिय परमजइ ।
होहिंति अहिंसपवित्तियर　　कालेण किं णं भणु तित्थयर ।
किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि　　णिसि दिट्ठहिं मइं सिविणावलिहिं ।
फलु काइं भडारा वज्जरहि　　संदेहु महारउ अवहरहि ।
परमेसर णाहिणरिंदसुउ　　पुण्णेण केण तुहुं अरुहु हुउ ।
पुण्णेण केण हउं चक्कवइ　　जायउ भारहभूयलविजइ ।
कंपावियसिहरिणियंबथलि　　पुण्णेण केण बाहुबलि बलि ।
उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु　　पुण्णेण केण सेयंसपहु ।
पुण्णेण केण सोमप्पहहो　　हूयउ संभवु सोमप्पहहो ।
पुण्णेण केण पालियविणय　　संभूया सयल वि तुह तणय ।

६ M कमु देंतु; B कउ देंतउ; P कमु देंतउ. ७ BP °संकलउ. ८ P सायरु. ९ MB तिहुयणु भुयणुक्किट्ठइ.

9. १ P पुंछइ. २ MB °पवात्तियर°. ३ MBP णु. ४ P अरहतु हुउ. ५ MB °भूबल°; P °भूअल°. ६ MBP केण हुउ बाहुबलि. ७ MBP सेयंसु. ८ MBP संभउ. ९ MBPK add after this मइं पइं जेहा होहिंति कइ (P पइं मइं), कइ हलहर हरि पडिसत्तु (B पत्तिसत्तु) कइ; MBP add further: तवभट्ठकामिणिहिं बद्धमइ (P तवभट्ठ य कामिणिबद्धरइ), कइ होसहिं रुद्द रउद्दमइ; कासु वि किर होसइ कवण गइ, भो मयणकारिंदमयाहिवइ; एउ (P इहु) सयलु वि अक्खहि परम जइ.

8. 10 *a* संतोसियखलइं संतोषिताः खलाः याभिः; *b* °संखलउ शृखलाः. 13 तिभुवणभवणुक्किट्ठइ त्रिभुवनोत्कृष्टे.

9. 4 *b* अवहरहि अपनय.

13

जं दिट्ठउ धवलहं तणउ गणु तं चरिही णउ एक्कु जि सवंणु ।
संघाडएण भमिहिंति जइ जाणेप्पिणु दुस्समकालगइ ।
जं पइं सिविणुल्लइ तकियउं जं दिणयरमंडलु ढंकियउं ।
जं मेहहिं जगु अंधारियउ तं केवलु पुरउ णिवारियउ ।
जो दिट्ठउ सुक्खउ ढंखतरु सो णरणारिहिं दुचरित्तभरु ।
पुत्तइं उल्लंघियपिउवयइं होहिंति कलत्तइं पररयइं ।
किउ काइं वि णउ साहिहिंति परे काणीण दीण खल घरि जि घरे ।
होहिंति मित्त कड्डियवइर पिप्पलबबूलपायव खयर ।
होहिंति विडव णिप्फल विरस होहिंति मुणि वि बद्धामरिस ।

घत्ता—जिह जिह जिणु जंपइ वयणु समप्पइ भरहि भुवणपंकयरवि ॥
तिह तिह तमु पहरइ दसविसु पसरइ कुंदपुप्फदंतच्छवि ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भरहसिविणयसंसयाउच्छणं
णाम एक्कुणवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १९ ॥
॥ संधि ॥ १९ ॥

13. १ MBP समणु. २ MBT ढंक°. ३ P दुचरित्तु. ४ MBPT वड्डिय°. ५ MB °पायर.
६ MBP विडव. ७ MB भुवणु. ८ P दसदिसि. ९ MBP भरहसंसयाउच्छणं.

13. 1 *b* चरिही चरिष्यति. 5 *a* ढंखतरु पत्रपुष्पफलरहितो वृक्षः. 8 *a* कड्डियवइर गृहीतवैराः.
11 कुंदपुप्फदंतच्छवि कुन्दपुष्पवत् शुभ्रा दन्तानां छविर्दीप्तिः.

XX

रिसहें भरहहु भासियइं चिरु पवहिं हउं गुज्झु ण रक्खमि ॥
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्ठिपुराणइं अक्खमि ॥ ध्रुवकं ॥

1

तहिं तइया देवें वुत्तु एम णिसुणहि णंदण हो मणुयदेव ।
तेल्लोक्कु देसु पुरु रज्जु तित्थु तवु दाणु गईहलु सुहपसत्थु ।
*अट्ठ वि पारंभियपुण्णठाणि साहेवा होंति महापुराणि ।
लोलंति पलोइज्जंति जेत्थु दव्वइं तें लोउ भणंति एत्थु ।
सो केण वि किउ ण कया वि धरिउ जीवाजीवहं णिक्खुब्भु भरिउ ।
चलु णिच्चलु सो ससहावघडिउ आयासणिवासु वि णेय पडिउ ।
बालिस कहंति जडयणहं हेउ देवें सिट्ठारें कियउ लोउ ।
दव्वाइं लोयउप्पायणाइं महिमारुयवेसाणरवणाइं ।
जइ णत्थि ताइं तो लहइ केत्थु णीरूवहु होइ णिरु वि वत्थु ।
किं गयणि होइ पंकयपवित्ति दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

फणिनि विमुह्यतीव मेचकरुचि कचनिचयेषु योषिता-
मलकिषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।
मदमुचि माद्यतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खड्गणे ॥

P reads खण्डगे for खड्गणे. GK do not give it.

1. १ P भासियए. २ MBP तेलोक्क. ३ MBP तवदाणगईहलु. ४ MP सहु. ५ MBP तं लोउ. ६ P तेत्थु. ७ MBP किउ केण वि ण धारिउ. ८ MB णिक्खुत्तु; P णिखुत्तु; T णिक्खुब्भा निरंतरम्. ९ K कयउ. १० MBP ण रूवि वत्थु; K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वस्तं पि न भवति.

1. 1 चिरु पूर्वम्. 3 *a* तहिं समवसरणे. 5 *a-b* त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे साधयितव्या भवन्ति. 6 *b* तें तेन कारणेन. 7 *b* णिक्खुब्भु निरन्तरम्. 8 *a* चलु णिच्चलु चलो जीवः पुद्गलापेक्षया; निश्चलो धर्माधर्माकाशकालापेक्षया. 9 *a* बालिस अज्ञाः; हेउ कर्ता; *b* सिट्ठारें विधात्रा. 10 *b* °वणाइं जलानि. 11 *b* णिरु वि अपि निश्चयेन.

धम्मत्थकाम णउ अत्थि जासु कहिं लब्भइ इच्छापसरु तासु ।
णिक्किरियहु कहिं किरियाविसेसु णिक्कलुसहु होइ ण हरिसु रोसु ।
विणु तिट्ठातंतें णउ फलंति किह करणहरणबुद्धीउ होंति ।
विणु छत्तें किं सावडइ छाहि सिवि लग्गी किं कत्तारवाहि ।

घत्ता—कुंभहु भिण्णउ कुंभयरु करउ कुंभु तं महु मणि भावइ ॥
सिउं अप्पणु जगु अप्पउं जि करिवि काइं गुणवंतहं सावइ ॥ १ ॥

2

विणु घडयारेण सरूव लेइ मिप्पिंडउ जइ सइं कलसु होइ ।
तो एक्कु कम्मु कत्तारु भणमि णं तो पुणु भेयविभिण्णु गणमि ।
जइ ईसरु भुवणयलहु णिमित्तु तो तासु कवणु तंगुणविचित्तु ।
जइ णिच्चु ण तो परिणामरिद्धि णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि ।
विरएप्पिणु भंजइ भुवणकोसु जइ एही दीसइ कील तासु ।
जइ सयल वि पसु णिक्किरिय करइ संघारसमइ ससरीरि धरइ ।
पुणु पासु ताहं संजोयमाणु पावेण ण लिप्पइ किं अयाणु ।
जइ लिप्पइ णउ दुरिएण सिध्दु तो किं अयसिरलुंचणि असुध्दु ।
जइ पभणइ ण सिउ सिवंसु चंडु तो णाउं होइ किं हेमखंडु ।
पुरदाह वइरिवह रुहिरपाणु णच्चेवउ किं संतहु विहाणु ।

११ MBP तिट्ठातत्तें; T तृष्णा करणहरणाभिलाष. सैव तन्त्रम्. १२ MBKT सावडइ, P छावडइ. १३ P लग्गउ. १४ MBP सिउ. १५ P अप्पाणु.

2. १ K विण. २ MB घडयारएण. ३ MBP सरूउ. ४ MBP मिइपिंडउ. ५ MT तं गुणु विचित्तु. ६ MBP भण्णइ. ७ M जइ जयल, K जइ सयल. ८ P अयसिरि लुंचणि. ९ MBP सिउ.

14 *a* णिक्किरियहु निर्व्यापारस्य; किरियाविसेसु कार्योत्पत्तिविशेषः; णिक्कलुसहु कर्मरहितस्य. 15 *a* तिट्ठेत्यादि–तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्र कारणमौषधं वा तेन विना कथं करणहरणादिबुद्धयो भवन्ति, तथा नैवैताः फलन्ति. 16 *a* सावडइ सपद्यते; *b* कत्तारवाहि कर्तृत्वव्याधिः 17 भावइ घटते. 18 सावइ शापं ददाति.

2. 3 *b* तंगुणविचित्तु कर्तृत्वगुणविचित्रम्. 5 *b* कील क्रीडा. 6 *a* पसु कर्मबद्धा जीवाः सर्वे पशवः कथ्यन्ते; *b* ससरीरि धरइ स्वस्वरूपतां नयति. 7 *a* पासु कर्मबन्धनं गले पाशो वा. 8 *b* अयसिर° ब्राह्मणस्य शिरः; असुद्धु ब्रह्महत्यायुक्तः. 9 *a* सिवसु शिवकला; *b* णाउं सीसकं नागम्; हेमखंडु सुवर्णखण्डम्.

परियाणिउं होंतउ जइ हरेण　　तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।
जइ वच्छल्लेण जि कियउ लोउ　　तो किं ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिणणाहेण ण दिट्ठीइं मिच्छाविसबिंदुयणीसंदइं ॥
किं वण्णियइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदइं ॥ २ ॥

3

अण्णाणु ण याणइ लइं जि मग्गु　　णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ　　तो किं कयायइ तवभावणाइ ।
को जाणइ केही हरहु चेट्ठ　　होसइ भीसण णिट्ठवियइट्ठ ।
कम्माणुय सा जइ भणसि एम　　ता पलइ सुयण संहरइ केम ।
माहेसर किं गोवइ थवंति　　जड मत्त पिसल्लय किं चवंति ।
अणिबद्धउं महु णरजम्मयारि　　पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।
जिह सिवु तिह बंभु ण विण्हु अत्थि　　विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।
विणु णरसंताणें मणुउ केम　　अणिहणु अणाइ जगु सिद्धु एम ।
सत्तेक्कपणेक्कसुरज्जुपिहुलि　　अहमज्झउड्ढभुवणग्गकुयलि ।
वेत्तासणझल्लरिमुरयरूवि　　चोद्दहकेयाउच्छेहभावि ।
तहु मज्झि परिट्ठिउ तिरियलोउ　　गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।
एक्केण एक्कु वेढियउ ताम　　छेइल्लु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लवणण्णवमेहलइ मंदरमउडें मंडिउं भावइ ॥
जंबूदीउ पसिद्धु जगि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३ ॥

१० MBP जिणणाहेण वि. ११ P दिट्ठियइं.

3. १ MBP कयाइ. २ MBP होही. ३ MBPT कम्माणुवमा. ४ MPK अणिबद्धइं. ५ MBP बंभणु विण्हु. ६ MBP °भुयणंतकुयलि. ७ M °मरवरूवि; BP मुरवरूवि. ८ BP चउदह°. ९ MB विठियउ. १० MBP छेयल्लु. ११ MBP लवणंबुहि°. १२ MP मंदिर°. १३ P वेढिउ. १४ MBP पसत्थु.

12 *b* विहोउ विशिष्टो भोगः. 13 मिच्छेत्यादि—मिथ्यात्वजलबिन्दूनां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु.

3. 1 *b* णिव हे भरत, अथवा, हे श्रेणिक. 2 *b* कयायइ कृतया. 3 *b* णिट्ठवियइट्ठ निष्ठापितं ध्वस्तं इष्टं प्राणिनां वाञ्छितं यया. 4 *a* कम्माणुय कर्मानुसारिणी. 5 *a* माहेसर शैवाः; गोवइ शंकरः. 9 *a* सत्तेकेत्यादि—यथासंख्यं सप्तैकपञ्चैकशोभनरज्जुके विस्तीर्णे; *b* °कुयलि भूतले. 10 *b* °केया° रज्जवः; °उच्छेहभावि दीर्घत्वम्.

4

दहखेत्तभाय जहिं रिद्धिवंत छव्वरिसधारि वरसाणुमंत ।
दढकुलिसकवोडंचियपहाइं चउदारइं चोद्दह णइमुहाइं ।
सप्पुरिसचित्तु जिह तिह विसालु परिवड्ढियमरगयरयणडालु ।
फलिहमयकुसुममंजरिसुसेउ पवरिंदणीलमयहलणिकेउ ।
जंबूतरु जंबूदेवठाणु जसु देवेंहिं दिट्ठउ धुवु णिवाणु ।
णं जगलच्छिहि भूसणवियारु जसुवरि भमंति दो चंदसूर ।
णक्खत्तहं संख ण मुणि भणंति अम्हारिस जड कइ किं मुणंति ।
तहिं दीवि मेरुपच्छिमदिसाहि सीओयाहि जलकीलियझसाहि ।
घत्ता—दक्खिणतीरि रम्मि विउले णीलइरिहि उत्तरदिसि मंडिवि ॥
गंधेलु णामें विसयविडु थिउ महिवहु णावइ अवरुंडिवि ॥ ४ ॥

5

जो पारियायचंपयकलंबमुचुकुंदकुंदमंदारसारसेरिंधगंधगुमुगुमियमहुयराली-मिलंतवयमोरकीरकलहंसकुररकारंडकोइलारावरम्मो ॥ १ ॥

जो मत्तदंतिगंडयलगलियमयतुप्पबिंदुचित्तलियवारिवियरंतण्हंततियसिंद-कामिणीसिहिणघुसिणपिंगलियफेणसोहियसरंतो ॥ २ ॥

जो विविहधण्णफलणवियछेत्तकणसुरहिपरिमलामोयघुलियसउणउलकुड्ड-हलिणीविमुक्कछोक्करणकलरवोदिण्णकण्णथियचरणहरिणसंछण्णसीममग्गो ॥ ३ ॥

जो कलवकंगुजवमुग्गमाससंतुट्ठमंथरोमंथमाणगोमहिसोहदुब्भंतदुद्धघयदहिय-वाविमज्जंतपंथियसमूहो ॥ ४ ॥

4. १ T साणुवत. २ PT °कवाडइ चियपहाइ. ३ MBP °मेहलणिकेउ. ४ MBP देवें. ५ MBP धुउ. ६ MBP जगलच्छिहि ण. ७ MBP उत्तरतीरि. ८ MBP दक्खिणदिसि; T सीतोदाया उत्तरदिशि इति संबन्ध·, दक्षिणतीरे णीलइरि इति सबन्ध·. ९ MBPK गधिलु.

5. १ MBP° कयब°. २ MBP °महुयरोली°. ३ MB °कुरल°; P °कुरुल°. ४ B °मयरुप्पबिंदु°; P °मयतोयबिंदु but gloss स्निग्ध. ५ MBP °भरिय°. ६ M °संछरोमथ°, BP °सच्छरोमंथ°. ७ K °माहिसोह°. ८ MBP °मज्जंतजतपथिय°.

---

4. दहखेत्तभाय भरतहैमवतहारिरम्यकहैरण्यवतैरावतक्षेत्राणि पूर्वविदेहो अपरविदेहः कुरव. उत्तरकुरवश्च; *b* छव्वरिसधारि षट्कुलपर्वता:. 4 *b* °हल° °फल°. 5 *b* णिवाणु निर्माणं संस्थानं वा. 10 विसयविडु देश एव विटः.

5. 2 °सिहिण° स्तनौ. 3 थियचरण° स्थितं त्यक्तं चरणं भक्षणं गमनं यैः.

जो रुंदचंदकिरणाहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयगेयरसवसविसण्ण-सुण्हाणिहित्तणीसासतावविहडंतगोट्ठिसोहंतगोट्ठो[9] ॥ ५ ॥

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदमयरंदपुंजपिंजरिय-तुंगणग्गोहरोहपारोहडालडोल्लायमाणजक्खीविलुंपियासण्णपामरोहो[11] ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिक्कमायंदगोच्छधावंतवाणरोमुक्कधीरबुक्कारतसिय-णासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालग्गहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंभणुड्डाणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकव्बडमडंबसंवाहणाइरमणीयभूपएसो ॥ ८ ॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइकयसमयविरहिओ[12] वीयरायणयतोयधोय-लोयंतरंगसुद्धो सहावसोम्मो[13] ॥ ९ ॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंदवंदणपसत्तणरमिहुणगरुअ-चारित्तभत्तिविहवियविसमपावावलेवो[14] ॥ १० ॥

घत्ता—जहिं[15] वेयड्ढमहासिहरि मज्झि परिट्ठिउ दीसइ केहउ ॥
रुप्पयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उत्तरसेढिहि[1] रमियखयरि अलयाउरि णामें अत्थि णयरि ।
पप्फुल्लियसयदलपरिमलेण[2] परिवेढिय जा परिहाजलेण ।
पडिवक्खचित्तकयदूसणेण जा सोहइ णाइ णियासणेण ।
आबद्धें रयणविचित्तएण पायारकणयकडिसुत्तएण ।
णाणादुवारमणितोरणेहिं णं छज्जइ कंठविहूसणेहिं ।
दीसइ णंदणवणणीलकेस पुरि णं अवयरिय[3] अउव्व वेस ।
चूलामणिचुंबियणहयलाइं जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।

९ M °गोह्रो. १० MP °मयरंदपुंजरिय°. ११ MBP °डोलायमाण°. १२ M °कयमय°. १३ M सहाव-सोमो. १४ All Mss add:- इमी विसमसीसयछंदजाई कहिया. १५ MBPK तहिं.
6. १ MB उत्तरे सेढिहि. २ MBP पप्फुलिय. ३ K अवयरियउव्व वेस.

5 °सामा° रात्रिः. 9 हीर° शंकरः; °णारसीह°: नरसिंहः; आरणालसंभव° ब्रह्मा. 10 °परिणय °प्रवृत्त°,
6. 3 *b* णियासणेण परिधानवस्त्रेण. 6 *b* वेस वेश्या.

णं धूवें सुधूमें णीससंति णं मुत्तावलिदंतेंहिं हसंति ।
णं अलिझंकारें सरं गुणंति णं गुरुगवक्खकण्णहिं सुणंति ।
धयवड णं णियकरयल धुणंति णं सिहिरवेहिं के के भणंति ।
अम्हहुं सारिच्छा दिव्वगेह जहिं सिहरोलंबियणीलमेह ।
पवसियपियाहिं पेल्लियकरेहिं संतावयार तर्लतंबिरेहिं ।

घत्ता—अमलियमंडणु मुहकमलु विरहिणीइ मणिभित्तिहि दिट्ठउं ॥
संझेइ सुत्तविउद्धियइ जहिं अप्पउं मण्णिउ णिकिट्ठउं ॥ ६ ॥

7

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं बहुपायालत्तयविलसियाइं ।
घरु हरिणीलें णीलियउ जाम ताविच्छहु केरी सोह ताम ।
णयणाइं ण लहंति णयाणणाइ जहिं पम कहिं मि जूरिउ धणाइ ।
णिद्देप्पिणु रंगावलिपयारु जहिं कुलवहु बंधइ कंठि हारु ।
जहिं रिद्धि वि रेहइ पवर का वि जहिं पंगणि पंगणि तोयवावि ।
उग्गयकिंजक्करयंकयाइं जहिं वाविहि वाविहि पंकयाइं ।
जहिं पंकइ पंकइ हंसु थाइ जहिं हंसि हंसि कलरव विहाइ ।
जहिं कलरवि कलरवि हयणिमाण कामेण समप्पिय कामबाण ।
जहिं उववणाउ घरि सिरि चडंति पुणु विविह पक्खि उववणि पडंति ।
हयमुहफेणहिं कुंजरमएहिं तंबोलहिं माणवमुहचुएहिं ।
संजणियपंक जहिं रायमग्ग वज्झंतजाणजंपाणदुग्ग ।
जहिं णिम्मुच्छव मंगलपसत्थ असिमसिकिसिविज्जावजियत्थ ।
जिणधम्माणंदिय भुत्तभोय णिरुवद्दव जहिं णिवसंति लोय ।

४ MBP धूव सधूमें. ५ MBP दंतिहिं. ६ MBP सरु. ७ MP अम्हइं; B अम्हहं; K अम्महुं but gloss अस्मत्सदृशाः. ८ P °तंबरेहिं. ९ MBPT संझहि सुत्तविउट्ठियहि.

7. १ MBPK सोहइ. २ MBP कलरउ; K कलरव but corrects it to कलरवु. ३ MBP घरसिरि. ४ MP °मुहमुएहिं; ५ MB °वेज्ज°.

12 *b* संतावयार संतापकरा मेघाः. 14 सुत्तविउद्धियइ सुप्तविबुद्धया जागरितया.

7. 1 *a* °णिरसियाइं तिरस्कृतानि. 2 *b* ताविच्छहु कज्जलस्य. 3 *a* णयाणणाइ नम्रमुख्या; *b* धणाइ वध्वा स्त्रिया. 8 *a* हयणिमाण हतनूमानः.

घत्ता—अइबलु णामें तेत्थु पहु सो जइ वि हु ण होइ[6] दोसायरु ॥
तइ वि हु कुवलयतोसयरु सोम्मु[7] वि चंडपयाव[8] पहायरु ॥ ७ ॥

8

कुलणहसवियारु वि णिव्वियारु सुहसीलु वि धरियधरित्तिभारु ।
इहलोयत्थु वि परलोयभत्तु गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।
जय[1]गहियगुणु[2] वि अक्खयगुणोहु णिब्बाहु वि करिकरदीहबाहु ।
बलवंतु वि अबलासयहं गम्मु अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।
णीसु वि लक्खण[3]लक्खियसरीरु ससहावें धीरु वि पावभीरु ।
दूरत्थु वि णियडत्थु[4] वे[5] हयारि रइवंतु[6] वि परवहुबंभयारि ।
सुयभिण्णमणु वि दढचित्तवित्ति बहुपालिरो वि दिसघित्तकित्ति ।
अइसच्छु वि गहियसमंतचारु गुरुओ[7] वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।
संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय लच्छीवासु वि खरदंड[8] णेय ।
सुपसुत्तु वि चलण[9]यणेहिं णियइ ठाणत्थु[10] वि तच्चरणेहिं[11] भमइ ।

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥
जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

६ MB होय. ७ MBP सोमु. ८ MBP चडपयाउ.

8. १ MBPK जग°. २ P °गुणि. ३ K लक्खियलक्खणसरीरु ४ P णिवडत्थु. ५ M वि. ६ P रइय°. ७ MB गरुवो, P गरुओ. ८ M खरददु; BP खरदंडु. ९ MBP चर°, T चल°. १० M वाणत्थु; MP थाणत्थु. ११ MBP तचरणिहिं भमइ.

---

15 चंडपयाव चण्डप्रतापः, पहायरु प्रभाकरः.

8. 1 *a* कुलणहेत्यादि– यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकार इति विरुद्धम्; अन्यत्र कुलाकाशे सवियारु सविता; *b* सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च. 2 *a* परलोयभत्तु मोक्षश्रद्धालुः. गोवालु पशुपालः; अन्यत्र गौः पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजवृत्तिश्च. 3 *b* णिब्बाहु निर्बाध प्रलम्बबाहुश्च. 4 *b* अविडप्पु विदर्पो राहुः सः अभवन्नपि विलंघितसूर्यतेजाः, अन्यत्र विटात्मा न भवति. 6 *a* णियडत्थु निकटस्थः, आसन्नधनश्च. 7*b* बहुपालिरो बहुपुरुषान् पाति पुष्णातीति बहुपा पुंश्चली तां आलिं सखीं राति आदत्ते य सः कथं दिक्षु प्रवृत्तकीर्तिः; अन्यत्र बहुपालकः प्रख्यातकीर्तिश्च. 9 *a* संगरु स्वाङ्गे स्वशरीरे रुग् व्याधिर्यस्य स स्वाङ्गरुक्. 10 *a* सुपसुत्तु यः सुष्ठु प्रसुप्तः स कथं चलनयनैः पश्यति; अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्ट सूत्र नीतिर्यस्य स चारलोचनैश्च कृत्वा पश्यति; *b* वमइ व्रजति गच्छति. 11 महिमाहरु पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्.

9

णं पेम्मसलिलकल्लोलमाल णं मयणहु केरी परमलील ।
णं चिंतामणि संदिण्णकाम णं तिजगतरुणिसोहग्गसीम ।
णं रूवरयणसंघायखोणि णं हिययहारि लायण्णजोणि ।
णं घरसरहंसिणि रइसुहेल्लि णं घरमहिरुहमंडणियवेल्लि ।
णं घरवणदेवय दुरियसंति णं घरछणससहरबिंबकंति ।
णं घरगिरिवासिणि जक्खपत्ति णं लोयवसंकरि मंतसत्ति ।
महएवि तासु घरकमललच्छि णामेण मणोहर पंकयच्छि ।
तहि जणिउ तणउ खयराहिवेण अलयाउरिधरणाहेण तेण ।
घत्ता—जाएं जेण थणंधएण दुज्जणवंदु सयलु संताविउ ॥
णलिणु व णवदिवसाहिवेण णिययगोत्तु हरिसें विहसाविउ ॥ ९ ॥

10

कुम्मुण्णयकमु दुज्जयविक्कमु ।
केसरिकडयलु वियडोरत्थलु ।
आयंबिरणहु कणयसमप्पहु ।
णवजलहरझुणि कुलचूडामणि ।
सुरकरिकरकरु तरुणीमणहरु ।
विसवइकंधरु रज्जधुरंधरु ।
गुणरंजियजणु अहिणवजोव्वणु ।
उण्णयभालउ पेच्छिवि बालउ ।
अलिणिहकोंतलु चिंतइ अइबलु ।
मणुयकलेवरु अट्ठियपंजरु ।
किमिकुलसंकुलु रुहिरचिलिव्विलु ।

9. १ MBP °खोणि. २ P मणोहारि. ३ MBP कुवलयच्छि. ४ MBP °वरणाहेण. ५ MBP दुज्जणवग्गु. ६ MBP वियसाविउ.

10. १ MBP °कडियलु; K कडयलु but corrects it to कडियलु. २ P रज्ज. ३ MBP °कुंतलु. ४ K omits अट्ठियपंजरु.

9. 4 *a* रइसुहेल्लि रतिसुखयुक्ता. 6 *a* जक्खपत्ति कुबेरभार्या. 9 थणंधएण पुत्रेण.
10. 11 *b* °चिलिव्विलु बीभत्सम्.

लालाविद्दलु अंतहं पोट्टलु ।
पिउवणभोयणु पक्खिहिं भोयणुं ।
सोलहकंदरु णवदारंतरु ।
कामें जिप्पइ लोहें घिप्पइ ।
कोहें तप्पइ छम्में लिप्पेइ ।
कम्में बज्झइ मोहें मुज्झइ ।
सत्थें भिज्जइ रोएं झिज्जइ ।
जरइ कुडिज्जइ कालें खिज्जइ ।

घत्ता—भणिउ सणंदणु पत्थिवेण संति करेज्जसु णियसंताणहो ॥
तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि महं पुणु आयवउ णिव्वाणहो ॥ १० ॥

11

चवलयर कुसासणवस चरंति महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।
जरमरणहं किंकर किं करंति मायंग अंग किं मोक्खु देंति ।
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति ए अवर वि जगि असुवह हवंति ।
अंतेउरु अंते उरु जि हणइ रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।
भवपासबंधु सुहिबंधुणियरु खणधंसि णयरु गंधव्वणयरु ।
धणु इंधणु लोहहुयासणासु घरु विग्घरु केवलदंसणासु ।
फणिभोउ व भोउ ण भुंजणिज्जु आकोसु वि कोसु वि वज्जणिज्जु ।
दुक्कियणिद्देसु व देसु भणमि खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु किं रक्खइ खइ गच्छंतु पाणु ।

५ M °भावणु. ६ B reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयक्कोयणु, पक्खिहिं भोयणु. ७ MB add after this: गुणगणमोयणु, सोयक्कोयणु. ८ MBPT °कंडरु. ९ MBP छिप्पइ. १० B कामें. ११ MBP खज्जइ.

11. १ MBP वहंति. २ MB केवलु दंसणासु. ३ P खजंतु. ४ MBP पाणु.

13 *a* पिउवण° श्मशानम्. 16 *b* छम्में मायया.

11. 1 *a* कुसासणवस कुशायास्तर्जनकस्य असनवशास्ताडनवशाः, पक्षे कुशासनवशाश्चार्वाकादयः; *b* वाइ वाजिनोऽश्वाः. 2 *b* अंग संबोधनेऽव्ययम्. 3 *b* असुवह प्राणघातकाः. 4 *a* अंते विनाशे; उरु हृदयम्. 6 *b* विग्घरु विघ्नकरम्. 8 *a* °णिद्देसु उपदेशः. 9 *a* हासणु हा इति स्वनः शब्दः.

किं छत्तहिं छत्तायारभूमि पाविज्जइ विज्जउ जहिं ण कामि।
चामरु मरु देइ ण मरणहारि ण समंति केउ झसकेउधारि।
पलियंकियसीसु ण सीसु होइ जो मुणिहिं मूढु सो कुगइ जाइ।

घत्ता—एम पयंपिवि राणएण णं मेहहिं धाराजलवरिसहिं॥
बद्धउ पट्टु महाबलहो अहिसिंचिवि सिएहिं सिरिकलसहिं॥११॥

12

जं जयजयसद्दें बद्धु पट्टु तं पुरु मेल्लिवि णरवइ पयट्टु।
मणिभूसणु णिवसणु परिहरेवि थिउ णिज्जणि वणि जिणदिक्ख लेवि।
जो छिंदइ सिंचइ चंदणेण विंधइ सरेण मण्णइ मणेण।
जो थुणइ जो वि दुव्वयणु देइ दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ।
सामंतमंतिभडसेवणिज्जु एत्तहि वि तासु सुउ करइ रज्जु।
देवंगहिं विविहहिं परिहणेहिं आहरणें मणिकंचणघणेहिं।
कामिणिथणसिहरालिंगणेहिं उज्जाणहिं जाणहिं वाहणेहिं।
तंतीपुक्खरवज्जाइएहिं स रि ग म प ध णी सरगाइएहिं।
उच्छलियपहयघडियारवालु भोयासत्तहु तहु जाइ कालु।
पढमिल्लु महामइ णिहयभंति बीयउ संभिण्णमउ त्ति मंति।
तिज्जउ सयमइ बहुरिद्धिरिद्धु सहंबुद्धु चउत्थउ जगपसिद्धु।

घत्ता— तेण णराहिवु विण्णविउ हुयवहु तरुतणेहिं किं धायउ॥
सायरु बहुसरिवाणिएहिं विसयसुहेहिं मि जीउ वरायउ॥१२॥

५ MBP सीसे.

12. १ MBPK आहरणहिं. २ M पढमिल्ल. ३ MBP णराहिउ. ४ MBP किं तरुणेहिं. ५ P धाविउ. ६ M सायर. ७ MBP ° वाणियहि.

10 *a* छत्तायारभूमि मुक्तिशिला. 11 *b* झसकेउधारि काम. 12 *a* सीसु शिष्यः. 14 सिएहिं रूप्यमयैः.

12. 3 *b* मण्णइ अनुमतिं करोति. 10 *a* णिहयभंति निःसंदेहः. 12 धायउ तृप्तः.

13

जिहँ पामा कररुहफंसणेण संभासणपियमुहदंसणेण ।
तिह णिच्चें कामु सेविज्जमाणु वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।
वड्ढइ लोहेण महंतु लोहु वड्ढइ हंकारें तिव्व कोहु ।
वड्ढइ णयहीणु णिएवि माणु परवंचणेणँ मायाविहाणु ।
वड्ढइ रइ अणुअंधेण मोहु इय जीउ करेप्पिणु धम्मदोहु ।
महिणाहु होवि पुणु होइ साणु संसारि कवणु रायाहिमाणु ।
उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि संकप्पें तप्पइ ताइ देहि ।
सा केण वि कत्थइ आणियाइ पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।
सा णारि सहावदुगंध चडुल अण्णासत्ती धणगम्म कुडिल ।
घत्ता—भुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दहइ सा झत्ति पलित्ती ॥
अत्थि ण देहि गविट्ठ मइं ताहि उवसमविहि परवस उत्ती ॥ १३ ॥

14

फासरसवसंगय महि भमेवि ।
गायंति के वि णच्चंति के वि वायंति के वि वण्णंति के वि ।
सीवंति के वि तुण्णंति के वि धणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।
करिसणु करंति पहरणु धरंति चडुयम्महिं परहियवउ हरंति ।
आवंतु विसिट्ठु ण संसहंति अम्हइं गुणवंता सइं कहंति ।
कम्मेहिं धणाइं समज्जिऊण आणेवि णिहेलणि पुंजिऊण ।
दिवसावसाणि समसंत होंति णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।
अह उड्ढमग्ग वड्ढियणिणाय धावंति सइच्छइ बे वि वाय ।

13. १ P जहिं. २ P णिच्चु. ३ MBP अणतु. ४ MBP तिव्वु. ५ MBPK णियहीणु. ६ MP °वंचणेण मणि मायठाणु; B °वचणेण मणि माइ ठाणु. ७ MBP अणुबंधेण. ८ BP डहइ. ९ M गव्विट्ठ. १० MBP वुत्ती.

14. १ MB भमेमि. २ G पुज्जिऊण. ३ B पाय.

---

13. 5 *a* अणुअंधेण संतत्या प्रवर्धनेन. 8 *a* आणियाइ आनीतया स्त्रिया. 11 गविट्ठ गवेषिता; उवसमविहि परवस उत्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवश एव उपशमविधिर्दृष्टा.

14. 7 *a* समसंत श्रमश्रान्ताः; *b* णिव्वाइयमुह प्रसारितमुखाः. 8 *b* बे वि वाय अधोवात ऊर्ध्ववातश्च.

णिद्दइ रीणत्तणु खयहु जाइ खलु छिण्णउ छिण्णउ रसु वि थाइ।
आहारु भुत्तु परिणवइ अंगि पज्जलइ पित्तु हयसें[४]भ[५]संगि।
उट्ठंति गोसि पुणु णीससंत किह रक्खहं धणु पणइणि भणंत।

घत्ता—भयसण्णावस थरहरिय लेंति केर कासु वि बलवंतहो॥
जीहामेहुणरसरसिय जंति जीव णरयहु सुदुरंतहो॥ १४॥

15

घणणियरविहीणें किं कुलेण णियणाहविहीणें किं बलेण।
वरसलिलविहीणें किं सरेण सुकलत्तविहीणें किं घरेण।
सुवियड्ढविहीणें किं पुरेण परदुणहवणिएं किं उरेण।
चारित्तविमुक्कें किं सुएण पिउपयपडिकूलें किं सुएण।
किं चाएं मणसंतो[१]विरेण किं माणें पियमुहदो[२]विरेण।
किं करिणा अवगं[३]णियंकुसेण किं हरिणा अवगण्णियकुसेण।
किं पुरिसें पसरियदुज्जसेण किं णक्खिएण वियलियरसेण।
किं मुणिणा पंचिंदियवसेण किं धुत्तें पेम्मपरव्वसेण।
किं मं[४]त्तें कयं[५]बहुवइरएण किं परियणेण परवइरएण।
किं गुरुणा मोहं[६]धारएण किं सीसें अविणयगारएण।
किं दुज्जणमहुराला[७]विएण किं धम्म[८]विहीणइं जीवि[९]एण।

घत्ता—पुं[१०]णु सइंबुद्धु पसण्णमइ खगवइ रायहु अग्गइ भासइ॥
धम्महु पत्तिउ सारु णिव जं परु अप्पसमाणउ दीसइ॥ १५॥

४ MBP सभवइ. ५ MBP °सिंभ°.

15. १ MBP °संतावएण. MB °दाविएण. ३ B अविगणियं°. ४ MP मंतें; B सत्तें. ५ P बहु-कयवइरएण. ६ MP मोहें धारएण. ७ MBP °लावएण. ८ MBP धम्मविरहिएं. ९ MP जीवएण. १० MBP परमहियत्तें मंतिवरु खयरवइ रायहु.

6 *b* खलु छिण्णउ तिलखलश्चर्वितश्चर्वितः सन् रसो दुग्धं भवति, तथा निद्रया श्रमो गच्छति. 10 *b* हयसेंभसंगि श्लेष्मसंगे हते सति पित्तमुत्पद्यते. 11 *a* गोसि प्रभाते. 12 केर आज्ञाम् .

15. 4 *a* सुएण श्रुतेन; *b* सुएण सुतेन. 6 *b* हरिणा अश्वेन, °कुसेण °चाबुकेन (तर्जनकेन). 9 *a* मत्तें मर्त्येन मनुष्येण; *b* परवइ° परपतिः.

16

सव्वेण दयादाणेण धम्मु   अलिएण जीवहिंसइ अहम्मु ।

तेणेत्थ कुणर णारय तिरिक्ख   कुच्छिय सुर होंति तिसल्लतिक्ख ।

धम्मेण होंति कप्पामरिंद   अरहंत[1] चक्कि चारण मुणिंद ।

अहमिंद रुंदचंदाहजोण्ह   धम्मेण होंति जगि राम कण्ह ।

मणिमउडसिहरसोहिल्लसीस   मंडलियमहामंडलवईस ।

पडिवासुएव कुसुमसर रुद्द   धम्मेण होंति णाणाणरिंद ।

कइगमयवग्गिवाइत्तणाइं   धम्मेण हवंति बुहत्तणाइं ।

सोहग्ग[2] रूवु[3] कुलु सीलु कंति   पोरिसें[4] जसु भुयबलु विमल खंति ।

जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु   तं धम्महु केरउ फलु असेसु ।

घत्ता—धवलीहूयउं सिरकमलु भोउ देव केत्तिउ भुंजिज्जइ ॥

धम्मु जिणागमभासियउ मणवयकायतिसुद्धिइ किज्जइ ॥ १६ ॥

17

पहु साहिज्जइ सग्गापवग्गु   ता दिसइ महामइ तहु कुमग्गु ।

अणिहणइं अणाइअहेउयाइं   महिमारुयवेसाणरउयाइं ।

भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति   तहिं तहिं चेयणचिंधइं चलंति ।

गुलजलपिट्ठिहिं[1] मयसत्ति जेम   भूएसु जीउ[2] संभवइ तेम ।

ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि   करु कण्णु[3] दंतु को कवणु हत्थि ।

जम्माउ ण वच्चइ अण्णु[4] जम्मु   अणु जेण जियइ तं करइ कम्मु ।

जो परहरु पुच्छिवि परहु पासि   गच्छइ इंदियबुद्धीपयासि ।

विणु तेहिं केम सो सग्गें[5] जाइ   पुज्जिउ पत्थरु किं पुण्णमाइ ।

जासुवरि मुवइ[6] मलु जीवलोउ   परजम्मि तेण कहिं कियउ पाउ ।

जलबुब्बुय जइ कम्मेण होंति   तो जीव वि राय म करहि भंति ।

16. १ K अरिहंत. २ P सोहग्गु सीलु कुलु रूउ. ३ MB रूउ. ४ MBPK पोरिसु जसु.

17. १ MBP °जलधाइहिं. २ M जीव. ३ MBP कण्ण दंतु. ४ MB अण्णजम्मु. ५ MB सग्गु; P सग्गि; K सग्ग but corrects it to सग्गु. ६ K मुयइ.

---

16. 4 *a* °जोण्ह °कान्तिः. 7 *a* कइगमय° सैद्धान्तिकः सिद्धान्तवेत्ता; °वग्गि° वाग्मी.

17. 2 *b* °उयाइं उदकानि. 7 *a* परहरु परगृहम्; *b* °पयासि °प्रकाशेन. 10 *b* राय हे राजन्.

घत्ता—कहिं किर सुकियदुकियइं विणु भूयँएहिं जीउ कहिं दिट्ठउ ॥
जो वाहिउ पासंडियहिं सो हउं मण्णमि चोरँहिं मुट्ठउ ॥ १७ ॥

18

तं णिसुणिवि चविउं चउत्थएण मंतिहि पहुपणवियमत्थएण ।
परिपालियसमहिंसावएण सुयवंतें परिणयसावएण ।
जणि महुरहि दीसइ दिण्णु राउ चउदव्वपसूयहि एक्कु साउ ।
देहें भावेण वि भिण्णु लोउ किह घडइ तुहारउ भूयजोउ ।
खरवडवारइरसि वेसरासु संभूउ णिदिट्ठु कत्थइ णरासु ।
दव्वेहिं तेहिं तेहउ जि होइ वइचित्तु काइं संजोयवाइ ।
सिहि उल्हाविज्जइ पाणिएण पाणिउ सोसिज्जइ झत्ति तेण ।
चवलयरु पवणु थिर जड धरित्ति असरूवहं कहिं मेलावजुत्ति ।
एमेयँ करिवि अप्पणिय उत्ति किं जंपसि पउरंदरिय वित्ति ।
विणु जीवें कँहिं भूयइं मिलंति कायाकारेण ण परिणँवंति ।
जइ परिणँवंति भासहि कुहेउ तो काढयपिढरि सरीरु होउ ।

घत्ता—पंचिंदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ चिम्मेत्तुं अयाणउ ॥
जीउ जाइ किह भणसि तुहुं सग्गि होइ किह सुरवरराणउ ॥ १८ ॥

19

दीसइ पयत्थु जगि सहुं गुणेण पाहाणेण वि णिच्चेयणेण ।
कड्ढिज्जइ आयसु कड्डएण जिह तिह सो कम्मणिबंधणेण ।

७ MBP भूएहिं. ८ MBP चोरें.

18. १ MB दिण्ण राउ. M विभिण्णलोउ; BP °विहिण्णलोउ. ३ MBP °रसु. ४ MBP उप्पात्ति करइ अण्णहु विणासु. ५ M उज्झाविज्जइ. ६ MB एमेवि, P एमेव. ७ MBP भूयइ कहिं. ८ MBP परिणमंति. ९ MBP परिणयति १० M चिमित्तु, B चिम्मित्तु.

19. १ B कड्ढिएण P कट्ठएण.

18. 1 *a* चउत्थएण स्वयंबुद्धेन; *b* मंतिहि मन्त्रिणा. 2 *a* °समहिंसावएण सम्यक्त्व–अहिंसाव्रतेन, अथवा, शमश्च अहिंसा चेति, *b* परिणयसावएण परिपक्वश्रावकेण. 3 *b* साउ स्वादः. 5 *a* °वडवा° अश्वी. 6 *b* संजोयवाइ हे संयोगवादिन् . 9 पउरदरियवित्ति चार्वाकमतम्. 11 *b* काढय° क्वाथः. 12 चिम्मेत्तु चैतन्यमात्रः.

19. 1 *a* पयत्थु पदार्थः. 2 *a* कड्डएण चुम्बकपाषाणेन.

जंपिउ पइं बहुपुज्जाहरेण किं किउ सुक्किउ भवि पत्थरेण।
णउ रूसइ सो कयणिग्गहेण णउ तूसइ भोयपरिग्गहेण।
णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु जहिं जीउ तहिं जि तुहुं ताइं पेक्खु।
भो भूयवाइ भूएहिं भुत्तु तुहुं तुज्झ णत्थि जिणवयणमंतु।
जइ तं किय पंडिय कव्वु कवहि अणिबद्धु असद्दउं काइं चवहि।
तहिं अवसरिं संभिण्णें पउत्तु उप्पज्जइ खणि खणभंगचित्तु।
हसियच्छियरमियकयासणाइ परियाणइ सुइरु वि वासणाइ।
जो दीसइ सो खणवट्टि खंधु णउ अप्पउ णउ णिव पासबंधु।

घत्ता—ता रिसिसमयहु भत्तएण उत्तरु दिण्णु तेण खणवाइहिं॥
वत्थु णिरण्णउ णत्थि जगि तणजलरत्तु जि दुद्धु धुवुं गाइहिं॥ १९॥

20

जं णत्थि बप्प तं कुम्मरोमु तं वंझडिंभु तं गयणपोमु।
तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ अत्थिल्लउ किं पुणु खयहु जाइ।
को जाणइ जिणवरु मुइवि सच्चु वज्जिवि अरूवि परिणामि तच्चु।
जइ छिण्णउं मणु मणभाउ चेइ तो अण्णें थवियउ अण्णु लेइ।
जइ दव्वइं तुह खणभंगुराइं तो खणधंसिणि वासण ण काइं।
किं सा खंधहं बाहिरिय दिट्ठ अणणुहवु खणिउं किं भणिउं धिट्ठ।
ता सयमइ चवइ मईविसालु मायण्हिय सिविणय इंदजालु।
जिह पयहु केरी सव्व माय दीसंतु वि तिह जगु णत्थि राय।
गुरु सीसु धम्मु ववहारु एहु परमत्थें णउ परु णउ संदेहु।

२ MBP भवि सुक्किउ. ३ MBP तह तुज्झु. ४ MBP असुद्धउं. ५ MBP खणि भंगाचित्तु. ६ MB खणबाद्दि, P खणि बाद्दि. ७ MBP तेण दिण्णु. ८ MB खणवाइहो. ९ B अत्थि. १० MBP धुउ. ११ MB गाइहो.

20. १ MBP भणसि. २ MBP माइण्हिय. ३ P गुरुसीसधम्मु.

7 *a* कवहि काव्यं करोषि; *b* असद्दउ अश्रद्धं अप्रतीतिजनकम्. 8 *b* खणभंगचित्तु क्षणविनश्वरो जीवः. 9 *b* वासणाइ चित्तसंस्कारेण. 10 *a* खंधु रूपविज्ञानवेदनासंज्ञासंस्काराः पञ्च स्कन्धाः; *b* पासबंधु कर्म. 12 णिरण्णउ निरन्वयम्.

20. 2 *b* अत्थिल्लउ अस्तित्वयुक्तम्. 3 *b* वज्जिवी त्यादि—अरूपि जीवादि वर्जयित्वा. 4 *b* चेइ जानाति. 6 *b* अणणुहवु अननुभूतम्. 7 *b* मायण्हिय मृगतृष्णिका.

घत्ता—जंबुउ[4] मासखंडु मुइवि धायउ सलिलुग्गयपाढीणहो[5] ॥
आमिसु गिद्धें णहि णियउ मीणु णिमज्जिवि गउ णियठाणहो[6] ॥ २० ॥

21

जिह सोणरि तिह णरु उहयभट्ठु[1] परलोयहु लग्गिवि को ण णट्ठु ।
अलियाइं जि णिसुणिवि मुयइ धीरु[2] णियतणु दंडइ किं णरयभीरु ।
आयासु पडेसइ भणिवि तसइ टिट्टिहु[3] उत्ताणियचरणु वसइ ॥
इसिपायपणामविणीयएण ता गुरुणा भणिउं तुरीयएण ।
जइ णत्थि किं पि कारणु ण कज्जु तो किं बीहहि जइ पडइ वज्जु ।
जइ होइ असंतउ अत्थकारि तो आणहि सिविणंतरि[4] मयारि ।
णिण्णासहि[5] तेणाहियकरिंद किं चवहि असच्चउ विउसयंद[6] ।
णउ सद्दु ण तुहुं णउ हउं ण वत्थु भणु होइ इट्ठपडिवत्ति केत्थु ।
सुणि राय जिणागमहासियाइं[7] सुम्मंति ण जडयणभासियाइं ।

घत्ता—आसि तुहारइ वंसि हुउ पहु अरविंदु[8] णाम विक्खायउ ॥
पढमपुत्तु[9] हरिचंदु तहो पुणु कुरुविंदु इंदुसमु[10] जायउ ॥ २१ ॥

22

तहि णयरिहि सुहिकल्लाणकारि रिउघरिणिहारकरवलयहारि ।
गयगंधहत्थि भडकालदूय पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।
ते तिण्णि वि सुहुं अच्छंति जाम लग्गउ डाहज्जरु पिउहि ताम ।

---

४ MBP जबू. ५ MBP सलिलगयहु. ६ MB णियथाणहो.

21. १ MBP उभय°. २ K धीरु but corrects it to चीरु and gloss वस्त्रं. ३ K टिट्टिह. ४ MB सिविणतर°. ५ MMB णिण्णासिय. ६ MBP विउसइद. ७ MBPK °गमदूसियाइं. ८ K अरिविंदु. ९ MBP पढम पुत्तु. १० M इदुसम, B इंदसमु.

---

10 °पाढीणहो मत्स्यस्य.

21. 1 *a* सोणरि शृगालः. 4 *b* गुरुणा मन्त्रिणा. 7 *a* अहियकरिंद अहितकरीन्द्रा अधिकहस्तिनो वा, *b* विउसयंद विद्वच्चन्द्र.

णिद्दहइ हारु मलयरुहपंकु धगधगइ पलयसूरु व ससंकु ।
जलैजलिउ जालजलणु व जलद्द आवइकालइ आवइ ण णिद्द ।
उवसमइ ण केम वि अंगडाहु थिउ कायरमुहुं वरखयरणाहु ।
तहिं अवसरि पंकयवैत्तणेत्तु पिउणा कोक्काविउ पढमँपुत्तु ।
सो भणिउ तेण हयरवियराइं जहिं घणइं वणइं वेल्लीहैराइं ।
जहिं सुरहिउ कंपिउ देवदारु सीयलु संचारियँ हिमतुसारु ।
जहिं वाइ वाउ णीवइ सरीरु तं णेवावहि सीओयतीरु ।
आइसहि सविज्जादेवयाउ मइं णेंतु तुरिउ मारुयरयाउ ।
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ आवाहिउ खगदेवीणिहाउ ।
घत्ता—सुएण सैविज्जउ पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण संमुहुं ॥
मंतु देउ ओसहु सयणु पुण्णि परंमुहि होइ परंमुहुं ॥ २२ ॥

23

पाविट्ठहु कह व ण जाइ प्राणु आढत्तउ तेण रउद्दु झाणु ।
लोएहिं भणिज्जइ देव जीय संपयसुहि सुहियहं सेवणीय ।
कंदइ करेहिं ताडंतु तोंदु दुहिदेसँएण संणिहु णरिंदु ।
जुंज्झंतहं कप्पिउ कायदंदु पल्लीदेहंतहु रुहिरबिंदु ।
णिवडिउ आसासिउ सो रविंदु सीयलु वणरुहलवुँ णं छणिंदु ।
तं पेच्छिवि हरियंदाणुयासु आएसु दिण्णु ताएं सुयासु ।
जइ रत्तद्दहि जलकील करमि तो पुत्त णिरुत्तउ णउं मरमि ।

22. MBPK णिड्डहइ. २ MBP जलजलइ जालिउ जलणु. ३ MB °पत्त°. ४ MBP पढमु पुत्तु. ५ P वल्लीहराइं. ६ MBP संचारिउ. ७ MBP सुविज्जउ.

23. १ MBP पाणु. २ MBP तुंडु; T तोंडु उदरम्, K तोंदु, but records तोंडु in second hand. ३ M reads this foot as 4 *a*. ४ P °देसिएहि. ५ M reads this foot as 3 *b*. ६ MBP हिययत्थिउ आसासिउ णरिंदु. ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तद्दहि. ९ MBP णेय.

22. 4 *a* मलयरुह° चन्दनम्. 5 *a* जलद्द जलार्द्रं वस्त्रम्. 11 *b* मारुयरयाउ वायुवेगाः. 12 *b* आवाहिउ आकारितः; °णिहाउ समूहः.

23. 1 *b* आढत्तउ प्रारब्धम्. 2 *b* संपयसुहि लक्ष्मीसुखार्थम्. 3 *a* तोंदु उदरम्; *b* कायदंदु शरीरद्वयम्. 4 *b* पल्लीदेहतहु विश्वंभरदेहमध्यात्. 5 *b* वणरुह° रुधिरम्; छणिंदु पूर्णिमाचन्द्रः. 6 *a* हरियदाणुयासु कुरुविन्दस्य; *b* सुयासु सुतस्य.

किंकरकरसिरघडथाणिएण ससमेसमहिसमृ[10]गंसोणिएण ।
खणि खोल्लु खणेप्पिणु भरहि तेम सुविहाणइ हउं तहिं ण्हामि जेम ।

घत्ता—णिसुणिवि हिंसावयणविहि गउ कुरुविंदु पिउहि मउलिवि कर ॥
कारिमकीलालहु भरियँ[11] विरइय वावि विहाणइ दुत्तर ॥ २३ ॥

24

तूसेप्पिणु तेत्थु पइट्ठु राउ ण्हंतेण तेण बुज्झियउ साउ ।
णउ लोहिउं लक्खारसु णिरुत्तु भायारउ णिहणमि पइ पुत्तु ।
मणि पसरिउ तहु दुक्कम्मरेणु आयड्ढिय भीसणु खग्गधेणु ।
अइबुद्धिवंतु परचित्तजाणु दिट्ठउ कुरुविंदु पलायमाणु ।
णं करिहि विरुद्धउ जरकरेणु णरवइ तहु पच्छइ धावमाणु ।
पक्खलिवि पडिउ गिरिरायतुंगु णियकरछुरियाणिव्वट्टियंगु ।
मुउ गउ णरयहु सुहिसोयभग्गि हाहारउ उट्ठिउ बंधुवग्गि ।
अवरु वि णि[1]सुणहि तुह वंसकेउ रूवेण णाइं सइं मयरकेउ ।
चिरु होंतउ णरवइ दंडधारि दंडउ णामें[2] दंडियणियारि ।
तहु तणउ तणउ वज्जियदु[3]वालि मणिमालि सउलगयणंसुमालि ।
तो[4] देव दीहकालेण एत्थु धणरासिहि उप्परि देंतु हत्थु ।

घत्ता—पुत्तु कलत्तु चित्ति धरिवि पुंजियविविहदव्वपब्भारइ ॥
अट्टज्झाणें पिउ मरिवि अजें[5]यरु हुयउ णिययभंडारइ ॥ २४ ॥

१० MBP °मिग°. ११ GK भरिय वावि.

24. १ MBP तुहु णिसुणहि. २ P णामेण जि दडियारि. ३ MBP °दुयालि. ४ MBP ता. ५ MBP अजगरु.

9 *a* खणि गर्ता. 11 करिमकीलालहु कृत्रिमरुधिरेण; विहाणइ प्रभाते.

24. 1 *b* साउ स्वादः. 9 *b* णिव्वट्टियगु विदारिताङ्गः. 10 *a* °दुवालि अन्यायः; *b* सउलगयणंसुमालि स्वकुलगगनसूर्यः.

25

माणुसु दाढहिं दंतहिं दलइ[1] जं घरि पइसइ तं तं गिलइ[2]।
ससिमणिजलकयसिहरग्गण्हवणि पुणु रयणमालि[3] पइसंतु भवणि।
संभरियपुव्वजम्मंतरेण ओलक्खिउ णियसिसु विसहरेण।
मब्भीसिउ[4] भोयाहोयणेण[5] ता चिंतिउ खगवइजायएण।
महु एहु को वि चिरजम्मबंधु[6] णं तो किं णउ भक्खइ मयंधु।
पुणु गंपि तेण पुच्छिउ मुणिंदु भासियउ तेण दंडयणरिंदु।
हयउ असमाहिइ मरिवि सप्पु किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्पु।
तं सुणिवि तेण णिवणंदणेण पिउणेहकरुण[7]कंपियमणेण[8]।
पडिआवेप्पिणु घरु खवियकम्मु जिणणाहहु केरउ कहिउ धम्मु।
बुज्झिवि फणिणा संणासु कयउ मुउ जायउ सुरु उरयत्तु गयउ।
देवेण तेण जाणियभवेण कय गुरुपुज्जा सुमहुच्छवेण।
आविवि मणिमालिहि दिण्णु हारु जाणइ पुरु देसु कहावयारु[9]।
इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्झ कंठि ताराणियरु वँ[10] णं मेरुकंठि।

घत्ता—तं णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोएप्पिणु ॥
हयतमु पुप्फदंत[11]सरिसु आलिंगियउ मंति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वितंडापंडियपंडाविहंडणं णाम
वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ संधि ॥ २० ॥

25. १ MBP दलेइ. २ MBP गिलेइ. ३ MBP रयणिमालि. ४ MBP मं भीसिउ. ५ MB भोयाभोयणेण; PT भोयाभोयएण. ६ B चिरधम्मबंधु. ७ MBP °करण°. ८ M °कप्पिय°. ९ T कयावयारु कृतावतारः १० MBP व मेरूवकंठि. ११ MBP पुप्फयंत°.

25. 4 *a* मब्भीसिउ मा भैषीस्त्वम्, भोयाहोयणेण फणामण्डपाधःकृतेन फटाटोपेन. 10 *b* गयउ नष्टम्. 12 *b* कहावयारु कथावतारः.

XXI

बुड्डंतहु णरइ पडंतहो बहुमणिणयभवतरुहलहो ॥ १
सइंबुद्धं णाणविसुद्धं दिण्णउ हत्थु महाबलहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

पुणु तेण पजंपिउ सुइमइरु भवसयसंचियमलभारहरु ।
तुह तायपियामहु कुलधवलु णामेण पसिद्धउ सहसबलु ।
उप्पाइवि केवलु णाण गुणि गउ मोक्खणिवासहु परमगुणि ।
तुह तायताउ सयबलु णिवरु परिपालिवि सावयवयपवरु ।
माहिंदसग्गि हूयउ अमरु सत्तंबुहिआउपमाणधरु ।
गउ मेरुहि तइया भावियउ तुहुं मइं सहुं तें बोल्लावियउ ।
अइबलु तुह पिउ भयवंतु वसि गउ वणवासहु होएवि रिसि ।
णयविणयालहं णवजोव्वणहं सिरि अप्पिवि णियणियणंदणहं ।
तुह एम पियामहपियपहुइ सुम्मंति देव साहियसुगइ ।
रुद्दट्टझाणआरूढदुइ संपत्ता णरयतिरिक्खगइ ।

घत्ता—हयकम्में जिणवरधम्में उवरि उवरि रंकु वि चडइ ॥
कयगावें पत्थिव पावें हेट्ठामुहुं राउ वि पडइ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

यस्य जनप्रसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुरसि सदा विराजते ।
वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे
राजति जयतु जगति भरतेश्वरमयममलमङ्गलः ॥

MP read विराजयते for विराजते, °मलाणिल° for मनाविल°, स जयति जयतु for राजति जयतु; M reads °श्वरसुखमयममल°; P reads °श्वरजयमयममल° for °श्वरमयममल°. GK do not give it.

1. १ MBP पयपिउ. २ MBP केवलणाणु गुणि. ३ MBP °पवरु. ४ P °जोव्वणाइं. ५ P °णंदणाइं. ६ MBP °पिउ°.

---

1. 6 *a* णिवरु नृवरः. 11 *a* °पिय° पिता.

2

तं सुणिवि पवुद्धउ भव्वयणु अइबलसुउ हुउ उवसंतमणु ।
संकाकंखाहिं विवज्जियउ गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।
अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो खलखलखलंतणिज्झरजलहो ।
कंचणधूलीरयपिंगलहो करिदंतविहिण्णसिलायलहो ।
मणियरकब्बुरियणहंतरहो सिहरुच्छाइयसयमहघरहो ।
आसीणसुरासुरसुंदरहो गउ वंदणहत्तिइ मंदरहो ।
सिरिभद्दासालसुणंदणइं सउमणससरसपंडुयवणइं ।
वज्जियफणिकामिणिणेउरइं चालियचंदुज्जलचामरइं ।
किंणरपारद्धथोत्तसयइं विद्धंसियमाणवभवभयइं ।
अकयाइं विलंबियतोरणइं पयसिवि जिणबिंबणिहेलणइं ।
मंडिय सीहासणवेइयउ परियंचिवि अंचिवि चेइयउ ।

घत्ता—णरविहुणा खगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥
तं मणियहिं महुयरझुणियहिं भणइ व तर दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

3

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।
मलु जासु सरीरि ण झाणि मलु णउ परतावणि बलु सुतवि बलु ।
जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु णहु भज्जइ कहिं मि ण सीलगुणु ।
वंकत्तणु भउंहहि आयरिउ णउ जासु मईइ किं पि वि धरिउ ।
रसु परमागमि णउ कामरसु वसु जं ण समिच्छइ धम्मवसु ।
सिरि केसजडत्तणु जासु गय णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2. १ MB णिसुणिवि. २ MB अइबलु सुउ. ३ BP वंदणभत्तिइ. ४ P °भद्द°. ५ MBP ° भवसयइं. ६ MBP पइसिवि. ७ MBP सिंहासण°. ८ MBPKT तरु.

3. १ P मइ and gloss मतौ. २ MBP जो.

2. 8 *a* वज्जिय° शब्दायमानः. 10 *b* पयसिवि प्रवेशं कृत्वा. 11 *a* °वेइयउ चतुष्किकाः; *b* चेइयउ प्रतिमाः. 12 °विहुणा °चन्द्रेण; सेसासयदलहो निर्माल्यस्थपद्मस्य कृते. 13 मणियहिं मनोज्ञैः; तर दुक्कियजलहो दुष्कृतजलात् तर, पापं मुक्त्वा सुखी भव.

3. 3 *b* णहु णखम्.

दुम्मह मय अट्ठ वि जासु मय कय पंचिंदियहुं णं जेण दय ।
तं रिसिजुयलुल्लउ वंदियउ सइंबुद्धे अप्पउ णिंदियउ ।
हउं अज्जि वि एम ण करमि तउ केत्तिउ किर पोसमि असुइवउ ।

घत्ता— सिरिगेहइ पुव्वविदेहइ देसु महाकच्छउ वसइ ॥
तंणयरहु सुरगिरिसिहरहु आयउ तं तहु दिहि दिसइ ॥ ३ ॥

4

तं अरुहजुयंधरतित्थसरे ण्हायउ ण वडइ संसारजरे ।
तहिं एक्कु साहु आइच्चगइ अण्णेक्कु अरिंजउ सुद्धमइ ।
ते पुच्छिय बुद्धे बे वि जणे तुम्हइं तिणाणपाणीयघणे ।
महु सामि महाबलु संभरह किं भव्वु अभव्वु य वज्जरह ।
जाणियतसथावरजीवगइ तं णिसुणिवि जंपइ जेट्ठु जइ ।
इह जंबुदीवि दाहिणभरहे अग्गइ जुयाइपारंभवहे ।
आसण्णभव्वु सो णिवखयरु दहमइ भवि होसइ तित्थयरु ।
भोयासिउ जं तं णेउ रहमि दुम्मोयत्तणु तहु तुह कहमि ।
पच्छिमविदेहि गंधिलविसए सीहउरि णरिंदु विमुक्कभए ।
णामें सिरिसेणु सिरीणिलउ सुंदरिदेविहि दरिसियपुलउ ।
तहु पढमु पुत्तु जयवम्मु हुउ बीयउ सिरिवम्मु णरेहिं थुउ ।
सो रुच्चइ जणणिजणणमणहो सो भावइ सयलहु परियणहो ।

घत्ता—सुहडत्तणु बुद्धिबुहत्तणु थिवहिं असेसु वि जलहिजले ॥
किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वण्णइ पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥ ४ ॥

३ BP ण जी जीवदय. ४ MBP अज्ज.

4. १ MBP °जुयंधरि. २ MBP ससारदरे. ३ MBP जणा. ४ MBP °घणा. ५ M जेट्ठु जइ. ६ MBP दसमइ. ७ B जंतउ णउ; P ज त ण उ. ८ MBP पढमु पुत्तु. ९ MBP अजवमु. १० MBP णरिंदथुउ. ११ P थिवहुं. १२ M मण्णइ.

7 *a* मय मदाः; मय मृताः. 11 दिहि धृतिः.

4. 1 *a* °सरे जले. 6 *b* जुयाइपारंभवहे कर्मभूमिप्रथमप्रवेशमार्गे.

5

मेल्लंतें संतें रज्जरइ वउ लेंतें जंतें परमगइ ।
णरणाहें[1] अइअजुत्तु कियउ लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ ।
जयवम्में[2] ता परिचिंतियउ को फेडइ दइवणियंतियउ ।
णिद्दइवहु[3] सव्वु वि चप्फलउ णिद्दइवकाजि जगु सीयलउ ।
णिद्दइवु[4] णवंतु वि को गणइ णिद्दइवहु भासिउ को सुणइ ।
णिद्दइवहु सुक्कइ[5] भरिउ सरु ण फलइ णिद्दइवें णिहिउ तरु ।
णिद्दइवहु बंधु वि होइ परु णिद्दइवहु देव ण देंति वरु ।
ण हणइ भेसहु वि रुयापसरु वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु ।
णिद्दइवहु विहडइ घरिणि घरु ण करइ सणेहुं[6] मायापियरु ।
उज्जमुं[7] करेवि अप्पउ दमइ णिद्दइवहु किं सिरि संकमइ ।

घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसंघउ जं जि करइ तं णिप्फलउ ॥
हयकाएं किं ववसाएं सव्वहु दइवु जि अग्गलउ ॥ ५ ॥

6

इणं चिंतमाणो अहं णिंदमाणो[1] ।
अरायं वहंतो अणंगं वहंतो ।
पिउस्सायहंतो[2] रमासायहंतो ।
रईसूहवेणं सयासूहवेणं ।
जसेणं सियं जं[3] मुहेणं जियं जं[4] ।

5. १ P णरणाहें अजुत्तु २ MBP अजवम्में. ३ P णिद्दइयहु. ४ MBP णिद्दइउ. ५ MBP सुक्खइ. ६ BP सिणेहु. ७ MBP उज्जउ.

6. १ B णिंद्माणो. २ B °स्सायहुंतो. ३ MBPT सियज्ज. ४ MBPT जियज्ज and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्जं यद्यौवनम्.

---

5. 4 *a* चप्फलउ चपलम्.

6. 1 *a* इणं एतत्पापम्. 2 *a* अराय वैराग्यम्. 3 *a* पिउस्सायहंतो पितर कथयन्, *b* रमासायहंतो लक्ष्मीस्वादहन्ता. 4 *a* रईसूहवेणं कामदेवोद्भवेन, *b* सयासूहवेण सर्वदा सर्वेषामभिलषणीयेन. 5 *a* जसेणं सियजं यशसा निर्मलं यद्यौवनम्; *b* जिय जितम्.

दयंगं समंतो समेणं समंतो ।
णियं जोव्वणंतं गओ सो वणंतं ।
किडीखद्धकंदं णयासीणकंदं ।
सरेणं सवंतं महावंसवंतं ।
सवेल्लीपियालं पुलिंदीपियालं ।
विणित्तंकुरोहं विचित्तंकुरोहं ।
अलीपीयवासं फणिंदाहिवासं ।
मट्टहिं पलित्तं दवग्गीपलित्तं ।
पवड्ढंतपीलुं पगज्जंतपीलुं ।
हुयातावसीयं सया तावसीयं ।
पवित्तं पसण्णं हयाणेयसण्णं ।
विलुत्तंतयासं पफुल्लंतयासं ।
सुसंतावयासं णिहित्तावयासं ।

घत्ता—तहिं काणणि थियपंचाणणि दिट्ठु भडारउ दुरियमहु ॥
जयवम्में समियकुकम्में मोक्खहु केरउ णाइ पहु ॥ ६ ॥

7

जसु तित्थगमणु अहवावठाणु जसु धम्मभणणु अहवा सुमोणु ।
जसु इंदियरणु अह परमकरणु जसु अरुहचिंत अह सुयसरणु ।
जसु जोयणिद्द अह जागरणु जसु खलिकिउ दुहु अह तवचरणु ।

५ MBP गिरीलग्गकंदं, T णयासीणकंद गिरिलग्नमंघं. ६ M °वियाल. ७ T पहुल्लंतयास. ८ MBP अजवम्में.

7. १ MBPT अहवा सठाणु २ P धम्मसवणु. ३ MBP ममोणु. ४ MBT परमकरणु. ५ P खलिकिउ.

6 *a* दयगं दयालवम्, *b* समतो उपशमयन. 8 *a* किडी° सूकर., *b* णयासीणकंद गिरिलग्नमेघम्. 10 *b* पुलिंदीपियालं पुलिन्दीप्रियम्. 11 *a* विणित्त° विनिर्गतः. 12 *a* अलीपीयवास भ्रमरैः पीतगन्धम्; *b* °अहिवास °अधिष्ठानम् 14 *a* °पीलु °वृक्षविशेषम् *b* °पीलु °गजम्. 15 *a* हुयातावसीयं संजातोष्णशीतम्, *b* तावसीयं तापसेभ्यो हितम्. 16 *b* हयाणेयसण्ण हता अनेकैराहारादिसंज्ञा यत्र. 17 *a* विलुत्ततयास विलुप्ता अन्तकस्याशा येन, अजरामरपदप्रापकत्वात्.

7. *a* अवठाणु कायोत्सर्गः.

जसु सयणु धराणि अह कट्ठु तिणु जो तणुमलधरु मणमलेण विणु।
उववासु जासु अह जिणकहिउ परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ
तहु दुम्महवम्महणिम्महहो [illegible]वाउ करेवि सयंपहहो।
सिरिसेणसुएण समिच्छियउ अणगारत्तणउं पडिच्छियउ।
छुडु केसभारु आलुंचियउ छुडु करणावियारु वि खंचियउ।
तामायउ पणवहुं परमजइ महिहरु णामें खयराहिवइ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ॥
वेभइएं णवपावइएं महुं णिव्वायवि जोइयउ॥ ७॥

8

बद्धउ णियाणु परिसिय जहिं कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं।
जइ अत्थि किं पि रिसिधम्मफलु तो होउ रज्जु विद्दवियखलु।
ना तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे कालउ विसहरु तहु लग्गु करे।
रुहिरुल्लउ धारहिं परिगलिउ धरणियलि कलेवरु रुलुघुलिउ।
गुरुणा भवपासणासकरइं कहियाइं पंचपरमक्खरइं।
असुथामु विसेणं झडत्ति हउ गउ जीउ ईसिउवसमियरउ।
अलयाउरि रायहु तणइ घरे उप्पण्णु मणोहराहि उयरे।
सो एहु महाबलु भोयरसु णउ मुयइ तेण सणियाणवसु।

घत्ता—मिच्छत्तें मणकुडिलत्तें अवरु णियाणणिबंधणेण॥
जगु ताविउ आवइ पाविउ णं वणगयउलु बंधणेण॥ ८॥

६ MB कट्ठतिणु. ७ MBP मलहरु वि मलेण. ८ P °सेणु सुएण. ९ MBP तात्रायउ. १० MP मुहु. ११ MBK णिव्वाइवि.

8. १ MBP परियलिउं. २ P झडत्ति विसेण. ३ P जीविउ इसिउवसामियउ.

11 णवपावइएं नवप्रव्रजितेन जयवर्ममुनिना.

8. 6 *b* ईसिउवसमियरउ ईषदुपशमितरजाः.

9

णेत्थित्तविवाइहिं दुम्मइहिं संभिण्णमहामइसयमइहिं ।
भुयदंडिहिं चप्पिवि पेल्लियउ अप्पाणउं कद्दमि घल्लियउ ।
पइं कड्ढिवि सुंचिवारिहिं ण्हविउ उच्चाइवि सीहासणि थविउ ।
णिसि सिविणइ अज्जु णियच्छियउ तुह णाहें दुरिउ दुगुंछियउ ।
सुत्तुट्ठिउ काइं मि णउ चवइ अच्छइ चिंताऊरिउ णिवइ ।
दिट्ठउ णिमित्तु तं णउ कहइ आगमणु तुहारउ मणि महइ ।
अचिरेण जाहि पहुमंदिरहो भमरु व भमंतु इंदीवरहो ।
जा ण कहइ सो पत्थिवु सुयणु ता पहिलउ सिविणउं तुहुं जि भणु ।
अण्णु वि लइ दुक्की खयणियइ एवहिं सो एक्कु मासु जियइ ।
पडिवज्जइ धम्मु म भंति करु दिवसहिं होसइ तेलोक्कगुरु ।
संबोहहि जाइवि तुरिउं तुहुं पावेसइ भव्वु अणंतु सुहुं ।
तं णिसुणिवि जइवरबोल्लियउ णियहियवउ दुक्खें सल्लियउ ।
साहारिवि सुमरिवि जिणवयणु आलोइवि गमणिच्छइ गयणु ।

घत्ता—रिसि संसिवि बे वि णमंसिवि लहु संचल्लिउ मंतिवरु ॥
पहु पविमलु गुरु दंसणजलु तण्हइ जोयइ चोमसरु ॥ ९ ॥

10

तावेत्तहि णहयालि णिव्वडिउ खेयरु खगवइदिट्ठिहि चडिउ ।
चिंतइ सो बहुविहु भिण्णमइ किं गिरिवरु णं णं खयलगइ ।
किं घणु णं णं पडिखलियमरु किं पक्खि ण एहु पलंबकरु ।
इय जाम कमेण विवेइयउ ता बुद्धु समीवु पराइयउ ।

9. १ MBP मिच्छत्तविवाइहिं. २ MBP सुइवारिहिं. ३ P सिविणउ अज्ज. ४ MBP बुहमंदिरह. ५ MB खयणिवइ. ६ MBP गयणिच्छइ गमणु.

10. १ MBP ता एत्तहि. २ MB बहुविह. ३ MB खयरगइ. ४ MBP णिवेण णिवेइयउ. ५ MBP समीउ.

---

9. 1 *a* णत्थित्तविवाइहिं नास्तिकविवादैः 9 *a* खयणियइ क्षयस्यावश्यभावः. 13 *b* गमणिच्छइ गमनेच्छया.

10. 1 *a* णिव्वडिउ प्रकटीभूतः. 2 *b* भिण्णमइ नानामतिः; *b* खयलगइ खतलगतिः. 3 *b* पडिखलियमरु प्रतिहतवातः

उट्ठिवि आलिंगिउ णिववरेण तेण वि णिवुं पणविउ णियसिरेण ।
पुणु भणिउं अउव्वु पसाउ किउ किंकरु हउं परंमुण्णइहि णिउ ।
ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ पइं जीवियव्वु महु रक्खियउ ।
मंतें पउत्तु भो णउ रहमि पइं दिट्ठउ दंसणु हउं कहमि ।
चंप्पियउ जेहिं ते जड कुगुरु जो पंकु तं जि दुग्गइविहुरु ।
जं जलु तं जिणवरिंदवयणु धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु ।
हरिवीढारोहणु सुगइसुहुं पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥
सहुं सासें एक्कें मासें आउ तुहारउ परिंगलइ ॥ १० ॥

11

ता भणइ महाबलु रयविरमु कल्लाणमित्तु बंधउ परमु ।
तुहुं बप्प मज्झु दाहिणउ करु आलग्गणखंभु सुसंतियरु ।
आसण्णमरणु किं तउ करमि हउं एवहिं संणासिण मरमि ।
इय जंपिवि मउलियकरयलहो पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइबलहो ।
परियणसयणाइं खमाइयइं मुंणिभावणसुत्तइं भावियइं ।
तणुमणवयसिरइं वि मुंडियइं इंदियइं खगिंदें दंडियइं ।
मलभरियइं चरियइं छंडियइं मायामिच्छत्तइं खंडियइं ।
णीसेसं परिग्गहु परिहरिवि अरहंतु भडारउ संभरिवि ।
पच्छा घुलंतसाहारवणि थिउ सहससिहरि जिणवरभवणि ।

घत्ता—अहिसित्तइं सुद्धंपवित्तइं जिणपडिबिंबइं पुज्जियइं ॥
हयभमरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ. ७ P परमुण्णइ णिहिउ. ८ B चंपियउ. ९ B परियलइ.

11. १ MBP आसण्णु मरणु. २ MBP चरमि. ३ MBP संणासणु करमि. ४ M णियभावण°. ५ MBP णीसेसु. ६ MBP पुण्णपवित्तइ.

6 *b* परमुण्णइहि णिउ परमोन्नतिं नीतः. 8 *b* दंसणु स्वप्न..

11. 9 *b* सहससिहरि सहस्रशिखरे.

12

कमकमलपडियभुवणत्तयहो उब्भासियसियछत्तत्तयहो ।
तियसिंदविंदवंदियपयहो पारद्ध पुज्ज परमप्पयहो ।
उक्खित्त चरुय पीणी[1]य भूय माया इव उच्चाइय धूय[2] ।
हत्थिहडा इव घंटामुहल वरणरवइसेवा इव सहल ।
जलणिहिवेला इव सरयणिय वेसा इव दरिसियद[3]प्पणिय ।
तरुराइ व विविहकुसुमथइय णहलच्छि व पउरकेउछइय ।
घम्मा इव दित्तदीवसहिय सु[4]सिहरि व चंदणमहमहिय ।
अट्ठाहइं महिवि जिणाहिवइ बावीस दिवस संणासगइ ।
पाउग्गमरणविहि तेण कय सुहझाणारंभे प्राण[5] गय ।

घत्ता—ईसाणइ स[6]ग्गविमाणइ सिरिपहि सिरिकमलिणिभमरु ॥
णिच्छम्में णिउ णियधम्में खणमेत्तेण अजरु अमरु ॥ १२ ॥

13

मणिमइ सुमहंतधंतविलइ उववायस[1]यणि संपुडणिलइ ।
सो मरिवि महाबलु तियसकुले णं वि[2]ज्जुपुंजु जलहरपडले ।
हुउ देउ दिव्वु ललियंगधरु ल[3]लियंगु णाम णं कुसुमसरु ।
वेउव्वियणयणसुहावणिय त[4]वणीयतेय ओहावणिय ।
बिहिं घडियहिं रंजिय सुरवणिय जिह तणु तिह जोव्व[5]णसिरि जणिय ।

12. १ MBP पीणियभुयहो. २ MBP उच्चाइयधुवहो, T भूय पुत्री धूपश्च. ३ MB °दप्पणय. ४ K omits this line. ५ MBP पाण. ६ MBP सग्गि विमाणइ.

13. १ MBPK °सयण°. २ P विज्जपुंजु. ३ MBP ललियगणामु. ४ MBP तवणीयकंति°. ५ P जोव्वणु.

---

12. 3 *b* मायाइव जननीव; धूयपुत्री धूपश्च. 6 *a* °राइ पङ्क्तिः. 7 *a* घम्मा इव प्रथमनरकभूमिस्तत्संबन्धि तिर्यक्क्षेत्रम्. 8 *a* अट्ठाहइं अष्ट दिनानि.

13. 1 *a* °धंतविलइ ध्वान्तविनाशे. 4 *b* तवणीयतेयओहावणिय सुवर्णदीप्तितिरस्कारिका. 5 *a* सुरवणिय सुरवनिता.

लइ पुण्णविसेसें सावडिउ[6] पाएं सहुं णेउरु तहु घडिउ।
हत्थें सहुं कंकणु मणिजडिउ सीसें सहुं मउडु वि पायडिउ[7]।
मउडें सहुं कुसुममाल चडिय[9] कंठें सहुं सियहारावलिय।[8]
वच्छें सहुं बंभसुत्तु विमलु सहुं कडियलेण कडिसुत्तु चलु।
तहु जम्मविलासपयासणउं सहजायउ णिवसणभूसणउं।
णयणहिं सहुं अणमिसपेच्छणउं[10] लायण्णु भणमि किं तहु तणउं।
घत्ता—णउ रोमइं अट्ठियचम्मइं ण छिरउ[11] णउ मुहि मीसियउ
घणघडिमहि[12] कंचणपडिमहि संणिहु देहु[13] पयासियउ ॥ १३ ॥

14

छुडु देउ णिसण्णउ गब्भहरे णियदिट्ठि देंतु णियबाहुसिरे।
ता दुंदुहि वज्जिय गहिरसर धाइय जयजय पभणंत[1] सुर।
वरिसिय कप्पयरु कुसुमवरिसु अमरंगणगणु णच्चिउ सरसु[2]।
एए के को हं कवणु घरु अवलोयइ णियउरु पाउ[3] करु।
सुत्तुट्ठिउ जिह जा संभरइ ता[4] अवहि तासु मणि वित्थरइ।
बुज्झिउ सइंबुद्धहु संचरिउ संणासु वि जं णरभवि चरिउ।
उट्ठिउ सीहासणि[5] संणिहिउ देवहिं[6] अहिसेउ तासु विहिउ।
जिणु कामकसायविवज्जियउ तेण वि परमेसरु पुज्जियउ।
उरपेल्लिय[7]पीणपयोहरहं[8] चालीससयइं पवरच्छरहं।
णक्खत्तकंतिसंकासणह महएविसयंपहकणयपह।
चिरभवपरिपालियसुद्धवय कणयलय सुहासिणि विज्जुलय[9]।
सो एयहिं सहुं सुहुं तहिं[10] वसइ एक्कें पक्खेण समूससइ।
घत्ता—सुहसाउ परु[11] परमाउ जलहिमाणवित्थरिएण[12] ॥
सो जीवइ एक्कसु[13] जेमइ वरिससहासें भरियएण ॥ १४ ॥

६ M सपडउ; BP संपडिउ. ७ B पायपउ. ८ MBP add after this: कण्णें सहुं कुंडलु विप्फुरिउ. ९ MBP चलिय. १० MBP आणिमिस°. ११ MBP सिरउ. १२ T घणणिविडं. १३ MB देउ.

14. १ P पभणति. २ MP सारिसु. ३ MRP पाय. ४ MBP तो. ५ P सिंहासणि. ६ MB देविहिं. ७ M घरि, BP उरि. ८ P °हरिहं. ९ M बिज्जुलिय. १० MBP सहुं तहिं. ११ MB थिरु; P थियउ १२ MBP °वित्थरियिएण. १३ M एक्कुसु.

14. 10 *a* संकासणह सदृशनखाः. 14 एक्कसु एकवारम्.

15

सो रयणिउ सत्त समुच्छियउ[1] सुहकारि ण केण णियच्छियउ ।
तहु पल्लपुं[2]हुत्ताउसि वणिय मालूरपीणपीवरथणिय ।
कालेण चिरंतण अवहरिय अण्णेक्क सयंपह अवयरिय ।
तहि अइरहल्लइ कामेण रसु तहिं दिट्ठिसियत्तणि णिययजसु ।
तहि णाहिदेसि गहिरत्तणउं तहिं भउंहाजुइ कुडिलत्तणउं ।
तहि थणजुयलइ कढिणत्तणउं तेण जि संणिहियउं अप्पणउं ।
मंदरकंदरि कीलियखयरे कुंडलरुजगद्दिगुहाविवरे ।
तहि तणुपवियारें गय दिवस तहु ललियंगहु रइरमणवस ।
घत्ता—भरहाहिव णिसुणि महाणिव रिसि[3]हिं पुरा[4]णहिं वज्ज[5]रिए ॥
गयकालइ अइअसरालइ पुप्फयंतगइसंभरिए[6] ॥ १५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाबलसंणा[7]समरणं ललियंगुप्पत्ती णाम
एक्कवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २१ ॥
॥ संधि ॥ २१ ॥

15. १ B समिच्छियउ. २ MBP °पहुत्ताउस धणिय. ३ Tp रिसह. ४ MB पुराणइं; P पुराणिहिं. ५ MBP वज्जरिय; T वज्जरइ. ६ MBP °सभरिय, T मभरइ. ७ MBPK सणासण.

15. 1 *a* समुच्छियउ समुच्छ्रितः उच्चः. 2 *a* पल्लपुहुत्ताउसि पल्य पृथुत्व आयुर्यस्याः; वणिय वनिता. 9–10 भरहाहिवेत्यादि—गौतमस्वामी श्रेणिकं कथयति । हे भरताधिप श्रेणिक, निशृणु त्वम् । पूर्वगते कालेऽतीवासराले अतिशयेन बहुतरे भरतो नष्टः । रिसह ऋषभनाथस्तस्य पुराणानि वज्जरइ कथयति । तस्य च कालस्यानोपायभूतां (?) पुष्पदन्तगतिं चन्द्रादित्यगतिं स्मरति सम्प्रधारयति । अथवा पुष्पदन्तजिनस्य गतिं मुक्तिं तत्प्रापकमार्गं वा सभरइ धरति पुष्णाति वा । रिसिहि मि ति पाठे ' गए कालए अइअसरालए तह तणुपवियारें गयदिवसहो ललियंगहो ' इति भरताधिप निशृणु । कथंभूते काले पुराणए वज्जरिए ऋषिभिर्गणधरदेवादिभिः पुराणे कथिते तत्कालनयनार्थं पुष्पदन्तगतिः सस्मृता ' इति.

XXII

सज्जणमणसंताविरइं रइसुहवारणाइं दुप्पेच्छइं ॥
दिट्ठइं दुक्कियदुमहलइं ललियंगेण मरणणेवच्छइं ॥ ध्रुवकं ॥

1

दुद्धरखयकालें पडिपेल्लिउ दिट्ठउ कुसुमदामु[1] ओहल्लिउ ।
मउ देवंगवत्थु[2] दरमइलिउ[3] दिट्ठउ अंगु किं पि मलकालिउ[4] ।
परिवड्डिउ[5] भोएसु विरायउ आहरणोहु दिट्ठु णित्तेयउ ।
परियणु सोयविरसु जंपंतउ दिट्ठउ सुरतरुवणु कंपंतउ ।
मोहियमणु माणिणिउ णिरिक्खइ जा सो माणसदुक्खें सुक्खइ[6] ।
ता तियसगुरु को वि तहिं भासइ णियइणिओएं सक्कु वि णासइ ।
भो ललियंग पमल्लहि भयजरु तिहुयणि णत्थि[7] को वि अजरामरु ।
सुयरहि[8] जं सइंबुद्धें सिट्ठउ जसु सेवाहलु एत्थु जि दिट्ठउ ।
तं जिणपायपोमु सब्भावें जेण[9] विमुच्चहि भवकयपावें ।
दुल्लहाइं णरत्तणहाणिहि मा पडिहीसि बप्प मिगंजोणिहि[10] ।
संसारंधिवमूलुम्मूलइं मा[11] होहिंति दूरि वयसीलइं[12] ।

घत्ता—जायइं पुणु वि पणट्ठाइं रंगणडा इव भावविचित्तइं ॥
मेल्लिवि सासय[13]सिद्धिसिरि दुल्लहाइं णउ होंति सुरत्तइं ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza –

मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम ।
निर्मलनरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा
भारतमल्ल सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

GK do not give it.

1. १ MB °दाम. २ MB °वत्थ. ३ MBP दरमालियउ. ४ MBP °कलियउ. ५ M परियड्डिय; B परिवाड्डिय. ६ P दुक्खइ. ७ MBP को वि णत्थि. ८ M सुम्वरहि, BP सुमरहि. ९ MBP जेण जि मुच्चहि भवभयपावें. १० MBPT मिग°. ११ MBP मा हो होंति. १२ MBP वयसीलइं; K व्रयसीलइं. १३ MB सासयरिद्धि.

---

1. 2 °णेवच्छइ चिह्नानि. 3 *b* ओहल्लिउ म्लानम्. 4 *a* दर° ईषत 8 *b* णियइणिओएं भवितव्यतासंसर्गेण.

2

ता ललियंगें तं आयण्णिवि वारवार णियहियवइ मण्णिवि ।
तित्थइं जाइवि सुहतित्थंकरु चंपएहिं पयं परमसुहंकरु ।
कुवलएहिं कुवलयउद्धारणु कुंदहिं कुंददसणु सुहकारणु ।
सिंदूरेहिं दूरुज्झियवम्महु मंदारहिं दारासाणिम्महु ।
वासंतहिं वसिहु जियविग्गहु जूहियाहिं रिसिजूहपरिग्गहु ।
तिलयहिं तिजगतिलउ जो जाणिउ सुरहिं ण मेरुहु मेरुहु ण्हाणिउ ।
बंधूएहिं वंधविद्धंसणु बउलहिं अवउलकेवलदंसणु ।
घणसालेहिं सलिलसुंसालिलघणु चंदणेहिं पसमियणिच्चंदणु ।
धूवंहडेहिं णिहीहडदावउ दीवएहिं तेल्लोक्कहु दीवउ ।
मालईहिं मालइयामहिरुहु जिणु पुज्जियउं तेण पूयारुहु ।
अच्चुयकप्पजिणालउ जाइवि चेईतरुतलि जइवइ झाइवि ।
जीविउ मुक्कउ खणि ललियंगें अंगु विलीणउं पुण्णविहंगें ।

घत्ता—जंबूदीवहु मंडणिय मणुयजणाणि चिंतियसुहदाइणि ॥
मेरुहि पुव्वविदेहि थिय णाम पुक्खलावइ जणमेइणि ॥ २ ॥

3

कुरारिंदविंददलवट्टणु उप्पलखेडु णाम तहिं पट्टणु ।
साहुद्धरणु जेत्थु णंदणवणि णउ णंदंति कहिं मि दीसइ जणि ।
जेत्थु लोउ विणएणोणल्लउ उद्धाणणु एक्कु जि करहुल्लउ ।

2. १ MBP °तित्थकर . २ M परु, B पर ३ BP °सुहकर. ४ MBP सिंदूरहि. ५ P °णिम्मुहु. ६ PT वासंतिहि. ७ P मेरुहि मेरुहि ८ MPK बधणविद्धसणु. ९ MB अवियल°, P अविउल°; T अवउल°. १० P °सुललिय°. ११ धूवडहेहि. १२ P पुज्जिउ. १३ MBP पुज्जारुहु. १४ MBPK °विहगें, T °विहगे.
3. १ M उप्पलु खेडु. २ MB णामें, णामु ३ T साहुलाभओणल्लउ.

2. 4 *b* दारामा° कलत्राभिलाषः. 5 *a* वासतहिं अतिमुक्तकैः. 7 *b* अवउलकेवलदंसणु अशरीरग्राहि सिद्धस्वरूपप्रापक केवल केवलज्ञान यस्य. 8 *a* घणसालहि कर्पूरैः; *b* °णिच्चंदणु नित्याक्रन्दनम्. 10 *a* मालइया° लक्ष्मीलतिका. 12 *b* पुण्णविहगें पुण्यक्षयेण.

3 2 *a* साहुद्धरणु शाखानामुद्धरणम्. 3 *a* विणएणोणल्लउ विनयेन प्रणतः; *b* करहुल्लउ उष्ट्रः.

करि कंकणु बंधणु पँइ णेउरु　　　　अण्णु ण जेत्थु अत्थि दुक्खाउरु ।
खलु तेल्लियहरि णिरु णिण्णेहउ　　　　अण्णु सव्वु जहिं सुयणु सणेहउ ।
वाहि लिहिय भित्तिहि चित्तयरें　　　　दीसइ तणुहि ण णरवरणियरें ।
सरसंधाणु जेत्थु वायरणइ　　　　णउ परयक्कभीमि रायरणइ ।
जहिं हयवरु हरि णउ णारीयणु　　　　वंसु जि छिद्दसहिउ णउ पुरयणु ।
कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि　　　　अंसिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।
अंजणु णयणि जेत्थु ण तवोहणि　　　　णायभंगु गारुडि ण धणज्ञणि ।
संकरु पहु ण वण्णविहिसंकरु　　　　दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।
जहिं कुंजरु भण्णइ मायंगउ　　　　णउ माणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहुं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥
जहिं कलहंसहं गइपसरु पंगणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

4

वज्जबाहु णामें तहिं णरवइ　　　　रिद्धिइ जेण परिज्जिउ सुरवइ ।
जासु कित्ति गय दसहिं दियंतहिं　　　　आरूढी वरदिक्करिदंतहिं ।
जासु खग्गु वेरंतु वियंभिउ　　　　जासु रज्जु ण परेहिं णिसुंभिउ ।
जासु कोसु चाएण पवित्तिउ　　　　जेण तिजगु सुकुडुंबु वि चिंतिउ ।
जेण गोत्तु धम्मेणुज्जोइउ　　　　जेण चित्तु जिणपयजुइ ढोइउ ।
पेम्मसासवासालवसुंधरि　　　　तासु देवि णामेण वसुंधरि ।
सग्गहु गब्भवासि अवयरियउ　　　　णवमासहिं उयरहु णीसरियउ ।
ताहि तेण जणियउ ललियंगउ　　　　णंदणु णं णरवेसु अणंगउ ।

४ M पउ, B पए. ५ P अत्थि जेत्थु. ६ MBP तेल्लियगिहि. ७ B णरवइणियरें. ८ MB परचक्कभीमरायरणइ; P परयक्के भीम° ९ MB आसि अप्पेउ. १० MBP माणउ कया वि. ११ MBP मंदिरपगणवाविहि.

4. १ MBP पराजिउ. २ MBP दिसहिं. ३ MB खग्गि धीरत्तु. ४ MB पवत्तिउ. ५ MBP सकुडुंबु व. ६ MBP तहु वल्लह महएवि वसुंधरि.

---

7 *a* सरसंधाणु स्वरसंधिः, पक्षे, शरसंधानम्; वायरणइ व्याकरणे. 8 *a* हयवरु अश्ववर, हतो वरो यस्य नारीगणस्य; *b* छिद्द° छिद्रं दोषश्च. 9 *a* कुणडि कुत्सितनटे, विवणीवहि अट्टमार्गे. 10 *a* अंजणु अञ्जनं पापं च; *b* णायभंगु सर्पभङ्गो न्यायभङ्गश्च. 11 *a* संकरु पहु प्रभुरेव सुखकारी शंकरो न तु वर्णसकरः; *b* दोहउ गोदोहकः, द्विधवः स्वामिद्वययुक्तः. 12 *b* मायंगउ मायां गतः. 13 कलहं सकण्टकम्.

4. 6 *a* पेम्मेत्यादि—स्नेहधान्यस्य वर्षयुक्ता भूमिः.

कुडिलहिँ केसहिँ उज्जुयगत्तउ रहसहिँ जंघहिँ दीहरणेत्तउ ।
किसमज्झेण थोरभुयजुयलें वियडें कडियलेण वच्छयलें ।
सत्तें णाहि सरें गंभीरें छज्जइ सीसें छत्तायारें ।
कोमलपयहिँ अकोमलहत्थहिँ अवरेहिँ मि लक्खणहिँ पसत्थहिँ ।

घत्ता—लक्खणपुंजु व पुंजियउ एक्कहि विहिणा अकयविहायउ ॥
वज्जंकियकरचरणयलु वज्जजंघु वज्जोवमकायउ ॥ ४ ॥

5

सो कुमारु तहिँ वड्ढइ जइयहुं णवरीसाणकप्पि ता तइयहुं ।
रुयइ सयंपह पियविरहालस हा ण सुहासि मज्झु सर माणस ।
हा हे सग्गलोय विच्छायउ विणु णाहेण णिरुव्वसु जायउ ।
हा कप्पद्दुम किं किर फुल्लहि पइमरणे वि कट्ठ णो हुल्लहि ।
हा तुंबरु गाइयउं पहुच्चइ रमणें विणु महु किं पि ण रुच्चइ ।
हा ललियंगदेवु कहिँ पेच्छमि हा हे सांवि[3] केंव कहिँ अच्छमि ।
को वारइ भवियव्वु हवंतउ इह देवहु वि कम्मु बलवंतउ ।
एम्व चवंति विमुक्कुच्छाहिय दढधम्में सुरेण संबोहिय ।
तावसघरिणि व मंदरवण्णी मंदरसेलहु मंदरवण्णी ।
गय सउमणससुरासाजिणहरि मुइय सरारिबिंबु धारिवि सिरि[6] ।
पुव्वविदेहि तहिँ जि सकमलसर णयरि पुंडरिंगिणि पंडुरघर ।
घत्ता—जहिँ घरसिहरि पडंतएण घरसिहरोवरि णियडि विलंबिउ ॥
णवजलकणचक्खंतएण नूसिवि मेहु मऊरें चुंविउ ॥ ५ ॥

७ MB उज्जुयगत्तहिँ; P उज्जयगत्तहिँ. ८ MBP दीहरणेत्तहि, ९ MBP सुत्तें १० MBP लक्खणेहि.

5. १ P तुंबरु. २ MBP ललियगु देउ. ३ MBT सामि and gloss in T सखि. ४ MBP भवंतउ. ५ P उरि. ६ MB ° सरि. ७ M णयर. ८ MB °घरि. ९ P णिवडि.

11 *a* सत्तें सत्त्वेन. 13 अकयविहायउ अकृतविभाग .

5. 1 *b* णवरीसाणकप्पि केवलईशानकल्पे. 6 *b* सांवि स्वामिन्. 9 *a* मंदरवण्णी मेरुसदृशवर्णा; *b* मंदरवण्णी स्तोकरमणीया 10 *a* °सुरासा° पूर्वदिशा, *b* सरारिबिंबु स्मरारिर्जिनस्तस्य बिम्बम्. 12 विलंबिउ स्थितः.

६

णिवेसेण रम्मा णहालग्गहम्मा ।
मुणिंदेहिं सोम्मा जिणुद्दिट्ठधम्मा ।
धणेणं समिद्धा जसेणं पसिद्धा ।
सुएणं पबुद्धा वएणं विसुद्धा ।
घणारामवंती विसाला वसंती ।
सुपायारदुग्गा कयाणेयमग्गा ।
अणेयादुवारा अणेयप्पयारा ।
जणेणं महत्था कएणं कयत्था ।
भएणं विमुक्का सया जा णिरिक्का ।
इमाए पुरीए अमेओ सिरीए ।
महेणं महंतो गुणी वज्जदंतो
पहू चक्कवट्टी सुमग्गाणुवट्टी ।
कयंतो व्व दंडी सई तस्स चंडी ।

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विउलि वच्छयलि विलग्गी ॥
झत्ति झसंकें कुद्धएण मुक्की भल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥

7

अरिहरिणोहवियारणवाहहु तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
सिरि व सिरिप्पहसुरहरवासिणि चविवि सयंपहतियसविलासिणि ।
सिरिमइ णामें तणुरुह हूई णाइ कुमारहं कामविसूई ।
पाय सकुंकुम किं तहि वण्णमि वम्महमुद्दावेसु व मण्णमि ।

6. १ P जिणोदिट्ठ°. २ B omits this foot. ३ MP विबुद्धा. ४ MBP add after this: गुणाण पवित्ता. ५ MBP add after this: महातेयवती. ६ MBP सपायार°. ७ MBP अणेयदुवारा. ८ B रएण. ९ P इमेया सिरीए.

7. १ B °वावद्दु.

6. 1 *a* णिवेसेण रचनया. 9 *b* णिरिक्का चोररहिता. 11 *a* महेणप्र तापेन. 13 *b* चंडी भार्या.
7. 2 *a* सिरिप्पहसुरहर° श्रीप्रभविमानम्. 4 *b* °मुद्दावेसु °मुद्रावतारः

तंबइं पोमरायरुइचोक्खइं रत्तउ किं रावंति ण णक्खइं ।
पेच्छिवि तरुणिजाणुसंधाणइं मुणि वि करंति मयणसंधाणइं ।
ऊरुवाहियालिअंतरि चुउ कासु ण चलइ बप्प मणझेंदुउ ।
कासु ण णिण्णासिउ कयकित्तणु सोणीगरुयत्तणि ण गुरुत्तणु ।
मयरद्धयहुयवहधूमावलि रोमावलि तरुणहं हिययावलि ।
णाहिकूउ रइवइरसलालसु तिवलिभंगु वयभंगपयासणु ।
थणथड्ढत्तें विडथड्ढत्तणु अवसें णासइ विसेण विसत्तणु ।
वम्महभूमि जासु देही करु ताहु जि कामकुंडु थिउ सुहयरु ।

घत्ता—पोप्फलिकंठसमाणहो कंठहु को ण होइ उक्कंठिउ ॥
मुहरसु मुद्धहि सिद्धरसु सुहसुवण्णसिद्धियरु परिट्ठिउ ॥ ७ ॥

8

बहुवण्णहिं णयणहि कयरायउ रत्तउ एक्कवण्णु जगु जायउ ।
कासु ण हित्तउ किर धुत्तत्तणु भउंहावंकत्तें वंकत्तणु ।
अंगोवंगपएसघुलंतहं केसपासु पासु व परचित्तहं ।
जाहि रूउ सुरगुरु ण वियक्कइ जा वण्णहुं फणिवइ वि ण सक्कइ ।
सा जामच्छइ मउलियणेत्ती सिरिहरि सत्तमभूमिहि सुत्ती ।
णिसि ससहरकरहिमलव लेंती सालसु अंगविलासु वहंती ।
मणहरवणु जसहरु जिणु आयउ कहिं मि ण मायउ देवणिकायउ ।
वीणावंसमउंदणिणद्दहिं णाणाथोत्तवित्तथुइसद्दहिं ।
ता उट्ठिउ कलयलु गरुआरउ वियलिउ कण्णहिं णिद्दाभारउ ।

२ MK कियकित्तणु. ३ MBPK सोणीगरुयत्ते ण. ४ MK गुरुयत्तणु. ५ M reads this line as: अवसें णासइ विसेण विसत्तणु, थणथड्डत्तें विडथड्डत्तणु. ६ P पिउ. ७ MB कोकिलकंठ°, P कोकिलिकंठ°.

8. १ MP विहुवण्णहिं रयणहिं; B विहवण्णहि रयणहिं. २ M हित्तइं. ३ MBK केसपास. ४ MBP सुरगुरु वि ण अक्खइ. ५ B समाइउ. ६ P °णिणायहिं. ७ B ° थुइभद्दहिं.

6 *b* मयणसंधाणइं कामसंकल्पाः. 7 *b* °झेंदुउ कन्दुक. 8 *a* कयकित्तणु कृतव्यावर्णनम्. 10 *a* रइवइरस° कामरसः. 11 *a* विसेण विसत्तणु विषेणेव विषत्वं नश्यति.

8. 8 *a* ° मउंद° मृदङ्गः.

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तहिं जम्मावरणइं खणि ओसरियइं ॥
सग्गभवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

9

हा ललियंग देव पभणंती पडिय स महियलि तणु विहुणंती ।
मुच्छिय सिंचिय सलिलणिवाएं आसासिय चलचामरवाएं ।
उट्ठिय णीससंति अइरीणी दइयविओगवेयविद्दाणी ।
वम्महु अट्ठ वि अंगइं तावइ घित्त जलद्द जलइ जणियावइ ।
मलयाणिलु पलयाणलु भावइ भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ ।
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु तहिं किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।
ण्हाणु सोयण्हाणु व णउ रुच्चइ वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।
असुहारु व आहारु ण गेण्हइ णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ ।
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ तंबोलु वि बोलु व कयतावउ ।
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ परहुयलविउ महुरु णं महुरउ ।
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु सवलहणउं सबलहणु व दिहिहरु ।
चंदणु इंधणु विरहहुयासहु ता सहीहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छीमइइ सह सपियाइ पईहरवाहें ॥
पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुव्वभवंतरु.

9. १ MLP पडिय महीयलि. २ MBP °णिहाएं. ३ MBP उट्ठी. ४ MBPK °विओय°. ५ MBP अट्ठइं अगइं. ६ BP पलयाणिलु. ७ MBP परुहुय°. ८ MBP विरहु. ९ M सहीइ.

9. 2 *a* णिवाएं °निपातेन. 3 *b* दइयेत्यादि– दयितेन प्रियेण सह वियोगस्तस्य वेग आवेशः वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णा. 5 सणु शणबन्धनम्. 6 *a* सयदलु शतखण्डम्; *b* सयदलु कमलम्. 7 *b* वसणु वस्त्रम्, वसण° व्यसन दुःखम्. 8 *a* असुहारु प्राणहारकः. 10 *a* अरइयरउ अरतिकरम्. 11 *b* सवलहणउ समालम्भनं चन्दनादि; सबलहणु स्वबलघातकं मृतकस्नान वा. 13 सपियाइ स्वप्रियया; पईहरवाहें प्रदीर्घबाष्पेण.

10

सुयंरिउ मुद्धइ पुव्विल्लउ वरु किं जाणहुं सुरु किंणरु किं णरु ।
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि पंडियधाइहि पुत्ति समप्पिवि ।
गउ धरणीसु णिहेलणु जावहिं पहरणउववणवालेय तावहिं ।
आइय दोहिं मि कहिउ णवेप्पिणु देव देव णिसुणहि मणु देप्पिणु ।
जसहरासु उप्पण्णउ केवलु आउहसालहि चक्कु णिरग्गलु ।
ता राएं सीहासणु मेल्लिवि सिरमउडेण महीयलु पेल्लिवि ।
भणिउ जयहि अरहंतभडारा जय संसारमहण्णवतारा ।
जयहि तिसल्लवेल्लिणिल्लूरण सविणयसुयणमणोरहपूरण ।

घत्ता—तिमिरु हणंतु करंतु दिहि उवसमवंतहु वियलियगव्वहो ॥
तंबुग्गमियउ दिवसयरु णाणविसेसु व सोहइ भव्वहो ॥ १० ॥

11

दंतघायगिरिभित्तिवियारणि कण्णतालअलिवारणि वारणि ।
कुलिसदसणु कयमणतमणिरसणु आरुहेवि ससिसियसुइणिवसणु ।
समवसरणु गउ सेण्णें सहियउ अण्णु वि जो एहउ सो सहियउ ।
दिट्ठु असोयहु मूलि असोयउ कुसुमंचिउ हयकोसुमसायउ ।
दिव्ववाणि मुणि णिव्वाणेसरु अमउ मयारिवीढि संठिउ परु ।
चलचामरु णिच्चामरसेविउ भामंडलरुइमंडलदीवउ ।
दुंदुहिरउ दुहिरवणिव्वारणु लोयसारु संसारुत्तारणु ।
छत्तसमासिउ छत्ततियालउ अतियालउ संवुद्धतियालउ ।

10. १ MBP सुमरिउ. २ MBP णिहेलणि. ३ MBP °वालहि. ४ MBP आविवि. ५ MBP सुणिम्मलु. ६ MBP ता उग्गमियउ.

11. १ P णिच्चामरु. २ P दुंदहि°. ३ MBP दुहरव°; T दुहिरव°.

11. 1 *b* °ताल° व्यजन°. 2 *a* कुलिसदसणु वज्रदन्त.. 3 *b* सहियउ आत्महित., 4 *b* कोसुमसायउ कामः. 5 *b* मयारिवीढि सिंहासने. 6 *b* °मंडलदीवउ लोकप्रकाशक°. 7 *a* दुहिरव° दुःखितशब्द°. 8 *a* छत्ततियालउ छत्रत्रिकयुक्तः, *b* अतियालउ स्त्रीरहितः अनिकान्तकालो वा, °तियालउ °त्रिकालः

कमलासणु केसउ जगि सो हरु तित्थणाहु णामेण जसोहरु ।
वेउ अणिंदिउ वंदिउ भावें वड्ढंतेण विसुद्धें भावें ।
अवहिणाणु राएं उप्पाइउ[४] रूवि दव्वु[५] णीसेसु वि वेइउ ।

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जइ ॥
तिह जिणभावें भावियहो भवियहु णाणभाउ संपज्जइ ॥ ११ ॥

12

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु तित्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।
आलिंगिवि अंके वइसारिय सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।
चवइ णिवइ थिरु पइं जाणंतउ अच्चुइ सुरवरिंदु हउं होंतउ ।
बीयइ कप्पि विमाणि णिवासिणि[१] तुहुं ललियंगहु तणिय विलासिणि ।
महुरालाविणि[२] पाणपियारी एवहिं हूई धूव महारी ।
मा झिज्जहि सो तुज्झु मिलेसइ हारु व उररुहजुयलि घुलेसइ ।
बालहि[३] मइ वीलइ पच्छाइय पुणु वि धाइ पहुणा संकेइय ।
दुत्थिउ जडयणु[४] कूरसरावहु गोगाइहि खरु खरहु सरावहु ।
उल्हाविय[५]विओयसंतावहु णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।
विबुहहु बुहु गोवालु वि गोवहु महिलहि महिल जाइ सब्भावहु ।
णिवेण कहिवि दिट्ठंतकहाणउं पुणु दिव्विजयहु दिण्णु पयाणउं ।

घत्ता—आउंचियतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जंपइ ॥
हयगयरहणरपयदलिय जंतें राएं मेइणि कंपइ ॥ १२ ॥

४ MBP उप्पायउ. ५ MB दिव्वु.

12. १ MBP विलासिणि. २ MBP ° लावणि. ३ MB बाल एम वीलइ. ४ MP जडयण. ५ B उण्हाविय°.

---

13 भवियहु भव्यस्य.

12. 8 *b* सरावहु सशब्दस्य.

13

तरलतमालतालतालीघणि गइ णरिंदि णंवकंकेल्लीवणि ।
फलिहसिलायलम्मि आसीणी परभवपियसंभरणें झीणी ।
सुहरु महारुहाउ संचालिवि कोमलकरकमलें तणु लालिवि ।
एक्कहिं दिणि कराणिहियकवोली पंडुगंडविलुलियचिहुराली ।
णवकयलीकंदलसोमाली कंचुइइ आउच्छिय बाली ।
पुत्ति पुत्ति मोणव्वउ छंडहि पुत्ति पुत्ति तणु तणुलय मंडहि ।
पुत्ति पुत्ति किं अप्पउ दंडहि ण्णवीडि दंतग्गहिं खंडहि ।
मायहि गुज्झु काइं किर रक्खहि मज्झु वि किं णियमणु ण समक्खहि ।

घत्ता—तं आयण्णिवि रायसुय णीससंति णियजम्मु पयासइ ॥
धरणि व वेल्लिहि मज्झु तुहुं जणणि माइ तुह काइं ण सीसइ ॥ १३ ॥

14

धायइसंडि मेरुपुव्विल्लइ पुव्वविदेहि देसि गंधिल्लइ ।
भूयगाउं जिह लोयपसिद्धउ पाडलिगाउं अत्थि धणरिद्धउ ।
गोरसड्डु जो तवसि वसिल्लु व करिसणजाणउ जो सुंकरिल्लु व ।
पविउलखल्लु वि ण जो खलसंकुलु जो हलहरु वि भुवणि ण भणिउ बलु ।
जो करि व्व णरवइढोइयकरु बहुकंकणु णं वरकामिणिकरु ।
कच्छुज्जलु णं गिहिवयधारउ णियवइगविखउ णं सेवारउ ।
णागयत्तु णामें तहिं वणिवरु सुरइवहुल्लियाहि वल्लहु वरु ।

13. १ MP तहिं ककेल्लीवणि, B तहिं किंकेल्लीवणि. २ MBP °कयलीसुकंद°. ३ MBP आउच्छी. ४ MBP छड्डहि.

14. १ MB धायइ°, P धाइय°. २ T भूयगामु. ३ MB सकरिल्लु.

13. 1 *a* तरल° दीर्घाः. 5 *b* कंचुईइ पण्डितया धात्र्या. 8 *a* मायहि धात्र्याः.

14. 2 *a* भूयगाउं भूतग्राम. शरीरम्. 3 *a* गोरसड्डु गोरसाढ्यः, पक्षे, गौः वाणी तत्र रसिकस्तपस्वी स्यात्; *b* करिसण° कर्षकः, पक्षे, हस्तिशब्दः, सुकरिल्लु हस्तिपालकः. 4 *a* °खलु धान्यमलनस्थानम्. 5 *b* बहुकंकणु बहुजलधान्यः, पक्षे, बहुसुवर्णवलयः. 6 *b* णियवइ° निजपतिः; पक्षे, निजवृतिः; सेवारउ सेवकः. 7 *b* सुरइवहुल्लियाहि सुरतिरेव वधूस्तस्याः.

णंदु[४] णंदिमित्तु वि सुउ जायउ　　णंदिसेणु तहि गब्भि समायउ।
पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ　　धरसेणु[५] विजयसेणु थणद्धउ।

घत्ता—सिरिवइ सिरिहर वणितणय अवर वि हउं तिज्जी लहुयारी॥
णामें णिण्णामिणि विसम दालिद्दिणि जण[६]विप्पियगारी॥ १४॥

15

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ　　णिक्कलसउ णीरंजणु दीसइ।
णिद्धणु णं घणणासि णहंगणु　　णिक्कणु तोलीरु[१] व सारियरणु।
* णीरसु कव्वु व कुकइहि केरउ　　तं[२] जिह तिह पुणु णिरलंकारउ।
अट्ठभाउ हंडइं दो पियरइं　　कयखलचणयमुट्ठिआहारइं।
कडियलवेढियवक्कलवासइं　　हडहडफुट्टफरुससिरकेसइं।
अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणइं　　कलहंतइं भासियदुव्वयणइं।
पंडुरपविरलदीहरदंतइं　　जावच्छहुं परकम्मु करंतइं।
वारणचरियहु तरुसंछण्णहु　　तावेक्कहिं दिणि हउं गय[३] रण्णहु।
तहिं[४] अंबरतिलयम्मि महीहरि　　विहरंतियइ गहीरदरीहरि।
सरलु[५]हरियपत्तहु तंबिरयहु　　मइं उच्चोलि भरिय[६] माहुरयहु।
अण्णु वि दारुभारु गरुयारउ　　सीसि णिहिउ णं दुक्खहं[७] भारउ।

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं पंतु पलोइउ॥
रयणालंकारहिं विप्फुरिउ[८] जिणु वंदहुं णं सुरयणु[९] आइउ॥ १५॥

16

ता कट्ठभारु　　णं दुक्खभारु।
महियलि घिवेवि　　णरु मइं णवेवि।

---

४ M णदि णंदिमित्तु वि सुउ जायउ; B णादिमित्तु णंदि वि सुउ जायउ; P णंदि णंदीमित्तु वि संजायउ. ५ MBPK वरसेणु. ६ P जणविप्पिय° but adds °मण° in the margin between जण and विप्पिय.

15. १ MBPK तोणीरु. २ M ज जिह. ३ MK गउ. ४ MBP तहिं पुणु अंबरतिलयमहीहरि. ५ MB सरलु. ६ M भरय. ७ MBPK दुक्किय°. ८ MBP फुरिउ. ९ M सुरयणु आइउ; P सुरयणु चल्लिउ.

---

15. 1 *b* णिक्कलसउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलानां चरितमनुष्ठान प्रवृत्तिर्वा.

पुंच्छियउ[१] हेउ कहिं चलिउ लोउ ।
ता तेण वुत्तु सुतिगुत्तिगुत्तु ।
सिद्धत्थकामु जो[२] जित्तकामु ।
जो मुक्कसत्थु मणधरियसत्थु[३] ।
जो बुहणिहाणु गुणमणि णिहाणु ।
धुयमोहवासु तरुमूलवासु[४] ।
जो पांउसेसु[५] चम्मट्ठिसेसु ।
गयसरिरयालि जो सिसिरयालि ।
बहि सयणसाइं जो सुअवसाइं ।
तिव्वुण्हजेट्ठि वइसाहजेट्ठि ।
रवियर विसहइ जोएण सहइ[६] ।
जो मुणिससंकु हयपरमसंकु ।
तहु गंपि वासु पिहियासवासु ।
पणवंति[७] पाय पुच्छंति राय ।
परलोयमग्गु सग्गापवग्गु ।
चिरसंभवाइं जाणइ भवाइं ।
रिसि णाणधारि जिणधम्मचारि ।
इह गिरिवरम्मि सो कंदरम्मि ।
णिवसइ कुलीणि दोगच्चखीणि ।

घत्ता—ता मइं थोरथणत्थलिए दंडिखंडु पसरेप्पिणु थवियउ ॥
पइसिवि साहु महासहहि[८] जइपयजुयलउ भत्तिइ णवियउ ॥ १६ ॥

16. १ P पुछियउ. २ G omits this foot; K however adds it the margin. ३ M मणि धरिय°. ४ B °मूलु. ५ P पावसेसु. ६ MB add after this: वरिसति मेहि, दुहु सहिय देहि. ७ M पणवत. ८ MBP महासहहो.

16. 5 *a* सिद्धत्थकामु सिद्धार्थे मोक्षे कामोऽभिलाषो यस्य. 7 *b* °णिहाणु नृभानुः. 10 *a* गयसरिरयालि गतो नदीना वेगो यस्मिन् काले. 11 *b* सुअवसाइ षडावश्यकादिषु सुष्ठु उद्यतः. 12 *a* °जेट्ठि °महति. 13 *b* सहइ शोभते. 14 *b* हयपरमसंकु हतपरमशङ्कः. 22 दंडिखंडु शतजर्जरं जीर्णं सिवितं वस्त्रम्.

17

तवपहावविंभावियवीसवु　　पुच्छिउं पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।
कवणें दइवें हउं दालिद्दिणि　　हूई दोग्गयगोत्तणियंबिणि ।
कहहि देव तुहुं सव्वउ जाणहि　　दीण वि मइं पियवयणें पीणहि ।
ता पभणइ समणगणपहाणउ　　दीणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।
णिसुणि पुत्ति अक्खमि जम्मंतरु　　आसि कयउ जं पइं कम्मंतरु ।
गामि पलासपुव्वि तहिं गहवइ　　देविलु सुमइ तासु रंजियमइ ।
गेहिणि ताहि धूय तुहुं हूई　　हलिय जुवाणहं णं रइदूई ।
वीयरायसिद्धंतु पढंतहु　　जीवाजीवभेय भावंतहु ।
एक्कहिं दिणि वणि खंतिसणाहहु　　हसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।
अण्णाणइ पइं उप्परि घत्तिउ　　रिसिणा तणुभूसणु व विचिंतिउ ।
किमिकुलपूयरुहिरदुग्गंधउ　　पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।
सुणहकलेवरु दियहि दुइज्जइ　　तेवं जि पुणु वि पदिट्ठु तइज्जइ ।

घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कंदप्पदप्पखयगारा ॥
जो मंडइ जो खंडइ वि बिहिं मि समाणा समणभडारा ॥ १७ ॥

18

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ　　तुह अणुकंपभाउ संजायउ ।
भसणसरीरु घित्तु अण्णेत्तहि　　पइं णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहि ।
पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ　　तेण जि खमभाउ जि संभाविउ ।
ईर्सि समेण मरेवि असुहाउलि　　तुहुं हूईसि एत्थु दुग्गयकुलि ।
धम्में मुक्कहि दुक्कियदुक्खहु　　धम्मु णिसुणि सुह कारणु सोक्खहु ।
फणिच्चरणइं जगि को अहिणाणइ　　परमत्थेण धम्मु को जाणइ ।

17. १ MBP °वासउ. २ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो. ३ MBP पभणइ मुणि समणपहाणउ. ४ MP पइं जं. ५ MBP गाम. ६ MB ललिय°. ७ MBP तेम जि पुणु पइ दिट्ठु. ८ MBP तूसंति.

18. १ MP परिहरियकसायउ; B परिहरिसंकायउ. २ B °भाव. ३ MBP इसि उवसग्गें मरिवि. ४ M असुहाहलि. ५ MB दुग्गम°.

17. 7 *b* हलिय कर्षकस्त्री.

18. 1 *a* परिहरियसकायउ परित्यक्तस्वशरीरः.

लोइयधम्मु होई जलण्हाणें वीरपुरिसभंडणवक्खाणें ।
धम्मु होइ पुणु पुँणु अच्चवणें पाहाणुप्परि पत्थरठवणें ।
धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि धम्मु होइ सुँरहीतणुफंसणि ।
धम्मु होइ तिलपायसभोयणि धम्मु होउ आसत्थालिंगणि ।
धम्मु होइ गोमुत्तु पियंतहु धम्मु होइ महु मज्जु रसंतहु ।
धम्मु होइ पलवेहु करंतहु छेलउ कुक्कुडु किडि मारंतहु ।

घत्ता—एहु कुलिंगु कुधम्मु सुए पण णवर दुग्गइ जाइज्जइ ॥
जिणणाहेण पयासियउ धम्मु अहिंसालक्खणु किज्जइ ॥ १८ ॥

19

मेहलकण्हाइणदब्भयणइं धरिवि काइं जणु मारइ हरिणइं ।
किं लिंगेंण लिंगिसंदोहहु जइ णउ मुच्चइ णिच्चु जि कोहहु ।
अंतरंगु जसु सुध्दु ण दीसइ कायकिलेसें तहु किं होसेइ ।
दंडउ अप्पउ मुँणिविहियारउ तासु तहेंट्ठिउ भवसंसारउ ।
उवसमेंपुव्वाणुव्वयधारहिं अलिउ म जंपहि जीउँ म मारहि ।
करपल्लउ परदविणि म ढोवहि परपुरिसु वि सराउ मा जोयहि ।
मुयहि संगु बहुलोहुप्पायणु रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु ।
अवरु पव्वपोसहु परिपालहि जिणपडिबिंबइं णिच्च णिहालहि ।
अहिंसिंचिवि अंचिवि णियसत्तिइ ताइं णवेज्जसु गरुयइ भत्तिइ ।
तुसगासु वि उवमंतहु देज्जसु णियमएण णियमणु णियमेज्जसु ।

घत्ता—पण्णासट्ठुत्तरु सउ वि सियपंचमिहि बालि जइ उवसहि ॥
सुयहरि मुणिवरि जं कियउ तो तुँहुं तं चिरदुरिउ पणासहि ॥ १९ ॥

६ M होय. ७ MBP फुडु अच्चमणें. ८ MBP तणु मुरही फंसणि. ९ P पियनह.

19. १ B किं लिंगिण सलिंगिसंदोहहु. २ MBP सीसइ. BPT मुणिवहियारउ. ४ P तहिट्ठिउ. ५ P उवसमु. ६ MBP जीव. ७ MBP त तुहुं.

8 *a* अच्चवणें आचमनेन. 9 *a* घइ घृते, *b* सुरहीतणु° गोशरीरम्.

19. 1 *a* मेहलकण्हाइण° मेखला कृष्णाजिन कृष्णहरिणचर्म च, दब्भयणइं दर्भतृणानि. 11 पण्णासट्ठुत्तरु सउ वि सियपंचमिहि शुक्लपञ्चमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिमाणोपवासैः. 12 सुयहरि श्रुतधरे.

20

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ ते णिंदंतहं दुम्मइ विलसइ ।
चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ वंदणिज्जु भणु[1] किह णिंदिज्जइ ।
दुच्चिंतियउ दुबोल्लिउ दुक्किउ आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।
ता सा खंविय तविय गयगावें अंतोअंतो पच्छुत्तावें[2] ।
मह पावोहे[3] कहिं पावणियत्तणु जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु ।
मायामोहु मुइवि मणु[4] रोहिवि एमप्पाणउं णिंदिवि गरहिवि ।
गय रिसिवइ वंदिवि णियवासहु[5] हउं लग्गी सहि सुयउववासहु ।
काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं मइं दालिद्दिणीइ[6] तहिं तइयहुं ।
खलु वि सुपत्तहु अणुदिणु[7] दिण्णउं छड्डिउ सव्वजीवपेसुण्णउं ।
पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें बोहिउ दीवउ दुलहतेल्लें ।

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्धणु सिरिमइ भासइ ॥
एक्कु जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्ति ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु गुरुउवएसलेसु[1] पालेप्पिणु[2] ।
पुणु आहारु सरीरु मुएप्पिणु परमक्खरइं[3] पंच सुमरेप्पिणु ।
मुइय गंपि ईसाणविमाणइ सिरिपहणामि रमियगिव्वाणइ ।
ललियंगहु महएवि सयंपह हूई जुइणिज्जियचंदप्पह ।
मुइ पिययमि छम्मास जिएप्पिणु इह हूई सग्गाउ चएप्पिणु ।

---

20. १ MBP किह भणु. २ BP पच्छत्तावें. ३ BP पावहि. ४ MBPK मणु ण रहिवि. ५MBP सणिवासहु. ६ P दालिद्दिणि एत्तहि. ७ MBP भोयणु.

21. १ P °उवएसु. २ MB पावेप्पिणु. ३ B omits this foot.

---

20. 6 *a* मणु रोहिवि मनो निरुध्य. 10 *a* दोणयहुल्लें द्रमणपुष्पेण; *b* दुलहतेल्लें परसमीपे याचितेन तैलेन.

पिउँ सुयरंतिहि चंदु वि तावइ चंदणु देहि ण लग्गउ भावइ।
अट्ठ वि अंगइं हयइं अणंगें तुहुं किं ण मुणहि इंगियलिंगें।
एम चवेप्पिणु पट्टु आणाविउ णाहु लिहेप्पिणु धाइहि दाविउ।
णियचिररूउ तहिं जि आलिहियउ फुरइ व चेलंचलि संणिहियउ।
अण्णण्णइं कीलासंताणइं लिहियइं सरिसरगिरिवरठाणइं।
अण्णइं तहिं रइरहसंचरियइं धुत्तहं भइयइं गूढइं धरियइं।
एत्थु वसंती एत्थु रमंती सो एहउ हउं एही होंती।
एम भणेप्पिणु गुज्झु ण रक्खिउ सुंदरीइ णियहियवउ अक्खिउ।

घत्ता—आणहि पंडिइ प्रोणपृउ फेडहि वम्महवाहि महारी॥
भरह पुप्फदंतुज्जालिय अण्ण ण तियमइ मइगरुयारी॥ २१॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णिण्णामियाधम्मलंभो णाम बावीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ २२॥

॥ संधि॥ २२॥

४ MBP पिय सुमरंतिहि. ५ B इंदियलिंगें. MB सरसरि°. MBP °गहणइं. ८ MBP रइरससंचरियइं. ९ P भइए and gloss भयेन. १० MBP कहेप्पिणु. ११ MBP पाणपिउ. १२ MBP फुप्फयंतु°. १३ MBP णियमइ.

21. 6 *a* पिउ प्रियम्. 11 *a* °रहस° एकान्त., 15 भरह स्मरत; तियमइ स्त्रीमतिः.

XXIII

तं णिसुणिवि पडु करयलि करिवि गय पंडिय जिणगेहहो ॥
अइकुंडिल सुतेय मणोहरिय चंदलेह णं मेहहो ॥ ध्रुवकं ॥

I

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।
एत्तहिं पंडियाइ पविलोइउ परमप्पयणिहेलणं ॥ १ ॥

पवणुद्धुयधयमालाचवलं हिमकुंदसमाणसुहाधवलं ।
गायणगणगाइयजिणधवलं भिद्धंतपढणकलयलमुहलं ।
गयणंगणलग्गमहासिहरं अइरुंदचंदकररासिहरं ।
जंखिजक्खपडिमाणिलयं विद्दुमतलउंभयतलसिलयं ।
मरगयमयखंभसमुद्धरियं मणिमत्तवारणालंकरियं ।
आयासफलिहमयभित्तियलं हरिणीलणिबद्धधरित्तियलं ।
उव्वाइयधूवंगारवरं गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं ।
घल्लियपप्फुल्लियफुल्लचयं ओलंबियमोत्तियदामसयं ।
पइसेप्पिणु तं मुणिणाहघरं णविऊण जिणं जियजम्मजरं ।
पडु विउसिइ पसरिवि दाविउ णायरणरेहिं परिभाविउ ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नखनिकुरम्बकर्णिक
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिक्यमधुव्रतचक्रचुम्बितम् ।
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमल
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it.

1. १ P सतेय. २ MBPK पवणद्धुय.° ३ M गायणगइ°. ४ M आरुद°. ५ M जक्खिदजक्ख°. ६ MBP तलउभय°. ७ M °खंध°. ८ P मयमत्त°. ९ MBP °भित्तियल. १० MBP उच्चाइयधूमंगार°.

1. 5 *b* °सुहा° सुधाचूर्णम्. 8 *b* विद्दुमेत्यादि-विद्रुमघटिता तले कुम्भिका तलशिला-यत्र. 14 *a* विउसिइ विदुष्या धात्र्या.

घत्ता—इय दसदिसु वत्त समुच्छलिय जो पडवइयरु जाणइ ॥
धरणीसरतणयहि[11] सिरिमइहि सो थणजुयलं[12] माणइ ॥ १ ॥

2

दुवई—विविहाहरण[1]किरणविप्फरणोहामियफणिसुरेसरा ।
ता मायंगतुंगतुरयासण[2] चलिय णरवरेसरा ॥ १ ॥

सेयत्तं णिज्जियसियसरयं णिवासियचिरयं वारियणरयं ।
पत्ता राया तं जिणहरयं दुक्कियहरयं सुभवियवरयं ।
दिट्ठो लिहिओ[3] तेहिं पडो झसइंधणडो[4] मणि णंचियओ[5] ।
तं पेच्छिवि[6] अहिलसियसिवो भणु को ण णिवो रोमंचियओ ।
केण वि भणिया[7]—पुत्तलिया[8] लयकोमलिया वण्णुज्जलिया ।
एसा बाला सामलिया णामें ललिया[9] अलिकोंतलिया ।
चिरभवि होंती मज्झ पिया पच्चक्खसिया विहिकत्थणिया ।
केण वि भणियं—मइं मुणिया[10] सुरवरगणिया मयगलोयणिया[11] ।
होंती कंते[12] महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया ।
केण वि भणियं—दिण्णसिरि इंदु मेरुगिरि[13] इह सा तरुणि ।
इह मइं देवें होंतएण गायंतएण मोहिय हरिणि[14] ।
कु वि भणइ—आसाइ विणु गुरु एक्कु खणु किह दिणु गंवमि ।
कु वि[15] भणइ—हा किं करमि णिच्छउ मरमि जइ णउ रममि ।

११ P °तणयहु, K तणहे. १२ MBP जुयलउ.

2. १ M °हरणकिरणविप्फुरणोहामिय°; B °हरणविप्फुरियणोहामिय°; P हरणकिरणविप्फुरिणोहामिय°. २ P तुरयासणा. ३ B लिहिओ तहे तेहिं, P लिहिओ सो तेहिं. ४ MBP झसचिंध°. ५ MBP चिंतविओ. ६ P पेच्छेविणु. ७ MBP भणिय. ८ MBP पत्तलिया. ९ MPB लइ°. १० M मइं मुणिमुणिया; P माणि मुणिया. ११ MBP मिय°. १२ MBP कता. १३ MBP महुललियगिरि. १४ MBP add after this: मज्झु वि घरिणि. १५ MBP को वि एम्व भणइ.

15 पडवइयरु चित्रपटव्यतिकर..

2. 3 सियसरयं शुक्लशरत्पक्षे शुक्लमेव. 4 सुभवियवरयं सुष्ठु भव्यानां वरदम्. 7 लयकोमलिया लतावत्कोमला. 9 °सिया लक्ष्मी विहिकत्थणिया विधिना कुत्रापि नीता, विधिकदर्थितेत्यर्थः.

को वि [16]संदीहउ णीससइ तावँ सुसइ उरयलु हणइ ।
अप्पउ घल्लइ धरणियले आणेहि हले तं[17] मुहुं भणइ ।
को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ [18]णिज्जीवँ थिउ ।
उच्चाएप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ ।
[19]धाइँ जिणेप्पिणु [20]उत्तरहिं पच्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु ।
हउं [21]वरइत्तु [22]भवंतरिउ इह अवयरिउ तहि [23]धरिवि करु ।
घत्ता—विहसेवि पबोल्लिउ पंडियइ जो गुज्झइं महुं अक्खइ ॥
सो [24]सुअवेल्लीरइसुहहलहो रसु परमत्थेँ चक्खइ ॥ २ ॥

3

दुवई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु [1]अलिउ भासए ।
सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ [2]पइसइ [3]णरयवासए ॥ १ ॥
ता [4]तेत्थंतरि   विरहमहाभरि ।
[5]कुमरिहि घणथणि   जायइ जोव्वणि[6]
छक्खंडावणि   जिणिवि महाफणि ।
देव वि खयर वि   णित्तेयइ रवि ।
[7]चोयँवि गयवइ   आयउ महिवइ ।
पुरिहि पइट्ठउ   सघरि णिविट्ठउ ।
महुरालावें   सपणयभावें ।
सुय बोल्लाविय   णिरु संताविय ।
पियपरिणामें   णिद्दयकामें ।
पुत्ति म झिज्जहि   लइ पडिवज्जहि ।
ण्हाणु विलेवणु   [8]कंकणु परिहणु ।

१६ MB सुदीहउ. १७ MBP तम्मुहुं. १८ MBP णिज्जीउ; १९ MBP धाइउ. २० MBP दुत्तरहिं. २१ P वरयत्तु. २२ M भवंतरु. २३ MBP धरमि. २४ M सुह°.

3. १ P अलियउ भासइ. २ MBP णिवडइ. ३ P णरइ°. ४ MBP एत्थंतरि. ५ MBP read this line as: पसरियरायइ, कुत्ररिहि (P कुवरहि) जायइ. ६ MBP add after this: उत्तुंगत्थणि, घणि घणि जोव्वणि. ७ P चोइयगयवइ. ८ M कंकणु पहिरणु, B कंकणु परिहरणु; P कंचणु पहिरणु.

17 तं तां तरुणीम्; मुहुं वारंवारम्. 23 °सु अ° सुता.

3. 2 सरसरविहिण्णु स्मरबाणविभिन्नः.

गुरुयणु रंजहि भोयणु भुंजहि ।
वज्जउ वायहि णच्चहि गायहि ।
अक्खरु भावहि पक्खि पढावहि ।
तुज्झु मुहुल्लउ तिहुयणभल्लउ ।
हउं णालोयमि तो णउ जीवमि ।
तायहु जंपिउ तं मुद्धइ किउ ।
पुणु आवेप्पिणु पणउ करेप्पिणु ।
णियडि णिसण्णी विरहविसण्णी ।
आलिंगेप्पिणु सिरि चुंबेप्पिणु ।
णयणाणंदें भणिय णरिंदें ।
चारु चिराणउं कहमि कहाणउं ।
मयरद्धयसिरि णिसुणि किसोयरि ।

घत्ता—चिरु एत्थु पुंडरिंगिणिपुरिहि इमहु भवहु पंचमभवि ॥
हउं अद्धचक्कवट्टिहि तणउ होंतउ कुलि णिम्मुच्छवि ॥ ३ ॥

4

दुवई—णामें चंदाकित्ति जयाकित्ति सुमित्तवरेण भूसिओ ।
मुइ जणणे अहं पि लच्छीइ महीइ चिरं समासिओ ॥ १ ॥

णिरुवमसुहसयहरिसियमणेहिं चिरु भुत्तु रज्जु दोहिं मि जणेहिं ।
अवसाणि बिहिं वि सिरि परिहरेवि पीइवद्धणि वणि पइसरेवि ।
पयसेवियचंदसेणगुरुहि किउ तवु णिज्जणि उग्गयकुरुहि ।
दोहिं वि विणिवारिय पावमइ सह चेय बिहिं वि कय कालगइ ।
बिण्णि वि जाया माहिंदसुर सत्तंबुहिआउपमाणधर ।
चिरु जीवेप्पिणु तहिं नियसणुय पुण्णक्खइ सुंदरि तहिं वि मुय ।

९ P अक्खर. १० MBP जइ ओहुल्लउ. ११ MB हउ आलोयमि, P हउ अवलोयमि. १२ G omits विरह-विसण्णी. १३ MB पचमइ भवि.

4. १ MBP जमाकित्ति. २ M °धरेण. ३ MBP तउ. ४ MBK हियनियसणुय.

19 *a* ज पिउ यत्प्रियं, जल्पितं वा.

पुक्खरवरि पुव्वमेरुसिहरे तहु पुव्वविदेहि रसंतकरे।
धणधण्णरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ।
जहिं दहिउ दुद्धु जलु जिह सुलहु जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बहु।

घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हलिणिहि कह भासइ॥
आरत्तचंचु चंचेलमुहु जंपमाणु मणु तोसइ॥ ४॥

5

दुवई—मत्तमहंतधवलगलगज्जियबहिरियविउलगोउले।
विसरिसविसमभिडियघरसेरिहकयकाहलियकलयले॥ १॥

तहिं किडिदाढाहयथलकमले कमलदलच्छाइयविमलजले।
जलजंतसित्तकेलीतरुणे तरुणतरुकुसुमरयछव्वरणे।
छव्वरणालंकियदियपवरे दियपवरकलरवुट्ठंतसरे।
सरसीमारामपएससुहे सुहयरछुहपंडुरि रायगिहे।
गिहसिहरालिंगियघणणियरे।
णियरायणायणिच्चिंतपए पयपाडियपरणरवीरसए।
सयवत्तपसाहियजलपरिहे परिहरियपावि मंदिरि सिरिहे।
सिरिहरु पुरि रयणसंचि णिवइ णिवइच्छियवित्ति सुधम्मरइ।
रइ विव कामहु कंत सइ सइ णं देविंदहु हंसगइ।

घत्ता—सा णामें देवि मणोहरिय जिह तिह सव्वसउव्वें॥
अम्हइं बिण्णि वि सग्गहु ल्हसिय हयखयकालदइव्वें॥ ५॥

---

५ P हालिणिहि. ६ M जणु.

5. १ M °धवलगज्जियरवबहिरिय°. २ MB °तरुणी. ३ MB तरुणतर°. ४ MB छव्वरणि. ५MBP °पंडुर°. ६ B दियराय°. ७ MBP णिच्चत°. ८ MBP पयासिय°. ९ P मदरीसिरिहे. १० MBP कामहु तहु कंत. ११ MB सिरिमइ सव्वें. १२ P अण्ण वि सिरिमइ सग्गहु ल्हसिय अम्हइं हयणियमिव्वें.

---

4. 10 *a* जायाइसउ जातातिशयः. 12 सुउ शुकः; हलिणिहि कर्षकस्त्रियः 13 चंचेलमुहु वक्रमुखः.

5. *a* जलजंत° जलयन्त्राणि; *b* °छव्वरणे भ्रमराः षडाचरणकाः पठनपाठनयजनयाजनदानप्रतिग्रहाः. 5 *b* दिय° द्विजाः पक्षिणः.

6

दुवई—जाया ताहं गब्भि हलहर हरि बिण्णि वि सुकयकारिणो ।
चडिय जुवाणभावि सिरिविम्मविभीसणणामधारिणो ॥ १ ॥

दोहिं मि भायहं जयलच्छिसहि अहिसिंचिवि अम्हहं देवि महि ।
गउ जणणु सुधम्मसूरिसरणु किउ घोरु वीरु जिणतवचरणु ।
छिण्णउं उप्पत्तिजरामरणु पत्तउ कवलु णिक्कलकरणु ।
छुडु परिभाविउ कंचणु वि तणुं राएण विमुक्कहु घरुं जि वणु ।
णिज्झाइयअज्झासाइयहो थंडिलु वि थणत्थलु राइयहो ।
गिरिकंदरमंदिरु किं करइ दुक्कियपरिणामु ण तं धरइ ।
इय भणेवि मणोहर थिय भवणे झिणवरु झायंतिइ णिययमणे ।
चिण्णउं जणणिइ दुच्चरु चरिउ पक्खालिउ जम्मंतरदुरिउ ।
संणासणि झाइवि पंचगुरु सा हूई दिवि ललियंगसुरु ।

घत्ता—सिरि भुंजिवि भोयतिसातिसिउ मुयउ बिहीसणराणउ ॥
उप्पण्णउ णरयमहाविवरि कालें को ण विलीणउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—लच्छिसरासईण सहवासु व विहिणा दलिवि घल्लिओ ।
दुत्थियकप्परुक्खु व सुहाहिउ खयकरिदसणपल्लिओ ॥ १ ॥

सव्वु पेच्छिवि हउं दुक्खाउलिउ सोयग्गि देहरुक्खु जलिउ ।
हा चक्कपाणि हा पाणपिय हा बंधव किं अवहेरि किय ।
सुसहोयर दामोयर चवहि हा एक्कवार मइं संथवहि ।
सुर णरवइ णिहिवइ पुहइवइ किं मग्गइ भडारउ चक्कवइ ।
मइं मिच्छाभावें भावियउ मडउल्लउ खंधि चडावियउ ।

6 १ MBP °विहीमण°. २ MBP मुधम्मु. ३ MB पत्तउ णिक्कलु णिम्मलु करणु; P पत्तउ णिम्मलु णिक्कलकरणु; T णिक्कलु करणु. ४ M णिणु. ५ M घर. ६ P °कदरु. ७ MB भरिवि, P भणिवि. ८ P °तिसातिसउ. ९ B बिहीसणु.

7. १ MBT सउ. २ P एकवार.

6. 4 *a* जणणु पिता श्रीधर 5 *b* णिक्कलकरणु सिद्धावस्थाप्रापकम्. 7 *a* णिज्झाइये त्यादि- निध्याना अभिनवा वधूस्तस्याः स्वाद आलिङ्गनम्. 11 *b* दिवि स्वर्गे.

7. 3 सवु मृतकम्.

तं पुसमि हसमि हउं तेण सहुं जंपेवि पच्चुत्तरु देहि महु ।
मइंमूढु ण काइं मि संभरमि पुरगामसीमरण्णहिं चरमि ।
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु ललियंगु ललियभासिरु अमरु ।
पहि थिउ चोयंतु वसह सभय सो जंतें णिप्पीलइ सियय ।
मइं भणिउं म्म णियचलु णिट्ठवहि किं पाणिइ लोणिउं उट्ठवहि ।
किं णेहु होइ दासीसुयहे किं तेल्लु विणिग्गइ वालुयहे ।
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ जइ एउं बप्प पइं जाणियउं ।

घत्ता—तो एउं वियाणहि किं ण तुहुं कीस विसूरहि हलहर ॥
जे मुयँ ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥ ७ ॥

8

दुवई—हाहाकारु पुत्त किं मेल्लहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।
धीराधार वीरें विउलं भुयणं पि गणंति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भायर भायर पुक्करहि हउं माय तुहारी संभरहि ।
तुह मंदिरि णिवसिवि कियउ तउ संपत्ती तेण सुहासिभवु ।
गउ एम भणिवि सुरु णियघरहो मइं मुहुं जोइउ चक्केसरहो ।
सव्वउ णिव्वेयणु जाणियउं सलु रइउ हुयासणु आणियउ ।
लहु वासुएउ सक्कारियउ तणुरुहु सरज्जि वइसारियउ ।
वयसंजमभारधुरंधरहो दिक्खंकिउ पासि जुयंधरहो ।
पंचिंदियगयउलु पीडियउ तउ कियउ सीहणिक्कीडियउ ।
पुणु सव्वभद्दु उच्चाइयउ मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।

३ MBP जंपमि. ४ मइमूढ. ५ P चोवतु. ६ P लोणउं. ७ B मय.

8. MBP पुत्त मं मेल्लहि. २ MBP धीर. ३ P विउणं. ४ भायरु भायरु. ५ MK कयउ. ६ P जोयउ. ७ P सलु रयउ. ८ MBP सकारियउ. ९ P पालियउ. १० B omits this foot. ११ B omits this line. १२ K मिच्छत्त जडत्तु.

10 *a* जणणिचरु पूर्वभवस्था जननी. 11 *b* सियय सिकता वालुका. 15 कीस किमर्थम्.

8. 2 धीराधार धैर्याधाराः. 4 *b* सुहासिभवु देवभवः 6 *b* सलु शवशयनं चिता. 7 *b* सरज्जि स्वराज्ये.

[13]अणसणविहाणि जं साहियउ तं चउविहु मइं आराहियउ ।
हउं अरुहु भरेण भरेवि मुउ अच्चुइ आहंडलु णवर हुउ ।

घत्ता—ता रयणविमाणारोहियउ मइं अच्चुय[14]कप्पहो णियउ ॥
ललियंगदेउ सो णियगुरु [15]गरुयइ भत्तिइ पुज्जियउ ॥ ८ ॥

9

दुवई—चुउ [1]ललियंगदेउ जंबूतरुलंछणि दीवि सुहवई ॥
सुरगिरि सुरदिसाइ [3]सुविदेहइ जणमहि मंगलावई ॥ १ ॥

खगसंसाहियविज्जावलिहे [4]रुप्पयगिरिंदउत्तरथलिहे ।
गंधव्वणयरि तहिं विमलजसु वा[5]सेउ णामें वासवसरिसु ।
पायडपयाउ णरवइ वसइ जसु दिट्ठिहि कलिकयंतु तसइ ।
तहिं देविहिं उयरि पहावइहि उप्पण्णउ कलमरालगइहि ।
णामेण महीधरु धीरझुणि ताएण आरंजउ दिव्वमुणि ।
सुउ रज्जि थवेप्पिणु सेवियउ णिग्गंथभाउ संभावियउ ।
मुत्तावलितवतावें तविउ दढकम्मालाणु परिक्खविउ ।
संतें दंतें रुद्धासवेण अप्पउ णिउ मोक्खहु वासवेण ।
णं ससिसिणिसाहि पहावइहि पणवंतिहिं ताहि पहावइहि ।
तउ दिण्णउं कयजगसंतियइ सुद्धइ पोमावइकंतियइ ।
सीसिणियइ पुण्णु समज्जियउ साविसयकसायबलु णिज्जियउ ।
रयणावलि णामें अणियदिहि कयदहमोसउववासविहि ।

घत्ता—स वि मय तहिं णिरु णिरसणु करिवि आउक्खइ किं जिज्जइ[10] ॥
सोलहमइ सग्गि धडिंदु हुय[11] भणु किह धम्मु ण किज्जइ ॥ ९ ॥

१३ B omits this foot. १४ P °कप्पहि. १५ P गुरुयइ.

9. १ MBP ललियंगु देउ. B °लंछणदीवि. MBP सुविदेहइ. MBP °पुव्वत्थलिहे. ५ P वासव. ६ P दिव्वझुणि. ७ MBP परिक्खयउ. ८ MBP जगकयसंतियइ. ९ MBP जायदिहि. १० MBP किज्जइ. ११ MBP हुउ.

11 *b* चउविहु चतुर्विधमाराधनास्वरूपम्. 12 भरेण भरेवि अत्यर्थं स्मृत्वा.

9. 1 सुहवई सुखवती. 2 जणमहि जनपदः 5 *b* कलि° कलहः पापं वा. 9 *b* कम्मालाणु कर्मबन्धनम. 11 *a* ससिसिणिसाहि चन्द्रयुक्तायां रात्रौ. 15 जिज्जइ जीव्यते.

10

दुवई—अह णलिणंकि दीवि पच्छिम[1]दिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।
पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहयरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवइधरियछत्तत्तयहो जइणिद्देसियरयणत्तयहो ।
परिगणियमुणियकाल[2]त्तयहो हयजाइजरामरणत्तयहो ।
थिर[3]वरियधरियगुत्तित्तयहो सुइं[4]संबोहियभुवणत्तयहो ।
विद्धंसिय[5]णियसल्लत्तयहो परियाणियजीवगइत्तयहो ।
वियलियरसाइगव्वत्तयहो गई[6]कम्माइयदेहत्तयहो ।
वज्जियहेट्ठिमझाणत्तयहो कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।
केवलचेयणगुणइत्तयहो सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।
णिव्वाणपुज्जविणयंधरहो हउं करिवि कुहरकक्करवरहो ।
फणिमणिभाभासियअहिहरहो गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।
तहिं णंदणि सुपसिद्धम्मि वणे इंदासासंठियजिणभवणे ।
विज्जउ पुज्जंतउ दिट्ठु सइं महिहरु बोल्लाविउ मुद्धि मइं ।

घत्ता—किं ण मुणहि तुहुं खयराहिवइ हउं णंदणु तुह होंतउ ॥
सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु रुयंतउ ॥ १० ॥

11

दुवई—तइयहुं तइं सुरेण संबोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।
सिरिहररायघरिणिमणहरिभ[1]वु किं णेउ[2] सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजै[3]हि विसयविसु विसु मारइ मित्त एक्कु णिमिसु ।
भवि भवि संघारइ विसयविसु ता तेण जि लद्धउ तं जि मिसु ।

10. १ MBP पच्छिमदिसि मदरि पुव्व°. २ MBP सयलत्तयहो. ३ MBP थियचरिय°. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP गयकम्मा°.

11. १ MBP °भउ. २ MBP ण सरीसि. ३ MBP भुंजसि.

10. 1 णलिणंकदीवि पुष्करद्वीपे. 5 *b* सुइ° आगम.. 6 *b* °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 7 *b* देहत्तय° कार्मिकमौदारिक तैजस च. 8 *b* °पयत्तय° प्रयत्न.. 9 *a* ° इत्तयहो युक्तस्य. 15 सीरि° बलभद्रः.

अहिणंदिवि सुरवरराउ[४] खयरु संप्राइउ[५] सहसा णियणयरु ।
भडभक्खिणि णावइ डाइणिय महिकंपइ पुत्तहु मेइणिय ।
ढोइवि णंदणु[६] मुणिगुरुविहिउ वयमग्गि उग्गि ववसिउ सहिउ[७] ।
सहुं अइबहुयहिं विज्जाहरहिं तरुकोडरगिरिविवरंतरहिं[८] ।
तवु[९] चिण्णु तेण कणयावलिय चिरसंचियदुरियावलि गलिय ।
कालेण गलंतें[१०] महिहरहो पुणु अंतयालु संपण्णु[११] तहो ।
सो पाणिप्राणपरिरक्खयरु[१२] पाणइ[१३] जायउ तियसिंदवरु ।

घत्ता—जीवियउ वीससायरसमइ पुणु कालें संचालिउ[१४] ॥
धादइसंडइ पुव्विल्लसुए जो सुरगिरितरुमालिउ[१५] ॥ ११ ॥

12

दुवई—तस्सावरविदेहि गंधिलविसयम्मि विमुक्कविप्पिया ।
उज्झाणयरि[१] तीइ जयवम्मु णरेसरु सुप्पहा पिया ॥ १ ॥

तहि चविवि पुरंदरु हुउ तणउ अजियंजउ णामें लद्धजउ ।
दिक्खहि कारणि ओलग्गियउ जणणें अहिणंदणु मग्गियउ ।
तें दिण्णइं पंच महव्वयइं[२] मुक्काइं तेण सत्त वि भयइं ।
मयणिज्जियसीहें णाइं मया इहपरलोयास वि खयहु गया ।
आयंबिलु तवु[३] दुच्चरु चरिवि कमट्ठयगंठिहि[४] णीहरिवि[५] ।
होऊण सिवी गउ सिवयहो[६] सिवु[७] सुहहु णामु थिरु णीरयहो ।
सूलिहि णरसिरमालाधरहो णउ अण्णहु तं कवालकरहो ।

४ MBPK सुरवइ गउ. ५ MBP सपाइउ. ६ MBP णंदण. ७ MP तवमग्गि उग्गि; B वयमग्गे ववसिउ समसहिउ. ८ MBP तरुकोट्टरि. ९ MBP तउ. १० MBP वहंतें. ११ MBP संपुण्णु. १२ M पाणिपाणु; B पाणिपाण°. १३ MBP पाणइ. १४ MBP सचालियउ. १५ MBP °मालियउ.

12. १ B omits this line. २ MBP °महावयइ. ३ MBP तव दुद्धर धरिवि. ४ B कम्मट्ठहे. ५ MBP णीसरिवि. ६ MBP सिवहरहो. ७ MBP सिवसुहहु णाम.

11. 7 *b* सहिउ स्वाहित·. 13 °सुए पुत्रि.
12. 8 *a* सिवयहो शिवपदम्. 9 *a* सूलिहि शंकरस्य.

छुहकामकोहविद्धंसणहे गणिणिहि पासम्मि सुदंसणहे ।
जं वउ परिपालिउ सुप्पहइ तं कि वण्णिज्जइ कइकहइ ।
सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ संरुद्धफासरसणासियइ ।
रंण्णावलिकयरण्णासियइ पच्छाविरइयसंणासियइ ।
घत्ता—मेल्लेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥
अच्चुइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुदुलहुं ॥ १२ ॥

13

दुवई—चोइहरयणपहरणुत्तासियणासियरिउभडत्तणं ।
कयमजियंजयण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥ १ ॥
धम्मघोसउड्डिंडिमपहयउ एक्कहिं दिणि समवसरणु गयउ ।
थिउ अग्गइ मउलियउहयकरु वंदिउ अहिणंदणु तित्थयरु ।
मेरु व समणु णिच्चलु थविउ पंचासवदारणिरोहु किउ ।
सुविसुद्धचित्तु रिसि विव गणिउ पिहियासउ सो सुरेहिं भणिउ ।
मायासुयवइयरु साहियउ तहिं अवसरि मइं संबोहियउ ।
मुणिधम्मसवणसामियमइहिं वीसहिं सहसहिं सहुं णरवइहिं ।
गुरुमंदरथविरु समासियउ हुउ जइवरु मोहु विणासियउ ।
आलिंगिउ चारणरिद्धियए सव्वोहिणाणसंसिद्धियए ।
वणि पुत्तिइ पावयखामियए होइवि णामें णिण्णामियए ।
अहिहरिणभिल्लभिल्लीणिलए दिट्ठउ गिरिवरि अंबरतिलए ।
पइं तासु पासि सुउ धम्मु चिरु किं बहुएं मज्झु वि सो जि गुरु ।
दिवि जीविउ हउं माणियरमइं दह दह जि दोण्णि सायरसमइं ।
घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कलिमलवज्जिय ॥
बावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥ १३ ॥

८ MBP गणियहि. ९ MBP त वण्णिज्जइ कइ. १० MP रयणावलि°.

13. १ P चउदह°. २ MBP धम्मुग्घोसउ डिंडिमु हयउ. ३ MBP सममणु. ४ MBP °धम्मु समण°. ५ MBP संबोहियणाणसमिद्धियए. ६ MP कलमल°.

10 *b* गणिणिहिपासि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम्. 13 *a* रण्णावलि° रत्नावली नाम तपः; °रण्णासियइ रत्नत्रययुक्तया.

13. २ वरिसहरणयावहि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि. 10 *b* सव्वोहिय° सर्वावधिज्ञानम्. 14 *a* माणियरमइं अनुभूतलक्ष्मीकाणि.

14

दुवई—चंचलतरुणहरिणलोयणजुइ छणससिबिंबजंपणे ।
अवरु वि कह वि तुज्झु पिय विरह[1]महाणलसुसियचंदणे ॥ १ ॥

जम्मंतरि वि[2]त्तउं संभरमि   अहिणाणु णिसुणि तुह वज्जरमि ।
हउं पु[3]च्छिउ वियलियदुम्मइणा   वंभेंदें लंतवसुरवइणा ।
लीलाउद्धरियवसुंधरहो   मइं अक्खिउं चरिउं जुयंधरहो ।
दीवम्मि जंबुरुक्खंकियए   मेरुहि विदेहि पुव्वासियए ।
सीयासरिदक्खिणयलि पवरु   वच्छावइदेसु [4]वच्छपउरु ।
णामेण सुसीमा वर णयरि   तहिं पहु अजियंजउ पुरिसहरि ।
अमयमइ मंति सइरत्तमण   तहु सच्चहाम णामेण धण ।
तहि सुउ पहसिउ पहसियवयणु   तहु सहयरु वियसिउ सियणयणु ।
सह ते विण्णि वि कवडेण विणु   णिसुणंति पढंति गमंति दिणु ।
ते बे वि विउस विच्छिण्णमय   छलजाइहेउकुविवायरय ।
एक्कहिं दिणि राएं सहुं सुहय   मइसायररिसि[5]सामीवु गय ।
सो पहुणा पु[6]च्छिउ जीवगइ   आहासइ स[7]व्वउ तासु जइ ।
संतेण जेण जगु परि[8]णमइ   तं कारणु कालु महाणिवइ ।

घत्ता—जहिं अच्छइ तं धु[9]वु गयणयलु गइहि धम्मु सहकारिउ ॥
फुडु होइ अहम्मु थिरत्तणहो परमेसहिं [10]उंवईरिउ ॥ १४ ॥

15

दुवई—पोग्गलदव्वु होइ णिच्चेयणु जं जं णिव सु[1]चेयणं ।
तहिं तहिं कहमि तुज्झु परमत्थें जीउ जि णाणकारणं ॥ १ ॥

14. १ BP विरहाणल°. २ MBP चिण्णउ. P पुंछिउ. ४ MP पत्तछपवरु, B सुवच्छपवरु. ५ MBP °सामीउ. ६ P पुछिउ. ७ MBPK सच्चउ. ८ MBP परिणवइ. ९ MBP धुउ. १० MB एउ ईरिउ; P इउ ईरियउ.

15. १ MBP सचेयण.

14. 12 *b* °जाई °मिथ्योत्तरम् . 17 उवईरिउ प्रतिपादितम् .

विणु जीवें पोग्गलु किं[2] तसइ विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ ।
विणु जीवें पोग्गलु किं[3] रमइ विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ ।
विणु जीवें पोग्गलु किं जियइ विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ ।
विणु जीवें किं[4] पोग्गलु सुणइ किं विद्धउ[6] वेयणाइ कणइ ।
ता वुत्तउ पहसियवियसियहिं अणुहुत्तपुहइपत्थिवसियहिं[7] ।
जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह तो विणु णयणहिं[8] ण णियइ कह ।
जो एंतु ण दीसइ जंतु ण वि तहु कँवणु भाउ किर कवण छवि ।
जइ चिंतियमेत्तें[9] तहु कुणइ तो चिंतइ पूरइ किं ण रइ ।
दालिद्दिउ भुक्खइ किं मरइ भोयणु चिंतविउ किं ण करइ ।
को जाणइ भासिउ केण किह आगमु णवकंबलु पुरिसु जिह ।
सिद्धंतहु[10] किं जणु गुरु णवइ तवतावें किं अप्पउ खवइ ।
किं वीहिउ वट्टा णउ हवइ[11] तं णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ ।

घत्ता—चित्तयरहु लेहणिवज्जियहो चित्तालिहणु[12] ण संतउ ॥
इह दव्विंदियभाविंदियहं जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

16

दुवई—जो जो पेच्छसे ण णेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्ठओ[1] ।
ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तय[2] पइं ण दिट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहुं ण पुणु चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु ।
ससहाउ भाउ परिभाउ[3] ण वि जं णहु तं णहु जि ण चंदु रवि ।
जइ चित्तें चिंत्तिउ[4] णउ हवइ ता झाइय देवय किहं[5] चवइ ।

२ MBP किह. ३ B किम. ४ P किह. ५ MBP पोग्गलु. ६ MB बद्धउ. ७ B °पत्थिवसयहिं. ८ MBPK णयणेण. ९ B चिंतिए. १० MBT सिद्धत्थहु; and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्; P सिद्धतउ and gloss आगमनिमित्तम. ११ MBP वहइ. १२ M चित्तलिहणु.

16. १ M पयत्थओ; P पइत्थओ. २ M पुत्त. ३ BPT परिभावि. ४ MBP चिंतिउ. ५ MBP किं.

---

15. 9 *b* भाउ परिणति, छवि आकारो वर्णो वा. 12 *b* णवेत्यादि–यथा नवकम्बलः पुरुष इति वाच्य नव वा कम्बला अस्येति संशयहेतुत्वादप्रमाण तथा आगमेऽपि. 13 *a* सिद्धतहु आगमनिमित्तम्. 14 *a* वट्टा मार्गः. 15 ण संतउ अविद्यमानम्.

16. 1 पयट्ठओ पदार्थः. 4 *a* ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भावः.

पविरइयसुहासुहरयदलइं जइ जीउ ण गेण्हइ पोग्गलइं।
तो कंचुयसुत्तजालु तियहिं किहँ तुट्टइ प्रिउं पेच्छंतियहिं।
जइ सद्दु जि ण घडइ पइं भणिउ तो गहणु केण जाणिउं गणिउं।
घडघोसु ण वसहि बुद्धि जणइ इय बालु वि गोवालु वि मुणइ।
धम्मु जि कयमोक्खउ गयसरहो पंडिउं पुणु लावइ गयसरहो।
कइभावु कव्वु किह पइं घडइ जिह रुक्खहु उप्परि सिहँ चडइ।

घत्ता—जइ जं जेहउ तं तेहउ जि पइउं पइं संभावियउ॥
तो किरियाजोएं किह जणेण लोहिं सुवण्णउं दावियउ॥ १६॥

17

दुवई—हो हो जाइहेउछलवयणविरयणु मुएवि णिप्फलं।
कुरु कुरु परमधम्मु जिणभासिउ लहसि समिच्छियं फलं॥ १॥

तं णिसुणेवि हूई सम्मइय वाईसर णिव्वेएं लइय।
गुरुभत्ति करिवि पणविय गुरुहे रविउयइ जडत्तणु अंबुरुहे।
जिह णउ थक्कइ तिह भव्वयणे आयण्णियमण्णियमुणिवयणे।
कल्लाणमित्त ते बे वि जण संसारवियारविरत्तमण।
तासु जि तेलोक्कदिवायरहो पावइय पासि मइसायरहो।
आयंबिलु वड्ढमाणु कियउ तउ भीमु सुदंसणसंणियउ।
दोहिं मि दुकम्मु णिरोहियउ खय वेण्णि वि णियंमवि णियहियउ।
सिट्ठुत्तमट्ठदिट्ठीइ मुय सुक्कामर इंद पडिंद हुय।

६ P °रइदलइं. ७ MBP कि. ८ MBP पिउ. ९ MBPT ज पंडिउ पलवइ गयसयहो. १० MB किं परु, P किं पडु. ११ MBPKT सिहि, T सिहि मयूर· कवेरभिपायः, अन्यस्य पुनराभिरिति. १२ M पइं सभासियउ, B पइ जइ भावियउ. १३ M सुवण्णउ दाविउ; B सुवण्ण दावियउ.

17. १ MB समीहियं; P समाहियं. २ MBP णिसुणिवि. ३ BP सुदंसणु सणियउ. ४ MBP णियमिवि.

---

6 *a* रयदलइं कर्मभेदाः. 8 *a* महु आगम.. 9 *a* घडघोसु घटशब्दः; वसहि वृषभे. 10 *a-b* धम्मु जीत्यादि–गयसरहो नष्टकामस्य मुनेः धम्मु जि चारित्रमेव कृतमोक्षम्; पंडिउ वैतण्डिकः लावइ योजयति धनुरेव गतबाणस्य कृतमोक्षम्. 11 *b* सिह पक्षी.

17. 1 जाइ° मिथ्योत्तरम्. 8 *b* सुदंसणसणियउ मेरुसंज्ञितम्, मेरुपंक्तिविधिरित्यर्थः. 10 *a* सिट्ठुत्तमट्ठदिट्ठीइ मुय शिष्टा आगमे प्रतिपादिता चतुर्विधा आराधकस्य या उत्तमार्थदृष्टिः चतुर्विधाहारत्यागस्तया मृतौ.

ओसारियकायकंतिसिहइं णिवसिवि सोलहजलणिहिणिहइं ।
धादइसंडइ थिय सिसुससिहि पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।
पच्छिमविदेहि णरदिण्णसुह णामेण पुक्खलावइ वसुह ।
घत्ता—तहिं अत्थि पुंडरिंकिणि[५] णयरि राउ धणंजउ[६] णिवसइ ॥
जयसेण सेण णं वम्महहो अवर वि भज्ज जसंस्सइ[७] ॥ १७ ॥

18

दुवई—ससिसिय भमरणील णं[१]ळपाउसणासपवेसकुसवहा ।
इंद पडिंद बे वि आवेप्पिणु जाया ताहं तणुरुहा ॥ १ ॥
जयसेणहि णंदणु सीरधरु पहसियउ इंदु दणुयारिवरु ।
वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु तवरयणें किणियणिकामतुसु ।
णारायणु जायउ जसंसइहि[२] भूहरवियारि वेउ व णइहि ।
णामेण महावलअइबलहं तहि ताहं जगत्तयमंगलहं ।
सिरि भुंजंतहुं गउ मरिवि हरि अइबलु वि ण खयकालहु उवरि ।
अवलोयवि णियबंधवपलउ मणु मुक्कु ण वीरें मोक्कलउ ।
वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।
तउ लेवि महाबलु तहिं मरिवि प्राणय[३]तियसेसरत्तु करिवि ।
वीसद्धिसमाणहिं पुणु पडिउ अंतयराएण ण को णडिउ ।
पुव्वुत्तदीवभायंतरए पुव्वुत्तसुरहिदियंतरए ।
पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि णामेण वच्छयावइ धरणि ।
पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय मह[४]सेणहु देवि वसुंधरिय ।
घत्ता—तहि देविहि मयण[५]मयालसहि गब्भवासु सेवेप्पिणु ॥
चउदहमय[६]कप्पसुराहिवइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥ १८ ॥

५ MBP पुंडरिंगिणि. ६ MBP धणजउ. ७ M*p* जसंमइ.

18. १ MBP णं पाउसणासपवेसि. २ MBP जसमइहि. ३ MBP पाणइ. ४ P मरुसेणहु. ५ MBP °महालासिहि. ६ P चउदहमइ.

11 *a* ओसारियेत्यादि–उत्सारिता स्फेटिता अवसाने कायकान्तिः शिखाज्योतिर्यैः; *b* °जलणिहिणिहइं सागरोपमाणि.

18. 1 ससिसिय चन्द्रवत्पाण्डुरः; कुसवहा मेघाः. 3 *a* सीरधरु हलधरः; *b* दणुयारि° वासुदेवः. 4 *b* °णिकामतुसु तुषवत्तुच्छा मानुष्यकभोगाः. 5 *b* वेउ व वेगः प्रवाह इव. 11 *a* वीसद्धिसमाणहिं विंशतिसागरोपमैः.

19

दुवई—हुउं जयसेणचक्कि को वारइ होंतीं पुण्णसत्तिया ।
तेत्थु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुत्तिया ॥ १ ॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो पायंतियम्मि सीमंधरहो ।
चोद्दहरयणइं णिहि परिहरेवि दुद्धरु चारित्तभारु द्धरेवि ।
घणपावको व्व विद्दावणउ भावेप्पिणु सोलह भावणउ ।
फणिणरसुरवइकयकित्तणउं अज्जेप्पिणु तित्थयरत्तणउं ।
गउ प्राणं विसज्जिवि घुलियधए उवरिगमेवज्जहि मज्झिमए ।
तीसंबुहिसंणिहाइं जिइवि अहमिंदु देउ तेत्थहु चइवि ।
पुक्खरदीवहु पुव्विल्लु गिरि णामेण मेरुसरि वूढसिरि ।
तहि पुव्वविदेहइ दिण्णसुह णरजोणि मंगलावइ वसुह ।
तहिं रयणसंचि अजियंजयहो रायहु पालियसावयवयहो ।
जोइयसुहसिविणयसंतइहे हुउ सुउ देविहि तसु वसुमइहे ।

घत्ता—सो देउ जुयंधरु परमजिणु वम्महवम्मवियारउ ॥
उप्पण्णु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहि ण्हविउ भडारउ ॥ १९ ॥

20

दुवई— पुणु णरखयररायरायत्तणु मेल्लिवि गउ वणंतरं ।
रुंभिवि अंतरंगु पविलंबियकरु थिउ सो णिरंतरं ॥ १ ॥

भयवंतहु विहुणंतहु दुरिउ पालंतहु सुत्तउत्तु चरिउ ।
उप्पण्णउं जगसंखोहणउं केवलु किउ तच्चणिरूवणउं ।
आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ ।

19. १ P हुव जयसेणु. २ P चउदह°. ३ MBP पाण. ४ P विवज्जिवि. ५ MB मज्झवए; P मज्झिमए. ६ MBP पुक्खरवरदीवइ पुव्वगिरि. ७ MBP मेरुदरि.

20. १ MBP read this line as: तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ, आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ.

---

19. 3 *b* पायंतियम्मि पादसमीपे. 8 *a* अंबुहिसंणिहाइं सागरोपमाणि.
20. 3 *b* सुत्तउत्तु आगमोक्तम्. 5 *a* आइल्लउ प्रधानम्.

गउ मोक्खहु अक्खेरु अक्खरहो　　तणु सक्कारिउ परमेसरहो।
अग्गिदहिं णियमउडाणलिण　　भणु किं ण होइ सुक्कियफलिण।
इय कहपवंचि मइं संकहिए　　सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए।
हे हे मह कुलकमलेक्कसिए　　ललियंगहु तुह ललियंगपिए।
हियउल्लउ णिंदियइंदियउ　　तइयहुं जिणधम्माणंदियउ।
संभरसु पुत्ति रमियामरहो　　अंजणणामयहु धराधरहो।
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो　　दीवहु गयाइं णंदीसरहो।
संभरसु पुत्ति पविउलकमले　　कीलियइं सइंभूरमणजले।
किय जाएप्पिणु रुद्धासवहो　　णिव्वाणपुज्ज पिहियासवहो।

घत्ता—संभरसि पुत्ति मइं भासियइं पयइं बहुअहिणाणइं ॥
तुम्हइं दंपइहिं रईयरइं सुरवरकीलाठाणइं ॥ २० ॥

21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ बिहि वि जइयहुं।
हउं कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इंदवयाउ तइयहुं ॥ १ ॥

हमच्चुया सुओ सुए　　कुले सुरिंदसंथुए।
वसुंधरावहूयरे　　महंतपुण्णगोयरे।
णिबद्धपेम्मराइणा　　जसोहरेण राइणा।
सुओ हुओ हियंतओ　　इहेव वज्जदंतओ।
कुवाइएहिं मोहिओ　　सुमंतिणा पबोहिओ।
कयंगयारिण्हाणओ　　मरेवि दिण्णदाणओ।
सुधम्मभावणामलो　　खगाहिवो महाबलो।
दुइज्जसग्गठाणए　　सिरिप्पहे विमाणए।

२B अक्खर अक्खरहो. ३ MBP भणु होइ किं ण. ४ M मइ सइ कहिए; B सइ मइं कहिए. ५ P सयभू°.
६ B दंपइरईयरइं.

21. १ MP सए.

---

6 *a* अक्खरु लब्धानन्तचतुष्टयरूपतयाविनश्वरम्.

21. 1 णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु नियुत लक्षं तस्यार्धं पञ्चाशत्सहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वाणि आयुर्यत्र.
3 *a* हं अहम्; सुए हे पुत्रि. 4 *a* °वहूयरे वधूदरे. 8 *a* °अगयारि° मदनान्तको जिन°.

लयारपुव्वणामओ सरूवजित्तकामओ ।
हुओ सुरो दुवीसमो महं गुरू स पच्छिमो ।
पियव्वया अणामिया गयाउणा [2]खयं णिया ।
[3]तुमं पि तप्पिइल्लिया [4]पईय अंतिमिल्लिया ।
दिवायरस्स णं पहा [5]सलक्खणा सयंपहा ।
[6]कयंतचंडिमाहओ तुहं पिओ तहिं मओ ।
वरुप्पलाइ खेडए पुरे विचित्तणीडए ।
पलंबथोरबाहुणो भिवस्स वज्जबाहुणो ।
सुवण्णवण्णकायओ कुलंगणाइ जायओ ।
रवि व्व सो दुलंघओ मयच्छि वज्जजंघओ ।
पिओसुया सुहंकरा महं सुहीण ते परा ।
[7]समीवु भूमिमंडले वसंति ते [8]सुकोंतले ।
सुरालयाउ आइया रमावईइ जाइया ।
तुमं सया [9]पहायरी महं सुया किसोयरी ।
वरं वरं विहाविही वियक्खणा [10]विहाविही ।
पियागमं पयासिही दिणेहिं तीहिं भासिही ।
सिरीमईइ भासियं तए महं पयासियं ।
[11]भरामि हं [12]परं भवं चिरं पि ताय णं णवं ।
घत्ता—सुणि सेणिय आसि समासियउ भरहहु रिसहजिणिंदें ॥
णवकुंद[13]पुप्फदंतहिं हसिवि पुणु सुय भणिय णरिंदें ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सिरिमइभवसंभरणं णाम तेवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २३ ॥

॥ संधि ॥ २३ ॥

२ MBK खयाणिया. ३ BP तुम ति. ४ MBP पइ अयं ति मिल्लिया. ५ MBP सुलक्खणा. ६ MP कयंति. ७ MBP समाव° ८ MBP सुकोमले. ९ BP सयपहायरी. १० M इहाविही. ११ MBP सरामि. १२ P गयं. १३ MBP °फुप्फयंतहिं.

11 *a* लयारपुव्वणामओ ललिताङ्गः. 16 *a* °चंडिमा° रौद्रत्वम्. 20 *b* मयच्छि हे मृगाक्षि. 21 *a* पिओसुया पितापुत्रौ. 23 *b* रमावईइ लक्ष्मीवत्याम्. 25 *a* विहाविही द्रक्ष्यति; *b* वियक्खणा पण्डिता धात्री, विहाविही वि+इह+ आविही आगमिष्यति. 26 *b* भासिही शोभिष्यते विवाहेन.

XXIV

सहुं णंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवकं ॥

I

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउं अज्ज पुत्ति जायउ सुविहाणउं ।
आयहु वज्जव.हुपाहुणयहु अज्ज करमि करणिज्जु सविणयहु ।
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि अज्ज पुत्ति तुहुं णाहु णिहालहि ।
आया माणणिज्ज ते माणमि लहु अद्धवहि गंपि घरु आणमि ।
जांमि भणिवि गउ णरवइ जावँहिं पंडियभवणु पराइय तांवहिं ।
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी दिट्ठी सुय णरणाहहु केरी ।
णं गंगाणईहि जउंणाणइ णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।
णियडि णिसण्णी सा तरलच्छिहि पुरिसुज्झमलीला इव लच्छिहि ।
करिणिइ कराणि जेम करु मग्गिय वेल्लिइ णववेल्लि व आलिंगिय ।
मत्थइ चुंबिवि पुरउ णिवेसिय हंसिइ कलहंसि व संभासिय ।
मुहराएण जि सिट्ठुं णियच्छिउ कज्जु तो वि णिवकण्णइ पुच्छिउ ।

घत्ता—विउसिइ कहिउ ढंकिवि लिहिउ पइं जं तहिं मइं ढोइय ॥
णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुद्दंताइय ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डल
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसकरे ।
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते-
रिदमतिचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

GK do not give it.

1. १B लोयणु सुहु. २ P रावलउ. ३MBP अज्जु-and throughout this Kadavaka. ४ P सुविणयहु. ५ B अद्धवहु. ६ M एम. ७ MB जावेहिं; P जाविहिं. ८ MB तावेहिं; P ताविहिं. ९ MBP मयणुक्कोय°. १० MB सुट्ठु; P सिद्धु. ११ P पुंछिउ.

---

1. 6 *b* अद्धवहि अर्धपथे. 8 *a* मयणुक्कोव° मदनप्रसरः.

2

पच्छइ सयलहं आयउ जो वरु सो णं सोहग्गहु केरउ घरु ।
सो णं वम्महेण पेसिउ सरु सो णं जुवइयणहं जीवियहरु ।
सो णं रइरससलिलहु सायरु सो णं तुह मुहकमलदिवायरु ।
सो णं रूवविलासु पसारिउ सो णं कंतिकोसु वइारिउ ।
सो णं विज्जाविहि वित्थारिउ सो णं पुण्णपुंजु अवयारिउ ।
सो णं सूहउ मह्यु मणि भावइ जो तुह अट्ठ वि अंगइं तावइ ।
पुत्ति महासिहरहु दुहणासहु देवि पयाहिण जिणवरवासहु ।
फेणहिमट्टहाससंकासहु णाइं पुरंदरेण केलासहु ।
हियवउ रइवियसिउं मउलेप्पिणु तेण बे वि णियकर मउलेप्पिणु ।
वंदिउ जिणु सुहवज्जियवज्जिउ वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ ।
वंदिउ जिणु जगवंदियवंदिउ वंदिउ जिणु बुहणिंदियणिंदिउ ।
जम्मवासु देवहु णउ जुज्जइ विणु सयलेण सत्थु किह णज्जइ ।
अकिरिउ णिक्कलु गयणसरिच्छउ जंपउ जडयणु बुद्धिइ तुच्छउ ।

घत्ता—गरुयउ णहहो सीयलु हिमहो जिण तुह परु गुरु केहउ ॥
वलइयभुयहो वंझासुयहो खकुसुमसेहरु जेहउ ॥ २ ॥

3

जिणु वंदेप्पिणु वंदिय मुणिवर मुणिवर ते सुयहर णं गणहर ।
अंगणहरुइरंजियदसदिस दसदिसिवहपसरियणिम्मलजस ।
जसु ण कलंकु गोत्ति णउ हियवइ वयवालिणि मइ जसु थिय जिणणइ ।

2. १ MBP °णिलयहु. २ MP °हिमहि°. ३ P कइलासहु. ४ MBP रइ°. ५ MP मेलेप्पिणु. ६ BPT सुहवज्जिण°. ७ M जयवंदियवंदिउ, BP भयवज्जियवंदिउ. ८ MBP परगुरु.

3. १ MBP °दसदिसु. २ MBP °जसु. ३ MP वयपालिणि.

---

2 9 *a* रइवियसिउ कांडोल्लसितम् 10 *a* सुहवज्जिय° शुभकर्मरहिते . 12 *a-b* जम्मेत्यादि- जन्मवासो गर्भावतारो देवस्य न युज्यते, अयोनिसम्भवत्वादस्य. अत्रोत्तरमाहाचार्य —विणु इत्यादि–कलाभिरवयवैर्मूर्तिभिर्वा सह वर्तते इति सकलं शरीरं तेन विनान्यमुक्तात्मवत् शिवस्य शास्त्रं कथं णज्जइ युज्यते. 15 वलइयभुयहो वल्गितभुजस्य.

णयसिरि[4] पट्टसाल स पइट्ठउ सपइट्ठउ मइं संमुहुं दिट्ठउ ।
दिट्ठउ पइ सइं सुलिहियचित्तें चित्तें चिंतिउ तेण ससंतें ।
संतें इट्ठविओयकंतें कं तें धुणियउं भवसंकंतें ।
कंतें[5] जयलच्छिहि विकंतें [6]कंतें सुमरियपेम्मुकंतें ।
कंतें चंदेण[7] व संपुण्णें पुण्णें पियसंजोउ ण रुण्णें ।
रुण्णें पर सरीरु णिव्वट्टइ णिव्वट्टिउ देउ वि ण पवट्टइ ।
वट्टइ जाणिउं कहिं दीसइ सा सा मणणलिणोयरवासिणि जा ।
जा सा सा भणंतु सो मुच्छिउ सोमुच्छिउ चंदु व्व णियच्छिउ ।
अच्छिउ विमणु पपुच्छिउ धाइइ धाइइ परियणि कहिं मि ण माइइ ।
माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि अक्खेमियं जं तं किह रक्खमि ।

घत्ता—भवसंचरिउ पडिउद्धरिउ बहुपयारु पेरढंकिउ ॥
णरवइसुयइ सुललियभुयइ कीस सहियवउ वंकिउं ॥ ३ ॥

4

एहु[1] ईसाणकप्पु विविहामरु लिहियउ एहु[2] सिरिमहु सुरहरु ।
एहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु पलवमाणु चलकलकोइलगणु ।
एहु ललियंगु देउ हउं होंतउ एत्थु वसंतउ एत्थु रमंतउ ।
थणयलघुलियहारमणहारी एह सयंपह देवि महारी ।
अच्चुयणाहु एहु तियसेसरु कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु ।

४ B °सिरपट्ट°. ५. M omits this foot. ६ BPK पेम्मकतें सुयरियकंतें. ७ MBPT णीवट्टइ. ८ MBP णीवट्टिउ देहु. ९ B अक्खमियउं. १० MBP भवि. ११ MBP °ढकियउ. १२ MBP वांकयउ.

4. १ P इह and throughout this Kadavak. २ MB सुप्पहसंपयसुर°.

---

3. 4 *a* पट्टसाल स पइट्ठउ ग पट्टशालां प्रविष्टः; *b* सपइट्ठउ सप्रतिष्ठः. 5 *b* ससतें निश्वसता. 6 *a* सतें उत्तमपुरुषेण, °विओयकतें वियोगपीडितेन, *b* कं तें धुणियउ तेन मस्तकं कम्पितम्. 7 *b* °पेम्मुकतें स्नेहयुक्तेन. 8 *a* कतें चंदेण व कमनीयेन चन्द्रेणेव; *b* पुण्णें पुण्येन. 9 *a* णिव्वट्टइ विनश्यति. 10 *a* वट्टइ जाणिउं ज्ञान वर्तते. 11 *a* जा सा सेत्यादि–या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मी 'सेयम्, सेयम्' इति मूर्च्छितः; *b* सोमुच्छिउ सौम्यः उच्छ्रित.. 12 *a* धाइइ धात्र्या, *b* धाइइ धाविते. 13 *a* माइइ हे पुत्रि; *b* अक्खमिय इन्द्रियैर्ज्ञातम्.

कहइ जुयंधरदेवकहाणउं लंतवबंभेसर मइं लीणउं ।
एयइं अम्हइं बे वि वइट्ठइं कैंह णिसुणिवि णियंमणि संतुट्ठइं ।
इय मेरुहि गयाइं जगखंभहु इह लग्गइं जिणण्हाणारंभहु ।
एहु अंजणमहिहरु महु रुच्चइ एहु दीउ णंदीसरु वुच्चइ ।
इह सहुं सुरणाहें सुहललियइं वंदणहत्तिइ बिण्णि वि चलियइं ।
अंबरतिलउ एहु गिरिसारउ इहु पिहियासउ लिहिउ भडारउ ।
एत्थु तासु कमकमलु णमंतइं थियइं बे वि जिणधम्मु सुणंतइं ।

घत्ता—एहु मलरहिउ हउं पाडहिउ एह सयंपह णच्चइ ॥
तियसिद्धिवणे जिणवरभवणे महि पयपोमहिं अंचइ ॥ ४ ॥

5

अण्णेत्तहि वि एत्थु णो लिहियउ जो मइं कीलारंभु पविहियउ ।
रइणेउरसद्दें रोमंचिउ एत्थु ण लिहियउ मोरु पणच्चिउ ।
अम्हहं तणुपरिमलपरिभमियउं एत्थु ण लिहियउं अलिगुमुगुमियउं ।
एत्थु ण लिहियउ लज्जादेसिरु सुय गुरुयणआगमणुब्भासिरु ।
सवणभरणु इह णलिणु ण लिहियउ जं वहुणयणहं सोहइ महियउ ।
एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ ।
इह कवोलपत्तावलिमोडणु एत्थु ण लिहियउ किसलयताडणु ।
एत्थु ण लिहियउ विरहाउरु मुहुं एत्थु ण लिहियउ प्रिउँ विवरंमुहु ।
एत्थु ण लिहियउ भूमणु पेसिउ एत्थु ण लिहियउ दूययभासिउ ।
एक्कु जि लिहियउ अणुणयगारउ इहु महु दिण्णउ पायपहारउ ।

३ MB कहि. ४ MB णियमण°. ५ MB सरंतइ.

5. १ MBP णालिहियउ. २ B मेरु. ३ MBP सुउ. ४ MB गुरुयणु. ५ MBP read this line as:. एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ, एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ. ६ MBP विरहाउर. ७ MBP पिउ. ८ MB भूमण. ९ M एत्थु ण; B एउ महु.

4. 13 पाडहिउ नाट्याचार्यः. 14 तियसद्दि° मेरु..

5. 4 *b* सुय शुकः. 10 *a* अणुणय° अनुकूलता.

पयवडिए सारंभु मुयाविउ एत्थु ताइ हउं आसि खमाविउ ।
अण्णहि णेही रूवविहूई देवि सयंपह माणवि हूई ।
अण्णहि पसइणिहाणइं[10] णेत्तइं अण्णु[11] लिहइ किं मह्यु चारित्तइं ।

घत्ता—भणु किं कहमि ण विरहु सहमि दूइइ पिय मह्यु आणहि ॥
सा तेत्थु[12] पुरे थिय जम्मि घरे[13] तहिं जायवि संमाणहि ॥ ५ ॥

6

ता दूइइ उत्तु[1] अम्हारी णयरि पुंडरिकिणि पुरिसारी ।
वज्जदंतु पहु तहु सुहगारी लच्छीमइ महएवि भडारी ।
धीय ताहि[2] सिरिमइ उप्पण्णी पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विण्णी ।
पहु ताइ लिहियउ कहवइयरु पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।
एम भणेप्पिणु हउं पत्थाइय पइसंबंधिणि वत्त णिवेइय ।
तावेत्तहि कुमारु गउ तेत्तहि उप्पलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।
पियविओयसिहिजालाछित्तउ घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।
तरुणीवग्गुरवढिउ[3] पलोइउ णं वणवाहें मृगु[4] संभाविउ ।

घत्ता—रइरिद्धएण[5] मयरद्धएण विद्धउ पंचहिं बाणहिं ॥
विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्राणहिं[6] ॥ ६ ॥

7

दुप्परिणामें कामें तप्पइ सीयलमलयजपंकें लिप्पइ ।
रसइ हसइ णीससइ विरुज्झइ उट्ठउ बइसइ मोहें मुज्झइ ।
कर मोडइ धम्मेल्लय मेल्लइ अहरु डसइ अणिबद्धु[1] पबोल्लइ ।
वेवइ वलइ विलासहिं गच्छइ परु पच्छण्णु[2] पउत्तिहिं पुच्छइ ।
एक्कहिं णिलइ ण णिविसु[3] वि अच्छइ दिसि लिहियं पिव पियमुहुं पेच्छइ ।

१० MBP °णिहाइं ण. ११ MB अण्ण. १२ MBP जेत्थ. १३ MBP हरे.
6. १ MPB वुत्तु. २ MBP ताहि. ३ M °वग्गुरु पडिउ विलोइउ; P वग्गुरु वडिउ विलोइउ. ४ MBP मिगु. ५ M रइविद्धएण, P रइरिद्धिएण. ६ MBP पाणहिं.
7. १ MBP अणिबद्धउ बोल्लइ. २ MB पच्छण्ण°. ३ P णिमिसु.

11 *a* सारंभु कोपः 15 संमाणहि मदीयकुशलवार्तया संतोषय.
6. 10 विवरीउ कामजनितोन्मादादसंबद्धप्रलापी.

ण्हाइ ण धुवइ ण जिणवरु पुज्जइ   भूसणु लेइ ण भोयणु भुंजइ।
रमइ ण कंदुउ तुरउ[4] ण वाहइ   करि वि रहु वि णयणेहिं[5] ण चाहइ।
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ   पइं[6] णिम्मीलियच्छु पियं[7] झायइ।
एक्कु वि रायविणोउ ण माणइ   कामगहिल्लउ किं पि ण याणइ।
मंतिहिं वज्जबाहु विण्णवियउ   तणउ देव मयणें परिहवियउ[8]।

घत्ता—हूई सइहि लच्छीमइहि जा सिरिमइ तहि रत्तउ ॥
दुक्की णियइ दुक्करु जियइ कामाणलसंतत्तउ ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि णहछोडउ देप्पिणु   उट्ठिउ णरवइ द्दर विहसेप्पिणु।
गउ तहिं जहिं अच्छइ[1] सो बालउ   पभणइ पहु सुय थिउ[2] किं कालउ।
आवहि जाम ण होइ वियालउ   अज्जु जि किज्जइ तुह पियमेलउ[3]।
सुणह महारी पइं कहिं दिट्ठी   अवरें वत्त णरिंदहु सिट्ठी।
गउ कुमारु परिभमहुं सलीलइ   दिट्ठउ पडु आलिहिउ जिणालइ।
पुव्वजम्मु तहिं एण णियच्छिउ   चिर[4]कंतावयारु परिहच्छिउ।
कामु वि कामरूवि जं पाडइ   ताहि रूउ कं कं ण भमाडइ।
पट्टइ[5] लिहियउ हियवइ लिहियउ   को[6] तं पुसइ णिडालइ[7] लिहियउ।
अवसें होसइ णिव विहिविहियउ[8]   एम जाम मइबंधें[9] कहियउ।
ता सहुं पुत्तें समउ कलत्तें   सहुं सेण्णेण धवलधयछत्तें[10]।
वज्जबाहु सहस त्ति पधाइउ   णयरि पुंडरिंकिणि संपाइउ[11]।
रच्छसोह पुरि कारावेप्पिणु   लीलइ मत्तकरिंदि चडेप्पिणु।

घत्ता—आवंतु पहे पहु अद्धवहे पविभुएण जयकारिउ ॥
सो तेण जिह देवीइ तिह तिह सुएण णवयारिउ[12] ॥ ८ ॥

४ M तुरिउ. ५ MBP णयणहिं वि ण. ६ P परि. ७ MBP पिय. ८ P परिहाविउ.

8. १ MB सो अच्छइ. २ MBP किं थिउ. ३ MBP पियमेलउ. ४ MBP चिरु कंता°. ५ MBP पट्टालिहियउ. ६ B omits this line. ७ MBP णिलाडइ. ८ B °वहियउ. ९ MBP मइवंतें. १० BP धवलछत्तें. ११ MBP संपाइउ. १२ M णवियारिउ.

7. 7 *a* तुरउ तुरगः. 10 *b* परिहवियउ विह्वलीकृतः कदर्थितो वा. 12 णियइ भवितव्यता.

8. 1 *a* णहछोडउ नखोच्छोटिका. 6 *b* परिहच्छिउ ज्ञातः. 7 *a* कामरूवि कामावस्थायाम्. 9 *b* मइबंधें मतिबन्धनेन बुद्धिप्रपञ्चेन. 13 पविभुएण वज्रबाहुना. 14 णवयारिउ नमस्कृतः.

9

सालउ ससु बिण्णि वि जोएप्पिणु णयणहुं केरउ फलु पावेप्पिणु ।
राएं अवलोइयउ सस्सीयउ अच्छिउडेहिं रूवरसु पीयउ ।
पुरणारीयणु कहिं मि ण माइउ अवरुप्परु चूरंतु पधाइउ ।
णिवडहिं कैरउ सहि धरणीवइ वज्जवाहु एहु सो बहिणीवइ ।
जसहरणामहु धीय जिणिंदहु एह वसुंधरि बहिणि णरिंदहु ।
एयहु उप्पलखेडणरेसहु दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।
जो सग्गाउ देउ अवयरियउ जो सिरिमइवरु जम्मंतरियउ ।
इहु सो वज्जजंघु हलि णरवरु एयहु संमुहुं मइं पसरिय करु ।
सो वि ण पावइ चित्तु जि पावइ तं पावंतु वि तणु संतावइ ।
पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु णं णं सो अणंगु मुणिमणमहु ।
का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय लंघवि कोट्टु पलोयमि वरसुय ।
ताइ णियंतिय रूवु कुमारहु पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।

घत्ता—रइपेल्लियउं उव्वेल्लियउं णिच्चलुट्टंतु णिरुंभइ ॥
कविणिम्मलए चुयं मेहलए दद्दु परिहणु णिब्बंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारें अंतरियउ सूहउ पायारें ।
उब्भिउ करु करयलइ ण णयणइं किह पेच्छमि अंगाइं समयणइं ।
का वि भणइ भासिय दुव्वयणइं अज्ज परइ मेल्लमि पइसयणइं ।
एयहु घरि दासित्तु समिच्छमि जीवमि छुडु मुहकमलु णियच्छमि ।
का वि भणइ णिवसुय सकयत्थी ण वियाणहुं चिरु काइं वउत्थी ।

9. १ MBPT ससीयउ. २ MBP पुरि. ३ K पराइउ. ४ MBP एहु; K एहु but corrects it to पहु. ५ MBPK बाहिण. ६ MBP पसरिउ. ७ MBP पावंतु जि. ८ MBP वरसिय. ९ MP धुउ मेहलए दढ°; B चुए मेहलए दढ°. १० MBP परिहाणु णिबंधइ.

10. १ B मेल्लिवि. २ MBP पिउसयणइं. ३ MBP फुडु. ४ P सकियत्थी. ५ B चिर.

9. 2 *a* सस्सीयउ भागिनेयः 11 *b* कोट्टु भित्तिः वरसुय वरश्रीः. 13 उव्वेल्लियउ उच्छ्वासितम्.

10. 1 *a-b* णगेत्यादि—नगश्च प्राङ्गणवृक्षः, अग्रद्वारं प्रतोली, ताभ्यामन्तरितः प्राकारेण च; अथवा, न गता अहमग्रद्वारेण प्रतोल्यां निसृत्य तं द्रष्टुम्. 5 *b* वउत्थी व्रतस्था.

पहउ जाहिं रमणु संपण्णउं मं छुडु को वि महातउ खिण्णउं ।
तहिं अवसरि पहुभवणि पइट्ठइं पाहुणाइं पीढेसु णिविट्ठइं ।
उवणिउ ण्हाणु विलेवणु णिवसणु ताहं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु विविहु रसु सुराहिउ सुवसु पंचिंदियहुं पियारउ ॥
जेवणु जिमिउं णावइ रमिउं रइसुहुं भुत्तिहि केरउ ॥ १० ॥

11

भणइ णरिंदु ण किं पि वियप्पमि धणु जं मग्गहि तं जि समप्पमि ।
तुहुं घरु आयउ तुह किं किज्जउ भणु भणु वज्जबाहु किं दिज्जउ ।
चवइ कुलिसयरु धणुकयसंकउ धणु गुणेण सहुं णिच्चु जि वंकउ ।
धणु मज्जु व मज्जावइ माणुसु धणु मारणउं बंधुद्रोहयविसु ।
धणु णयणइं जाणमि मइमइलइं तेण जि धणि दिट्ठ वि ण णिहालइ ।
धणु किं संणिवाउ जरु होसइ तेण जि धणि अणिबंधउं भासइ ।
धणु काणीणहु दीणहुं दुल्लहु उत्तिमपुरिसहुं माणु सुदुल्लहु ।
सयलु अत्थि महु तुज्झ पसाएं एक्कु जि मग्गमि सुहिअणुराएं ।
सकुलायउ सोहद्दउं दावहि सिरिमइ वज्जजंघकरि लावहि ।
तं णरणाहें वयणु समत्थिउ खिच्चहु उप्परि घिउ ओमत्थिउ ।
परभवाउ सुरमिहुणु जि आयउ महु तह मंदिरि माणुसु जायउ ।
अच्छइ विरहाणलसंतत्तउ संजोइज्जइ दइवविहित्तउ ।

घत्ता—चक्केसरहो तहु पवियरहो कण्णइ लिहियउ आणिउ ॥
गुणभूसियए ता विउसियए पडपवंचु वक्खाणिउ ॥ ११ ॥

---

६ MB सवसु. ७ MBP जेमणु.

11. १ B वियप्पिमि २ MBP कुलिसकरु. ३ MBP धणु णरणयणइं जाणमि मइलइं. ४ MBP धणु इट्ठइ ण. ५ MBP अणिबद्धउ. ६ MBP माणु सुवल्लहु. ७ M मत्थि. ८ MBP लायहि. ९ MBP एउ जि. १० MBP °विहत्तउ. ११ MBP बालइ लिहिउ वियाणिउ.

---

9 सुवसु जारक·

11-3 *a* कुलिसयरु वज्रबाहु. 9 *a* सोहद्दउं मित्रत्वम्. 10 *b* खिच्चहु उप्परि खीचडी उपरि (?) कृसराया उपरि; ओमत्थिउ प्रक्षिप्तम्. 13 पवियरहो वज्रबाहोः.

12

पियराहिरामाइ　　संपुण्णकामाइ ।
मुक्काइ वायाइ　　तुट्ठाइ मायाइ ।
परिखवियकम्माइ　　कइयाइ रम्माइ ।
*जिणणाहपूयाइ　　दि[1]ण्णाइ धूवाइ ।
सुइसायकुंभेहिं　　घ[2]णघडियखंभेहिं ।
रुप्प[3]भंयकुड्डेहिं　　आलिहियभेदेहिं[4] ।
विप्फुरियरयणेहिं　　वरहीरगहणेहिं ।
आसणविराइयहिं　　माणिक्कवेइयहिं ।
पडिणेत्तपच्छइउ　　कंतीइ चेंचइउ[5] ।
रु[6]लंतमोत्तियहिं　　णं दंतपंतियहिं ।
विहसंतु पडिहाइ　　दिट्ठीसुहं देइ ।
णाणापयारेहिं　　णाणादुवारेहिं ।
कउ मंडओ ताम　　संमाइ जणु जाम ।
मिलिएहिं सुहियँणहिं[7]　　भरिएहिं तोरणहिं ।
घणरवगहीरेहिं　　पहएहिं तूरेहिं ।
णच्चंततरुणीहिं　　मंडलियघरणीहिं[8] ।
खयरीहिं जक्खिणिहिं　　णायरणियंबिणिहिं ।
हिमहारसरिसेहिं[9]　　सजलेहिं कलसेहिं ।
पइपुत्तवंतीहिं　　महिणाहपत्तीहिं ।
सोहग्गसुंदरइं　　ण्हावियाइं वहुवरइं ।
पुणु पुणु पसाहियइं　　णवरइरसाहियइं ।
थुइवयणकलयलहिं　　धवलेहिं मंगलहिं ।
पुणु पुणु जि गाइयइं　　आसण्णढोइयइं ।

घत्ता—पसरियकरहे मयणिब्भरहे मणु मयणें सुंवियारिउ[10] ॥
मुहवडु पियहे णं गयघडहे वरसुहडें ओसारिउ ॥ १२ ॥

12. १ P संदिण्णधूवाइ. २ MBP घरु घडिउ खभेहि. ३ MBP °कुडेहिं. ४ MB °भडेहिं. ५ MBP चिंचइउ. ६ MBP झुलंत°. ७ P सुहयणहिं. ८ BP घरिणीहिं. ९ M °सरसेहिं. १० MB सवियारिउ.

12. · 8 *b* °वे इ य हिं चतुष्किकाभिः.

13

सोहणे वासरे चारुलग्गुग्गमे उग्गदोहग्गदुक्खावलीणिग्गमे ।
पाणिणा पाणि तीए तिणा धारिओ अंगडाहो परं दूसहो हारिओ ।
रायराएण भिंगारएणाणियं भायणेयस्स घित्तं करे पाणियं ।
अण्णजम्मागया तुज्झ सीमंतिणी तुज्झु मे दिण्णिया पेसलालाविणी ।
वाइणो वाउवेया पमत्ता गया पंचवण्णा पवित्ता विचित्ता धया ।
जाण जंपाण छत्तं सियं चामरं देस गामं पुरं सत्तभूमं घरं ।
उज्जलं हंसतूलक्कसेज्जायलं दीवओ मंचओ दासदासीउलं ।
हारिवीरोहओ इच्छियं मंडलं कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।
राइणा पुत्तिसंतोसउप्पायणं वत्थुसारं अणेयं पि दिण्णं धणं ।
रायपुत्तिं करेणुं व लीलागओ तं करे गण्हिउणं वरो णिग्गओ ।
मंडवे वेइयापट्टि आसीणओ वज्जबाहू समाणंदिओ राणओ ।
अक्खया पूयदूवंकुरुम्मीसिया बंधुलोएण घित्ता सिरे सेसिया ।
जाव गंगाणई जाव मेरू गिरी ताम्व भुंजेहे तुम्हे वि णिच्चं सिरी ।
होंतु पुत्ता महंता पहाभासुरा जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वासरा ।
अच्छमाणाइ लच्छीविसाला जहिं सो वरो सा वहू दो वि ताइं तहिं ।

घत्ता—लग्गिवि वरहो वहु वासरहो परिवाडिइ सुहवासहिं ॥
अहिसिंचियइं पुणु अंचियइं णिवहिं दुतीससहासहिं ॥ १३ ॥

14

बालमुणालसरलकोमलयरु दियहहिं जंतहिं कीलइ वहुवरु ।
वरु सकामु काइं वि जंपावइ वहु लज्जंति तं जि संभावइ ।
वरु तणुपयइजोग्गु आलिंगइ वहु मुक्की तं पुणु मणि मग्गइ ।

13. १ P भगार°. २ MBP भाइणेयस्य. MBP °तूलक°; K °तूलक but crrects it to °तूलक्क° and gloss अर्कपिचु अर्कतूल°. ४ M हार°. ५ MB पदिण्ण. ६ MBP रायपुत्तें. ७ P करेणुव्व. ८ MBP दुवंकुरामीसिया. ९ M भुंजेवि. १० MBP भासुर. ११ MBP वासरं. १२ MP पडिवाडिइ.
14. १ P बालु. २ MBP °पइयजोगु.

13. 2 *a* तिणा तेन राज्ञा. 7 *a* तूलक्क° अर्कपिचुरर्कतूलः. 8 *a* हारिवीरोहओ मनोहरवीरसमूहः. 12 *a* पूय° पवित्राः. 16 सुहवासहि सुखवासैः.
14. 2 *a* जंपावइ अनुमन्यते. 3 *a* तणुपयइजोग्गु शरीरस्वरूपयोग्यम्.

वरु केस[3]गाहेण ओणामइ		वहु हेट्ठामुहुं मुहुं लिह[4]क्कावइ।
वरु मउ[5]अउ जि करइ अहरग्गहु		हुं हुं[6] मेल्लि दर भासइ णववहु।
वरु थणसिहरइं छिवइ सहत्थें		वहु वीलावस ढंकइ वत्थें।
वीरु पसारिउ सणियउं पुंजइ		वरु क[7]रु ऊरुजु[8]यलि णिउंजइ।
वरु फेडवि अल्लइ पल्लंकइ		पाणि देइ वहु वयण[9]ससंकइ।
वरु सोणीयं[10]लहुत्तउ[13] जोयइ		वहु तहु दिट्ठि[11] करहिं पच्छायइ।
अलियणहेहिं णाहु संघट्टइ		वहु उग्गयपुलएण विसट्टइ।
चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइं		आसि वे वि भणु किं लज्जंतइं।

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उड्डायासहो ॥
तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतक[12]इवासहो ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

३ P केसगाहेण. ४ BP णिक्कावइ. ५ P मउ जि. ६ M महु मेल्लहि दर; BP लहु मेल्लहि दर. ७ B कर. ८ P °जुयलु. ९ MBP णियवयण°. १० M सोणीयलु हुत्तउ; P सोणीयलहुत्तइ. ११ MBP करहिं दिट्ठि. १२ MP °कयवासहो; T records a *p* पुप्फयंतरुइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

13 °हुत्तउ °अभिमुखम्.

XXV

अणुदिणु दंसणेण संभासणेण दाणसंगवीसासें ॥
पुंउभाउग्गमणे रमणीरमणे रमइ विसेसविलासें ॥ ध्रुवकं ॥

I

पप्फुल्लपोमपहसियमुहाहं कल्लाणण्हाणपुज्जारुहाहं ।
मउमणियमम्मणुल्लाविराहं उरुउररुहजुयलालियकराहं ।
अवरुंडणपसरियभुयवलाहं मुहकंठमूलि चुंबणरयाहं ।
रइजलरेल्लियसयणोयराहं धियकेसहं महुपीयाहराहं ।
कयपणयकोवसंभाविराहं लीलाकडक्खविक्खेविराहं ।
पविजंघसिरीमइवहुवराहं कीलंतहं गयबहुवासराहं ।
रूवें सोहग्गें अहुईय हिमकिरणकंति कुलिसयरधीय ।
सिरिमइवरलहुईसस मयच्छि णं विक्कमलकर सयमेव लच्छि ।
णामेणाणुंधरि सोक्खहेउ णियणंदणु णं सो कामएउ ।
लच्छीमइदेवीगब्भजाउ परिणामिउ राएं अमियतेउ ।

घत्ता—तणय वसुंधरहि घरभरधरहि छज्जइ नहु करि लग्गी ॥
कुलउत्तहु हिरि व कण्हहु सिरि व दिहि व रिसिहि आवग्गी ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:–

उन्नतातिमनुमात्रपात्रता भाति भद्र भरतस्य भूतले ।
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

GK do not give it.

1. १ MBP °वीमासहिं. २ MBP पिय°. ३ MBP °विलासहिं. ४ MBP उरि उररुह°; K उरउररुह°. ५ MBP °भुयलयाह°. ६ MB °मूलु. ७ B °रहाहं ८ MBP °कोवसभाविराहं. ९ MBPT अहुतीय. १० B कुलिसेयवीय. ११ MBPK °वइ°. १२ MB मियच्छि. १३ MP विगयकमल, B विकमलकल. १४ MBP लच्छीमइदेविहि गब्भि जाउ. १५ MBP परिणाविउ.

---

1. 6 *a* सयणोयराह स्वजनोत्कराणां स्वजनसमूहानाम्; *b* महुपीयाहराहं मधुनोपलक्षितः पीतोऽधरो ययोः. 8 *a* पविजघ° वज्रजंघः. 9 *a* अहुईय अद्वितीया; *b* कुलिसयरधीय वज्रबाहुपुत्री. 12 *b* अमियतेउ अमिततेजाः नाम श्रीमत्या भ्राता. 14 आवग्गी आवल्गिता.

2

अण्णहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि दससु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।
णरणाहें करिकरदीहबाहु णियणयरहु पेसिउ वज्जबाहु ।
सहुं सुण्हइ सहुं णियतणुरुहेण सहुं सकलत्तें ससहरमुहेण ।
आउच्छिवि इट्ठ विसिट्ठ बंधु संचलिउ सुयणु चंदक्कविंधु ।
उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ अम्मणु अंचहुं णीसरिउ राउ ।
हरिखुरधूलीधूसरिउ सग्गु छत्तहिं छाइउ दिसिविदिसमग्गु ।
पहरणविप्फुरणहिं जिगिजिगंतु चउपासहिं दीसइ महिदियंतु ।
गयमयजलधारहिं भरइ तल्लु हयलालइ हुउ चिक्खल्लु खोल्लु ।
गुरुयणविओयतावें चुयाइं पुत्तियहि पुंसेप्पिणु अंसुयाइं ।
सह कामिणीहिं पंकयमुहीइ पंडिय संपेसिवि समउ तीइ ।
आसण्णपंथि सुंदरपएसि सरसीमारामसिरीणिवेसि ।
पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु णियभवणहु पल्लट्टउ णरिंदु ।

घत्ता—इयरु वि जंतु पहे भल्लइ दियहे उप्पलखेडु पइट्ठउ ॥
पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्ठउ ॥ २ ॥

3

पिउघरि णं रइरंजियउ मारु सहुं वहुयइ सुहुं अच्छइ कुमारु ।
लक्खणवंजणहिं पसाहियाइं जमलइं पण्णासेक्काहियाइं ।
वरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ सुललियकव्वाइं व कइमईइ ।
एक्कहिं दिणि राणउ वज्जबाहु जावच्छइ सुइलीलंबुवाहु ।
सउहइ सेहीरासणणिसण्णु तौं कालीयरवरकिरणवण्णु ।
णहयालि अवलोइउ सरयमेहु णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वुं गेहु ।

2. १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ. २ MBP दिसिविदिसि°. ३ M °भारहिं. ४ MBP चिक्खल्लु. ५ K °णिवेसि. ६ MBP पल्लट्टिउ. ७ MBP उप्पलखेडि.

3. १ MB °रंजियकुमारु. २ MBP °वेंजणहिं. ३ K सुइसीलंबु°. ४ MBP सउहयलइ. ५ MBT सीहासण°; P सीहासणि. ६ MBP ता तें कालीयरकिरण°. ७ MBP दिव्वगेहु.

2. 5 *b* अम्मणु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गवोलापनं कर्तुं निःसृतः. 7 *b* महीदियंतु पृथिव्या दिगन्तः. 8 *a* तल्लु क्षुद्रसरः.

3. 1 *b* कुमारु पृथिव्यां कामः. 5 *a* सेहीरासण° सिंहासनम्; कालीयर° चन्द्रः.

उत्तुंगसिहिरसुरहरसमाणु पुणरवि सो दिट्ठु विलीयमाणु ।
चिंतइ पहु गउ वारिहरु जेम जायसमि पलयहु हउं मि तेम ।
जीविउ धणु पुत्तु कलत्तु वासु होसइ थिरु घणसंकासु कासु ।
इय भणिवि तेण परणरदुलंघु कुलसिरिहि समप्पिउ वज्जजंघु ।
सहु सुयसुएहिं सुयबहुसुएहिं अवरेहिं मि रायहिं थिरभुएहिं ।
जिणदिक्ख लेवि कउ कम्ममोक्खु तेणाब्भाइउ तं परमसोक्खु ।
रच्छाहिंडियसुरसुंदरीहि एत्तहि वि पुंडरीकिणिपुरीहि ।
घत्ता—जा सो चक्कवइ सुहबद्धरइ अच्छइ महुलिहमाणिउ ॥
ता णिसि मिलियदलु सुरहिउं कमलु उववणवालें आणिउं ॥ ३ ॥

4

जोइउ णरणाहें लेवि णलिणु को किर ण णियइ गोमिणिहि भवणु ।
उग्घाडइ तं सो रमणराइ लच्छीमुहदंसणि कामु णाइं ।
तं वारवार चप्पिवि करेण विहडियउ कमलु सूरेण तेण ।
पुणु पुणु लीलइ कीलंतएण एक्केक्कु पत्तु अवणंतएण ।
इच्छिउ राएं खरदंडणासु खरदंडणासु तहु गुणविसेसु ।
ववगयमलदलवलयंतरालि अवलोइउ अलि केसररयालि ।
सररुहकरंडि णिम्मुक्कजीउ णं इंदणीलमणि णियवि राउ ।
भासइ हे मामि सिलीमुहेण करिकण्णझडप्पणु सहिउ एण ।
दाणुल्लि कवोलि घुंणंतएण संपत्तउ दुक्खु रडंतएण ।
घत्ता—दिसहिं समुल्ललइ लोलइ वलइ रुद्धउ कहिं पसरइ करु ॥
णिसि तमपिहियमुहे पत्थंबुरुहे गंधलोलु मुंउ महुयरु ॥ ४ ॥

८ MBP °सिहरु. ९ MBP सो पुणरवि. १० MBP होहइ. ११ MBP पुंडरिकिणि°. १२ MP जो.
4. १ M णडिणु. २ MBP °दसणकामु. ३ MBP णिम्मुक्कु जीउ. ४ MBP इंदणीलु मणि. ५ MBPK घुलंतएण. ६ M संपत्तु दुक्खु करदंडएण; MP संपत्तु दुक्खु करडंतएण. ७ BP समुल्लसइ. ८ MBP मुउ.

---

11 *a* सुयसुएहिं पुत्राणां पुत्रैः; सुयबहुसुएहिं श्रुतबहुश्रुतैः अधीतागमैः.

4. 2 *a* उग्घाडइ विकासयति; रमणराइ क्रीडानुरागी. 4 *b* अवणंतएण त्रोटयता. 5 *a* खर-दंडणासु कमलम्; *b* खरदंडणासु तीव्रदण्डनाशः तस्य गुणविशेषः 8 *a* मामि हे सखि.

5

आरोहणबंधणताडणाइं[1] अंकुसखयाइं क[2]इवेयणाइं ।
गणियारिफासवसमागएण भणु किं ण विहुरु विसहिउं गएण ।
रसलालसु मासकणावलुद्धु परिधावमाणु संमुहउं मु[3]द्धु ।
सरिविउलविमलजलि कीलमाणु धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।
संगीयगोरिगयचित्तसोत्तु णउ पेक्खइ संमुहुं सरु सरंतु ।
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं चउदिसँ[4]हिं वि वग्गुरवेढु भमिउं ।
प्रा[5]एं संप्राविउ प्राणणिहणु वणि वाहें विद्धउं हरिणमिहुणु ।
पवसियमहिलंसुयह[6]तसिहेण तिडितिडियतिडिक्कारवणिहेण ।
वेच्छिँ[7]छल्लकुसुमसमवण्णएण दीवुच्छवि देहलिदिण्णएण ।
रू[8]वरयपयंगहं कयखएण णं भासिउ भावइ दीवएण ।
एमेव कयंताणणि पडंति मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।
एक्केकिंदियवसमुवगयाहं एवड्डु दुक्खु तेहिं जंतुयाहं ।
अस[10]रियपंचक्खरसामिसाहं चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।
कंपावियदस[11]दिसिवहरसाहं अक्खे[12]वि तं किं अम्हारिसाहं ।

घत्ता—इय संभरिवि मणे आहूउ खणे अमियतेउ णॄ[13]वसंसिउ ॥
तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥ ५ ॥

5. १ MBP °ताडणबंधणाइ. २ MBP कय°. ३ B मुद्धु. ४ MBP °दिसहिं वग्गुरावेढु. ५ MBP पावें संपाइउ पाण°. ६ MBPK हय°. ७ MBP कंकेल्लिकुसुम°, T विच्छिल्ल कोरण्टकः. ८ M रूवयरपयरंगहं; BP रूवयरपयंगहं. ९ MBP जहिं. १० M असरिसपच°; T असरिय°. ११ MBK दस-दिस°; T दसादिसि°. १२ MBP अक्खमि. १३ MBP णिव°.

5. 1 *b* °खयाइं° क्षतानि. 2 *a* गणियारि° हस्तिनी. 3 *a* मासकण° मांसखण्डम्. 7 *a* प्राएं प्रायः; णिहणु विनाशः. 8 *b* °रवणिहेण °शब्दव्याजेन. 9 *a* वेच्छिल्लकुसुमसमवण्णएण कोरण्टक-पुष्पवत्पीतवर्णेन. 10 *b* भावइ प्रतिभासते. 13 *a* असरियपंचक्खरसामिसाहं न स्मृता पञ्चाक्षरस्वामिनां पञ्चपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीर्यैस्तेषाम्; *b* चक्खियपंचक्खरसामिसाहं आस्वादितं पञ्चानामक्षाणामिन्द्रियाणा रसो रतिसुखं तदेवामिषं यैः. 14 *a* कंपावियदसदिसिवहरसाहं कम्पिता भयं नीता दशादिक्पथा मार्गाः रसा च भूमिर्यैस्तेषाम्.

6

राएण भणिउं भो भो कुमार | धरि धरणिभारु धउरेयधीर।
कलिकलुसपंकु तवहुयवहेण | हउं सोसमि कंपियसयमहेण।
तुहुं देहि कुलक्कमभरहु खंधु | ता चवइ तणउ सो मयरचिंधु।
मइं पहणेवउ परमायरेण | तमणियरु व बालदिवायरेण।
कामिणि मेइणि वि जगेक्कराय | पइं भुत्ती भुंजमि केम ताय।
तुह पयपंकयरयचंचरीउ | कूरारिलुलाययपुंडरीउ।
जिह लच्छीहरु तिह पुंडरीउ | आसणु अलिवहि सपुंडरीउ।
महु तणउ तणउ सो पुंडरीउ | इह करउ रज्जु नृवपुंडरीउ।
हउं तुहुं मि बे वि साहहुं परत्तु | तं णिसुणिवि राएं तं जि उत्तु।
घत्ता—तां सिसु ससिसरिसु जयकयहरिसु महिणाहें सोमालउ॥
रज्जि परिट्ठविउ णरवरणविउ पुत्तु पुत्तु पय पालउ॥ ६॥

7

परिसेसियमत्तमहागएण | परिसेसियचलहिंसियहएण।
परिसेसियकंचणसंदणेण | परिसेसियभडवरणंदणेण।
परिसेसियबहुदेसंतरेण | परिसेसियपउरंतेउरेण।
परिसेसियसयलवसुंधरेण | जायवि देवें चक्केसरेण।
जसहरसीसहु गणहरहु पासि | पव्वज्ज लइय गिरिकुहरवासि।
दिज्जंति ण इच्छिय पुहइ जेण | सह अमियनयणामेण तेण।
उच्चारियजिणवरथुइमुहाहं | सहसु जि वयमासिउ तणुरुहाहं।
पव्वइया मुणिमयजाणियाहं | सह सट्ठिसहस रायाणियाहं।

6. १ MBPK धोरेय°. २ K सोसवि. ३ M मेइणि जगि एक्क°, BP मेइणि व जगेक्क°. ४ MBPT अलवहि. ५ MBP णिव°. ६ MBP तो.

7. १ K adds this foot in the margin. २ K omits this foot. ३ M णंदरेण, P °दंसणेण, but records a p °णदणेण. ४ M तेण. ५ MBP पव्वइयइं.

---

6. 1 b धउरेय° धुरि साधुः. 4 a पहणेवउं परित्याज्यम्. 6 b लुलायय° महिषः; °पुंडरीउ व्याघ्रः. 7 b अलिवहि देहि, सपुंडरीउ सच्छत्रम्. 10 सोमालउ कोमल,. 11 पय पालय प्रजाः पालय.

7. 7 b वयमासिउ व्रतं गृहीतवान्.

दिक्खंकियाइं लुंचेवि केस णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।
इय रायं किउ णिक्खवणु जाम संपत्त विलासिणि तहिं जि ताम ।

घत्ता—पंडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥
किउ मणु अप्पवसु कंदप्पवसु होंतउ खंतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

8

णिरुद्धयं णिराइणा समाणसं विराइणा ।
विमुक्कओ सवासओ सभूसणो सवासओ ।
समाम्मिओ तवासओ लुओ कयंतवासओ ।
णिवारिओ कसायओ समाहिओ कसायओ ।
मईहरो पिसायओ जिओ पहुल्लसायओ ।
चलेहिं जाण साहिया थिरेहिं जाण साहिया ।
दढं दिही हणंति मा परज्जिया छुहा तिसा ।
सगंतु सो वसी अयं सहेइ माहसीययं ।
विइण्णवाणरीडरं भरंतरुक्खकोडरं ।
णियाहिदेहकंचुयं घणागमे वि कं चुयं ।
महीहरे भयालए हुयम्मि गिण्हयालए ।
रविस्स संमुहो ठिओ तवेइ मोक्खपंथिओ ।
अहिण्णभूतणग्गयं सबाहिरंतणग्गयं ।
महाखले वि सामिणं णमंसिऊण सामिणं ।

६ P कंदप्पु वसु.

8. १ T णमुक्कणग्गवासओ and adds सवासउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थः. २ MBP समाहिओ. ३ P कसाईओ. ४ MT पिहुल°. ५ MB दिहि; P दिद. ६ GK यय but gloss अजम्. ७ MBPK गिंभयालए. ८ M संमुहे. ९ MBP थिओ. १० MBP अभिण्ण°.

8. 1 *a* णिराइणा नृराजेन चक्रवर्तिना; *b* विराइणा वीतरागेण. 2 *a* सवासओ स्वगृहम्, *b* सवासओ सवस्त्रम्. 3 *a* तवासओ तपआश्रवम्, *b* कयंतवासओ कृतान्तपाशः. 4 *b* कसायओ कः परमात्मा तस्य स्वादोऽनुभवः. 5 *b* पहुल्लसायओ पुष्पबाणः कामः. 6 *a* चलेहिं चञ्चलचित्तैः; *b* थिरेहिं जाण साहिया स्थिरचित्तैः परीषहेभ्योऽक्षुभितचित्तैः जानीहि साधिता निर्जिता. 8 *a* अय अज जिनम्; *b* माहसीययं माघमासे शीतम. 10 *a* णियाहिदेहकचुयं प्रवाहितसर्पकम्, *b* क चुयं पतितं जलम्. 13 *a* अहिण्णभूतणग्गय अखण्डितभूमितृणाग्रम्. 14 *a* महाखले वि सामिणं महाखलानामप्युपशामकम्.

तओ वसुंधरीसुया अणुंधरी ससा[११]सुया ।
धरेवि पुंडरीययं सिरि[१२]व्व पुंडरीययं ।
पईविओयकालिया अचंदिम व्व कालिया ।
समंदिरं समाइया अमेयतेयमाइया ।

घत्ता—[१३]सुंयरिवि णिययवइ सा हंसगइ घिवइ सरीरु महि[१४]त्थले ॥
णयणंजणमइलु कुंकुमकविलु अंसुपवाहु थणत्थले ॥ ८ ॥

9

पुणु सोउ मुएप्पिणु हसियचंदु जोइउ णत्तियवयणारविंदु ।
घर[१]मंतिमंतणिम्मलमईइ संचिंतिउ मणि लच्छीमईइ ।
णिज्जइ दवग्गि वणि मारुएण णिज्जीव णाव वें[२]णि तारुएण ।
असहायहु कासु वि णत्थि सिद्धि चिंतेवी पढम सहायरिद्धि ।
जो धरिउ भारु णाहें विसालु तं वहइ केम अं[३]व्वत्तु बालु ।
जं धवलु धुरंधरु धीरु धरइ तहि भरिण व वच्छु ण पउ वि सरइ ।
गंधव्वण[४]यररायहु सुवाय मंदरमालिहि सुंदरिहि जाय ।
चिंतागइ मणगइ खयरराय देवीइ भणिय ते बे वि भाय ।
इहु लिहिउँ[५] लेहु मइं कउँ[६] मणम्मि सामुग्गइ णिहिउँ[७] सलंछणम्मि ।
जाइवि वररमणीदुल्लहासु णिक्खि[८]वहु सिरीमइवल्लहासु ।
णिं[९]सुणिवि अम्महि कम णवेवि पाहुडु लेविउँ[१०] आहरणु लेवि ।
गय ते णहेण कंटइयदेह पयजुयणेहीरारुणियमेह ।

घत्ता—खणि मणपवणगइ खयराहिवइ उ[११]प्पलखेडु पराइय ॥
वज्जजंघणिवेण इच्छियसिवेण ते पणवंत पलोइय ॥ ९ ॥

११ K ससासुया but corrects it to सुमासुया. १२ P सरि व्व. १३ MBP सुमरिवि; K सुंयरिवि. १४ MP महीयले, B महयले.

9. १ MBP °मंतिमत°, K °मते मंत°. २ K जलि. ३ MBPT अवुहत्तु. ४ B ° णयरे रायहु. ५ MBP लेहु लिहिउ. ६ M कय. ७ BP लिहिउ. ८ MBP णिक्खेवहु सिरिमइ°. ९ MBP तं णिसुणिवि अवहियवयणु बे वि. १० MBP चेलिउ. ११ MBP उप्पलु खेडु.

15 *b* समासुया श्वश्रूसहिता. 17 *b* कालिया रात्रिः. 18 *b* अमेयतेयमाइया अमृततेजोमातृका.

9. 1 *b* °णत्तिय° पौत्रः. 3 *b* वणि जले; तारुएण कर्णधारेण. 5 *b* अव्वत्तु अप्रगल्भः. 9 *b* सामुग्गइ करण्डके; सलछणम्मि मुद्रायुक्ते. 12 *b* °णेहीर° कुङ्कुमम्.

10

तहु तेहिं समप्पिउ मणिकरंडु उग्घाडिउ तेणुवरिल्लखंडु ।
उव्वेढिवि वाइउ झत्ति लेहु जिह जाउ जोइ महिणाहणाहु ।
जिह दिज्जंते वि परिहरिवि भूमि हुउ अमियतेउ तस्साणुगामि ।
जिह पुंडरीयसिरि बद्धु पट्टु मेल्लेप्पिणु णियजोव्वणमरट्टु ।
जिह लइय दिक्ख णवकामिणीहिं जिह मंडलियहिं मुक्कावणीहिं ।
जिह तणुरुहेहिं जिह पंडियाइ हयकामकोहविच्छड्डियाइ ।
गउ पहु जिह अवरु वि अमियतेउ तुहुं पालहि तेरउ भाइणेउ ।
जं जिह तं तिह लेहेण कहिउ ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।
चंगउ किउ देवें मयणजूरु जं लइयउ तवु भवतिमिरसूरु ।
चंगउ किउ तासु तणुब्भवेण जं मउ संगहियउ णववएण ।

घत्ता—धण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥
णिहिघडदरिसियइ घडदासियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

11

इय भणिवि तुरिउ संचलिउ राउ दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।
सव्वत्थ रहेहिं ण जाहुं जाइ जंपाणु खलइ मायंगु थाइ ।
संचारु ण लब्भइ हयवरेहिं जलु थलु संदाणिउं किंकरेहिं ।
छत्तइं णं कुसुमइं वियसियाइं सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।
चमरइं चलंति कामिणिकरेसु णं हंसइं रत्तिंदीवरेसु ।
दीसंति सुवंसारूढकेउ णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10. १ MBP °णुवरिल्लु. १ MBPT उव्वेल्लिवि, K उव्वेढवि. ३ K तेण लेहु. ५ MBP जोइ जाउ. ५ MBP दिज्जती. ६ M मियउ तेउ. ७ B बद्ध पट्टु. ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोव्वणु मरट्टु. ९ MBP णवकामिणीहिं. १० MP तउ; B तव. ११ MBP वउ; K वउ but corrects it to मउ. १२ MBP घरदासियइ महिए.

11. १ MBP कुमुयइं.

---

10. 2 *a* उव्वेढिवि प्रमार्य, *b* महिणाहणाहु चक्री. 6 *b* °विच्छड्डिया समूहः. 10 *b* णववएण यौवनस्थेन. 12 विहाविउ विखण्डीकृतो वाञ्चितः.

11. 4 *b* °पहसियाइं प्रभाशुभ्राणि.

लीलाइ मिलिय मंडलिय जंति मइवरु सुरगुरुसारिच्छु मंति ।
आणंदु पुरोहिउ दिव्वदिट्ठि धणवइसमाणु धण[2]मित्तु सेट्ठि ।
बलवइ वि अकंपणु कंपियारि सं[3]चलियउ चलकरवालधारि ।
णिवसंतगामपुरपट्टणेहिं वणु संपा[4]इय कइवयदिणेहिं ।

घत्ता—चवलर[5]हेल्लिचलु फुल्लियकमलु तहिं सरवरु अवलोइउ ॥
णं रायहु महिए आयहु सहिए अग्घवत्तु उच्चाइउ ॥ ११ ॥

12

करिकरडगलियमयबिंदुमलिणु मयमिहुणणिसेवियविउलपुलिणु ।
मयलंछण[1]यरकरदलियणलिणु मय[2]मत्तभमरगइरइयखलिणु ।
मय[3]गयदलवाट्टियसिरिणिकेउ मयवइमुहजीहाविलिहियाउ ।
तहु तीरि विमुक्कउ सिमि[4]रु जाम सहुं सायरसेणें सूरि ताम ।
चिंतंतु भोज्ज[5]भायणपरिक्ख रिसि परि[6]भमंतु कंतारभिक्ख ।
दमव[7]रु णामें पुहईसरासु संपत्तउ दूसावासु तासु ।
आ[8]वंत णियै[9]वि मउलियकरेण सिरिमइपविजंघवल्लहवरेण ।
ठाभणिय बे वि उवसमवसेण थिय चा[10]रणमुणिविणयंकुसेण ।

घत्ता—सुरसिरकुसुमरयरयमुक्करयमहुयरपंतिहिं कालिउं ॥
चंदयरुज्जलेण पासुयजलेण पयजुयलउं पक्खालिउं ॥ १२ ॥

२ MB धणयत्तु. ३ K सचल्लिउ. ४ MBP सपाइउ. ५ M रहिल्लु चलु; B°रहिल्लिचलु; P रहिल्लचलु.

12. १ MBP °लछणकर°. २ MBP मयरत्त° ३ K मयगल°. ४ MBP सिबिरु. ५ MBP भोयभायण°. ६ BP परिभवतु. ७ B दमवर. ८ BP आवंतु. ९ MBP णिएवि. १० MP चारणगय.

11 °रहल्लि° लहर्यः कल्लोलाः. 12 सहिए सख्या.

12 2 *a* मयलछणयरे त्यादि–मृगलाञ्छनं चन्द्रं करोतीति मृगलाञ्छनकर आदित्य.; तत्करैर्दलितं नलिन यत्र 3 *a* °दलवट्टिय° चूर्णम्. सिरिणिकेउ पद्मम् 6 *b* दूसावासु पटगृहमयं शिबिरम्. 9 सुरे–त्यादि–सुराणां देवाणां शिरःकुसुमरजसि रताः मुक्तवेगा निश्चला ये मधुकरास्तेषां पङ्क्तिभिः.

13

वंदेप्पिणु भावें चरणकमलु उच्चासणि णिहियउ साहुजमलु ।
तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु सुरसेसु वि णिरसेसु वि समाणु ।
हत्थु वि उड्डंतु ण होइ दीणु लेंतु वि पाणइं णं वि धम्महीणु ।
णिक्कुरु बिक्कुरहु दिट्ठि देइ णिण्णेहु वि दिण्णु सणेहु लेइ ।
तिम्मणु गेण्हंतु वि बंभयारि रसु जाणंतउ रसणिव्वियारि ।
णित्थड्ढें लइयउ थड्डु दहिउ जगमेहिएं पीयउ सीउं महिउ ।
मणसच्छहु ढोइउ संच्छ वारि इय भुत्तु भोज्जु बहुदोसहारि ।
उच्चाइयथिरदीहरभुएण आसीस दिण्ण तहु मुणिजुएण ।
उवविट्ठ णिहित्तइं आसणाइं विहियइं पयपणमणपेसणाइं ।
पुणु दीहु वेल्लु जिणधम्मु सुणिवि जंपिउ णिवेण णियसीसु धुणिवि ।

घत्ता—रूवइं मुणिवरहं संजमधरहं आसि कहिं मि मइं दिट्ठइं ॥
णवर ण संभरामि हा किं करमि बिहिं[13] लोयणहं सुइट्ठइं ॥ १३ ॥

14

तो भासिउं विहसिवि मइवरेण तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।
जमलहं पण्णासहं पच्छिमिलु सुयजुयलु ण याणहि किं गहिलु ।
पत्थिव जइवर जाणंति सव्वु ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ जरेणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।
महु महुरुं जि दीसइ सयलु कालु तवुं तणुरुहेहिं मईं मोहजालु ।
आयरियउ किं परिणयवएण कम्मु जि बलवंतउ किं वएण ।
महु दमवर दमियाणंगलील गयभवइं समासहि सामिसाल ।
अण्णु वि पयहि तुह माउयाहि जइपुंगव चक्काहिवसुयाहि ।

13. १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उड्डंतु. ३ P णउ. ४ M दिण्ण. ५ K सिणेहु. ६ MBP णिरु णिव्वियारि. ७ MBP णित्थड्डें ८ MBP थड्डु. ९ MBP जगि महिएं. १० MBP सीय. ११ MBP सच्छु. १२ MBP भुत्तभोज्जु. १३ MBP विहिलोयणहं.

14. १ MBP तो. २ B जइ णिंबु; P जरु णिंबु. ३ P महुर. ४ M सयल. ५ MBP तउ. ६ MBP मइ. ७ MBP किह परिणयवसेण, T परिणतवयसा. ८ MP °भवहिं.

---

13. 5 तिम्मणु व्यञ्जनविशेषः स्त्रीचित्तं च. 7 *b* महिउ तक्रम्.

14. 1 *b* जलहिसेण सागरसेनः. 5 *b* मइ मयि. 6 *a* परिणयवएण परिणतवयसा.

आणंदपुरोहियमइवराहं घणमित्ताकंपणकिंकराहं ।
चिरजम्मु कहहु महुं गरुउ णेहु किं कारणु ता वज्जरइ साहु ।
रिसिणा पउत्तु परिचत्तणाणु जयवंम्मु णाम बंधिवि[11] णियाणु ।
जाओ सि बप्प तुहुं खयरणाहु णामेण महाबलु बलसणाहु ।

घत्ता—चिरु रुप्पयगिरिहि अलयाउरिहि सइंबुद्धें संबोहिउ ॥
मुउ खयराहिवइ सुविसुद्धमइ सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥ १४ ॥

15

जाओ सि देवु अहिलसिउ काउं ईसाणकप्पि ललियंगु णाउं ।
तहिं मरिवि भवंतरि एत्थु आउ तुहुं वज्जजंघु महं तणउ ताउ ।
पुणु कहइ साहु भवभावमुक्कु सुणि सिरिमइजम्मंतरचउक्कु ।
गहवइसुय धणसिरि सुयहरासु उवसग्गु करेप्पिणु मुणिवरासु ।
हुई दालिद्दिणि वणियधीय पिहियासवेण उवसमहु णीय ।
सा मयं[11] सावयवउं किं पि लेवि हुई देवत्तणि तुज्झु देवि ।
णामेण सयंपह चविवि तेत्थु हुई णरणाहहु धूय एत्थु ।
सिरिमइ सइ सुंदरि मज्झु माय आयण्णहि भिक्खपवंचु ताय ।
जंबूदीवामरगिरिविदेहि पुरिमिल्लिइ गयणविलंबिमेहि ।
वच्छावइदेसि रुसा[12] समिद्धु होंतउ णरवइ णामेण गिद्धु ।
गउ णरयहु दससायरसमाउ अणुहुंजिवि पंकप्पहि वराउ ।
णियणयरणियडि णियवसुणिवासि हुउ वग्घु दिसागयकुसुमवासि ।

घत्ता—ता तहिं महिहरए लवलीहरए पीईवद्धणु[13] भासिउ ॥
उप्परि भायरहो समरायरहो जंतु राउ आवासिउ ॥ १५ ॥

९ M परचित्तणाण. १० MBP अजवम्मु; K अजवम्मु but gloss जयवर्मा त्वं. ११ K बंधवि.

15. १ MBPK अहिलसिय. २ P कामु. ३ P णामु. ४ MBP एत्थ जाउ. ५ MBP महु. ६ MBP °मुक्क. ७ MBP °चउक्क. ८ MB सुहयरासु. ९ MB करेविणु. १० P दालिद्दिय. ११ P मुय. १२ BP रसासमिद्ध; GK note this as *p* in the margin : रसासमिद्धु इति पाठे पृथ्वीपरिपूर्णः; T रसासमिद्धु अतिकोपी रसासमृद्धो वा पृथ्वीपरिपूर्णः. १६ M पीईपद्दणु; BP पीईवड्ढणु.

11 *a* परिचत्तणाणु परित्यक्तज्ञानः.

15. 1 *a* काउ कामः.; 10 *a* रुसा कोपेन; समिद्धु ज्वलितः. 11 *b* वराउ वराकः. 12 *a* °वसुणिवासि धृतधनस्थाने. 41 समरायरहो संग्रामादरस्य.

16

तेहिं णिवसइ पहयरिणयरिणाहु जा तावोलंबियलंबबाहु ।
चारणमुणि णहयलि ओयरंतु वणि चरियामग्गे पइसरंतु ।
गिरिवरविवरंतरसंठिएण मयमासाहारुक्कंठिएण ।
दिट्ठउ पुलि पिहियासवक्खु परमेसरु णिम्मलणाणचक्खु ।
संभरियजम्मु हउं मंदभाउ एत्थु जि चिरु होंतउ पुहइराउ ।
गउ सब्भहु पुणु अलियहि जाउ पसुमासें पोसमि काइं काउ ।
मणु जाणिवि मुणि वि समीउ आउ संबोहिउ साहिउ धम्मणाउ ।
थिउ संणासणि मृगु णिक्कसाउ गउ भिक्खहि भिक्खु महाणुभाउ ।
तो थाहि भणिवि महुरें सरेण पडिगाहिउ झत्ति चक्केसरेण ।
पक्खालिउ जमिकमजुगु जलेण अंचिउ पोमेण सकेसरेण ।
गुणवंतहु संतहु कयउ माणु तें तहु दिण्णउं आहारदाणु ।
तं पुच्छिउ इच्छिउ णियहिएहिं सेणावइमंतिपुरोहिएहिं ।
सो णाहें तेण दरिसियउ पुलि जइणा पत्तउ सुरवइसुहिल्लि ।
ईसाणि दिवायरु णाम तियसु अण्णु वि सुहुं पावइ किं ण सवसु ।
गउ महिवइ मोक्खहु खविवि कम्मु तिहिं तिण्णि समीहिवि दाणधम्मु ।

घत्ता— मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥
कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

17

मुउ मंति कुरुहि गइ आउमाणि कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।
उप्पण्णउ सुरु ईसाणसग्गि विप्फुरियविविहमाणिक्कमग्गि ।

16. १ K तिहिं. २ G तारोलंबिय°. ३ P णिम्मलु. ४ MBP समरिउ जम्मु. ५ MBP सुब्भहु; T सब्भहु नरके. ६ MBP मिगु. ७ M तो ठाहु भणिवि; BP तो थाह भणेवि; K भो थाहि भणिवि ८ M पुणु कमजुउ जलेण BP कमजुयलु णरेसरेण; T कमजुगु णरेण. ९ MBP इच्छिय. १० MBPT झत्ति ११ BPK सुरवर°. १२ BP तहिं.

17. १ MBP मुउ.

---

16. 1 *a* पहयरिणयरिणाहु प्रभकरनाथः प्रीतिवर्धनः. 4 *a* पुलि व्याघ्रेण; पिहियासवक्खु पिहिताश्रवाख्य.. 6 *a* सब्भहु श्वभ्रं नरकम्. 7 *b* धम्मणाउ धर्मोपदेश.. 10 *a* सरेण जलेन. 13 *b* सुहिल्लि सुखपरंपरा. 15 *b* तिण्णि सेनापत्यादय..

हंसियइ वरभवणि पहंजणंकु जायउ पुरोहचरु गलियसंकु ।
सेणाणि पहायरु पहधरंति हुउ दिव्वदित्ति दीवियदियंति ।
चत्तारि वि णिच्छु जि विहियसेव देवंत्ति तुज्झु परियारदेव ।
पइं चुइ पुणु हुया जेत्थु जेम आहासमि णिसुणहि तेत्थु तेम ।
सद्दूलदेउ सिरिमइहि उयरि सायरसेणो हुउ पुण्णपवरि ।
मइवरु मइवरु तुह मंति राय को पावइ एयहु तणिय छाय ।
हे ताय पहायरु मरिवि देउ अज्जवहि अकंपणु पुत्तु जाउ ।
सेणावइ तेरउ तिव्वतेउ परबलहु समुग्गउ धूमकेउ ।
कणयाहु तियसु चुउ कईहिं भणिउ सुयकित्तिअणंतमईहिं जणिउ ।
जो एहु बप्प सो दिण्णसुद्धि आणंदु पुरोहिउ विमलबुद्धि ।

घत्ता—अमरु पहंजणउ रंजियजणउ हसियविमाणहु-आयउ ॥
दत्तयवणिवइणा विग्घयरइणा धणयत्तहि सुउ जायउ ॥ १७ ॥

18

धणमित्तु सहिकुलणलिणमित्तु किंकरु अहवा तुह परममित्तु ।
एयइं छह बद्धसिणेहयाइं तुम्हइं सग्गाउ समागयाइं ।
णरवइ चउ किंकर समरभीम सिरिमइ राणी मोहग्गसीम ।
णिसुणेवि भवावलि विम्हियाइं छ वि जिणवरविगुण चिंतिवि थियाइं ।
पुणु भणइ राउ भयवंत विमल सद्दूल कोल गोपुच्छ णउल ।
चत्तारि वि णरहं ण ओसरंति अच्छंति णिसण्ण ण वणि चरंति ।
णउ भक्खु लेंति णउ जलु पियंति णवियाणण तुह भासिउं सुणंति ।
किं कारणु कहहि मुणिंदचंद ता भणइ सुरि सुणि भो णरिंद ।

२ MBP हसियवर° ३ P चत्तारि जि णिच्छु वि ४ B देवत्त. ५ MB सायरसेणु म हुउ P सायरसेणहो हुउ, K सायरसेण हुउ. ६ MBP कईहि

18. १ MBP विभियाइं २ MBP जिणवर°. ३ PT गोपुछ. ४ MBP भो मुणि.

---

17. 4 *a* पहधरंति प्रभाविमाने 9 *b* अज्जवहि आर्जवाराभ्याम. 10 *b* धूमकेउ वह्निः.

18. 5 *b* गोपुच्छ मर्कटः 7 *b* णवियाणण नमितानना .

इह देसि हत्थिणायउरि गम्मि वणि सायरदत्तु विचित्तहम्मि।
तहु धण धणवइ सुउ उग्गसेणु सो कामुउ कामिणिपायरेणु।
पहु कोट्ठागारि अइक्कमेवि भत्तइं भग्गइं बलि मड्डु लेवि।
उवणेंतु पणयमीमंतिणीहिं बंधाविउ राएं णियवणीहिं।
मुउ कोहें जायउ एत्थु वग्घु ओहच्छइ मइं मणिणावि सलग्घु।
घत्ता—होंतउ सूयरउ चिरु माणरउ विजयणयरि वुंछिए किसु॥
महणंदे जणिउ जणवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहि सिसु॥ १८॥

19

हरिवाहणु णामें वुढमाणु दप्पंधु समंदिरि कालमाणु।
णरणाहें णंदणु भणिउ एंव माणेण परंमुहुं होंति देव।
तं णिसुणिवि धाइउ चवलु डिंभु सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंभु।
मुउ एत्थु एहु हयउ वराहु पुणु कहइ साहु अवंतसाहु।
उद्धुयधयमालापंचवण्णि कइ आसि जम्मि णयरम्मि धण्णि।
वणिवरिण कुबेरें जणिउ पुत्तु पणइणिहि सुदत्तहि णागदत्तु।
बहिणिहि विवाहु किज्जइ धणेण भासिउ मायइ ता सा अणेण।
मंत्तिवि चामीयरु णियउ सव्वु ता तहिं वि ताइ तहुं गहिउ दव्वु।
सुउं मायारउ हुउ एत्थु एहु वणि मंकडु माणुसमेत्तदेहु।
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि सुपइट्ठियपट्टणि तोरणालि।
होंतउ कंदुवि लोलुयउ णाम दियहेहिं णवर रामाहिराम।
पारंभिउ जिणहरु पत्थिवेण कारवइं एण कारावएण।
घत्ता—जुण्णउं रायहरु तम्हाउ तरु लेवि वहइ गुरु परियणु॥
इट्ट विसंट्ट जहिं सहस त्ति तहिं कंदुइ पेच्छइ कंचणु॥ १९॥

५ MBP हत्थिणाउरि पुरम्मि. ६ BP वन्थाभरणइ. ७ MBP बलिमउ. ८ MBP उवयतु T उवणेंत. ९ MB तुह अच्छइ, P हुउ अच्छइ. १० MBP वुद्धाइ ११ MBP मह णंदें १२ MBP जणवय°.

19. १ MBP धाविउ चवल. २ B अवइत्तसाहु. ३ MBP त गहिउ. ४ MBPK मुउ. ५ MBP मक्कडु माणुमु. ६ MBP लोलुउ ७ M तुम्हाउ भरु. ८ B विसिट्ट. ९ MB कदुउ, P कदुव

12 *b* णियवणीहिं वरत्राभि 13 *b* ओहच्छइ ऊर्ध्वं. स्थितः.

19. 5 *b* कइ वानरः 9 *a* मायारउ मायावी. 10 *a* णायार नकुल. 11 *a* कंदुवि कांदविक., *b* रामाहिराम हे रामाभिराम वज्रजघ. 12 *b* एण अनेन कांदविकेन. 13 तरु शीघ्रम. 14 विसइ स्फुटिनाः.

20

तोलेप्पिणु चलकरयलतुलाइ परियाणेप्पिणु वणिवरकलाइ।
दट्टउ चामीयरपूरियाउ बैहिं मिप्पिंडेहिं समारियाउ।
कइवयउ ण केण वि भावियाउ लहुं णियभवणहु णेवावियाउ।
कम्मंयरहु दिण्णउं मरसु भोज्जु लुद्धु वि दाणेणं करेइ कज्जु।
इय गंगहिउं कम्मु करेवि गूढु अण्णहि दिणि मोहवसेण मूढु।
घरि तणउ थवेप्पिणु वियसियासु गउ गामंतरु तणुरुहहि पासु।
एत्तहि पुत्तें पियगाण भिण्ण सोवण्ण इट्ट दारियहि दिण्ण।
तें खंडइ जाम सुवण्णयारु तां पेच्छइ पहुपिउणाम सारु।
तें गंपि पकंपियजीयएण जाणाविउ रायहु भीयएण।
भासिउ वम्मइ वित्तंतु सव्वु तं जायउ रायहु तणउं दव्वु।
धरणीसरकुलचिंधेण जडिय लोलुयगेहि णिवमुद्द पडिय।
परिरक्खियमाहिवमाणवेहि परभीयरेहि णं दाणवेहिं।
सुउ बंधिवि कारागारि घित्तु तहिं अवसरि कहुइ तहि जि पत्तु।

घत्ता—णंदणु तेण हउ कह वि हु ण मउ दंडपहारहिं ताडिउ॥
परधणलोलुयउ सो लोलुयउ राउलेण विब्भाडिउ॥१०॥

21

पुणु बहुदविणासाऊरिएण कहि गये भणेवि उंहूरिएण।
तुम्हइं बिण्णि वि महुं सत्तु जाय पाहाणें चूरिवि णियय पाय।
मुउ लोहकसायमलेण मइलु इह हूयउ पेक्खु णरिंद णउलु।

20. १ MP बहि मिउपिंडेहिं. B बाहिंमिपिंडेहि २ M कम्मरयह. ३ MBP दाणेण जि करइ ४ MBP गहिरउ ५ MBP ता. ६ MBP तो. ७ MBP त. ८ MBP लोलुय गेहि ९ T माहिव मा लक्ष्मीईना माहिव माहिना इति पाठे

21. १ MBP गउ २ MBP कुह्रूरिएण.

---

20. 2 b बहिं बाहे 6 a वियसियासु विकसितास्यः. 7 a पियगाण पत्रजा. 12 माहिव° लक्ष्मीपती राजा.

21. 1 b उंहूरिएण कंदुकिना

णिसुणेप्पिणु महुमहुरक्खराइं सुयरेप्पिणु गय जम्मंतराइं ।
उवसंत वहंति ण भउ ण रोसु सुहझाणें अज्ज खवंति दोसु ।
पइं दिण्णु दाणु माणिउं इमेहिं कईकंठवग्घविसहरदमेहिं ।
बहुभोयभावसुइदाइणीहिं पग्माउ वन्दु कुरुमेइणीहिं ।
अट्ठमइ जम्मि तुहुं जिणवरिंदु होसहि पयजुयणमियसुरिंदु ।
सिग्मिइ होसइ सेयंसराउ पहिलउ जि दाणतित्थयरदेउ ।
सुरणरसुहाइं संपाविहिंति ए तुह सुहि होइवि सिज्झिहिंति ।
संसारविहुरणिव्वेइएण जिणणाहधम्मअणुराइएण ।
कमकमलजमलवल्लइयसिरेण तं णिसुणिवि पणविय वहुवरेण ।
वंदिय मंतिहिं सावयगणेण गय रिसि णहयर णहयंगणेण ।
संपत्ता दुरियं वणयरत्तु संभासिवि रत्तागि वि णिरुत्तु ।
घत्ता—मृगहत्थें ऽसिवि तहिं णिसि वसेवि सूरुग्गमि पहु णिग्गउ ॥
करिघंटासरहिं पसरियकरहिं भयभसावियदिग्गउ ॥ २१ ॥

22

छणयंदु व तणुकंतिइ पसण्णु दियहेहिं पुंडरिंकिणि पवण्णु ।
साणुधरि पइवयणिलयकुहिणि ओलोइय तेण णवंति बहिणि ।
पणमिय सासुय जामाउएण अविरयसणेहपसरियभुएण ।
आलिंगिउ राएं भाइणेज्जु अविउलु बालु पहसियमुहज्जु ।
मिलियउ लच्छीमइसिरिमईउ णं गंगाणइजउणाणईउ ।
णियबंधुहिं संचिंतियसिवेण तहिं तेण वज्जजंघें णिवेण ।
सामित्तणगुणि संणिहिउ सामि मंति वि किउ विउहणयाणुगामि ।

३ MBP °झाणेण अज ज खवहि ४ B कइकट्ठवग्घ°, P कइकोलवग्घ° ५ M बहुभेय° ६ MBP °दावणीहिं. ७ MBP °णमियणरिंदु ८ M दाणु तित्थु° ९ PK करकमल°. १० M मगहत्थें फासिवि तहिं णिसि णिवसेवि B मगहत्थें फासिवि तहिं वणि णिवसेवि P मगहत्थे फासिवि तहिं णिव सासिवि.

22 १ M णवकंतिइ २ MBP अवलोइय ३ MBP पणविय ४ MBP जामाइएण ५ MBP °सिणेह° ६ MBP भाइणेज्जु ७ MBP अविउलु वि T अविलु इति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ८ MBP ता णियबंधुहिं चिंतिय° ९ MB विवुह°, P विवुह

6 *b* °कठ° सूकर

22 4 *b* मुहज्जु मुखाञ्जम 7 *b* विउहणयाणुगामि विद्वन्नयानुगामिन .

णिरुवद्दउ णिवसावियउ देसु सुहिं संमाणिय संचियउ कोसु ।
विस्तीइ बलाइं णियंतियाइं[10] जोग्गइं दुग्गइं परिचिंतियाइं ।
पडिवक्खु असेसु वि खयहु णीउ थिरु रज्जि थवेप्पिणु[11] पुंडरीउ ।
अप्पणु[12] पुणु घरवत्ताइ लइउ महुं कंतइ उप्पलखेडु[13] अइउ ।
सींहुं[14] भिच्चचउक्कें ससिमुहेण थिउ रज्जु करंतु सुंही[15] सुहेण ।
को एम ससयणहं देइ रिद्धि एवड्ड कासु सामत्थसिद्धि ।

घत्ता—थिर परकज्जरय णियवंसधय सुपुरिस को णामंघइ ॥
घणतमभरहरणें दित्तीयं[16] रणे पुप्फदंत को लंघइ ॥ २२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जबाहुवज्जदंततवचरणकरणं
णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २५ ॥

॥ संधि ॥ २५ ॥

१० MP यतियाइ. ११ MBP समप्पिवि १२ BP अप्पुणु १३ MBP उप्पलु खेडु १४ B omits this foot. १५ MBP महामुहेण. १६ P दित्तीहरणे.

11 *b* अइउ आगतः. 13 *a* ससयणह स्वस्वजनस्य 14 णासघइ नाश्रयति.

XXVI

कामभोयसुहरसवसहो तहु वसुमइहि काइं वण्णिज्जइ ॥
जं जं चिंतइ किं पि मणे तं तं सयलु वि खणि संपज्जइ ॥ ध्रुवकं ॥

I

जक्खपंको दढं वल्लहालिंगणं मालईमालिया कुंकुमालेवणं ।
उंच्चओ मंचओ चारुसेज्जोयलं आवरोहारि सोण्हं थणाणं थलं ।
उण्हयं भोयणं तुप्पधाराहरं रत्तओ कंबलो छण्णरंधं घरं ।
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तयं सीययालम्मि तेणेरिसं भुत्तयं ।
चंदणं चंदपाया पिया णेहली मल्लियादामयं तारहारावली ।
दाहिणो मंथरो मारुओ सीयलो रुक्खकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।
वल्लरीमंडवो पोमजुत्तो सरो वीयणंदोलणालीणओ सीयरो ।
थद्धथद्धं दहिं सीययं पाणियं उण्हयालम्मि तेणेरिसं माणियं ।
फुल्लियासाकयंबोहधूलीरओ मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।
णीरधारामुयंतंबुवाहज्झुणी संगया सूहवा पासि सीमंतिणी ।
णिग्गलं मंदिरं णिक्कियं भूयलं धावमाणं रयालं पणालीजलं ।
इट्ठगोट्ठीविसिट्ठेहिं विण्णाययं दिव्वगंधव्वयं कव्वयं पाययं ।
विज्जुमालाफुरंतं णहं दिप्पहं तस्स मेहागमे तं पि सोक्खावहं ।
दीहरो कालओ जाव वोच्छिण्णओ गेहए धूवओ तास से दिण्णओ ।

MBP gi e, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

घनधवलताश्रयाणामचलास्थितिकारिणा मुहुर्भ्रमताम ।
गणनैव नास्ति लोके भरतगुणानाममराणां च ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. MBP उच्चओ २ M °सेज्जावल P सेज्जालयं ३ MBP सोण्ह ४ GK मारओ but gloss वायु . ५ MBP पोमपुण्णो ६ MB थद्धथड्ड P बद्धथट्ट ७ MBP सीयलं. ८ M रयाणं. ९ MBP वोलीणओ, T वोच्छिण्णओ.

---

1. 4 *b* आवरोहारि स्थूलोन्नत मनोज्ञ च सोण्ह उष्मसहितम् 9 *b* सीयरो शीकरो जलकणाः, 11 *b* °माऊरवंदस्स केयारवो मयूरवृन्दस्य केकारव . 13 *b* रयालं सवेगम्.

सोत्तसंचारि धूमेण ताणं हओ दंपईणं खणेणेव[10] जीओ गओ ।
कारणं मच्चुणो किं जणो कंखए होइ सेत्थं[11] सिरीसं पि आउक्खए ।

घत्ता—जंबूदीवसुरालयहो उत्तरकुरुहि रमणमणहारिहे[12] ॥
मरिवि वइवरु अवयरिउ उयरि अणिंदहु अज्जवणारिहे[13] ॥ १ ॥

2

णवमासहिं गब्भहु णीसरियइं ताइं बिहिं वि संचियसुहचरियइं[1] ।
उत्ताणियमुहाइं णिवसंतइं करकमलंगुलियाउ पियंतइं ।
सत्त सत्त दिण गय रंगंतइं पुणु वि पुणु वि उट्ठंतपडंतइं ।
सत्त खलिय पयवयणइं[2] देंतइं अवरोप्परु दरकेलि करंतइं ।
पुणु सत्तहिं थिराइं संजायइं गयकुसलाइं[3] परिप्फुडवायइं ।
अवरहिं सत्तहिं अलिणिहचिहुरइं णिहिलकलाकलावणिउणयरइं ।
अण्णहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं णवजोव्वणसिंगारारूढइं ।
ताइं तिगाउयतुंगसरीरइं वरबदरीहलमेत्ताहारइं[4] ।
सो वि गासु गेण्हंति तिदिवसहिं[5] इय भासिउं[6] रिसीहिं हयहरिसहिं ।

घत्ता—जहिं चामीयरधरणियलु पाणिउं मिट्ठउं णाइं रसायणु ॥
मणिमयकप्पमहीरुहहिं चिउं[7] रवि सत्तावीसं जोयणु ॥ २ ॥

3

जहिं जणियसोक्ख दहभेय रुक्ख ।
जणमणु हरंति चिंतियउ देंति ।

१० MBP खणेणेय. ११ B सत्थ पियाओखए, P सत्थ सिरीसं पयाओ खए. १२ MBP °हारहो. १३ MBP °णारिहो.

2. १ B संचियसुहसुहचरियइं. २ MBP पिय. T पग पदानि. ३ MBP गइ°. ४ MPB वर-बदरीहल°, T कुवली बदरी. ५ B सुदिवसहिं. ६ MBP भासियउ रिसिहिं. ७ MP थिउ B बिउ. T चिउ प्रच्छादितम्.

---

18 b सिरीस श्रीमुखं पुष्पं वा. 19 °सुरालयहो मेरोः.

2. 4 a पयवयणइं पदानि वचनानि च. b दरकेलि स्तोकक्रीडा. 8 b °कुवली° बदरी. 11 चिउ प्रच्छादितम्.

महसहिउं पेज्जु मज्जंगु मज्जु ।
तूरंगतूरु भूसंगु हारु ।
केऊरु दोरु वच्छंगु चीरु ।
गेहंगु गेहु णं सग्गमेहु ।
ढोयंति तुंग तरुभायणंग ।
भायणविहत्ति दित्तंगदित्ति ।
जे भोयणक्ख ते विविहभक्ख ।
भोयणसयाइं रसमंगयाइं ।
उवणेंति ताइं जगु महइ जाइं ।
पुण्णाय णाय वर पारियाय ।
णवमालियाउ अलियालियाउ ।
मालंगकुरुह ढोयंति णिरुह ।
हयतिमिरभावु दीवंगु दीवु ।

घत्ता—णिच्चु जि उच्छउ णिच्चु दिहि णिच्चु जि तगुतारुण्णु णवल्लउ ॥
भोयभूमिरुहमाणुसहं जं जं दीसइ तं तं भल्लउ ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दुसियसज्जणवासु ण खासु ण सोसु ण रोसु ण दोसु ।
ण छिक्क ण जिंभणु णालसु दिट्ठु ण णिद्द ण णेत्तणिमीलणु सुट्ठु ।
ण रत्ति ण वासरु धंतु ण धम्मु ण इट्ठविओउ ण कुच्छिय कम्मु ।
अयालि ण मच्चु ण चिंत ण दीणु कयाइ कहिं पि सरीरु ण झीणु ।
पुंगीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु ण लाल ण सेंभु ण पित्तु वि डाहु ।

3. १ MBPKT मयसहिउ. २ MBP भूगगु ३ MBP केऊर°. ४ M वच्छग. ५ MBP गेहंग. ६ MBP °विहित्ति. ७ MP भोयणेक्ख ८ P णिरुह. ९ MBP °भाउ १० MBP दीवगदीउ. ११ MBP उच्छउ. १२ MBP णिच्चु.

4. १ MB दुज्जण. २ MBP ण रोमु ण सोसु. ३ MBP णालस. ४ M णित्त°. ५ MBP वण्णु; T धण्णु. ६ MB मिच्चु. ७ MBP पुरीसुवसग्गु. ८ MBP सिंभ. ९ MBP पित्त ण डाहु.

---

3. 3 *a* महसहिउ हर्षसहितम्; पेज्जु पातव्यम्. 8 *a* °विहत्ति विभक्ति भेदः 9 *a* भोयणक्ख भोजनाख्याः. 14 *b* णिरुह निर्दोषा .

4. 3 *a* धंतु ध्वान्तमन्धकारः पाप च.

ण रोउ ण[10] सोउ ण सेउ विसाउ किलेसु ण दासु ण को वि[11] वि राउँ[12]।
सु[13]रूव सलक्खण माणव दिव्व अगव्व सुभव्व समाण जि सव्व।
मुहाउ विणीसिउ सासु सुयंधु कलेवरि वज्जसमट्ठियबंधु।
तिपल्लपमाणु थिराउणिबंधु करीसँर[14] केसरि ते वि हु बंधु।
ण चोरु ण मारि ण घोरुवसग्गु अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु।

घत्ता—बिहिं मि ताहं तहिं संठियहं एक्कमेक्करइरमणालुद्धहं॥
भुं[15]जंतहं णाणासुहइं जाइ कालु दि[16]ढणेहणिबंधहं॥ ४॥

5

तहिं जि पईहरथोरकर सद्दू[1]लाइय जाय णर।
पत्तभोयभूमीभवेण वज्जजंघरायज्जवेण।
समहिलेण अच्छंतएण सु[2]तरुसिरि पेच्छंतएण।
कासु वि भासियसम्मयहो कज्जेणे[3]यं समागयहो।
देवहु दीवियदिप्पहहो णिएवि विमाणु रविप्पहहो।
पुव्वभवंतरु संभरिउ तं ललियंगदेवँ[4]चरिउ।
थिउ णियमणि जा विंभइउ भवणिव्वेयभावलइउ।
ता णहाउ चारणजुयलु ओयरिउ णहणिहु विमलु।
पंतु तेण हक्कारियउ रुइरासणि वइसारियउ।
सीसें सीसेण जि णँ[5]विउ सविणयवायइ विण्णविउ।
के तुम्हइं किं आगमणु कि[6]उ किं तुम्हहं उवरि मणु।
महु वट्टइ णेहुल्लियउ ता गुरुमुणिणा बोल्लियउ।

घत्ता—जइयहुं तुहुं अलयाउरिहि होंतउ आसि महाबलु राणउ॥
तइयहुं हउं सइंबुद्धु तुह मंति मंतसब्भावविियाणउ॥ ५॥

१० MBP ण सेउ ण सोउ. ११ MBP कोइ. १२ MBP add after this: मुहजि (B महुजि; P मुहजे) ण मीसिय मासिय (B चम्मु ण) रोम, सुरेसहु बुदि विसेसियकाम (B °कम्म). १३ MBP सरुव. १४ M करीसरि. १५ MBPK भुंजतह. १६ MB दढणेहणिबद्धह.

5. १ MBP सद्दूलाइ वि. २ MBP सुरहरसिरि. ३ MBP कज्जें केण. ४ P °देउ. ५ P वि. ६ MBP किं अम्हहं तुम्हहं.

9 *a* सुयंधु सुगन्धः. 11 *b* विसेसइ अतिशेते.

5. 10 *a* सीसेण जि शिष्येणैव. 12 *a* णेहुल्लियउ स्नेहार्द्रम्.

6

णिद्दाइ भुत्तो सि विवरंतचित्तो[1] सि ।
अइया कुवाईहिं सिविणंतरे तीहिं ।
हो[2] बप्प दुग्गेज्झ तइया मए तुज्झ ।
संसारहाराइं जिणवयणसाराइं ।
सिद्धा रिसी जेहिं दिण्णाइं तं तेहिं ।
होऊण ललियंगु मोत्तूण दिव्वंगु ।
भीमारिणिण्णासि भूमीसु हुओ सि ।
मुणिदाणवुद्धीइ बहुपुण्णसिद्धीइ ।
तुहुं एत्थु जाओ सि णाणेण णाओ सि[3] ।
संबंधिओ होसि किं णेय जाणासि ।
खगवइविओएण मइं मुक्कमोएण ।
किउ घोरु तवयरणु इंदियछिंहाहरणु[4] ।
सोहम्मि सोहालु हुउ देउ मणिचूलु ।
सइंपहविमाणम्मि दुक्खावसाणम्मि ।
इह जंबुदीवम्मि पुव्वे विदेहम्मि ।
पुक्खलहि मेइणिहि पुरिपुंडरिंकिणिहि ।
पियसेणरायस्स पसरंतरायस्स ।
कयणाहणेहम्मि सुंदरिहि देहम्मि ।
जाओ मि हुं भद्द आलाविणीसद्द[5] ।
पीइंकरो[6] णाम सुणि रामिणीकाम[7] ।
अलिवलयणिहकेस पीईसरो[8] एस ।
मज्झाणुओ होइ दिव्वो महाजोइ ।

6. १ MBP विवरंति. २ MBP हा बप्प. ३ MP add after this: णयणेहिं दिट्ठो सि, णेहं गओ तो सि ४ B °छुहा°; T °छिहा°. ५ MBP आलावणी°. ६ MBP पीईकरो. ७ MBP कामिणी°; T रामिणी°. ८ P ईस.

6. 12 *b* °छिहा° स्पृहा वाञ्छा. 19 *b* आलाविणीसद्द वीणासदृशशब्दः. 20 रामिणी° स्त्री.

घत्ता—णिच्चं चिय णेहाउलहो णिग्गय बिण्णि वि णियघरवासहो ॥
जाया सीस सयंपहहो अरहंतहो संतारिविणासहो ॥ ६ ॥

7

अवहिणाणि चारण संजाया बिण्णि वि पइं संबोहहुं आया ।
लइ सम्मत्तु अलाहि पलावें भावहि जिणदंसणु सब्भावें ।
अत्थि णत्थि किं संक ण किज्जइ इहपरलोयकंख वज्जिज्जइ ।
गुणवंतहु दोसु वि ढंकिज्जइ मग्गभट्ठु पुणु मग्गि ठविज्जइ ।
असुइकलेवरु जणु ण वियप्पइ साहुहुं देहदुगुंछ ण घिप्पइ ।
वेज्जावच्चु समउ वच्छल्लें किज्जइ हियएं संघेहियल्लें ।
मिच्छु तुच्छु जो वंझु कहिज्जइ अण्णादिट्ठिवहु सो ण थुणिज्जइ ।
वड्ढइ वड्ढियदुक्कियलेवइ मलु कुदेवकुच्छियगुरुसेवइ ।
समयवेयलोइयमूढत्तणु अवसें करइ अणत्थपवत्तणु ।
अच्छइ वुहयणगंथणिबद्धउ विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ ।

घत्ता—वप्पं किज्जइ जीवदय अप्पउ परु सयलु वि जाणिज्जइ ॥
हम्मइ जेण जियंतु पसु तं करवालु ण वेउ भणिज्जइ ॥ ७ ॥

8

सया णारिरत्तो सया मज्जमत्तो ।
सया वित्तलुद्धो सया सत्तुकुद्धो ।
समोहो ममाओ सदोसो सराओ ।
ण सो होइ देवो ण खं सुण्णभावो ।
पलं जस्स खज्जं महुं जस्स पेज्जं ।

7. १ M अलंहि. २ MBP वि दोसु ३ P असुह°. ४ M देहु दुगुञ्छण, P देहु दुगुंछु ण. ५ B संहहियल्लें. ६ MBPT °पहु. ७ MP मुणिज्जइ. ८ MBP °गंथहिं बद्धउ T गथणिबद्धउ. ९ MBP जीवदया.

8 १ P मज्जि मत्तो. २ P सत्तकुद्धो. ३ MBP सय सुण्ण°, T खं ण न गगन देवः.

२ 4 संतारिविणासहो परमवीतरागस्य कर्मविनाशकस्य च

7. 2 *a* अलाहि प्रतिषेधेऽव्ययम्. 6 *b* °हियल्लें हितत्वेन 7 *b* अण्णादिट्ठिवहु मिथ्यादर्शनादिमार्गं. 10 *a* वुहयणगथणिबद्धउ पण्डितैः शास्त्रे रचितः *b* विउ इति—विद ज्ञाने इति धातुः प्रसिद्धः.

8. 4 *b* ण ख न गगन देवः.

वहू जस्स गेहे रई जस्स देहे ।
गुरू सो वि हा हे जगे मंदमेहे ।
सपावं सपावा णवंता विगावा ।
ण गच्छंति सग्गं ण वा तेऽपवग्गं ।
पउत्ता महंता ण कायस्स चिंता ।
विसस्सावि हारे खमा होइ भारे ।
पमोत्तूण वेयं खगं वइणतेयं ।
जिणिंदं अणिंदं सुरिंदोहवंदं ।
विहुं वीयरोसं अहिंसाणिघोसं ।
विहाऊण एक्कं णयाणीयसक्कं ।
परो को हयारी जगे मोहहारी ।
तिणा जो पउत्तो असब्भेण चत्तो ।
अहिंसापयासो वियाणागमो सो ।

घत्ता—पँत्तीय धम्मु दयापरमु रिसि गुरु देउ जिणिंदु भडारउ ॥
लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥ ८ ॥

9

भो ललियगत्त भो धवलणेत्त ।
सद्दहसु मित्त तच्चाइं सत्त ।
छद्दव्वभेय छज्जीवकाय ।
पंचत्थिकाय चउं सुरणिकाय ।
णाणाइं पंच गइभेय पंच ।
रिसिवयइं पंच गिहिवयइं पंच ।

४ MBP तस्स. ५ MBK विगस्सावहारे; P विसस्साहवारे. ६ MBP मोहयारी; T मोहयारी मोहदारकः ७ MB एत्तीय; P पत्तिय and gloss प्रतीत्या. ८ MB °पवरु; P °परु.

9. १ K adds this line in the margin but scores it out. २ MBP सुरचउणिकाय. ३ M गयभेय.

---

7 *a* हा हे हा कष्टम्. 8 *b* विगावा विगतगर्वाः. 9 *b* अपवग्गं मोक्षम्. 11 *b* खमा समर्थाः. 12 *b* वइणतेयं गरुडम्. 15 *b* णयाणीय° नमनार्थमानीतः. 16 *a* हयारी विनाशितकर्मारातिः. 18 *b* वियाणागमो सो विजानीहि सः आगमः. 19 पत्तीय प्रतीत्यः, अथवा प्रतीतिं कुरु.

छल्लेसभाव मुणि तिण्णि गाव।
तेरह चरित्त गुँत्ति वि तिहुत्त।
णवविह पयत्थ दह धम्मपंथ।
सत्त भय सिट्ठ मय अट्ठ दुट्ठ।
अप्पाणुवाउ कम्माणुवाउ।
चरणाणिओउ करणाणिओउ।
जं कहिउ तेण मुणिपुंगवेणँ।
णिसुँणिवि कमेण तँ गहिउँ तेण।
अज्जेण जेम अज्जाइ तेम।

घत्ता—जिह सद्दूलँज्जवणरेण कोलणरेण वि तिह पडिवण्णउं॥
वाणरचरफणिरिउंचरेहं सम्मइंसणु मुणिणा दिण्णउं॥ ९॥

10

भत्तिए णविय भवियणरवग्गें गय रिसि उँल्लुलेवि णहमग्गें।
कुलिसबाहुतणयहु ते किंकर मइवराइ चत्तारि सुहंकर।
तउ करेवि जाया णिरवज्जहि अहत्रिमाणि हेट्ठिमगेवज्जहि।
लोयसारु अहँमिंदसुरत्तणु पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु।
वज्जँजंघु सइ सिरिमइ अज्जइ बे वि मँयाइं समंचियपुज्जइं।
हुउँ ईसाणकप्पि वरु सुरवरु सिरिपहमंदिरि णामें सिरिहरु।
तहिं जि कप्पि कुंदेंदुसमप्पहि सीमंतिणि सुरगेहि सयंपहि।
जिणचरणारविंदरयचित्तें णारिलिंगु छिंदवि सँमत्तें।
हूई अमरु सयंपहु णामें सो रूवेण ण णिज्जिउ कामें।

४ MP रयणइं तिहुत्त. ५ K °पुगमेण. ६ B सिसुणवि, P णिसुणवि. ७ MBP महिउ. ८ MP सद्दूल अज्जणरेण; B सद्दूलवज्जणरेण. ९ MP °रिउचरहं.

10. १ P उल्लुलेवि. २ MBP अहमिंदु. ३ MBP वज्जजंघु सिरिमइ तह अजइ. ४ P मुयाइं. ५ P हुव. ६ MBPK सम्मत्तें.

9. 7 *b* मुणि जानीहि. 11 *a* अप्पाणुवाउ जीवास्तित्वम्, *b* कम्माणुवाउ कर्मानुवादः. 12 *a* चरणाणिओउ चरणानुयोगः. 17 फणिरिउं° नकुलः.

वग्घंचरु वि णरु मुउ ललियंगउ णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ ।
देउ वराहचरु वि संजायउ णामें कुंडलिल्लु सुच्छायउ ।
णंदविमाणि सरयकंदाहइ खणि सोदामणिपुंजु व मेहइ ।
घत्ता—कुरुभूमिहि माणेवु मरिवि कंतिइ णाइं मियंकु दुइज्जउ ॥
णियसुहकम्में पेरियउ पइयरि मणरहु हुउ णउलज्जउ ॥ १० ॥

11

होंतउ आसि जम्मि जो वाणरु सुहुं भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।
णंदावत्तविमाणइ हूयउ णाम मणोहरु देउ सरूयउ ।
जो सइंबुद्धु बुहोहें भाविउ जेण महाबलु धम्महु लाविउ ।
पीयंकरु तिलोयपीईकरु सो संजायउ केवलिजिणवरु ।
णाणें परियाणिवि सुरसहयरु गउ वंदणहत्तिइ तहु सिरिहरु ।
अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु ।
णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर पइं महु दिण्णु हत्थु परमेसर ।
पइं सइंबुद्ध बुद्धुं जगु बुद्धउ पइं हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ ।
पइं जोइयउं तच्चु णीसेसु वि तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।
तुहुं महु लग्गणखंभु अभंगउ हउं तुह चरणजुयलु सरणं गउ ।

घत्ता—मिच्छादिट्ठि सुदुट्ठमण पावयम्म णिद्धम्म वराया ॥
कहहि मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया ॥ ११ ॥

12

कहइ भडारउ बिण्णि कुधामहु गय संभिण्णसहसमइ भीमहु ।

७ K विग्घचरु. ८ MP कुंडिलिल्लु. ९ MBP माणउ.. १० MBP मणहरु, K मणहर but corrects it to मणरहु.

11. K सो. २ MBP °विमाणे पहूयउ. ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीइंकरु, P पीईकरु. ६ MP पीइंकरु; B पीयंकरु. ७ MB °भत्तिहि; P °भत्तिइ. ८ B करेविणु. ९ MP सुद्धु. १० MBP जाणियउं. ११ MBP अभग्गउं. १२ MB सुदिट्ठिमण; P सुदुट्ठमण.

10. 12 *a* कंदाहइ मेघाभे.

11. 6 *a* °सहंतरालि समान्तरे. 9 *b* सहणेसु सधनेषु; णीसेसु निःस्वेषु दरिद्रेषु.

असहविहुर संतइ संजो[1]यहु णिच्चतमंधहु णिच्चणिगोयहु ।
सुण्णवायविवरणदूसियमइ णिवडिउ णरइ दुइज्जइ सयमइ ।
तं णिसुणिवि सिरिहरु गउ तेत्तहि णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।
पइसेप्पिणु तं सतिमिरु कुच्छिवरु भणइ विमाणारूढउ सुरवरु ।
अहो अहो सयमइ सु[2]णेहि महाबलु हउं सो खयरराउ जसणिम्मलु ।
भुत्ती सुइ[3]रु जेण अलयाउरि सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।
सुरदुंदुहिगंभीरणिणायं तुम्हइं तिण्णि वि जिणिवि विवायं ।
गुरुणा जिणवयणम्मि णिउत्तउ [4]सोक्खपरंपराउ हउं पत्तउ ।
जीवदया[5]दमेण परिचत्तउ तुहुं पुणु पावें एत्थु णिहित्तउ ।
दुण्णयहिं मा विणडहि अप्पउ वीयराउ जि[6]णु भणु परमप्पउ ।

घत्ता—धम्मु अहिंसउ सद्दहहि मोक्खमग्गु णिग्गंथु वियाणहि ॥
जीहोवत्थछिहाररहिउ मुणि णि[7]मुक्कमोहु संमाणहि ॥ १२ ॥

13

पहाजित्ततरणी विहंगेण करु[1]णी ।
पढ़ु तेण मुणिओ [2]जयाणिंद भणिओ ।
दढं झ[3]त्ति गहिओ सया दोसरहिओ ।
जिणिंदस्स समओ अमोहेण वि मओ ।
तमु[4]ब्भूयदुरियं महादुक्खभरियं ।
प[5]वोत्तूण महुरं गओ सग्गसिहरं ।
सुरो सोम्म[6]वयणो सियायंबणयणो ।
तओ विहुरदलिओ सकालेण चलिओ ।
रिऊ विहियसमरा महाण[7]यरविवरा ।

12. १ P सो जोयहु. २ MBP मुणहि. ३ P सुयरु. ४ MBP °परपराइ. ५ MBP °दयादाणें. ६ MBP भणु जिणु. ७ MB णिम्मुक्कमोहु; P णिमुक्ककोहु.

13. १ B करणी. २ MBP जिणिंदेण भणिओ. ३ MBP भत्ति°. ४ M समुब्भूय°. ५ MBP पमोत्तूण. ६ MBP सोम°. ७ MB °णयर°.

---

12. 13 जीहोवत्थछिहाररहिउ जिह्वोपस्थक्षुधारहितः.

13. 5 *a* उब्भूयदुरियं उदयप्राप्तपापम्.

मणिणलिणणिलए वरे दीववलए ।
सिगारूढहरिणो महामेरुगिरिणो ।
सुरासाइ सहले विदेहम्मि विउले ।
जलाऊरिया णई मही मंगलावई ।

घत्ता—पइट्टणु रयणसंचु सधणु तेत्थु[9] जि णरिंदु महीधर[10] णामें ॥
सुइवंसु[11]ब्भवु गुणसहिउ चावदंडु णं दाविउ कामें ॥ १३ ॥

14

तहु गेहिणि[1] सोहग्गें सुंदरि किं वण्णिज्जइ णामें सुंदरि ।
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु जिणमय[2]सद्दहाणु पा[3]वेप्पिणु ।
सयमइ गुहहलेण तहि तणुरुहु हुउ छणयंदबिंबसंणिहमुहु ।
सो जयसेणु भाणुसंणि[4]हयरु जाम विवाहि धरइ कण्णाकरु ।
ता सिरिहर[5]सुरु तहिं जि पढुक्कउ वाउ धूलिउवलोहुवि मुक्कउ ।
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।
तं पेच्छिवि वरइत्तें भाविउ पइ[6]उ चिरु मइं कह व णिसेविउ ।
एम कहिं मि[7] [8]पाहाणिहिं ताडिउ एम्व कहिं वि खरपवणें मोडिउ ।
एम कहिं मि रयपुंजें झंपिउ एम्व कहिं मि हउं दुक्खें कंपिउ ।
एम सरिवि सुमरिउ णारय[9]भउ जमहरग्गिसिहि पासि लइयउ [10]तउं ।
तउ करेवि बंभिंदु पहूयउ धम्मु जि जीवहु [11]अग्गइ हूयउ ।

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदें ॥
सामण्णु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ बंभसुरिंदें ॥ १४ ॥

८ MBP °ऊरिय, K °ऊरिय but corrects it to °ऊरिया in second hand. ९ MBPK तेत्थु णरिंदु. १० MBP महीधरु. ११ MBP °वसुब्भव.

14. १ P गेहणि. २ MBP जिणमइ°. ३ K पालेप्पिणु. ४ MBP °साणिय°. ५ MBP सिरिहरु. ६ K omits this foot. ७ MB कहिं मि. ८ BK पाहाणहि ९ MBP णायर°. १० MBP तउ; K वउ. ११ MBP सग्गहु, K सग्गहु, but corrects it to अग्गइ

10 *a* मणीणलिणणिलए मणिमयपद्मस्थाने; *b* वरे दीववलए पुष्करार्धद्वीपे.

15

चुउ मुइवि णियकाउ सिरिहरु वि सग्गाउ ।
ससिसूरदीवम्मि इह जंबुदीवम्मि ।
हरिणियगिरीसस्स मंदरगिरीसस्स ।
उत्तुंगदेहम्मि सुरदिसिविदेहम्मि ।
विस्थिण्णसीमाहि णयरिहि सुसीमाहि ।
सुहदिट्ठि णरणाहु रणि जस्स ण रणाहु ।
जो रोसु संवरइ जो सिरिवहुं धरइ ।
जो कामु परिहरइ परणारिरइ हरइ ।
जो माणु णिग्गहइ मउयत्तु संगहइ ।
जें जणिउ जणि हरिसु जें णं किउ अइहरिसु ।
जें लोहु णिम्महिउ पुरिसत्थु जें महिउ ।
मउ जेण णिट्ठविउ मणु जेण थिरु ठविउ ।

घत्ता—रूवें सोहग्गें गुणेण णावइ उव्वसि णं इंदाणी ॥
किं थुव्वइ अम्हारिसिहिं सुंदरि णंद णाम तहु राणी ॥ १५ ॥

16

सुरवरु सग्गु मुएप्पिणु आयउ ताहि गब्भि सो णंदणु जायउ ।
तेण सुविहिणामेण जुवाणें णं पच्चक्खें वम्महबाणें ।
मुणिहिं वि मयणुम्मायजणेरी अभयघोसचक्कवइहि केरी ।
सुय लीलाणिज्जियतंबेरम परिणिय पणइणि णाम मणोरम ।
जो सिरिमइहि जीउ स सयंपहु सुरमंदिरचुउ बहुपुण्णावहु ।

15. १ M हरिणिव°. २ M उत्तुंगगेहम्मि. ३ MBP सिरिवहू वरइ. ४ MBP जणहरिसु. ५ P जिं ण कउ. ६ MBP इंदाइणि. ७ K सुंदर. ८ B राइणि.

16. १ MBP सिरिहरु. २ MB °पुण्णाउहु.

---

15. 3 *a* हरिणियगिरीसस्स हरिणा इन्द्रेण नीतो गिरा वाचामीशस्तीर्थंकरो यत्र. 6 *b* रणाहु रणाघ सग्रामदोषः.

16. 4 *a* °तंबेरम हस्ती. 5 *b* बहुपुण्णावहु बहुपुण्यधारकः.

पुत्तु मणोरमाइ संजणियउ   केसउ णामें जणवइ भणियउ।
जो सद्दूलजीउ चित्तंगउ   सग्गहु णिवडिउ कालवसं गउ।
सो वि विहीसणेण सियणेत्तहि   हुउ सुउ वरदत्तउ पियदत्तहि।
जो चिरु कोलजीउ कुंडलसुरु   सो संपाइउ पुणु जम्मंतरु।
णंदिसेणराएं अणुरूवउ   तणउ अणंतमईहि पहूयउ।
मयणहिं वरसेणु जि जणि कोक्किउ   जो वाणरहं जीउ मइं तक्किउ।
सो जि मणोहरु माणव सुणइहि   रइसेणें हूयउ चंदमइहि।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउं किउ णउलु मणोहरु सुरु सग्गायउ॥
जो सो णिविण पहंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ॥ १६॥

17

संतमयणु जाणिज्जइ णामें   ए णरवइसुय सुहपरिणामें।
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर   अभयघोसराएं सहुं किंकर।
विमलवाह जिणवंदणहत्तिइ   गय विविहच्चणवण्णविहत्तिइ।
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु   चक्कु णिहाणइं वसुह मुएप्पिणु।
कामकसायविसायविहंजणु   हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु।
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं   अट्ठारहसहसाइं णरिंदहं।
तेण समउ दिक्खिय हयराया   वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया।
सुविहिणिहालियकेसवदेहें   घरवइ संठिउ णंदणणेहें।
पंचाणुव्वय तिण्णि गुणव्वय   चउ सिक्खावय कय वज्जिय मय।

घत्ता—जेण सचित्तु णिरोहियउ इंदियें विसयरसेसु ण थक्कइ॥
तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउं दंडहुं सक्कइ॥ १७॥

३ MBP वरदत्तउ. ४ MBP पियदत्ताहि ५ MBP कुंडालिसुरु. ६ MBP सपाइउ. ७ MBP णउल.

17. १ MBP °वंदणभत्तिइ. २ MB चक्क. ३ MBP णियसुवणेहें. ४ P इदिउ. ५ MBP दडिवि.

10 *a* अणुरूवउ आत्मसदृशः.

17. 1 *a* संतमयणु प्रशान्तमदन. 3 *b* विविहच्चणवण्णविहत्तिइ अर्चनं पूजा, वर्णविभक्तयो गद्यपद्यादिषु विविधभागा., विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र.

18

दंसेण वउ सामाइउ पोसहु सच्चित्तयविरमणु जणदूसहु ।
वासरि णारिसंगपरिवज्जणु बंभचेरु आरंभसमुज्झणु ।
दुविहु वि संगभारु अवगण्णिउ पाउ ण काइं वि मणि अणुमण्णिउं ।
णिद्दिट्ठउ ण तेण पडिवण्णउं भुत्तउ परकिउ केण वि दिण्णउं ।
अंतइ संथारयसवणत्तणु करिवि पत्तु अच्चुइ इंदत्तणु ।
तायविओएं मइणि मेल्लिवि सीलायारभारु उच्चल्लिवि ।
जिणतउ तिव्वु चरेप्पिणु केसउ तहिं जि तासु जायउ पडिवासउ ।
दो वि दुवीसंबुहिसरिसाउस इंदाउहधर णं णवपाउस ।
वरदत्तय वरसेण जियंगय संतमयण मुणिवर चित्तंगय ।
ए चत्तारि वि चारुविमाणहं तेत्थु जि जाया मज्झि समाणहं ।

घत्ता—किं ससि भरहुज्जोययरु णं णहकडिल्लि णिहित्तिय कागणि ॥
अब्भुयवइ गुणगणु गुणइ पुप्फयंतु सुग्गुरु बुहसिरमणि ॥ १८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भोयभूमीसिरिहरसयंपहसुविहि-
केसवइंदपडिंदभवावण्णणं णाम
छव्वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

18. १ MBP दसणु. २ P सामायहु. ३ M जिण°. ४ P पाउ वि काइ ण ५ MBP °सरणत्तणु. ६ MBP अच्चुयइद°. ७ P करेप्पिणु. ८ MB पडिजायउ, P पडिभायउ. ९ MBP °उह-धरणें णं (P णउ) पाउस . १० M णहकडिल्लि णं. ११ MBP घित्तय. १२ MB बुहगिरिमणि. १३ MBP °सुविहि°.

18. 8 *b* इंदाउह° इन्द्रधनु· 9 *a* जियंगय जित अङ्गज कामो या·याम्. 10 समाणहं सामानिकानां देवानाम्.

XXVII

संजायइं विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥
* णियथंगइं खयलिंगइं अच्चुयकप्पसुरिंदहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

अइसोमसहाव महारउद्द संचलिय चल ससिरवि वलद्द ।
किह वंचवि कालरहट्टचारु घडिमालइ लंघिउं[2] आउणीरु ।
अप्पउ जाणेप्पिणु वियलियाउ छम्मास समच्चिवि वीयराउ ।
सिरिणिहिउं[3] णिरहु तहु चरणजमलु[4] भवियहु भवणासे[5] वि चित्तु विमलु ।
चुउ कालें अच्चुयसग्गणाहु कहु कालें किर कवलिउ ण देहु ।
इह जंबुदीवि[6] सुरगिरिहि पुव्वु किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।
रमणीयउववणावलिणिवेसु[7] तहिं[8] वर पुक्खलवइ णाम देसु ।
बहुवण्णमणिसिलाबद्धभूमि पुरु[9] पुंडरिंकिणी तेत्थु सामि ।
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।
मुहससिजोण्हाधवलियदियंत सिरिकंता णामें तासु कंत ।
सो तियसराउ हयदुरियवाहि तहि हुउ णामें वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ संभूयउ वग्यत्तु वि तहि बालउ ॥
विजयंकउ हरिणंकउ णं उग्गमिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-
गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनान्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥
GK do not give it.

1 १ MBP किं वण्णमि २ MBP घित्तउं. ३ M रिसि°. ४ MBP चलणजुयलु. ५ MBP भवणास विचित्तु विमलु ६ P जबुदीउ. ७ MBP °उववणावणि°. ८ MBP तहि पुक्खलवइ णामेण देसु. ९ MBP पुरि.

1. 3 *b* वलद्द बलीवर्दौ. 11 *a* हरि° इन्द्रः. 15 विजयंकउ विजयनामा, हरिणंकउ चन्द्रः. सुहालउ सुखालयः, सुधालयोऽमृतालयश्च.

2

वरसेणु वि हूयउ वइजयंतु   चित्तंगउ णामें पुणु जयंतु ।
सुरलोयहु चविवि पसंतमयणु   अवराइउ हुउ पहुल्लवयणु ।
ए सद्दूलाइय चउ सहाय   जाया जुवरायहु इट्ठ भाय ।
हेट्ठिमगेवज्जविमाणवासु   मेल्लेप्पिणु जम्महु माणवासु ।
आयउ मइवरु जायउ सुबाहु   आणंदु वि णाम महंतबाहु ।
अहमिंदु अकंपणु हुयउ पीढु   धणमित्तु वि तेत्थु जि गरुयपीढु ।
जे वज्जजंघभवि भिच्च तासु   रायहु उप्पलखेडाहिवासु ।
होंता चिरु एवहिं विहिवसेण   हूया चत्तारि वि म्हहुं जसेण ।
ते देविहि गब्भि महासईहि   ताहि जि सुरसिंधुरवइगईहि ।
सुसणेहा जेट्ठसहोयरासु   को होइ वेसु णियभायरासु ।
पालेप्पिणु भवकयकम्मछंदु   तेत्थु जि पुरि केसवु सो पडिंदु ।
वणिउत्तें सुरयाससमइहि   सिसु जणिउ कुबेरें णंतमइहि ।

घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं बंधुवग्गु आणंदिउ ॥
संमाणें धणदाणें धणदेउ जि सो सद्दिउ ॥ २ ॥

3

एक्कहिं दिणि झत्ति समागएहिं   भासिउ किं तुहुं मोहिउ गएहिं ।
किं हित्तबुद्धि तुह हिय हएहिं   जेंहिं रंजिओ सि णारीरएहिं ।
तुहुं देवदेउ तेलोक्कणाहु   तहिं अण्णहि को किर बोहिलाहु ।
इय संबोहिउ लोयंतिएहिं   सो वज्जसेणु कयसंतिएहिं ।
सिंगारभारवेहवमरट्टु   पविणाहिहि बंधिवि रायपट्टु ।
अंबयवणि खणि णिक्खवणु कियउ   तित्थंकरेण णियहियउ जियउ ।
उप्पण्णउं तायहु धम्मचक्कु   पुत्तहु असिसालइ रयणचक्कु ।

2. १ MBP चविवि. २ MBP सद्दूलाइ वि ३ G वम्महु. ४ MBP अहमिंद. ५ M धणुमेत्तु, BP धणमेत्तु. ६ MBP ससणेहा. ७ G सुहोयरासु. ८ M तवकय°; BP भवु कयकम्मछेंदु°. ९ MBP केसउ.
3. १ M सोहिउ. २ M जिह. ३ K कहिं किर.

2. 4 *b* जम्महु माणवासु मानवस्य जन्मनः. 11 *a* °छंदु इच्छा.
3. 7 *a* धम्मचक्कु केवलज्ञानम्.

ताएण परज्जिउ मोहचक्कु पुत्तेण वि णिज्जिउ वइरिचक्कु ।
तायहु संठिउँ णिहि समवसरणि पुत्तहु वि णव वि संभूय सरणि ।
तायहु इंदा वि करंति सेव पुत्तहु वि भिच्च गणबद्ध देव ।
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्टि सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्टि ।
घत्ता—सिरि मेइणि सुहदाइणि जुण्णउं तणु व वियप्पिवि ॥
पविदंतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जु समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिदलु णहपहकेसरालु सुरवरहंसावलिरवबमालु ।
मुणिभमरपीयमयरंदबिंदु आसंघिउ पिउचरणारविंदु ।
पव्वज्ज लइय धरणीसरेण विजएण वइजयंतेण तेण ।
संवेउ विवेउ पराइएहिं धीरेहिं जयंतवराइएहिं ।
तउ लइउ सुबाहुं पत्थिवेण संतेण महाबाहुं णिवेण ।
णीसेससजीवविरइयकिवेण पीढेण महापीढाहिवेण ।
धणदेवें णिवइघराहिवेण ।
सज्जीवें पहुरयणुल्लएण णिम्मुक्कविविहरयणुल्लएण ।
दस गायहं सुयहं वि दससयाइं जइभावहु तेण समउ गयाइं ।
एक्कु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि परिगणइ सदेहि घुलंत णाहि ।
घत्ता—महि हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥
भीसावणि ठिउ पिउवणि सुण्णावासपएसइ ॥ ४ ॥

5

दंसणविसुद्धि गुरुविणयसारु सीलव्वएसु अईअणइयारु ।
णेरंतरु थिरु णाणोववाउ सत्तिइ तउ णिरु संवेयभाउ ।
किउ बज्झब्भंतरगंथचाउ मुणिसंघहु वेज्जावच्चजोउ ।

४ MBP णिहि साठिय. ५ B सिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि. ६ M रज्ज.

4. १ MBP °दल. २ P सुबाहुहु ३ MB add after this line: धणय व्व विविहदव्वाहिवेण. ४ M भीसावणि पिउउववणि, BP भीसावणि वणि पिउवणि.

5. १P अदसणइयारु. २MBP णाणोवओउ. ३ MBP संवेयचाउ. ४MB वेज्जावज्ज°, Pविज्जावज्ज°.

---

9 *b* सरणि गृहे.

4. 10 *b* णाहि न + अहि, अहीन् सर्पान् न गणयति. 11 णिरासइ आश्रयशून्यप्रदेशे अभ्रावकाशे.

जिणभत्तिपउरसुयसाहुभत्ति तें विरइयपवयणि परमभत्ति।
छावासएसु णायरइ हाणि अरहंतमग्गु पायडइ णाणि।
भव्वेसु करइ कलिमलिणसमणु वच्छल्लु पवोहणु धम्मठवणु।
णीरायं सहुं रयहारणाइं अरुहंतहु सोलहकारणाइं।
एयइं अपवग्गारोहणाइं तेलोक्कचक्कसंखोहणाइं।
भावेण तेण संभावियाइं घोरइं दुरियइं उड्डावियाइं।
घत्ता—संपुण्णउं वउ चिण्णउं कालक्कमेण जि लद्धउं॥
जगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोत्तु तें बद्धउं॥ ५॥

६

को एम देउ दइवेण पुण्णु को संचइ किर एवड्डु पुण्णु।
उग्गतउ तत्तु घोरतउ तत्तु दित्तउ तत्तु संखीणगत्तु।
आमोसहीहिं खेलोसहीहिं जल्लोसहीहिं विप्पोसहीहिं।
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं सो सहइ साहु रंजियमहीहिं।
तहु कोट्ठबुद्धि वरबीयबुद्धि संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि।
पायाणुसारिणी अवर बुद्धि उप्पण्णी तणुविक्किरियरिद्धि।
अणिमामहिमालहिमाइ सिद्धि सुरसद्धि अहीणमहाणसद्धि।
सो सुहुमसंपरायत्तकरणु चडियउ गुणठाणु अउव्वकरणु।
णिस्सेसमोहसंदोहसमणु सिरिपहमहिहरमेहलहिं समणु।
आहारसरीरहं चाउ करिवि पाउवगमणमरणेण मरिवि।
सव्वत्थसिद्धि सुरहरि सुराहु अहमिंदु हुयउ रिसि वज्जणाहु।
घत्ता—पडिवडियहिं विहिघडियहिं दिव्वु सरीरु लएप्पिणु॥
सुकयंगउ अइचंगउ अप्पाणउ जोएप्पिणु॥ ६॥

५ P छावस्सएसु. ६ MBP आराहिवि सोलह. ७ G अपवग्गइं रोह° ८ MBP तेलोय°.

6. १ MBP आमोसहीहिं जल्लोसहीहिं खेल्लोसहीहिं विट्ठोसहीहिं (P विप्पोसहीहिं). २ MBP सुरसिद्धि; T सुरसाद्धि. ३ MBP °महाणसिद्धि. ४ MBP सुहुमु. ५ MBP गुणठाणु. ६ M सिरिपहमहिहरमेहलिहि; B सिरिपहमहिहलिहे, P सिरिपहमहिहरमेहलिय. ७ MBP पाउग्गमरणमरणेण. ८ M सुरहरे सराहे, BP सुरहरि सरेहु, K सुरहरि सराहु; T राराहु. ९ BP परिवडियहिं.

---

5. 6 *a* कलिमलिणसमणु कालि. पापं दोषो वा तेन मलिणं मलिनता तस्य शमन उपशमः.

6. 7 *b* सुरसद्धि शोभनरसार्द्धिः. 8 *a* सुहुमसंपरायत्तकरणु सूक्ष्मसंपरायत्वस्य करणं यस्मादपूर्वकरणात्. 9 *b* समणु रसिक.. 11 *a* सुराहु सुशोभ..

7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु पणविउ जिणु जिणवर[1]कहिउ धम्मु ।
घणमणिमऊहपिंजरियमग्गि तेसट्ठिपडलसिरि[2]चूलयग्गि ।
सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि बारहजोयणहिं आपा[3]वमाणि ।
पिहुजंबूदीवपरिप्पमाणि हिमसंखससिप्पहि तहिं विमाणि ।
पवि[4]णाहभाउ कयधम्मसेव अट्ठ वि जाया अहमिंददेव ।[5]
णव ते परमेसर सुकयपुण्ण सुविसुद्धफलिहमाणिक्क[6]वण्ण ।
तणुमाणें जाणिय रयणिमेत्त अहिणवसयदलदलसरलणेत्त ।
ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव अपिसुणसहाव परि[7]हरियगाव ।
मउडग्गघुलियमंदारदाम [8]परियाररहिय संप[9]ण्णकाम ।
खेत्ताउ ण खेत्तंतरहु जंति उत्तरवेउव्विय तणु ण लेंति ।
वरिसहुं तिती[10]ससहसहिं असंति तेत्ति[11]यहिं जि पक्खहिं णीससंति ।
तेत्तीससमुद्दोवमु जियंति जगणाडि असेस वि ते णियंति ।

घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं णं[12]उ झसधयमंदहो ॥
[13]पुहईसहो ण सुरेसहो जं सुहुं जगि अहमिंदहो ॥ ७ ॥

8

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस पुणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस ।
जय[1]वम्मु होऊण [2]सणियाणदोसेण [3]जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण ।
होउं महाबलिण संणासु मइं कियउ सइबुद्ध[4]बुद्धीइ बहुपुण्णु संचियउ ।
तहिं मरिवि ईसाणि ललियंगु सुरु जाउ तेत्थाउ अवयरिवि पविजंघु हुउ राउ ।

7. १ MBP °कहिय. २ MBP °सिरिचूलिय°. ३ MP अपावमाणि, B आयावमाणु. ४ K पविणाहि°. ५ MBP add after this: दहमउ धणदेउ उप्पण्णु तेत्थु, अहिलच्छि णिरंतरु सोक्खु जेत्थु. ६ MBP °सरिसणेत्त. ७ MBP परिगलिय°. ८ MBP पवियार°. ९ MBP संपुण्ण°. १० BP तेतीस°. ११ P तेत्तियहहिं पक्खहिं. १२ MB तण्णज्झसद्धयचिंधहो, P त णउ मुहु जयमद्दहो, T झसद्धयमंद. १३ MBP पुहईसरहो ण सुरेसरहो.

8. १ MBP अजवम्मु. २ MBP सुणियाण°. MP जाओ सि. ४ P सइबुद्ध.

---

7. 9 *b* परियाररहिय प्रतीचाररहितः. 13 झसधयमदहो झषध्वजेन कामेन मन्दस्य विषयव्यावृत्त्यनुद्यतस्य.

कुरुधरणिणरु पुणु वि बीयम्मि कप्पम्मि सिरिहरु सुहासीय हं कयवियप्पम्मि ।
पुणु सुविहिविहिविहियजिणसासणाणंदु अमु मुइवि हउं हुउ सोलहमसग्गिदु ।
पुणु वज्जणाहेण होऊण मे चिण्णु पडिखलियजमकरणु तवचरणु संपुण्णु ।
सँव्वत्थि अहमिंदु होउं अहत्तिहरु पुणु भद्द हूओ अहं एत्थ तित्थयरु ।
गहवइसुया धणासिरी णिहयणयजुत्ति णामेण णिण्णामिणी विहण वणिउत्ति ।
जाया पुणो सूहवा बद्धणेहस्स सिरिसरिस सीमंतिणी ललियदेवस्स ।
सिरिमइमहीसस्स मेय पुणु वि कुरुणारि पुणु रवि सयंपहु पुंणरवि दणुयारि ।
केसवु पुणो मरिवि संभूउ पडिसक्कु संसारि संसरइ जगि जीउ इह एक्कु ।
धणदेउ वउ धरिवि पुणु हुयउ अहमिंदु सयलत्थि सरयब्भि संकमिउ णं चंदु ।
तम्हा समोयरिवि कुरुवंससरहंसु इहु एत्थु उप्पण्णु णरणाहु सेयंसु ।

घत्ता—मलु छिंदइ जिणु वंदइ तिरयणाइं मणि भावइ ॥
अमरत्तणु सुणरत्तणु गहणु ण मोक्खु वि पावइ ॥ ८ ॥

9

जो णरवइ णामें आसि गिद्धु आहारणारिरससायगिद्धु ।
णरयम्मि चउत्थइ सहिवि विहुरु पुणु हुयउ पुलि चलकुडिलणहरु ।
पुणु देउ दिवायरु मइवरक्खु णरु गेवज्जामरु सो दिव्वचक्खु ।
पुणु रवि सुबाहु चिरजम्मभाउ णिहिलत्थदेउ अहमिंदु जाउ ।
अणुहुंजिवि जायउ एत्थु भरहु महु सुउ लइ होसहि तुहुं वि णिरहु ।
पीढ्वद्धण चमुवइ सुगण्णु कुरुमणुयपहायरु सुरु पसण्णु ।
हयपंकु अकंपणु रिद्धिपोढु गइवेयदेउ पुणु हुयउ पीढु ।
सव्वत्थइंदु मैहु सुउ अरेणु पुणु एहु पहूयउ वसहसेणु ।

५ MB सुहासियउ ह कय°, P सुहासीय हुउ बीय°. ६ MBK संपुण्णु. ७ MBPT अहलाच्छि. ८ MB °देहस्स. ९ MB मुय, P मुय and gloss मृता. १० MBP पहावतु दंडारि. ११ MBP संकमिय.

9. १ MBP गेज्जामरु. २ MBP °भाइ. ३ MBP जाइ. ४ M जि. ५ MBP सुगत्तु. ६ M °अपायरु. ७ MBP पसुत्तु. ८ P गइवेइ°. ९ MBP राउ. १० MBP महु तणउ सूणु; T अरणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

8. *a* अहत्तिहरु पापार्तिहरः. 9 *b* विहण निर्धना. 13 *b* सयलत्थि सर्वार्थसिद्धौ.

9. 2 *b* पुलि व्याघ्रः. 8 *a* अरेणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

जो [11]होंतउ सुइरु महीसमंति कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति ।
जो पुणु आयउ कणयाहु तियसु आणंदु णाम होएवि सवसु ।
हुउ पढमहिं [12]पँहु चविवि साहु पुणु [13]सँ महाबाहु धरि[14]त्तिणाहु ।

घत्ता—गउ इट्ठहो सव्वट्ठहो णट्ठहमिंदसरीरउ ॥
हुउ भुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ ॥ ९ ॥

10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु कुरुमणुयपहंजणु पवरु अमरु ।
धणमित्तु पुणु वि [1]हुउ सुहपहाणि ओइ[2]ल्लुं अहंविहु प[3]रमठाणि ।
तुणु हविवि महापीढु वि [4]सँभेउ सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ ।
सो मरिवि महारउ णंतविजउ उप्पण्णु पुत्तु जीवेसु सदउ ।
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु ।
कुरुमाणुसु सो [5]चित्तंगयक्खु वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु ।
अच्चुइ समसुरु हुउ विजयराउ तवच[6]रणें खीणु करेवि काउ ।
सव्वट्ठइंदु ववगयसरीरु जसवइसुउ [7]पँहु सोणंतवीरु ।
पहिलारउ हरिवाहणकुमारु पुणु सूयरु पुणु कुरु अज्जसारु ।
सु[8]रु कुंडलिल्लु वरसेणु संतु समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु ।
अहअमरणाहु संजणियविणउ तहिं चुउ अच्चुउ हुउ मज्झु तणउ ।
वणि णागदत्तु वाणरु प[9]लासि अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि ।

घत्ता—[10]सुमणोरहु सुरु हयदुहु पुणु चित्तंगउ पत्थि[11]वु ॥
संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयंतु णामें णि[12]वु ॥ १० ॥

११ B सो हुंतु. १२ M एहु चएवि; B एहु तं चएवि; P पहु चएवि; T पहु अहमिन्द्र., १३ MBP सुमहा°. १४ P धरत्ति°.

10. १ MBP हुउ. २ MBP ओविल्लु. ३ MBP पढम°. ४ PK सहेउ. ५ K सुरु चित्तं°. ६ P तवयरणें. ७ P एहु अणंतवीरु. ८ MBP सुर. ९ P फलासि. १० MBP समणोरहु. ११ MBP पत्थिउ. १२ MBP णिउ.

10. 2 *b* अहंविहु अहमिन्द्रः 7 *a* समसुरु समारिकदेवः. 10 *b* समविबुहु सामानिकदेवः. 11 *a* अहअमरणाहु अहमिन्द्रः. 14 सुरवइसमु सामानिकदेवः

11

पुणरवि अहमीसरु मोक्खणियडि हूयउ विमाणि माणिक्कपयडि ।
जो सो दुद्दंसणदुरियभीरु हुहु अम्हारउ सुउ णाम वीरु ।
लोलुउ कंदुइ लोहेण मुयउ जो चिरु गिरिकाणणि णउलु हुयउ ।
पुणु अज्ज मणोहरु अमयभोइ पुणु संतमयणु णरणाहु जोइ ।
पुणु हरिसमाणु गिव्वाणु चारु अपराजिउ णामें णिवकुमारु ।
पुणु अंतिमिल्लु सुरवासवासु सुप्रसिद्धु अहंवइ तिमिरणासु ।
आवेप्पिणु हुउ तुह माउदेहि सो एहु वीरु महु तणइ गेहि ।
जा वज्जजंघभवि मज्झु बहिणि साणुंधरि णं परलोयकुहिणि ।
हुई णंदहि णं धम्मलील बाहुबलिहि लहुई सस सुलील ।
जा सिरिमइभवि पंडीय धाय सा भमिवि एत्थु रमणीय जाय ।
बंभी वि तुज्झ जाणहि महीस जणु मोहें तम्मइ एहु कीस ।
परिभमियसयलभुवणत्थलीउ केत्तिउ किर कहमि भवावलीउ ।
रंगं गंउ णडु बहुरूवधारि अणवरयदुविहकम्माणुयारि ।
सा णत्थि थत्ति जहिं जिउ ण जाउ पुणु पुच्छिउ भरहें वीयराउ ।

घत्ता—कइ हलहर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥
मइं जेहा पइं जेहा कइ होहिंति जिणेसर ॥ ११ ॥

12

तं णिसुणिवि देवें वुत्तु एम्व मइं जेहा जिणवर गयविलेव ।
होहिंति भुवणि तेवीस एत्थु करिहिंति पयडु सिरिधम्मतित्थु ।
आगामियाइं जेहा इमाइं बावीसहं तइं तेहाइं ताइं ।
कहियाइं जिणहं जम्मंतराइं संगहियविमुक्ककलेवराइं ।
सुहयंदोहामियससिमरीइ महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ ।

11. १ MBP मोक्ख°. २ MBP दुद्दसणु. ३ MBP कंदुउ. ४ MBP णरणाह. ५ MP गिव्वाण. ६ MBP सिरिमइ चिरु. ७ MBP रंगगउ णडु व बहु°. ८ K जिउ जहिं. ९ P पुच्छिउ. १० MBPK जेहा.
12. १ P विगयलेव. २ M करिहिंति. ३ MBP जेहाइं जाइं. ४ G जम्मनराइं ५ MBP संगहिवि.

11. 2 *a* दुद्दंसण° मिथ्यादर्शनम्, °दुरिय° पापम. 5 *a* हरिसमाणु सामानिकः. 6 *b* अहंवइ अहमिन्द्रः. 11 *b* तम्मइ खिद्यते. 15 पडिसत्तु प्रतिवासुदेवः.
12. 3 *b* तेहाइं तादृशानि. 5 *a* °ससिमरीइ चन्द्रकिरणाः.

होसइ चउवीसमु तिजगणाहु सिरिवड्ढमाणु णामेण पहु ।
दिय कविलसीस गुरुभरहतणुउ तं णिसुणिवि णच्चिउ मुइयमणउ ।
जाही मिच्छत्तहु मूढु होवि मारिही महु केरउ मउ मुएवि ।

घत्ता—होही सुरु कविलहु गुरु संखसुत्तपवियारउ ॥
णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥ १२ ॥

13

सिरिबाला कीलाविउलसेल बलवंतसधरधरधरणलील ।
पइं जेहा णिव णायाणुवट्टि एयारह महियलि चक्कवट्टि ।
णव बल णारायण णव णं भंति पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिहिंति ।
अवर वि तेवीस जि कामदेव एयारह रुद्द रउद्दभाव ।
मंडलिय मउडबद्ध वि अणेय होहिंति बहुत्त वि णामधेय ।
तुह खत्तधम्मु महु परमधम्मु अवरु वि जं किं पि विसिट्ठकम्मु ।
सव्वहिं जुयंति दिणि णासिहिंति सिहिमय विसमय घण वरिसिहिंति ।
उम्मूलियतिट्ठाकयलिकंदु ता णरणाहें संथुउ जिणिंदु ।

घत्ता—जिणसंतइ भयवंतइ पइं दिट्ठइ मलु खिज्जइ ॥
सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥

14

णमो वीयराया महादेवदेवा कयाणेयगिव्वाणणिव्वाणसेवा ।
सरीरे ण भूसा समीवे ण णारी तुमं देव सच्चं अणंगावहारी ।
ण चात्रं ण चक्कं ण खग्गं ण सूलं ण दंडो ण हत्थे किवाणं करालं ।
तुमं देव णूणं रिऊणं णं गम्मो अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।
ण डिंभं ण डंभो ण ए वित्तलोहो ण मित्तो ण सत्तू ण कामो ण कोहो ।

६ MBP रिसिवड्ढमाणु. ७ P कविलकेर. ८ P तणउ. ९ G मइउ मणुउ but gloss हृष्टचित्तः.

13. १ P भणति. २ MBP कामएव. ३ MBP add after this: होसहिं णारय णव कलहसील, वयबंभचेरदढधरणसील (P धरणलील). ४ MBP पुत्त बहुणाम°. ५ P सव्वइं. ६ P केलिकंदु.

14. १ P °णिव्वाण. २ K करालं कवाल. ३ MB अगम्मो.

---

7 *b* मुइयमणउ प्रहृष्टचित्तः. 9 °पवियारउ प्रवीणः.

13. 7 *b* सिहिमय अग्निवर्षा .

14. 5 *a* णए न ते तव.

ण माया ण चित्ते पहुत्ताहिमाणं समं पेच्छसे रायरायं पि दीणं ।
ण छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं ण गव्वोमराहीससंपेसणेणं ।
उयासीणभावं सकम्मक्खपणं तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेणं ।
णरा ते धुवं लोहयारस्स भत्था ससंता वसंती हहा किं णिरत्था ।
जई सो णिरासो तुमं छिण्णपासो तुमं लोयबंधू पहू दिव्वभासो ।
तुमं जम्मकंतारडाहे किसाणुं तुमं भूयभावंधयारम्मि भाणुं ।
जडा किं णिमंजंति मिच्छत्ततोए तुमाहिं परो को गुरो जीवलोए ।
णमंसेवि देवं गओ भूमिणाहो अउज्झाउरिं भूरिसेणासणाहो ।
पइट्ठो णियं मंदिरं बंदिरोलं महातूरघोसं महामंगलालं ।

घत्ता—धरणीसरु भरहेसरु पुरतरुणिहिं विहसंतिहिं ॥
अवलोइउ पोमाइउ पुप्फदंत दरिसंतिहिं ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वज्जणाहितिहुवणसंखोहणं
जिणपुण्णावज्जणं णाम
सत्तावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २७ ॥

॥ संधि ॥ २७ ॥

४ M पहू णाहिमाणं; BP वहू णाहिमाणं. ५ MBP सछत्तेण. ६ M सिंहासणेण. ७ P उदासीण°. ८ MBP किसाणू. ९ MBP भाणू. १० B ण मज्जंति. ११ MBP मिच्छत्तराए. १२ MBP गुरू. १३ MB सूरसेणा°. १४ MBP वज्जणाह°. १५ MPP पुज्जावज्जणं.

6 *a* पहुत्ताहिमाण प्रभुत्वाभिमान॰. 8 *b* णिरेण निष्पापम्. 11 *a* किसाणुं अग्निः; *b* भूयभावंधयारम्मि प्राणिमनोज्ञानातिमिरस्य.

XXVIII

पुरु पइसिवि तेण णराहिवेण बहुदाणेहिं [1]समिद्धउं ॥
दुस्सिविणयदंसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

जाउडजडिलरसेणायंबइं अहिसित्ताइं जिणेसरबिंबइं ।
[2]हिमकणकणयक[3]णोलिंवियारहिं घडपल्हत्थियप[4]यघयधारहिं ।
मुणि अणिट्ठदुट्ठासयहा[5]रिहिं चंद[6]णतोतडिल्लवर[7]वारिहिं ।
पुज्जियाइं छप्पयउलधामहिं कुवलयबउलमहुप्पलदामहिं ।
संथुयाइं बहुथोत्तालाविहिं भावियाइं सुविसुद्धहिं भा[8]वहिं ।
कंचणणिम्मियमु[9]णिपडिमालउ णाणामणिमऊहणिय[10]रालउ ।
दसदिसि गयटंकारविसट्टउ लंबियाउ चउवीस जि घंटउ ।
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ पंतजंतणिवणयणसुहालउ ।
दिण्णइं दिण्णसोक्खसंताणइं अभयाहारोसहसुयदाणइं ।
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं अंचिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।
दिण्णइं कारुण्णेण वि अण्णइं दीणाणाहहं चीरहिरण्णइं ।
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु [11]राएं संचोइउ पालइ जणु ।

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

मुखनलिनोदरसद्मनि गुणहृतहृदया सदैव यद्वसति ।
चोजमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणधृत° for गुणहृत°. GK do not give it.

1. १ MBPT सुणिबद्धउं. २ MBP हिमकणु कणय°. ३ BP °कणालि°. ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं. ६ M चंदणतोयतडिल्ल°. ७ MBP °वरधारहिं. ८ MB भाविहिं. ९ M °माणि°. १० MB °णियरालिउ. ११ MB राइं.

---

1. 3 *a* जा उ ड ज डि ल° जाउडदेशोत्पन्नं कुङ्कुमम्. 4 *a* हि मे त्या दि-हिमकणाश्च कनककणाश्च तेषामोल्लयः व्यूहस्तैस्तुल्यो विकारः परिणामो यासाम्. 5 *a* अ णि ट्ठे त्या दि–न इष्टे विषये दुष्टा आर्तरौद्रोपहता अनिष्टदुष्टाश्च ते आशयाश्च मुनीनामनिष्टाशया निर्मलाभिप्रायास्ताननुहरान्ति अनुकुर्वन्ति तैः; मुन्यनभीष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा; *b* °तोंत-डिल्ल° मिश्रिताः. 9 *a* °वि स ट्ट उ प्रसरः. 12 *a* °गो दु ह° गोदोहकाः.

घत्ता—धम्मट्ठि राए धम्मिट्ठु धुउ दुक्कियरइ दुक्कियरउ ॥
रायाणुवट्टि जगि संचरइ जिह णरवइ तिह जणवउ ॥ १ ॥

2.

सीहु व सावयाहं अग्गेसरु [1]जिणवरधम्मु करइ भरहेसरु ।
[2]भाविलिंगि होएवि णरेसरु चिंतइ [3]चत्तदेहु लंबियकरु ।
गोसयाहं गोदुद्धु जि पिज्जइ णारीसहसहं एक्क रमिज्जइ ।
खारीसयभत्तहं पसउल्लउ रहलक्खहं महु एक्कु रहुल्लउ ।
[4]णरु णराहं [5]पडिबद्धु महल्लहं हरि हरिवाहहं करि वि करिल्लहं ।
पासायहु वि मज्झि सयणीयलु लइ परभुंजणिज्जु धरणीयलु ।
जइ वि एम जाणइ संगायउ चिंतिज्जंतउ सयलु परायउ ।
तो वि जीउ खज्जइ [6]रायत्तें खणविणासि संतावि पहुत्तें ।
चक्कु कालचक्कहु किं रक्खइ छत्तें छण्णउ जीउ ण पेक्खइ ।
दंडु कुगइदंडणु दरिसावइ मणि सोदामणि णहचुउ णावइ ।
असि असिउब्भडलेसहि कारणु चम्मु कयंतपडहरवधारणु ।
[7]कागणि खणि सोहइ दुहलीहहं अम्हारिसहं धरित्तिसमीहहं ।
होउ होउ [8]रायत्तें हो गंथें हउ मुणिवरु [9]परिवेढिउ वत्थें ।
अणुदिणु इय झायंतहु [10]कयरु व उड्डिवि जंति[11] रायपरमाणुय ।

घत्ता—सिढिलाइं होंति [12]रायसरहो [13]णिग्गयमणमलपूरइं ॥
णिवडंति झत्ति खोणीयलइं करकंकणकेऊरइं ॥ २ ॥

2. १ M जिणवरु धम्मु २ M भावलिंग होएव. ३ MBP चत्तदेह. ४ MBP णरवराहं. ५ G पडिबद्धगहल्लहं. ६ MBP राइत्तें. ७ MB कागणि खणेण होइ दुहलीहह, P कागणि खणि होसइ दुहलीलइ; T खाणि आकरः. ८ MBP रायत्तहु गंथें. ९ MBP वर वेढिउ. १० MB कयरुय and gloss रोग; T कयंरु व धूलिरिव. ११ G जंतु, K जंतु but corrects to जति and gloss गच्छन्ति. १२ MBP रज्जेसरहो. १३ G णिग्गमण°; K णिग्गमल°, but corrects it to णिग्गयमण°.

2. 1 *a* सावयाहं श्रावकाणां श्वापदानां च. 7 *a* संगायउ संगस्य जातकं संघातम्. 11 *a* असिउब्भड° कृष्णोद्भटः. 14 *a* कयंरु व धूलिरिव. 15 णिग्गयमणमलपूरइं निर्गता मनोमलपूराः येषु.

3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ जासु मंतु अरिणरहिं ण भिज्जइ।
जासु खग्गु रणि को वि ण कड्ढइ जासु पयाउ दिसंति पवड्ढइ।
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि मंगलणेवत्थइं पडिवज्जिवि।
णयसासणि हियउल्लउं घत्तइ सयलउ पयविचिउ संचितइ।
अहियारिय णिउएसु णिउंजइ णिव संभासणदाणहिं रंजइ।
के वि सणेहालोयणहसियहिं संमाणिहिं लोयअहिलसियहिं।
दविणोवाइ पुरिसें संभावइ चर परमंडलंतु पट्ठावइ।
सयलकलाकुसल वि संमाणइ पवरपसंडीपिंडहिं पीणइ।
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ घरि सच्छंदविहारें अच्छइ।
मज्जणइ मज्जणउं पईस्मिवि णियसरीरु भूसणहिं विहूसिवि।
बालाचालियचामरमालइ अच्छइ कीइ वि पत्थिवलीलइ।
पुणु भुत्तुत्तरि पँहु णिवगोट्ठिइ गमइ कालु गरुयइ संतुट्ठिइ।
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहरे जाणिय घडियाघाएं॥
पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सह कीलाइ विणोएं॥ ३॥

4

महिवइ गयलीलइ पयं ढोयइ पुणु अंतेउरु भमिवि पलोयइ।
खणि ससहावें मंतु पमंतइ वज्झु णत्थि किं छग्गुण चिंतइ।
आणइ अप्पउ वण्णपवित्ति वि वत्तायरणु णयाणयजुत्ति वि।
पुणु अवलोयइ विविहपयारइं पहरणभवणइं भंडागारइं।
पुणु गुरुयणसहमंडवि पइसइ धम्मसत्थसंदेहु वि णासइ।
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं कामु वि तहु आसंकइ तावहिं।

3. १ M म कट्टइ. २ MBP पयाउ. ३ G पवट्टइ. ४ MBP हियउल्लउं. ५ M पयवित्तउ. ६ P °सहियहिं. ७ MBP पुरिसु. ८ Our mannuscript P ends with चामर°. ९ MB काइं व. १० MB बुहणिवगोट्ठिहि.

4. १ MB पउ. २ B ढोइउ. ३ B पलोइउ. ४ B वत्तारयणु. ५ MB ण याणइ जुत्ति वि. ६ MB °सत्थु संदेहु. ७ MB तहि.

3. 1 *a* रायणाणु राजनीतिशास्त्रम्. 8 *b* °पसंडी° सुवर्णम्.
4. 2 *b* छग्गुण संधिविग्रहयानासनशयनद्वैधीभावाः. 3 *b* वत्तायरणु कृषिपशुपाल्यादि.

हत्थिसत्थि हरिसत्थि ण मुज्झइ आउवेउ धणुवेउ वियाणइ ।
जोइससउणसमूहणिमित्तइं णरणारीलक्खणइं विचित्तइं ।
तंतु मंतु तेण जि संजोइउ भरहें सइं जि भरहु उप्पाइउ ।

घत्ता—जसु जासु दियंतहिं परिभमइ ससिकरणियरउ पोसइ ॥
तहु भरहहु सरिसु महाणिवइ जगि णउ हुयउ ण होसइ ॥ ४ ॥

5

सो रायाहिराउ सामंतहं मंडलियहं महिमाइ महंतहं ।
एक्कहिं दिणि धीरहं णिरवायहं अक्खइ खत्तविित्तु बहुरायहं ।
कुलमइअप्पयपयपरिपालणु अवरु समंजसत्तु मलखालणु ।
णिसुणह भुयबलतुलियकरिंदहं पंचभेउ चारित्तु णरिंदहं ।
जेण चरिवि तउ गिरिवरकंदरि अज्जिउ तित्थयरत्तु भवंतरि ।
एहु लोउ जें धम्मि पवत्तिउ परिताइउ खयाउ सो खत्तिउ ।
कुलु णरणाहहं एत्थु विसेसें कुलु लक्खिज्जइ बुहसहवासें ।
दंसणणाणचरित्तब्भासें कुलु रक्खिज्जइ दुण्णयणासें ।
कुलु लक्खिज्जइ सुद्धायारें दढऊढेण अणुव्वयभारें ।
साइ अणाइ वि दीसइ जायउ बीयंकुरकमेण कुलु आयउ ।
भरहेरावएहिं कुलु खिज्जइ कालि कालि जिणणाहहिं किज्जइ ।

घत्ता—पणवियसिरु मउलियकरकमलु जाहं करइ हरि कित्तणु ॥
ते पत्थिव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तणु ॥ ५ ॥

८ B मुज्झइ. ९ M दियत्तहिं. १० MB भरि भमइ.

5. १ B णिवायहं T णिरवायह २ MB खत्तवित्ति. ३ B °तुरिय°. ४ MBK चारित्तु. ५ M परताइउ, T परिताइउ. ६ MB कुल णर°. ७ MB °चरित्ताभासें. ८ M दढउड्ढेण; T दढऊढेण. ९ M बीयंकुर.

9 *b* भरहु संगीतम् .

5, 2 *a* णिरवायहं अपायरहितानाम्. 6 *b* परिताइउ खयाउ परिरक्षितो विनाशात्. ९ *b* दढऊढेण दृढधृतेन. 12 हरि इन्द्रः.

6

अवरु वि मइ राएं रक्खेवी   अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी ।
णासइ णिवमइ मिच्छारंगें   कुगुरुकु[1]देवकुलिंगिपसंगें ।
णासइ मइ चामीयरलोहें   णासइ मइ णिरु कामें कोहें ।
णासइ मइ हरिसें चवेलत्तें[2]   णासइ मइ जिणपडिकूलत्तें ।
णासइ मइ मएण माणेण वि   णासइ मइ मइरापाणेण वि ।
णासइ मइ वेसायणगमणें   णासइ मइ कुरंगवहरमणें ।
[3]णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती   णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।
मइ ण जासु कलिकलुसें छित्ती   जिणवरचरणंभोरुहघित्ती ।
णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि   तहु होसइ इहपरभवि गोमिणि ।

घत्ता—मइ[4]सुद्धिइ वड्डइ धम्ममइ धम्मु वि[5] मइं[6] सो घोसिउ ॥
जो खीणकसायहिं केवलिहिं जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

7

धम्मु खमाइ होइ गरु[1]यारउ   धम्महु मद्दे[2]वगुणु पहिलारउ ।
अज्जउ धम्मु पावु[3] मायारउ   धम्मु सच्चवय[4]णोहु वियारउ ।
धम्मु सउ[5]च्च धम्मु तवतप्पणु   धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु ।
धम्मु[6] बंभचेरें परिचाएं   जेण ण कियउ वियाणवि राएं ।
पुण्णाउसु सो णिद्धाडेवउ   रज्जें पुणु वि णरइ पाडेवउ ।
इय मइसुद्धि कहिय णउ रक्खमि   तणुपरिरक्ख णरिंदहु अक्खमि ।
हुयवहपविसणु हु[7]यललियंगउ   विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ ।
सत्थग्गहणु महाजलवोलणु   गिरिणिवडणु अंतावलिघोलणु ।
पयइं कुच्छियमरणइं दुद्दमि   णरु भामेवि घिवंति भवकद्दमि ।

---

6. १ MB °कुदेउ°. २ M चवालित्तें. ३ MB read this line and the following as: णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणंभोरुहघित्ती; मइ ण जासु कालिकलुसें छित्ती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती. ४ G मइबुद्धिइ. ५ MB धम्मु सइं. ६ MB सो मइं.

7. १ B गुरुआरउ. २ MB मद्दउ गुणु. ३ MB पाउ. ४ MB. °वयणोह. ५ MBK सउच्चु. ६ MB धम्मु जि बंभचेरपरिचाएं. ७ MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियंगउ.

---

7. 2 *a* पावु पापम्. 3 *b* °पवियप्पणु त्यागो विचारणं वा. 4 *a* परिचाएं आकिंचन्येन; *b* वियाणवि ज्ञात्वापि. 7 *a* हुयललियंगउ दग्धशरीरम्. 8 *a* सत्थग्गहणु आत्मघातः.

घत्ता—मुणिचरणकमलि उवसमु करिवि जो ण मुयउ संणासें ॥
चउरासीलक्खजोणिमुहहिं सो परिभमइ किलेसें ॥ ७ ॥

8

अवरु वि राणउ करउ णिरिक्खणु पयहि धम्मणायं परिरक्खणु ।
दुम्मइ हूई जाणिवि धाडइ तिव्वें दंडें गाइ ण ताडइ ।
जिह गोवउ पोलइ गोमंडलु तिह पालउ गोवइ गोमंडलु ।
णिक्कारणमारणु जो राणउ सो रक्खसु जमदूयसमाणउ ।
मिसु मंडिवि हलहरसंघायहं णिद्दोसहं दिय वणिहिं वरायहं ।
वुड्डुणारिडिंभयसंतावणु जो धणहरणु करइ भीसावणु ।
जणणीसासससिहिहिं सो डज्झइ अण्णु वि दुक्कियकम्में वज्झइ ।
लग्गइ ण जियइ दुक्खहुयासइ ण वसइ देसु विसइ परदेसइ ।
पहु अणुरत्तपयइं जो तासइ कइहिं वि दियहहिं सो सइं णासइ ।
रत्तउ सत्तउ भिच्चु भरिज्जइ तव्विवरीयउ अवहेरिज्जइ ।
बुज्झियकज्जावायउवायं णरणाहेण णिहालियणायं ।
गुरुचरणारविंद सेवेवउ अवरु समंजसत्तु भावेवउ ।
रोसें णउ विसिट्ठु पहरेवउ दुट्ठपक्खु ण कयावि धरेवउ ।

घत्ता—इय पंचपयारपयासियउ णिवचरित्तु जो पालइ ॥
कमलासण कमला कमलमुहि तहु मुहकमलु णिहालइ ॥ ८ ॥

9

तहिं अच्छइ भरहेसरु जइयहं गणि पभणइ सुणि सेणिय तइयहं ।
कुरुजंगलजणवयगयउरवइ जिणकमकमलजुयलसेवारइ ।
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु लच्छीवइमायहि तोसियमणु ।

६ MB °चरणमूलि.

8. १ G पहहिं. २ M पावइ. ३ MB °णीमामसयहं. ४ MB दुक्खु [illegible] ५ M अणुरत्तु पयइं. ६ MB °रविंदु. ७ B भावंतउ. ८ G णियचरित्तु.

9. १ MB °जगलु.

---

11 °मुहहिं द्वारैः.

8. 3 *a* गोवउ गोपः, गोमंडलु गवां संघातः; *b* गोवइ राजा, गोमंडलु भूवलयम्. 8 *b* विसइ प्रविशति.

सुंदरु चोद्दहभीइहिं जेट्ठउ जउ णामें अत्थाणि पइट्ठउ ।
कुरुवंसाहिवेण पणवेप्पिणु पभणिउं तेण राउ विहसेप्पिणु ।
ताएं रायपट्टि महु बद्धइ रिसिरयणत्तइ सइं उवलद्धइ ।
तम्मि हुयइ णिक्कलि कलुसच्चुइ दाणपवत्तणि सुरवरसंथुइ ।
जाणियपयाणेयवियप्पइ रिसहसामिपयपंकयछप्पइ ।
घोरवीरतवचरणब्भुइ पित्तिइं सेयंसाहिवि णिव्वुइ ।
ससहोयरु दिम्मुहइ णियंतउ हउं णियपुरवरंति विहरंतउ ।
मारुयचालियचलसाहाघणु एक्कहिं वासरि गउ णंदणवणु ।
धम्माणंदें मणु आणंदिउ दिट्ठउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ ।
दिट्ठउ फणिवरु समउ भुयंगिइ धम्मु सुणंतु सरलललियंगिए ।
गयसंवच्छरि पुणरवि आएं सा दिट्ठी मुक्किय णियणाएं ।
घत्ता—दीवडु काओयरु णाइणि वि बिण्णि वि धम्मु सुणंतइं ॥
मइं लीलाकमलें ताडियइं तेहिं वि जाइरइरत्तइं ॥ ९ ॥

10

कसणारुणबिंदुयतणुराइहि कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।
इय गरहिवि परिवारेणाहय सहुं जारेण तेण सा णिग्गय ।
कासपुप्फकंतिसंकासउ हउं पडिआगउ णियआवासउ ।
णिसि णियकंतहि मइं आहासिउ सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।
कुमहिलखलचरियाइं पयासमि जाम किं पि किर पिय संभासमि ।
विविहाहरणकिरणरंजियघरु ताव तहिं जि अवयरिउ वरामरु ।
पुच्छिउ सो मइं किं अवलोयहि दिट्ठि वियारभरिय किं ढोयहि ।
तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि लोयहं तुहुं वि धम्मु वक्खाणहि ।

२ MB चउदह ३ M °भावहिं. ४ B बइट्ठउ. ५ MB पित्तइ. ६ MB °चलियचवलसाहा°. ७ MB फणिवइ. ८ M मरलललियंगइ; B मरललियंगिइ. ९ MB मुक्की णियणाएं. १० G °णियणायएं. ११ MB काओयरु विसहरु णाइणि बि. १२ M तहिं जइपयरइरत्तइं.

10. १ MB °तणुरायहि. २ MBK काससंककंति°.

9. 7 *a* तम्मि ताते; णिक्कलि शरीरानिस्पृहे. 9 *b* णिव्वुइ सुखीभूते. 15 दीवडु सर्पजातिविशेषः; णाइणि नागी.

दोसग्गहणु ण कासु वि किज्जइ पंगुलु पंगुलु केम भणिज्जइ ।
पइं वि जाँइरइ महु कुलउत्ती पाणिपोमॅपोमे जं छित्ती ।

घत्ता—तं पाँडिय सयलें परियणेण उवलहिं दंडसहासें ॥
कंपंतदेह जारेण सहुं सा मुक्की णीसासें ॥ १० ॥

11

पुव्वमेव मुउ फणि वयधारउ हउं हुउ भावणु णायकुमारउ ।
सप्पिणि हूई समपरिणामें सुरसरि देवय काली णामें ।
बिण्णि वि मिलियइं हियवइ धरियउं तं तुह दुव्वसिउ संभरियउं ।
आयउ एत्थ जाम किर मारमि आरूसिवि वच्छयलु वियारमि ।
ता मइं जाणिउं तुहुं पुण्णाहिउ चरमदेह सीलेण पसाहिउ ।
एम भणेप्पिणु तेण फणीसें समजलसिंचियरोसहुयासें ।
दिण्णइं महु दिव्वइं परिहाणइं दिण्णइं भूसणाइं असमाणइं ।
अवसरि सरसु भणिवि गउ तेत्तहि अहिवइविवरि णिहेलणु जेत्तहि ।
णिसुणि देव सासयसंपयरु जगि जीवहु धम्मु जि लग्गणतरु ।

घत्ता—विहसिवि कुरुणाहें बोल्लियउ भरहपसाहियमहियल ॥
देव वि तहु पायहिं पडहिं फुडु जासु धम्ममइ णिच्चल ॥ ११ ॥

12

इय जंपेण कह साहिय जावहिं अवरु वि मंति पराइउ तावहिं ।
गीवालंबियमोत्तियहारें सो दाविउ रायहु पडिहारें ।
तेण पउत्तु णिसुणि णिववरसि कासीविसइ णयरि वाणारसि ।

३ MB जाइरय. ४ MB °पोमपंकइ. ५ MBK ताडिय.

11. १ M पुव्ववसिउ. २ MB चरमदेहु. ३ MB समजलु सिंचिय°. ४ M भूदाणइं. ५ MB °महियल.

12. १ B जइण. २ K गीवोलंबिय°. ३ MB रायहु दाविउ. ४ MB °वरसासि.

10. 10 *a* जाइरइ जन्मनः प्रभृति अनुरक्ता.

11. 7 *b* असमाणइ अद्वितीयानि.

राउ अकंपणु राणी सुप्पह सालंकारी णं वरकइकह ।
फुल्लकुसेसयसंणिहसुमुहहं सहसु सुयहं हेमंगयपमुहहं ।
सस मृगलोयण ताहं सुलोयण लहुई लच्छीवइ सुहभायण ।
जेट्ठहि रूउ काइं किर सीसइ उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ
पायहुं काइं कमलु समु भणियउं तं खणभंगुरु कइहिं ण मुणियउं ।
रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइं कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइं ।

घत्ता—कुरुविंदु तणु वि जंघाजुयहो णासवंतु करु दंतिहि ॥
ऊरुजुयलहि जो समुं भणइ सो कइ पडियउ भंतिहि ॥ १२ ॥

13

वण्णमि काइं णियंबगुरुत्तणु जहिं पत्तउ तिहुयणु जि लहुत्तणु ।
भमउ भमउ सो भृगं भुत्तउ णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।
कहिं थणजुयलु चित्तगइरुंभणु भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।
दड्ढा ताहं दासिसिरमंडणु चंगउ ससहरु समलु सखंडणु ।
किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ तासु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ ।
जेंवं कुमरिहियवउं संदाणइ मृगु ण तें अवलोयहु जाणइ ।
किं सारंगणयणि सा उत्ती केत्तिउ किज्जइ उत्तपउत्ती ।
णक्खहं लग्गिवि जा केसग्गइं ताम ताहि णिरुवमइं वरंगइं ।
लीलंदोलणकीलाजुत्तइं छुडु जि वसंतमासि संपत्तइं ।

घत्ता—अंकुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥
वियसंति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

---

५ Bº समुहहं. ६ मिगलोयण. ७ MB तक्खणि भंगरु. ८ B कुरुविंदत्तणु. ९ MB जंघाजुयलहो. १० K सम.

13. १ MB वि. २ जिम कुमरिहि हियवउ. ३ MB मिगु ण तेम. ४ MB ºणयण. ५ MB उत्तपउत्ती. ६ MB ºकीलणजुत्तइं.

---

12. 5 *a* ºकुसेसयº रक्तोत्पलम्. 10 कुरुविंदु शंखघर्षणम्; तणु काष्ठं लघुश्च.

13. 2 *a* भुत्तउ युक्तो गृहीत.. 4 *a* दड्ढा अग्निना संतप्ताः.

14

छुडु मायं[1]दरुक्खु कंट[2]इयउ महुलच्छिइ आलिंगिवि लइयउ ।
छुडु चंपयतरु अंकूरंचिउ णं कामुउ हरिसें रोमंचिउ ।
छुडु कंकेल्लि किं पि कोरइयउ णं वम्महचित्तारें रइयउ ।
छुडु मंदारसाहि पल्लवियउ चलदलु णं महुणा णच्चावियउ ।
छुडु जायउ [3]णमेरु कलियालउ मत्तचओरकीररावालउ ।
छुडु काणणि प[4]प्फुल्लु पलासउ पहियहुं लग्गउ विरहहुयासउ ।
छुडु फुल्लिउ मल्लियफुल्लोहउ रमणीयणि पसरिउ रइलोहउ ।
छुडु छड[5]यणविडउलि मउ वाड्डिउ वेल्लिकुसुमरसु चुंबिवि काड्डिउ ।
कुं[6]दु कुसुमदंतहिं णं हसियउ को[7]इलु कामपडहु णं रसियउ ।
दवणयक[8]यकुड्डयलपउत्तइं चंदणकद्दमपिं[9]डविलित्तइं ।
घत्ता—छुडु केलीहरइं विणिम्मियइं पु[10]प्फंचत्थुरणइं घित्तइं ॥
छुडु लग्गइं मिहुणइं सरहसइं अवरोप्परु र[11]यरत्तइं ॥ १४ ॥

15

थिप्पिरमहुछडयहिं महिघुलियइं सुमणसुरहिरयरंगावलियहिं ।
णवरत्तुप्पलकलियादीवहिं चंदकवयणक्खणक्खणभावहिं ।
धवलकुसुममंजरिधयमालहिं गुमुगुमंतमहुलियगेयालहिं ।
रायहंसकामिणिकय[1]रमणहिं थिउ वसंतपहु उ[2]ववणभवणहिं ।
कुररकीर[3]कारंजणिणायहिं वणिजंतु व थोत्तणि[4]हाणहिं ।
सियजलकणतंदुलसोहालहिं भिसिणिपत्तवरमरगयथालहिं ।
अणलससयदलदलसरलच्छिइ घित्त सेस णं तहु वणलच्छिइ ।

14. १ MB मायंदु रुक्खु. २ B राइयउ, K रयउ. ३ M णं मेरु, B णामरु. ४ MBK पप्फुल्ल. ५ B विडयणाविउलि. ६ MB कुंद. ७ MB कोइल. ८ MB °कयकंदुयणपउत्तइं. ९ MBK °पिंगाविलित्तइं. १० MB पुप्फत्थरणइ. ११ MB रइरत्तइ.

15. १ MB °रमणिहिं. २ MB बहुवणभवणिहि. ३ MB °कारंड°. ४ M °णिकायहिं; B °णिणायहिं; K °णिहायहिं,

14. 8 *a* कोरइयउ कोरकितः. 8 *b* °कुसुमरसु मकरन्दः. 12 सरहसइं सरभसानि उत्सुकानि.

15. 1 *b* सुमणसुरहिरय° पुष्पसुगन्धमकरन्दः. 7 *a* अणलस° विकसितम्.

फग्गुणपइसारइ णंदीसरि   हुडु सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।
पोसहपरिसमखामसरीरइ   थणजुँयलंतविलंबियहारइ[5] ।
पुत्तिइ पहसंतें मुहकमलें   पहु दिट्ठउ जिणसेसाकमलें ।

घत्ता—तेलोक्कपियामहु णँववि[6] जिणु णवमयरंदकरंबिउ ॥
तं णलिणु णरिंदें णिहिउ सिरे महुयरउलमुहचुंबिउ ॥ १५ ॥

16

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय   करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।
गय सुंदरि णियगेहु पराइय   तायहु चित्ते चिंत संभूइय ।
भडयणु सव्वु दूरि ओसारिउ   रायएं मंतिहि मंतु समीरिउ ।
तणयहि उडुदिणि गलियइं रत्तइं   महुं डुहंति भो अट्ठ वि गत्तइं ।
णं दुपुत्तरइयइं दुच्चरित्तइं   अवलोयहु लहु णववरइत्तइं ।
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ   कासु वि कुलगुणवंतहु दिज्जइ ।
सायरमंति चवइ सररुहमुहु   अक्ककित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णें   सामंतेण लोयसामण्णें ।
सिद्धत्थेण भणिउं मणरंजणु   अच्छइ राणउ णामु पैहुंजणु ।
णं पच्चक्खीहूयउ सइं सरु   रहवरु बलि वज्जाउहु घणसरु ।
सव्वत्थेण लविउ मुइ महिहर[10]   तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर[11] ।
होंति ण अण्णहु तं लायण्णउं   सुमइ कहइ मइं पहु पडिवण्णउं ।
अविरोहणउं सयंवरमंडणु   होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु ।

घत्ता—जं बहुसुएण परिणयमइण सुमइबुहेणब्भत्थिउ ॥
परियाणिवि होंती कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥ १६ ॥

५ MB °जुयलंति विलं°. ६ MBK णविवि.

16. १ MB राएं मंतिहु. २ MB उडुदिण°. ३ MB डहंति. ४ MB अंगइं. ५ M ण दुपुत्त रइयइं; B णं पुत्तरइयइं. ६ MB किं मंतेण. ७ MB पहुंजणु. ८ MB सुरु ९ K वज्जाउह; T घणमरु मेघेश्वरः. १० MB महियरु; T महिहरु राजानः. ११ MB विज्जाहरु. १२ MB होइ ण.

16. 4 *a* उडुदिणि ऋतुदिवसे. 8 *b* °सामण्णें अनुत्कृष्टेन. 10 *a* सरु स्मरः कंदर्पः; *b* घणसरु मेघस्वनः.

17

विमाणगोमिणीधवो कुमारिपुव्वबंधवो ।
सुरो विचित्तअंगओ तओ तहिं समागओ ।
तिणा सुमंडवो कओ[1] विचित्तभित्तिसोहेओ[2][3] ।
ललंततोरणालओ घुलंतपुप्फमालओ ।
सैं[4]मंतभंतभिंगओ णहग्गलग्गसिंगओ ।
सुणीलबद्धभूयलो तमेण णाइ सामलो ।
कहिं पि हेमपिंजरो सरो व्व कंजकेसरो ।
कहिं पि रुप्पयामलो विलिसैं[5]चंदमंडलो ।
कहिं पि वत्थुं[6]च्छण्णओ सुएँ[7]सपिंछवण्णओ ।
णं[8]वंतणत्थलीसमो महंतपुण्णसंगमो ।
मणीहि रायराइओ रईइ णाइ छाइओ ।
कहिं पि देसिं[9] रत्तओ वहूइ णाइ रत्तओ ।
थिओ णवो व्व मित्तओ सिरीवि[10]लासदित्तओ ।
णिहित्तमोत्तियक्खणो ससंखकुं[11]भदप्पणो ।
असेसमंगलासओ पगीयगे[12]यघोसओ ।
विसालमत्तवारणो दिवायरंसुवारणो ।

घत्ता—मंडवु किं वण्णमि देव हउं बहुमाणिक्कहिं जडियउ ।
जहिं दीसइ तहिं जि सुहावणउ सग्गे[13] महिहि णं पडियउ ॥ १७ ॥

17. १ MB add after this: समुच्चमंचसंगओ (B °संचसंगओ). २ MB °सोहिओ. ३ MB add after this: वरंगणाहिरोहिओ. ४ B भमतमत्त°. ५ MB विचित्तवण्णमंडलो, K विजित्तचंद°. ६ MB वत्थछण्णओ and gloss वस्त्रेणावच्छन्नः. ७ GK सुएसुपिंछवण्णओ but gloss शुकेशपिच्छवर्णः; T सुएस शुकप्रधान°. ८ M णवव्वणत्थली°; B णवत्तणत्थली. ९ MB देस°. १० G दिसी° but corrected to सिरी° in the margin. ११ MB °कुंद°. १२ MB °गीय°. १३ MBK सग्गु.

17. 1 *a* विमाणगोमिणीधवो विमानस्य गोमिनी लक्ष्मीस्तस्या धवः स्वामी, वैमानिकदेव इत्यर्थः. 9 *b* सुएसपिंछवण्णओ शुकेसपिच्छवर्णः. 10 *a* णवंतण° नवीनतृणम्. 14 *b* °कुंभ° मङ्गलकलशः. 15 *a* °आसओ आश्रयः.

18

जहिं कुमारि अहिलसइ सइं वरु सो पारद्धउ णाहसयंवरु ।
पइं विणु तेण वि काइं णवल्लें लहु चल्लहि किंकरवच्छल्लें ।
अविणउ एत्थु मं होउ मलासिउ हउं हक्कारउ तुहुं संपेसिउ ।
तं णिसुणिवि हूयउ कोऊहलु दिण्ण भेरि गुरुरव मिलियउ बलु ।
मेरुधीरु जगणलिणदिणेसरु तं णिसुणिवि चल्लिउ भरहेसरु ।
चल्लिउ पडिभडगयघडमद्दणु अक्ककित्ति णामें तहु णंदणु ।
चल्लिउ बलि रहवरु वज्जाउहु चल्लिउ घणरउ णं कुसुमाउहु ।
भूगोयरविज्जाहरराणा गंपि सयंवरघरि आसीणा ।
पहुहु अकंपणु पणविउ जावहिं संदणि तरुणि चडाविय तावहिं ।
सहुं धाइइ भूसणहिं सहंती भायसहासें रक्खिज्जंती ।
चोइय हय महिंदरहिएं तहिं रायकुमार परिट्ठिय ते जहिं ।
जोयइ सुंदरि कंचुइ दावइ एक्कु वि णरवइ मणहु ण भावइ ।

घत्ता—तहिं अक्ककित्ति पलयक्कणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥
वज्जाउहु वज्जु व आवडिउ रुच्चइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

19

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।
को णीससइ ससइ दिहि छंडइ अप्पउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।
कंठाहरणु को वि संजोयइ अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।
को वि णियइ णियणहइं अभंगाइं पयइं पयहि थणहि ण लग्गाइं ।
चिरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु किह विरयमि पयहि कंठग्गहु ।
को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु कासु वि लग्गउ काममहग्गहु ।
कासु वि आयउ विरहमहाजरु कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु ।
मुच्छिउ पडिउ को वि विहलंघलु केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जलु ।

18. १ MB सयंवरु. २ M ण होइ. ३ MB तुम्हइं पेसिउ. ४ MB रहवर. ५ MB भाइ°. ६ MB जेत्तहिं.

19. १ MB सुसइ. २ MB छड्डइ. ३ MB अंगउं को वि पुण वि पुणु मंडइ. ४ MB अहंगइं. ५ MB °महागहु.

18. 3 *a* मलासिउ दोषाश्रितः पापाश्रितो वा. 11 *a* महिंदरहिएं महेन्द्रसारथिना.

19. 8 *a* विहलंघलु विह्वलाङ्गः.

घत्ता—कर मोडइ छोडइ सिरचिहुर उग्गमंतसिंगारहिं ॥
अहिलसइ हसइ भासइ महुरु भज्जइ कामवियारहिं ॥ १९ ॥

20

तरुणिवयणु जोयवि जोत्तारें मणु परियाणिवि सुरगिरिधीरें ।
पुणु रहवरु संचोइउ तेत्तहि आसीणउ जउं णरवइ जेत्तहि ।
पुच्छइ पेच्छंती गयवरगइ पभणइ कंचुइ णिसुणि महासइ ।
एंहु केरलवइ एहु सिंघलवइ एहु मालववइ एहु कोंकणवइ ।
एहु बब्बरवइ एहु गुज्जरवइ एहु जालंधरिसु एहु वज्जरवइ ।
एहु कंभोयकोंगगंगाहुं राउ एहु सव्वहुं मि कलिंगाहुं ।
एहु कस्सीरणाहु टंकेसरु एहु अवरु अवलोयहि तुहुं वरु ।
सोमप्पहसुउ एंहु सेणावइ कुरुकुलणाहि उग्गउ ससि णावइ ।
रुद्धणहंतरधरविन्थारहिं विसहरवरिसमाणजलवारहिं ।
णिव दिव्विजइ अणेयं परज्जिय मेच्छ अतुच्छवंस रणि णिज्जिय ।
गज्जिउ णवघणघोसणिणाएं मेहेसरु जिं हक्कारिउ राएं ।
इय आयण्णिवि पियसहिवयणइं मुद्धइ पेसियाइं णियणयणइं ।
घत्ता—तिह जोइउ ताइ सुलोयणए जउ णियवइ जयगारउ ॥
जिह रोमि रोमि तहि विप्फुरिउ वम्महु वम्मवियारउ ॥ २० ॥

21

जिह जिह कण्णइ पइ आलोइउ तिह तिह रहियं संदणु ढोइउ ।
णरवरिंद णीसेस पमाइवि भवसिणेहसंबंधें जाइवि ।
मउझसकंपावियगइगत्तइ वीलावसपरिमंउलियणेत्तहि ।

१ B सिरि विहुर.

20. १ MB सजोइउ. २ B जयणरवइ. ३ GK गइवर° but gloss गजवरगतिः; K corrects गइ° to गय°. ४ MB read lines 4, 5 and 6 as: एहु केरलवइ एहु कोमलवइ, एहु सिंघलवइ एहु मालवपइ; एहु कुंकणबब्बरगुज्जरवइ, एहु जालंधरेसु वज्जरवइ, एहु कभोयकोंगगंगगइं, राउ एहु सव्वहं मि कलिंगहं. ५ MB ढक्केसरु. ६ MB एहु. ७ MB °जलधारहिं. ८ MB अणेण. ९ MB जिह कारिउ.

21. १ MB रहियं. २ MB भवसणेह°. ३ MB °मउणिय°.

---

20. 1 *a* जोत्तारें सारथिना.

21. 2 *a* पमाइवि परित्यज्य.

जयहु लच्छिकीलाभूमित्थलि घित्त सयंवरमाल उरत्थलि ।
कुसुमसरेण णं कुसुमसरावलि गहिय कुमारि तेण कयपंजलि ।
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु दुम्मइ परिवड्ढिय जुयरायहु ।
ता दुद्दंसणु दुद्धरु दुज्जणु दुट्ठु दुरासउ दूसियसज्जणु ।
रविकित्तिहि सुहिवंदाकरिसणु अत्थि मंति णामें दुम्मरिसणु ।
मच्छरवंतें तेण पउत्तउं जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।
जहिं अर्हंतदेउ तहिं सयमहु । जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु ।
जहिं महिवइ तहिं रयणहं संगहु ।
ण करहेण खरेण वा णरवंदहु घंटालंबणु सहइ करिंदहु ।
हरिकरित्थीआईयइं णियंदहु सयलइं रयणइं होंति णरिंदहु ।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण एहु णिहालिउ बालए ॥
अवमाणिवि तुम्हइं पिउतणय घणरवु पुज्जिउ मालए ॥ २१ ॥

22

रोसविमीसहं जयकासीसहं ।
इच्छियवसणहं दोहं मि पिसुणहं ।
समरि भिडेप्पिणु सिरइं खुडेप्पिणु ।
घिप्पइ सुंदरि णं वम्महपुरि ।
विउलदुगुंछिउ पहुणा इच्छिउ ।
कलहुद्देसिउ तं तहु भासिउ
तं णिसुणेप्पिणु णिवहु णवेप्पिणु ।
दराविहसेप्पिणु कज्जु मुएप्पिणु ।
णिहुक्कियमइ चवइ महामइ ।
भुक्खइ झीणी कोवविलीणी ।

४ MB सकुसुम ण कुसुमसरसरावलि. ५ MB किय°. ६ MB अरहतु देउ. ७ MB add after this: जहिं सुवण्णु तहिं विसयपरिग्गहु. ८ M °थीअइआइं णियंदहु; B °थीआइअइ णिअंदहु. ९ MB पहुतणय.

22. १ MB कलहुद्देसउ. २ MB add after this: कर मउलेप्पिणु. ३ MB add after this. बहु संसेप्पिणु.

---

6 *a* स र हु सरथः. 8 *a* सु हि वं दा क रि स णु मित्रवृन्दकृशताकारकम्. 13 *a* णि यं द हु नृचन्द्रस्य.

माणुसाणी   भयविहाणी ।
आयवंचित्ती   दुक्खें तत्ती ।
णिद्दइ भुत्ती   गमणासत्ती ।
सइं जि विरत्ती   अण्णहु रत्ती ।
पयडीवेस वि   अगपंकयरवि ।
सा करिकरभुय   भरहेसर सुय ।
णालिंगिज्जइ   णेय रमिज्जइ ।
एह पउत्ती   पँरकुलउत्ती ।
उद्दालंतहं   असु मइलंतहं ।
णाउ मुयंतहं   उप्पहि जंतहं ।
भो जुवणिववइ   इहपरभवगइ ।
अवसें णासइ   तुह किं सीसइ ।

घत्ता—ससि दिणयरु जलहरु जलणु जलु गयणु महीयलु वाउ वि ॥
अणजीवियकारेणु धुवु मुणहि सुंदर तुहुं तुह ताउ वि ॥ २२ ॥

23

धणवंतेण अहव दीणेण वि   अकुलीणेण वि सकुलीणेण वि ।
लइय सयंवरि कुवरि ण हिप्पइ   हियवउ गरुयं पावें लिप्पइ ।
एहु पियामहेण तुह ताएं   मग्गु पयासिउ मणुसंघाएं ।
इहु लंघिवि जो भूयइं तावइ   सो णरु दुज्जसु दुग्गइ पावइ ।
एम कहंतहं णउ पडिबुद्धउ   णं घएण सित्तउ धूमद्धउ ।
अककित्ति पडिलवइ विरुद्धउ   जइयहु वीरवट्ट महु बद्धउ ।
जइयहुं फणिवइ भइण ववक्किउ   जणणें जलहरसरु जउ कोक्किउ ।
तइयहुं महुं रोसाणलु हूयउ   णियमिउ पंतु खलहं जमदूयउ ।

४ MB जा अवचिंती. ५ MB read this line as. गमणासत्ती, णिंदइ (B णंदइ) भुत्ती. ६ MB अण्णहु ७ G omits this line. ८ B जणु. ९ MB कारण धुउ.

23. १ MB सुकुलेणेण वि अकुलीणेण वि. २ MBK नीरपट्टु.

22. 12 *a* जायवचित्ती या अपचित्ता उन्मत्ता.

23. 4 *a* भूयइं प्राणिनः. 5 *b* धूमद्धउ अग्निः. 7 *b* जउ जयः इति नाम्ना.

वारिउ छण्णपउत्तिहिं बप्पें अज्जु सयंवरमालातुप्पें ।
सो वूसहु पज्जलियउ व[3]ट्टइ रिउलोहियसित्तउ ओहट्टइ ।

घत्ता—भो ओसरु कण्णइ काइं महु हउं किं मग्गु ण [4]जुंज्झवि ॥
जउ अप्पु वि म[5]डलीहहि गणइ तेण समउ रणि [6]जुज्झवि ॥ २३ ॥

24

ताडिय समरभेरि क[1]उं कलयलु खणि उद्धाइउ चउरंगु वि बलु ।
रक्खिय सिक्खिय वइरिवियारण सूरारूढ सूर वरवारण ।
मे[2]ट्ठपयंगुट्ठहिं संचोइय गज्जमाण मेहा इव धाइय ।
[3]हरिखरखुरखयखोणीमंडल वाहिय वरकामिणिमणचंचल ।
रहरंखोलमाणधयडंबर दित्तविचित्तछत्तछण्णंबर ।
[4]चक्कचारचूरियविसहरसिर असिझससमुसललउडिलंगलकर ।
सुणमि सुविणमि महापहु णहयर [5]अट्ठ चंद णामें विज्जाहर ।
जुवराएण रणंगणि मुक्का गरुडवूहु णहि विरइवि थक्का ।
विजयघोसि करिवरि आरूढउ बालु महाहवस[6]यणिग्घुट्ठउ ।
चक्कवूहमज्झत्थु विहावइ रवि परिवेसें वेढिउ णावइ ।
एत्तहि कण्ण पइट्ठ जिणालउ णिच्चमणोहरु णाम विसालउ ।
रक्खिज्जंती किंकरवग्गें थि[7]अ णिच्चलमण काओसग्गें ।
[8]झायइ हो विवाहवित्थारें णाणाजीवरासिसंघारें ।
एत्तहि दूएं कज्जु समीरिउ तं चक्कवइसुएणवहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि आमापं पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुहु धरि ॥
रिउ जिणिवि जाम पडिवलमि हउं ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

३ M वट्टइ. ४ MBK जुज्झमि. ५ MBK मंडलीलहि. ६ MBK जुज्झमि.

24. १ MB किउ. २ K मेंठ°. ३ MB हयखुरेहिं खय. ४ MB चक्कचार°. ५ MB अट्टचंद. ६ MB °सयणिब्बूढउ. ७ MB थिय तायाणइ काओसग्गें. ८ MB झाइय.

24. 5 *a* °धयडंबर ध्वजाटोपः. 9 *b* बालु अर्ककीर्तिः.

25

तेण समउ वर[1]वीरु रणुब्भडु | वलिउ सुकेउ सूर[2]मित्तु वि भडु ।
खग्गपाणि भीसणु परसिरिहरु | देवकित्ति जय[3]वम्मु ससिरिहरु ।
पंच वि ससिरविणायकुलुब्भव | पंच वि कयसंगाममहुच्छव ।
पंच वि णं आसीविसविसहर | पंच वि मउडबद्ध रण[4]सहयर ।
पंच वि लोयवाल णं दारुण | पंच वि पंच णाइं पंचाणण ।
[5]अरितरुमयकंतारविणासण | पंच वि [6]णं सइं पंच हुयासण ।
मेहप्पहु खगवइ तहिं छट्ठउ | करणहउयरि णाइं मणु दिट्ठउ ।
जउ जि जीउ जहिं ववसिउ जायउ | तहिं ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ ।
विरइयमयरवूहअब्भंतरि | थिउ वेयड्ढमहाकरिकंधरि ।
दीसइ सोमप्पहसुउ केहउ | वणगिरिमत्थइ केसरि जेहउ ।
चोद्दहभायरेहिं परियरियउ | रवि व सकिरणकलावहिं फुरियउ ।

घत्ता—उक्खयकरवालभयंकरइं आहवि कोवा[7]वण्णइं ॥
आलग्गइं कण्णाकारणिण अक्ककित्तिजयसे[8]ण्णइं ॥ २५ ॥

26

प[1]रिहियकंचणकंचु[2]इकवयइं | सामरिसइं संवरियावयवइं ।
भडमुहमुक्कहकललक्कइं | भामियचक्कइं भेसियसक्कइं ।
झस[3]कोंतासणिघोरायारइं | [4]झणझणंतधणुगुणटंकारइं ।
मुक्कपिसक्कच्छइयगयणयलइं | रुहिरवारिरेल्लियधरणियलइं ।
अंकुसवसविसंतमायंगइं | संदणसंकडपडियतुरंगइं ।

25. १ MB वरधीरु. २ MB मित्तसूरु. ३ B जयधम्मु. ४ MB रणसयकर, K रणमहयर. ५ M अइतरु° but gloss अरिः. ६ MB णावइ. ७ MB कोवाउण्णइ. ८ MB °सेणइ.

26. १ MB पहरिय°. २ MB °कचुय° ३ MB झसकुंताथणि°. ४ MB रुणुरुणंत°.

---

25. 6 *a* अरितरुमयकंतार° अरयः एव तरवस्तन्मय यत्कान्तारमरण्यम्. 8 *a* ववसिउ शत्रुपराजयकरणे उद्यतः, *b* ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ रिपुरर्ककीर्तिः सुलोचनोद्दालनादिलक्षणं कर्मसंघातं न धराति न स्वीकरोति.

26. 2 *a* °कलक्कइं रौद्राः. 4 *a* °पिसक्क° बाणाः.

असिणिहसणसिहिसिहपिंगलियइं लुयकरसिरउराइं महिघुलियइं।
मिलियकरालकालवेयालइं हणहणरावसमुग्गयरोलइं।
रुंडखंडभावियभेरुंडइं खंडियधवलछत्तधयदंडइं।
घत्ता—जुज्झंतइं दिट्ठइं विसरिसइं पयलियवणरुहिरुल्लइं ॥
बेण्णि वि सेण्णइं णं रणसिरिए बद्धइं केसुअफुल्लइं ॥ २६ ॥

27

रत्तमत्तरयणियरवेंभले घारणीयलुलियंतचोंभले।
पहयहत्थिमत्थिक्कपंकए रसवसाणईजणियसंकए।
उद्धबद्धचिंधोहलूरणे तियससुंदरीतोसपूरणे।
उयरऊरुउरयलवियारणे वइरिघरिणिमणिहारहारणे।
भीरुवयणणासिरियहारणे मरणदारुणे तहिं महारणे।
ता जएण संपेसिया सरा पुंखलग्गहुंकारखरसरा।
आहया हया विद्धया धया णिग्गया गया णिम्मया मया।
ते ण किंकरा जे ण मारिया ते ण राइणो जे ण दारिया।
तं ण छत्तयं जं ण छिण्णयं तं ण वाहणं जं ण भिण्णयं।
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ सो ण खेयरो जो ण खं गओ।
ताम पक्खिपक्खेहिं विज्जियं मग्गणेहिं किविणं व तज्जियं।
फुट्टकंचुयं फुट्टमद्दलं तुट्टपक्खरं मुक्ककुंतलं।
घायघुम्मिरं चत्तगोंदलं चक्किसूणुणा णिग्गयं बलं।
समरकोच्छरो हसियअच्छरो बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो।
झत्ति बाहुबलिदेवतणुरुहो सोमवंसतिलयस्स संमुहो।
भुयबलीविलग्गो महाभुवो पहु अणंतसेणो वि साणुओ।
दिव्वलक्खणंकियसरीरहं सयइं पंच भिडियइं कुमारहं।

५ MB हणहणकार°. ६ M वणासिरिए; B णवसिरिए.

27. १ MB °विंभले. २ MB रसवसं णइं. ३ G छित्तयं, K छत्तय, corrects it to छित्तयं but scores out the correction and restores it to छत्तयं. ४ MB विंजिय. ५ MBK किविणं. ६ MB फट्ट°. ७ M चित्तगोंदलं. ८ MBK हरिसियच्छरो.

---

27. 1 *a* °वेंभले विह्वले; *b* °चोंभले समूहे बीभत्से वा. 2 *b* रसवसाणई° रसस्य वसायाश्च नदी. 7. *b* मया मृताः. 14 *a* °कोच्छरो दक्षः. 16 *b* साणुओ सानुजः लघुभ्रातृभिः पञ्चशतैः सहितः इत्यर्थः.

घत्ता—पुरुदेवतणयतणयहिं मिलिवि जउ आढत्तउ जावहिं ॥
हेमंगउ भायरदहसयहिं सह अंतरि थिउ तावहिं ॥ २७ ॥

28

णउ तासिज्जइ छिज्जइ भिज्जइ एक्कें एक्कु णं तहिं मारिज्जइ ।
सुद्धभवणि णं विहलियसत्थइं सत्थइं आविवि जंति णिरत्थइं ।
चरमदेह ण मरंति महाहवि किर थाहिंति महामुणि याहवि ।
मेहेसरसरजालु जलंतउ कुमरहु उप्परि सिहि व पडंतउ ।
वसुसमससिविज्जहिं पडिखलियउ सहलु सपुंखउ पिट्ठु व दलियउ ।
एत्थंतरि असहायसहायहु मुहुं अवलोइवि खेयररायहु ।
भणइ कुमारु धवलु तुहुं ण कसरु वट्टइ माम तुहारउ अवसरु ।
सुणमि णिवायहि जउ महु वेरिउ ता तेण वि रिउ रणि पच्चारिउ ।
कंतामोहमहण्णवबूढउ रे जीमूयणाय तुहुं मूढउ ।
किं कड्ढिउ असिवरु पहुतणयहु दोहय णिवडिओ सि गुरुविणयहु ।
संमुहुं थाहि थाहि मा णासहि पेक्खहुं तिक्ख सिलीमुह पेसहि ।
ता सो जयणरणाहें हसियउ इय चवंतु किं णहहु ण लहसियउ ।

घत्ता—तुहुं कारउ परयारहु पमुहु अक्ककित्ति सइं कत्तउ ॥
हउं णायणिउंजउ धरणियले णियपहुपायहं भत्तउ ॥ २८ ॥

29

एम चवेवि चाउ अप्फालिउ णं काणणि हरिणा ओरालिउ ।
णाइं कयंतहु पडहें रसियउं जगु गिलेवि णं कालें हसियउं ।
भेसियसुरणरफणिसंघायउ जीयारउ रउद्दु संजायउ ।
णिद्धणविहुरविणाससमत्थें धणु कड्ढियउ तेण सइं हत्थें ।

१ G पुरुदेवतणयहिं.

28. १ MB तहिं ण. २ M चरमदेहे. ३ B थिर. ४ MB कुम्मरहु. ५ M भाइ. ७ MB °महण्णवे छूढउ. ७ M कायउ.

28. 3 *b* पाहवि प्रभुत्वे. 5 *a* वसुसमससिविजहिं अष्टचन्द्रैर्विद्याधरैर्विद्याभिः कृत्वा. 9 *b* जीमूयणाय हे मेघस्वर. 10 *b* दोहय हे द्रोहिन्. 13 तुहुं कारउ त्वं हेतुः कर्ता; परयारहुपमुहु परदारगमनस्य प्रमुखः प्रधान.; सइंकत्तउ स्वातन्त्रः कर्ता. 14 णायणिउंजउ न्यायनियोजकः.

29. 1 *b* हरिणा सिंहेन.

लोहवंत किर के णउ मग्गण धम्मुज्झिय किर के णउ भीसण ।
गुणवज्जिय किर के णउ णिट्ठुर पिच्छंचिय किर के णउ णहयर ।
चित्तविचित्त के ण किर चलयर वम्मण्णेसिय के णेउ ताविर ।
सुद्धिवंत णियदित्तिइ दित्ता उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।
वइरिहि देहावयवि पइट्ठा एक ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा ।
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु ताहं ण दुग्गमु लक्खु विणासणु ।

घत्ता—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥
णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि बलु खणि खद्धउ ॥ २९ ॥

30

कुंजर जरभावेण व भग्गा तुरय तुरंततयपहि लग्गा ।
संदण संदाणिय वावल्लहिं भणु कहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।
तिक्खखुरुप्पहिं छिण्णइं छत्तइं चिंधइं चामराइं वाइत्तइं ।
चउदिसु पच्छाइयसरजालें विज्जाहर हरेवि णियकालें ।
एम दिसावलि संदिज्जंतउ पेच्छिवि णिययसेण्णु भज्जंतउ ।
सुणमिं मुक्कु बाणु संधारउ ढंकिउ तेण वइरिपरिवारउ ।
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ वाहणु पहरणु को वि ण चालइ ।
एत्थु तेत्थु भग्गियअवठंभणु सालसणयणु पमेल्लियजिंभणु ।
बलु णीलीरसि बोलिउ णावइ आम अहइ णिद्द संपावइ ।
दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु तावंतरि संठिउ मेहप्पहु ।

घत्ता—तं धंतु महंतु विणासियउ उज्जोइउं णियसुहिमुहुं ॥
जगि सज्जणसंगें जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥ ३० ॥

29. १ M मम्में णिसिय; B धम्में णिसिय. २ MB ण संताविर.

30. १ MB जरतावेण जि भग्गा. २ MB तुरंत तहे पहि. ३ MB किर कहिं. ४ MB छिण्णहिं. ५ MBK अंधारउ. ६ M परहणु. ७ MB जेंभणु. ८ MB संपावइ. ९ B णियसहिमुहुं.

---

7 *b* वम्मण्णेसिय मर्मान्वेषिणः. 9 *b* जयसर जयस्य बाणाः जितस्मराश्च.

30. 1 *a* जर° ज्वरः; *b* तुरंततयपहि तुरंत त्वरमाणाः + अंतयपहि अन्तकमार्गे. 2 *a* वावल्लहिं सेल्लैः; *b* रहिल्लहिं सारथिभिः. 9 *b* अहइ अभद्रा. 10. *b* मेहप्पहु मेघेश्वरमित्रः.

31

णं जलहरु जलहरु गइ दूसिवि धाइउ तासु सुणमि आरूसिवि ।
सुणमि मुक्कु भीमु पंचाणणु मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु ।
सुणमि मुक्कु जलंतु हुयासणु मेहप्पहेण मेहु जलवरिसणु ।
सुणमि मुक्कु सकंदरु मंदरु मेहप्पहेण सकुलिसु पुरंदरु ।
सुणमि मुक्कु विसंकु महाफणि मेहप्पहेण गरुडु खगासिरमणि ।
सुणमि मुक्कु महंतु महीरुहु मेहप्पहेण तणूणवु दूसहु ।
सुणमि मुक्कु मत्तसोंडालउ मेहप्पहेण सीहु दाढालउ ।
जं जं सुणमि महाउहु पेसइ तं तं मेहप्पहु विद्धंसइ ।
घत्ता— णउ सक्किउ विसहहुं रिउहि सर कसरु व मुहुं वंकेप्पिणु ॥
ओसारिउ सुणमि खयराहिवइ संगरभारु मुएप्पिणु ॥ ३१ ॥

32

भग्गइ सुणमीसरि सोंडीरहिं अट्टचंदविज्जाहरवीरहिं ।
मेहप्पहु पहरेहिं पराज्जिउ सो णासंतु णं सुरहं वि लज्जिउ ।
दाणवारिपीणियमहुयरउलु णहयललग्गतुंगकुंभत्थलु ।
कणिरकणयकिंकिणिकोलाहलु करसिक्कारसित्तधरणीयलु ।
आयसवलयबद्धदंतुज्जलु ता जएण संचोइवि मयगलु ।
पभणिउ अक्ककित्ति लहु आवहि अज्ज वि सुंदर काइं चिरावहि ।
चंगउ कियउ रायपुत्तत्तणु णिहियउ तिहुयणि दुज्जसकित्तणु ।
परणरणारिहि भडयणमग्गिहि रत्तओ सि जं देवकुमारिहि ।
तं पइं णरवइआण णिसुंभिय णिद्दय जारवित्ति पारंभिय ।
तं णिसुणेप्पिणु उत्तरु धुत्तें पडिजंपिउ भरहाहिवपुत्तें ।

31. १ MB जलहर°. २ MB भूसिवि; ३ K मुणमि नासु. ४ MBK मेहु. ५ M सुकंदरु. ६ MB महातरु. ७ M तणूयउ; B तणूणउ. ८ MB महत्थु संपेमइ. ९ MB वंकेविणु.

32. १ MB सुणमि समरि. २ MB अद्धचंद°. ३ M त्रि. ४ G करि°. ५ MB सित्तु. ६ MB थिरावहि. ७ MB उत्तर.

---

31. 2 *b* स र हु अष्टापदः. 6 *b* त णू ण वु तनूनपात् अग्निः.

32. 4 *a* क णि र° शब्दवत्य°.

घत्ता—महु संणिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडदासिउ ॥
हउं लग्गउं तुह भुयबलमयहो पुव्वमेव आसासिउ ॥ ३२ ॥

33

जेण बलेण जित्तु घणमंडलु तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।
तं बलु पेक्खह दावहि अम्हहं अज्जु परिक्ख करेवी तुम्हहं ।
वेहाविउ आवत्तचिलायहिं तुहुं वि बप्प जुज्झहि सहुं रायहिं ।
तहिं अवसरि सेंदूरकणारुण जयवारणहु विलग्गा वारण ।
अट्ठ अद्धचंदेहिं आवाहिय कक्खरिक्खगेज्जावलिसोहिय ।
एक्कु दंति जुवराएं ढोइउ णं इंदें अइरावउ चोइउ ।
हयअरिकरिवरेण ते दंतहिं णिवडियणवविलुलंतहिं अंतहिं ।
सरससमुच्छलंतपलखंडहिं दोखंडीहवंतदढसोंडहिं ।
घत्ता—गय पाडिय सूडिय णं सिहरि धरणिवीढु आकंपिउ ॥
देवासुरहिं णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥ ३३ ॥

34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउं एत्तहि जायउं सूरत्थवणउं ।
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ एत्तहि जगु संझारुइसोहिउ ।
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु एत्तहि पसरइ मंदु तमीतमु ।
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं ।
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ एत्तहि धावइ ससियरमेलउ ।
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं एत्तहि विरहें रडियइं चक्कइं ।
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु एउ ण वुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।
तुमुलरंगे णिरु रोसाउण्णइं तेत्थु जि वसियइं बेण्णि वि सेण्णइं ।

७ MBK आरोसिउ.
33. १ MB सिंदूर°. २ MB अद्धचदेहिं. ३ MB अवराइउ ४ MB देवासुर.
34. १ MB संझारुणु सोहिउ. २ MB रोसाइण्णइ.

33. 5 *b* °गेज्जावलि° वरत्राभि.. 7 *b* अं त हिं अन्त्रैः.
34. 3 *b* त मी त मु रात्र्या अन्धकारः.

घत्ता—रत्तिहिं रणरंगि भवंतियए णरवइकज्जि समत्तउ ॥
घरिणिइ पिउ सहियहिं दावियउ सरसयणयलि पसुत्तउ ॥ ३४ ॥

35

का वि भणइ ईसावसरुट्ठी खग्गधार पियहियइ पइट्ठी ।
तक्कयरत्तहु हउं किह रुच्चमि हयविहि प्राणहिं काइं ण मुच्चमि ।
का वि भणइ जं मइं पडिवण्णउं पिय तं हियउ सिवहि किं दिण्णउं ।
जं मइं चिरु दंतग्गहिं खंडिउं अहरबिंबु तं पक्खिणिखंडिउ ।
का वि भणइ पिय करु मा ढोयहि ओसरु कावालिय किं जायहि ।
पट्टालंकियसीसहु लक्खणु मं छुडु तुहुं णिग्घिण दुवियक्खणु ।
जो मइं चप्पिउ आसि थणंतहिं मो रुंद्धउ उरु करिवरदंतहिं ।
पणयसणिद्धइं पणइणिठाणइं का वि सणाहहु खंडइ वीणइं ।
का वि भणइ जाणवि तणुथाणुहि आणिय पासि परेहिं णिहाणुहि ।
णाहें अंतोणिबंधणु दिण्णउं असिधेणुयइ सासु लइ छिण्णउं ।
को वि दुवासखुत्तरिउचक्कउ उप्परि रहहु महारहु थक्कउ ।
केण वि संचिय णिवरिणहारी रयणकोडि मायंगहु केरी ।
लइय भिंडेप्पिणु दोहिं वि हत्थहिं भणु किं ण कियउ पत्थु समत्थहिं ।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ उवसमिवि मेल्लिवि ससरु सरासणु ॥
गयवरसंथारइ को वि मुउ करिवि वीरसंणासणु ॥ ३५ ॥

35. १ MB किं रुच्चमि २ MB पाणहिं. ३ M मुहु, B मइ. ४ K चड्डिउं. ५ MB अहरबिंबु पक्खिणिहिं विहंडिउ. ६ MBK जोयहि. ७ K णिग्घि. ८ MB रुद्धउ अरिवरकरिदंतहिं. ९ MB °समिद्धइं. १० MB °ठाणइं. ११ T णिभाणुहे १२ MB अज णिबधणु. १३ MB मीसु लइ छिण्णउं. १४ MB धीरसंणासणु.

---

10 समत्तउ समाप्तो मृतः. 11 पिउ प्रियः.

35. 2. *a* तक्कयरत्तहु खड्गधाराकृतरक्तस्य. 9. *a* तणुथाणुहि शरीरस्तम्भस्य; *b* णिहाणुहि पुरुषादित्यस्य. 10 *b* सासु निःश्वासः.

36

पुणु जामिणीगमणि दिणमणिसमुग्गमणि ।
भेरीणिणद्दाइं कयजयविमद्दाइं ।
जमसुहरउद्दाइं [1]हरियंदणद्दाइं ।
गज्जिय[2]मयंगाइं हिंसियतुरंगाइं ।
वाहियरहोहाइं संणद्धजोहाइं ।
चलवलियचिंधाइं धूलीरयंधाइं ।
कि[3]लिगिलियणिसियरइं जिगिजिगियअसिवरइं ।
कंपियध[4]यग्गाइं सेण्णाइं लग्गाइं ।
ता संदणत्थस्स आहवसमत्थस्स ।
णरसिर लुणंतस्स करि हरि हणंतस्स ।
विहवियदणुयस्स लच्छिमइतणुयस्स ।
[5]परिवत्तसंकेहिं व[6]सुसमससंकेहिं ।
उब्भूयगावेण विज्जापहावेण ।
परपाणपहरणइं छिण्णाइं पहरणइं ।
कोंताइं कंप[7]णइं मुसलाइं घणघणइं ।
चावाइं चक्काइं चूरेवि मुक्काइं ।
ता गलियसत्थेण चिंतें[8] महत्थेण ।
जयणामराएण इच्छियसहाएण ।
जियसरयमेहम्मि जो आसि गेहम्मि ।
सिद्धो सउण्णेण [9]धण्णेण वीरेण ।
अहिराउ संभरिउ सो झत्ति अवयरिउ ।
फणिवासु रणि तिव्वु अद्धेंदुसरु दिव्वु ।
ढोएवि खणि तासु गउ णाइणीवासु ।

36; १ M हरियव°. २ MB °मइंगाइं. ३ MB किलिकिलिय°. ४ MB °धयग्गाइं. ५ MBK परियत्त°. ६ B omits this foot. ७ MB कप्पणइं. ८ MB चिंतियमहत्थेण. ९ MB धीरेण धण्णेण; G धम्मेण वीरेण.

36 3 *b* हरियदणद्दाइं हरिचन्दनार्द्राणि. 11 *b* लच्छिमइतणुयस्स जयस्यार्थे:. 12 *a* वसुसमससंकेहिं अष्टभिर्विद्याधरैः. 20 *a* सउण्णेण सपुण्येन. 22 फणिवासु नागपाशः.

ता विजयवंतेण ससिभासपुत्तेण ।
जाला मुयंतेण जालियदियंतेण ।
हुयवहसमाणेण [10]अहिदिण्णबाणेण ।
कूबरधुरासहिअ णिद्दहिवि [11]रणि रहिय ।
दरमलिय[12]धयसंडि णच्चवियारिउ [13]खंडि ।
परिभमियगिद्धउलि पइसरिवि भडतुमुलि ।
अट्ठ वि विहु तेण बद्धा तुरंतेण ।
कूरारितासेण दढणा[14]यवासेण ।
धरिओ रुसारुणउ चक्कवइपिउ[15] तणउ ।
घत्ता—जिणु तायताउ पिउ [16]रायवइ तो वि णिबंधणु पत्तउ ॥
[17]उइ माइ कु[18]मारु णराहिवेण दुक्कियफलु किह भुत्तउ ॥ ३६ ॥

37

एम्व चवंतिहिं सुरवरगणियहिं वण्णिउं जयसाहसु घणथणियहिं ।
घल्लिउ कुसुमपयरु सुरणियरें गाइउं णं रुणुरुणिएं भमरें ।
जयविलासु जयरायहु केरउ दइवहु तणउं चारु विवरेरउ ।
रहणिहियउ कुमारु विच्छायउ करकलियंकुसचोइयणा[1]यउ ।
जलहरसरु पइट्ठु ससुरयघरि विजयाणंदु प[2]वड्ढिउ पुरवरि ।
तक्खणि सयल वि परभवतत्तिइ गय जिणभवणहु परमइ भत्तिइ ।
जम्मावासपासविवरंमुहु वंदिउ अरुहु तिजगपुज्जारुहु ।
मिलियणरिंदहिं मउलियपाणिहिं मुहकुहरुग्गयसुललियवाणिहिं ।
बहुमिच्छत्तबीयउप्पण्णउ मोहविसालमू[3]लु वित्थिण्णउ ।
चउगइखंधु सुहासासाहउ पुत्तकलत्तलुलियपारोहउ ।

१० B अहदिण्ण°. ११ MB रहराहिय. १२ धरसडि. १३ M रिउखंडि. १४ MB °णायपासेण. १५ MB °पिय. १६ M चक्कवइ. १८ B एवमाइ. १८ K कुमार.

37. १ MB °णाइउ. २ MB पवट्टिउ. ३ K °मूल.

24 *b* ससिभास° सोमप्रभ., 27 *a* कूबर° रथमुखम्, *b* रहिय सारथिम. 30. *a* अट्ठ वि विहु अष्टापि चन्द्रा विद्याधरस्वामिनः. 34 उइ माइ पश्य मातः.

37. 3 *b* चारु चेष्टा. 4 *b* °णायउ गजः.

गहियमुक्कबहुविहतणुपत्तउ पुण्णपावकुसुमेहिं णिउत्तउ ।
सोक्खदुक्खफलसिरिसंपण्णउ इंदियपक्खिउलहिं पडिवण्णउ ।

घत्ता—इय भवतरु झाणहुयासणेण पइं दड्ढउ परमेसर ॥
जिण जम्मि जम्मि महुं तुहुं सरणु जय जय जियवम्मीसर ॥ ३७ ॥

38

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहं महु कारणि उच्छाइयघायहं ।
एयहुं मरइ मज्झि जइ एक्कु वि पच्छइ इच्छइ जइ मइं सक्कु वि ।
तो वि णिवित्ति मज्झु आहारहु लच्छिहि कुच्छियकुणिमसरीरहु ।
इय चिंतंति पुत्ति संभाविय लंबियकर ताएं बोल्लाविय ।
तुह सइ सामत्थें असमंजस रणि उव्वरिय महीस महाजस ।
हुइ संति होउ किं झायहि सुंदरि करपल्लव उच्चायहि ।
जणणवयणु णिसुणेवि कुमारिइ णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ ।
सिरिणाहहु सिरि व्व आवग्गी जयरायहु करपंकइ लग्गी ।
जाइवि पासि कुमारहु णेहें महिणिहित्तदंडासणदेहें ।
जउ सोकं पुणु पायहिं पडियउ भासइ सामिभत्तिभरणमियउ ।
अम्हइं णर तुहुं णरपरमेसरु अम्हइं पक्खि देव तुहुं सुरतरु ।
अम्हइं णलिणायर तुहुं दिणयरु अम्हइं कुवलयसर तुहुं ससहरु ।
अणुपालियहं काइं रूसिज्जइ अभयपदाणु सभिच्चहं दिज्जइ ।

घत्ता—इय वयणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ ॥
लच्छीमइयहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥ ३८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सुलोयणासयंवरविवाहो णाम
अट्ठावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २८ ॥

॥ संधि ॥ २८ ॥

५ MB जय णिज्जियवम्मेसर.

38. १ MB जइ मइं इच्छइ. २ MB संधि ३ MB साकंपणु, K सांकंपणु¹ ४ MB भावइ. ५ M भत्तिभरणडियउ; B °तत्तिभरणडियउ. ५ MB वयणें.

12 *b* पडिवण्णउ आश्रित..

38. 5 *a* असमंजस कोपाविष्टा.. 8 *a* सिरिणाहहु विष्णोः..

XXIX

जे रुद्धा संगरि बंद्धा ते णिव मेल्लिवि पुज्जिय ॥
पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपुरहं विसज्जिय ॥ ध्रुवकं ॥

1

किह हउं संपत्तउ बंधणारु जा सोयइ अप्पउ णिवकुमारु ।
ता पभणिउं तेणाकंपणेण जिणचरणलीणणिच्चलमणेण ।
तुहुं बद्धउ णं णिववंसि चिंधु तुहुं बद्धउ णं सुयणोहबंधु ।
तुहुं बद्धउ णं मायंगदंतु तुहुं बद्धउ णं सरहलु महंतु ।
तुहुं बद्धउ णं सासेण बीउ तुहुं बद्धउ णं पुण्णेण जीउ ।
तुहुं बद्धउ णं सिरिमणिविलासु तुहुं बद्धउ णं सुकहाविसेसु ।
हेलइ जएण जयराइएण तुहुं बद्धउ णं रसवाइएण ।
इयरह किं अम्हहं सहलु होसि अण्णाएं दूसिउ खयहु जासि ।
इय भणिवि तेण कयदेहदित्ति णियपुरहु विसज्जिउ अक्ककित्ति ।

घत्ता—घरु जाइवि लज्ज पमाइवि सिरु पयजुयलइ ढोइंउ ॥
तें भरहहु अरिहरिसरहहु कह व कह व मुहुं जोइंउ ॥ १ ॥

B give, at the commencement of this Samdhi, the following stanzas:-

णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥
तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकै·
कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरौघैः ।
काले तृष्णाकराले कलिमलमलितेऽप्ययं त्रिद्याप्रियो यः
सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥ २ ॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

1. B वुद्दा. २ MB पुग्हु. ३ MB सुहिणेहबंधु. ४ M सरयण्णु, BT सरयलु. ५ MBK रसु वाइएण. ६ MB बद्धउ. ७ M विसज्जिय. ८ MB ढोइयउ. ९ MB जोइयउ.

---

1. 3 *a* बधणारु बन्धनम्. 5 *b* सुयणोह° सुहृदाम्. 6 *b* सरहलु काण्डफलम्. 7 *a* सासेण धान्येन. 9 *b* रसवाइएण धातुवादिना. 10 *a* इयरह अन्यथा.

2

लज्जंतु वि ताएं सो पउत्तु । वरं गलउ गब्भु मा होउ पुत्तु ।
वसणेसु रमइ खलवयणु सुणइ । अविवेयभाउ सयणाइं हणइ ।
जो एहउ सो वरं कहिं वि जाउ । मा करउ पयहि परियणहु ताउ ।
महु चरपुरिसहिं दुद्दंतदुरिउ । पयहु केरउ वज्जरिउं चरिउं ।
होएँण सुदुण्णयगारएण । ता चिंतिउ तेण कुमारएण ।
गुरुकोवें सिसु जाणंति मग्गु । गुरुकोवें जैंगि सिज्झइ तिवग्गु ।
गुरुकोवें को वि ण खयहु जाइ । गुरुकोवें संपय घरहु एइ ।
गुरुवयणइं कडुयइं जाइं जाइं । परिणामि सुपत्थइं ताइं ताइं ।
लग्गाइं ण सुइसुसिरंति जाहं । जिम परिहउ तिम धुउ मरणु ताहं ।
लइ दिज्जमि हउं दिट्ठंतु एत्थु । लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु ।

घत्ता—जयवंतें सुप्पहकंतें तो पेसिउ गुणवंतउ ॥
आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पभणइ सुमइमहंतउ ॥ २ ॥

3

भो देव कसणसियतंबिराइं । लइ रयणइं लइ पवरंबराइं ।
किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण । किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।
लइ भत्तितो वि णियकिंकराहं । तुह पायपोमलालियसिराहं ।
जयविजयाकंपणपत्थिवाहं । विण्णविउ णिसुणि णिव अवणिवाहं ।
पहिलउ जि दोसु दीहरभुयासु । जं दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु ।
बीयउ जं कोक्किउ वरणिहाउ । दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।
तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल । रइलालस लग्गी तासु बाल ।
परघारेणि हरंतहु रोसणडिय । चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2. १ MB वरु. २ MB °वयण. ३ M किर. ४ G परिणयहु. ५ B जाएण. ६ K सदुण्णय°. ७ धुवु सिज्झइ.

3. १ MB °णिहाउ.

2. 6 *b* तिवग्गु धर्मार्थकामाः. 8 *b* सुपत्थइं सुपथ्यानि. 9 *a* सुइसुसिरंति श्रोत्रविवरमध्ये.

3. 2 *a* णवहिवइ हे नवनिधिपते. 3 *a* भत्तितो वि भक्तितोऽपि. 4 *b* अवणिवाहं अवनिपानां राज्ञाम्. 6 *b* °णिओउ नियोगः.

पंचमउ दोसु वड्ढउ कुमारु णिउ णियणयरहु रणरंगवीरु ।
इय दोहा दोसपरंपराइं जं ण वि मुच्चहुं अज्ज वि घराइं ।
तं देव पइट्ठा तुज्झु सरणु किं दंडु एत्थु सव्वस्सहरणु ।
किं मारणु किं भणु किं³ किलेसु तं णिसुणिवि जंपइ मेइणीसु ।
हा हउं पडिवज्जमि कासिराउ पवसियइ ताइ महु सो जि ताउ ।
जउँ पुणुँ महु दाहिणु बाहुदंडु जं सो तं चक्कु ण वज्जुँ दंडु ।
उँवयरइ बप्प संगामकालि उल्लियगिद्धखद्धंतमालि ।

घत्ता—बलगव्वें रोसें तिव्वें जो जणवउ संघट्टइ ॥
सुउ दंडवि सो सइं खंडवि जो अप्पहिण पयट्टइ ॥ ३ ॥

4

इय कहिवि तेण पट्ठविउ मंति गउ सो घोसइ णियपहुहि संति ।
णरवइ भण्णइ पइं पिउसमाणु जय विजय वे वि रिउतिमिरभाणु ।
महु अवर बिण्णि भुयदंड भणइ तुम्हारउ माणुँसु सुट्ठु गणइ ।
रूसइ सवोसि गुणवंति महेइ को भरहहु केरी लील वहेँइ ।
खंगउ किँउ पुत्तहु दप्पसाडु जं कण्ण देवि विरइयउ चाडु ।
तं मज्झु णिरारिउ डहइ अंगु णउ किज्जइ खलि संमाणसंगु ।
ता जयकंपण हरिसियसुधाम कुरुवंसणाह वंसाहिराम ।
धरणिहियमंतिअप्पाहिएण दुज्जयचिलायसप्पाहिएण ।
अणवरयणविियजिणवरपएण अणुहुंजियणरवइसंपएण ।
अण्णहिं दिणि आणंदियजएण आउच्छिउ णियमसुरउ जएण ।

घत्ता— तुह गोट्ठिहि जिणवरदिट्ठिहि माम विरइ किं किज्जइ ॥
अविणम्में तो वि सकम्में जीउ णियड्डिवि णिज्जइ ॥ ४ ॥

२ K रणरंगधीरु. ३ MB तणुकिलेमु. ४ B जमु. ५ MB महु पुणु. ६ MBK वज्जदंडु. ७ M उवरइ.
4. १ G माणु सुट्ठु. २ MB रमइ. ३ MB गमइ. ४ MB पुत्तहु किउ. ५ M °वरदिट्ठहे.

---

10 *a* दोहा द्रोहिणः. 15 *b* गिद्धखद्धतमालि गृध्रभक्षिता अन्त्रश्रेणय यस्मिन्. 16 संघट्टइ पीडयति.
4. 5 *a* दप्पसाडु मानभङ्गः; *b* देवि दत्वा. 12 अविणम्में निष्ठुरेण.

5

को विसहइ सुहिविच्छोयताउ परियाणवि कज्जवियप्पभाउ ।
उम्मुक्क सुयावरु ससुरप्पेण तें जंतें हरिखुरखयरएण ।
णहु पिहिउ गिल्ल महि करिमएण चलवलिउ खलिउ धयवडु घएण ।
कय जलहिवलय चलवलियणीर थिय विसहर भरभयदलिय धीरें ।
उट्ठिय गहीर भेरीणिणाय आकंपिय कर्कुहणिवास णाय ।
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु दियहहिं गंगाणइतीरें पत्तु ।
णियणियदूसावासहिं सउण्ण हेमंगयाइ सयल वि णिसण्ण ।
पडकुडिहि महामहु सुरसमाणु थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठइं गंगहि छणससिरविपडिबिंबइं ॥
णं वेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइं पंडुरतंबइं ॥ ५ ॥

6

आमेल्लिवि खंधावारु तेत्थु कइवयभडेहिं सह महिमहत्थु ।
साकेयहु जाइवि भुवणसारि थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।
पडिहारें पइसारिउ दवट्टि विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।
विसहरणरखेयरविहियसेव जउ पणवइ एत्तहि पेक्खु देव ।
ता दिण्ण दिट्ठि णाहें विसाल ससिवियसिय णं कंदोट्टमाल ।
पसरंतपणयरससायरेण मुहुं जोइवि सइं परमेसरेण ।
णं कलियइ णेहमहीरुहासु अंगुलियइ दाविउ पीढु तासु ।
उवविट्ठु तुट्ठु संमाणु कियउ पोरिसु परमुण्णइं सहहि णियउ ।

5. १ B कज्जु. २ MB add after this: पडिबोहिउ बुहमण्णें वरेण. ३ MB add after this: पडिपेल्लिउ सदणु संदणेण. ४ M भयभर°; B पयभर°. ५ MB धीर. ६ MBK ककुहणिवासि. ७ MB °तीरु.

6. १ MB सुट्ठु. २ MB सयहि.

5. 3 *b* गिल्ल आर्द्रा. 6 *b* ककुहणिवासणाय दिग्गजाः. 9 *a* महामहु महातेजाः

6. 1 *b* महिमहत्थु मह्यां महार्थो महान् महान्तो वा अर्थधर्मादयो यस्य. 3 *a* दवट्टि शीघ्रम् 5 *b* कंदोट्ट° नीलोत्पलम्. 7 *a* णेहमहीरुहासु स्वहस्तसंवर्धितवृक्षस्य कलिकया इव अङ्गुल्या. 8 *b* सहहि सभायाम्

णउ जलणहु पासिउ अवरु उण्हु परमाणुयाउ णउ अवरु सण्हु ।
गयणंगणाउ णउ अवरु गरुउ कामाउराउ णउ अवरु सरुउ ।
जिणु मेल्लिवि को तेलोक्कसामि पइं मेल्लिवि को सुहडग्गगामि ।

घत्ता—जो दुक्खिउ[३] सो परिरक्खिउ[४] जं दुल्लहु[५] तं लद्धउं ॥
पइं होंतें रणि पहरंतें जय महुं काइं ण सिद्धउं ॥ ६ ॥

7

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु राएं गउ णियसिमिरहु[१] तुरंतु ।
चडियउ वेयड्ढमहाकरिंदि णं दिणयरु उययमहीहरिंदि ।
चमु चालिय पुणु दिण्णउं[२] पयाणु पत्तउ सुरसरिजलमज्झठाणु ।
जोयवि गंगहि सारसहं जुयलु जोयइ[३] कंतहि थणकलसजुयलु ।
जोयवि[४] गंगहि सुललियतरंग जोयइ कंतहि तिवलीतरंग ।
जोइवि गंगहि आवत्तभवणु[५] जोयइ कंतहि वरणाहिरमणु ।
जोयवि गंगहि पप्फुल्लकमलु जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।
जोइवि गंगहि वियरंत मच्छ जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।
जोइवि गंगहि मोत्तियहु पंति जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।
जोइवि गंगहि मत्तालिमाल जोयइ कंतहि धम्मेल्लु णील ।

घत्ता—णियगेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही ॥
मंदाइणि जगसुहदाइणि[६] दीसइ राएं तेही ॥ ७ ॥

३ M दुत्थिउ. ४ MB पाडिरक्खिउ. ५ M दुलहउ; B दुलहु.

7. १ MB °सिविरहु. २ MB चलिय पुणु वि दिण्णउं. ३ MB जोइउ. ४ MB जोइवि. ५ MB आवत्तु भवणु ७ B णं सुहदाइणि.

---

10 *b* सरुउ सरोगः

7. 11 वम्महवाहिणि कामनदी. 12 मंदाइणि गङ्गा.

8

आहंडलमयगलसरिसलीलु तहि अवसरि मेयहे धरिउ पीलु।
सहुं वहुवरेण पयलंतदाणु बहुजलत्रिलंति वोलिज्जमाणु।
दँहि पियदुहकयअवलोयणाइ धप्पाणउं घित्तु सुलोयणाइ।
आलग्गपुच्छकच्छंतरालि हाहारववड्डियगरुयरोलि।
अवलोइवि रुइओहामियक्क हेमंगयपमुह कुमार ढुक्क।
एत्थंतरि थरहरियासणाइ देवंगवत्थसुइणिवसणाइ।
वणदेविइ वारियवइरिणीइ करि कड्ढिउ सुरसरितीरिणीइ।
णं धणसंपत्तिइ कामभोउ उद्धरिउ अहिंसइ णं तिलोउ।
णिविसद्धें णिउ सुरसरिहि तूहु हरिसें णच्चिउ किंकरसमूहु।
रणि वणि जलि जलणि समाइएण रक्खिज्जइ पुरिसु पुराइएण।

घत्ता—वेउव्विउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि सुयसेविए॥
हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविए॥ ८॥

9

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं दिण्णइं अण्णण्णइं भूसणाइं।
दिण्णी वियसिय मंदारमाल सहे णरवरेण विंभइय बाल।
पभणइ का तुहुं करि केण धरिउ किं तारियँ सरि सो कवणु तरिउ।
भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि।
विंझउरिकडइ विंझइरि अत्थि पइ विंझकेउ बलकलियहत्थि।
महएवि पियंगुसिरी सुरूय हउं विंझसिरी णामेण धूय।
परियाणावि ताएं तुह पहाउ सिक्खहुं पासेसु कलाकलाउ।

8. १ MB हारें. २ M पलयंत°. ३ MB read this line as 5. ४ MB reed this line as 3. ५ MB °णियसणाइ. ६ MB तीरिणीइ. ७ GK णिवसद्धें but gloss निमेषार्धः. ८ MB सुयसेविए.

9. १ B अण्णइं. २ MB सहुं. ३ MB तारिउ. ४ MB विंझइरि°.

8. 3 *a* दहि ह्रदे. 9 *a* तूहु रोधस्तटम्. 10 *b* पुराइएण पूर्वार्जितेन कर्मणा. 11 सुयसेविए श्रीसेविते.

9. 3 *b* तरिउ तारकः.

हउं तुज्झु समप्पिय हे वयंसि संभरसि ण कीलहुं जं गयासि ।
णंदणवणि विउलि वसंततिलइ हउं दट्ठी सप्पें वेल्लिणिलइ ।
असिआउसाइं वंजणविसिट्ठ पइं परम मंत मह्नु पंच सिट्ठ ।

घत्ता—ते णिसुणिवि दुक्किउ णिहुणिवि पही लद्ध विहूई ॥
सुरणीडइ गंगाकूडइ गंगादेवय हूई ॥ ९ ॥

10

कीलंती कुच्छियविसहरेण सह सरसें णाहें णिब्भरेण ।
जा पहय सरलदलकोमलेण तुइ कंतें कररत्तुप्पलेण ।
जा णासंती अवरहिं णरेहिं मुसुमूरिय दंडहिं पत्थरेहिं ।
सा हूई णिसुणहि हलि पियालि जलदेवय णामें एत्थु कालि ।
ओलक्खिवि जउ वइराणिवंधु पवणंदोलणघोलंतचिंधु ।
मयरीइ हवेप्पिणु कूरिमाइ कुंजरु कड्ढिउ कुद्धाइ ताइ ।
मइं जाणिउं आसणकंपणेण जा जणिय मयच्छि अकंपणेण ।
सा किं हम्मइ खलकालियाइ मुणिमइ किं छिप्पइ कालियाइ ।
इय चिंतिवि हउं अवयरिय जाम वइरिणि गय णासिवि कहिं वि ताम ।
मइं उत्तारिउ सिंधुरु बलेण तुह हूयउ सुहु सुकियफलेण ।

घत्ता—मलु तुट्टइ बुद्धि पयट्टइ दिस वसुधारहिं दुब्भइ ॥
रिउ णासइ णिहि घरि पइसइ धम्में काइं ण लब्भइ ॥ १० ॥

11

इय थुणिवि सुलोयण चंदहासु गय गंगादेवय णियणिवासु ।
पुणु चोइवि वारणु णं गिरिंदु गउ गयउरु पत्तउ जयणरिंदु ।

५ MB संभरिसि.

10. १ MB णिसुणहि हूई. २ MB कोवेण.

10 *a* वंजणविसिट्ठ व्यञ्जनानि अक्षराणि विशिष्टानि येषु; *b* परम मंत पञ्च परमेष्ठिनः.

10. 3 *b* मुसुमूरिय मारिता. 4 *a* पियालि प्रियसखि. 8 *b* कालिआइ पापेन कालुष्येण.

बहुकालपरिट्ठिउ सुहिण जाव   सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव।
बहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ   एक्कहिं दिणि समउ सुलोयणाइ।
अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम   णहि खयरमिहुणु तें दिट्ठु ताम।
हा देवि पहावइ कहिं भणंतु   मुच्छिउ पहु जम्मंतर[2] सरंतु।
हा णाह णाह विलवंतियाहिं   कुलउत्तियपणियाइयतियाहिं[3]।
सिंचिउ चंदणमीसियजलेण   आसासिउ चलचमराणिलेण।
पारावयमिहुणालोयणेण   मुच्छिय[4] पिय पणयासायणेण।
हा रइवर हा रइवर रसंति   उट्ठिय पुणरवि सा णीससंति।
[1] पारावइ हउं रइविसेण[5] आसि   चिरभवकुलउत्ती तुज्झु दासि।
तुहुं रइवरु पारावउ ण भंति   लग्गी पियगीयहि[6] इय भणंति।

घत्ता—कहिं णिववरु कहिं सो रइवरु कवडें वल्लहु किज्जइ॥
जयपत्तिहि भणिउं सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ॥ ११॥

12

सोमप्पहपुत्तें णायरेण[1]   जणमणसंसयहरणायरेण।
जाणंतेण वि सुहभायणेण   पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण।
पुच्छंतहु कंतहु सुहरु वित्तु   वज्जरइ सुलोयण णियचरित्तु।
इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि   पुक्खलवइविसइ विलासगेहि[2]।
वेयड्ढमहीहरणियडदेसि   तहिं धण्णयमालवणंतवासि।
सोहापुरवरि वयपालु[3] राउ   देवसिरिदेविसंजणियराउ।
तहु वंदियपयपंकरुहरेणु   सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु।
अडइसिरि[4]घरिणिआलिंगियंगु   रेहइ णं रइभूसिउ अणंगु।
हिंडंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु   णवरेक्कु बालु संपत्तु तेत्थु।

11. १ MB omit this line. २ MBK जम्मंतरु. ३ MT पणियंगण°, B पणयगण°. ४ B मुच्छाविय पणया°. ५ MB रइसेण. ६ MB पियगीवहि.

12. १ MK °भायरेण. २ MB विसालगेहि. ३ MB णयपालु. ४ MB अडयसिरि.

11. 7*b* पणियाइयतियाहिं अवरुद्धादिपण्यस्त्रीभिः. 9 *b* पणयासायणेण स्नेहानुभवेन. 12 *b* पियगीयहि प्रियस्य ग्रीवायाम्. 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन.

12, 1. *a* णायरेण चतुरेण. 2 *b* अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिचक्षुषा. 8 *a* अडइसिरि° अटवीश्रीः.

सामंतें पुच्छिउ भणु कुमार तुहुं कासु पुत्तु सुसरीरमार ।
किं किर वियरहि महि सेसवेण तं वयणु सुणेप्पिणु भणिउं तेण ।

घत्ता—उप्पेक्खिउ भवणु ण रक्खिउ गउ हउं सिसु हक्कारिउ ॥
पर मायए णिट्ठुरवायए मंदिराउ णीसारिउ ॥ १२ ॥

13

महु बप्प सिसुत्तणि मुइय माय विणु मायइ डिंभहु कवण छाय ।
भूयत्थें ताएण वि ण दिट्ठु हउं तुम्हारउ पुरवरु पइट्ठु ।
ता तेण सत्तिसेणें अगाउ पडिवण्णु पुत्तु सो सव्वदेउ ।
पंचहिं वि कहिउ णिद्दलियकम्मु अमियमइअणंतमईहि धम्मु ।
राएं वज्जिउ महु मज्जु मंसु राणियइ तेम तं किउ ससंसु ।
सामंतें पुणु अणगारवेल पालिय जिणरायहु तणिय वेल ।
वणसिरियइ किउ दुक्कियविरामु तवु अणुपवड्डकल्लाणणामु ।
सा सिसु मयच्छि गुरुहार जाय संचलिय तेत्थु जहिं वसइ माय ।
परिमुक्कु सिविरु सरविउलकूलि[1] सह पइणा वसइ वणंतरालि ।
जा तावेत्तहि सुहिसोक्खसयरि जणणहरि मुणालवइ त्ति णयरि ।
कणयसिरि वणिंदु सुकेउ कंतु भवदेउ पुत्तु णं कलिकयंतु ।
उट्टुंटउ[2] दुम्मुहु सो ज्जि भणिउ पुरवरि अण्णेक्कु वि तहिं जि वणिउ ।

घत्ता—सिरियत्तउ पिउपयभत्तउ विमलसिरी तहु गेहिणि ॥
सुहकारिणि सुयमणहारिणि रइवेया रइवाहिणि ॥ १३ ॥

13. १ MB सरविमलकूलि. २ M उट्टुंटउ.

11, *a* सेसवेण बाल्ये.

13, 1 *b* छाय शोभा. 6 *a* अणगारवेल अनगारवेलायां भोजनवेलाकरत्वम्. 7 *b* अणुपवड्ड-कल्लाण शुक्लपक्षे प्रतिपत्पञ्चम्यष्टमीचतुर्दशीपौर्णमासीषु भृङ्गारपूर्णभाजनानि सम्यग्दृष्टिभ्यो विधिना देयानि; पूर्णेषु पञ्चसु वर्षेषु पञ्चकल्याणीप्रतिमां प्रतिष्ठाप्य संघभोजनं कर्तव्यमिति; *b* वेल आज्ञा 10 *a* °सोक्खसयरि सौख्यशत-दायके.

14

विमलसिरिभाउ वणि वि[1]हियसोउ अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ ।
जिणयत्त घरिणि णंदणु सुकंतु सुहउ [2]से सोमु सोमु व सुकंतु ।
ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि बारहवरिसइं मज्जाय करिवि ।
जइ हउं णावेसमि [3]तावरासु ता तेरी [4]तणुरुह देज्जसु वरा[5]सु ।
णिद्दविणु ण गिण्हमि अज्जु माम गउ [6]वाणिज्जहि सो जाम ताम ।
चक्कवइसंख वच्छर पउण्ण कण्णहि थणयल समएण पुण्ण ।
पच्चारिय सं[7]खिस णिबंधु मुक्कु सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि ढुक्कु ।
णिसिंसु तिक्खणिसिंसवंतु मरु [8]दारवि मारवि वरु भणंति ।
मं[9]डेवि णिरुद्धु थेरीथडेण वहुवरु वि पणट्ठु [10]परोहडेण ।
गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुईउ अवलोयवि दंपइ पय[11]पईउ ।

घत्ता—कुढि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ ॥
सहुं घरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइत्तु पराइउ ॥ १४ ॥

15

दोहं वि पयरत्तइं पयलियाइं दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं ।
ते रिउणा कह व ण मारियाइं अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।
चिम्मक्किवि रयणिहि रीणयाइं दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइं ।
पासेयधोयतणुमंडणाइं अवलोइयमयउलभंडणाइं ।
सूरग्गामि पत्तइं [1]बे वि तेत्थु आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्थु ।
दुज्जणु अणुलग्गु जि ढुक्कु केम चलपावइयहं कुसुमसरु जेम ।

14. १ MB विहियसेउ. २ MB सुसोम्मु. ३ M सायरासु. ४ M णियतणुरुह. ५ MB परासु. ६ MB वाणिज्जें. ७ B सखिणिब्बंधमुक्कु. ८ MB मारवि दारवि. ९ MB मंडव. १० MB परोवडेण. ११ MBK पयगईउ.

15. १ MB दो वि. २ B omits this line.

14. 4 *a* तावरासु ता + अवरासु अपरस्या. 6 *a* चक्कवइसंख द्वादश; *b* समएण कालेन. 8 *a* णिसिंसु निर्दयः; णिसिंसवंतु खड्गयुक्तः. 9 *a* थेरीथडेण वृद्धासमूहेन; *b* परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुड्ये छिद्रं कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण. 11 कुढि पृष्ठे; हेवाइउ कुपितः.

15. 2 *b* °सीरियाइं विदारितानि. 3 *a* चिम्मक्किवि भ्रान्त्वा.

दिट्ठउ दोहि वि तहिं सत्तिसेणु आसंघिउ कलभहिं णं करेणु ।
कहिं णासहं आयउ अज्जु मरणु लइ तुज्झु पइट्ठइं बे वि सरणु ।
णिसुणिवि वइयरु करमंडलग्गु दक्खालिउ तेण किराडु भग्गु ।
गउ णासिवि सहसा मलियमाणु किं करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु ।

घत्ता—णं उवेक्खिउ वहुवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दूसणु ॥
धणवरिसहुं जगि सप्पुरिसहुं दीणुद्धरणु जि भूसणु ॥ १५ ॥

16

विसकरिखरकरहतुरंगवाहु धरधीरु धणेसरु सत्थवाहु ।
धारिणिकंतामुहरायरत्तु ता तहिं जि समागउ मेरुदत्तु ।
संठिउ समीवि विरएवि ठाणु करिहरिरवबहिरियसिहरिसाणु ।
कंतारमग्गि चारण पइट्ठ सरणागय पविपंजरेण दिट्ठ ।
बेण्णि वि ठाभणिय महाजसेण रिसिगयवर थिय विणयंकुसेण ।
मुणिवसहहं णवविहु लेवि पुण्णु जोग्गउ भोयणु भावेण दिण्णु ।
णहयलि तूरइं तियसहिं हयाइं अच्छरियइं पंच समुण्णयाइं ।

घत्ता—मणि ढोयहुं पुण्णु पलोयहुं पसरियमुहससिरायउ ॥
तहु केरउ पणयजणेरउ मेरुदत्तु घरु आयउ ॥ १६ ॥

17

तहिं तेण तासु जोएवि दाणु धारिणियइ सहुं बद्धउ णियाणु ।
आगामि जम्मि महु होउ पुत्तु एहउ दुत्थियकल्लाणमित्तु ।
महि रंगमाणु णं णिसि णिरिक्कु ता तहिं पत्तउ पंगुलउ एक्कु ।

३ B omits this foot. ४ MB कलहहिं. ५ MB पइट्ठा बे वि. ६ MB णिसुणेवि वइरु. ७ MB भज्जिवि. ८ MB णउ पेक्खिउ.

16. १ MB वरवीरु. २ MB add after this रयणहिं सह फुल्लइ घल्लियाइं, वयणाइं मणोज्जइं बोल्लियाइं. ३ MB पसरियमुहु.

17. १ MB आगम्मि. २ B णिरक्कु.

---

9 *a* वइयरु व्यतिकरः.

16. 1. *b* धरधीरु पर्वतवद्धीरः.

17. 3 *a* णिरिक्कु चोरः

पुच्छिउ वणिणा णियमंतिवग्गु भणु पयहु किं गइपसरु भग्गु ।
सउणिं जंपिउ अवसउण जाय पयहु भवि तेण पणट्ठ पाय ।
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं उद्दिट्ठु एहु कूरग्गहेहिं ।
धण्णंतरि जंपइ पयइदोसु सिंभें जडत्तु पित्तेण सोसु ।
पवणें भज्जइ माणवहु गत्तु भूयत्थें मंतिं पुणु पउत्तु ।

घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहुं पयईहिं पउत्तइं ॥
चिब्भावहं सयलहं जीवहं होंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥

18

इय सणिउं सणिउं पभणेवि तेहिं पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं ।
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु किं पयइदोसु किं कम्मचारु ।
किं कारणु पंगुत्तहु मुणिंद ता भणइ सूरि सुणि भो वणिंद ।
बहिरंध कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल दालिद्दिय दूहव मूय लल्ल ।
अविसिट्ठ दुट्ठ दुप्पिट्ठ कट्ठ दुट्ठोट्ठ रुट्ठ दुहघट्ट वंठ ।
छिण्णोट्ठ कण्णणासाविहीण दुग्गंधदेह काणीण दीण ।
णिल्लज्ज खुज्ज वामण कुसील पलखंड सोंड चंडाल कील ।
जरचीवरधर फरुसुद्धकेस छोहाणलहय कंकालवेस ।
जूयार णिसेवियणयरटिंट पावेण होंति णर कुंट मंट ।
पंगुल परघरपिंडावलुद्ध विवरीय होंति धम्मे विसुद्ध ।
णउ देव देंति णउ ते हरंति देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति ।

घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउं णियमें चित्तु णियत्तिउं ॥
परदविणइ परवहुरमणइ लोयणजुयलु ण घत्तिउं ॥ १८ ॥

३ MB सउणें. ४ M अवसवण. ५ MB सिंभें. ६ MB मंतें.

18. १ M सणउं सणउ. २ MB भो सुणि. ३ M दुप्पिट्ठ. ४ M दुट्ठोट्ठ. ५ B वट्ठ. ६ MB °णयरटेंट. ७ MB परहर°. ८ M घित्तउं; B घित्तिउं.

5. *a* सउणिं शकुनज्ञेन. 6 *a* भेसइणा ज्योतिर्विदा; सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशकैः. 7 *a* धण्णंतरि वैद्यः. 10 चिब्भावहं चैतन्यरूपाणाम्.

18. 8 *b* छोहाणल° क्रोधानलः. 12 °पिसुणिउं प्रतिपादितम्.

19

ता तहिं ओलक्खिउ तरणितेउ भूयत्थें कोक्किउ सव्वदेउ ।
ए एहि पुत्त दे देहि खेउं किं वीसरियउं महु तणउ णाउं ।
सुय तुह सुहयंगइं कोमलाइं लग्गंतइं धूलीधूसराइं ।
होंताइं आसि महु सुहयराइं णिल्लोट्टियपियकंताकराइं ।
सुय तुह मुहलालाबिंदुयाइं हउं [1]सुयरविं णियउरयलि चुयाइं ।
सिक्खाविओ सि सिसुगइवयाइं सि[2]द्धंणमाइं अक्खरवयाइं ।
वीसरियउ [3]सुय तुहुं किं सताउ किं बहुपं महु घरु जाहुं आउ ।
इय पत्थिओ वि सो मंदणेहु पडियागउ णउ णियजणणगेहु ।
पिउणा तिमुंडपविराइएण तवचरणु लइउ णिव्वेइएण ।
छिंदेप्पिणु दढयरु मोहवासु तहु गुरुहि पासु णहचारणासु ।
सुरगुरुणा [4]गहिउ रिसित्तु जेम्व [5]सउणी धण्णंतरिणा वि तेम्व ।

घत्ता—तं वहुवरु णवपंकयकरु सेट्ठिहि तेण समप्पिउ ॥
महु सामिहि गयवरगामिहि गेहि थवेज्जसु जंपिउ ॥ १९ ॥

20

गउ [1]वणिवइ सोहाउरु तुरंतु पणवेप्पिणु पहुहि सकंतु कंतु ।
सो तेण णिरो[2]विउ तासु जाम पत्तहि वि सत्तिसेणक्खु ताम ।
माउहरि थवेप्पिणु णिययघरिणि णं विंझलयाहरि पवरकरिणि ।
वंदिवि मुणालवइ जिणहराइं अवलोयवि ससुरय सिरिहराइं ।
गुरुहार णारि [3]पसढलसरीर सासुरयहु णउ सक्कइ सहार ।

19. १ MB सुयरमि. २ MB सिद्धतमाइं. ३ MB किं तुह सुय. ४ MB सहिउ. ५ MB सउणें.

20. १ MB वणिवइ. २ MB णिरूविउ. ३ MB °पसाढिल°.

---

19. 2 *a* खेउ आलिङ्गनम्. 5 *b* सुयरवि स्मरामि. 6 *a* °वयाइं पदानि. 9 *a* तिमुंडेत्यादि—प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारप्रविराजितेन.

20. 5 *a* पसढल° प्रशिथिलम्; *b* सहार भारसहिता.

सासुरयहु णिग्गउ भडवरिट्ठु आवेप्पिणु सोहाँपुरि पइट्ठु ।
घरि दिट्ठु राउ इच्छियसिवेण वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।
णिउ णिययणिवासहु दिण्ण धामु गोउलु माहिसु फलखेत्तु गामु ।
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु तहु करिवि मंति गय के पि सग्गु ।
मँउ मेरुदत्तु पायडियसिरिहि तहिं देसि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।
पयपालणरिंदणिहित्तचित्तु वणि हूयउ णाम कुबेरमित्तु ।

घत्ता—तहु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥
वउँ पालिवि दुक्किउ खालिवि हूइ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

21

पुत्तत्थिणि भवभावियणियाण सा पक्कतीसघरिणिहिं पहाण ।
गब्भेसरि सयलकलापवीण धयरट्ठगमण सद्देण वीण ।
भवदेवें पावें पसुवहेण तं वहुवरु दड्ढउ हुयवहेण ।
घरि अट्टझाणें मरिवि तेत्थु जायउ पुरसेट्ठिणिवासि एत्थु ।
पारावयजुयलु मणोहिरामु गुंजारुणच्छु वण्णेण सामु ।
तं घेप्पइ खुज्जयवावणेहिं तं[3] संभासिज्जइ परियणेहिं ।
णच्चइ हक्कारिउ सद्दु देइ पट्ठवियउ पुणु रंगंतु जाइ ।
पुच्छिउ पहुणा कहिं पाव जंति धम्मेण जीव किर कहिं वसंति ।
तं दावइ चंचुइ णरयमग्गु उड्डाइ ताइ सग्गापवग्गु ।
तहिं पक्खिणि हुउं रइसेण णाम तुहुं रइवरु पक्खि सणेहकाम ।
अच्छहुं कीलंतइं बे वि जाम सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।

घत्ता—तें[6] वणिणा वणिसिरिमणिणा धणवइयहि सुउ जायउ ॥
सोहग्गें जणमणलग्गें रूवें णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहाउरि; B साहाउरि. ५ MB दिण्णु धाउ. ६ MB गाउ. ७ MB मुउ. ८ MB पयडिय°. ९ MB वउ.

21. १ MB पुत्तत्थि वि. २ MB पुरि सेट्ठि°. ३ MB संभासिज्जइ परियणजणेहिं. ४ MB सिणेह°. ५ MB कीलंत बे वि. ६ M तं. ७ MB °सिरिमणिणा.

21. 2 *b* धयरट्ठगमण हंसगमना.

22

णं णियकुलहरकमलसिरिकंतु णामें सो भणिउ कुबेरकंतु ।
सुमरेप्पिणु धम्माणंदजोउ ते मंतिदेव तहु देंति[1] भोउ ।
वत्थंगु तियसतरु भूसणंगु मइरंगु तुरिय[2] उब्भोयणंगु ।
पवहइ पुंडुच्छुरसप्पवाहु मज्जणइं पवरिसइ वारिवाहु ।
णिच्चं चिय पिच्चइ सालिछेत्तु अवरु वि सुइसुसिर सुहेल्लिमेत्तु ।
सयमेव रणइ वीणा सवेणु घरि चिंतिउ दुब्भइ कामधेणु ।
इय दिव्वभोयभुंजणखणालु णवजोव्वणु पिउणा दिट्ठु बालु ।
पियसेणु तेण सहयरु पउत्तु किं बहुएं किं एक्कु जि कलत्तु ।
इच्छइ मणु तेरउ परममित्तु आहासइ सो णयणलिणणेत्तु ।
एक्कहिं दिणि गय उज्जाणमज्झि दिट्ठउ मुणि[3] दोहिं वि लवलिगुज्झि ।
वेउ[4] लइयउ णामें एक्कपत्ति को पावइ तुह सुय सीलसत्ति ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि छुहपंकियघरि वणि वइ[5]समणसमाणउ ॥
धणवइयहि बंधवु पयहि सायरदत्तु कुलीणउ ॥ २२ ॥

23

तहु केरी णं अमियएण सित्त गेहिणि णामेण कुबेरमित्त ।
तहि परजम्मंतरि[1] बद्धपणय हूई वणलच्छि मरिवि तणय ।
णं सुरयसोक्खमाणिक्कखाणि कलहंस[2]गमण कलयंठिवाणि ।
णीलालिवलयसंकासकेस णं कामभल्लि पच्छण्णवेस ।
णामें पियदत्त पसण्णदिट्ठि गुणणय[3] णं वम्महचावलट्ठि ।
अण्णहिं दिणि कित्तिमकुसुममाल कय ताइ णाइं मयण[4]सत्थसाल ।

22. १ MB देंतु. २ MB तुरीयउ भोयणंगु. ३ MB दोहिं वि मुणि. ४ MB वउ. ५ MBK वइसवण°.

23. १ MB जम्मंतरबद्ध°. २ MB कलहंसिगमण. ३ MB गुणणयणइ. ४ MB मयणत्थमाल; K मयणयत्थसाल and gloss अस्त्र; G in gloss मदनशस्त्रशाला.

---

22. 3 *b* उब्भोयणंगु उत्कृष्टभोजनाङ्गः 6 *a* सवेणु वंशवाद्येन सहिता. 10 *b* लवलिगुज्झि वन्दनलतागृहमध्ये. 12 वइसमण° कुबेरः.

23. 5 *b* गुणणय गुणनता.

गय लेप्पिणु ससुरयघरु वयंसि पियकारिणि गइजियरायहंसि ।
तं पेच्छिवि विंभिउ इब्भतणेउ एउं[6] विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ णियसुण्ह पसंसिय धणवईइ ।

घत्ता—पियवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु संधुक्किउ ॥
मणु लेंतें तेण जलंतें झत्ति कुमारु झुलुक्किउ ॥ २३ ॥

24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु वणिणा पारद्धु विवाहु तासु ।
णंदणवणि पट्टण जणमणोज्ज णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।
भायणइं दुतीस समीरियाइं णिरु चोक्खभक्खपडिऊरियाइं ।
तहिं एक्कु पंचमाणिक्कवंतु जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।
वणिउत्तियाउ संपाइयाउ बत्तीस जि पियदत्ताइयाउ ।
सव्वहं वणिणाहें भूसणाइं दिण्णाइं विलेवणणिवसणाइं ।
गेण्हह पभणिवि परिभावियाइं चरुभरियइं थालइं दावियाइं ।
ता कणयवत्त बहुभोज्जु थइउ एक्केक्कइ एक्केक्कउ जि लइउ ।
सरयणु पियदत्तहि करि विलग्गु को लंघइ किर भवियव्वमग्गु ।
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं गुणवइजसवइणामालियाहिं ।
आलद्धउ णउ तहिं चरुयवत्तु हियवउ संसारहु खणि विरत्तु ।

घत्ता—मृगरोलइ गिरिकुहरालइ वरं पइसिवि तवु किज्जइ ॥
णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हलि कलहिज्जइ ॥ २४ ॥

५ MB °तणुउ. ६ MB एयहुं. ७MB पियदत्तइ ८ MB सधुक्कियउ. ९ MB जेण. १०MBT झुलुक्कियउ.

24. १ B समारियाइं. २ MB परिपूरियाइं. ३ MB संपाइयाउ. ४ B गेहं पभणिवि. ५ K पभावियाइं. ६ MB एक्केक्कउ एक्केक्कहिं. ७ MB पियदत्तहि. ८ MB भवियव्वु मग्गु. ९ MB णं वि. १० MB मिग°. ११ MB वणि. १२ MB तउ.

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया. 11 झलुक्किउ संतापित..

24. 3 *a* समीरियाइं प्रसारितानि. 10 *a* सुहालियाहिं सुखवतीभिः. 11 *a* चरुयवत्तु चरुकपात्रम्.

25

रायहरणियडि जिणवरणिवासि अमियमइअणंतमईहि पासि ।
तवु लइयउ ताहिं सीमंतिणीहिं पत्तहि वि पडहमंगलझुणीहिं ।
वणितणयहु सुयणुच्छाहराहु प्रियदत्तइ सहुं विरइउ विवाहु ।
वयवालु मरेप्पिणु लोयवालु पयपालहु सुउ हूयउ गुणालु ।
देवसिरिदेवि मल्हणगईहि वसुमइ सुय हूई धणवईहि ।
गयजम्मघरिणि सा दिण्ण तासु पुणु लग्गउ दोहि मि पेम्मपासु ।
संताणि थवेप्पिणु सो जि पुत्तु णरणाहें लइयउ मुणिचरित्तु ।
देवीउ कणयमालाइयाउ पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।
जे परियण ते पव्वइय सव्व कोमलमइ थिय घरि घरि सगव्व ।
एक्कु जि बुड्डउ स कुबेरमित्तु सो भावइ तरुणहं णाइं सत्तु ।

घत्ता—चवलमइं भासिउ कुमइं हसइं ण खेलइं लब्भइ ॥
अपसत्थउ भेलावत्थउ माणुसु एम जि खुब्भइ ॥ २५ ॥

26

जो णिव तुह ताएं णिहिउ मंति तहु दंसणेण अम्हहुं ण संति ।
किं विहडियकरण णियंति कज्जु हो थेरहं कम्मु ण किं पि दिज्जु ।
मावउ अम्हहं भिउडंतु दिट्ठि अच्छउ णियमंदिरि ताम सेट्ठि ।
राउ वि कुमारु मंति वि कुमार दीणं वि होंति जोव्वणि वियार ।
सुहिदिट्ठपरंपरु बहु सुयहु वारिउ पहुणा घरु पंतु बुड्ढु ।
अविपिक्कबुद्धि कीलणसहाउ सिसुमंतिहिं सहुं रायाहिराउ ।

25. १ MB रायहरे णियड°. २ MB तउ लइउ तेहिं. ३ MB पियदत्तइ. ४ MB णयवालु. ५ MB सिसु. ६ MB णियघरि. ७ MB चवलमइहिं. ८ MB कुमइहिं. ९ MB खेल्लहुं. १० MBT हेलावत्थउ.

26. १ MB दंसणि अम्हइ णाहिं संति. २ MB भिउडत्त. ३ MBK दीणहु.

25. 4 *a* वयवालु प्रजापालः. 5 *a* मल्हणगईहि मदगमनायाः. 12 भेलावत्थउ अतिवृद्धावस्थः.
26. 4 *b* वियार सविकाराः. 6 *a* अविपिक्क° अप्रवीणा.

अण्णहिं दिणि णंदणवणि पइट्ठु अरुणच्छवि वाविजलोहु दिट्ठु ।
पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण इह लोहिउ जलु किंह कारणेण ।
बुहसिट्ठविसिट्ठगईचुएण पडिजंपिउं विउलमईसुएण ।
वावीयलि अच्छइ मणि णिहित्तु तहु छायइ दीसइ सलिलु रत्तु ।
ता तेहिं मिलेवि असंसएहिं पाणिउं बहि घल्लिउं घडसएहिं ।
चिक्खल्लतलल्लोलणविलोल थिय सयल णाइं कयकील कोल ।
माणिक्कु ण दिट्ठउ तेहिं केम बहुमोहंधहिं जिणवयणु जेम ।
अण्णाणकिलेसें णत्थि सिद्धि गय घरहु परिक्खिय मंतिबुद्धि ।

घत्ता—गरुगावइ सपणयकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥
वसुमइयइ रयणिहि दइयइ चरणें सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥

27

मंडलियमउडरुहरइयराइ अत्थाणि णिसण्णें सुप्पहाइ ।
जो महु सिरु पहणइ णियपएण तहु किं कुसउं णरवइणएण ।
ते तरुणमंति पुच्छिय णिवेण तेहिं वि पउत्तु सफरुसरवेण ।
तुह जेण दिण्णु सिरि चरणघाउ खंडिज्जइ णिव तहु तणउ पाउ ।
तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु संठिउ हेट्ठामुहु रायहंसु ।
महु सिरचूडामणि मयणसरणु खंडिज्जइ किह सुंदरिहि चरणु ।
अविवेउ महंतउ जासु गेहि दुक्करु सिरि णिवसइ तासु देहि ।
संसिद्धसमग्गतिवग्गलिंगु भल्लारउ भुवणि वियड्ढसंगु ।
इय चिंतिवि णियकुलकमलमित्तु कोक्काविउ तेण कुबेरमित्तु ।
आउच्छिउ तं णीरारुणत्तु अंबेरु वि जं सीसि पयग्गु चित्तु ।
तं णिसुणिवि मामें वुत्तु एम पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

४ MB किं. ५ MB वावीजलि. ६ B असेसएहिं. ७ MB चिक्खिल्ल°. ८ MB कयलील. ९ MB गुरु°.
27. १ MB omits this line. २ MB फरुसें मणेण. ३ MB दिण्णु जेण. ४ B गेहि. ५ MB अवरु वि सीसें पयलग्गु चित्तु.

9 *a* बुहेत्यादि— बुधैर्या शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिर्व्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहितः. 10 *a* वावीयलि वापीतले. 11 *a* असंसएहिं संशयरहितैः.

27. 2 *b* णरवइणएण नीतिशास्त्रे. 13 वणु जलम्.

घत्ता—रसगिद्धें घँत्तिउ गिद्धें तीररुक्खि मणि अच्छइ ॥
तहु छायइ पसरियरायइ जणु वणु लोहिउ पेच्छइ ॥ २७ ॥

28

गुरुणारीडिंभयचरणु पहुहि सिरिलग्गइ अण्ण ण सउलविहुहि ।
तुह पुणु जाणवि रोसंकियाइ सिरि घल्लिउ होही पउ पियाइ ।
तं पुज्जिज्जेइ वरणेउरेण ता संथुउ सेट्ठि महीसरेण ।
धणवइइ पइहि कुरुलोलिणालि दिट्ठउ पलियंकुरु कण्णमूलि ।
साहंतु व जिणधम्मोवएसु जँरदासिइ दूसिउ दइयकेसु ।
तं पेच्छिवि भव्वु कुबेरमित्त अवरु वि पव्वइउ समुद्ददत्तु ।
सुरमहिहरु गंपि सुधम्मजइहि हूया सुसीसे सुविसुद्धमइहि ।
जाया मरेवि मेहौरहासि लोयंतियँ सुर बंभंतवासि ।
विउलमइ णाम चारणमुणिंदु पियदत्तइ भुंजाविउ अणिंदु ।
सिसु चिंतिवि पुच्छिउ तवुँ दुगेज्झु कइयहुं होसइ मुणिणाह मज्झु ।
दाहिणपंचंगुलियउ करग्गि वामइ कणिट्ठ दाविवि णहग्गि ।
गउ मुणिवरु कालें पंच पुत्त लहुएं कुबेरदइएण जुत्त ।
जो सव्वदेउ मुउँ सो ज्जि एउ संभूउ पुणु वि पिउ बद्धणेहु ।

घत्ता—कह णिरहहु तोसियभरहहु जयहु सुलोयण भासइ ॥
सोहंती पहइँ फुरंती कुंदपुप्फदंती सइ ॥ २८ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयमहारायसुलोयणाभवसंभरणं णाम एकूणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २९ ॥

॥ संधि ॥ २९ ॥

६ MB घित्तउ.

28. १ B पुज्जइ. २ MB सुसीसु विसुद्ध°. ३ MB हिमहारहासि. ४ MB लोयंतिय ते. ५ MB विमलमइ. ६ MB तउ. ७ MB सुउ. ८ MB पहय.

28. 1 *b* °विहुहि °चन्द्रस्य. 4 *a* कुरुलोलि° कुन्तलश्रेणी. 8 *a* मेहारहासि मेघया अहस्ते. 15 पहइ प्रभया, सइ सती

XXX

अमियमइअणंतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥
जिणवइगुणवइवरजसवइहिं बंधुवग्गु संबोहिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

लोयवालु सा वसुमइ राणी पउरंदरियहि तूयहिं समाणी ।
बारहविहदिक्खाइ समग्गइं बिण्णि वि सावयवइ दिढु लग्गइं ।
खंतिहिं कहियउं धम्मु णिरंतरु अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु ।
णिच्चुच्छवमंगलणिग्घोसहु नाम कुबेरकंतवणिवासहु ।
चरियामग्गे णिग्गयरायउ जंघाचारणजुयलउं आयउं ।
पियदत्तावरइत्तें णावियउ छुडु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।
तौ तहिं पक्खिजुयलु संपत्तउ पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।
दोहिं वि मुणिहिं गुणिहिं जोयंतहं धम्मबुद्धि होउ त्ति भणंतहं ।
रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ महिहि पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।
सलिलें सिंचिउ थियउ सइत्तउ अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।
भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि कहिं रइवेय महारी पणइणि ।
सरइ सेकोंति पुण्णससिकंतें किह जीवमि णिम्मुक्क सुकंतें ।

घत्ता—सोहापुरि वहुवरु पउ चिरु पवहिं दंपइ णहयर ॥
लोलंत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

णाइन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।
सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाद्यैरनिन्द्यैः etc here for which see note on Samdhi XXIX.

1. १ MB तियहिं. २ M सवाणी. ३ MBT °सिक्खाइ. ४ MB कहिउ. ५ MB णेरंतरु. ६ MB पियदत्ता°. ७ MB ता तं पक्खिमिहुणु. ८ MB भणइ. ९ MB सुकंति; T सकुंति.

---

1. 4 *a* बारहविहदिक्खाइ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया. 9 *b* पयरउ पदरजः. 12 *a* सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम्. 13 *a* भरइ स्मरति. 14 सकोंति पक्षिणी. 16 अलाहु अलाभोऽन्तरायः.

2

वसुमइइ णवपंकयणेत्तइ बिण्णि वि पुच्छियाइं प्रियदत्तइ ।
चंचुइ पट्टियम्मि संणिहियइं दोहिं मि गयमवणामइं लिहियइं ।
णहयरियहि सकंतु जाणाविउ रइवेयागमु खयरहु दाविउ ।
मा विहडेवि चरइ म विरप्पइ बिण्णि वि सुहुं भुंजइ कंदप्पइ ।
वयणें तेण ताइं पुणु रत्तइं कणु चुणंति खेलंति पसत्तइं ।
रुप्पयगिरिसमीवि सुरवरगिरि करिदंसणविरुद्धरुंजियहरि ।
ते तहिं जंघाचारण जइवर जायवि थक्क तिणाणदिवायर ।
अमयमईहि अणंतमईहि वि जायवि संजईहिं बिहिं तीहिं वि ।
पुच्छिय ते कुसुमसरणिवारा पारावयसंबंधु भडारा ।

घत्ता—माणवमिहुणुल्लउ तं मरिवि भवसंकडि संदाणिउं ॥
मुणि अक्खइ रक्खइ किं पि ण वि जिह णाणेण वियाणिउं ॥ २ ॥

3

जिह वइसउलि पहूयइं बालइं रइवेयासुकंतणामालइं ।
जिह जायउ विवाहु जिह णट्ठइं जिह सामंतहु सरणु पइट्ठइं ।
जिह खलु मग्गलग्गु णिब्भच्छिउ कण्णकडुयवयणेहिं दुगुंछिउ ।
पालिउ वेउं जिह सज्जणसत्थें जिह भउ लद्धउ सुहसामत्थें ।
जिह घरि रिउणा कयउ पलीवणु जिह वहुवरु पत्तउ पक्खित्तणु ।
इयें जिह जिह साहिउ मुणिणाहें मयणहरिणविद्धंसणवाहें ।
तिह तिह कंतियाहिं आवेप्पिणु लोयवालपुरवरि पइसेप्पिणु ।
सुहसंजोयहु सिढिलियसोयहु साहिउ सयलहु सावयलोयहु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि जणवउ धम्मरुइ हुयउ वियसियवत्तइ ॥
गुणवइजसवइपायंतियइ लइयउ वेउ मृगणेत्तइ ॥ ३ ॥

2 १ MB पियदत्तइ. २ MB पट्टम्मि. ३ MB पडिवत्तइं. ४ MB पमत्तइं. ५ MB °विरुद्धे रुंजिय°.
3. १ MB वउ. २ MB इह. ३ MB विहसिय°. ४ MB वउ मिग°.

---

2. 5 *b* पसत्तइं प्रसक्तौ अन्योन्यरक्तौ.
3. 1 *a* वइसउलि वैश्यकुले. 6 *b* °वाहें व्याघ्रेण, °व्याधेन. 9 वियसियवत्तइ विकसितवदनया.

4

अजिय हूई सम्माइट्ठिणि घरु मेल्लेपिणु धणवइसेट्ठिणि ।
अवर कुबेरसेण रायाणी दिक्ख लेवि थिय सुट्ठु अदीणी ।
किंकरेण केण वि ण पलोइउ तं विहिविहियविहाणें चोइउ ।
गयउ कवोयजुयलु सारामहु कहिं मि भमंतु पुरंतिमगामहु ।
कणु चंचुइ कड्ढइ णयगीवइ जाम चरइ किर वइसामीवइ ।
सरडुंदुरसेढामिसभोयणु णवमहुबिंदु व पिंगललोयणु ।
असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु उट्टिट्ठउ तहिं जायउ मंजरु ।
वइविवराउ झत्ति णीसरियउ तेण कंठि पारावउ लइयउ ।
पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ णियपियपरिहवि णारि वि कुप्पइ ।
चिरभववइरें दसणकरालें कसमसत्ति खगु खद्धु विरालें ।

घत्ता—मुइ वल्लहि दुहविद्दाणियए विहि बलवंतु पउत्तउ ॥
अप्पउ तणु मण्णिवि रिंछियए विसदंसहु मुहि घित्तउ ॥ ४ ॥

5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ णरहु ण किं विरहें मणु फुट्टइ ।
पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।
रययसेलि खगदाहिणसेढिहि उसिरिहि णयरिहि मोक्खणिसेणिहि ।
दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु तेएं णं पच्चक्खु दिणेसरु ।
तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु तणउ हिरण्णवम्मु णं रइवरु ।
तेत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेढिहि गउरीविसयभोयपुररूढिहि ।
चडियउ तहिं राणउ विज्जाहरु मरुरहु माहवियहि देविहि वरु ।
सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि ताहं बिहिं मि हूई णं अक्खिणि ।

4. १ K भवंतु. २ MB परंतिम°. ३ MB णीहरियउ. ४ K धरियउ. ५ K णारी कुप्पइ. ६ M कसमसंतु; B कसमसत्तु. ७ T रिंच्छियए.
5. १ MB उसिरहि. २ MBK सोक्ख°. ३ K चडिउ.

4. 5 *a* णयगीवइ नतग्रीवया; *b* वइ° वृतिः. 10 *b* कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे. 12 रिंछियए पक्षिण्या.
5. 5 *a* रइवरु कामः.

धूय पसिद्ध पहावइ णामें रूवें सलहिज्जिइ सा कामें ।
गयउ कहिं वि णंदणवणकीलइ दिट्ठु कवोयमिहुणु तहिं लीलइ ।
तेण हिरण्णवम्मणामालें परभउ सुमरिवि लिहियउ बालें ।
पडि जं चित्तउ जम्मकहाणउं पंक्खिरूपविरइयसंमाणउं ।

घत्ता—कइ पिउणा पवरसयंवरए ताइ मयच्छिइ लक्खिउ ॥
पारावयजुयलउ णियणियडे संचरंतु सुणिरिक्खिउ ॥ ५ ॥

6

णियभवु बुज्झिवि णिवडिय महियलि सिंचिय पाणिएण सिरि उरयलि ।
रइसेणाचरि मज्झें खामिय सा रइवरविरहें आयामिय ।
कंचुइणा णरवइ विण्णवियउ दुहियहि देहु दुरोएं खवियउ ।
होउ सयंवरेण किं किज्जइ आउ आउ खगवइ जाइज्जइ ।
दइयइ चित्तपट्टु पट्टाविउ सो वि ताइ णियहियवइ भाविउ ।
मंदरि जायवि गइरणु मंडिउ फुल्लदामु जं सइं तेहि छड्डिउ ।
सुरगिरि परियंचिवि उद्धाइय खयरहुं अग्गइ कुंयरि पराइय ।
लइयउ तं जाव सुह ण पावइ पुत्तिहि केरी गइ को पावइ ।
आम जणणु हरिसें कंटइयउ मंतिवयणु अवलोयवि मुइयउ ।
खेयरणियरु जाव छुडु जित्तउ ताव हिरण्णवम्मु तहिं पत्तउ ।

घत्ता—पुणु माल पघल्लिय मंदरहो बिण्णि वि सह धावंतइं ॥
दिट्ठइं फणिकिंणरम्मसिरविहिं तुरिउं पयाहिण देंतइं ॥ ६ ॥

7

रइवरचरु रइरहसें चोइउ घुलइ माल जहिं तहिं संप्राइउ ।
तेण पडिच्छिय महिहि पडंती णहयलि खगकामिणि व णडंती ।
दिट्ठी कुसुमावलि अलिधारिणि णं कामें संधिय सरधोरणि ।

४ MB णं. ५ MB पक्खिणिभवविरइयसंमाणउ; K पक्खिरूवु विरइय°. ६ MB कय.
6. १ MB मंदरु. २ MB जं तहि सइं छंडिउ. ३ MB कुमरि. ४ MB को गइ.
7. १ MB संपाविउ. २ MB खगकामिणि णिवडंती.

6. 3 *b* दुरोएं दुष्टरोगेण.
7. 8 *a* कुसुमावलि पुष्पमाला.

दोहिं वि धरियइं चप्पिवि चिं[3]त्तइ   घोलंतइं विवलंतइं णेत्तइं ।
दोहिं मि दिण्णउं दलियफणिंदहु   दढलज्जंकुसु मयणगइंदहु ।
गँउ वरु तहिं जोयवि मणहारिणि   तावंतरि संठिय पियकारिणि ।
पइउ ताइ तासु दें[5]क्खालिउ   तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।
जोइवि बुज्झिय पक्खिकहाणी   पत्तहि सा खगतरुणि पहाणी ।
ससयण पिउहरु पत्त पहावइ   जो णाइंदहु वण्णहुं णावइ ।
कउ विवाहु बहुतूरणिणायहिं   रवि[6]गइमारुयरहखगरायहिं ।
दोहिं वि कंताकंतहुं पयहुं   पयलियपेवं[7]बंधपासेयहुं ।

घत्ता—परियलइ कालु कुलमंडणहं पसरियदिट्ठिवियारहं ॥
दंसणसंभासणगुणविणयदाणदिण्णसिंगारहं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं वासरि बे वि रमंतइं   पत्तइं गयणुच्छंगि चडंतइं ।
हल्लियघंटाटंकारालउ   सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।
मोहे[2]जालतरुजालहुयासहं   तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसहं ।
मुणि वम्महवम्मोहवियारणु   पुणु वंदिवि सव्वोसहिचारणु ।
पुच्छिउ णिँ[3]यय तेहिं जम्मंतरु   रिसिणा कहियउ गयउ कहंतरु ।
वणिभवि मायापियरइं तुम्हहं   जाइं ताइं एवहं सुहँकम्महं ।
पुणु संजायइं केत्तिउ सीसइ   भवसंसारहु छेउ ण दीसइ ।
जो भवदेवबप्पु चिरु वणिवरु   इह उप्पण्णउ सो हउं णहयरु ।
पुव्वणामु सिरिवम्मु पयासिउ   रिसि सव्वोसहिचारणु भासिउ ।
गयणगमणु तवतावें सिद्धउ   तइयउ णाणु विसेसें लद्धउ ।
पणविवि पयजुयलउ रइसेणहु   मुक्कउ दुक्कियदुक्खविहाणहु ।

३ G चिंधइं. ४ MB गउ वरु जोइवि वहु मणहारिणि. ५ MB दिक्खालिउ. ६ MB रविगय°. ७ MBK °पेम्मबंध°.

8. १ MB चरंतइं. २ MB मोहमहातरुजाल°. ३ MB तेहिं णियय. ४ K सुकम्मह.

---

11 *b* पयलियपेवंबंधपासेयहुं प्रगलितः प्रेमबन्धेन प्रस्वेदः ययोः.

8. 1 *b* गयणुच्छंगि आकाशमध्ये. 10 *b* तइयउ णाणु अवधिज्ञानम्. 11 *a* रइसेणहु रतिषेणस्य भट्टारकस्य.

घत्ता—गुरुवयणकुँठारें तिक्खएण भवतरुवरु मइं छिण्णउ ॥
विंधंतउ पंचहिं मग्गणहिं मयणु दिसाबलि दिण्णउ ॥ ८ ॥

9

सुहमइ वड्डिय रमणिहि रमणहु तं आयण्णिवि गयइं सभवणहु ।
मेहकूडु जोइवि णिव्विण्णउ मारुयरहु पव्वज्ज पवण्णउ ।
पुत्तु मणोरहु रज्जि परिट्ठिउ दिणयरगइ वि जइत्तणि संठिउ ।
थिउ णिब्भउ सत्तंगपयारइ रज्जि हिरण्णवम्मु तहु केरइ ।
णियसुय रइवह तं सुहणिवहहु मणहरसुयहु दिंण्ण चित्तरहहु ।
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं धण्णयमालवणंतरि भमियइं ।
सप्पसरोवरचिंधु णियप्पिणु बिण्णि वि पुव्वजम्मु जाणेप्पिणु ।
आयइं णियपुरवरु हक्कारिउ । रज्जि सुवण्णवम्मु वइसारिउ ।
पइं हूवउ रिसिकुवलयचंदहु चरणमूलि सिरिपालमुणिंदहु ।
सहइ हिरण्णवम्मु चारणमुणि उण्णइं पावइ गुणगरुयउ गुणि ।
गुणवइयाइ पहावइ दिक्खिय करणचरणसत्थत्थइं सिक्खिय ।
सव्वइं भव्वइं कम्मुव्विण्णइं ताइं पुंडरिंकिणि अवइण्णइं ।

घत्ता—रिसि थिउ पुरबाँहिरि पवरवणि अज्जाजुयलविराइउ ॥
जुयमेत्तदिट्ठि वियरंतु तहि पियँदत्तहि घरु आयउ ॥ ९ ॥

10

वणिणिइ विणयपणामें रुद्धउ तं भुंजाविउ भोज्जु सुणिद्धउ ।
पुणु आसणु अणुरूवु थवेप्पिणु ताइ पहावइ भाणिय णवेप्पिणु ।
किं ण विमाणिउं पइं पइजोव्वणु किं तारुण्णइ संसेविउ वणु ।
हियपरिमियसुमहुरभासिणियइ तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।

५ MBK °कुठारें.

9. १ MB दिण्णु. २ MB सच्छु सरो°, T सच्छु and gloss यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्ति पुण्येन रक्षितस्तस्येद नाम. ३ MB सुयरेप्पिगु ४ B गइं. ५ MB कम्मुत्तिण्णइं ६ MB पुरबाहिर. ७ MB पियदत्तहि.

10. १ MB भुजाविवि. २ MB अणुरत्तु.

---

9. 7 K सप्पसरोवरचिंधु यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्तिषेणेन रक्षितो तस्य नामेदम्.

10. 3 a पइजोव्वणु पतियौवनम्.

एत्थु जि सज्जणणयणाणंदिरि अम्हइं माइ तुहारइ मंदिरि ।
अण्णहिं भवि होंताइं कवोयइं किं ण वियाणहि विहियविणोयइं ।
रइसेणाचररइवरणामइं कंठसद्दउक्कोइयकामइं ।
प्राणिदयाहलेण मणुयत्तणु पत्तउ दोहिं मि तें णियमिउं मणु ।
अक्खु कुबेरकंतु वरु तेरउ कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ ।
सेट्ठिणि भणइ णिसुणि संजमधरि पियकह जिणपयपंकयमहुयरि ।

घत्ता—एक्कहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहि केरउ ॥
मइं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउं ॥ १० ॥

11

जिह पइं तिह महु ताइ पयासिउ णियतवकारणु णिहिलु समासिउ ।
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु ।
णंदणवणि चलंतहिंतालइ तालितालतालूरपियारइ ।
वेल्लीहरि पसुत्तु विज्जाहरु पायंगुट्ठइ लग्गउ विसहरु ।
णाहु वि तहिं जि भमंतु पराइउ धाडिवि फणिवइ वणु अवलोइउ ।
कोएं वंझं हंसं ईरिउ गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।
हूयउ गाढु विहिं वि मित्तत्तणु गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु ।
आयउ खेयरु पुणरवि तं वणु अवलोयंतिइ बहुणायरजणु ।
उत्तउं कंतइ एत्थु जि अच्छहुं कोड्डें लोउ रमंतु णियच्छहुं ।
ता रइसेणहु तणियइ णारिइ महु पिययमु जोइउ गंधारिइ ।

घत्ता—हियउल्लउ कामें णिहएण तहि केरउ णिद्दलियउं ॥
वरकुंजरचरणें चप्पियउं दिसिहिं जलु वुच्छलियउं ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°.

11. १ K भवंतु. २ M चप्पिय. ३ MB जलु व उच्छलियउं.

---

11 °वइणिहि व्रतिन्याः.

11. 3 *b* °तालूर° कपित्थम्. 12 जलुवुच्छलियउं जलमिव उच्छलितम्.

12

मणि पवियंभिइ जलयरचिंधइ आउच्छिउ णियवइ पेम्मंधइ[1] ।
कवणु एहु पियंयम[2] किं किं णरु अक्खु[3] जक्खु किं किंणरु विसहरु ।
तेण पउत्तउ मित्तु महारउ वणिउ कुबेरकंतु गुणसारउ ।
एण मंतु गरलंतु विहाविउ फणिणा खद्धउ हउं जीवाविउ ।
बे वि समुब्भियचीणवियाणइं[4] कंकेल्लीतरुतलि आसीणइं ।
किं रक्खमि तिक्खाइं णहग्गइं फुल्लइं चीणमि पिय तुह जोग्गइं ।
गय पिययम मिच्छुत्तरु संधिवि कंटएण करपल्लउ विंधिवि ।
हा हा उरयएण हउं डंकिय णिवडिय मिच्छाविसवेयंकिय ।
कंतें ओसहसयइं णिउत्तइं पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं ।
महिलहि को ण भुवणि वेहाविउ कंतु विओय सोय संपाविउ[5] ।
गउ तेत्तहि तुरियं पंजलियरु जहिं अच्छइ उवइट्ठउ मह्यु वरु ।

घत्ता—तेणुत्तउ आवहि मित्त तुहुं विसु सव्वंगइं तावइ ॥
फणिदट्ठी घरिणि महुं तणिय तुह मंतें भुवु[6] जीवइ ॥ १२ ॥

13

मित्तें[1] मित्तहु णियमणु ढोइउ जायवि मुद्धहि वयणु पलोइउ ।
पइणा गेरुललिंगु[2] णो लक्खिउं खयरें मउलियणयणें[3] अक्खिउं ।
मंदरु जाइवि लहु दिव्वोसहि[4] हउं आणमि तुहुं रक्खइ पियसहि ।
एम कहिवि गउ सुंदरु जावहिं सुंदरि झत्ति बइट्ठी तावहिं ।
भणइ ण खंजमि[5] सविसभुयंगें हउं खद्धी पइं धुत्तभुयंगें ।

12. १ MB पेमंधइ. २ MB किं पिययम. ३ MB अकु सकु किं. ४ MB समुब्भियवीणवियाणइ; G समुब्भियवीणुवियाणइ, but gloss समुद्धृतचीनाम्बरध्वजौ °वितानौ वा. ५ MB संपाविउ. ६ MB भुउ.

13. १ MB देहु. २ MB गरुल°. ३ MB मउलियवयणें. ४ MB सव्वोसहि. ५ MB खजउं.

12. 1 *a* जलयरचिंधइ मकरध्वजे. 2 *b* अक्खु कथय. 5 *a* समुब्भियचीणवियाणइं समुद्धृतचीनाम्बरवितानौ.

जइ मम्मणमंतें तणु अंचहि जइ[6] रइरसजलधारइ सिंचहि।
तो हउं मुच्चमि विरहविसोहें ता पडिजंपिउ पसमियमोहें।
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ अंगु वियाणहि मेरउं तेहउं।
वम्महसरहं कयाइ[7] ण भिज्जमि संढु पुरंधिहिं हउं ण रमिज्जमि।
परकुलउत्ती जणणिसमाणी तुहुं पुणु जाय[8] विहिणि मित्ताणी।

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मंदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥
गंधारणयरु सो अप्पणउं णाहि विहरंतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

14

तहु पुणु संहुं[1] महिलइ वियरंतहु उप्पलखेडहु बहि णाहि जंतहु।
खलिउ विमाणु दिट्ठु मुणि उववणि वंदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि।
पुच्छिउ धम्मु रिसिंदें भासिउ सावयमग्गु[2] विसेसें देसिउ[3]।
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा तहिं परयारु णिवारिउ जइणा।
परयारिउ लोएं णिंदिज्जइ असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ।
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु वड्ढइ कामडाहु पसरइ मणु[7]।
लोयणजुयलु वलइ कयणेहउ परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ।
जइ वि लोउ णियकज्जु पवुक्खइ[4] संकालुहि तं तासु[5] जि दुक्खइ।
मत्थयमुंडणु विल्लणिबंधणु कुखरारोहणु णासाखंडणु।
जारु होइ तिहुयणि अपसंसउ मुउ पुणु दूहउ[6] दुट्ठु णउंसउ।

घत्ता—इय रिसिवयणाइं सुणंतियए गंधारिहि मणु तप्पइ ॥
हा हा मइं दुट्ठइ दुट्ठु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधाराहिं मइ सिंचाहि. ७ MB ण काइं वि. ८ MB माय बहिणि

14. १ MB महिलहि सहुं. २ MB सावयधम्मु. ३ MB दंसिउ. ४ MB पवुक्कइ, T बुक्कइ ब्रवीति. ५ MB तासु खुडुक्कइ. ६ M दूसउ. ७ MB तणु.

---

13. 8 *a* हरिवारुणि° इन्द्रवारुणीफलम्. 10 *b* मित्ताणी मित्रभार्या.

14. 1 *b* बहि बाह्ये. 8 *a* पवुक्खइ पर्यालोचयति. 10 *b* णउंसउ नपुंसकः.

15

मण्णिवि मुणिवरु बे वि पयट्टइं णहयलणिहियपायकंदोट्टइं ।
कंतइ गुरुवयणइं चिंतंतिइ णरयविवरवडण संकंतिइ ।
कंतहु सइं अहिमाणविणासउ कहिउ कुबेरकंतअहिलासउ ।
हउं पाविट्ठ तुहारी दोही मा होज्जउ तियमइ मइं जेही ।
मुइ मुइ जामि देव पाविज्जहि उत्तरु दइएं दिण्णु सभज्जइ ।
मणु जं पइं पररइमलमइलिउ तं आलोयणजलपक्खालिउ ।
एवहिं तुहुं महुं सुद्धी महासइ आउ जाहुं ता वहु पडिभासइ ।
जीवदयाघयधारासित्तें सुहपरिणामसमीरपलित्तें ।

घत्ता—घरमोहबहलधूमुज्झिएण जइ तवजलणें डज्झमि ॥
तो तत्तसुवण्णसलाय जिह हउं भत्तार विसुज्झमि ॥ १५ ॥

16

केम वि चाडुयसयहिं ण थक्की ता णाहेण णियंबिणि मुक्की ।
बेण्णि वि ताइं तेत्थु पावइयइं एउं णयरु विहरंतइं अइयइं ।
थिउ मुणि बाहिरदेसि रवण्णइ घरु आयइ अज्जाइ पसण्णइ ।
जिह जिह सा महु कहिय कहाणी गुज्झरहच्छे चारु विराणी ।
तिह तिह पियपमेण आयण्णिय णिग्गच्छिवि सा तेण पमण्णिय ।
भत्तिइ तहि पणामु विरयंतें थुय गंधारि धीरधी कंतें ।
सव्वहिं जायवि हयसंसारउ वंदिउ सो रइसेणु भडारउ ।
सकुलक्कमु गुणवालहु दिण्णउ लोयवालु पव्वज्ज पवण्णउ ।

15. १ MB णहयालि णिहिय°. २ णरयविवराणिवडण. ३ MB विणासिउ. ४ MB पाविट्ठ धिट्ठ तुह दोही. ५ MB पाविज्जहि. ६ MB सुद्धु. ७ M धारोसित्तें. ८ M तो, B भो.

16. १ MB ताइं तेत्थु वि. २ MB इय जिह जिह महु. ३ M गुज्झहहत्थें, B गुज्झहरत्थें. ४ MBK चिराणी. ५ M आयाणिय. ६ M पमाणिय. ७ MB पमाणु.

15. 5 *a* मुइ मुइ मुअ मुअ.

16. 4 *b* विराणी विरागिणी.

पुत्तचउक्कें सहुं भत्तारें णिप्पिहेण तोडियमयमारें ।
लइय दिक्ख वालियवयभारें मोहिय लहुययरेण कुमारें ।
हउं कुबेरदइयं तेणच्छमि पुत्तहि मुह पहपहसिउं पेच्छमि ।

घत्ता—गुणवालहु कयमंगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो ॥
पुणु दिण्णी ताइ कुबेरसिरि णियकुमारि धरणीसहो ॥ १६ ॥

17

सा कुबेरपूय तणुरुहु पुच्छिवि इंदियसुहसंबंधु दुगुंछिवि ।
पत्तइं पारावयइं णरत्तणु पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु ।
कयलीकंदलकोमलगत्तइ किउ णिक्खवणु तुरिउ पूयदत्तइ ।
मंतहि दंतहि बहुगुणगणिहि चरणमूलि तहि गुणवइगणिणिहि ।
कयजयवयणावंगालोयण पुणु वि कहाणउं कहइ सुलोयण ।
तहिं पुरि थहि मसाणि सो जइवरु थक्कु हिरण्णवम्मु लंबियकरु ।
णरवइ पुरु परियणु संखोहिउ मुणि पडिमाजोएं संबोहिउ ।
सत्तमि दियहि पवण्णि पहावइ मुणिचरियाणुय गिरिणिच्चलमइ ।
थिय णिसिं णयरपओलिसमीवइ जिणु थुवंति णियमणराईवइ ।
एत्तहि जो रिउ वणि पुणु मंजरु सो णरु हूयउ तलवरकिंकरु ।
णिसिहि समागय गयवरगामिणि तासु पासि पुरवणिवइकामिणि ।
सा कुंदलय तेण परिपुच्छिय अज्जु सुइरु सुंदरि कहिं अच्छिय ।

घत्ता—मुणि पडिमाजोएं संठियउ तहु चलणाइं णरिंदें ॥
वंदियइं असेसें पट्टणेण अम्हारएण वणिंदें ॥ १७ ॥

८ MB चालिय°. ९ MB लहुयरेण इह कुमारें. १० M मुहुं महु पहसिउं; B मुहुं पहपहसिउं.

17. १ MB कुबेरपिउ. २ MB पेच्छिवि. ३ MB मणुयत्तणु. ४ MB °धम्मु चारुत्तणु. ५ MB कयलीकोमलकंदलगत्तइ. ६ MB पियदत्तइ. ७ MB पडिबोहिउ. ८ MB णिसियर°. ९ MB थवंति. १० MB एत्तहि वइरिउ. ११ MB वरगय°. १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि; B पासि पुरवणिवरकामिणि. १३ MB असेसइं.

10 *a* वालिय° पालितः. 11 *b* पहपहसिउं प्रभया प्रहसितम्.

17. 5 *a* °अवंग अपाङ्गः 9 *b* °राईवइ पङ्कजे.

18

सावयवग्गें वज्जियविग्घें गुणवइजसवइगणणीसंघें ।
सव्वहिं संथुय जइवरपायइं तं पिउवणु मेल्लेप्पिणु आयइं ।
चिरु मुणिणाहहु केरी गेहिणि बुद्धिविसुद्धसीलजलवाहिणि ।
वयधारिणि अत्थवियइ सूरइ एंति एंति थिय णयरदुवारइ ।
दुम्महवम्महसरसंघारी तणुविसग्गु विरएवि भडारी ।
ताइं बे वि पारावयजुम्मइं सेट्ठिगेहि जाणियजिणधम्मइं ।
वणि लद्धइं खद्धइं मज्जारें जायइं मणुयइं सुहसंचारें ।
बे वि विरत्तइं धरियचरित्तइं तवतत्ताइं एत्थ संपत्तइं ।
ताइं णाहु गउ वंदणहत्तिइ तेण समागय गरुयहि रत्तिहि ।
ता णिसुणियविसदंसपवंचें भवु संभरियउ तलवरभिच्चें ।
ताइं बे वि जाणवि महु अहियइं मइं जि पुव्वजम्मंतरि वहियइं ।

घत्ता—मिच्छुत्तरु वेसहि वज्जरिवि गउ कोवग्गिपलित्तउ ॥
जहिं अच्छइ संजमधारिणिय तहिं पुरि बाहिरि पत्तउ ॥ १८ ॥

19

सा जोइवि पुणु मुणि अवलोइउ सिहि मसाणकट्ठहिं संजोइउ ।
पडियाएण तेण पच्चारिय पाविट्ठेण ते वि धिक्कारिय ।
तुहुं महु पुव्वभवम्मि पलाणी जेण समउ अच्छिय सुहलीणी ।
सो वरइत्तु काइं पइं मुक्कउ अच्छइ तुह रइरमणहु ढुक्कउ ।
आउ तुज्झु मेलणउं समारमि एवहिं हउं विवाहु अवयारमि ।
एम भणेविणु खंधि चडाविय विरयहु णियडि विरय संप्राविय ।
आलिंगह भणेवि रइलुद्धइं बिण्णि वि एक्कीकरिवि णिबद्धइं ।
भीमें भीसणेण खयथत्तिहि घित्तइं चियहि जलंतजलंतहि ।

18. १ MB बुद्ध विसुद्ध°. २ MB जम्मइ. ३ MB मंजारें. ४ MB जायइ मणुएं. ५ MB वंदणगउ हत्तिइ. ६ MB भउ. ७ MB पुरबाहिरि.

19. १ MB अवलोयउ २ MB रइमणहो चुक्कउ. ३ MB विरइ संपाइय. ४ B भीसंतेण.

---

19. 3 *a* पलाणी नष्टा. 6 *b* विरय आर्या. 8 *b* चियहि चितायाम्.

दड्ढइं बिण्णि वि सिमिसिमियंगइं णिग्घिणु णिहणेप्पिणु णीसंगइं ।
रसवसवीसढ गंधालित्तउ आवेप्पिणु णियभवणि पसुत्तउ ।
णिद्दंधेंइयउ जंपइ वेरिउ चंगउ सहुं महिलइ मइं मारिउ ।
तं णिसुणिवि वेसइ उवलक्खिउ रविउग्गमि अइजुयलु णिरिक्खिउ ।
पेयालइ कुंभवहेण पलीविउ राएं पउरयणें सिरु चालिउ ।

घत्ता—मणि चिंतिउ ताइ विलासिणिए दुक्किउ कासु कहिज्जइ ॥
इह जम्मि अहव परजम्मि सइं पावें पाउ गिलिज्जइ ॥ १९ ॥

20

हाहासद्दें मग्गु णरोहें अप्पाणउ णिंदिउ णरणाहें ।
वहकारिहिं लोएहिं गविट्ठउ पायमग्गु पुरि गंपि पइट्ठउ ।
खलु णाउं वि रूउं वि पल्लट्टिवि णट्ठउ भयभावेण विसट्टिवि ।
एक्कमेक्क खय करणें लइयइं बेण्णि वि मरिवि ताइं पव्वइयइं ।
उप्पण्णाइं सग्गि सोहम्मइ मणिकूडइ विमाणि रइरम्मइ ।
सुरु मणिमालि देवि चूडामणि णं मेहहु सोहइ सोदामिणि ।
आउ ताहं मुणि गणणासुद्धइं पल्लइं पंच पमाणणिबद्धइं ।
उसिराणयरिहि कयपयणायहु कहिउ सुवण्णवम्मखयरायहु ।
केण वि पालियसंजमणियरइं मारियाइं बिण्णि वि तुह पियरइं ।

घत्ता—सा देव पुंडरिंकिणि णयरि हुयवहजालहिं डज्झइ ॥
रिसिमारय संगहयारि खलु गुणवालु वि रणि बज्झइ ॥ २० ॥

५ M जलंतजलंतिहिं; B omits जलंतजलंतहिं. ६ M वीसरु. ७ M णिद्दधउ इय जंपइ ८ MB वइरिउ.
९ MB हुयवाहें पउलिउ.

20. १ B गरिट्ठउ. २ MB पुरु. ३ M णाउं रूउ वि; B णाउं वि रूवं. ४ M कारणें; B करणे.
५ MB पव्वइयइ. ६ MB रइरम्मइ. ७ MB गणिणा. ८ M °णामहु

---

18 *a* पेयालइ श्मशाने.

20. 3 *b* विसट्टिवि प्रकम्प्य. 7 *a* आउ आयु.; मुणि जानीहि. 8 *a* °पयणायहु प्रजाया न्यायस्य.

21

तं णिसुणिवि सहुं सेण्णहिं णिग्गउ सो गलगज्जिवि णावइ दिग्गउ ।
साहणु सिद्धकूडु संप्रोइउ तं सुरमिहुणु वि तहिं जि पराइउ ।
देवें देविहि कहिउ कहाणउं तुह तणएण विइण्णु पयाणउं ।
अम्हहं मरणु मुद्धि णिसुणेप्पिणु गुणवालहु उप्परि रूसेप्पिणु ।
पुरवरु इहहुं एहु संचलियउ अम्हहुं दइववसेण जिं मिलियउ ।
एम्व भणेप्पिणु बिण्णि वि जायइं संजमधर संजमवरकायइं ।
आसीणइं वसहिहि पलियंकें वंदियाइं कुलकुमुयमियंकें ।
कंचणवम्में बिण्णि वि भावें उत्तउं मायामुणिवरदेवें ।
किं कुइओ सि पुत्त उवसंतइं अम्हइं अच्छहुं बे वि जियंतइं ।
सावउ विरयजुयलु किं मारइ अज्ज वि मो एहु हियइ वियारइ ।

घत्ता—जेणम्हइं पावइं मारियइं सो सव्वत्थ गवेसिउ ॥
तणुरुह गुणवालणराहिवेण अप्पउ दुक्खें सोसिउ ॥ २१ ॥

22

जइ वि मुयइं तो वि किर ण मुयइं अम्हइं बेण्णि वि भुंजियअमयइं ।
जायइं देवइं दिव्वसरीरइं अणिमामहिमाईहिं गहीरइं ।
वार वार भवमुक्किउ पसंसिउ सुरमिहुणें णियरूउ पदंसिउ ।
कणयवम्मु समभावें लइयउ देवदिण्णभूसणवंचइयउ ।
गउ णियवासहु सो खयरेसरु वच्छदेसि सिवघोसु जिणेसरु ।
तं वंदहुं संपत्तु सुरेसरु अरुहदत्तु णामें चक्केसरु ।
अवरु वि सा अच्छर सो सुरवरु संथुउ संसमेण तित्थंकरु ।
जिणदिव्वज्झुणिरंजियकण्णइं छुडु छुडु सव्वइं जाम णिसण्णइं ।
ता तहिं पच्छइ सयमहरामउ अवइण्णउ सइं मीणइणामउ ।
जिणु चक्केसिं पुच्छिउ पायडु किं घरयम्मविहाणें वावडु ।

21. १ MB णाइं दिसागउ २ MB सपाइउ ३ MB मुद्धि मरणु. ४ M वि. ५ B वसुहहि. ६ MB कंचणवण्णें. ७ M उत्तमु. ८ साविउ.

22 १ MB मुयाइं. २ MB दिव्व°. ३ GKT *p* संभवेण इति पाठे आदरेण. ४ M दिण्णदिव्व°. ५ MB तो.

---

21. 9 *a* कुइओ कुपितः. 12 तणुरुह हे पुत्र.

22. 7 *b* संसमेण समीचीनोपशमेन. 10 *b* वावडु व्यापृतत्वम्.

समउ पुरंदरेण किं णायउ[6] देविजुंयलु[7] दरिसियमुहरायउ ।
केवलणाणपईवें दिट्ठउ चक्कीसहु जिणणाहें सिट्ठउ ।

घत्ता—बिहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वंदिउ मुणि हयकम्मउ ॥
कर मउलिकरिवि आयण्णियउ भावें सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

23

लइउं[1] घरे[2] घरविहि परिवट्टइ जाहुं[3] जिणिंदभवणु ण पयट्टइ ।
उत्तमंगु भत्तिइ णावेप्पिणु देव णमोरहंत पभणेप्पिणु ।
बे वि थिवंति चंदरविणयणइं पढमं चिय कुसुमंजलिगयणइं ।
एण णिओएं गलियइ कालइ एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ ।
एक्कहि पाणिपोमि फणि लग्गउ हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ ।
सहि णियसहियहि पासु पधाइय सा वि भुयंगमेण आसाइय ।
विसमविसाणलेण जलजलियइं बिहिं वि सरीरइं महियलि घुलियइं ।
दोहिं वि देवच्चेयणइं सरंतिहिं[5] दिट्ठउ इंदागमणु मरंतिहिं ।
भोयाकंखइ[6] करिवि णियाणउं लद्धउं सुरवइदेवीठाणउं ।
धरणिणाह छुडु छुडु उप्पण्णउ तेण समागयाउ सुरकण्णउ ।
एयउ बिण्णि वि णियवइपच्छइ एयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।
अज्ज वि णिवडिउ तणुजुयलुल्लउं लोएं जोइउ गयजीउल्लउं ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहचरणणवियंगहो ॥
कंतीइ पयावें दुज्जयहो पुप्फयंत[7]गुणतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जिणधित्तपुप्फंजलिफलं णाम
तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

६ M विण्णायउ. ७ MB णारिजुयलु.

23. १ MB लइयउ. २ B वर घर°. ३ MB जाहं. ४ MB गर° ५ MK सहंतिहिं; T सरंतिहिं. ६ MB भोयाकंख करेवि. ७ M गुणचंगहो.

23. 1 *a* घरविहि पुष्पत्रोटनग्रथनविक्रयादिगृहव्यापारः. 8 *a* सरंतिहिं स्मरन्तीभिः. 11 *a* णियवइपच्छइ निजपतिपश्चात्; *b* कच्छइ अरण्ये. 13 पुप्फयंतगुणतुंगहो पुष्पदन्तौ चन्द्रादित्यौ तयोर्गुणौ कान्तिः प्रतापश्च तौ तुङ्गौ महान्तौ यस्य.

XXXI

जिणवयणइं आयण्णिवि   णियहियउल्लइ माणिवि ॥
मालइमालामालिउ   सहुं कंतइ मणिमालिउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

गउ सिरिमाणणु   ण[1]वकमलाणणु ।
णहि विहरंतउ   का[2]णणु पत्तउ ।
उण्णयतालउ   घणणयमालउ ।
णाउं पसिद्धउ   महिरुहरिद्धउ ।
हंसहिं धवलिउ   चक्कहिं मुहलिउ ।
चलजलहल्लिउं   कमलहिं फुल्लिउं ।
गयमयम्मामलु   के[3]सरपिंगलु ।
पत्तहिं णीलिउ   भमरहिं कालिउ ।
दिट्ठउ मणहरु   स[4]च्छसरोवरु ।
मणि विप्फुरियउ   भ[5]वं संभरियउ ।
क[6]यसिरिसेवें   भासिउं देवें ।

घत्ता—आसि जम्मि संचियधणु   हउं सुकंतु वणिणंदणु ॥
तुहुं र[7]इवेगपियारी   होंती घरिणि महारी ॥ १ ॥

2

दीसइ पुरि एह मुणालवइ   जहिं हुई बिहिं वि विवाहरइ ।
ण[1] धरियइं कह व चीरंचलइ   उट्टिउ लग्गउ पच्छलइ ।
इह प्रा[2]णहरणभयविहडियइं   धावंतइं बिण्णि वि णिवडियइं ।

1. १ B ण कमला°. २ MB काणणि. ३ M केसरि ४ MB सच्छ° ५ MB भउ. ६ B कयसिरिसेवें. ७ MBK रइवेयपियारी.
2. १ MB णउ धरिय. २ MB पाण°.

1. 3 *a* सिरिमाणणु लक्ष्मीभोक्ता.

इह तुह पयलोहिउं पयलियउं इह महु उप्परियणु वियलियउं ।
इह कंटइ लग्गउ कंचुयउ इह दोहं मि देहकंपु हुयउ ।
एहु सो सरवरु खगभूसियउ जसु जलेण देहु आसासियउ ।
एत्थेत्थु जाम सो धरइ खलु तावेत्थु जि दिट्ठउ पवँलु बलु ।
सो सत्तिसेणु राणउ सुयणु संभरहि ण किं तुहुं हलि सुयणु ।
पुव्विल्लउ जम्मु णिहालियउ ता देविइ सिरु संचालियउ ।
इय वयँणु वियारिउ जाम जैँहिं रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं ।
अमरें विहुणेप्पिणु सिरकमैँलु पुणु जंपिउ वण्णपंतिसरलु ।

घत्ता—बेण्णि वि रमणरसड्ढइं जेण णिहेलणि दड्ढइं ॥
पारावयभैँवु पत्तइं खद्धइं णिग्गयरत्तइं ॥ २ ॥

3

पुणु उप्पण्णइं विज्जाहरइं हुणियाइं मसाणइ मुणिवरइं ।
भवदेवँ बिडालउ तलवरउ जो होंतउ चिरु दुक्कियणिरउ ।
सो एवहिं जायउ एहु जइ इज्झहुं संसारु विचित्तगइ ।
परिभावहुं एयहु तणिय मइ किं रूसइ किं अम्हहं खमइ ।
इय जंपिवि हयवम्महसरहु आसण्णु णिसण्णउ जइवरहु ।
कय वंदण पुच्छिय धम्मविहि रिसि भासइ सुय सुयणाणणिहि ।
लत्थेँ सहुं लेसासंख मुणि ए एंति पपुच्छहि तच्च गुंणि ।
हउं किं पि ण याँणउं णवसँवणु किं देवहु करमि धम्मसवणु ।
कयँगाहहु तियसहु णउ रहिउ पुणु तेण तासु तिजगु वि कहिउ ।
जिह जीवाजीवपुण्णगइउ जिह वड्डियाउ पावयमइउ ।
जिह आसवसंवरणिज्जरइं जिह बंधमोक्खभावंतरइं ।

३ MB पवर. ४ वण्णु. ५ M तहिं. ६ M °कवंलु. ७ MB °भउ.

3. १ MB भवदेउ. २ MB मुणि. ३ K याणमि. ४ B समणु. ५ MB किय°.

2. 8 *a* सुयणु सुजनः; *b* सुयणु हे सुतनु.

3. 7 *a* लेसासंख षट्.

तिह मुणिणा सयलु पयासियउ तं णिसुणिवि तियसें भासियउ ।
पइं लइउ सिसुत्तणि तवचरणु भणु वइरायहु कारणु कवणु ।

घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायइ मउगंभीरइ वायइ ॥
केवलिकहियउ वइयरु देवहु अक्खइ मुणिवरु ॥ ३ ॥

4

घरसिहरारूढरामियखयरि अत्थीह पुंडरिंकिणि णयरि ।
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ णामेण भीमु णंदणु जणिउ ।
उव्विण्णउ णिलयहु णिद्धणहु हउं कीलइ गउ णंदणवणहु ।
जइ वंदिवि सावयवउ गहिउं घरु आयहु बप्पें णउ सहिउं ।
परवहियम्मेणुण्णिद्दियहो वउ किं सुंदरु दालिद्दियहो ।
जं दिण्णउं अप्पहिं तासु सुय आवेहि जाहुं लहु दीहभुय ।
ताएण सहत्थें पेल्लियउ मुणिवासहु हउं पुणु चल्लियउ ।
परमारउ परथीदव्वहरु परमम्मविहट्टणु अलियसरु ।
लुद्धु वि पहि बद्धु णियच्छियउ जणणें एक्केक्कउ पुच्छियउ ।
तेहिं वि अक्खिउं णियणियचरिउं हिंसालियवयणहिं परियरिउं ।

घत्ता—जेण जीवकुलु हिंसिउ जेण असच्चउ भासिउ ॥
जेण परव्वसु हित्तउ जसु मणु परवहुरत्तउ ॥ ४ ॥

5

जो लोहकम्माएं भावियउ सो कवणु ण विहुरें ताविियउ ।
मइं भणिउं तायें पयइं वयइं मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं ।

१ MB तवचरणु.

4. १ MB °वउ लयउ. २ MB °णुण्णिदयहो, G णुण्णिदियहो and gloss निद्रारहितस्य, K णुण्णिदियहो but corrects to °णुण्णिद्दियहो; T उण्णिद्दियहो. ३ MB वउ. ४ MB पुणु हउं ५ MB read in place af this line. पाणहरु आलियभासिरउ थेणु, परमहिलारउ मणमइलरेणु; T मणमइलरेणु मनसि मलं पापं रेणुश्च ज्ञानदर्शनावरणलक्षणं रजः. ६ MBK परस्सु विहित्तउ and gloss in MK on विहित्तउ विशेषेण हृतम्; T परस्सु वि परद्रव्यमपि.

5. १ M reads this line as मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं, मइ भणिउ ताइ एयइं वयइ. २ MK ताइ. ३ MB वयइं.

---

4. 5 *a* परवहियम्मेण भारवाहकर्मणा; उण्णिद्दियहो निद्रारहितस्य.

एएं वयविवरंमुह वद्ध जिह　　　हउं रोएं बज्झमि जणण तिह ।
तं णिसुणिवि पिउणा इच्छियउ　　　महं देसचरित्तु पडिच्छियउ ।
गय बिण्णि वि णयरुज्जाणवरु　　　पणविउ मुणि भुवणाणंदयरु ।
तहु वयणें वणिवरु उवसमिउ　　　घरधम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।
दोगच्चें किं वर करमि तवु　　　किं णासमि लद्धउ मणुयभवु ।
महं एम णएण समुल्लविउ　　　पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लविउ ।
तसथावरजीवहुं कयदयइं　　　उद्धरियइं पंचमहव्वयइं ।

घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु　　　पायमूलि जिणदेवहु ॥
दूसहदुक्खणिरंतरु　　　णिसुणिउं णियजम्मंतरु ॥ ५ ॥

६

महु तिहुयणणाहें ईरियउ　　　पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।
णिसि चिरु भवदेवें विप्पिएण　　　होंतेण कालकंदलपिएण ।
पुणु तं[3] चि वि जुयलउं लक्खियउं　　　मज्जारें होइवि भक्खियउं ।
जइयहुं ताइं जि तवतत्ताइं　　　पइं धरिवि हुयासणि हित्ताइं ।
तइयहुं होंता सि तलारु तुहुं　　　ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं ।
गुणवालें तुहुं अण्णेसियउ　　　कह कह व ण जमउरि पेसियउ ।
जाइवि अण्णेत्थ वासु रइउ　　　सो णरवइ हुंउ जं पावइउ ।
पइं पुणरवि णयरि पवेसु कउ　　　अंजणगुणेण दिक्खारु हउं ।
लोयहु केरउ धणु चोरियउ　　　पउरें रायहु पुक्कारियउ ।
तें आरक्खियउलु गरहियउ　　　तेण वि पडियंजणु साहियउ ।
तुहुं विज्जुचोरु दिट्ठउ धरिउ　　　पइं वित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

४ MB ए. ५ MB पावें. ६ MB दोगत्तें किंकर. ७ T एण णएण. ८ MB दूसहु.

6. MBKT रिसि and gloss in T रिसि हे भीममुने. २ M °कंदालि°. ३ MBT तं चिय जुवलुल्लउं खियउं. ४ K हुयासें णिहित्ताइं. ५ MB अण्णत्थ. ६ MB हूयउ पव्वइउ. ७ MB कयउ. ८ MB हुउ; T हउ

5. 7 *a* दोगच्चें दरिद्रेण.

6. 2 *b* °कंदल° कलहः. 3 *a* तं चि वि जुयलउ तदेव पक्षियुगलम्. 8 *b* दिक्खारु हउं हरिक्कारो हृतः, अदृश्यो जातः.

घत्ता—कयरमणीयणकीलणि कंचणयारणिहेलणि ॥
पइं णिहियाइं जियक्कइं हरिवि सत्त माणिक्कइं ॥ ६ ॥

7

तं मंदिरु दाविउ णिवणरहुं करवालकौंतकंपणकरहुं ।
सोण्णारु वि मइं हक्कारियउ मग्गिउ ण देइ विहिवारियउ ।
पहुणा सो पुंछिउ भोयणउं तं घरणिहि भासिवि लंछणउं ।
आणाविय मणि गेहे णिहिय वणिमालइ ओलक्खिवि गहिय ।
जिम्व खाहि छाणु जिम देहु धणु जिम्व विसहहि मल्लु मुट्ठिहणणु ।
इय विमइहि दंडु वियारियउ मल्लें घायहिं ओसारियउ ।
गोमउ वि ण भक्खहुं सक्कियउ वसु ढोयइ चित्ति चवक्कियउ ।
पडिवाडिइ सो तिण्णि वि करिवि दुम्मइ दुग्गइ पत्तउ मरिवि ।
तुहुं पुणु चंडालहु ढोइयउ मेउ लइयउ तेण ण घाइयउ ।
कुद्धउ दोहिं मि पहु घणतिमिरि दोण्णि वि बंधिवि[10] घत्तिय विवरि ।
पइं[11] भणिउं पाण प्राणहं हरणु हउं संपाविउ[12] किं णउ मरणु ।

घत्ता—ता चंडालें भासिउं[13] णिसुणहि कम्मु दुविलसिउं[14] ॥
जं संसारइ पत्तउं मइं णियदेहें भुत्तउं ॥ ७ ॥

8

इह होंतउ गुणवालउ णिवइ राणी कुबेरसिरि सच्चवइ ।
पुहई वसु णामें धीरमण सच्चावियहि भायर बिण्णि जण ।
गरुयत्तें सरिस मेरुगिरिहि एक्कु जि बंधउ कुबेरसिरिहि ।
अच्छंतहं ताहं तेत्थु सघरि णिवकग्गिवरिंदु कीलंतु सरि ।

7. १ M °णराहं; B णरहं. २ M °कराहं; B करहं. ३ M सोणारु; B सुण्णारु. ४ MBK पुच्छिउ. ५ MBK माणि मणिगणि णिहिय. ६ M मल्लि. ७ MB भक्खहिं. ८ MB चवंकियउ. ९ MB वउ; K वउ but व्रउ in second hand. १० MB घल्लिय बंधिवि. ११ M मइं पभणिउं पाणु पाणहरणु; B मइं पइणिउं पाणु पाणहरणु. १२ MB संपाइउ. १३ MB भासियउं. १४ MB दुविलसियउं.

8. १ MB गुरुयत्तें.

12 *b* कंचणयार° सुवर्णकारः.

7. 3 *b* लंछणउं अभिज्ञानम्. 11 *a* पाण चाण्डालः.

8. 2 *a* पुहई पृथुधीः.

वणि समवसरणि जिणदेवझुणि आयण्णवि जायउ झत्ति गुणि ।
अवलंबिउ हिंसविरत्तियउ जिउँ जोयवि मणियउं दिण्णु पउ ।
अविसुद्धउ गासु ण अहिलसइ गयवालउ महिवालहु दिसइ ।
करि कवलु ण गिण्हइ प्राणपिउ ता राएं पहिउ कुबेरपिउ ।
तें पलपिंडउ दरिसावियउ तं ण णियइ करि वरभावियउ ।
पुणु अण्णु वि सुद्धु पयच्छियउ तो हत्थिंदेण पडिच्छियउ ।

घत्ता—वारणु दुण्णयवारउ हुयउ अणुव्वयधारउ ॥
इय मइवंतु वियाणिउ वणि राणहु संमाणिउ ॥ ८ ॥

9

अण्णहिं दिणि णरणाहहु तणउ णडु णट्टमालि णवतोरणउ ।
घरु आयउ णच्चाविय दुहिय रसविब्भमहावभावसहिय ।
पुच्छिय राएं विरइयतिलय णामेणुप्पलमाला विलय ।
मयणाहिविसेणुब्भंतियए वणिवइसरूउ चिंतंतियए ।
मुच्छइ णीराउ पजंपियउ राएं णियहियइ वियप्पियउ ।
णियघरु जाएवि वणीसरहु वम्माइ णिउंजिय दूइ तहु ।
सा सुहएं पडिवयणेण हय वेणग्गंगणरयहु णिवित्ति कय ।
संबोहिय सहियइ हंसगइ दुल्लहलंभेसु म करहि रइ ।
दुम्महवम्महमग्गणवहिय ता जंपइ पवरविलासिणिय ।
सहि वट्टइ चित्तु दुसंथवउ संभूयउ वल्लहु णवणवउ ।
हलि पंचमु सरेसु समालवहि जइ सूहवु कह व ण मेलवहि ।
तो मरउं णिरुत्तउं कहिउ मइं असमक्खि रुवेवउं माइ पइं ।

२ MB हिंसविरत्ति जिउ. ३ MB जोयवि सणियउं पहि दिण्णु पउ. ४ MB पाणपिउ. ५ MB करिवरु भावियउ. ६ MBK सुद्धु. ७ MB अइमइ°.

9. १ MB add before this the following lines: पुणु णिवए तूसिवि दिण्णु वरु, गेहिं पउत्तु आणदयरु; अच्छउ (M अचउ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गेसमि देसि पहु. २ MB पणियगण°. ३ MB मग्गणवणिया; K °वणिय°. ४ MB °विलासिणिया. ५ MB सरु सुमणा° ६ MB सूहउ णउ महु मेलवहि. ७ MB मरमि.

---

8 *b* पहिउ प्रेक्षितः.

9. 4 *a* मयणाहि° कामसर्पः. 5 *b* राएं रागेण. 12 *b* असमक्खि परोक्षे.

घत्ता—सहि पभणइ अट्ठमदिणि थक्कइ जिणभवणंगणि ॥
हियवइ अरुहु धरेप्पिणु काँयविसग्गु करेप्पिणु ॥ ९ ॥

10

तइयहुं तुह संचियझाणस्सु उच्चाइवि आणमि सो अवसु ।
इय तेहिं बिहिं वि आलोइयउ ताँ अट्ठमिणक्खु पराइयउ ।
थिउ ओलंबियकरु धीरु जहिं आलिहइ जावेप्पिणु तुरिउ तहिं ।
उच्चाइवि आणिवि बालियहे पिउ अप्पिउं उप्पलमालियहे ।
मुद्धाइ सुरयविहिं सयलु कउ वरु थक्कउ णावइ कट्ठमउ ।
हे णीरसत्तु दुव्वोल्लियउ जहिं अच्छिउ तहिं पुणु घल्लियउ ।
तं गयण वि आयण्णियउं वणिवरहु थिरत्तणु मण्णियउं ।
उवहसिय वेस णर परिहरिवि घरि थक्की बंभचेरु धरिवि ।

घत्ता—लुयासुत्तें वज्झइ मत्तउ ण हत्थि णिरुज्झइ ॥
वेसहि जडयणु णिवडइ विउसहु तहिं मणु विहडइ ॥ १० ॥

11

तलवरसुउ अवरु वि मंतिसुउ भोयालउ णिवभोइणिहि सुउ ।
तहिं मत्तमहेभगयगामिणिहे एए घरु आया कामिणिहे ।
एक्कहु जि एक्कु दक्खालियउ भयभावें मणु संचालियउ ।
परिवाडिइ दिण्णवयणणियल मंजूसहि पइसारिय सयल ।
पिहिइ वि तहिं विहिणा आणियउ रउमग्गिरु तरुणिइ भाणियउ ।
जो दिण्णउ सुकियसासु रसहि महु तणउ हारु पइं णियससहि ।
सो आणेप्पिणु महु देमि जइ तो देमि हउं मि तुह रमणरइ ।
मंजूस सक्खिकय गउ घरहु बीयइ दिणि उग्गमि दिणयरहु ।

८ MB काउविसग्गु.

10. १ MB तहु संचिय. २ MB तावट्ठमि°. ३ MB थिय. ४ MB वीरु. ५ M आवेप्पिणु. ६ MB अप्पउ. ७ MB हो णीरसु त्ति. ८ MB याणियउ. ९ M विरुज्झइ.

11. १ MB णिवभोयणिहे. २ MB °महागय°. ३ MB पिहिविवि. ४ MB रउ मग्गिरु तरुणिय. ५ MB देहि. ६ K देवि.

10. 2 *b* °णक्खु रात्रिः. 3 *b* आलिहइ सख्या. 9 लूया° कोलिक°.

11. 1 *b* णिवभोइणिहे सुउ दासीपुत्रः 5 *a* पिहिइ पृथुधीनाम्ना सत्यवतीभ्रात्रा.

जिह हारु नेण उच्छवि गहिउ जिह लोहिट्ठें पुणरवि रहिउ ।
सुग्याकंखइ पडिवण्णु जिह गयहु विसंतु पउत्तु तिह ।
माणिणिइ मंति ओहामियउ णिज्जीवमक्खि आणावियउ ।

घत्ता—गहियंगारयहत्थहिं दासिहिं भणिउं समत्थहिं ॥
फुडु मंजूसि समासहि मा हुयवहमुहि पइसहि ॥ ११ ॥

12

तामायसवलयविहूसियए सहसा घोसिउ मंजूसियए ।
पडिवण्णु हारु गयदियहि पइं तुहुं कट्टु कट्टु किं भणहि मइं ।
दे देहि विहूसणु सुंदरिहे मा पडहि मंति णारयदरिहे ।
उप्पण्णु कोउ णियसिरु धुणिउं कहिं नरु चवंति पहुणा भणिउं ।
परधणहरगारउ साडियउ मंजूसहि मुहुं उग्घाडियउ ।
ते तिण्णि वि तहिं णिग्गय कुविड णारिहि के के णउ मलिय जड ।
णरणाहें पुच्छिय सच्चवइ सा भणइ भडारी सुद्धमइ ।
णिहिविहि अलद्धकंचणधवहु मइं हारु समप्पिउ बंधवहु ।
घत्ता—खलु दुव्वयणिहिं दोच्छिवि ता समंति णिब्भच्छिवि ॥
महिवइणा आणाविउ तहि भूसण देवाविउ ॥ १२ ॥

13

आणंदु पवड्ढिउ माणिणिहे मणि रोसु रायचूडामणिहे ।
तें दंडणु अणु पवियप्पियउ असहंतें एम पयंपियउ ।
भोइणि तलवर मंतिहि तणय तिण्णि वि धाडह दूसियविणय ।
सिरकमलु लुणह पुहइहि तणउं ता वणिवरु चवइ सुहावणउं ।
जइयहुं परिणामु विहावियउ जइयहुं कुंजरु भुंजावियउ ।
तइयहुं जो पइं सइं दिण्णु तरु सो अज्जु देहि णिव मंतियरु ।

७ MB पडिदिण्णु. ८ M मणि णियए, B माणिणियए; ९ MB मंजूस. १० M पयसहि.

12. १ MB ता आयस°. २ MBK गइ दिवहि. ३ MB महिवइ. ५ MBK भूसणु.

13. १ MB ते दंडणाणु परियप्पियउ; (B पवि°) २ MB पइं जो महु दिण्णु. ३ MBT पट्ठवहि.

ए परदेसहु मा पिंडवहि एहु वि मा खग्गें खंडवहि ।
ता तहिं धरणीसें किउं करुणु वारिउ विदेसवियरणु मरणु ।
वणिवयणु णरिंदें जं कियउ तं पिहिविचित्तु रोसंकियउ ।
उवयारु खलहु दोसें सरिसु फणिदिण्णउं दुद्धु वि होइ विसु ।
संचिंतइ सो मारमि मरमि मेट्ठिहि णिग्गहु अवसें करमि ।

घत्ता—पुणु गएण णइतीरए तेण तुसारसमीरए ॥
विज्जाहरकरचियलिय अंगुत्थलिय णिहालिय ॥ १३ ॥

14

अंगुलियइ कय मुहदाइणिय ता खयरु पलोयइ मेइणिय ।
किं जोयहि मंतें पुच्छियउ तेणुत्तउं इह हउं अच्छियउ ।
महु कामरूवधरि मुद्दडिय एत्थेत्थु मित्त कत्थइ पडिय ।
णं पियथम णाहाम्भिक्खविय तं तहु सा विहम्मिवि दक्खविय ।
पुणु मग्गियं खयरें दिण्ण तहो संतुट्ठउ गउ णियमंदिरहो ।
लहुयउ भायरु वसु सिक्खविउ मुद्दइ कुबेरपिउ सो जि किउ ।
एक्कासणि चडियउ राणियहे सच्चवइहि धम्मवियाणियहे ।
सो पेक्खइ णिययसहोयरउ जणु पेक्खइ वणि अयज्ञणिरउ ।
पिसुणें पुहवीसहु विण्णविउं परमेसर तुह कलत्तु रमिउं ।

घत्ता—णवजोव्वणमयमत्तें धुउ धणवइयहि पुत्तें ॥
मा पउं चरु संजोयहि जाइवि अप्पणु जोयहि ॥ १४ ॥

४ MB °वियरणु. ५ MB चिंतइ सो मारमि पुणु मरमि. ६ MB ठाइवि.

14. १ MB कंपियमउणा हासें खविय. २ B मग्गिवि. ३ M सो ४ MB वणि णिवभजरउ. ५ K धणजोव्वण°. ६ M पियदत्ताहे. ७ M वर णर

---

13. 7 *a* पिंडवहि प्रेषय. 13 अगुत्थलिय मुद्रिका.

14. 4 *a* णाहामिक्खविय भर्त्रा अशिक्षिता. 8 *b* अयज्ञणिरउ अकार्यनिरतः. 11 पइक्क अन्यं भृत्यम्.

15

मायावइसंसत्तविलंबियउ मुउइ डिंभउ सिरि चुंबियउ।
दुप्पिच्छमच्छरुक्कोयणहिं दिट्ठउ राएं सइं लोयणहिं।
ण वियाणिउ कवडरूवरयणु किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु।
थरु जाइवि रायहु पेसणिण जमदूएण व जमसासणिण।
पिहिं वीं चारित्तमहिड्डियउ पडिमाइ परिट्ठिउ कड्ढियउ।
वणिवइं मारहुं णवावियउ उप्फाले जणु मेलावियउ।
जूरइ सव्ववइ कुबेरसिरि हा किं चलु हयउ मेरुगिरि।
उण्हउ ससहरु रवि सीयलउ हा किं जायउ धम्महु पलउ।
अहवा लइ एउ होइ जइ वि तहु भव्वहु सीलु सुद्धु तइ वि।
तहिं अवसरि सो चंडालयहु अप्पिउ तालियकरवालयहु।

घत्ता—पाणें असि विमुक्की वणिगलकंदलि ढुक्की॥
सग्गलच्छि जमदूई सियहारावलि हूई॥ १५॥

16

साहु त्ति भणिवि पणवियपयए पउमासणु किउ पुरदेवयए।
सोवण्णभूमि मणिमंडविय तह पाडिहेरसिरि णिम्मविय।
णिक्करुणु साहु जो णिम्महइ भूपहिं णिबद्धउ सो पुहइ।
अवरेक्कहिं मच्छरणिब्भरहिं णिंदिवि सिरि चूरिउ टक्करहिं।
अण्णेक्कइं वेउब्भाइयइं जहिं णरवइ तहिं संपाइयइं।

15. १ MB वइमत्त. २ MB °क्कोवणहिं. ३ MB पिहिविवि चरित्त°. K पिहिवें चारित्त°. ४ MB add after this the following lines:—

पुण हट्टहु मज्झें चालियउ सव्वेहिं जणेहि णिहालियउ।
णि निउ पेक्खिवि जणु रुवइ कु वि थामि थामि थाहउ मुयइ।
कु वि गवइ राउ कु वि पुहइअउ सुदरु सुसीलु दुट्ठु पावियउ।
जो दुरणहि तुरएहि जत चिरु जाणहिं जपाणहिं गुणपवरु।
उइहणु जेम वड्ढिउ जणेण रोवेंं सयलें परियणेण।
सो एवहिं चरणहिं चरइ किह दुक्कम्महिं पायउ पुरिसु जिह।

16. १ M णिक्करणु. २ MB सिरु. ३ MB अण्णेक्क. ४ MB संपाइयइं.

15. 1 *a* मायावइसत्त मायावणिक्त्वम. 3 *a* °रयणु रचनम्. 4 *b* जमसासणेण यमाज्ञया. 6 *b* उप्फाले पटहध्वनिना.

हा दुट्ठु दुट्ठु मइं मंतियउ हा दुट्ठु दुट्ठु मइं चिंतियउ ।
हा दुट्ठु दुट्ठु मइं भासियउ हा दुट्ठु दुट्ठु मइं ववसियउ ।
खंतव्वु करहु णीसल्लु मुहुं एवहिं ण वइरु केणावि सहुं ।
जिह तुम्हहुं तिह तिजगहु जि खमिउं हउं एवहिं भणमि संजमिउ ।
घत्ता—ता वृरुज्झियमच्छरु अमरु सचामरु सच्छरु ॥
गउ गुरु वंदिवि सग्गहु ण ढलिउ जिणवरमग्गहु ॥ १९ ॥

20

सो भीमसाहु विहरेवि महि वसुपालणयरि उज्जाणवहि ।
आवेवि सिवंकरि संठियउ तहु मोहु असेसु वि णिट्ठियउ ।
उप्पण्णउं केवलणाणु खणे कंपावियसुरवरसुरभवणे ।
तहु एक्कु छत्तु दो चामरइं णवियइं चउविहइं वरामरइं ।
पोमासणु मणिमंडवु विउलु हेमुज्जलु छज्जइ धरणियलु ।
पंडुवज्झियाउ चउजक्खिणिउ आयउ अण्णाउ वियक्खणिउ ।
तहिं अवसरि पवणुद्धयउ देवीउ अट्ठ समागयउ ।
विणु पइणा ताहिं णियच्छियउ को पइ होही जइ पुच्छियउ ।
जइणा पउत्तु मइमोहणिया इह पुरि सुरदेवहु गेहिणिया ।
वसुसेण वसुंधरि धारिणिय अण्णक्क पुहइ सुहकारिणिय ।
सिरिमइ असोय संती विमल कोत्थ्री वरदासि तासु विमल ।
एयहिं अट्ठहिं वि सुणिसियइं वणि मुणिहि पासि गहियइं वयइं ।
कणउ मरिवि सुहसइयउ अच्चुयवइ देविउ हुइयउ ।
घत्ता—रइसेणा सुरकामिणि अवर सुसेण सुहाविणि ॥
सुहवइ कोमलहत्थी चित्तसेण सुपसत्थी ॥ २० ॥

३ MB करहि ४ MB तुम्हहु तिजग°. ५ MB चलिउ.

20. १ K पउमासणु. २ MB मणिमडउ. ३ MB विमलु. ४ MBK omit this line. ५ MB चयारि. ६ MB पवुत्तु. ७ MB सुणिम्मलइ. ८ MB कंताउ.

20. 13 *a* °सुइयउ °सुचिताः.

21

लंजियउ चयारि वि कयवयउ संभूइयाउ वणदेवयउ ।
तहिं चित्तवेय जक्खेसरिय वणवइ वणदेवी धणसिरिय ।
अज्जु जि उप्पण्णाउ दिव्वकुले इह एयउ पेच्छहु गयणयले ।
सुरदेवें दाणु ण मण्णियउं रिसिदिण्णंतउं अवगण्णियउं ।
मुउ हयउ गद्दहु दुद्दंतु सढु पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरढु ।
पुणु दाढाभासुर घोणसउ पुणु हुउ चंडालु कुमाणुसउ ।
मइं समउ आसि सो घित्तु बिले हउं मरिवि पइयउ णरयबिले ।
जिणधम्मु तिसुद्धिइ भावियउ बउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।
तेण वि तहु आउ पयासियउ सत्त जि अहरत्तइं भासियउ ।
ओसारियदुम्महभववरिणइं संणासु करिवि रिसिसमदिणइं ।
उप्पण्णउ एत्थहिं फुडु जि दिवि को पुसइ णं विहिणा विहिय लिवि ।
सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायरि सा मरेवि तुच्छोयरि ॥
एत्थु जि देसि चिरंतणे उप्पलखेडइ पट्टणे ॥ २१ ॥

22

सिरिधम्मपालणिवणंदियहे उप्पण्णी पुत्ति अणिंदियहे ।
मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।
तहिं तहि विवाहि कयणिग्गहहो अम्हइं मुक्की बंदिग्गहहो ।
रइसंभवसोक्खाकंखिणिहिं गुरु पुच्छिउ चउहुं मि जक्खिणिहिं ।
भणु भणु भुवि को अम्हहं रमणु ता कहइ काममयविद्दवणु ।

21. १ MB चक्केसरिय. २ MB धणवइ धणदेवी. ३ MB गद्दहु हुउ ४ M दाढीभीसणु, B दाढा भीसणु. ५ MB वि.

22. १ MB °धम्मवालसिरिणादियहे. २ MB मुक्कइ. ३ MB °विद्दमणु.

21. 1 *a* लंजियउ दास्य.. 8 *b* बउले बकुलनाम्ना चाण्डालेन. 10 *b* रिसिसमदिणइं सप्त दिनानि.

22. 2 *b* मंदरमालिणिय मन्दरमालिनीनाम्नी.

जं[४] पाणें कय संणासगइ तहु तणउ पुत्तु अज्जुणु सुमइ ।
दरिसावियसीहवग्घमुहहे अणसणि थिउ सिद्धसेलगुहहे ।
सो होसइ तुम्हहं हिययहरु वरु सूहउ णावइ कुसुमसरु ।

घत्ता—माणवदेहु मुएप्पिणु जक्खु सुरिंद हवेप्पिणु ॥
गाढालिंगणु देसइ तुम्हहं पुलउ जसणइ ॥ २२ ॥

23

अच्चुयपढिंदु सिंगारधरु हूयउ आयउ सो वउलचरु[१] ।
तं वंदिउ णियगुरु गरुयगुणु सहियउ देविहिं गउ सग्गु पुणु ।
जक्खिहिं जाणवि जसंज्जुणहो[२] संणासु करंतहु अज्जुणहो ।
आगामिउं पुण्णु पसंसियउ तहु णियमहिलत्तणु भासियउ ।
तहिं अवसरि वणिवरदत्तु णरु लग्गउ देविहिं पसरंतकरु ।
जायाउ ताउ णिहंसणउ विडि खुत्तउ वम्महमग्गणउ ।
अंसहंतें[३] विरहविरोलियउ[४] तेणप्पउ कक्करि घल्लियउ ।
मुउ णागदत्तवणिवरहु[५] सुउ सहसत्ति पिसल्लदेउ[६] हुउ ।

घत्ता—तेत्थु जि णयणाणंदणु पुरि सुकेउ वणिणंदणु ॥
गेहिणि तासु वसुंधरि वाहइ णाहु[७] वसुंधरि ॥ २३ ॥

24

अण्णु वि फणिदत्तु णामु वसइ तहु कंत सुणेत्त सुदत्तसइ ।
वणिउत्तें[१] लोयदिट्ठिभवणु कारावउ तेण णायभवणु ।
पुरबाहिरि पइ किसि करइ जहिं अण्णहिं दिणि चल्लिय घरिणि तहिं ।
दहिओल्लिउं अलुयमीसियउं ओयणु[३] गेण्हवि सुइवासियउं ।

४ MBK जे.

23. १ B वउलघरु. २ MB जसज्जणहां ३ B अलहंतें. ४ MB °विरोलियउ, T विरोलउ. ५ MB णायदत्त°. ६ MB पिसल्लउ ७ B णाह.

24. १ MB वणिउ २ M फणिदत्तें. ३ MB ओयणु.

---

23. 1 *b* वउलचरु वकुलनामा चाण्डाल . 3 *a* जसज्जुणहो यशसा श्वेतस्य. 7 *a* °विरोलियउ कदर्थित . *b* कक्करि पर्वतशिखरात. 8 *b* पिसल्लदेउ पिशाच..

24. 2 *a* लोयदिट्ठिभवणु लोकाना दृष्टे सुन्दरतया भवनमाश्रय . 4 *a* अलुय° करमलम्; *b* सुइवासियउ कर्पूरलाजारकादिवासितम्

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ आहारु तासु तहिं ढोइयउ ।
ससिवयणइ पडिवणि णायहरे भुत्तउ मुणिणा मांणिहिउ करे ।
दाणेण तेण जणसंथुयइं जायइं पंच वि अच्छरियइं ।
गिव्वाणहिं रयणइं घित्ताइं करकब्बुरियाइं विचित्ताइं ।

घत्ता—जोइवि मणिगणवुट्ठी पणइणि तासिय पणट्ठी ॥
गय घणकणिसहु छेत्तहु अक्खइ सा णियकंतहु ॥ ४ ॥

25

तुह कूरकरंबउ आणियउ जो तेण साहु मइं पीणियउ ।
केण वि तहिं फुल्लइं मुक्काइं पिययम महु मत्थइ थक्काइं ।
अण्णेत्तहि रुइरकिरणजडिय गयणंगणाउ पत्थर पडिय ।
अण्णेत्तहि काइं वि गज्जियउ णउ जाणउं वज्जउं वज्जियउ ।
अण्णेत्तहि साहु साहु भणिउं अण्णेत्तहि वरिसिरगंधझुणिउं ।
तं णिसुणिवि हउं णट्ठी सभय ता भणइ णाहु हलि तुहुं सदय ।
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि पइ होंतिइ होसइ मज्झु सिरि ।
तुहुं गुणमाणिक्कहं तणिय खणि पइं कियउ धम्मु भुंजविउ मुणि ।
पत्थर ण होंति ते दिव्वमणि इय भणिवि अहीहरु ढुक्कु वणि ।
धरियउ विवक्खवइसेण धणु उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु ।

घत्ता—हिमगोखीराभासइं महु केरइं फणिवासइं ॥
पडियइं रुइरहियकइं महु जि होंति माणिक्कइं ॥ २५ ॥

26

इयरें पवुत्तु तुहुं खुद्दु खलु महु घरिणिहि केरउ दाणहलु ।
मा हरहि चोर रूसइ णिवइ ता दव्वु लएप्पिणु सो कुमइ ।
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ को पावइ धम्महु तणिय गइ ।

४ MB ताइ तहु. ५ B मणगणवुद्धी. ६ MB घणकसणहु.
25. १ MB ण. २ M वज्जुउ. ३ MB पेच्छिवि ४ MB तुहुं हालि.

---

25. 5 *b* वरिसिर° गन्धोदकवर्षणशीलः. 9 *b* अहीहरु नागभवनम्. 10 *a* विवक्खवइसेण नागदत्तेन.

सो गणउ अवरु वि सो वणिउ विम्मूढगूढु लोहें वणिउ ।
जिह जिह मणि तं सीकरइ धणु तिह तिह जि होइ इंगालगणु ।
पुरदेवियमुक्कहिं ढीहरहिं भेसाविय किंकर ढंढरहिं ।
णरणाहु वि हियवइ संकियउ संठिउ सुकेउ पुलयंकियउ ।
दिण्णउ रयणाहु दप्पु गलिउ भणु तववंतेण को ण मलिउ ।

घत्ता—अण्णहिं दिणि पण्णयघरि दिट्ठउ मणि तरुकोडरि ॥
आसाइयपरवित्तें एक्कु कहिं वि अहिदत्तें ॥ २६ ॥

27

तं कड्ढिउ कह व कह व धरिवि पुणु रोसहुयासें विप्फुरिवि ।
महु करि ण चडहि किं वज्जरिवि गुरुयं पाहाणें हुंकरिवि ।
पहरंतहु उच्छलिवि खयलि णिट्ठुरु तहु लग्गउ भालयलि ।
उग्गयगंडेण वियारियउ वणिणागदत्तु हक्कारियउ ।
धणसंखइ ववहारेण जिउ अहरत्तु वसुंधरिवइहि णिउ ।
धणु वड्डिमु जायउ जेत्तिउं जि हारिउ तहिं पिसुणें तेत्तिउं जि ।
कुपुरिसु वसुगव्वें वग्गियउ तं दव्वु सुकेउं मग्गियउ ।
तेणुत्तउं म धरहि भिउडिमुहुं देवाण पहायइ देमि तुहुं ।
पुणु तेण फणीसरु पुच्छियउ हउं गइ किं देव गलत्थियउ ।
मग्गंतहु किं पि ण दिण्णु वरु ता भणइ सप्पु भणु देवि वरु ।

घत्ता—वाणि पभणइ भुयभूसणु बलु सुकेउविद्धंसणु ॥
भो भो विसहरसार दिज्जउ मज्झु भडारा ॥ २७ ॥

26. १ MB विम्मूढ मूढु; K विम्मूढु गूढु. २ MB पुरदेविविमुक्कहिं; K पुरदेविइ मुक्कहिं. ३ M किंकिर ४ MB दिण्णउ ५ M अहिदित्तें.

27. १ M गरुयं, B गरुएं. २. MB उग्गयगंडेण. ३ M अहरत्ति. ४ MBK जेत्तउं. ५ MBK तेत्तउ ६ MB गव्वियउ; T वग्गियउ ७ MB पत्थियउ. ८ MB भभूसणु.

---

26. 5 *a* सीकरइ स्वीकरोति. 6 *b* ढंढरहिं राक्षसे . 9 पण्णयघरि नागभवने.

27 5 *b* अहरत्तु अधरत्वम् . 7 *a* वग्गियउ उद्भटो भूत . 8 *b* देवाण देवाज्ञया.

28

पडिजंपइ फणि गंभीरसणु दविणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।
प्राणावहारु तहु को करइ जसु पुण्णु सहेज्जउं संचरइ ।
मइं तो वि तासु तुहुं अल्लिवहि मज्झायवयणु एहउं लवहि ।
भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ जइ णत्थि कम्मु तो पइं वहइ ।
ना जायवि चिंतियविप्पियउ फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ ।
किउं णियमंतु विहावियउ अहि हियइच्छिउ काराविियउ ।
णीसेसइं कम्मइं णट्ठियइं संसिद्धइं कज्जइं संठियइं ।
मग्गइ पेसणु उरजंगमउ वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।
आणिवि भवणंगणि लहु ठवहि गरुआरउ वाणरु तुहुं हवहि ।
तहिं बंधिवि खंभि सुघणघणइ गलि संखल लाइवि अप्पणइ ।
तुहुं तत्थु वप्प सट्ठेण विणु आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु ।
इय णिम्मइ भणियउ जइयहुं जि तुह अवरु देमि हउं तइयहुं जि ।

घत्ता—ता विसहरु विहंसेप्पिणु तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥
मंकडवेसु धरेप्पिणु थिउ अप्पउ बंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

29

खंभग्गसिहरि उड्डिवि चडइ उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।
अहि दिट्ठउ अहिदत्तेण किह सज्झायहु लग्गेउ साहु जिह ।
णिरंतरु णिसिदियहइं गमइ लइं विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।
विसि भणइ मित्त मइं मेल्लवहि पडिवक्खें सहुं णिम्मउ चवहि ।
ना तेण माणु अवहत्थियउ धयणासु णवेप्पिणु पत्थियउ ।

28. १ MB पाणाव°. २ MBT अल्लवहि. ३ MB केउ. ४ B विसहेप्पिणु. ५ MB मक्कड°.
29. १ M अहिदित्तेण. २ MB लग्गइ. ३ MB °दिवसइं

28. 2 *b* सहेज्जउं सहायम्. 3 *a* अल्लिवहि समर्पय. 8 *a* उरजंगमउ भुजगः. 11 *a* सट्ठेण विणु शाठ्येन विना.

29. 4 *a* विसि नाग..

पइं मणुएं णाउं वि वद्धु जहिं वण्णिज्जइ साहसु काइं तहिं।
बुद्धीइ धणेण वि[५] तुहुं जि गुरु भो वड्डउं[६] मेल्लहि णायसुरु।
तं णिसुणिवि मेल्लवि घल्लियउ फणिवइ[७] वणिणा मोक्कल्लियउ।
अवलोयवि दिणयरअत्थवणु णियसुयहु समप्पिवि णियभवणु।
संसेविउ गुणहर[८]गुरुचरणु त्रिधं[?]कें लइयउ तवचरणु।
णिम्मच्छराहि[९] णिरु णिब्भयहि गणियहि[१०] पणवेप्पिणु सुव्वयहि।
दिक्खंकिय घरिणि वसुंधरिय परिपालिवि छावासयकिरिय।
मुणिवरु सुकेउ मुउ विहुरहरे उप्पण्णउ सग्गि सयारवरे।
थीलिंगु हणेप्पिणु णिरुवमिय तेत्थु जि सुरु[११] हूई तासु पिय।
सम्मत्तालंकिय भव्ववर रामासु विराय[१२]पणामयर।

घत्ता—भरहजणणविण्णायइ अपढमइ[१३] णरयणिकेयइ॥
होंति ण वणभवणंतरि पुप्फदंतवासंतरि॥ २९॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे वणिणागदत्तसुकेउ[१४]कहासंबंधो णाम एकतीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ ३१॥

॥ संधि ॥ ३१॥

४ MBK देउ. ५ MB जि. ६ MB मेल्लहि वच्चउ. ७ MB वणिवइ. T वणिणा. ८ M गुणहरु गुरु°. ९ MB गुणणिब्भराहि. १० MB गणणिहि. ११ M सुर हूवउ. १२ B विराम°. १३ M अपढमणरय, K पढमइ णरय°. १४ MB मणि°.

5 *b* धयणासु सुकेतुः. 8 *b* वणिणा सुकेतुना. 15 *b* रामासु तिर्यग्मनुष्यदेवस्त्रीषु, विरायपणामयर वीतरागपणामकराः. 16 अपढमइणरयणिकेयइ अध. षण्नरकबिलेषु. 17 पुप्फदंतवासंतरि ज्योतिर्निकाये.

XXXII

णिसुरासुरविज्जाहरम्सरणे आंसीणें आसि समवसरणे ॥
गुणपालजिणिंदें जं भणिउं जं मइं वि पइं वि सुंदरि सुणिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

देवि सुलोयाणि वित्तुं कहाणउं तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।
इय जएण पुच्छिय भासइ सइ सिरिपौंलहु केरी गुणसंतइ ।
तेत्थु जि चारु पुंडरिंकिणिपुरि घरसोहाणिज्जियसुरवरघरि ।
ससिरिपॅालु वसुपालु णरेसरु सहुं णिवसइ णं ससुरु सुरेसरु ।
ता चिंतिउ कुबेरसिरिमायइ जंपिउ मुहकुंहरुग्गयवायइ ।
दीसइ सव्वु लोउ सवियारउ एक्कु ण दीसइ णाहु महारउ ।
अण्णु वि सो कुबेरपिउ भायरु तेएं णिज्जिय चंदु दिवायरु ।
गंय बेण्णि वि ते पुणरवि णाया किं जाणहुं विहाय सिविजाया ।
एम भणंतिहि वामउ लोयणु फंदइ सुहिदंसणसंपायणु ।
हियवइ परमुच्छाहु ण माइउ ताम सॅमुहं वणवालु पराइउ ।

घत्ता—सो पभणइ मयणवियारहरु सुणि सामिणि केवलणाणधरु ॥
गुणवॉलु देउ सुरपरियरिउ उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

बम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।
खण्डेण समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MBK आसीणेणासि. २ MB वुत्त. ३ MB सिरिवालहु. ४ M सिरिपालें वसु°; B सो सिरिपालु वसु°. ५ G °कुहरग्गय°, K °कुहरग्गय° but corrects it to °कुहरुग्गय°. ६ K गय ते बिण्णि वि. ७ M समुहुं, B सुमुहुं. ८ M गुणवाल.

---

1. 10 *b* सिविजाया शिवीभूताः मोक्ष गताः.

2

अण्णेक्कु वि तिहिं गुत्तिहिं गुत्तउ झाणवसेण णिमीलियणेत्तउ ।
जो कुबेरपिउ जायउ मुणिवरु सो आयउ तुम्हारउ भायरु ।
तं णिसुणेवि देवि[1] रोमंचिय वेल्लि व अमयरसोहें सिंचिय ।
वंदणहत्तिइ गय परमेसरि हुई हयगयलालामयसरि ।
चलिय सुंदर चोइय संदण अण्णें पंथें बिण्णि वि णंदण ।
दिट्ठु तेहिं उववणि विहयायवु सदलु महलु कोमलु वडपायवु ।
पत्थरघडिउ जडिउ बहुरयणहिं संथुउ णाणं बुहयणवयणहिं ।
तहु तलि जक्खु णाम जगपालउ अवरु णिहालिउ णरवरमेलउ ।

घत्ता—जगपालणरिंदहु तवचरणें सुरु लोएं तहिं संणिहिउ वणे ॥
तहु अग्गइ णच्चिउ णरमिहुणु वसुपालु भणइ सिरिपाल सुणु ॥२॥

3

बिण्णि वि णारिउ बिण्णि वि णरवर जइ णच्चंति होंति ता मणहर ।
तं णिसुणेवि कुमारें उत्तउं देव देव मइं मुणिउं णिरुत्तउं ।
णरवेसेण सरलसोमाली एह दुइज्जी णडइ महेली ।
तहिं अवसरि कामें सरु ढोइउ मायापुरिसें रमणु पलोइउ ।
ढिल्लीहूयउ णीवीबंधणु परिभमंति णयणइं कंपइ मणु ।
फुरइ अहरु पासेउ पवियलइ केसभारु दढबंधु वि वियलइ ।
सुसइ वयणु खलियक्खरु भासइ ता कंचुइइ सुहयहु सीसइ ।
पुक्खलवइविसयम्मि सुहम्मउ रम्मउ देसु धणोहें रम्मउ ।
तहिं सिरिउरि लच्छीहरु णरवइ तहु सुहकारिणि घरिणि जयावइ ।

2. १ B omits from देवि down to चलिय in 5 a. २ MB बिहियायउ. T विहयायउ. ३ MB °पायउ. ४ B जुगपालउ. ५ MB सुरलोएं.

3. १ MB णच्चंत. २ MB वुत्तउं. ३ MB सरु कामें. ४ MB कपिय तणु. ५ MB दढबधु वि विलुलइ. ६ B सुसियवयणु. ७ MB कंचुइयइ. ८ MB सहम्मउ. ९ MB सिरिउलि.

---

2. 6 a विहयायवु विहततापः.

3. 8 a सुहम्मउ सुहर्म्यः.

असमइ तुहिय महिय णिवचंदें[१] पुच्छिउ जइवइ णविवि णरिंदें ।
खयकंदप्पदप्पकुमकंदें अक्खिउ इंदभूइसवणिंदें ।
पुरिसवेस णच्चंती जाणइ जो सो पुत्तिहि जोव्वणु माणइ ।
तं णिसुणिवि मइ गायणवायण दिण्णा राएं भाउप्पायण ।
दिट्ठउ मंतिहिं जं जिह जेहउ कज्जु पयासिउ तं तिह तेहउ ।
घत्ता—परियंचिवि पुरइं सधयवडइं णयराइं सखेडइं कव्वडइं ॥
णच्चावहि दावहि तणय तिह वरइत्तु णिहालहि तुरिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय ता मइं आणिय णं वणदेवय ।
सुय णयराउ णयरि णच्चंती जणु णवरससलिलें सिंचंती ।
एवहिं एउ समागय पुरवरु तुहुं दिट्ठो सि होसि एयहि वरु ।
णच्चइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी णड[१]परमेसरपुत्ति दुइज्जी ।
ताहं जुवेसें दिण्णइं वत्थइं आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं ।
एत्थंतरि सुहिसुहइं[२] जणेरउ जणणियाइ पेसिउ हक्कारउ ।
तहु वयणें चल्लिय बिण्णि वि जण अग्गइ अणु[३]सरंति जा सज्जण ।
ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ णरवरु चंचलतुरयारूढउ ।
आसु पमग्गिउ सो सिरिपालें दिण्णउं धणु लेप्पिणु हयवालें[४] ।
घत्ता—सो तहि कयपरिणामें णडिउ सहसा कुमारु हयवरि चडिउ ॥
आसण्णु जि सेण्णमज्झि चलिउ हरि दूरु गंपि दूरुल्ललिउ ॥ ४ ॥

5

बाहपवाहजलोल्लियणयणहं हाहारउ मेल्लंतहं सयणहं ।
तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ महिवइ माउसमीउ समायउ ।

१. MB णिववंदें.

4. १ MB णउ परमेसर°. २ B सुहइं जणियारउ. ३ MB अणुसरन. ४ MB धणवालें.

15 परियंचिवि परिभ्रम्य.

4. 1 *a* णिरावय आपद्रहित. 4 *a* सहेज्जी सहाया. 5 *a* जुवेसें युवराजेन श्रीपालेन. 8 *a* अरूढउ अप्रसिद्धः. 10 कयपरिणामें कर्मपरिणत्या.

इट्ठविओयसोयतवियंगउ णं पक्खुज्झिउ पडिउ विहंगउ ।
जणणि वि सोउ करंति णिवारिय मंतिहि कह व कह व सा हारिय ।
गयइं तेत्थु जहिं जियवम्मीसरु केवलणाणधारि जोईसरु ।
वंदिउ वंदारयसयवंदिउ भत्तिइ भव्वलोउ आणंदिउ ।
भणिउं कुबेरसिरीइ दुरासें पुत्तु महारउ णिउ मायासें ।
तहु भयवंत समागमु कइयहुं पभणइ जिणु सत्तमु दिणु जइयहुं ।
तइयहुं आयेउ[2] पेक्खहि बालउ ता पणवेप्पिणु मुणि गुणवालउ ।
सुरगिरितलि संठियइं सुरत्तइं सिविरु मुएप्पिणु[3] मायापुत्तइं ।

घत्ता—वेयड्ढमहामहिहरणियाडि[1] काणणि कुसुमियतरुवरि वियडि ॥
रिउणा तुरयत्तणु परिहरिउ भीयरु रयणीयररूवु[4] धरिउ ॥ ५ ॥

5. १ MB add after this the following lines:—

पेक्खेवि णदणु सोयक्कंतउ सयलु वि परियणु दिट्ठु भवंतउ ।
अवलोकंतु भमइ महि संतउ (B omits it)
हाहाकारु करंतउ देविए पुच्छिय मंति जगत्तयसेविए ।
कहहु एहु किं मुच्छिउ णदणु जो जगचंदु (B जगवंदु) जेम वरचंदणु ।
केण वि कहिय वत्त परमेसरि हरिवरेण हिउ णरवरकेसरि ।
तं णिसुणेवि वच्छ पभणंती महियले णिवडिय देवि रुअती ।
अंगु समोडइ दुक्खें राणी (B रोणी) सप्पि व दंडाहय विहाणी ।
हा हा पुत्त मज्झु विच्छोइउ केण दुरासें हयवरु ढोइउ ।
किं अवहरियइ रण्णि चरतइ पक्खिणिहरिणिवराहिहि पुत्तइं ।
हा किं पावें हिउ महु णंदणु तिहुअणजणमणणयणाणंदणु ।
हा विहि दइव केण हरि ढोइउ जें महु पुत्तजुयलु विच्छोइउ ।
पुहइणाहु गुणमणिरयणायरु हा कहं मुक्कु (Bकसु मुक्क) रुअंतउ भायरु ।
जेण अणंगहु हय बाणावलि सो पइं पुत्त ण वंदिउ केवलि ।
कसु धाहावमि को आसंघामि हा हा दइव कवण दिसि लंघामि ।

२ MB आवइ. ३ MB मुएविणु. ४ MB रयणियरत्तउ.

---

5. 1 *a* बाह° अश्रूणि. 4 *b* हारिय आश्वासिता. 7 *b* मायासें मायाश्वेन. 12 रयणीयररूवु राक्षसरूपम्.

6

उरयलविलुलियविसहरहारो कडियलवलइयघोणसघोरो।
पंडुरपविरलदीहरदसणो वग्घचम्मवरविरइयवसणो।
मंदरकंदरसंणिहतोंडो मणुयवसाचच्चिक्कियगंडो।
सिसुससहरसमदाढाभीसो जलियजलणजालाणिहकेसो।
णवघणसामलकुवलयकालो खयरो होऊणं वेयालो।
भासइ हित्ता घरिणि महारी पइं गयजम्मि सुचंपयगोरी।
कुद्धो तुज्झु दुरंतकयंतो जासि इदाणी कह जीयंतो।
भरइ कुबेरसिरीए पुत्तो अहमिह णियकम्मेण णिहित्तो।
पणिह भवजलसायरतरणं जिणवरकमकमलं मह सरणं।
मामणिओ तरुएण कुमारो इय जणवत्ताबुज्झियचारो।
ता विहंगजाणियसुहिदुक्खो पत्तो तहिं जयपालो जक्खो।

घत्ता—रणभरधुरधारियकंधरहो चंद्रासिदंडमंडियकरहो॥
जुवरायहु कारणि दुद्धरहो अब्भिट्टु जक्खु रयणीयरहो॥ ६॥

7

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस जाहि जाहि विज्जाहररक्खस।
मा णिवडहि जलंति कालाणलि वइवसवयणविवरि जगघंघलि।
मा ओहट्टउ आउ तुहारउ मा तासहि कुमारु महु केरउ।
अमरिसरसवसु कहिं मि ण माइउ एम भणंतु महंतु महाइउ।
सो रक्खें खग्गेण तुहाइउ वणसुरवरु बिहिं रूविहिं धाइउ।

6. १ MB °विरइय°. २ MB °संणिहतुंडो. ३ MB गयजम्मे चंपयगोरी. ४ MB तुरंतु कयंतो. ५ MB एवहिं कहिं तुहु जासि जियंतो. ६ MB भणइ. ७ MB जाम णिहिउ, B सामणिओ, K माणिणिओ. ८ MB °सुहदुक्खो. ९ MB जगपालो. १० M रणभरधरधारिय°; G रणभरधारिय°.

6. 10 *a* मामणिओ मामकः मदीयः.

7. 2 *b* वइवस° यमः; °घंघलि आपदि. 4 *b* महाइउ महादतः. 5 *b* वणसुरवरु व्यन्तरदेवो यक्षः.

हय विण्णि वि चत्तारि समुग्गय गलगज्जंत दिव्वं णं दिग्गय ।
पहय चयारि अट्ठ पडिआया अट्ठ वि हय सोलह संजाया ।
हय सोलह बत्तीस भयंकर बत्तीसहं चउसट्ठि मउक्कुर ।
चउसट्ठिहिं वेउव्विउ रूवउ अट्ठावीसउं सउं संभूयउ ।
तं पि दुवड्ढिउ ववगयसंखहिं जलु थलु णहयलु पिहियउ अक्खहिं ।

घत्ता—रयणियरहु भुयबलु णउ कलिउं देवहु हियउल्लउं संचलिउं ॥
किं होही कम्मु णियंतियउं भवियव्वु कुमारहु चिंतियउं ॥ ७ ॥

8

तें नहु होंतउ सुहुं पडिवण्णउं थिउ विग्गवि रूवु पच्छण्णउं ।
रुप्पयसेलहु उप्परि थाइवि जोयणसउ गयणंगणि जाइवि ।
रिउणा घित्तउ खयलोयरियउ देविंदें लहु विज्जइ धरियउ ।
सणिउं सणिउं सिरिसिहरइ ठवियउ णिवणंदणु तहिं तण्हइ खवियउ ।
फलिहसिलायलु ढंकिउ सरवरु दिट्ठउ जलु मैण्णिवि गउ सुंदरु ।
तोयाकंखइ धवलि पवित्थरि पसरियकरयलें लग्गा पत्थरि ।
चिंतइ बालउ विंभिउ णिब्भरु देससहावें सलिलु वि णिट्ठुरु ।
ता तहिं अवसरि कामकिसोरी घडकडियल संप्रोइय गोरी ।
जलविवरंतरि सा पइसंती दिट्ठी तरुणें णीरु भरंती ।
तेण वि मग्गें जायवि कोमलु रसिउ तेण सुकुसुमरयपरिमलु ।
घत्ता—धवलेहिं चलंतिहिं लोयणिहिं सो महिवइ मयणुक्कोवणिहिं ॥
कलसंकियकडिइ णियच्छियउ पडिहाहयाइ णाउंछियउ ॥ ८ ॥

7. १ M मत्त. २ MB पडिमाया. ३ M अट्ठावीसा सउ. ४ MB य वड्ढिउ. ५ MB कम्मणियात्तियउ.

8. १ MB सुह°. २ MB रूउ. ३ MB देवें दलु लहु, T दललहु पर्णलघु ४ MB °सिलायालि. ५ MB मण्णेविणु मुदरु. ६ MB सवित्थरि. ७ MB °करयलु. ८ MB विंभय°. ९ MB °संपाइय°. १० MB °रयपरिमलु ११ MB चवलचलतहिं लोयणहिं, K वलंतहिं. १२ MB मयणुक्कोयणहिं. १३ MB पडिहाहय णायाउच्छियउ, T परिहाहय.

---

४ *b* मउक्कुर मदोत्कटः.

8. 3 *a* खयलोयरियउ आकाशादवतीर्णः. 10*a* कोमलु मनोज्ञम् 12 पडिहाहयाइ प्रतिभाहतया.

9

सरसमणुब्भवपणयसंणिद्धइ आइय भवणहु भासिउं मुद्धइ ।
हरि जइ तो तहु चक्कु ण लंछणु वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमधणु ।
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरंगउ रवि जइ तो सो ण वि अत्थं गउ ।
सुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि तोयहु जंतिइ माइ महासरि ।
मइं अवलोइउ एक्कु जुवाणउ किं जाणहु तेल्लोक्कहु राणउ ।
किं जाणहुं जं जणवउ घोसइ सो सिरिवालु णराहिउ होसइ ।
लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ घोलउ थणयलि णं मणिहारउ ।
ता संचलियउ पंच कुमारिउ गयहु पासि णावइ गणियारिउ ।
णं कंदप्पे भल्लिउ मुक्कउ ताउ तासु आसण्णउ ढुक्कउ ।
भासिउ भहें धवलियगयणहिं किं जोयहु अद्धद्धहिं णयणहिं ।
किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ ।
तं णिसुणेप्पिणु विहसिवि धिट्ठइ दिण्णु पडुत्तरु जेट्ठकणिट्ठइ ।

घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुगोहणइ पयडम्मि देसि दुज्जोहणइ ॥
सीहउरि सहइ णरवालणिवु लच्छीकंतइ णं लच्छिधवु ॥ ९ ॥

10

हउं सस रइकंतहि लहुयारी जयदत्ता एयहुं गरुयारी ।
मयणकंत मयणवइ कुमारिहि जयवइ जेट्ठहुं जणमणहारिहि ।
अवर वि विमल वयंसिय छट्ठी असणिवेयखयरिंदें दिट्ठी ।
अम्हहिं सहुं उववणि कीलंती कामुयमइणेहेणुब्भंती ।
मग्गिउ तें ताएण ण दिण्णउ पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ ।
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुबोहें एवहिं णरवइ काइं विवाहें ।

9. १ MB °समिद्धइ. २ MB कुसुमधणु. ३ MB गणियारउ. ४ MB धवलियवयणहिं. ५ MB अद्धद्धहिं. ६ MB पायडवि. ७ MB °णिउ. ८ MB लच्छिधउ.

10. १ MB मयणकंति. २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ. ३ M पहुबोहें.

9. 8 *a* गणियारिउ हस्तिन्यः. 14 लच्छिधवु विष्णुः.

10. 4 *a* कामुयेत्यादि—विद्युद्वेगविद्याधरस्य मतिः कामासक्त्या विह्वलीभूता. 6 *b* पिहुबोहें पृथुज्ञानेन.

गेहिणीउ होसंति पिसाक्किहु तुह पुत्तिउ सिरिवालहु चक्किहु ।
पुणु अम्हइं मग्गइ तडिवेयउ पिउँवयणेण णिरुत्तरु जायउ ।
चोरिवि आणियाउ णिक्करुणें जलयसिंगसंचोइयचरणें ।
तेण दुरासएण दुद्दंतें णिहियउ णिज्जणि रोसु वहंतें ।
घत्ता—णिवसहुं काणणि णिवच्छवि जणिउ तालूँरजुयलसंणिहथणिउ ॥
अप्पउ हियवइ सोयंतियउ सिरिवालपंथु जोयंतियउ ॥ १० ॥

11

तुहुं जि णाहु पइं तवियइं अंगइं अण्णु कि णाहहु मत्थइ सिंगइं ।
लइ लइ घँरिणि कंत रिउचंडहिं अवरुंडहि दीहहिं भुयदंडहिं ।
भासइ सूहँउ जइ वि रवण्णउं कण्णारयणु होइ णादिण्णउं ।
अण्णेक्क वि कुमारि संप्राइँय रक्खसिरूवें कहिं वि ण माइय ।
णियडी होंति अणंगें लैद्धी पंचहिं सरहिं उरत्थलि विद्धी ।
सवरें हय सारंगि व लोलइ सुहयहु केरउ वयणु णिहालइ ।
तहिं अवसरि गइयउ छ वि तरुणिउ वग्घिहि गंधें णावइ हरिणिउ ।
इयरइ पुणु पासाउ विरइयउ सयणमग्गु सोहइ अइसइयउ ।
सरसालाव तासु सुइ पाविय णयणजुवल मीणा इव भामिय ।
जं वल्लहु मईइ अवरुंडिउ जं कण्णावउ कण्णइ खंडिउ ।
तं दोसेण विज्ज गय णासिवि थिय ससिमुहि अप्पाणउं दूसिवि ।
हुई कामगहें विवरेरी पुच्छइ सूहउ तुहुं कहु केरी ।
घत्ता—अचलत्तें णिज्जियमहिहरहु मा कहइ सवइयरु णरवरहु ॥
सिरिसिहरहु चउजोयणसयहिं रयणउरु अत्थि मंडिउ धयहिं ॥ २१ ॥

४ B णियवयणेण. ५ M णिरुत्तउ. ६ MB माल्ूर°

11. १ MB पंरिणि.. २ MB सूहउ जइ वि सुरवण्णउ. ३ MB सपाइय. ४ MB रक्खसरूविणि कइ वि. ५ MB लुद्धी. ६ MB पचसरेहिं. ७ M णयणजुवल मीणा इव. B णयणकूव मीणी इव. ८ MB मइइ. ९ MB ससिविमुह

---

7 *a* पिसक्किहु बाणयुक्तस्य. 9 *b* जलयसिंग° मेघमस्तकम् 11 ताल्ूर° बिल्वफलम्.

11. 1 *a* कि किम्. 4 *a* सयणमग्गु पर्यङ्कः. 9 *a* तासु श्रीपालस्य; सुइ कर्णौ. 12 *a* विवरेरी विह्वला. 13 सवइयरु स्वव्यतिकरम्.

12

थणियवेउ तहिं अत्थि णरेसरु　　जोईवेयदेविहि[1] वल्लहु वरु।
असणिवेउ तहु पुत्तु पमत्तउ　　तेणाणेप्पिणु ईह[2] तुहुं घित्तउ।
हउं तहु तणिय बहिणि पिय तडिरय　　तें पेसिय पइं णियहुं समागय।
किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि　　णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयलि।
दूरहु जोइओ सि मइं रोसें　　किर पइं हणमि णिसायरिवेसें[3]।
णवर हउं जि हय वम्महकंडें　　इंदचंदणाइंदविहंडें।
दे[4] सोहग्गभिक्ख मइं मग्गिउ　　मच्छरु मेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ।
एक्कवार जइ करि[5] करु ढोयहि　　एक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि।
तो जीवियफलु मइं जगि लद्धउं　　तं तहि भासिउ तेण णिसिद्धउं।
मईं विणएं[6] पारद्ध महुच्छव　　जइ पइं देंति मिलेविणु[7] बंधव।
तो गिण्हमि णं तो धुउ वज्जमि　　कण्णासाहसेण हउं लज्जमि।
ता सा गय जंवेण रयणउरहु　　भासइ भाइहि मारियवइरहु[8]।
मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइं　　मइं दिट्ठइं भमियइं गिद्धउलइं॥

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ　　असहंतिइ असणिवेयससइ॥
जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि　　तहिं पेसिय मयणवडाय सहि॥१२॥

13

णाइ गंपि सुहडु अब्भत्थिउ　　जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थिउ।
विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ　　थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ।
सो परिणेसइ रुइहयरविरहु　　चक्कवट्टि सिरिपालु[1] महापहु।
रूवुं[2] तुहारउ हियवइ भावइ　　विज्जुवेय[3] पिय दुक्करु जीवइ।
भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ　　होंतउ केण कम्मु लंघिज्जइ।

12. १. B जाइवेय°. २ MB तुहुं इह. ३ MB णिसायरवेसें. ४ M दिहि. ५ MB करु करि. ६ MB बहुविणएं. ७ K मिलेप्पिणु. ८ MB मारीय°.

13. १ MB सिरिवालु. २ MB रूउ. ३ MBK विज्जवेय.

---

12. 3 *a* तडिरय विद्युद्वेगा. 13 *a* पलसयलइं मांसखण्डानि. 11 मयणवडाय मदनपताकानाम्नी.

जाहि दूइ हउं पिययमु होसमि बालहि लीलालिंगणु देसमि ।
तं णिसुणिवि गय गेहहु दूई आलोइय कुमारि किस हूई ।
आइय पुणु विरहाउर तेत्तहि अच्छइ णरमयरद्धउ जेत्तहि ।
कुमरिउ रमणभावरसगिल्लउ संभासंतु ताउ पुव्विल्लउ ।

घत्ता—अवलोइवि सुंदरि सुंदरिउ वणि णट्ठउ खणि छुँ वि कुंयरिउ ॥
णं मुणिवरविरिसिहि दुग्गइउ णं सुकइमइहि जडकइमइउ ॥ १३ ॥

14

आय णिसण्णी णियडि खगेसरि णाइं समुद्दासण्ण महासरि ।
चवइ सवयणु पिहेप्पिणु हत्थें परत्थु जि घोरतवह सामत्थें ।
भो मणसियकणोहवित्थारा मरणु ण कासु वि होइ भडारा ।
हउं वि सणेहिं जंपिय पेक्खमि तं पइं पुण्णवंतु किर रक्खमि ।
तो वि देव वीसासु ण किज्जइ वणयरदुग्गउ भवणु रइज्जइ ।
एम चवेप्पिणु मरगयतोरणु खंभहु उप्परि कयउ णिहेलणु ।
तहिं कुबेरसिरितणुरुहु णिहियउ रत्तें कंबलेण संपिहियउ ।
अणुदिणु पंतिहिं रइरसतुरियहिं जिह णउ घिप्पइ भूगोयरियहिं ।
तिह तहिं दुद्धरि रमणु थवेप्पिणु गय पणइणि पेसणु भासेप्पिणु ।
अरुणावरणच्छण्णु खरतोंडें मण्णिवि मासपिंडु भेरुंडें ।
णिउ णिवचंदु रुंदगयणयलहु अंगुत्थलिय घुलिय करकमलहु ।

घत्ता—आयसपुरिसणामंकधरि दूसहविओयसिहितावहरि ।
तों रक्खणभिक्खहिं णिम्मलहु घेरु आणिवि अप्पिय वप्पिलहु ॥ १४ ॥

४ B सुंदरु. ५ MBT छउओयरिउ and gloss in T क्षामोदराः.

14. १ M अत्थु अ घोर°. २ MB भणेप्पिणु. ३ MB भावेप्पिणु. ४ MB सा. ५ MB घरि.

---

14. 3 *a* °कणोह° बाणौघः. 13 वप्पिलहु कच्छावतीदेशविजयार्धे मेघपुरे कम्पनराजा, राज्ञी विमा-निनी, तयोः वप्पिला, तस्याः दत्ता सा मुद्रिका.

15

णाणारयणफुरंतपईवइ सिद्धकूडजिणणिलयसमीवइ ।
जाव पक्खि धरणियलि परिट्ठिउ ता पहु अंगु वेलेप्पिणु उट्ठिउ ।
तसिउ खयरु उड्डिउ णहि चंचलु तहु पयणहलग्गउ गउ कंबलु ।
पडिउ धरहि किंकरहिं णियच्छिउ जाणवि मयणवइहि पयच्छिउ ।
एत्तेहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु दुक्कियदुक्खलक्खणिक्खयकरु ।
थुइ विरयंतहु दुण्णयसाडइं विहडियाइं दढकुलिसकवाडइं ।
जें दिट्ठें णट्ठइ संचिउ मलु जें दिट्ठें उप्पज्जइ केवलु ।
जें दिट्ठें कुदिट्ठि ओहट्टइ जें दिट्ठें सम्मइ परिवट्टइ ।
जें दिट्ठें उवसमु संपज्जइ जें दिट्ठें अप्पउ परु णज्जइ ।
जें दिट्ठें दुग्गइगइ णासइ जें दिट्ठें जगु सयलु वि दीसइ ।
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवारउ देवदेउ अरहंतु भडारउ ।
थोत्तवित्तु कइमग्गपसिद्धउ गुणवालंगरुहें पारद्धउ ।

घत्ता—तुहुं मायबप्पु तुहुं संतियरु तुहुं णिरलंकारु वि हिययहरु ॥
जिण णिम्मय तेरी जेहिं तणु इह तिहुयणि तेत्तिय जि अणु ॥१५॥

16

इय वंदिवि जिणु गुणहिं विसिट्ठउ मुहमंडवि कुमारु उवविट्ठउ ।
तौं तहिं संपत्तउ खेयरणरु आहासइ सिरसंजोइयकरु ।
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ अणिलवेउ णामें खगराणउ ।
पिय कंतवइ णाम तहु गेहिणि सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि ।
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु ।

15. १ MB °जिणभवण°. २ M लेविणुउ दिट्ठउ; B वलेविणु तुट्टिउ, ३ MB एतएण तें दिट्ठउ. ४ MB णिट्ठइ संचिय मलु. ५ M °णिवारिउ. ६ MB तिहुयणि फुडु तेत्तिय.

16. १ MB सुहमंडवि. २ MB उवइट्ठउ. ३ MB तो.

---

15. 10 *a* दुग्गइगइ दुर्गतिगमनम्.

16. 1 *a* मुहमंडवि रङ्गमण्डपे. 5 *a* पणय° प्रणता स्नेहयुक्ता वा.

गाढधरियसंजमसुहलीसें तं जाणिवि जंपियउ जईसें ।
जेणाएं विहडंति सुणिविडइं सिद्धकूडजिणभवणकवाडइं ।
होसइ सो वम्महसरभत्थहि वरु तुह सुयहि सुरूवपसत्थहि ।
हउं जोयहुं राएण णिवेइउ णरवइ तुहुं एवहिं संभाइउ ।
णेच्छंतु वि कुमारु उव्वाइउ णहयरु तुरिउ णहेणुद्धाइउ ।
चिक्कमंति पासायहु उप्परि पुरु संपत्तें दाविय सुंदरि ।
सा भोयवइ तेण सुईलीणें णिंदिय बंधवसोयविलीणें ।
एह णारि आसीविस णाइणि एह णारि असुभक्खिलणि डाइणि ।
विणु आहारें एह विसूई विणु सिहिणा वि चुरुलि संभूई ।

घत्ता—खयराहिवपुरिसाणियंविणिइ दुज्जणलीणइ मणेंताविणिइ ॥
थणजुयलउ णिज्झाणिरूवियउं णियमणथड्ढत्तणु दावियउं ॥ १६ ॥

17

कंदरेण विणु वग्घि महेली गरलसत्ति णं मारणसीली ।
रयणि व मित्तहु पुरउ ण थक्कइ समलहु दोसायरहु पढुक्कइ ।
मइरा इव णिच्चु जि मयमत्ती साणि व दाणमेत्तकयमेत्ती ।
हो हो उक्कंठिउ णिरु अच्छमि मायभाउ जइ वेण्णि वि पेच्छमि ।
तो हउं जीवमि दिट्ठें णाहें होउ पहुच्चइ मज्झु विवाहें ।
एम भणंतु रइयरिउभेयहु दरिसिउ सुंदरु मारुयवेयहु ।
अण्णु वि अक्खिउ जिह णउ इच्छिउ जिह तं णारीरयणु दुगुंछिउ ।
णियसुयणिंदावायविरुद्धें तं णिसुणिवि खयरेसें कुद्धें ।

४ MB सरूव°. ५ MB संभासिउ. ६ GK record *a p* सइलीणें इति पाठे सर्वेषां कर्णपरिचितेन; शाल्मलीनेन वा. ७ MB परताविणिइ. ८ MB °थड्डत्तणु.

17. १ MB गयसत्ति व णरमारण°. २ MB मयराइ व. ३ M साणि व दाणमत्तकय°; B साणिवबाणकयमेत्ती. ४ MB दुगाछिउ.

6 *a* सुहलीसें शोभनहलीषेण (हलीशेन), धुरधरेणेत्यर्थः. 7 *a* जेणाएं येन आगतेन. 9 *a* संभाइउ संभावितो दृष्टः. 12 *a* सुइलीणें शाल्मलीनेन. 14 *a* विसूई विषूचिका; *b* चुरुलि ज्वाला.

17. 3 *a* साणिव कुक्कुरीव.

उत्तउं उच्चायप्पिणु णिज्जाणि एहु गहिल्लउ घल्लउ पिउवाणि।
थेरीरूवुँ रएवि दइच्चें घत्तिउ सो तहिं तेण जि भिच्चें।
घत्ता—छुडु छुडु जि णिहित्तउ बालु तहिं हँरिकेउ पवणजवपुत्तु जहिं ॥
झायंतु मंतु बलणिज्जियउ सव्वोसहिविज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

18

तंबिरणेत्तइ पिंगलकेसइ दाढाभीसणरक्खसवेसइ।
विज्जइ वंतैउं जं जं जेहउं उड्डिवि अंजलि तं तं तेहउं।
पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ सुहडचित्तु ण वि किं पि वि भीयउ।
पुच्छइ पहु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि कहइ देवि हउं सा सव्वोसहि।
सिद्धी तुज्झु वीर परमत्थें तो पविलोइय वुड्ढावत्थें।
लद्धदिव्वविज्जासामत्थें णियतणु पुसिय तेण णियहत्थें।
सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु ता पत्तउ खयराहिवणंदणु।
पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ हउं तुह किंकरु पेसणगामिउ।
जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं सो दिट्ठो सि देव णियणयणहिं।
सुट्ठु दुसज्झइ णिरु णिरवज्जइ जाणिओ सि मइं सिद्धइ विज्जइ।
घत्ता—बारह संवच्छर इह वासिउ फलकालि अज्ज विज्जहि तासिउ ॥
दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं उज्जमु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

19

एम भणिवि गउ णहयरु जावहिं पहर चयारि वि णिट्ठिय तावहिं।
गलिय रयणि उग्गमिउ दिवायरु संचल्लिउ वसुवालसहोयरु।
रण्णि भैवंतें तेण णिविट्ठी जरसीमंतिणि तरुतलि दिट्ठी।
उग्गामिवि करु भिउँडुवि णयणइं देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइं।
चिंतइ णरवइ वैरु होज्जउ तणु णउ माणुसु विणिबंधु विणिद्धणु।

५ MB °रूउ धरेवि. ६ MB जहिं. ७ MB ता हरिपवणंजवपुत्तु तहिं.

18. १ MB दाढी°. २ MB °भीसइ. MB वमियउं. ४ MB ताए विलोइय. ५ MB विहिं णयणहिं. ६ MB णिव. ७ M संसिद्धइ.

19. १ MB भवंती. २ B जरु. ३ MB भिउडिवि. ४ MB वरि होजइ. ५ MB णिब्बंधउ णिद्धणु; T विणिबंधउ.

19. 4 *a* भिउडुवि भुकुटीकृत्य. 5 *a* तणु तृणम्; *b* विणिबंधु विनिर्गतबन्धुः; बन्धुरहितः.

हाँ किं णायरेहिं कलहिज्जइ थेरि भणेप्पिणु एह हसिज्जइ ।
ता चिरणारिइ णियतणु जेही विहिय कुमारहु तक्खणि तेही ।
तें हत्थें णियंगु पँरिमट्ठउ जिह पुव्विल्लउ तिह पुणु दिट्ठउ ।
पुरुमहिलइ रायहु विण्णवियउ मइं वरइत्तचरिउ सब्भवियउ ।
जं जिह देहि देव णिव्वत्तिउ तं तिह जरसॅरूवु परियत्तिउ ।
तासु गवेसा पेसिय रायं वणि अंतें कुबेरसिरिजायं ।
सीहसरहसरपूरियदिप्पहि संठिय चउँदिसु मिलिय चउप्पहि ।
दिट्ठा सोलह सुहड महाबल सोलह पत्थर वट्टपवट्टुल ।

घत्ता—सो तेहिं[10] भणिउ सुमहुरगिरिहिं अग्गइ थाइवि पंजलियरिहिं ॥
भो भो कुमार किं[11] चिक्कमहि गोलयहु उवरि गोलउ थवहि ॥ १९ ॥

20

इयरहं पंथिय जाहुं ण लब्भइ रायाणइ गोसिंगु णं दुब्भइ ।
इय विहसेप्पिणु पंथिउ बुँब्बइ वट्टहु उप्परि वट्टु ण थक्कइ ।
जामि बप्प किं एण पलावें रायविणोएं मिच्छागावें ।
एम्व भणंतु वि धरिउ णिरुंभिवि हेवाँइद्धें सत्तिइ थंभिवि ।
वट्टुत्तिविडि वि रइय छइल्लें पुच्छिय किंकर बुद्धिमँहिल्लें ।
कवणु देसु को णरवइ भुंजइ वट्टहि वट्टठवणु किं जुज्जइ ।
भिच्च कहंति महाँसिहरूढहु उत्तरसेढियाहि वेयड्ढहु ।
पवणवेउ णामें खयराहिउ एत्थ महीवइ अक्खयराहिउ ।

९ MB हा किह. ७ MB पर मट्ठउ. ८ M जरसरूउ; B जरमत्तउ. ९ MB चउदिसि. १० B तेण. ११ G कं.

20. १ MB वि. २ BK बुक्कइ. ३ MBT वेहाइद्धें; GK record a p वेहाइद्धें इति पाठेप्ययमेवार्थः; T हेवाइद्धें इति पाठेप्ययमेवार्थः. ४ MBK °महल्लें. ५ MB महासिहरड्ढह, G महासिररूढहु.

7 a चिरणारिइ वृद्धास्त्रिया. 9 a पुरुमहिलइ अतिवृद्धया. 13 b वट्टपवट्टुल अतिशयेन वृत्ताः.

20. 5 a वट्टुत्तिविडि उतरंडी (?); छइल्लें धूर्तेन. 8 b अक्खयराहिउ अक्षरद्रव्यस्याधिपः.

जो आवइ णरु वट्टपरिक्खहि सोलहखयरणरेसरसिक्खहि।
उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ सो परिणेसइ सोलह कण्णउ।
गय अणुयर णियणियरायंतिउ कुवरें अम्माइ गमणु जि चिंतिउ।
मेहविमाणसिहरि जोएप्पिणु भूयरमणु काणणु मेल्लेप्पिणु।
थक्कु महाणयरहु बहि जाम्वहिं अवर वि वुड्ड पराइय ताम्वहिं।

घत्ता—जरकसरसिरइ लंबियथणिइ आवेप्पिणु थेराणियंबिणिइ॥
हउं रीणी माइ किं पि चविउ कुवलीहलपिंडउल्लउ थविउ॥२०॥

21

पसिढिलचम्मच्छिरोलविवण्णी तरुतलि तासु जि णियडि णिसण्णी।
णिववालहु केरउ सिरिमाणणु दिट्ठउ ओहुल्लिउं कमलाणणु।
छुहतण्हापहखेयं खीणउं अंगु णिहालवि णिरु विद्दाणउं।
तिण्णि तिसाछुहपहसमणासइं दिण्णइं बोरइं अमयाभासइं।
प्रासियाइं सुहयं रसणिद्धइं बीयइं चीरंचलइं णिबद्धइं।
वसुवालहु जाइवि दरिसेसमि णियपुरणंदणवणि पइरेसमि।
इय चिंतंतु जाम सो अच्छइ णियबंधवसंजोउ णियच्छइ।
ता वुड्डइ कुंदुज्जलदंतिइ देहि मोक्कु भासिउ पहसंतिइ।
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि।
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि।
जइ आवहि तुहुं णयरु महारउ तो णिहणमि दालिद्दु तुहारउ।
कवणु णयरु को तुहुं कें जायउ भणइ थेरि भो इहं किं आयउ।

घत्ता—तं णिसुणिवि भासइ चक्कवइ पुरि पुंडरिकिणि दिण्णरइ॥
गुणपालु राउ तहु तणउ सुउ वसुपालहु भायरु हउं लहुउ॥२१॥

६ MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ. ७ MB गय णर णियणियरायहं मंतिउ; T अणुयर. ८ MB °सिहरु. ९ MB तेण चविउ.

21. १ MB पसढिल°. २ MB °विराल°. ३ MB ओहल्लउं; K ओहुल्लिउं. ४ MB पासियाइं. ५ MB रसानिद्धइं. ६ MB दंसेसमि. ७ MB किं इह. ८ MB सक्कवइ. ९ MB दिण्णरुइ. १० MB गुणवालु. ११ MB वसुवालहु.

11 *a* °रायतिउ राजसमीपे. 14 °कसर° पाण्डुराः.

21. 1 *a* °विवण्णी विरूपा. 6 *b* पइरेसमि वप्स्यामि.

22

जगि सिरिपालु णामु जाणिज्जमि सुरवीणातंतिहिँ गाइज्जमि ।
मायाहरिवरेण पत्थाणिउ जोइसिएहिँ असेसेहिँ जाणिउ ।
गुरुविओयसंतावें णिट्ठिउ अच्छमि सुट्ठु इट्ठउक्कंठिउ ।
जइ भायरहु मिलमि तो जीवमि णं तो णिच्छउ जमउरि पावमि ।
भणइ तुहुँ भो तुहुं णर दीणउ पण सहावें होसि ण राणउ ।
बोरट्ठिलियउ बंधिवि लइयउ कवणें दइवें तुहुं नूवुं रइयउ ।
परदोगेसु तुहुं वि किं णासहि अप्पाणउं णरणाहु पयासहि ।
तेरउ पुरु महियरहं अगोयरु कहिं तुहुं कहिं सो तुज्झु सहोयरु ।
णत्थि दविणु अलियउं जि म भासहि महु वाहिल्लहि वाहि विणासहि ।
आरा सरु सा भणिय महीसें णासिउँ रोउ पाणिसंफासें ।

घत्ता—णवरुल्ललिवि पयणियपुलइ आलग्गी तहु गलकंदलइ ॥
जाणिय तेण वि मायाविणिय लइ पह खयरि मयणें वणिय ॥ २२ ॥

23

कहइ कुमारु म भउंहउ चालहि हो हो केत्तिउ मइं खरियालहि ।
कइयवेण किं पुउं आढप्पइ सब्भावेण मुद्धि ध्रुवुं घिप्पइ ।
ता जररूउ विमुक्कउ कण्णइ उत्तउं कोमलसामलवण्णइ ।
भो भो णिसुणि णरेसर णिक्कल पुव्वविदेहइ वसुमइ पुक्खल ।
तेत्थु धोयकलहोयमहीहरु तहिं रायउरि वसइ करिकरकरु ।
राउ अकंपणु विज्जाहरवइ सप्पिपह गेहिणि धूव सुहावइ ।
णामें हउं भुयणयलि पसिद्धी सा ण विज्ज जा महु णउ सिद्धी ।
णहयरणाहहिँ मिलिवि सणिद्धउ महु विज्जाजयपट्टु णिबद्धउ ।

22. १ MB सिरिवालु. २ MB अणेयहिँ. ३ MB वुड्ढ तुहु णरवर दीणउ. ४ MB णिउ. ५ MB °दोगसु. ६ B णासमि. ७ MB °संपरिसें.

23. १ MB खलियारहि; T खरियालहि. २ MB कइवएण. ३ MB पिउ. ४ MB धुउ. ५ MB गयउरि णिवसइ. ६ K मिलवि.

22. 10 *a* आरा सरु समीपमागच्छ. 12 वणिय व्रणिता.

23. 1 *b* खरियालहि कदर्थयसि. 2 *a* कइयवेण कैतवेन कपटेन.

को वरु ताए पुच्छिउ जइवरु तेण वि कहिउं तासु चक्केसरु ।
अवरु वि णिसुणि देव तुहुं सुहहलु कच्छावइवसुहहि रयणायलु ।
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि कंपणु खगवइ घरिणि विमाणिणि ।
ताहं पुत्ति वप्पिल महु पियसहि णं गोमिणिरमणिहि वल्लह महि ।

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय सा तोएं तिम्मइ कंचुलिय ॥
डज्झइ विरहें वेल्लहल किह दवदहणें अहिणववेल्लि जिह ॥ २३ ॥

24

घरु गइयहि मुहणिग्गयवायइ महुं अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।
को वि आएसपुरिसु तहु मुद्दिय पेच्छिवि सुय मयणेण विमद्दिय ।
बालवयंसियाइ ण विकंप्पिउ मज्झु वि ताइ सहियउं समप्पिउ ।
मइं धीरिय सा ससिरयराहिं मेलावकु करमि लहु णाहिं ।
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु मयणवेयसीमंतिणिरमणहु ।
तहिं जि देसि अण्णेक्क वि सुंदरि मयणवइ त्ति दुहिय विज्जाहरि ।
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु जो जोइहिं भासिउ हयाहिमदलु ।
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंबलु वियलिउ तहि तरुणिहि माणि दिहिबलु ।
सूहव तुज्झु विओएं पीडिय चिंताचक्कें सा वि भमाडिय ।
कंदइ कणइ विमुक्कत्तंसी दुक्करु जीवइ मज्झु वयंसी ।

घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ उद्दामकामकीलणरसइ ॥
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ पंगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥ २४ ॥

७ MB तुहुं जि. ८ MB रयणायलु. ९ B गोमिणिहि णवल्लवल्लह महि.

24. १ MB घर. २ MB अमु. ३ MB वियप्पिउ. ४ MB सहिउ. ५ MB सिसिरयराहें. ६ M तेरउ पेच्छिवि; B तेरउ पुच्छिवि. ७ MB मण°. ८ MBT विमुक्कवयंसी; G*p* विमुक्का तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; K*p* विमुक्कतसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T विमुक्कत्तंसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

12 *b* गोमिणिरमणिहि लक्ष्मीस्त्रियः. 13 तोएं प्रस्वेदेन.

24. 3 *b* सहियउं स्वहृदयम्. 4 *a* ससिरयराहिं चन्द्रसदृशेन, *b* मेलावकु मेलापकः. 10 *a* विमुक्कत्तसी विमुक्तावतंसा.

25

तुहुं पत्थाणिउ तडिजवखयरें एव पजंपिउ णरवइणियरें।
हउं णउ पत्तियंति गय तेत्तहि तेरी णयरि णराहिव जेत्तहि।
पयकुवलयसंबोहणचंदहु पयहिं पडिय गुणपालजिणिंदहु।
सज्जणणयणाणंदजणेरउ पुच्छिउ सो आगमणु तुहारउ।
तेण पउत्तउ सिसुभूमीसरु सत्तमि दिणि आवइ भाभासुरु।
विज्जालाहें सहुं घरि पइसइ पुरयणु सयलु जिं पउ जि भासइ।
दिट्ठउ तुहुं भायरु अलिकुंतल दिट्ठी मायरि सोयविसंठुल।
सुरमहिहरसमीवि णिवसंतइं हा सिरिपाल देव भणंतइं।
कंदंतइं विमुक्कसिरकेसइं दिट्ठइं परियणसयणसहासइं।
पव्वइ पइसिहिंति पुरि तइयहुं तुहुं मिलिहीसि णराहिव जइयहुं।

घत्ता—णरतरु गयँ गय जि गयागयउ गणियाउ णाइं वणदेवयउ॥
भो वल्लह पइं एक्केण विणु जणसंकुलु पट्टणु णाइं वणु॥ २५॥

26

गिरिसरिदरिवणसयइं णियंतिइ खयरावासहिं पइं जोयंतिइ।
दिट्ठी मउलियच्छि लोलंती पंडुगंडघुलियालयवंती।
विज्जुवेय तुह विरहें सोसिय मरणमणोरह मइं मब्भीसिय।
जइ तुह पियसंजोउ ण संधमि तो विज्जाहरपट्टु ण बंधमि।
णियभालयालि किसोयरि जाणहि अप्पउ मा ललियंगि विमाणहि।
भोयवइहि केरी वियलियमय रइयारिणि सहि तहिं जि समागय।
उत्तउं ताइ वयंसिइ दिट्ठउ अज्जु चंदु णिसि भवणि पइट्ठउ।
णिग्गउ पुणु जाणिउं दुस्सिविणउं जिणपुज्जुच्छउ परइ सण्हवणउं।
संतिअत्थु सयलहिं सुअरेव्वउ सिद्धकूडजिणणिलइ करेव्वउ।

25. १ BK णरवर°. २ MB पिय°. ३ MB गुणवाल°. ४ MB वि. ५ MB भायरु तुह. ६ MB °विसंथुल. ७ MB सिरिवाल देव पभणंतइं. ८ MB सिरि. ९ MBK सव्वइं. १० M गयगजिगयागउ; B गय गय जि गयागयहो.

26. १ MB °दरिपइणइं भमंतिइ. २ MB मंभीसिय.

25. 3 *a* पयकुवलय° प्रजाः एव कुवलयानि.

26. 3 *b* मब्भीसिय आश्वासिता. 5 *b* विमाणहि क्लेशय. 8 *b* परइ प्रभाते.

घत्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ अवरहुं वि लेहु मुद्दइ सहिउ ॥
भोयवइहि तुहुं सहि गउरविय हक्कारी तुंह[1] हउं पट्ठविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि हउं आरूढी सिरिसिहरुप्परि ।
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ दिट्ठउ तहिं काणणि छण्णउ ।
सत्तावीसं जोयणवत्तउ भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।
असणिवेयखयरें वणि घित्तउ मइं कारुण्णएण मृगणेत्तउ[1] ।
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ अप्पियाउ णरवालहु धीयउ ।
हउं पइं दोदियहइं जोयंती अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।
जाम ताम तेरी वित्थारें कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।
एत्थायइ तुहुं मइं अवलोइउ मयणें पंचेमु सरु मणि ढोइउ ।
कंचुइरूउ देव मइं धरियउ पिडउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।
जाणिओ सि [3]णेमित्तिकिबंधें कहिय पुंडरिंकिणि[4]पुरविंधें ।

घत्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥
कह कहइ पुरंधि सुलोयणिय वरकुंदपुप्फदंताणणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरकुमारीविरहावण्णणं
णाम बत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥

॥ संधि ॥ ३२ ॥

१ MB हउं तुह.

27. १ MB मिगणेत्तउ. २ MB पंचमसरु. ३ MBT णेमित्तिणिबंधें. ४ MB °पुरि°. ५ MB °विरहवण्णणं.

27. 10 *a* णेमित्तिकिबंधें नैमित्तिकानामादेशेन.

XXXIII

सव्वोसहिसामत्थु तरुणें तेण पयासिउं ॥
कयउं सुहावइयाइ णियवुड्डत्तु विणासिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

संसाहियविज्जासासणेण कोमलकरयलसंफासणेण ।
उद्दामकामकामणमईहि विट्ठुणियउं जरत्तु सुहावईइ ।
वेण्णि वि तारुण्णालंकियाइं खगकण्णइ वयणइं जंपियाइं ।
तुह देउ महारउ प्राणइट्ठु तुहुं चक्कपाणि सयमेव विट्ठु ।
विज्जाहर पिसुण हणंति जेम ण करेव्वउ पइं वि ण मइं वि तेम ।
महु कंचुइवेसुद्धारिणीहि चडु खंधइ से सुंहकारिणीहि ।
धरि थेररूउ सुविचित्तकूडु आवेहि जाहुं तं सिद्धकूडु ।
तहि वोद्दहीउ पीवरथणीउ मिलिहिंति अज्जु तुह पणइणीउ ।
कंकेल्लिबालपल्लवभुयाउ अवलोयहि खेयरवइसुयाउ ।
ता खंधारोहणु कियउ तेण सा विज्जुचवल चल्लिय णहेण ।
उल्लंघिवि तुरिउ णहंगणंतु संपत्तइं जिणहरपंगणंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तसयइं उग्घुट्ठइं ॥
विण्णि वि वुड्ढइं ताइं मुहसालहि उवविट्ठइं ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रशक्त (प्रसक्त ?) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °साहणेण. २ MB पाणइट्ठु. ३ MB सुहयारिणीहि. ४ MBT वोद्दहीउ. ५ MB संपत्तउ.

---

1. 4 *a* उद्दामेत्यादि—उद्दामकामः श्रीपालः तस्य कामने सेवने मतिर्यस्याः सा तस्याः. 6 *b* विट्ठु विष्णुः. 8 *b* चडु आरोपय. 10 *a* वोद्दहीउ तरुण्यः .

2

भोयवइ भडारी विज्जुवेय   तहिं ढुक्की वप्पिल णिरुवमेय ।
मयणवइ समागय मयणलील   रइरमणिहि केरी णाइं कील ।
अण्णाउ मणोहरवण्णियाउ   कण्णाउ अट्ठ अवइण्णियाउ ।
जरसरिधुयसिरकेसासियाइं   कुंयरिहिं थेरइं संभासियाइं ।
अवलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि   पुणु कंचुइ थिउ विब्भंतबुद्धि ।
छंडिवि जरत्तु जाणियमईइ   णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ ।
थिय पुणु पच्छण्णी सा कुमारि   दुल्लक्खचारु होएवि थेरि ।
वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि   भूभंगें दरिसिउ तडिरयाहि ।
ताइ वि बोल्लाविउ पिउ अणंगु   मायाजराइ पच्छाइयंगु ।
भोयवइइ तहिं पारद्धु हासु   वुड्ढहु उप्परि पेम्माहिलासु ।
हलि असणिवेय ससि काइं करहि   लहु णवजुवाणु वरु को वि वरहि ।

घत्ता—ता खयरायसुयहिं बंभु महेसरु अच्चुउ ॥
णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु   चंचलचित्तहिं गिरिथिरचित्तु ।
विरहें तत्तहिं तवचरणतत्तु   मृगणेत्तहिं झाणणिलीणणेत्तु ।
मज्झें खीणहिं संखीणपाउ   थड्ढत्थणीहिं णित्थड्ढभाउ ।
कुडिलालयाहिं अकुडिलमइल्लु   जणमणसल्लिहिं णिम्मुक्कसल्लु ।
णहचारकमियमंदरदरीहिं   वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं ।
अहिसेउ कयउ पुज्जापयारु   ता वंकगीउ णामें कुमारु ।

2. १ MB मणोरम°. ६ MB कुअरिहिं. ३ MB विसमंतबुद्धि. ४ MB छड्डिवि. ५ MB सो जोइउ. ६ B सस; K ससे. ७ K खगराय°. ८ B °सुयहिं.

3. १ B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहिं inclusive. २ M मिग°. ३ MB थड्ढ°. ४ MB णित्थड्ढ°. ५ MBK णिम्मुक्कु. ६ MB वंकगीउ.

---

2. 11 *a* स सि हे भगिनि.

3. 1 *b* गि रि थ वि र° अतिशयेन स्थिरम्.

संपत्तउ सहुं णियपरियणेण थेरेण थेरि पुच्छिय अणेण ।
आहरणविसेसहिं विप्फुरंतु किं धावइ णरमेलउ तुरंतु ।
ता हसिवि पउत्तउ कंचुइइ के के ण वि हय विज्जाराइइ ।
इय भोयवंति पुरि तिसिरराउ णिवसइ रइपहकंतासहाउ ।
सुय तासु पहावइ जेट्ठ पुत्तु सिंहुं णामें गुणमंडणें णिउत्तु ।
एयहि रयणिहिं रुंजंतसाणि बहुरूविणि साहंतहु मसाणि ।
विरइउ विज्जइ कोट्टग्गभंगु जरवेयं कंपावियउं अंगु ।

घत्ता—आवेप्पिणु पणएण भिसएं भेसहु दिण्णउं ॥
वड्डंतउ जरलिंगु रायकुमारहु छिण्णउं ॥ ३ ॥

4

णउ फिट्टइ कंठहु वंकभाउ आउच्छिउ जणणें वीयराउ ।
किह होसइ सिसुगलउज्जुयत्तु तं णिसुणवि जइवइणा पउत्तु ।
सव्वोसहि सिज्झइ भुवणि जासु तुह पुत्ति पहावइ पिययमासु ।
करफंसें तहु चक्केसरासु होसइ सुयगीयाभंगणासु ।
आवेसइ सो जिणणाहणीडु णामेण पसिद्धउ सिद्धकूडु ।
तहु दिवसहु लग्गिवि भडसमेउ अवयरइ एहु सररिउणिकेउ ।
जो णासइ कंधरभंगुरत्तु सो चुंबइ कण्णहि तणउं वत्तु ।
अण्णेक्कु लहइ मंडलु हयारि ता पभणइ धीरें परोवयारि ।
किं कण्णइ किं देसेण मज्झ धम्मेण करमि सामत्थ सज्झ ।
ता वेज्जें वेज्ज घोसिउ णिवेणें आगा सरु हो भासिउ णिवेण ।
णलिणीहकरग्गें छित्तु जाम गलंमोडि पणट्ठी तासु ताम ।

७ M धावउ. ८ MBK तिमिरु राउ. ९ MB रविप्पह°. १० MB सिउ. ११ MB °मंडणु.

4. १ M सिसुगलु उज्जुयत्तु २ MBK °गीवा°. ३ MB सहसकूडु. ४ MB वीरु. ५ MB सामत्थु सज्झु. ६ M विज्जु विज्जु; G वेज्झु वेज्झु but gloss वैद्य वैद्य. ७ MB सिवेण. ८ MB णरणाह. ९ MB गलमोडिय फिट्टिय.

9 *b* ° रइइ आभिलापेण. 14 भिसएं वैद्येन. 15 वड्डंतउ जरलिंगु प्रवर्धमानं ज्वरस्य लिङ्गम्.

4. 6 *b* सररिउणिकेउ स्मररिपुर्जिनस्तस्य गृहम्. 9 *b* सज्झ साध्यम्. 10 *b* आगा सरु समीपमागच्छ. 11 *a* णलिणाह° कमलसदृशेन.

गउ मंदिरॅं तणुरुहु सरलगीउ अवलोयवि सुट्ठु पहिट्ठु ताउ ।
परमेट्ठिघरंगणसंठिएण परकज्जारंभुक्कंठिएण ।
केण वि कंचुइणा वाहि महिय इय मंतिहिं वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता—विरइयकवडजराए ढंकियणववयकायहो ॥
वलिउ तुरिउ णरिंदु पासु तासु जांवायहो ॥ ४ ॥

5

छुडु छुडु करि चोइउ दाणवासु जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु ।
अवइण्णउ जाम खगिंदु तिसिरु सुहिसुहदंसणु पाणीयतिसिरु ।
ता मायाविइ वंचणमईइ णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।
पियजीवधणरक्खणमईइ मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।
पल्लट्टउ तिसिरु अपेच्छमाणु जलहरवहजवचाहियविमाणु ।
एत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु तडिवेयायारु णरेसरासु ।
करसाहाणिहियइ मुद्दियाइ कउ माणवणयणविमोहियाइ ।
गय पत्त सुहावइ अवर का वि णामेण सुहोदय जेत्थु वावि ।

घत्ता—णवइंदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥
पाणियवत्थअियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥ ५ ॥

6

कण्णउ हक्कारइ जाम तेत्थु जलकीलहि देंतिउ कमलहत्थु ।
तामेक्क वि तरुणि ण दिट्ठ ताइ गइयउ सरु परियाणिउं इमाइ ।
एत्तहि रायं उद्दामतेय अप्पाणउं दिट्ठउ विज्जुवेय ।

१० MB मंदिर तणुरुह ११ MB पहिट्ठु. १२ MB जामायहो.

5. १ MB °दयावयासु; T ° दयाणुवासु. २ B अइवण्णउ. ३ M सुहमुहदंसणपाणिय°; B सुहिमुह- पाणिय°. ४ MB °धम्म°. ५ MB° विमुद्दियाइ.

---

16 जांवायहो जामातुः.

1 *a* दाणवासु मदवर्षः; *b* छज्जीवदयाणिवासु षड्जीवनिकायेषु दयायाः निवासः. 2 *b* °तिसिरु सतृष्णः. 3 *b* मउ मृगः; मईइ मृग्या. 5 *b* जलहरवह° आकाशम्. 6 *b* तडिवेयायारु विद्युद्वेगरूपम्. 7 *a* करसाहा° अङ्गुली.

अवणियउ समाहप्पंगुलीउ णियरूवधारि थिउ मंतु गीउ ।
तो तहिं अवसरि तहिं चेडियाइ किं मुद्दइ हत्थहु फेडियाइ ।
धयरट्ठसिलिंधयगामिणीइ सुसुहावईइ मह सामिणीइ ।
जलरमणकज्जसंकेइयाउ इह खगवइधीयउ णाइयाउ ।
अलिचुंबियगयलंबियधयाउ अण्णेत्तहिं कत्थइ जहिं गयाउ ।
तहिं गय हउं णिहिय समीवि तुज्झु अवरु वि णरिंद वज्जरमि गुज्झु ।
कण्णाकाराणि मच्छरु वहंति असमंजसु धुवुं पइं ते वहंति ।
पहउ जाणिवि महु राणियाइ उव्वसिआहल्लसमाणियाइ ।

घत्ता—अत्थि वइरि खयरिंद ताहं णाणु दलवट्टिउ ॥
अंगुत्थलियइ णाहु तुह सरूवु पल्लट्टिउ ॥ ६ ॥

7

जो जो आवइ तहु तहु ससाहि णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।
चिंतेज्जसु अज्जु महाणुभाव वंचेज्जसु पिसुण समुद्दराव ।
सविमाणविलंबियविविहकेउ एत्थंतरि पत्तउ असणिवेउ ।
ससहोयरिरूउ णिहालमाणु गउ सो णहेण खरभाणुभाणु ।
खेयर तहिं पउर वि णउ मुणंति महु महु जि बाहिणि सयल वि भणंति ।
अण्णेक्कें मुणियपवंचएण तावक्खिउ तहिं कुसुमंचएण ।
सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण गय णयरें रुक्खारूढएण ।
दट्ठव्वसोक्खउप्पायणेहिं मइं दिट्ठउ अप्पणु लोयणेहिं ।
विणु मुद्दइ कण्ण जि पुरिसरयणु सच्चउ णउ भासमि अलियवयणु ।
जं वज्जरंति गुणवंत साहु गंभीरु धीरु रिउ सोमराहु ।

6. १ MB तो. २ MB °सिलिंबय°. ३ M सुसहावईइ. ४ MB °गयलुंबिय°. ५ MB धुउ. ६ MB माणु. ७ M सुरूउ; B सरूउ.

7. १ M समुद्दभाव, B खुद्दभाव; T समुद्दराव. २ MB मुद्दिइ.

---

6. 4 *a* अवणियउ अपनीता स्फेटिता; समाहप्पंगुलीउ माहात्म्यसहिता मुद्रिका 6 *a* °सिलिंधय° बालः.

7. 2 *b* समुद्दराव हे समुद्रध्वने. 4 *b* खरभाणुभाणु तीव्रादित्यकिरणः. 6 *b* कुसुमचएण मालिकेन. 7 *a* सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण शोभनेन निजरूपेण परिस्थिते श्रीपाले यादृशं दर्शनं तत्रामूढेन अभ्रान्तेन.

जो अग्गइ होसइ[3] चक्कणाहु णिच्छउ सो पहु सिरिपालु[4] पहु ।

घत्ता—धम्मारूढगुणग्गि[5] जो आरूढउ भावइ ॥

इहु सो वम्महबाणु णारिसरीरइं तावइ ॥ ७ ॥

8

ता धाइय भड आहवसमत्थ[1] हणु हणु भणंत हलमुसलहत्थ ।

लद्धउ वइरिउ कहिं जाइ अज्जु कहिं होइ राउ कहिं करइ रज्जु ।

इय भणिवि पवेढिउ खेयरेहिं णं पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं ।

णं सिहरि पलंबिर[2]जलहरेहिं णं दिवसु दिवसणाहा[3]करेहिं ।

णं चंदणतरुवरु विसहरेहिं इम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं ।

जोएप्पिणु सरवरु सारणालु हंसीमुहचुंबिय सिसु मरालु ।

कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त सा पियवयंसि मणिवावि पत्त ।

अवलोयवि रिउसेणावियारु वालइ अइंसणु किउ कुमारु ।

णउ दिट्ठु तेहि सो तेत्थु केम अण्णाणि[4]एहिं सव्वण्हु जेम ।

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्थु अहिणवकंचणवण्णइ ॥

पुव्वुत्तइ[5] जिणगेहि वरु संणिहियउ कण्णइ ॥ ८ ॥

9

करिणि व्व कहिं वि कीलीवणासु । गय सुंदरि णियय[1]णिहेलणासु ।

णियमुह[2]ओहामियचंदकंति पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति ।

धरणीसु ताइ मुद्दाइ रहिउ णं कामु कामकामिणिहि महिउ ।

३ MB होहइ. ४ MB सिरिवालु. ५ M धम्मारूढु गुणग्गे;

8. १ MB आहवि समत्थ. २ MB पलंबिय°. ३ MBK दिवसणाहहं. ४ B अण्णाणिइ हिंस व एहु जाम. ५ B पुव्वत्तइ.

9. १ MB णियसुणिहेलणासु, २ MB णियमुहं ओहा°.

12 धम्मारूढगुणग्गि धनुष्यारूढस्य चडितस्य गुणस्य दोरस्य अग्रेतनभागे.

8. 10 परिहत्थु शीघ्रम्.

अवलोयाव वप्पिल सालएण परियाणिउं उण्णयभालएण ।
इहु सा णरिंदु गुण[3]पालतणउ जो पणइणीहिं संजणियपणउ ।
जो गिज्जइ देवेहिं धरिवि वेणु जो दुत्थियस[4]ज्जणकामधेणु ।
णं पलइ समुग्गउ धूमकेउ इय चिंतिवि धाइउ धूमकेउ ।
जिणपंगणा[5]उ रायाहिराउ उक्खित्त[6]उ गरुडें णाइं णाउ ।
णिउ रिउणा उसिरावइसमीवि कालइरिहि णच्चियणीलगीवि ।
कालक्खगुहहि कालाहिवासि घित्तउ हरिवाहिणिसेज्जदेसि ।

घत्ता—दाहिण[7]दइवारंभि खयकालेण वि[8]वज्जिउ ॥
सेज्जहि णाहु णिसण्णु कालभुयंगें पुज्जिउ ॥ ९ ॥

10

उसिरावइपुरवरि हेमवम्मु तहु भिच्चहिं भासिउ तासु कम्मु ।
जिह चडिउ सेज्जि जिह णविउ णाउ जिह णिग्गउ पत्तउ धूमकेउ ।
जिह णिउ णरवइ अण्णत्थ झ त्ति जिह केण वि ण मुणिय पुण वि थत्ति ।
तिह णिसुणिवि उसिरावइपुरेसु किंकरहं कुइउ किं कियउ दोसु ।
ण[1]उ रक्खिउ किं आपसपुरिसु किं आउंचिउ महु होंतु हरिसु ।
तावेत्तहि रइसुहलु[2]द्धएण वप्पिलमेहुणएं कुद्धएण ।
चंदउरि णिसिहि तमजालणीलि पेयालइ पहु णिक्खित्तु सूलि ।
ताडिउ खग्गें पुणु मोग्गरेण पुण्णाहिउ णउ घिप्पइ णरेण ।
णउ भिज्जइ सूलें सव्वलेण णउ खज्जइ णरु रक्खसकुलेण ।

घत्ता—घित्तउ जलणि जलंति तहि वि परिट्ठिउ अवियलु ॥
जिणपयपोमरयासु अग्गि वि जायउ सीयलु ॥ १० ॥

३ MB गुणवाल°. ४ B °सज्जस°. ५ B पंगणाहि ६ B उक्खिण्णउ. ७ MB दाहिणि. ८ MB विसज्जिउ.

10. १ B किं रक्खिउ. २ MB °लद्धएण.

---

9. 4 *a* सालएण श्यालेन. 9 *b* °णीलगीवि° मयूरे. 11 दाहिण° अनुकूलम्.

10. 10 जलणि ज्वलने अग्नौ.

11

जिणु सुमरंतहं सीहु वि ण खाइ विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ।
असिघडणहुयवहुग्गमियजालि ओवडियसुहडसंगामकालि।
जिणु सुमरंतहं रिउ थरहरंति धीरें वि पच्छाउहुं ओसरंति।
करडयलगलियमयजलपवाहु गुमुगुमुगुमंतचलमहुयरोहु।
धावंतु पंतु गिरिवरसमाणु उरि देंतु वेहुं बद्धयविसाणु।
रयपिंजरु कुंजरवरु वि खलइ जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ।
वणगलियरुहिरें करसडियणास अविणट्ठकट्ठकुट्ठाविसेस।
खैयखासजलोयरजणियसोय जिणु सुमरंतहु णासंति रोय।
णिन्थाहसलिलि सरहयदियंति करिमयरमच्छपुच्छुच्छलंति।
माणिक्ककिरणमालाविचित्ति कल्लोलंदोलियजाणवत्ति।
जिणु सुमरंतहं जलयरउद्दि वुड्डिज्जइ ण कयाइ वि समुद्दि।
जिणु सुमरंतहं मंगलइं होंति पयसंखलवलयइं परियलंति।

घत्ता--सत्तु वि मित्त हवंति विट्ठि वि भल्लउ वासरु॥
जिणु सुमरंतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसरु॥ ११॥

12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु।
आसीणु सिलायलि रायहंसु णं भिसिणीदलयलि रायहंसु।
अइबलु णामें पुरि वसइ तेत्थु विज्जाहरु विज्जाबलसमत्थु।
णं वम्महरायहु तणिय सेण तहु घरिणि कुसीलिणि चित्तसेण।
मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण।
आगय पिउवणहु नहि णिभाणु दिट्ठउ सिहि मुहाणिग्गच्छमाणु।
चिंतिउ अणाइ जयलच्छिगेहु ण पलित्तउ पयहु तणउ देहु।

11. १ M सुमरंतहु; B सुमिरतहु. २ MB वीर. ३ MB पच्छामुहुं. ४ MB °वरमहु°. ५ MB लोहबद्धउ. ६ MB रुहिरु. ७ MB खरखास°; G खरखाय°. ८ MB °सलिलसरसय°. ९ MB परिसंखल°. १० MB परिगलंति.

11. 2 *a* असीति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसंघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला यत्र. 8 *a* खय° क्षयरोगः. 9 *a* °सरहय° जलेन हताः. 12 *b* पयसंखल° पदे शृंखलाः.

जं तं होएवउं कारणेण काइं वि संबंधवियारणेण ।
इय भणिवि महिल कोऊहलेण तहिं सा पविट्ठ णवराणलेण ।
णउ दट्ठी जालाचारिएण सव्वोसहिरसहयवीरिएण ।
णीसरिवि णिसण्णी णिवहु पासि अवइण्णउ ता पिउवणणिवासि ।
अइबलु गेहिणिचरणयलवडिउ हउं मंदबुद्धि पिसुणेहिं णडिउ ।
आवेहि कंति वच्चहुं णिकेउ ता चवइ धुत्ति संभरिवि हेउ ।

घत्ता—हक्कारहि णियबंधु दीवु धरेप्पिणु गच्छमि ॥
असइत्तणमलेणेण मइलिय केत्तिउ अच्छमि ॥ १२ ॥

13

ता महिलारइरसवेभलेण मेलाविय बंधव अइबलेण ।
उवविट्ठी सइरिणि धगधगंति हुयवहि दूसहि विद्धत्थधंति ।
सा तेण ण दड्ढी कह वि केम मायाविणि वेस जडेण जेम ।
वंदिय लोएण महासईहि हुयउ सिहि सीयलु सुहमईहि ।
दुच्चारिणिचरिउ णियच्छमाणु पवियप्पइ रिउमहिरुहकिसाणु ।
णिग्गंथसीलु को संपयाइ पारद्धिउ को सेविउ दयाइ ।
भणु सासिउ रायपसाउ कासु सघरत्थु वि कं ण डहइ हुयासु ।
वसणेण ण किउ को जगि णिरत्थु असईयणे वंचिउ को ण एत्थु ।

घत्ता—अविवंचिउ णारीहिं माहियलि को वि ण वच्चइ ॥
भरहपुप्फदंतेहिं पेच्छउ जणु जिह रुच्चइ ॥ १३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विज्जाहरीमायापवंचणो
णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥
॥ संधि ॥ ३३ ॥

12. १ MB वि. २ T भेउ. ३ MB दीउ. ४ MB असइत्तणयकलंकु.

13. १ MB °रसविंभलेण. २ MB हुयवहदूसहि विद्धत्थवंति. ३ MB कहि. ४ MB विडेण. ५ MB णिग्गंथसीलु. ६ MB सासउ. ७ M पसाय. ८ MB किं. ९ MB जगि को. १० MB अविअंचिउ. ११ MB पेच्छिउ.

12. 1 *a* अहयपिंडु अनुपहतशरीरः. 7 *a* अणाइ अनया. 10 *a* जालाचारिएण ज्वलतः.

13. 2 *b* विद्धत्थधंति विध्वस्तध्वान्ते. 3 *b* वेस वेश्या. 7 *a* सासिउ शाश्वतः. 10 भरह° नक्षत्रप्रच्छादकौ.

XXXIV

सा कवडपइव्वइय आलुंचियवय णियपियभवणि पइट्ठी ॥
कामिणिमणहारें तहिं जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्ठी ॥ ध्रुवकं ॥

I

जयसत्तु विमलमइ देविसुय   कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।
विज्जासंसाहणि गहगहिय   आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ   इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ ।
तहु तहु तुहुं बंधवु देहि सूयँ   महु तणयहि करहि सणाहकियँ ।
ता तरुणें मंतवसिल्लियहि   पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।
अवरोप्परु हियवउं ढोइयउं   दोहिं वि अहिलासें जोइयउं ।
ईसावसेण रूसिवि वरहो   गय इय त्ति सुहावइ णियघरहो ।
बुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ   आणिउ णियभवणहु भुवणवइ ।

घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥
तेहिं वि पूयँ मुद्धहिं रूवालुद्धहिं णियणियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

तीव्रापद्दिवसेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ MB °पइव्वय. २ MB बंधउ. ३ MB सिय. ४ MB किय. ५ MB °भुवणहु. ६ MB पिय. ७ MB सुद्ध विसुद्धहिं; B सुद्धविसुद्धहिं.

---

1. 1 °पइव्वइय पतिव्रता; आलुंचियवय त्यक्तव्रता. 6 *a* सूय श्रीः. 7 *b* पिसल्लियहि पिशाचगृहीतायाः.

2

सासुरेण भणिउं भो चंदमुह कीरइ विवाहकल्लाणु तुह ।
तेण वि तहु वयणु पलोइयउ हियउल्लउं बंधुविओइयउं ।
हे माम ताम मइं णेहि तहिं वसुपालु[1] सहोयरु वसइ जहिं ।
तहु मिलिवि धरमि करु सुंदरिहि सुरणरणयणंतरंगहरिहि ।
तं णिसुणिवि सज्जणमणु मुणिउं जियसच्चुं[2] सलिलसेणु[3] भणिउ ।
सुंदरु लएवि बहुसोक्खयरि लेंहु[4] जाहि पुंडरिंकिणिणयरि ।
ता सुहउ लएप्पिणु भमियगेह[5] गउ वारिसेणु वारिहरवहे ।
णिसि णिवइ तिसइ सोसियवयणु पत्तउ विमलउरु तुंगतणु ।
जलु जोयहुं चलिउ खगाहिवइ जा दिट्ठि कमलवाविहि घिवइ ।
ता सुक्क णिरिक्खिय तेण किह णिण्णेह विलासिणिकील जिह ।

घत्ता—दूसियदेहुण्हइ[6] लइयउ तण्हइ धायझलक्कइ रीणउ ॥
णवसत्तच्छयतालि खगकोलाहलि जहिं अच्छइ आसीणउ ॥ २ ॥

3

विज्जाहरेण आसासियउ नहिं जायवि पहु संभासियउ ।
आहिंडिवि देव असेसु वणु मा बीहहि आणवि[1] सिसिरु वणु ।
इय भणिवि वेयवाहिणि सरिया[2] गउ दिट्ठ तेण पाणियभरिया[3] ।
अइअविहयहरिणुत्तण्हियहि[4] अणुहरिय सा वि मायण्हियहि ।
रायाहिराय दलियावइइ सामिय कण्णाइ सुहावइइ ।
पिउ जाइवि मालइ ताडियउ तण्हाकिलेसु णिद्धाडियउ ।
अलहंतु सलिलु विडवुब्भडहु[5] आयउ सरमेणु सरीयडहु ।

2. १ B वसुवालु. २ MB जियसत्तु ३ M सलिलासणु ४ MB तुहु. ५ MB भणिय गेहे. ६ M दूणिय°.

3. १ MB आणउं. २ MB सरिय. ३ भरिय . ४ MB हरिणु व तण्हियहि ५ MB वियडुब्भडहु; T विडउब्भडहु.

---

2. 11 धायझलक्कइ शीघ्रगमनोद्भूतौष्ण्येन; रीणउ श्रान्तः.

3. 4 *a* अ ई त्या दि—अतिशयेन विहृता हरिणानां उत्तृष्णा यया; *b* मा य ण्हि य इ मृगतृष्णिकया. 7 *a* वि ड वु ब्भ ड हु विटपाः वृक्षाः उद्भटा उल्बणा यत्र; *b* स र से णु वारिषेण.

छण्णइ कण्णइ बोल्लावियउ तुहुं केण बप्प वेहावियउं[6]।
किं पाविज्जइ घरु रमणुं[7] पइं जज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं।
पयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ मा करहि चित्तु अहिमाणमइ।
तं णिसुणिवि सो पल्लट्टु णरु णिविसेंण[8] पराइउ णिययघरु।
सयणहं संबंधु समासियउ णेइवाविजलोहउ[9] सोसियउ।
सइं पुहइणरिंदु परिग्गहिउ हउं पत्थु कुमारिइ संपहिउं[10][11]।

घत्ता—तहि तणियइ मोलिइ[12] चलभसलोलिइ[13] पहु छुह तण्ह ण पावइ॥
जसु घरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु कहिं[14] आवइ॥ ३॥

4

तं णिसुणिवि सयणहिं बोल्लियउ कण्णइ तिजगु वि उच्छल्लियउ।
सिरिपाल[1] कप्पतरुवरवइहि सामत्थु पघुट्ठु सुहावइहि।
एत्तहि णंदणवणि संडियउ णरणाहु णरहु उक्कंठियउ।
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ।
चिंतइ कुमारु मुणिमणमहहु मग्गण पडंति किं वम्महहु।
पइरत्तइ[2] पुव्ववहुल्लियइ णिहंसणरूवु समुल्लियइ।
लक्खणपमाणमाणें मविउ कण्णासरूउ तहु णिम्मविउ।

६ MB add after this the घत्ता couplet:—

घत्ता—खरतावविमीसें गिंभाविसेसें कच्छवमच्छवहूइ॥
असिलट्ठि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हूई॥ ३॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवकs as 4 etc, upto 13. ७ MB रमण. ८ M णिवसेण, B णिमिसेण. ९ MB णयवावि°. १० MB संपिहिउ. ११ MB add after this the following three lines: हरिणुल्लउ वहइ ससंकु जलु, संजणइ सबिंबहु तेण मलु; मुहससहरु मिगणयणाई बहइ, अच्चंत जाहि पोढिम वहइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय. १२ MB मालइ; K मालिइ but corrects it to मालइ. १३ MBK °भसलालइ. १४ M किं.

4. १ MB सिरिवाल. २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पहसिवि पुव्ववहुल्लियइ.

---

4. 3 *b* णरहु वारिषेणस्य. 4 *a* दुज्जियइ केनाप्यपराजितः. 6 *a* पुव्ववहुल्लियइ सुखावत्या; *b* णिहंसणरूवु निदर्शनरूपम्; समुल्लियइ समायुक्तया.

चिंतइ चिंताउलु भुवणवइ संचियसंसयसंमूढमइ।
महु केण कुमारिरूवु ठविउ विणु मुद्दइ पुणु किह संभविउ।

घत्ता—तं रूवु णिएप्पिणु महिल भणेप्पिणु दूसहमयणें भग्गा॥
णियगोत्तदिवायर बिण्णि वि भायर विज्जाहर तहु लग्गा॥ ४॥

5

एक्कहि भिसिणिहि दो हंसवर एक्कहि किसकलियहि दो भमर।
जइ होंति होंतु ण घडइ अवरु सरु संधउ विंधउ कुसुमसरु।
एक्कहि तरुणिहि किं बिण्णि जण मउकरयलेहिं माणंति थण।
इय चिंतिवि रणु पारंभियउ सुयणत्तणु बिहिं वि णिसुंभियउ।
सिरिधूमवेयहरिवाहणहं अवरोप्परु कड्ढियपहरणहं।
अंतरि गरुयारउ भाइ थिउ बिहि पेम्मणिबंधु रउद्दु किउ।
मित्तत्तणु विहडइ बंधवहं किं पुण इह अवरहं अहिणवहं।
इय भणिवि णिवारिय बे वि वर उक्खयकरवालकरालकर।
रुप्पयरहरायहु तणउं घरु णियमायाकुंयरिउत्तुंगसिरु।
रायं तहिं चारु वियप्पियउ तणयाहरि सिविरु समप्पियउ।

घत्ता—जुवयणमणचोरिहि भणिउं कुमारिहि एह कालु किं आइय॥
ता पीवरथणियइ खगवामणियइ विहसिवि वत्त णिवेइय॥ ५॥

6

एह माइ सामिणी महंगुणेहि जुत्तिया पुंडरिंगिणीपुरीणराहिवस्स पुत्तिया।
एत्थ कामलंपडेण खेयरेण आणिया भूपसिद्ध मुद्ध भूमिगोयरी वियाणिया।
हारदोरभूसियंगि तारतंबणेत्तिया जंपए ण भाउमाउआविओयतत्तिया।

३ M सिंचियसंपय°; B साचियसंपय°; T संचिय°. ४ MB °रूउ. ५ B विज्जाहरहो.

5. १ MB रहसेण पवाहियवाहणहं. २ MB उक्खयसुकरालकिवाणकर ३ M °कुयरिउ तुंगसिरु. B °कुवरिउत्तुंगसिरु. ४ B रायहु तहु चारु समप्पियउ. ५ B सवरु ६ MB खगकामिणियइ.

6. १ MB पुंडरिंकिणी°. २ MB °भूसियंग.

5. 6 *b* रउद्दु अतिशयवान्. 10 *b* सिविरु आवासः. 12 खगवामणियइ वामनीरूपया विद्याधरस्त्रिया.

ताम जक्खदेवएण वड्डिमा वियारिया लच्छिवाल चक्कवट्टि एस णो कुमारिया ।
खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी ।
वक्खवेहि वल्लहं विलासभासियाण संगहं[3] सूहवं समाणिणी[4] अदीणमाणणिग्गहं ।
तं मुणेवि[5] सुंदरीइ एणलंछणाणणो रूवि[6] वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो ।
मंतिऊण चिंतिऊण दिव्वमंतसंगमं दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविब्भमं ।
[7] दंसिओ वहुल्लियाण पुंडरीकिणीवई तं पलोइऊण ताण वट्टिया मणे रई ।
का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया का वि णीससंतिया वयंसियाहिं जोइया ।
पैंज्झरंतसोणिया सहीयणस्स लज्जिया का वि मुच्छिया चलंतचामरेहिं विज्जिया ।

घत्ता—इय कण्णंतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पाहि थवियउ ॥
भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुररायहु विण्णवियउ ॥ ६ ॥

7

जा तरुणी बाला लइ थविय सा अम्हहं खुज्जइ[1] दक्खविय ।
सा कण्ण ण होइ मरालगइ सिरिवालु णाम रायाहिवइ ।
ता खयरकुमार वीरपवर धाइय अणंत इच्छियसवर[2] ।
असिकणयकोंतविप्फुरियदिस वग्गिय मग्गियसंगामभिस ।
सुंदरु पेक्खिवि उवसंत किह जिणणाहु णिहालवि भव्व जिह ।
तहिं समइ खगिंदु पराइयउ[3] जामाउ सिणेहें[4] जोइयउ ।
जाणिउ परमेसरु चक्कवइ संतोसिउ विज्जाहरणिवइ ।
संमाणिउ कंकणकुंडलेहिं वरहारदोरमणिउज्जलेहिं ।
तियसाहव[5]जयसिरिलंपडेहिं हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।
चिंतिउ दोहिं पि समेहलहिं अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं ।

३ MB विलासहाससंगहं. ४ M समाणमाणिणीए माणणिग्गहं; T अदीण. ५ MBK सुणेवि. ६ MB रूव°.
७ MBK add का वि before this.

7 १ MB जक्खइ. २ MB इच्छियसमर. ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुज्जियउ. ५ MB तियसाहिव°.

6. 6 *b* अदीण° प्रचुरः. 7 *a* एणलंछणाणणो चन्द्रमुखः.

7. 9 *a* तियसाहव° त्रिदशसंग्रामः. 10 *a* समेहलहिं उपशमवाञ्छास्वीकारेण युक्ताभ्याम्; *b* समेहलहिं मेखलासहिताभ्याम्.

घत्ता—थिउ कण्णारूवें मायाभावें रिउ रणि णउ संघारिउ ॥
गयँ विज्ज पणासिवि गुणगणु दूसिवि अप्पउ पर वेयारिउ ॥ ७ ॥

8

गयणि[१] जं अम्हहिं कलहियउ तं केण वि कहिं मि ण संलहियउ ।
खगणाहें णवरु[२] पुच्छियउ तुहुं महिलायारु णियच्छियउ ।
पुणरवि संजायउ पुरिसु[३] जिह वित्तंतु असेसु वि कहहि[४] तिह ।
तं णिसुणिवि तेण समासियउ बालासामत्थइ[५] विलसियउ ।
गउ विज्जावइ णियमंदिरहु णिद्दंगि रमिय तहु सुंदरहु ।
सुहँसुत्तु[६] जि खयरिहिं हरवि णिउ भणु कासु ण रुच्चइ प्राणप्रिउ[७] ।
गुलखंडु[८] रसायणु जेरिसउं सुहयहु सुहवत्तणु तेरिसउं ।
किं वण्णमि तिहुयणमुद्दियउ णिज्जंतहु तासुण्णिद्दियउ[९] ।
मुहुं[१०] तामरसु व आयासरसि दीसइ वियसिउ चवलंबुहरि ।
जगगरुयउ गयणु विराइयउ[११] अरहंतु व तेण पलोइयउ ।

घत्ता—पुणु णियसीमंतिणि तंतिणि [१२]मंतिणि चिंतिय तेण सुहावइ ॥
पइं विणु मणहारिए देवि भडारिए को रक्खइ महु आवइ ॥ ८ ॥

9

हउं णिज्जम्मि[१] लग्गउ केण कहिं किं जीवमि किं धुवु[२] मरमि जहिं ।
रवियरपज्जालियमउडमणि तो[३] पयड परिट्ठिय णहरमणि ।
पभणइ किं जूरहि पुरिसहरि ओहच्छमि हउं तुह विहुरहरि ।
जं भणसि तं जि हेलइ करमि पलयक्कु वि गयणि जंतु धरमि ।

६ MB गय वज्जेवि णासिवि.

8. ५ M सालहियउ; B मलहियउ. २ MB णरवरु ३ B पुरिस. ४ MB कहिउ. ५ MB °सामत्थु पविलसियउ. ६ B सुहसुत्तु जि. ७ MB पाणपिउ; K प्राणिप्रिउ. ८ B °खंड. ९ MBT तासु विणिद्दियउ. १० B मुह तामरसु. ११ MB णिराइयउ १२ MB मित्तिणि, T मंतिणि.

9. १ MB णिज्जमि; २ MB धुउ. ३ MB तो.

8. 8 *b* उ ण्णि द्दि य उ निद्रारहितम्. 9 *a* ता म र सं पद्मम्. 11 तंतिणि अशेषौषधपरिज्ञानयुक्ता; म ति णि अशेषमन्त्रपरिज्ञानयुक्ता च.

9. 2 *b* ण ह र म णी विद्याधरी. 3 *b* ओ ह च्छ मि एषा तिष्ठामि.

कमलवइहि दिण्णी दिट्ठि जहिं ईसाइ ईस मुक्को सि तहिं।
कण्णाकारुण्णें पुण वि मइं विरहें जलियउ जोयंतु पइं।
उच्चाइवि णेंतु णिहेलणउं हरिसेण करंतु व मेलणउं।
हउं णिविसु वि पियथम जइ मुवमि तो किं णिसि णिद्दइ तुहुं सुअमि।

घत्ता—इह जणवइ खलसंकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण णयणहिं पेक्खमि॥
दिट्ठादिट्ठसरीरी होइवि धीरी पइं वि भडारा रक्खमि॥ ९॥

10

वल्लहंतरंगंगकंपणं पम जाम जायं पयंपणं।
माणिमाणवित्थारमंथणं सित्थपंथसंणिहियमग्गणं।
जाणिऊण मयणं खलं घणं सुंदरीहिं विहियं खलंघणं।
णहघरित्तिदिब्भित्तिलग्गओ ताम भीमसद्दो समुग्गओ।
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया भयवसेण दूरं गया गया।
झाणमेव मइमुणिहिं झुंजियं सकलुसं मइंदेहिं रुंजियं।
पडिय विडवि फुडियं रसायलं घुलिय महियलं भीरुभेंभलं।
रूवरिद्धिणिज्जियसईरई संकिया मणे सा सुहावई।
तुट्ठिपुट्ठिकल्लाणदाइणा गयणपंगणत्थेण राइणा।
सइं णिरिक्खिओ सुरहिपरिमलो करडगलियओहुलियमयजलो।
लुलियवेलियपडिवलियअलिउलो चरणचप्पणो णवियमहियलो।
णिययधवलिमाधोयणहयलो बलविरुद्धजंभारिमयगलो।
सीयरंभसिंचियदिसाणणो चउविसाणणिद्दलियकाणणो।
पंचदंडउच्छेहदेहओ ताण दूण परिहाणसोहओ।

द्वादिट्ठसरीरी. ५ MB पइं जि.

10. १ MBT सियपंथ°; K सिछपंथ. २ MB महिउलं. ३ MB भीरु वेंभले. ४ MB °अविहलिय°. ५ MB वलियपयपडिय°. ६ MBKT परिणाह°.

---

10. 2 *b* सित्थ° प्रत्यश्वाग्रभागः. 3 *b* खलंघणं आकाशोल्लंघनम्. 7 *b* भीरुभेंभलं कातराणां भयानकम्. 8 *a* सईरई शचीपतिरिन्द्रः.

लंबमाणचलकण्णपल्लवो दीहतालवट्टो महारवो ।
तंबु[७] तालु आयंबमुहणहो चिक्कवंत[८]केलाससच्छहो ।
लच्छिरमेणु[९] सिरिपालु धाइओ भद्दहत्थि गहणे[१०] पलोइओ ।

घत्ता—पडिवक्खवियारणु पेक्खवि वारणु रायहु हरिसु ण माइउ ॥
णं विउलसिलालहु हरिवरु सेलहु गलगज्जंतु पधाइउ ॥ १० ॥

11

दावंतु दंत करु करि घिवइ आलिंगइ सव्वंगइं छिवइ ।
मणु[१] रक्खइ मेल्लेप्पिणु दमइ ढुक्कइ[२] चउपासहिं भमइ ।
सरयणु बहुरयणविहूसणहु अणुहरइ हत्थि कामिणिजणहु ।
चलु चउचरणंतरि पइसरइ हक्कइ हुंकारइ णीसरइ ।
लंघइ आसंघइ कुंभयलु पावइ पुच्छुप्पलु चच्छयलु ।
दसदिसिहिं[३] वि हिंडइ कुंजरहु पहु[४] विज्जुपुंजु णं जलहरहु ।
णिम्महइ गहीरसरेण सरु रंगंतु धरेइ करेण करु ।
आकुंचियतणु[५] वंचणकुसलु अक्कमिवि कमेण दसणमुसलु ।
बलिणा बलेण णिव्वूढबलु जुज्झेप्पिणु सुइरु महंतबलु ।

घत्ता—सो करिमयणिब्भरु लीलामंथरु णरणाहें संभाइउ ॥
णं पविउलकंदरु मंदर[६]महिहरु भुयदंडहिं उच्चाइउ ॥ ११ ॥

12

मयरेहासोहापरियरिउ जं जुज्झिवि दंति तेण धरिउ ।
तं गयणहु कुसुमणियरु घुलिउ रुणुरुणुरुणंतमहुलिहचलिउ ।
जाणेप्पिणु पुण्णपुरिसु पवरु परिहरिवि भुवणभीयरु समरु ।

७ MB तंबतालु पायंब°. ८ MB चिक्कवतु. ९ MB लच्छिरमणे सिहरि व्व धाइओ. १० MB गयणे.

11. १ MB तणु. २ MB चुक्कइ. ३ B चउदिसिहिं. ४ MB बहु°. ५ M °तणु धारणकुसलु; B तणुधरधरणकुसलु. ६ M मंदरु.

15 *b* तालवट्ट° पुच्छम्. 17 *b* गहणे वने. 19 हरिवरु इन्द्रः.

11. 3 *a* सरयणु सरत्नः सरदनश्च. 5 *b* °उप्पलु पुष्करम्.

करिणा सुंदरु कंधरि थविउ विज्जाहरकिंकरेहिं णविउ ।
णिउ तहिं जहिं अच्छइ खयरवइ सो पभणइ पुलयपसण्णमइ ।
कंतावइप्रिय[1] सुकंतरमणा रइकंता सिरिकंता मयणा ।
वणबाला बालहुं तुहुं जि वरु जामाइउ महु जियकुसुमसरु[2] ।

घत्ता--करि खंभि णिबद्धउ कंतिसणिद्धउ[3] भरहसयणसुविणीयउ ॥
सिंदूरें पिंजरु आसाकुंजरु पुप्फयंतु[4] णं बीयउ ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महाकरिरयणलंभं[5] णाम
चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३४ ॥
॥ संधि ॥ ३४ ॥

12. १ MB पिय. २ MB add after this: इय पभणिवि घरि पइसारियउ, पुरणरणारिहिं जय-कारियउ. ३ K °सिणिद्धउ. ४ MB पुप्फदंतु. ५ MB रयणालंभं.

12. 8 भरहसयण° भरतस्य स्वजना भृत्याः 9 पुप्फयंतु पुष्पदन्तनामा दिग्गजः.

XXXV

ता चक्खु णिबंधिवि खेयरहं तिज[1]गुत्तिमलायण्णइ ॥
राणउ तहिं होंतउ अवहरिवि णियउ सुहावइकण्णइ ॥ ध्रुवकं ॥

1

चंडकिरणकरदिण्णालिंगणि पुच्छइ पिएं[2] गच्छंतु णहंगणि ।
कहसु सुहावइ किं सरयब्भइं णं णं घरइं णहग्गणिसुंभइं ।
किं दीसंति ब[3]लायउ पंतिउ णं णं धयमालउ घोलंतिउ ।
किं सुरचावइं भहि विचित्तइं णं णं पिय तोरणइं पवित्तइं ।
किं णक्खत्तइं णं णं रयणइं मंदिरलग्गइं णं पुर[5]णयणइं ।
किं णहु एहु धरग्गि णिसण्णउं णं णं णागणयरु वित्थिण्णउं ।
देव णायवलु णामें राणउ एत्थु वसइ बलवंतु अदीणउ ।
एम चवंतइं बिण्णि वि तुरियइं जहिं जणु मिलियउ तहिं अवयरियइं ।
पभणइ पिययमु हलि किं जणवउ कहइ कुमारि एत्थु णिवसइ हउ ।
महियदुसहससिलेहाविरहहं गंधवाहरुप्पयचित्तरहहं ।
सो हरि घरहुं ण जाइ णरिंदहु चंचलु मणु णावइ कुमुणिंदहु ।

घत्ता—णि[6]ड्डुरियणयणु णिम्मंसमुहु लक्खणलक्खविसिट्ठउ ॥
सुणिउब्भक्खुब्भक्खुरु वियडउरु राएं हयवरु दिट्ठउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

इति भरतस्य जिनेश्वरसामायिकशिरोमणेर्गुणान् वक्तुम् ।
मातुं च वार्धितोयं चुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

GK do not give it.

1. १ MBK तिजगुत्तम°. २ MB पिउ. ३ MB बलायापंतिउ. ४ MB धयमालाउ घुलंतिउ. ५ MB पुररयणइं. ६ B णिरियणयणु.

1. 4 *b* णहग्गणिसुंभइं आकाशस्पर्शीनि. 9 *b* अदीणउ लक्ष्मीपरिपूर्णः. 15 सुणिउब्भक्खुब्भक्खुरु सुष्ठु नियमेन ऊर्ध्वाः अक्षोभ्याश्च लोहटंकणघटितत्वात् खुरा यस्य; वियड° विस्तीर्णम्.

2

धाइउ दुद्धरु खरखुर[1]खयधरु।
मरगयणिहतणु कंपावियजणु[2]।
तंबिरणयणउ भंगुरवयणउ।
दसण[3]भयंकरु अरिअमरिसहरु।
भुवणविमद्दें लिहिलिहिसद्दें[4]।
बहिरियदसदिसु मग्गियरणमिसु।
णवर णरिंदें चवलु मइंदें।
णं सारंगउ धरिउ तुरंगउ।
कुंकुमपिंजरु चलु पसरवि[5] करु।
भुयबलपोढें पुणु आरूढें।
रायहं पीलिउ वग्गइ चालिउ।
अवलोइवि कंसु[6] हरि हूयउ वसु।
पुलइयकाएं खगसंघाएं।
पयडियमंगलु घुट्ठउ कलयलु।

घत्ता—तो[7] बुज्झिवि महिवइ अतुलबलु अहिवलेण सुरवण्णी ॥
वरचंदणपरिमलचंदमुहि चंदलेह तहु दिण्णी ॥ २ ॥

3

चंदलेह आउच्छिवि णिग्गउ णियउ सुहावइइ णिविसें[1] गउ।
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहरु विउलणियंबु[2]ग्गयणवसुरतरु।
वे वि चारुचामीयरवण्णइं तेत्थु लयाहरि जाम णिसण्णइं।
ता मक्खग्ग खग वेण्णि समागय णं णहि णिसियर णिसिहर उग्गय।
महुरगिराइ पउंजियविणएं पुच्छिय ते[3] वणितणयातणएं।

2. १ MB °खुरखयधरु. २ M कंपावियतणु. ३ MB दंसणभयकरु. ४ MBK हिलिहिलिसद्दें. ५ MB पसरियकरु; K पसरेवि करु. ६ B किसु. ७ MB तो.

3. १ MB णिवसें. २ MB °ग्गयसुरतरुवरु. ३ B तेण तेणयातणएं.

2. 2 *a* °णिह° सदृशी.

3. 4 *b* णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यौ. 5 *b* वणितणयातणएं कुबेरश्रीपुत्रेण श्रीपालेन.

दीसह बे वि सुट्ठु सुच्छाया कहह कासु किं कारणु आया।
तेहिं पउत्तउ णियपुरु छंडिवि गयणु पायपुंडरियहिं मंडिवि।
अम्हइं आया पइं जि गवेसहुं दइउ बुद्धि पोरिसु विण्णासहुं।
लेइ लइ लहु णिसिंसु पवंदहि एहु पहीणखंभु जइ छिंदहि।
तो तुहुं होसि बप्प चक्केसरु विज्जाहरभूगोयरईसरु।

घत्ता—तं णिसुणेवि असिवरु करि करिवि खंभु कुमारें घाइउ ॥
असिजलधारइ सो णिट्ठुरु वि पत्थरु तइ वि दुहाँविउ ॥ ३ ॥

4

तुहुं सो चक्कवट्टि जयसिरिहर इय अहिणंदिवि गय ते णहयर।
सुहवईइ मंतें आराहिवि तं करवालु करालु पसाहिवि।
तरुणतरणिणिहु तरुणहुं ढोइउ पीडिवि मुट्ठिइ तेण पलोइउ।
बहुविज्जासामत्थसमग्गइ मुद्धइ मुद्धयंदसोहग्गइ।
पुणु पहु णहयलेण णिउ महियल्लु दिट्ठउ मणुयजुयल्लु अमलियबल्लु।
चरणरहिउ णं तवसि कुसीलउ रयणरहिउ णावइ रयणालउ।
दूरु मुक्ककंचुउ णं कयरणु दूसहविसु णं पलयमहाघणु।
दुरसणु छिद्दण्णेसिउ णं खलु पुहइपालु णं विरइयमंडलु।
परतीरु व आयंबिरणेत्तउ कालें कालवासु णं घित्तउ।
अण्णु वि णं जउँ जगसंपासणु दिट्ठु महोरउ दाढाभीसणु।

घत्ता—दिट्ठु पुंछि धरिवि पुहईसरिण प्राण हरंतु पमत्तउ ॥
सो विसहरु भामिवि गयणयलि महियालि झत्ति णिहित्तउ ॥ ४ ॥

४ MB read for this line: लइ णिसिंसु देव भुयदंडें, परबलबलदलणेण पयंडें; and add the following: एहु पाहाणखंभु जइ छिंदहि, अम्हह हियवउ लहु साणंदहि (B आणंदहि). ५ MB बप्प होसि. ६ K दोहाविउ.

4. १ K णरवर. २ MB मंतेणाराहिवि. ३ MB करालु करवालु. ४ MB °समत्थसामग्गइ. ५ MB मयरालउ. ६ MB कालपासु. ७ M जमु ८ MB °संपासणु. ९ M दिट्ठु पुच्छे; B दिट्ठु पुच्छि. १० MB पाण.

8 *b* विण्णासहुं परीक्षितुम्.

4. 2 *b* करालु भयानकः. 4 *b* मुद्धयंद° द्वितीयाचन्द्रः. 6 *a* चरण° चारित्र्यं पादाश्च. 7 *b* °विसु गरलं पानीयं वा. 8 *a* दुरसणु द्विजिह्वः, छिद्द° रन्ध्रं दोषश्च. 9 *b* कालवासु कालपाशः. 10 *a* जउँ यमः.

5

जायउ रयण[1] सो ज्जि हयगयघड जं[2] जिप्पंति समरि पडुपडिभड ।
अंगुलीउ अंगुलियहि दिण्णउ अण्णेक्कु वि अरिणरु अवइण्णउ ।
तेण भणिउ कवडें पणवेप्पिणु एह डाँवि[3] कुलिसमय लएप्पिणु ।
जइ तुहुं पयइं रयणइं घट्टहि । तो जाणमि तिहुयणु वि पलोट्टहि ।
तो तें तौंइं[4] णिहिट्ठइं रयणइं मउलावियइं दुसीलहं णयणइं ।
सिद्धइं भणिवि[5] णमंसिउ लोएं[6] मण्णिउं वण्णिउं दिण्णविहोएं[7] ।
अच्छिहिं अंधसहासें[8] दिट्ठउ बहिरहं[9] बहिरत्तणु णट्ठउ ।
जंपिउ मूयहिं महुरालावें मुउ जीवइ सिरिवालपहावें ।
घत्ता—परियाणिवि गुणगणु हरिसिएण कुवलय[10]च्छि कुवलयभुय ॥
सिरिसेणें तहु सिरिउरवइणा वीयसोय दिण्णी सुय ॥ ५ ॥

6

विजयणयरि जसकिसलयकंदें कित्तिमइ वरकित्तिणरिंदें ।
पुणु धण्णउरि धणाहिवराएं विमलसेण ढोइय अणुराएं ।
उप्पण्णा सेणावइ घरवइ सपुरोहिय णिवणयपरिणयमइ ।
पुणु वि सुहावईइ पहु चालिउ धूमवेउ गयणाहि णिहालिउ ।
दससिरु मच्छर[2]जलणुप्पायणु वीस पाणि परें[3] वीस वि लोयणु ।
हरगलगरलतमालु व कालउ भिउडिभंगभंगुरभालालउ ।
कण्णकडुयवयणाइं भणंतें णारिवराइं[4] तणु व गणंतें ।
पच्चारिय रणि तेण सुहावइ मेल्लि मेल्लि सिरिवालु रसावइ ।
मा महु अग्गइ धरहि सरासणु मा वच्चहि हयासि जमसासणु ।
घत्ता—जसु हियवइ भडहंकारु णावि हालि महुं हासउ दिज्जइ ॥
रक्खिज्जइ पइं वि महेलियइ सो किह संढु रमिज्जइ ॥ ६ ॥

5. १ MB सो ज्जि रयणु. २ MBK जे. ३ MB दावि. ४ MB ताम्व णिहट्टइ. ५ MB मुणिवि. ६ MB लोयइं. ७ MB दिण्णविहोयइं. ८ MB °सहासहिं. ९ बहिरंतहिं. १० MB कामलच्छि कोमलभुय.

6. १ B णिउ. २ MB मच्छरु; T मच्छरजलण°. ३ MBK वर. ४ MB °वराइय तणुव्व गणंतें.

---

5. 3 *a* डावि मुद्रा.

6. 5 *a* मच्छरजलण° कोपाग्निः.

7

चवइ किसोयरि एउं णं जुत्तउं रे रे धूमवेय पइं वुत्तउं ।
सप्पमग्गु जइ सप्पु जि बुज्झइ खयरें सहुं जइ खयरु जि जुज्झइ ।
एहु धरायरु तुहुं गयणायरु वज्जिवि विज्जउ पसरहि णियंयरु ।
जइ तुह एहु किं पि आसंकइ विवरीयाणणु पाउ वि कंपइ ।
जइ तुहुं ण मरहि एयहु भुयबलि तो हउं पइसउं जलियमहाणलि ।
खल दलवट्टिवि हरिसें णच्चमि वइरिमारि हउं णारि ण मुच्चमि ।
आउ आउ णियणाहु ण मेल्लमि तिक्खतिसूलें पइं उरि सल्लमि ।
एम चवंति तेण सा घाइय करवालेण दुलंघ दुहाइय ।

घत्ता—ता जायउ बिण्णि सुहावइउ उग्गयखग्गविहत्थउ ॥
हणु हणु पभणंतिउ हुंकरिवि थक्कउ जुज्झसमत्थउ ॥ ७ ॥

8

अक्कु वि सक्कु वि चित्ति चवक्कइ सुहडु हणंतु ण णिविसु वि थक्कइ ।
दूण दूण वड्डिय संजायउ कण्णउ कण्णावेसें जायउ ।
वेढिउ धूमवेउ चउपासहिं आहउ जिगिजिगंत णिसिंसहिं ।
विप्फुरंतु जयसिरिउक्कंठिउ सो वि जाम बिहिं रूवहिं संठिउ ।
ता वुत्तउ णिवेण मा घायहि बहुय होंति रिउ कज्जु विवेयहि ।
अण्णु वि मुइ मइं कहिं मि वणंतरि आवेज्जसु पुणु जिंत्तइ संगरि ।
एक्कहियय होएप्पिणु भंडहि अरिसिरकमलइं खग्गें खंडहि ।
ता मुक्कइ पिउ घल्लिउ महिहरि थिउ लंबियतणु कक्करतरुवरि ।
दूरु णिरुद्धचंडकिरणायवि बाहहिं लंबमाणु तहिं पायवि ।
दिट्ठउ विज्जाहरिइ णरेसरु णं गुणि संधिउ मयरद्धयसरु ।

7. १ MB अजुत्तउं. २ MB गयणेसरु. ३ MB णियकरु. ४ MB विवरीयायणु. ५ MBK वंकइ. ६ MB पइसमि. ७ MB दलवट्टमि. ८ MB पेल्लमि. ९ MB लवंति. १० MB संघाइय. ११ MB दुहाविय. १२ MB उग्गय°.

8. १ MB चमक्कइ. २ MBT विहुअंसहिं. ३ MBK कज्ज. ४ MB वित्तइ. ५ MB संठिउ.

8. 9 *a* °चंडकिरणायवि आदित्यातपे.

घत्ता—तं पेक्खिवि वम्महबाणहय सीमंतिणि तहिं ढुक्की ॥
जंपइ पयडइं विड्डाडुयइं कुलमज्जायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिससीह दुहसल्लिउ एत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।
सुहव कहइ व जइ मुयहि महीरुहु तो णिवडहि णिरुत्तु हेट्ठामुहु ।
हड्डइं कसमसंति भज्जंतइं अट्ठ वि अंगइं पलयहु जंतइं ।
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण भो पत्थिवपउमाणण माणण ।
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि घोरहु कंतारहु उत्तारमि ।
भणइ कुमारवीरु किं खिज्जहि परपुरिसहु मणु देंति ण लज्जहि ।
वरं एत्थु जि तरुसाहहि सुक्खमि णउ परघरिणिहि वयणु णिरिक्खमि ।
वर णक्खाइं सिलायलि भग्गइं णउ परणारीउरयलि लग्गइं ।
दंतपंति वर जाउ दिसंतरि मा खुप्पउ परवहुबिंबाहरि ।
केसभारु वर वाएं णिज्जउ मा परपणयणीहिं कड्ढिज्जउ ।
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ मा परतियथणेहिं पेल्लिज्जउ ।

घत्ता—णयणइं घोलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ वियारहु ॥
संताउ पवड्ढइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहदुवारि णिरोहु करेसइ पिसुणु को वि संगहणु धरेसइ ।
लइ आलिंगिवि मुक्कणिबंधणु लहु उट्ठइ संवरइ पइंधणु ।
आसंकियमणु किं किर कीलइ दुज्जसु धूमें अप्पउ णीलइ ।
अण्णु अण्णु जइ काइ वि मंतइ तो परयारिउ णियमणि चिंतइ ।

६ MB °मज्जायपमुक्की.

9. १ M कसमसंत. २ B omits this line. ३ B omits this foot. ४ M अक्खमि. ५ MB वायइ. ६ MB परतिय. ७ MB घोलत, T घोलंति.

10. १ MB गेहि दुवारि. २ MB लइ. ३ MB मुक्क. ४ M सवरियउ; B सवरिउ. ५ MB दुजस.

9. 4 पत्थिवपउमाणण राजलक्ष्म्या आणण उपार्जक, माणण उपभोजक. 5 *a* पयारमि प्रतारयामि.

10. 1 *b* संगहणु पुश्चलयुगलम्. 2 *a* मुक्कणिबंधणु मुक्तकण्ठाश्लेषः; *b* पइंधणु परिधानम्.

एयहिं सविवेयहिं हउं जाणिउ एवहिं कहिं वच्चमि संदाणिउ ।
इहभवपरभवदुण्णयगारउ परतियरमणु सुट्टु विरुयारउ ।
जँहिं ण इच्छमि परघरसामिणि उव्वसि जइ वि रंभ सुरकामिणि ।
रमणीयइ पररमणालुद्धइ तं णिसुणिवि णहणारिइ कुद्धइ ।
णरणाहें पियसहि वणि मेल्लिय साहिसाह सा छिंदिवि घल्लिय ।

घत्ता--थरहरियपाणिपयसिरकमलु विहुरयालि सुहजणणियइ ॥
णिवडंतउ धरिउ सइं भुयहिं जक्खिइ चिरभवजणणिइ ॥ १० ॥

11

वइसारिउ सोवण्णसिलायलि भणिउं णिसुणि हुई जक्खहुं कुलि ।
हउं तुह मायं पुत्त पोमावइ पुव्वजम्मि होंती पाडलगइ ।
एम्व चवेप्पिणु णेहपयासें बालु पसाहिउ करसंफासें ।
भुक्खतण्हणिद्दालसु णट्ठउ तणउ पवुत्तु ताइ संतुट्ठउ ।
फुरियविविहमणिकिरणणिरंतरि पइसहि गिरिगुहविवरब्भंतरि ।
तं णिसुणिवि सो तेत्थु पइट्ठउ तावेत्तहि संगामि पणट्ठउ ।
धूमवेउ मज्जियसरजालहि विज्जाछेउ करंतिहि बालहि ।
पुणु उप्पण्णु वियप्पु विहीसरु जिह देविइ उद्धरिउ णिहीसरु ।
गय णियवासहु वीणालाविणि एत्तहि राउ रायचूडामणि ।

घत्ता--पइसंतु विसंठुलि विवरवहि सलिलमहाद्दहि पडियउ ॥
तहिं अंतु तरंतु सिलामयहु खंभहु उप्परि चडियउ ॥ ११ ॥

६ MB परतिय°. ७ MB जहिं. ८ MB रम जइ वि. ९ M सयभुयहिं, B सयंभुवहिं.

11. १ MB पुत्त माय २ B °तिण्ह°. ३ B पइट्ठउ. ४ B धूमकेउ. ५ MB °महद्दहि. ६ MB तुरंतु. ७ T विसंकलि.

6 *a* °दुण्णय° दोषः अपकारो वा.

11. 2 *a* पोमावइ पद्मावती नाम यक्षिणीजातिः; *b* पुव्वजम्मि सत्यवतीजन्मनि. 8 *a* विहीसरु देवी वाणी. 10 विसंठुलि निम्नोन्नते.

12

तावत्थइरि सूरु संपत्तउ   णं दिणराएं झेंदुउ घित्तउ ।
सहइ जंतु वरुणासालाणिहि   मणि व पडंतु महण्णवखाणिहि ।
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ   णं चउपहरु रुहिररसलित्तउ ।
णं णवदलु णहरुक्खहु ल्हसियउ   रत्तहलु व दिसंतरुणिइ[1] डसियउ ।
भाणुबिंबु किरणावलिजडियउ   उग्गत्तेण अहोगइ[2]वडियउ ।
मंदतमालणीलि पसरियतमि   तहिं विवरंतरि रयणिसमागमि ।
णक्कचक्कभयपसरविसण्णउं   णीलसिलायल[3]खंभि णिसण्णउं ।
सिरिअरहंतसिद्धआयरियहुं   उज्झायहुं साहुहुं कयकिरियहुं ।
पंचहुं संचियसम्मयदिट्ठिहिं   सुयरइ पइचरणइं परमेट्ठिहिं ।

घत्ता—असियाउसाइं पंचक्खरइं झायंतहु साणंदइं ॥
चोरारिमारिमिहिपाणियइं उवसमंति मृग[4]वंदइं ॥ १२ ॥

13

ताम पहाइ[1] कालि रवि उग्गउ   णं महिउयरु वियारिवि णिग्गउ ।
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतें   तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमंतें ।
राएं णयणाणंदजणेरी   दिट्ठी पडिम जिणिंदहु केरी ।
णिव्वियार णिग्गंथ मणोहर   पहरणवज्जिय ओलंबियकर ।
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही   हउं सा भणमि अहिंसा जेही ।
हउं सा भणमि कुहिणि अपवग्गहु[2]   कढिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।
सा णाहिं सरसलिलहिं सिंचियँ[3]   वियसियधवलहिं कमलहिं अंचिय ।
पुणुँ[4] जिणतणुसिरि संथुय भत्तिइ   सव्वभूयगणविरइयमेत्तिइ ।
मइ[5]पसत्थहत्थगुणराइय   ताम तहिं जि जक्खिणि संपाइय[6] ।

घत्ता—संभासिवि णिहिलणिहीसरिइ हरिसुप्फुल्लियणेत्तउ ॥
वइसारिवि[7] पट्टि पयाहिवइ मंगलकलसहिं सित्तउ ॥ १३ ॥

12. १ MB दिसतरुणिइ. २ MB °गइपडियउ. ३ MB °सिलायलि. ४ MB मिग°,
13. १ MBK पहायकालि २ MB अववग्गहु. ३ MB संचिय. ४ B omits this line. ५ B omits this foot. ६ MB सपाइय. ७ T आहिसारिवि.

12. 3 *a* कुंकुमकुसुमामेलु व कुङ्कुमकेसरसंघात इव. 7 *a* णक्कचक्क° जलचरसंघातः.
13. 11 वइसारिवि प्रतिष्ठाप्य.

14

भूसण[1]परिहाणाइं रवण्णइं　　छत्तदंडरयणइं तहु दिण्णइं ।
गयणगमण पाउयजुयलुल्लउ　　दिण्णउ अण्णु[2] वि जं जं भल्लउ ।
ताम तहिं जि परिभमिवि समायइ　　रय[3]कारणसंभूयकसायइ ।
[4]खइरिइ सइरिणीइ पहु जोइउ　　पाहाणोहु णहाउ णिवो[5]इउ ।
सो पडंतु सयलु वि णिद्दलियउ　　दिव्वछत्तरयणें पडिखलियउ ।
पुप्फयंतफणिफुक्कारियसरि　　मइं ण रमंतु मरउ विवरंतरि ।
एम भणिवि ताए वित्थिण्णी　　सेलगुहादुवारि सिल दिण्णी ।
णवर चंडदंडें सा खंडिय　　कुवलयवइणा कणु कणु खंडिय ।

घत्ता—उग्घाडिवि दारु णराहिवइ पाउयजुयलें गच्छइ ॥
णहि जंतु पुंडरिंकिणिणियडि सुरमहिहरवणु पेक्खइ ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ खंधावारु विमुक्कउ　　सत्तमु दिवसु अज्जु सो ढुक्कउ ।
माइ तुहारउ लहुउ थणद्धउ　　म[1]णुयवेसु णावइ मयरद्धउ ।
तिजगबंधु महु बंधउ णोइउ　　एम भणिवि जलहरवहु जो[3]इउ ।
वसुवालेण भणिउं किं ससहरु　　णं णं छत्तु एउ [4]णं णिसिहरु ।
किं दी[5]सइ णवसंझाजलहरु　　पक्खि को वि णं णं णिच्छउ णरु ।
सोदामिणि णं णं दंडासणि　　तारावलि णं णं भूसणमणि ।
एम वियप्पिवि राएं वुत्तउ　　एइ सहोयरु एहु णिरुत्तउ ।
इय पलवंतहु तहिं जि पराइउ　　विहिणा सोक्खपुंजु णं ढो[6]इउ ।
सुहिपरियणु हरिसें रोमंचिउ　　तं णउ माणसु जं णउ णच्चिउ ।

14. १ M °परिहाणइं बहुवण्णइं, B °परिहाणइं वरवण्णइ २ MB अवरु. ३ MB रइकारण° ४ MB खयरिइ मइरिणियइ. ५ MB णिवायउ.

15. १ MB मयणवेसु. २ MB णावइ. ३ MB जोयइ. ४ MBK णउ ससिहरु. ५ MBK सीसइ. ६ MB ढोइयउ.

---

14. 3. *a* समायइ समागतया; *b* रइकारण° रतिसुखकार्ये. 6 *a* °सरि शब्दे.

15. 2 *a* थणद्धउ पुत्रः.

पणविउ पहु णिलयणु णिय तायहु जगतायहु पवरफलविहायहु ।
तेहिं बिहिं वि तेण जिणु पेच्छिवि भवसंसरणावत्थ दुगुंछिवि ।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणवालु तहिं मउडचडावियहत्थें ॥
वंदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥ १५ ॥

16

जेण विणासिवि घल्लिउ ईसरु पुच्छिउ देविहु सो जोईसरु ।
पुत्तु महारउ केण विहसिउ चंदु व पवरपहाइ पयासिउ ।
पभणइ जिणुगयजम्मि किसोयरि पयहु हुयमेत्तहु मुय मायरि ।
हुई काणणि जक्खसुरेसरि बहुविब्भमविलास णं सुरसरि ।
जाणवि णंदणु अप्पणु देहें ताइ एहु पुज्जिउ बंधुणेहें ।
आय मुहावइ कहिउ कुमारें एयइ रक्खिउ हउं बलसारें ।
विज्जाहरहं पयासियवसणहं मायावियहं अणेयहं पिसुणहं ।
एह मज्झु हुई विहडंतहु लग्गणवल्लरि अवडि पडंतहु ।
एह मज्झु हुई चिंतामणि कामधेणु कप्पद्दुमगोमिणि ।
एह मज्झु संजीवणि ओसहि विहुरसमुद्दणाव णिरु पियसहि ।

घत्ता—हउं एयइ रक्खिउ सुंदरिइ एयहि जीउ वि दिज्जइ ॥
जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

17

पइं सहुं महु उग्गयमुहरायउ माइ माइ मेलावउ जायउ ।
जं तं एयहि तणउं विजंभउ एयहि परबलु बालिण णिसुंभिउ ।
तं णिसुणिवि विणएं पणयंगिय भासुयाइ कुलवहु आलिंगिय ।

७ MB णिउ णिलयणु. ८ MB तेण वि. ९ MB °संसारावत्थ.

16. १ MB चिरु णेहें. २ MB दुहसलिलि णिमज्जइ.

17. १ G सुहु. २ MB वियभिउ. ३ B पबलबलेण.

---

10 *a* णिलयणु समवसरणम्, *b* °विहायहु विधातुः. प्राणिनां वाञ्छितफलप्रदस्य. 11 *a* बिहिं वि कुबेरश्रीवसुपालाभ्याम्; तेण श्रीपालेन.

16. 1 *a* ईसरु अस्य विष्णोरपत्य ई कामस्तस्य सरु बाण. 3 *b* हुयमेत्तहु जातमात्रस्य. 8 *b* अवडि कूपे.

17. 2 *a* विजंभउ विजृम्भितं चेष्टितम्.

पुत्ति पुत्ति पइं काइं पसंसमि सिहिसिह किं रविपडिमहि दंसमि।
चक्कवट्टिलक्खणसंपुण्णउ पुत्तु महारउ पइं महु दिण्णउ।
तुहुं जि एक्क महु आसाऊरी तुहुं संगरि सूराहं वि सूरी।
जुवईमइउ हलि कहिं तेरउ कहिं पोरिसु परवीरवियारउ।
तुह केरउ जियकरिकुंभत्थलु थणुगुणछणियउं जयउ थणत्थलु।
महु तणयहु वम्महपासा इव तुह भुय रिउहुं कालपासा इव।
पभणइ कण्ण पुण्णसामत्थें गिरि सुउ धरिउ घणेसरिहत्थें।
सूलें भिण्णु ण भिज्जइ अंगउ जहिं तुह सुउ तहिं सयलु वि चंगउ।
पुणु कुबेरलच्छिइ परिपुच्छिउ कहउं भवि सुय तहिं कम्मं णियच्छिउ।
घत्ता—ता कहइ महामुणि राणियहे घोरवीरु तवु तत्तउ॥
चिरभवि दोहिं वि तुह तणुरुहहिं अणसणु किउ जिणवुत्तउ॥ १७॥

18

सग्गम्मिहरि सुरवरसिरि भुंजिवि जिणपडिबिंबहु पुज्ज पउंजिवि।
दिव्वु देहु मेल्लेप्पिणु आया ए बिण्णि वि तुह सुय संजाया।
वसुवालहु सिरिवालहि केरी पुण्णपवित्ति गरुयसुहगारी।
मुणि वंदिवि सयलइं संतुट्ठइं उच्छवेण णियणयरु पइट्ठइं।
पुज्जिवि पत्तावलिविण्णासहिं चेलियरयणाहरणविसेसहिं।
मुक्क सुहावइ पियमय मायइ धणुधारिणि सम पाउसछायइ।
गय सुंदरि णियमंदिरु जामहिं वसुवालहु विवाहु कउ तामहिं।
करपल्लवि लग्गउ रइजुत्तिहिं अट्ठोत्तरु सउ णरवइपुत्तिहिं।
घत्ता—पुणु कहइ सुलोयण णियचरिउ सइ परिपुरिसपरंमुह॥
भरहाहिवभिच्चहु घणरवहु पुप्फयंतमोहियमुह॥ १८॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे पहुसिरिपालसंगमो णाम पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो॥ ३५॥

॥ संधि ॥ ३५॥

४ MB देसमि. ५ M °सपण्णउ. ६ MB महु पइ. ७ B सूरहं. ८ MB घणेसर°. ९ B सूलिण. १० MB कम्मु. ११ M घोरु वीर तव; B घोरवीर तव.

18. १ MB दिव्वदेहु. २ M परंमुहं; B परंमुहहो. ३ M °मुहं; B °मुहहो. ४ MB °सिरिवाल°.

18. 5 *b* चेलिय फाली (?).

XXXVI

छ वि लेप्पिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ खगहु अकंपहु सा सुय ॥
सत्तमदिणि सुहमइ पत्त सुहोवइ णविय ताइ सइं सासुय ॥ ध्रुवकं ॥

I

भासिउं भद्दइ गुणजुत्तियउ पयँउ तुह सुय कुलउत्तियउ ।
होहिंति भणिवि मृगणेत्तियउ तडिवेयं गहणि णिहित्तियउ ।
संमाणहि मइं संमाणियउ एवहि तुह मंदिरु आणियउ ।
ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ णवमालइमालावाहियउ ।
पुव्वं चिय तत्थु परिट्ठियहिं भूगोयरेहिं उक्कंठियहिं ।
हयदइवें कहिं वि विओइयउ मायापियरेहिं वि जोइयउ ।
पहिलारउ परिणिय सेट्ठिसुय जसवइ णामें जसकंतिजुय ।
अण्णु अवरउ थोरथेद्धथणिउ रइकंताइयउ सुहासिणिउ ।
विरहग्गितावणीवावणउं अट्ठहिं तरुणिहिं सहुं मेलणउं ।
दिट्ठउ करंतु सो पुंउ ललिउ गुत्तिहिं समिइहिं णं जिणु मिलिउ ।

घत्ता—जोएवि सवत्तिहि मुहु वणिउत्तिहि णीसंसेवि दुहहणणहु ॥
ईसावसकुद्धइ तक्खणि मुद्धइ आसंघिउ घरु जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin:—

पुप्फयंतदिण्णउं धणुहुं सरु दिण्णउ सरु सत्ति ।
मारिउ मिच्छमयाहिवइ गुणु पुणु तिहुयणाकित्ति ॥ १ ॥

BGK do not give it.

1. १ K सत्तमे दिणे. २ B सुहामइ. ३ M एयहि. ४ MB मिग°. ५ MB परिट्ठियउ. ६ MB उक्कठियउ. ७ MB पियरहिं विच्छोइयउ. ८ MBK पुणु. ९ MB °थड्ढ°. १० MB पिउ. ११ MB गुत्तीसमिइहिं. १२ B मद्दु. १३ M णीसेसवि.

---

1. 1 छ षट्कन्याः; सा सुय सा प्रसिद्धा पुत्री. 6 *a* लच्छिइ कुबेरश्रिया. 8 *a* विओइयउ वियोगं प्रापिताः. 10 *b* सुहासिणिउ शोभनवचनाः. 11 *a* °णीवावणउं विध्यापनम्.

2

सुहवइयहि तायहु वज्जरिउ भूगोयरभूगोयरचरिउ।
मण्णंति ण अम्हइं खेयरइं अणुरत्तइं गुणविहियायरइं।
मेरउ मेल्लिवि रिउ जीवहरु पहिलउ जि किराडिहि धरिउ करु।
अविसेसविवाहें किं करमि वँर णिब्बलु कण्णावउ धरमि।
णउ अण्णणारिरयरंजियहु आलिंगणु देवि[5] तासु प्रियहु।
पडिलवइ जणणु मुइ कलमलउ विडुँ होइ सहावें चंचलउ।
अण्णण्णहिं कुसुमहिं दिणु गमइ किं एक्कहि वेल्लिहि अलि रमइ।
एत्थंतरि सिरिवालें णयरि मग्गिय मृगलोयण घरि जि घरि।
णालोयंतें पुणु जाणियउं हा पृयमाणुसु अवमाणियउं।
अइ लज्जिवि णियभवणहु गयउ किं जंतु जंतु वि विरहें मयउ।
इय चिंतिवि णहयरु एक्कु णरु पेसिउ लहु लेलिएं लेहधरु।
संपत्तउ गेहुँ[13] अकंपणहु जिणचरणभत्तिभावियमणहु।

घत्ता—लेहें सहुं पाहुडु ढोइवि खगभडु पडिउ खगिंदहु पायहिं॥
तुहुं मण्णिउ सज्जणु विणिहयदुज्जणु वसुसिरिवालहिं रायहिं॥ २॥

3

तेण वि णियहत्थि णिवेइयउ आलिहियउ पत्तु पलोइयउ।
तं सोहइ वण्णहं पंतियहिं अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं।
कंचुइवइणाइं सुणेवि सइ जं परिणिय वणिवरतणय मइ।
तं[3] पालिय कुलपरिहा सकुलि मणु पुणु तुह पुत्तिहि मुहकमलि।

2. १ K °वइयइ. २ MB °भूगोयरि°; GK add second °भूगोयर° in the margin; T भूगोयरचरिउ. ३ M वरु. ४ G करउ. ५ MB देमि ण तासु. ६ MB पियहु, K पृयहु. ७ M विड ८ MB मिगलोयणि. ९ MB पिय°. १० MBK लइ. ११ जणु जंतु वि. १२ M ललियं. १३ MB लेहु. १४ B °भावियरणहु.

3. १ MB साहइ. २ MB वयणाइ. ३ MB ता. ४ MB हासमले.

---

2. 1 *b* भूगोयर° वसुपालादयः; भूगोयरचरिउ भूगोचरेषु यशस्वत्यादिषु विषयेषु चेष्टितं आचारं मन्यन्ते. 6 *a* मुइ मुञ्च; कलमलउ ईर्ष्याजनितखेदम्. 11 *b* ललिएं श्रीपालेन.

3. 2 *b* अलवंतीहि वि पलवंतियहिं स्वयमब्रुवाणाभिरपि अर्थप्रतिपादनद्वारेण ब्रुवाणाभिः. 4 *a* कुलपरिहा कुलपरिखा कुलमर्यादा, सकुलि स्वकुले.

चंपयकुसुमावलिगोरियहि संभरमि सुयाहि तुहारियहि।
जिह कढिणँ थणत्थलु तिह पहरुँ जिह रत्त रत्तरणु तिह अहरु।
कण्णंतु समागय णयण जिह परमारणसीला बाण तिह।
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु जिह धणु गुणमंडिउ तिह जि तणु।
अणणंकासणइ णिसण्णियइ कण्णियइ कुसुमसंरछण्णियइ।
तं णिसुणिवि णिब्भरु चिंतियउ महु णाहें माणु णियत्तियउ।
तहि पिउणा तं जि पबोल्लियउँ हयगमणभेरिबलु चल्लियउँ।
तापण समउ गय कुमरि तहिं णिवसइ सुहउ वरइत्तु जहिं।
घत्ता—संपत्तु अकंपणु सकरि ससंदणु पेच्छिवि छण्णु णहंगणु ॥
गय विण्णि वि सायर संमुह भायर मग्गमाण आलिंगणु ॥ ३ ॥

4

घरि आसीणाइं सणेहदय लहु अब्भागयपडिवत्ति कय।
हेट्ठामुह वहु वरेण भणिय किं हूई तुहुं मलिणाणणिय।
घणु सोहइ एक्कइ विज्जुलइ वणु सोहइ एक्कइ कोइलइ।
इह सोहमि हउं एक्काइ पइं गुरुवयणु करेवउ तो वि मइं।
मा रूसहि सज्जणवच्छलिइ अलिणीलकुडिलमउकोंतलिइ।
तें वयणें रोसणियत्तणउं जायउं तहि रम्मु पेम्मु घणउं।
वप्पिल संप्राइय रमणवसा तडिरयतडिवेयहु तणिय ससा।
चलणयणजुयलणिज्जियहरिणि रइकंता मयणवई तरुणि।
पंचट्ठसहासइं राणियहं परिणियइं तेण खयराणियहं।
पुणु पर्ऊछइ णिरुवमभोयवइ खगवइसुय णामें भोयवइ।

५ MB read for this foot: लडहंगहि मुणिमणचोरियहि. ६ M कढिणु. ७ B adds after this: महु आवइसयइं णिवारियइं, सभरमि सुयाहि तुहारियाइ. ८ B रत्तु रत्तरणु. ९ M °सीहा. १० M °सरसंणियइ; B °सरकण्णियइ; T °कण्णियइ. ११ B adds after this: णियपुत्तिहि मणु णीसल्लियउ. १२ MB add after this: तहु सद्दें तिहुयणु हल्लियउ. १३ MK आलिंगिणु.

4. १ G रोसु. २ MB संपाइउ. ३ MB °वस. ४ MB सस. ५ MB चउवट्ठ°. ६ MB राणियाहं. ७ MB °राणियाहं. ८ B पुच्छइ.

9 *b* कण्णियइ कन्यकया; °छण्णियइ भक्तिविशेषेण.

घत्ता—सेणावइगहवइहयगयतियमइथवइपुरोहियजुत्तइं ॥
सज्जीवइं रयणइं रंजियणयणइं सत्त तासु संपण्णइं ॥ ४ ॥

5

रोसेण सुहावइ हुंकरइ ईसाइ ण पियपुरि पइसरइ ।
सुरमण्णियवण्णियवणसिरिहि थिय भवणु रएप्पिणु सुरगिरिहि ।
घरदासिहिं जसवइरूवु किउ अण्णेक्कइ रायहु विण्णविउ ।
परमेसर वणिसुय परिहविय घरलंजियवेसें घरि थविय ।
तं णिसुणिवि णरवइ संचलिउ हरिखुरधूलीरउ णहि मिलिउ ।
पइभत्तहि झत्ति महासइहि संपत्तु णिवासु सुहावइहि ।
प्रियवयणहिं तिह तिह जंपियउ जिह जिह मणु मुद्धहि कंपियउ ।
ईसालुय पइणा उवसमिय जाइवि वणितणय ताइ णविय ।
विज्जाहरि विक्कमहरिहरिहि थिय सा वि पुंडरिकिणिपुरिहि ।
पहरणसालहि सुहलियतवहु उप्पण्णउं चक्कु णराहिवहु ।
णवणिहिवइ जायउ चक्कवइ किं वण्णइ अम्हारिसु कुकइ ।

घत्ता—तलिमयलि रवण्णइ ससहरवण्णइ पडिवज्जिवि पक्कासणु ॥
जसवइयइ राएं सहुं सपमाएं किउ सुहदुहसंभासणु ॥ ५ ॥

6

अरि असणिवेउ चिरु मच्छरिउ मायाहएण हउं अवहरिउ ।
घल्लिउ तहि रययायलि विउलि हिंडिउ तहिं काणणि गिरिगुहिलि ।
गइलंघियणहयलजलहरहं दिट्ठइं कवडइं विज्जाहरहं ।

९ MB गिह°. १० MB संपत्तइं.

5. १ MB °रुउ. २ MB पइभत्तिहिं. ३ MB पिय°. ४ B ईसालुद्ध. ५ MB जसवइ महिराएं. ६ MB सुहडह संभासणु.

6. १ MB रययालिइ तहि. २ MB °थलयरह.

---

8. 11 °तियमइ° स्त्रीरत्नम्.

5. 9 *a* विक्कमहरिहरिहि इन्द्रस्य सामर्थ्यस्फेटिका 10 *a* सुहलियतवहु पूर्वभवोपार्जितं शोभनफलितं तपो यस्य.

6. 2 *b* गिरिगुहिलि गिरिभिर्लघुपर्वतैः निबिडे.

मइं रइयइं पसरियअमरिसइं अवलोइवि णाणासाहसइं ।
चलकरयललुलिय[3]सूलमुसल आरुट्ठ दुट्ठ दप्पिट्ठ खल ।
उद्दहणपयंडपलय[4]पिहिर रिउ विज्जुमालि हरिवर खयर ।
दूसासण दुम्मुह[5] कालमुह हरिवाहणधूमवेयपमुह ।
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि महुं ता चवइ कंत कंतेण सहुं ।
कीरइ रिउबलमयणिम्महणु[6] तुप्पेण समइ किं दवदहणु ।
उवसमइ खमाइ ण खलहियउं असिधावहिं जाम ण कलहियउं ।

घत्ता—पुरिसेण महंतें एत्थु जियंतें जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥
णंदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण खयहु तेण किं किज्जइ ॥ ६ ॥

7

मइएविइ कज्जु णियच्छियउं इय पहुउ राएं इंछियउं ।
भोयवइहि बंधवुं कुलधवलु णामें हरिकेउ विसालबलु ।
अहिसिंचिवि पट्टणिबंधु कउ सेणावइ खगवइ होवि[3] गउ ।
रणि जिणिवि णिबंधिवि सत्तु तिणा आणिय णं विसहर पवरविणा ।
सो तुरयारूढउ दंडकरु पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु ।
बहलंसुजलोल्लियणेत्तियहिं विलवंतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।
णियणाहहु दीणवयणु लविउ बहिणिहिं बंधवउलु मेल्लविउ ।
सयल वि ते परिवड्ढियकिवहु चरणारविंद णिवडिय णिवहु ।
राएं कारुण्णु ताहं करिवि पेसिय देसहु अब्भुद्धरिवि ।

घत्ता—महियलु पालिज्जइ मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिणयंदहु ॥
पयवडिउ ण हम्मइ मग्गें गम्मइ एउ चरित्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

३ MBK °तुलिय°. ४ MK पलयमिहिर; B मलयमिहर, G पलग्रपिहिर but originally पलयमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment. ५ MB दूमह. ६ MB निम्महणु.

7. १ B पुच्छियउ. २ MB बंधउ. ३ MB होइ. ४ MB मेलाविउ ५ MB चरणारविंदु. ६ B पाविज्जइ. ७ MB जिणइंदहु.

7. 4. b पवरविणा प्रवरश्वासौ विश्व गरुडस्तेन.

8

चउरासीलक्खइं कुंजराहं   तेत्तिय सहसइं रहवराहं ।
छण्णवइ सहासइं राणियाहं   बत्तीस णिवहं संताणियहं ।
सोलहसहसइं सिद्धहं सुरहं   आणायराहं पंजलियराहं ।
घरि चोद्दह रयणइं णव वि णिहि   महि पयछत्त अणुकूलवहि ।
सिरिवालहु पुण्णु पवित्थरिउं   जणु वण्णइ पुव्वभवायरिउं ।
जं णयरायरउप्पण्णु धणु   तं जसवइ पइसारइ भवणु ।
ता सकलुसु चविउ सुहावइए   लुद्धइ संचियउ जसोवइए ।
वसु पउ वि ण वच्चइ मरणदिणे   एक्केण जि भीसणि पेयवणे ।
इज्जेवउं सहुं बिहिं कप्पडेहिं   किं पुत्तकलत्तहिं लंपडेहिं ।

घत्ता—ता मंति[11] भासिउं गुज्झु पयासिउं एवमाइ मा भासहि ॥
जसवइयहि केरी तिहुयणसारी सीलविचित्त मा दूसहि ॥ ८ ॥

9

जसवइकुच्छिहि जिणु संभविही   जसवइयहि होही परमदिही ।
जसवइयहि जसु महियलि भमिही   जसवइयहि पेय इंदु वि णविही ।
परियाणिवि दिव्वमुणिंदु मुणि   छम्मासहिं होही एत्थु गुणि ।
देविउ पेसणसंभाइयउ   सिरिहिरिदिहिकित्तिउ आइयउ ।
वसुहार पडिय घरंगणइ   सुर मिलिय अणेय णहंगणइ ।
हरि करि रवि जलणरासि जलिय   दिट्ठी सोलह सिविणावलिय ।
थिउ चंडपुरंदरथुयचलणु   जिणु देविहि देहइ कयकलुणु ।
सा सुंदरि णविय सुरासुरहिं   भावणवेंतरहिं सविसहरहिं ।

8. १ M तेत्तियइं जि लक्खइ संदणाह; B omits this foot; K तेत्तियइं सहासइं रहवराहं. २ MB add after this: तहु अत्थि सुट्ठु संदणवराहं. ३ B सहस. ४ MB सहस सताणियाहं. ५ B °सहासइं. ६ MB सुराहं. ७ MB अणुकूलविहि; K °वहि but corrects it to विहि. ८ MB पुण्ण. ९ MBK कप्पडहिं. १० MBK लंपडहिं ११ MB मंतिहिं.

9. १MB जसवइहि कुच्छि. २ MB पयइं वि इदु णविही. ३ MBT °मुणिंद°. ४ MB घरपंगणइ. ५ MBK चंद°. ६ MB सुरासुरेहिं. ७ MB सविसहरेहिं.

8. 4 *b* अणुकूलवहि अनुकूलपथे, अनुकूलेत्यर्थः.

9. 4 *a* पेसणसंमाइयउ प्रेषणेन आज्ञादानेन संमानिताः.

तहिं अवसरि माणमरट्टु चुउ　　　मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।
आवेप्पिणु णिम्मच्छरमइइ　　　जसवइ सइं णविय सुहावइइ ।
दिसं कवण सुरासहि अणुहरइ　　　किं अवरहि रवि उग्गउं करइ ।
का पुज्ज णारि पइं माइं विणु　　　अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

घत्ता—अमुणियसंबंधइ चिरु रोसंधइ फरुसक्खरु जं जंपियउं ॥
तं अम[11]रपियारिइ खमहि भडारिइ मइं बालइ दुक्किउ कि[12]यउ ॥ ९ ॥

10

णामेण विलासिणि रंगसिरि　　　अकमलकरि णं सयमेव सिरि ।
गच्छंति पलोइय वणियइणा　　　पहि जंति भणिय वड्डियरइणा ।
मुं[1]हयंदुज्जोइयसयलदिस　　　किं ण[2]च्चहि वच्चहि पुलयवस ।
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु　　　देवीपय[3]फासें णट्ठु महु ।
बारहं[4]वारिसियउ खासु किह　　　जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह ।
पुट्ठउ णं अमिएं सिंचियउ　　　तेणंगु मज्झु रोमंचियउ ।
जसवइपयगलियजलेण जरु　　　णासइ गहभूयपिसायडरु ।
सा धूमवेय वइरिणि खगइ　　　अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।
जु[5]वराय हवेसइ पोट्टि तहि　　　जुयरायपट्टं[6] बद्धउ अणहि ।
तो[7] जणणिइ जणियउ तित्थयरु　　　भइयइ थरहरियउ पंचसरु ।
उत्तारिउ धणु लिहक्कविय सरं[8]　　　जिणजम्माणि कम्म[9]हु णत्थि धर ।
णिउ मेरुहि नियसहिं जिणधवलु　　　जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु ।

घत्ता—सइं ण्हवइ पुरंदरु आसणु मंदरु कायकों[10]डु रयणायरु ॥
जहिं ण्हाइ जिणेसरु तं ण्हवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्वण. ९ MB मुएवि अण्णु. १० MB जंपिउ. ११ MB अरुह°. १२ MR किउ.

10. १ M महि इंदुज्जोइय°; BK मुहइंदुज्जोइय°. २ MB वच्चहि णच्चहि. ३ MB पयफंसें ४ MB बारहवरिसियउ वि. ५ MBK जुवराउ ६ MB °पट्टु. ७ K ता. ८ M सिर. ९ MBK कामहु. १० MB कायकुंडु.

---

10. 11 *b* धर रक्षा. 12 *b* सिवसिरि° मोक्षश्रीः; धवलु भर्ता. 14 जइणायरु गणधरदेवः, अथवा बृहस्पत्यादिकश्चतुरः.

11

भावणवेंतर[1]कप्पाहिवहिं देवहिं इच्छियसासय[2]सुहहिं ।
गुणवालु णाउं किउ जिणवइहि आणिवि अप्पियउ जसोवइहि ।
णवमासहिं अवरु महासइहिं संभूयउ पुत्तु सुहावइहि ।
ससहोयरु भोयवईइ सहुं खयरहुं णियकेर समुद्दिसहुं ।
गउ णरवइ[3] सणरु सकरि सरहु अरिवरहरिजूहहु णं सरहु ।
वेयड्ढमहीहरि संचरइ विज्जाहररायहं महि हरइ ।
साहिय फणि जक्ख वि किंणर वि तहु भइयइ[4] कंपइ किं ण रवि ।
परमप्पउ हूयउ जासु घरि णिवसइ सिरि अवसें तासु करि ।
भुंजंतहु कामभोयसयइं[5] लक्खाइं तीस पुव्वहुं गयइं ।
एक्कहिं दिणि जिणु णिव्वेइयउ लोयंतिएहिं संबोहियउ ।

घत्ता—तें ढोइवि णीसहं धणु णीसेसहं दुक्खायामियकायहं ॥
पच्छइ पडिवण्णउं गुणसंपुण्णउं सुचरिउं खीणकसायहं ॥ ११ ॥

12

चउतीसातिसयविसेसधरु संजायउ केवलि तित्थयरु ।
गुणवालु[1] भडारउ गुणमहिउ विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।
संबोहियबहुभवियंबुरुहु[2] जिणसूरु देउ महु मोक्खु[3] लहु ।
दुयसीलक्खइं पुव्वहं सधर[4] सिरिवालु वि भुंजिवि सयल धर ।
पप्फुल्लियबालकमलमुहहु सिरि पट्टु[5] णिबंधिवि तणुरुहहु ।
परिचिंतिवि[6] जम्मजरामरणु णियतणयजिणिंदहु गउ सरणु ।
सोलहसहासधरणीसरहं तें सहुं पव्वइय महासरहं[7] ।
संसारघोरभारें लइउ वसुवालु णरिंदु वि पाविइउ[8] ।

11. १ MB °विंनर°. २ MB सासयसिवहि ३ MB णरवइ सकरि सहरि सरहु. ४ B भइएं. ५ M °सुहइं; B सहइ.

12; १ M गुणवाल. २ GK °यबुरहु but gloss कमलम्. ३ MB सोक्खु. ४ M सकेर. ५MBK पट्टु. ६ B पर चिंतिवि. ७ MB महीसरहं. ८ MB पव्वइउ.

---

11. 4 *b* णियकेर समुद्दिसहुं निजाज्ञां समुद्देष्टुम्. 11 णीसहं नि:स्वानाम्

12. 4 *a* सधर सपर्वता. 7 *b* महासरहं गम्भीरध्वनीनाम्.

सहुं पुत्तसहासें सो सहइ तं संजमु तं मउं को वहइ ।
देविहिं प[10]रमत्थवियाणियहं पण्णाससहा[11]सइं राणियहं ।
बुज्झियधम्मइ उज्झियरइए तवि संठिउं[12] समउं सुहावइए ।

घत्ता—सा चरिउ चरेप्पिणु तेत्थु मरेप्पिणु सइं अमरो[13]हिवु हूई ॥
णासियदुक्कम्में जिणवरधम्में धावइ पुरउ विहूई ॥ १२ ॥

13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिद्दडिय णउ देह सत्तधाउहुं घडिय ।
जहिं सत्तु ण मित्तु ण घरिणि घरु जहिं लोहु ण कोउ ण कामजरु ।
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं सिरिपा[1]लु वि गउ कालेण तहिं ।
वसुवालु वि गुणवालु वि परमु अरहंतु करउ महु रइविरमु ।
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउं घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।
तूसेप्पिणु ताहि सुलोयणहि रायवसविरोल्लि[2]यलोयणहि ।
पुणु भणिउं देवि हियवइ धरं[3]वि हउं खगजम्मंतरु संभरमि ।
तहिं अवसरि हरिसुद्धाइयउ जम्मंतरविज्ज[4]उ आइयउ ।
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ गयणयलविहारपवित्तियउ ।
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि तं पेक्खिवि भणइ पियंगुसिरि ।

घत्ता—हउं जाणउं[5] भाविणि अइमायाविणि कंतहु चाडुयकारिणि ॥
अलियउ जि कहंतरु भव[6]णेरंतरु कहइ दुट्ठ दुच्चारिणि ॥ १३ ॥

९ MB वउ. १० MB देवहिं परमत्थु वियाणियहं. ११ MB °सहस रायाणियहं. १२ MB संठिय. १३ MB अमराहिउ.

13; १ MB सिरिवालु गयउ. २ MB °विरोलिय°. ३ MB धरमि. ४ B वज्जिउ. ५ MB जाणमि. ६ MB भवणे णिरंतरु.

---

13 विहूई विभूतिः.

13. 13 °णेरंतरु अविच्छिन्नम्.

14

तुहुं देवि सुलोयणि अवयरिय   हउं पांवसवत्ति खारहं भरिय ।
पइं कहिउ कहंगु ण सद्दहंवि   लइ दिट्ठउ एवहिं किं रहंवि ।
रमणीयणसिरचूडामणिहिं   णीसल्लु कयउ दोहि वि जणिहिं ।
लहुभाइहि रज्जु समप्पियउं   घणघोसें सहरिसु जंपियउं ।
हउं गच्छमि गयणे अज्जु तहिं   जिणु बंभु सयंभु सइं वसइ जहिं ।
रयणालंकारहिं विच्छुरिउ   विज्जाहरवेसु तेण धरिउ ।
जं होंतउ आसि पहावइहि   तं रूवुं धरेप्पिणु णियवइहि ।
थिय पासि सुलोयण जलयवहि   बिण्णि वि उल्ललियइं झत्ति णहि ।
जणु जोयइ उद्धदिट्ठि मुयइ   असहंतु विओउ कलुणु रुयइ ।
अंतेउरु परियणु णीससइ   बंधवयणु संभरंतु सुसइ ।

घत्ता—उल्लंघियजलहरि सुरवरमहिहरि भद्दासालवणंतरि ॥
तं पइसइ वहुवरु चलकिसलयकरु जिणवरभवणब्भंतरि ॥ १४ ॥

15

बिण्णि वि वंदेप्पिणु जिणधवलु   तं भद्दासालु सालसरलु ।
परिहरिवि ताइं उप्परि गयइं   तेत्थाउ पंचजोयणसयइं ।
तहिं णंदणि पुज्जिवि चेइयउं   वणि चउदिसु अकयणिकेइयउ ।
पुणरवि तिसट्ठिसहसइं उवरि   जोयणहं चडेप्पिणु सुरसिहरि ।
वणु दिट्ठउ णामें सउमणसु   करिदसणाहयतरुगलियरसु ।
पणवेवि तहिं मि जयतिजगुत्तमउ   जिणवरपडिमाउ अकित्तिमउ ।
पुणु पंचतीससहसइं घणहं   पंचसयालंकियजोयणहं ।

14. १ MB पावसत्ति. २ T कहग्गु. ३ MB सद्दहमि. ४ MB कहमि. ५ MB °सिरि. ६ MB संभु. ७ MB रूउ णिएप्पिणु.

15. १ B सालहिं सरलु. २ MB णंदणवणि पुज्जिवि. ३ MB चेइयइं. ४ MB °णिकेइयइं. ५ M पणवि तहिं मि जयजगुत्तमउ; B पणवेवि तेहिं वि तिजगुत्तमउ. ६ B वणहं.

---

14. 2 *a* कहंगु कथास्वरूपम्; *b* रहंवि गोपयामि. 9 *b* विओउ वियोगः.
15. 3 *b* अकयणिकेइयउ अकृत्रिमचैत्यालयाः. 7 *a* घणहं महाप्रमाणयोजनानाम्.

लंघिवि पंडुयवणि पइसरिवि अहिसेउ अरुहबिंबहं करिवि ।
जोइवि चूलिय मेरुहि तणिय चालीस जि जोयण परिगणिय ।
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु अवलोइय दहविह कप्पतरु ।
छ वि कुलपव्वय चोद्दह णइउ दिट्ठउ बहुभूमिभेयगइउ ।

घत्ता--जहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥
जंबूतरु जोइउ रयणुज्जोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइं तुहिणइरि जहिं हूई सहि सिरिविंझसिरि ।
तणुवलइय मणिमयभूसणिय सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु जंबुंणयणिम्मियविमलदलु ।
जहिं सुरहं वि चोज्जुप्पायणइं णालु वि हवेइ दहजोयणइं ।
तवणीयविणिम्मिय णं णविय कण्णिय गव्वूइपरिट्ठविय ।
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे लच्छीदेविहि अरविंददहे ।
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइं बिण्णि वि णियमणि गंजोल्लियइं ।
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि तहिं तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।
सवरउलणिसेवियमेहलहो पुणु आयइं वेयड्ढायलहो ।
जयरूवणलिणलंपडि भमरि थियं पंथु णिरोहिवि तहिं खयरि ।
सा भणइ वसइ इह तुलियजगु गंधारिपिंगु णामेण खगु ।

घत्ता--हउं तहु केरी सुय णवकुवलयभुय पइं णियंति जणरामें ॥
गुंणि मग्गणु संधिवि ठाणु णिबंधिवि विद्धी हियवइ कामें ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय. ८ MB °भूमिभोय°. ९ MB जहि णिवसइ गुणगणु.

16. १ MB जबूणय°. २ MB वि पविमउ. ३ M तहि तणउ सुपविमलु जलु पिइवि, B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि. ४ M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय°. ५ MB °लंपड. ६ B पियपथु. ७ MB गंधारपिंगु. ८ MB गुणमग्गणु.

---

16. 3 *b* जंबुणय° सुवर्णम्. 5 *b* गव्वूइ° क्रोशद्वयम्. 12 °रामें रमणीयेन.

17

णमिणइयरणाहहु गेहिणिय हउं जगि पसिद्ध तडिमालिणिय ।
विज्जासहाससंपयधरहं रणि दुज्जय हउं विज्जाहरहं ।
मइं इच्छहि सुहय अज्जु जइ तुह दुल्लहु काइं वि णत्थि तइ ।
तं णिसुणिवि भरहसेणाहिवइ भासइ तुहुं सुंदरि मूढमइ ।
ओसरु सरु पंथहु सइरिणिए किं जंपहि वोमविहारिणिए ।
महु जणणिसमाणी परघरिणि जो पइसिवि सक्कइ वइतरिणि ।
सो पइं सेवउ णिरु णिग्घिणउ हउं पुणु तुह होमि माइ तणउ ।
ता रूसिवि पिंगलकेसियउ असइइ रयणियरिउ पेसियउ ।
सिसुससिसंणिहदाढालियउ णवघणणीलंजणकालियउ ।
चलजीहापल्लवचयणियउ गुंजापुंजारुणणयणियउ ।
लंबियघोणसफणिमेहलउ किलिकिलिसद्दें कयकलयलउ ।

घत्ता—सुरधणुविण्णासहिं विज्जुविलासहिं थिरसरधारामेहहिं ॥
आढत्तु अणेयहिं पहरणभेयहिं भिण्णमहाभडदेहहिं ॥ १७ ॥

18

जयसीलविसुद्धि ण तेहिं हया हियएं जएण गुरुस्संति कया ।
थिय णियमियचित्त सुलोयण वि जाणंति तो वि खललोय ण वि ।
तो तें झेंदुल्लियइ बुज्झियउ हा किं मइं णिप्फलु जुज्झियउ ।
जइ मंदरु णियठाणहु चलइ तो तुज्झु वि चित्तवित्ति खलइ ।
मं रूसेज्जसु जं मइं दूमियउ विज्जउ पेसिवि आयामियउ ।
गय एम भणेप्पिणु गयणयरि अमरहिं पुज्जिउ अरिहरिणहरि ।

17. १ M दुज्जिय. २ MB पइसहुं ३ MB गेण्हउ. ४ M असइयइ रयणिइ रिउ पेसिउ; B असईए रयणियरउ पेसियउ. ५ K विज्जुसहासहिं.

18. १ MB हय. ३ MB हियवइ. ३ MB कय.

17. 5 *a* ओसरु सरु पंथहु उत्सृज व्रज मार्गात. 6 *b* पइसिवि प्रवेष्टुम्. 12 °सरधारा° बाणधारा.

दुंदुहिसरु महुरु समुच्छलिउ   रइपहु णामें सुरवरु मिलिउ ।
तेणुत्तउ इंदें पेसियउ   मइं तुह सुहभाउ[4] गवेसियउ ।
जा पइं रोहिवि[5] थिय वणथणिय   सा ण हवइ खेयरि सुरगणिय ।
तुह सीलु णिहालहुं पट्ठविय   पइं णियजणणी विव चिंतविय[6] ।

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुब्भववसि कंपावियदसदिव्वइ[7] ॥
चारित्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण थुव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुच्चइ सो तुहुं मग्गि वरु   तं णिसुणिवि पभणइ णरुपवरु[1] ।
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु   वरु मग्गमि हउं संसारहरु ।
अवरें वरेण महुं[2] कज्जु ण वि   पुणु णिवडइ सुरवइ चंदु रवि ।
जहिं सोक्खु कयाइ[3] ण संचलइ   जहिं कामहुयासु[4] ण पज्जलइ ।
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो   हउं तत्ति करेमि[5] सुर तहु वरहो ।
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ   गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।
तं देवपसंसइ गाइयउ   वहुवरु केलासु पराइयउ ।
रीणउ गइ विरइवि णहयलइ   आसीणउ रयणसिलायलइ ।
कणयमयकोणताडणखमहं   ता णिसुउ[6] सद्दु सुरडिंडिमहं ।
सद्देण तेण आयड्ढियइं   बिण्णि[7] वि गयाइं महियड्ढियइं ।
सुरसरितरंगससियरसियइं   जहिं भरहणराहिवणिम्मियइं ।

घत्ता—चामीयरघडियइं मणिगणजडियइं दिट्ठइं घरइं जिणेसरहं[8] ॥
पयपणवियसीसहं[9] तहिं चउवीसहं दिक्खादमियदुरासहं ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ. ५ B रोहिय. ६ MB चिंताविय. ७ MB दइ°.

19. १ MB पवरणरु. २ M सहुं. ३ MB ण काइ वि. ४ MB हुयासणु पजलइ. ५ B करउं. ६ MB सुणिउ. ७ MB बिण्णि वि विगयाइं महड्ढियइं. ८ M जिणेसहं. ९ MB °पणमिय°.

---

18. 11 णाणुब्भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषां वशी; °दिव्वइ दिक्पतीन्.

19. 9 *b* णिसुउ निःसृतः. 13 °सीसहं श्रीशानामिन्द्रादीनाम्; दिक्खादमियदुरासहं दीक्षया दमिता उपशमिता दुराशा भोगाद्याकांक्षा यैस्तेषाम्.

20

रिसहं रिसिमग्गपयासयरं अजियं जियवम्महमुक्कसरं ।
संभवदेव सभवमहणं अहिणंदणमहिणंदियभुवणं ।
अदुगुंछियइच्छियमोक्खगइं सुमइं सुमइं वज्जियकुमइं ।
पोमप्पहमवि पोमाहरणं गयपासं णमह सुपासजिणं ।
चंदप्पहमहिहयचंदविहं सुविहिं सुविहिं जसपुंजणिहं ।
सीयलवयणंभहयंगरुहं सीयलणाहं वंदे अरुहं ।
सेयंसं सेयपवित्तियरं वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।
सिरिवासुपुज्जणामं णिरहं विमलं विमलं तवतावसहं ।
वंदे भयवंतमणंतमहं मणभमिरभूरिभीसणतमहं ।
धम्मं दहधम्मुवदेसयरं पणमामि जिणं जाणियसवरं ।
संतं संतिं जगसंतियरं सोलहमं परमं तित्थयरं ।
कुंथुं कुंथुसुं वि दयाविरयं बहुगंथियगंथपंथविरयं ।
पणमामि अरं संणिहियसमं अरमयलं मूलियमोहदुमं ।
मल्लिं मल्लियदामंचिययं मुणिसुव्वयमुणिरायं सुवयं ।
णिणमिय णमिणाहं जगसामिं गुणरहणेमिं वंदे णेमिं ।

20. १ MB मोक्खरयं. २ M सुमयं. ३ M कुमयं. ४ MB पोमप्पहं पवि. ५ K सुविहं. ६ MB °पवित्तयरं. ७ MB °धम्मपयासयरं. ८ MB कम्मट्ठगंठिणिण्णासयरं; T °मयरं °स्वपरम्. ९ M संतं. १० MB कुंथेसु दया°. ११ MB दयावहरं; K दयावरय. १२ MB °विहरं; T °विरयं. १३ MB अरमयलुम्मूलिय°; T °उम्मूलिय°.

---

20. 2 *a* संभवमहणं संसारविध्वंसकम्. 4 *a* पोमाहरणं पद्मायाः केवलज्ञानादिलक्ष्म्याः धारकम्; *b* गयपासं नष्टकर्मबन्धनम्. 5 *a* अहिहयचंदविहं अभिहता तिरस्कृता चन्द्रस्य विशिष्टा भा दीप्तिर्येन. 6 *a* सीयलेत्यादि—शीतलवचनाम्भसा हतः प्रक्षालितोऽङ्गरुहः शरीरजो रोगः कामो वा येन. 7 *a* सेयपवित्तियरं श्रेयो निर्वाणं पुण्यं वा तस्य प्रवृत्तिकरम्; *b* वासवपुज्जं इन्द्रपूज्यम्. 8 *b* विमलं विगतो द्रव्यभावस्वरूपः कर्ममलो यस्य. 9 *b* °तमहं ज्ञानदृगावरणघातकम्. 10 *b* जाणियसवरं ज्ञातस्वपरम्. 12 *a* कुंथुसु अतिसूक्ष्मजीवेष्वपि. 12 *b* बहुगंथियगंथपंथविरयं ग्रन्थो बाह्याभ्यन्तरो मिथ्यात्वसुवर्णादिलक्षणो विद्यते येषां मिथ्यादृष्टीनां तेषां ग्रन्थाः शास्त्राणि तैरुपदिष्टाः पन्थानः स्वर्गापवर्गाद्युपायास्ते विरता विनष्टा यस्मात्, तेभ्यो वा विरतः उपरतः. 13 *a* संणिहियसमं सम्यग् निहितः स्थापितः स्वात्मनि भव्येषु च शमो रागाद्युपशमो येन; 14 *b* अरमित्यादि—अरमत्यर्थं अचलः केनचिदपि न चालयितुं शक्यः; मूलियमोहदुमं मूलितः उन्मूलितः मोहद्रुमो येन. 15 *a* णिणमिय नृभिश्चक्रवर्त्यादिभिर्नमितो नतः.

पासं पासासिकरैराण हियं सत्तूण वि दरिसियधम्मसूयं ।
वंदे वयवड्ढमाणणियमं सिरिवड्ढमाणवीरं चरमं ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदें कुवलयचंदें वंदिय सयल जिणेसर ॥
तिह तें जयराएं समियकसाएं पुप्फयंत जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे जयसुलोयणातित्थवंदणं
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥
॥ संधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण°. १५ MB दरसियधम्मासिय. १६ MB चरिम.

16 *b* सत्तूणेत्यादि - शत्रूणामपि दर्शिता धर्माधर्मप्रतिपादनात् [illegible] विभूतिविशेषो येन. 17 *a* वयवड्ढमाणणियमं व्रतैरुपलक्षिता वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालव्रतानि यस्य यस्माद्वा भव्यानां स तथोक्तः. 19 पुप्फयंतजोईसर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च.

XXXVII

जयराएं रयणविणिम्मियहं पसरियकरणि[1]उरुंबइं ॥
तेवीसहं[2] जिणहं अणागयहं[3] वंदियाइं पडिबिंबइं ॥ ध्रुवकं ॥

I

वंदइ सुंदरि[4] चेइयइं जाम तहिं अच्छिय मुणिवर बिण्णि ताम ।
ते तियसहिं गय सहुं समवसरणु जहिं णिसवइ रिसहु तिलोयसरणु ।
वहुवरइं णवेप्पिणु गुरुपयाइं[5] मग्गेण तेण ताइं वि गयाइं ।
पत्तेहिं तेहिं दोहिं वि जणेहिं जिणदंसणवंदणकयमणेहिं ।
वरविजयवइजयंताइयाइं दारइं चत्तारि पलोइयाइं ।
तोरणइं माणमंदरणिसुंभ माणिक्ककरुज्जल[6]माणखंभ[7] ।
सरवरपविमलजलखाइयाउ पप्फुल्लियवेल्लिउ वेइयाउ ।
पायारु णडिंदणिहेलणाइं मुणिणाहघरइं सुरतरुवणाइं ।
जोयंतहिं जोयणमेत्तु दिट्ठु मणिमंडउ जहिं जगजणु णिविट्ठु ।
बत्तीस सुरिंद णरिंदु[8] एक्कु भरहेसरु बीयउ णाइ सक्कु ।
जोइसवइ आणिय चंदसूर सप्पुरिसमहापुरिसारिजूर ।
किंणरवइ दोण्णि महोरईस ते कायमहाकायंकभीस ।

घत्ता—किंपुरिसहं राणा बिण्णि जण कहिय पुरिस किंपुरिसें[9] वि ॥
घरिणिहि सोमप्पहतणुरुहेण अवलोयवि णवर[10]विछवि ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णमर्जुनोपेतम् ।
भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °णिउरुंबइं. २ MB तेवीसइं. ३ M अणागयइं. ४ B सुंदरु. ५ B omits this foot ६ G करुज्जलु. ७ MB °थंभ ८ MB णरिंद. ९ MB किंपुरिसा. १० M णवरच्छवि; B अवराविछवि.

---

1. 12 *a* बत्तीस सुरिंद तथाहि कल्पवासिनां द्वादश इन्द्राः, भवनवासिनां दश, व्यन्तराणामष्टौ, चन्द्रादित्यौ चेति.

2

गंधव्वहं पहु समविसमणाम रक्खसहं भीम अच्चंतभीम।
जक्खिंद पुण्ण मणिभद्द भणिय भूयाहिव रूव विरूव भणिय[1]।
तहिं काल महाकाल वि पिसाय दाविय गेहिणिहि पिसायराय।
बल वइरोयण दणुइंद कहिय णाइंद[2] धरण फणिवइ ण रहिय।
पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ।
दीवहिं दीवंगउ दीवचक्खु उयहिहिं जलकंतु जलप्पहक्खु[3]।
अमियगइ अमियवाहण दिसेस हरि हरिकंत वि सोदामणीस।
गज्जंत पंति[4] अलिणीलदेह थणियाहिव मेह महंतमेह।
अग्गिव[5] अग्गि हुयवहसिहाहं वेलंब पहंजण पवणणाहं।
इय पेक्खवि वीस वि भावणिंद धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद।

घत्ता—विंभयपूरियहियउल्लएण हरिसुप्फुल्लियवयणें॥
जय जय पभणंतें जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणें॥ २॥

3

णाहेयपायणियडइ वइट्ठु[1] पुणु वसहसेणु गणणाहु दिट्ठु।
पुणु बीयउ गणहरु जइवरिंदु[2] अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु।
दढरहु दिहिपरियरु सत्तुदमणु गणि देवसम्मु धणदेउ समणु।
धम्माणंदणु हसिणंदणक्खु जइ सोमयत्तु[3] सुरदत्तु भिक्खु।
मुणि[4] वाउसम्मु झाणोवविट्ठु देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिट्ठु।
रिसि[5] अग्गिगुत्तु अण्णेक्कु गोत्तु तेयंसिउ सच्च[6]हुयासगुत्तु।
हलहरु महिहरु माहिंदु धीरु वसुपउ वसुंधरु अचलु[7] मेरु।
विण्णाणवंतु विण्णायणेउ मुणि मयरकेउ हय[8]मयरकेउ।

2. १ MB मुणिय. २ MB णागिंद. ६ B हुलपहक्खु ४ MB एंत. ५ MB आग्गिवइ.

3. १ MB णिविट्ठु. २ MB जसयरिंदु. ३ MB सोमयत्त. ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउ समुज्झाणो°. ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु ६ MB सत्त°. ७ MB अचल. ८ M भय°; B सय°.

2. 7 *a* दिसेस दिक्कुमाराः; *b* सोदामणीस विद्युत्कुमाराः.

थिरचित्तु पवित्तु धरित्तिगुत्तु सयलोसहिगुत्तु वि विजयगुत्तु ।
पुणु [9]जणणंगुत्तु पुणु सव्वगुत्तु पुणु [10]संव्वत्थि आयमि पउत्तु ।
पुणु विजयभडारउ विजयमित्तु विजइल सिरिअवराइउ णिरुत्तु ।
अवर वि परमेसर परमजोइ चउरासी गणहर एवमाइ ।

घत्ता—विहिणा लिहियाँ[11] इव भित्तियले झाणलीण मणधीरा ॥
जोइय [12]जपेंणे जियजमकरणें[13] सव्व वि साहु भडारा ॥ ३ ॥

4

उग्गतवमहातवतत्ततवहं दित्ततव तवंतहं घोरतवहं ।
तवसिद्धपुज्जविज्जाहराहं अणिमाइगुणड्ढहं गुणहराहं ।
आहारयतणुलयधारयाहं मयरहियहं मोक्खवासारयाहं ।
[1]अंवियलसुयसायरपारयाहं णग्गहं णीसंगहं णीरयाहं ।
पयवीयकोट्ठबुद्धीसराहं [2]तेजइयरिद्धिसिद्धिभासुराहं ।
पंचविहणाणउ[3]प्पायाहं बुज्झियपयत्थपज्जाययाहं ।
छम्मासवरिसउववासयाहं त[4]रुकोडरकंदरवासियाहं ।
कंदप्पदप्पविणिवारणाहं जलसेढि[5]तंतुणहचारणाहं ।
समसत्तुमित्तकंचणतणाहं पासायदीवणिच्चलमणाहं ।
[6]दुज्जयपरवाइगिराहराहं [7]पलियंकत्थहं लंबियकराहं ।
[8]खवियक्खपक्खभिक्खारयाहं चउरासीसहसइं जईवराहं ।

घत्ता—इहु सो सोमप्पहु दिव्वु मुणि इहु से[9]यंसु वि समियमणु ॥
इहु पे[10]क्खु सुलोयणि तुज्झु पिउ णायरिंमिंदु अकंपणु ॥ ४ ॥

९ MB जणयगुत्तु. १० MB सव्वउत्तु आयम°. ११ MB लिहियाइ वि. १२ MB जण्ण. १३ B °करणा.

4 १ MB अविलय°. २ MB ते जाय°. ३ MB °उप्पायणाहं. ४ M तवकोडर°. ५ M °सेढिय-तंतु°. ६ M reads this foot as 11 *a*. ७ M reads this foot as 10 *b*. ८ B जईसराहं. ९ M सयंसु. १० MB पेक्खि.

---

4. 9 *b* पासायेत्यादि—प्रासादस्थदीपवन्निश्चलं मनो येषाम्. 10 *a* परवाइगिराहराहं परवादिवचननिरासकानाम् 11 *a* खवियक्खपक्ख°. निर्जितेन्द्रियाः.

5

इहु जोयहि भा[1]यसहासु तुज्झु थिउ जाणिवि धम्महु तणउं गुज्झु ।
जेणासि सयंवरि सूरदित्ति रूसाविउ महरणि अक्ककित्ति ।
इहु सो दुम्मरिसणु णरवरिंदु समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिंदु ।
सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं णाणुग्गमणिल्लूरियरईहिं ।
पे[2]क्कंबरछइयथणत्थलीहिं दलवट्टियकलिमलकंदलीहिं ।
जल्लमलविचि[3]त्तंगोयरीहिं विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।
सुइसीलसलिलसंगहसरीहिं सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।
आसंघियबंभीसुंदरीहिं लक्खाइं तिण्णि संजमधरीहिं ।
अज्जियसंखहि कहियाइं जाइं पण्णाससहसअहियाइं ताइं ।
तेत्तियइं[4] जि लक्खइं सावयाहं परिपालियबारहविहवयाहं ।
जीवहं अदिण्णहिंसावईहिं तहिं पंचेय य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता--कागणिक[5]रु सुरगुरु फणिवइ वि परिगणन्तु मणि मुज्झइ ॥
पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगै[6]हं संख को बुज्झइ ॥ ५ ॥

6

अच्चंततत्ततवणीयवण्णु कंकेल्लिकुरुहछाहीणिसण्णु ।
पेच्छिवि सहमंडवि जगजणेरु णं जंबूदीवहु मज्झि मेरु ।
इच्छियभ[1]वभमणविणिग्गमेण सकलत्तें विलसियउवसमेण ।
इह चक्कवट्टिसेणाहिवेण पारद्धु थुणहुं जयपत्थिवेण ।
जय देव दिण्णपविमलमणीस जय जिण तिहु[2]यणचूडामणीस ।
जय जीवलोयबंधव दयाल जय पुरुतित्थंकर सामिसाल ।

5. १ MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु. २ MB एकंबर°. ३ MB °विलित्तं.°. ४ MB पंच जि लक्खइं; K चउपण्ण जि लक्खइं. ५ MB °कर. ६ MB मिगहं.

6. १ MB भवभवण°. २ T तिहुवण°.

5. 11 *a* °हिंसावईहिं हिंसा आपदश्च याभिः.

6. 1 *b* °कुरुह° वृक्षः. 2 *a* जगजणेरु ऋषभनाथः. 5 *b* तिहुयणचूडामणीस त्रिभुवनचूडामणिर्मोक्षस्तस्य ईश स्वामिन्. 6 *b* पुरु° प्रथमः. 7 *b* मयतरुकरेणु मृत्युतरुभञ्जहस्तिन् (?)

जय कप्परुक्ख जय कामधेणु जय चिंतामणि मयतरुकरेणु।
जय सयरायरलोयावलोय संसारमहण्णवतरणपोय।

घत्ता—पइं एयाणेयवियप्पणयणाएं वारियँ परमपय॥
पइं जीवहं थावरजंगमहं खयभीयहं भासिय जीवदय॥ ६॥

7

वड्ढाँवियमिच्छामोहरयइं समयहं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं।
पइं जिणिवि णाह जं तच्चु सिट्ठु तं मुणइ ण बंभु ण रुद्दु विट्ठु।
सयलहं माणि णिवसइ सामलंगि विड संभरंति किं सत्तभंगि।
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीयराउ तुहुं इंदमउडमणिघट्ठियपाउ।
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेव हउं करेवी तुहारी चरणसेव।
इय वंदिवि जिणु जियतरुणिविरहु पणविवि संभासिउ तेण भरहु।
पहु मेल्लहि गच्छमि करि पसाउ तवचरणु लेमि भंजमि विसाउ।
तं सुणिवि चवइ रायाहिराउ लइ रज्जु तुहुं जि जय होहि राउ।
ण पहुच्चइ जइ तुह गयउरेण तो पूरइ किं ण धरायलेण।
एयं सयलेण वि सरयणेण आयड्ढियणवणिहिहड्डधणेण।
हउं अच्छमि अंतेउरि पइट्ठु तुहुं भुंजहि महि आसणि णिविट्ठु।

घत्ता—मा जाहि तवोवणु चमुपमुह वेहाविउ रिउ रायहिं॥
पइं जहउ धीर महाभड वि जिप्पइ विसयकसायहिं॥ ७॥

३ MB धारिय; T निवारिता निराकृता.

7. १ K वड्ढारिय°. २ MB मणिघिट्ठय° (घिट्ट ?). ३ MB करमि. ४ B भणइ. ५ MB बइट्ठु. ६ MB वीर.

9 एयाणेयवियप्पणयणाएं वारिय एकानेकविकल्पौ अद्वैतक्षणिकत्वभेदौ तयोर्नयास्तत्प्रसाधकप्रमाणानि ते न्यायेन प्रमाणोपपत्त्या निवारिता निराकृता येन.

7 1 *b* समयहं मतानाम्; तेसट्ठइं तिण्णि सयइं त्रिषष्ट्यधिकानि त्रीणि शतानि. 6 *a* जियतरुणिविरहु धर्मानुरागपरतया निर्जितः हृदयेऽसंप्रधारितस्तरुणीविरहो येन. 12 वेहाविउ विजयगृद्धिं नीतः.

8

जिणण्हवणवारिधुयमंदरेण[1] ता विहसिवि चविउ पुरंदरेण ।
मेल्लिहि[2] भरहाहिव जाउ एहु होसइ गणहरु तवलच्छिगेहु ।
तियसिंदहु तं पडिवण्णु तेण णियपणइणि आउच्छिय जएण ।
जं चिरु पिउ[3]णिलयहु णिग्गयाइं जं णासिवि सरवासहु[4] गयाइं ।
जं ससिसेणपरिपालियाइं अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं ।
जं भंगुरणहरहिं दारियाइं विण्णि वि मज्जारें मारियाइं ।
मुणिवरइं खलेण णिहालियाइं जं पिउवणजलणें पउलियाइं ।
वेउव्वियतणुसोहाहराइं जायाइं सग्गि जं वहुवराइं ।
जं वणि पच्चारिउ भीमसाहु जं हूयउ सो तेलोक्कणाहु ।
तं सुयरमि सुंदरि जामि अज्ज साहेवउं मइं परलोयकज्ज ।

घत्ता —आयण्णिवि चल संसारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥
आमेल्लिउ पिययमु पणइणिए रुयन्तु वि गिरिधीरए ॥ ८ ॥

9

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं दिज्जंतु वि धम्मकयायरेहिं ।
अवगण्णिउं तणु[1] जिह पुहइरज्जु मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।
हक्कारिउ[2] पुत्तु अणंतवीरु गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।
तहु पट्टु णिबंधिवि जयरवेण[3] जिणवरु जयकारिवि[4] घणरवेण ।
आउच्छिवि जीवाजीवभेय परियाणिवि णाणाणाणणेय ।
अरिमित्ति पउंजिवि सरिस दिट्ठि सिरि लोउ विइण्णउ पंचमुट्ठि ।
दव्वें[5] भावेण वि मुक्कगंथु णिग्गंथु णियच्छियमोक्खपंथु ।
जउ दिक्खंकिउ पणविउ जईहिं अट्ठहिं सएहिं सह णरवईहिं ।

8. १ G मंदिरेण. २ MB मेल्लहि. ३ MB पिय°. ४ MK सरवाहहु.

9. MB तिणु. २ MB हक्कारिवि पुणु. ३ MB जयवरेण. ४ MB जयकारेण. ५ M दिव्वें.

9. 5 *b* णाणाणाणणेय चेतनरूपं ज्ञेयं परिच्छेद्य, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणपर्यायापेक्षया, अनाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेयं च.

तेणंगाइं बारह सिक्खियाइं   चोद्दह पुव्वइं उवलक्खियाइं ।
सो मुणिवरु मेल्लिवि मोहवासु   जायउ गणहरु रिसहेसरासु ।

घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ वम्महपसरणिवारा ॥
अणुगामिणि तुम्हहु होमि हउं संजमु धरमि भडारा ॥ ९ ॥

10

जइयहुं वणिवरकुलि वणिवराइं   रिउभइयइं छड्डियमंदिराइं ।
कयकम्मपहावें विणडियाइं   णासंतइं काणणि णिवडियाइं ।
णियकंतइ सहुं सुहिहियययेणु   जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु ।
जइयहुं मुणिवेज्जावच्चु कियउ   हियउल्लउं काइं वि धम्मि थियउ ।
जइयहुं जायइं पारावयाइं   लइयइं दोहिं वि सावयवयाइं ।
जइयहुं उप्पण्णइं खेयराइं   लीलालंघियविउलंबराइं ।
रिसिदंसणेण विंभियमणाइं   जइयहुं सुराइं बिण्णि वि जणाइं ।
तइयहुं लग्गिवि वहुपइ णिरुत्तु   भो तुज्झु चरित्तु जि महु चरित्तु ।
णीसेसजीवसंतीयरेण   तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।
सज्जणगुणगहणाणंदियाइ   अप्पिय सुंदरिइ सुहद्दियाइ ।
घल्लिउ सकेसु लुंचिवि सणेहु   वयसीलगुणहिं भूसियउ देहु ।
उम्मुक्कवियारपलोयणाइ   लइयउ तवचरणु सुलोयणाइ ।

घत्ता—घुसिणारुण जे थणहारमणि मंडिय ते मलमइलिय ॥
णं वम्महपहुअहिसेयघड रयपंगुत्त णिहालिय ॥१० ॥

६ M तुम्हइं होमि; K तुम्हहुं होमि.

10. १ MB णिवडियाइं. २ MB तुहुं पइं. ३ M मज्झु. ४ MB °गहणें णंदियाइ. ५ MB सकेस ६ MB वय°. ७ MB उम्मुक्कपियारयलोयणाइ.

---

9 b लोउ लोचः.

10. 8 a वहुपइ वधूपती. 10 b सुहद्दियाइ भरताग्रमहादेव्या सुभद्रया.

11

गंधारिगोरिपण्णत्तियाउ चिरभवविज्जउ पेरिचत्तियाउ ।
विच्छड्डियघरवावारतत्ति अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।
ता पियविओयसिहितवियकाय जूरइ अणंतवरवीरमाय ।
हा पुत्त पडिच्छिउ काइं पट्टु विणु पिउणा रज्जें को मरट्टु ।
इंदियइं पंच णेउ पीलियाइं झाणेण ण णयणइं मीलियाइं ।
मइं पावइ काइं जियंतियाइ पइविच्छोयं तप्पंतियाइ ।
इय सा जंपंति मुयंति रिद्धि णियसुयहु देंति परलोयबुद्धि ।
मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि थिय रायसासणाणंदधामि ।
घणरवघरिणिउ वयपयणईउ अवरेउ संजायउ संजईउ ।
पयारसंगसुयधारिणीइ णाणापुरगामविहारिणीइ ।
देवीइ अकंपणु तणुरुहाइ रेंयणहि सकहंतरु कहिउ ताइ ।

घत्ता—गुरु पुच्छिउ बंभीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥
अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहि होसइ केत्थु सुलोयण ॥ ११ ॥

12

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण ता भणिउं पढमतित्थंकरेण ।
उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु जाएसइ जउ णिव्वाणठाणु ।
होइवि अहमिंदु सुलोयणा वि सुहभावें भावाभावभावि ।
माणियगिव्वाणरईरमाइ सुहुं भुंजिवि बहुसायरसमाइ ।
होही कणयद्धउ णाम राउ तउ चरिवि पणासिवि रोसु राउ ।
लहिही सुंहुं अमरणु अकरणालु जेवडु सलिलु तेवडु णालु ।

11. १ MB पत्तियाउ; २ MB ण णिवीलियाइं. ३ MB अवर वि. ४ MB रयणिहि.
12. १ B कणयट्ठउ. २ MB सो सुराउ. ३ MB सुहुं अमणु अकरणणालु.

11. 8 *b* आणंदधामि हस्तिनागपुरे. 9 *a* वयपयणईउ व्रतजलनद्यः. 11 *b* रयणहि रत्ना-श्राविकायाः.

12. 3 *a* अहमिंदु अच्युतेन्द्रः.

णिप्पज्जइ णलिणहु णत्थि भंति जिणधम्मि पंसु वि सुरिंद होंति ।
जिणधम्मि छिज्जइ मोहमूलु जिणधम्मु सव्वकल्लाणमूलु ।

घत्ता—जिणधम्मु पमाइवि मूढमइ जो परधम्महु लग्गइ ॥
चउरासीजोणिलक्खविहुरि णिवडिउ सो कहिं णिग्गइ ॥ १२ ॥

13

मागहमंडलपरमेसरासु चेलिणिकमलिणिणवणेसरासु ।
खाइयसम्मत्तणिहीसरासु आगामितइयभवजिणवरासु ।
सेणियहु कहइ रिसि पुंसियसंकु गोत्तमु दियगोत्तंबरमियंकु ।
गणहरु रिसिसंघहु तिलयभूउ जयराउ एक्कहत्तरिमु हूउ ।
सहंसिज्ज भडारउ दुहविणासु संपत्तउ सो तिजगग्गवासु ।
गेहिणि हूई अच्चुइ सुरिंदु कालें महि विहरइ जिणवरिंदु ।
णिरसणभूसणभूसिउ अणंतु दीसइ सुरयणु तें सहुं चलंतु ।
आयासहु णिवडइ पुप्फविट्ठि चउअहियइं चमरइं चारु सट्ठि ।
जहिं पाउ देइ तहिं तहिं जि कमलु सुरवइ जुंजइ गुरुभत्तिविमलु ।
जहिं वसइ तहिं कासु वि ण दुक्खु जहिं वसइ तहिं जि कंकेल्लिरुक्खु ।
सीहासणु छत्तइं तिण्णि थंति तिहुयणपहुत्तु णाहहु कहंति ।

घत्ता—जाणिज्जइ सूयरसंवरहिं मृगमायंगतुरंगहिं ॥
जिणणाहहु भासिउ परिणवइ सयलजीवभासंगहिं ॥ १३ ॥

४ MB पुण वि. ५ MB मोहजालु. ६ B मुएवि.

13. MB आगम्मि. २ MB थासियसंकु. ३ MB दियगोत्तें वर°. ४ MB णिवसण°; K णिवसण but corrects it to णिरसण°. ५ MB सीहासण. ६ MB मिग°.

---

4 *b* बहु° द्वाविंशतिः. 6 *a* अकरणालु अतीन्द्रियम्.

13. 13 °भासंगहिं °भाषास्वरूपैः.

14

सुव्वइ[1] दुंदुहि णहि वज्जमाणु । पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु ।
देसाहिव[2] उच्चायंति चरुउ[3] बहुकुसुमगंधपरिमलिउ[4] मरुउ ।
भामंडलु णवरविमंडलाहु गच्छंति समउं बहुभेय साहु[5] ।
पुव्वंगधारि तवतणुसरीर मणपज्जवणाणि[6] सहावधीर[7] ।
देसावहिपरमावहिसमेय[8] केवलिकेवलणाणेक्कतेय[9][10] ।
णवदिक्खिय सिक्खुय[11][12] संत दंत[13] वेउव्वियाइं बहुरिद्धिवंत ।
णिहियक्खयअक्खयपयसमीह[14] कइगमयवाइ वाइहं सीह ।
जहिं गच्छइ तहिं गच्छंति भव्व[15] जहिं अच्छइ तहिं अच्छंति सव्व ।
माणव तिरिक्ख सुरवर असंख हु हु हुयंति चउदिसिहिं संख ।
झं झं करंति झुणि झल्लरीउ णच्चंति णरामरसुंदरीउ ।
तुंबुरु णारय गायंति मिट्ठु भरहें दिट्ठउ पिउ[16] सुहुं[17] णिविट्ठु ।

घत्ता—आउच्छिउ धम्मु महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥
केवलि परमप्पउ णिक्कलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

15

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु[1] वि दुविहु णिज्जरु[2] वि दुविह वज्जरइ अरुहु ।
भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि सल्लाइं तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।

14. १ M सुम्मइ; B सव्वइ. २ B दोसाहिव. ३ B चारु. ४ M °मलियगरुउ; B °मलिउ गारु. M adds after this in second hand and in the margin : चउसहसदलभयसयाविहीर. ६ B °णाण. ७ M दुइदहसहास. ८ M adds after this in second hand and in the margin : रिसि सयपण्णास विमुक्कु वास. ९ M adds after this in second hand and in the margin : तेरंध-गहस पयडियविवेय; B adds : मुणिरंधसहस पयडियविवेय. १० M °केवलणाणक्क°; B °केवलिणाणक्क°. ११ M adds after this in second hand and in the margin : णयणग्गई चउसुण्णहिं समेय; B adds : णयणग्गई चउसुण्णसमेय. १२ MB °सिक्खिय°. १३ M adds after this in second hand and in the margin : दहविउणसहसरिउसयमहंत; B adds : दहविउणसहस रिउसयसहंत, ण हु वयभयदोएक्कु वि णिरीह. १४ B णिहिअक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व. १६ MB जिणु. १७ B सुहणिविट्ठु.

15. १ MB पोग्गलु दुविहु. २ MB णिज्जर.

14. 2 *a* चरुउ अर्घपात्रम् 4 *a* ° तणुसरीर °कृशशरीरः.

15. 9*b* °जलजायकेउ मकरध्वजः कामः.

जीवहं गईउ कहियाउ[3] तिण्णि जगवेढणमरु गारव वि तिण्णि ।
गुणवयइं तिण्णि जगि जोय तिण्णि हयकालें भासिय काल तिण्णि ।
चउविहु चउगइ संसारसरणु[4] बालाइउ चउविहु भणिउं मरणु ।
चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु चउविहु दव्वाइउ दीसमाणु ।
चउ झाणइं चउ देवहं णिकाय चउभिण्णा[5] उच्चविह चउकसाय ।
चउविहु जि बंधु चउविहु जि णासु विणउ वि चउविहु गुणगणणिवासु ।
चत्तारि वि बंधविणासहेउ भासइ णिज्जियजलजायकेउ ।

घत्ता—सज्झाय पंच आयारविहि णाणइं पंच वरिट्ठइं[6] ॥
णिग्गंथ पंच[7]जोइसकुलइं पंचेंदियइं वि सिट्ठइं ॥ १५ ॥

16

अणगारागारि[1]वयाइं पंच पंचत्थिकाय समिदीउ पंच ।
आसवणिबंधहेऊउ पंच लद्धीउ महाणरया वि पंच ।
संसारसरीरइं होंति पंच गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।
छज्जीवकाय छक्काल समय छल्लेसाभाव वि समय वि मय ।
छद्दव्वइं छावासयविहीउ सत्त वि भय सत्ताहोमहीउ ।
पयईउ अट्ठ पुहईउ अट्ठ वणदेव जीवगुण ते वि अट्ठ ।
णव णारायण णव सीरधारि पडिसत्तु वि णव णिहि दुक्खहारि ।
णवविह पयत्थ दह[2]भेउ धम्मु वेज्जावच्चु वि दहविहु सुकम्मु ।
दह भावणसुर भवणंतवासि फणिससिस्सह दह दिसिगय सुहासि ।
एयारह रुद्द रउद्दभाव एयारहविह सावय विगाव ।
पच्छित्तइं अणुवे[3]क्खावयाइं बारह जिणवयणाविणिग्गयाइं ।
बारह णरिंद पालियरहंग बा[4]रह तव बारहविह सुयंग ।

घत्ता—तेरह चरियंगइं ओ[5]क्खियइं तेरह किरियाठाणइं ॥
चउदह गुणठाणारोहणइं चउदह मग्गणठाणइं ॥ १६ ॥

३ MB कहियाइं. ४ MB संसारगमणु. ५ MB चउचउभिण्णा चउविह कसाय. ६ MB विसिट्ठइं. ७ MB जोयस°.

16. १ MB °गारवयाइं. २ MB दहभेय. ३ B अणुवेहावयाइं. ४ MB बारह तव बारहविह सुयंग. ५ MB रक्खियइं.

16. 6 *b* वणदेव व्यन्तरदेवाः. 9 *b* फणिससिसह धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः

17

अरहंतें सिद्धंतासियाइं[1] चउदह पुव्वाइं पयासियाइं ।
चउदह मल चउदह चित्तगंथ चउदह कुलयर कयमणुयसंथ ।
चउदह रयणइं गुणिगोहियणाम[2] चउदह दक्खालिय भूयगाम ।
पण्णारह कम्मधराविहाय पण्णारह उवएसिय पमाय ।
सोलह वयणइं दुहदारणाइं सोलह जिणजम्महु कारणाइं ।
संजम दहसत्त दहट्ठ दोस णाहज्झाणइं[3] एकूणवीस ।
असमाहिणिलय वज्जरिय वीस कयमणमल सर्यल[4] वि एक्कवीस ।
बावीस परीसह कुमुणिभीस सुहयडुज्झयणाइं[5] वि[6] तिवीस ।
तित्थयर भणिय चउवीस ईस मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।
छव्वीस समासिय वसुहभेय गुण सत्तवीस जइवरविहेय ।
आयारकप्प पवरट्ठवीसं[7] अघसुत्ताइं वि एऊणतीस ।
भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

घत्ता—एयाहिय[8] तीस विवायरस कम्महं कहिय जिणेसें ॥
बत्तीसुवएस मुणीसरहं कुडिलाउंचियकेसें ॥ १७ ॥

18

जं जलि थलि णहि पायालमूलि जं थूलु सुहुमु तिजगंतरालि ।
तं पुच्छंतहु पणवियसिरासु भासिउं जिणेण भरहेसरासु ।
गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ दुट्ठु गउ णिउ णियपुरु णिलयणि पइट्ठु ।
णरणाहें रयणिहि सुत्तएण सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।
सूयरदाढाखंडियकसेरु इलुलिउ णिहालिउ तेण मेरु ।
अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिएण सिविणयविवरणउं[1] पुरोहिएण ।
किउ णयणगलियजलबिंदुएहिं वच्छत्थलें[2] हारोवरि चुएहिं ।

17. १ MB सिद्धंताइयाइं. २ MB मुणिगणियणाम. ३ MB णाहाझाणइं. ४ MBK सवल. ५ MB सुहयज्झडयणाइं. ६ B तिण्णि वीस. ७ M adds after this: वयसमिदिपमुह जंपइ जईस. ८ MB एयाहितीस.

18. १ MB सुविणय°. २ MB वच्छत्थलु.

17. 1 *a* सिद्धंतासियाइं सिद्धान्ताश्रितानि. 2 *b* °संथ संस्था मर्यादा.

तिट्ठारयणियरिविलुक्कमाणु कालाहिमहामुहि णिवडमाणु ।
उद्धरिवि लोउ अण्णाणु दीणु चउदह दिणि वरिससहासहीणु ।
महि विहरिवि पुव्वहं एक्कु लक्खु केलासु पराइउ णाणचक्खु ।
पावणवणकुसुमामोयमहुरु आरुहिवि पसिद्धउ सिद्धसिहरु ।

घत्ता—दससहसहिं समउ महारिसिहिं कामकोहणिण्णासणु ॥
थिउ पुण्णिमदियहि जिणाहिवइ बंधिवि पलियंकासणु ॥ १८ ॥

19

जाणिवि जणणहु जणणचयणु लहुयउ ओहुल्लिउ करिवि वयणु ।
सुविसुद्धबुद्धिसीलावयासु आयउ भरहु वि अट्ठावयासु ।
गिरि सोहइ चुयमहुआसवेहिं जिणु सोहइ रुद्धहिं आसवेहिं ।
गिरि सोहइ वियलियणिज्झरेहिं जिणु सोहइ कम्महुं णिज्जरेहिं ।
गिरि सोहइ णाणाविहमएहिं जिणु सोहइ रिसिहिं सुणिम्मएहिं ।
गिरि सोहइ णच्चियमोरएहिं जिणु सोहइ सुरसरमोरएहिं ।
गिरि सोहइ धम्मणएण जेम जिणु सोहइ धम्मणएण तेम ।
गिरि परियंचिउ सवराहिवेण जिणु पणवंतें भरहाहिवेण ।

घत्ता—ता णाहु समुग्घायंतरहिं दीहसमयसंताणइं ॥
वेयणियणामगोत्तइं करइ तिण्णि वि आउपमाणइं ॥ १९ ॥

20

मुणिपवरें किउ किरियाविहाणु रुंदत्तणेण ससरीरमाणु ।
णीसारिउ दंडायारु जीउ तिजगग्गचरमणरयंतु णीउ ।

३ MB °पाणु. ४ MB णिविडमाणु. ५ MB अण्णाण. ६ MB °दिणु. ७ G विवरिवि. ८ MB सिद्धिसिहरु. ९ K दह°.

19. १ MB जाणिवि जणजणणहु २ M लइयउ. ३ MB ओहल्लिउं. ४ Tp ससमोरएहिं इति पाठे उपशमयुक्ताश्च ते उरगाश्च. ५ B गोत्तहु.

---

19. 1 *a* जणणहु ऋषभनाथस्य; जणण चयणु संसारत्यजनम्. 3 *a* चुयमहुआसवेहिं प्रवृत्तमधुप्रवाहैः. 6 *b* °सरमोरएहिं सरमाः सलक्ष्मीकाः उरगाः तैः. 7 *a* धम्मणएण धर्मनाम्ना वृक्षविशेषेण; *b* धम्मणएण धर्मन्यायेन. 9 समुग्घायंतरहिं समुद्घातविशेषैः दण्डकपाटप्रतरलोकपूरणरूपैः.

20. 1 *a* किरियाविहाणु शरीरादात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणम्. 2 °चरमणरयंतु सप्तनरकाणां मध्ये नित्यनिगोदनरकं एकेन्द्रियाणां भेदस्तस्य पर्यन्तम्.

अट्ठइपसारिउ पुणु सुरीडु णं तिहुयणघरि दिण्णउं कवाडु।
अप्पाणउ देवें देवणविउ रूआयारें सहस त्ति थविउ।
णीसेसलोयपूरणु करेवि विवरीएं चारें संवरेवि।
तेजइयकम्मओरालियाइं तिण्णि वि अंगइं णिच्चालियाइं।
मुणि मेल्लिवि तिज्जउ सुहुमकिरिउ संपत्तु चउत्थु छिण्णकिरिउ।
तहिं सुक्कझाणि आयउ अजोइ मणवयणकायमुक्कउ विहाइ।
थिउ देहब्भंतरि सामिसालु क ख ग घ ङ समक्खरभणणकालु।
अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ फलछल्लि व जैरदेरंडबीउ।

घत्ता—दंसणणाणाइहिं वसुसमहिं सिद्धगुणहिं संपण्णउ॥
ससहावें जोइवि परमपए परमेसरु संपण्णउ॥ २०॥

21

ता सक्कें कय माणवमणोज्ज अरुहहु पंचमकल्लाणपुज्ज।
सियसिवियहि णिहियउ णाहदेहु कइलाससिहरि णं अरुणमेहु।
भंभाभेरीझल्लरिसयाइं सुरतूरिएहिं तूरइं हयाइं।
गायंतिहिं किंणरकामिणीहिं णच्चंतिहिं फणिसीमंतिणीहिं।
घिप्पंतिहिं णवकुसुमंजलीहिं उब्भियउल्लोवधयावलीहिं।
सहलक्खयधूवविलेवणेहिं भिंगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं।
आढत्तचित्तथुइकलयलेहिं अवरेहिं वि णाणामंगलेहिं।
कप्पूरचंदणागुरुतुरुक्ख सलें विरइय खंडिवि विविह रुक्ख।
अंचेप्पिणु रिसिपरमेसरासु तहिं णिहियउ अंगु अणंगणासु।
पय पणवंतहिं तंबिरतिडिक्कु अग्गिदहिं मउडाणलु विमुक्कु।

20. १ G सरीडु. २ M फयरायारें, B कयआयारें, T पयरायारें. ३ MB विवरीरें; T विवरीएं. ४ MBT णिव्वालियाइं, ५ B छण्ण°. ६ MB भरण°. ७ MB जरढेरंड°. ८ MB वसुसमिहिं. ९ MB जाइवि उड्ढगइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ.

21. १ MB सुरतूरएहिं. २ MB धूम°. ३ B पुरुक्ख. ४ M सयल विरइय खंडिवि; B सलु वियरयवि खंडिवि.

3 *a* सुरीडु देवस्तवंतु देवसुत वा. 4 *b* रूआयारें प्रतराकारेण. 5 *b* विवरीएं चारें संवरेवि प्रथमं लोकपूरणसंवरणं कृत्वा ततो रुजकारसंवरणं ततो दण्डाकारसंवरणमिति. 6 *b* णिच्चालियाइं निःपरिस्पन्दीकृतानि.

21. 10 *a* °तिडिक्कु स्फुलिङ्गः.

घत्ता—अलहंतु णरत्तणु थरहरिउ भवपरिभवणहु भग्गउ ॥
सिहि णं संसारें तासियउ जिणकमकमलहुं लग्गउ ॥ २१ ॥

22

उल्ललिउ धूमु घणजणियसंकु णं सिहिणा मुक्कउ मलकलंकु ।
पुणु मिलिउ गयणि जालाकलाउ तणु पत्तु खणद्धें भप्फभाउ ।
तहु कुंडहु गणहरजमदिसाइ मुणिवर सक्कारिय पच्छिमाइ ।
तिण्णि वि सिहि पुज्जिय सोत्तिएहिं घय जेंव तिल घल्लिवि खत्तिएहिं ।
तं भणिवि पुण्णज्जणु पवित्तु अण्णेक्कहिं लइयउ अग्गिहोत्तु ।
भालयलि कंठि भुजजुयलसिहरि हिप्पंकइ णिहियउ णाहिविवरि ।
अणु मुद्धएसि मउडग्गभाइ जसमंडणुं जिह तं सहइ काइ ।

घत्ता—जं तुम्हहं जायउ मोक्खु सुहुं तं महु होउ पियारउ ॥
इय भणिवि तियाउसु वंदियउ इंदें रिसहहु केरउ ॥ २२ ॥

23

जेही तुह तेही होउ बोहि अम्हहं वि भडारा माणि समाहि ।
इय घोसंतहिं कप्पामरेहिं वंदियउ तियाउसु खेयरेहिं ।
विंतरदेवहिं जोइसगणेहिं वंदियउ तियाउसु भावणेहिं ।
णंदादेवीइ महासईइ वंदियउ तियाउसु जसवईइ ।
भरहेण दुक्खदूमियमणेण वंदियउ तियाउसु परियणेण ।
केसरिकिसोरसरि ासहरिवासि घणतुहिणकणाउलि माहमासि ।

५ MB तावियउ.

22. १ B जलिय°. २ K भप्प°. ३ MB घय तिल जव. ४ G भायलि ५ MBK भुयजुयल°. ६ MB मुद्धएस. ७ MB मोक्खसुहुं.

23. १ MB मणसमाहि.

---

22. 6 *b* हिप्पंकइ हृत्पङ्कजे हृदयकमले. 7 *a* मुद्धएसि मस्तकप्रदेशे 9 तियाउसु भस्म.

23. 6 *a* °सरि °शब्दे

सुरंगमि[2] कंसणचउद्दसीहि णिव्वुइ तित्थंकरि पुरिससीहि ।
रोवइ सोयाउरु सयणविंदु सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।
तेलोक्कमंदिराधारखंभु कहिं पेच्छमि देउ जुगाइबंभु ।

घत्ता—पइं विणु जिण अंधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुण्णियउ[4] ॥
उब्भिवि हत्थ ओम्माहियउ[5] पयउ वरायउ रुण्णियउ[6] ॥ २३ ॥

24

तुहुं मज्झ बप्पु जगडिंभबप्पु पइं विणु को कहइ कलावियप्पु ।
पइं विणु को पालइ इट्ठ सिट्ठ को विसहइ गुरुतवचरणणिट्ठ ।
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ को होइ देव देवहिं वि देउ ।
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।
इह सो मुउ जो मुउ गब्भि वसइ छिज्जइ भिज्जइ दुहदलिउ[1] रसइ ।
तुह ताउ देउ तित्थयरु पवरु परमप्पउ हूयउ अजरु अमरु ।
सक्केण जि तं जि पउत्तु तासु जो सुयरंतहं णासइ किलेसु ।
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि जो जायहु सिद्धु तमोहु धुणिवि ।
अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु मा मोहें तुहुं संचहि दुकम्मु ।
तं णिसुणिवि राएं दुण्णिरिक्खु मड्डइ[2] साहारिउ तावयदुक्खु[3] ।

घत्ता—गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसरु ॥
मंडलियमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसरु ॥ २४ ॥

25

सोमप्पहु हयसुहदुक्खहेउ सेयंसराउ बाहुबलि देउ ।
गय णिव्वाणहु तिजगुत्तिमंगि[1] थिय तिण्णि वि अट्ठमधरणिरंगि ।

२ MB सूरुग्गमि. ३ B किसण°. ४ B सुण्णउ. ५ MB ओमाहियउ. ६ MB रुल्लियउ.

24. १ M दुहमलिउ. २ MB मंडइ. ३ MB हिययदुक्खु.

25. १ MB तिजगुत्तमग्गि.

---

11 ओम्माहियउ उत्कण्ठितः.

24. 2 *a* इट्ठ सिट्ठ इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्याः.

25. 1*a* हयसुहदुक्खहेउ त्यक्तेष्टानिष्टविषयः.

सहुं गणणाहहिं उव्वारुएहिं णासियमयमोहमहारुएहिं ।
णिद्धाडियसाडियकम्मरेणु कालेण गलंतें वसहसेणु ।
गउ मोक्खहु उववणरमियखयरि एत्तहि वि तेत्थु साकेयणयरि ।
कुंकुमविलेउ ढोयंतएण दप्पणयलि मुहुं जोयंतएण ।
अवलोइवि पंडुरु एक्कु केसु णिंदिवि णरजम्मु सुणिव्विसेसु ।
णयरायरपुरवरपउरदेस णियसुयहु समप्पिवि महि असेस ।
भूएसु भूरिपसरियकिवेण तवचरणु लइउ भरहाहिवेण ।
परिवड्ढइ ण चिहुरुप्पाडु जाम उप्पण्णउं केवलु तासु ताम ।
हुयउ परमेट्ठि परमप्पताणु चउदेवणिकायहिं थुव्वमाणु ।
फेडिवि भव्वहं मणमोहयालु महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।

घत्ता—गउ भरहु वि मोक्खु विसुद्धमइ विविहकम्मबंधणचुउ ॥
फणिविसहरकिंणरपवरणरपुप्फयंतगणसंथुउ ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे सगणहररिसहणाहभरह-
णिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥
॥ संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

२ MB उव्वारुएहिं. ३ MB °महाभएहिं. ४ MB °सारिय°; T साडिय. ५ MB गणंतें. ६ MB उववणि. ७ B एत्तहिं तेत्थु. ८ M परस्स ताणु; B परप्पताणु. ९ M °कम्मवेधेहिं चुउ; B कम्मबंधेहिं चुउ. १० MB फणिखेयर°.

3 *a* उव्वारुएहिं उद्धरितैः सह. 4 *a* णिद्धाडिय साडियकम्मरेणु निर्घाटिताः पूर्वोपार्जिता निर्जीर्णाः शानिताः अपूर्वा आगच्छन्तो निवारिताः कर्मरेणवो येन. 10 *a* परिवड्ढइ निष्पद्यते. 11 *a* परमप्पताणु परात्मरक्षकः. 14 °विसहर° वृषधरा महामुनयः.

NOTES

NOTES

[*The references in these Notes are to Saṃdhis in Roman figures and Kaḍavakas and lines in Arabic figures. A brief summary of the contents of a saṃdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text. The Notes that follow supplement those given at the foot of the page. T. Stands for Ṭippaṇa of Prabhācandra.*]

I

[The Poet offers homage to Ṛṣabhanātha, the first of the Tīrthaṃkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāṇa. By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i. e , 959 A. D.) he arrived at the outskirts of the town of Mepāḍi (Mānyakheta, modern Malkhed) and being fatigued with a long journey rested there in the grove. Two men of the town, Annaiya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception. The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava *alias* Vīraraja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well. Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days. Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāṇa so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help. The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works. Bharata asked him not to mind them. The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāṇa. The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yakṣa of Ṛṣabhadeva and of Padmāvatī Yakṣiṇī, the goddess of learning.

The poet proceeds : There is in the Jambūdvīpa a country called Magadha with its capital Rājagṛha. King Śreṇika was one day seated

in his court with Cellaṇādevī, when a messenger brought to him the report that Mahāvīra had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.]

1. The poet pays homage to Risaha, the first Tīrthaṃkara.

1. 3*a* सुपरिक्खिय, सम्यग् ज्ञात्वा, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 3*b* दिव्वतणुं, निःस्वेदत्वादिदशातिशयोपेतशरीरम्, T., the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of atiśayas which a Jina possesses is 34. See Abhidhāna Cintāmaṇi I. 57–64. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV. 2. 4*a* पयडियसासयपयणयरवहं, प्रकटितः शाश्वतपदनगरस्य मोक्षस्य पन्था मार्गो रत्नत्रयरूपो येन तम्, T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or Siddhi. 5*a* सुहसीलगुणोहणिवासहरं, शुभाः प्रशस्ताश्च ते शीलगुणाश्च तेषामोघः समूहस्तस्य निवासगृहम्, T., the home of a large number of auspicious qualities. 10*a* चित्तलियणहं कर्बुरिताकाशम्, T. The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15*b* मत्तासमयं, the poet wants to suggest incidently the name of the metre which is मात्रासमक. 17 जासु तित्थि, यस्य तीर्थे, in whose preachings.

2. The poet pays homage to the five dignitories of the Faith, usually called पञ्चपरमेष्ठिन, viz., तीर्थंकर, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय and साधु and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 3*b* कोमलपयाइं, कोमलानि चक्षुःप्रीतिजनकानि श्रोत्रमनःसुखदानि च, पयाइं पदन्यासाः पदरचनाश्च, T. The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman ; all the epithets used are therefore applicable to सरस्वती as well as स्त्री. 5*a* छंदेण जंति, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6*a* चोद्दसपुव्विल्ल, चतुर्दशपूर्वैः युक्ता सरस्वती, स्त्री तु चतुर्दशैः (?) पूर्वैः पूर्वपुरुषैर्युक्ता मात्रन्वये हि सप्त पुरुषास्तत्पते: (?) पित्रन्वये च सप्तेति, T. The goddess possesses fourteen Pūrva books, ancient texts of the Jainas, now lost ; the woman possesses purity of seven ancestors on the mother's side and seven on the father's side. दुवालसंगि, सरस्वती द्वादशाङ्गैर्युक्ता, स्त्री तु—

नलया बाहू य तहा नियं च (णियंब ?) पुट्ठी उरो य सीसं च ।
अट्ठेव दु अङ्गाइं सेस उवङ्गा दु देहस्स ॥

इत्यष्टौ, कर्णनासिकानयनोष्ठाश्चत्वार इति द्वादशाङ्गैर्युक्ता, T. The twelve aṅgas are the

famous books of the Jain Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6*b* सत्तभंगि, सरस्वती सप्तभङ्गोपेता स्त्री तु सत्तभंगि धैर्यरहिता प्राणिषु कौटिल्ययुक्ता च, T. It would be better to interpret सत्तभंगि applicable to a woman as सत्त्वभाङ्गिनी पुरुषाणां धैर्यनाशिका.

3. 3*a-b* भुवणक्केरामु तुडिगु, कृष्णराजः तस्येदं बिरुदम् T. We know that the Rāṣṭrakūṭa kings had a number of *Birudas* ; we have in Puṣpadanta's works a few others such as Śubhatuṅga (see I. 5. 2a and note thereon) and Vallabhadeva. तुडिगु seems to be of Kannada origin. 7*b* मायंद-गोंछगोंदलियकीरि, आम्रकुसुमसम्मीलितशुके, (garden) where parrots have gathered on the blossom of mango trees. गोंदलिय comes from गोंदल, a Deśī word, which means a gathering. Compare गोंधळ, गोंधळी in Marathi. 9*b* खंड means पुष्पदन्त ; so also अहिमाणमेरु in 12*a* below. 14 वर or वरि, an explative of frequent occurrence, means 'it is better,' 'I would rather prefer.' 15 म णिहालउ सुहराये, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked.

4. Drawbacks of royalty condemned.

4. 3*a* सत्तंगरज्ज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र, दुर्ग and बल. 4*a* विसमसहजम्मइ, fortune born along with हालाहल poison at the time of the churning of the ocean.

5. Bharata glorified.

5. 3*a* पाययकइकव्वरसावउद्धु, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time.

6. The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāṇa.

6. 9*a* देवीसुएण, by the son of Devi, i. e., by Bharata.

7. The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravarasena.

7. 3*a* गोवज्जिएहिं etc. This series of epithets have double meaning: one applicable to घगदिण etc. and the other applicable to the wicked.

8. **Bharata assures Puṣpadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.**

8. *7b* भुक्कउ छणचंदहु सारमेउ, let the dog bark at the full moon. *9b* कव्वपिसल्लएण, another epithet of Puṣpadanta; compare कव्वपिसाय, कव्वरक्खस.

9. The poet, by way of modesty, shows that he is not qualified to undertake the Mahāpurāṇa, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9. 1*a* अकलंक etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Ṇāyakumāracariu, page XXIII. 13*b* कुडवेण मवइ को जलणिहाणु, who can measure the waters of the ocean by means of a Kuḍava, a small measure? 17 विवरोक्खए किं अक्खइ, why should I say at the back? i. e., I say it openly, I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any.

10. The poet invokes the aid of Gomuha Yakṣa and Cakkesarī Yakṣiṇī who are the guardian deities of ऋषभ, and of the goddess of learning.

10. 14 जो मरु भसइ णिबंधहो, he who barks at my work.

11. The location of the Magadha country.

12. Description of Rājagṛha, its capital.

12. *9b* मंथामंथियमंथणिरवाइं, मन्थेन रविकृया मथिताद्विलोडितान्मन्थनीरवाः शब्दा यत्र, T., where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rājagṛha.

13. 11*b* संगहु सिरिणयणंजणहु णाइं, it was, as it were, a storehouse, संगह, of collyrium of श्री. The lotus flower, with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty.

14. Description of the town of Rājagṛha.

14. 9*b* अण्णाणिय णाइं कुसासणेहिं, like ignorant people who are misled by false doctrines (कु+शासन).

15. **Description of Rājagṛha continued.**

16. King Śreṇika described.

18. King Śreṇika receives the report of the arrival of Mahāvīra

18. 6*b* चउद्देवणिकाय, the four classes of gods are : भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिष्क and वैमानिक. 7*a* चउतीसातिसय, the Arhats possess thirtyfour atiśayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cintāmaṇi and several other works. See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Triṣaṣṭi. 9*b* अट्ठविहपाडिहेर, these Prātihāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz., अशोक, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, भामण्डल, दुन्दुभि and त्रिछत्र. 10*b* विउलइरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagṛha. 15 पुप्फयंततेयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Saṃdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and सूर्य, and the Tīrthaṃkara of that name. The term पुप्फयंत is at times paraphrased by पुप्फदसण, कुसुमदसण etc. भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines. The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin.

II.

[King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvīra, proceeds along with his retinue to see him. After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāṇa which he does.

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe. The last of these Kulakaras was Nāhi (Sk. Nābhi), and his queen was Marudevī. Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhaṇaya, i e., Kubera, to make the town of Ujjhā (Ayodhyā) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina.]

1. 6*b* णं वररायसिरि रिउदारिणि, a lady who took in her hand a कुवलय, i. e. a lotus flower, is compared to royalty (वररायसिरि) which also holds कुवलय, i. e., the globe of the earth, and chastises the enemies (रिउदारिणि).

2. 13 जणजणणत्तिहर, (Jina) who removes the misery (अत्ति-आर्ति) of birth (जणण) of the people. 14 भुवणंभोरुहदिवसयर, the sun to the

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

3. 5-11. These lines contain a long epithet of Jina वरुण...सिरणमणमउडयलमणिसलिलधुयाविमलकमकमल, (Jina) whose lotus-like feet are washed by waters flowing from the gems in the coronets of वरुण and other gods when they bend their heads (सिरणमण) before him. 35 मई णेज्जसु पचमगइहे, you will please lead me to the fifth गति, i. e., सिद्धावस्था, emancipation from संसार, the first four गतिs being देव, नारक, तिर्यक् and मनुष्य.

4. 7*a* णाइ णंतु भाविणिहि णिरुत्तउ, there is no beginning (न + आदि) and no end (न + अन्त) to the list of the coming Jinas, i e., the number of the future Jinas is infinite. 8-9 कालु अणाइउ etc. Time has no beginning and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change in the Universe. It has no flavour, no odour, no colour and no weight. Time in abstract (निश्चयकाल) is marked by its fleeting i. e., constantly passing (प्रवर्तन). 12 ववहारकालु, Time as understood in our daily practice.

5. 3*b* पियकारिणितणएं, by महावीर who is the son of प्रियकारिणी, popularly known as त्रिशला. Compare कल्पसूत्र, 109, where the name given is पीइकारिणी. 10*a* नाडिज्जइ, गुण्यते, T., is multiplied.

6. 10*a* भेज्जउ, भेद्यः, divisible, to be divided.

8. 4-5 उच्छप्पिणि, i. e, उत्सर्पिणीकाल is defined as one in which strength, prosperity, height of the body, piety, knowledge, gravity and courage are on the increase; ओसप्पिणि, i. e., अवसर्पिणिकाल is one in which these qualities are on the decrease. 7*b* दहविहविडवि, the ten कल्पवृक्षs, enumerated in the foot-notes.

9. 3*a* पडिसुइ, the first कुलकर of the Jain mythology. 4*a* अममभियाउ, having life of the length of an अमम, a large number. The other कुलकरs or मनुs mentioned in 9 and 10 are: सम्मइ, खेमंकर, खेमंधर, सीमंकर, सीमंधर, विमलवाहु, चक्खुक्मउ (चक्षुष्मान्), जसस्सि, अहिचंद, चंदाह, मरुदेव, पसेणइ and णाहि (नाभि).

11. 1 The first कुलकर explained to the world, i. e., discovered for the first time, the functions of the sun and the moon who were not noticed by the people upto this time because the world was full of

the light supplied by the कल्पवृक्षs. The second discovered the stars and planets. Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization. The last कुलकर i. e. नाभि, discovered the method of cutting the नाल of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्षs. He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity.

17. 5*b* सुयरइ सुरवइ णियमणि तइयहं, Indra, on learning that a तीर्थंकर is to be born at a particular place, orders Dhaṇaya, i. e. Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina.

19. 1*a* छुडु छुडु—Hemacandra in his grammar under IV. 422 gives छुडु as a substitute for यदि. I do not think that छुडु always means यदि ; in fact the usual sense of छुडु seems to be क्षिप्रम् which sense suits the context here as well as elsewhere. The marginal notes in Mss. here render it as यद्वा but I do not think it to be correct.

III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history. When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven. Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिरि, हिरि, दिहि, कंति, कित्ती, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born. They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids. The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams. The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Ṛṣabha, the first Tīrthaṃkara, a white bull). Gods attend this event. There is shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course. Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the

Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a कल्लाण (Sk. कल्याणक) or more particularly जिनजन्माभिषेककल्याण. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Puṣpadanta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Risaha, the first Tīrthaṃkara are :—

(1) Town of birth—Ayodhyā
(2) Parents—Nābhi and Marudevī.
(3) Descent in the womb—as a white bull.
(4) Date of Descent—month Āṣaḍha, dark half, second day, Uttarāṣāḍhā Nakṣatra.
(5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day, Sunday, Uttarāṣāḍhā Nakṣatra, Brahma yoga.
(6) Name—Risaha, Ṛṣabha or Vṛṣabha.]

4. 9*a* णिवप्रंगणांते, in the courtyard of the king. Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with ्र, we get such conjuncts in Apabhraṃśa. See Hemacandra IV. 398 and 399. Of our Mss. G and K only give conjuncts with ्र while MBP do not. I have therefore considered G and K to preserve older recension of our text on this account as also on account of their retaining forms with ऋ such as मृग, सृय etc. 11 सइ, i. e., मरुदेवी.

5. This Kaḍavaka gives the list of sixteen objects which Marudevī sees in a dream, and which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāmbara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream (चोद्दस महासुमिण). Compare कल्पसूत्र 4, and 32-47.

गय वसह सीह अभिसेय दाम ससि दिणयरं झयं कुम्भं ।
पउमसर सागर विमाणभवण रयणुच्चय सिहिं च ॥
एए चउद्दस सुविणे सव्वा पासेइ तित्थयरमाया ।
जं रयणिं वक्कमई कुच्छिंसि महायसो अरिहा ॥

These objects, according to the Digambara tradition, are :—

(1) An Elephant breaking open the mountain slopes.
(2) A Bull loudly roaring.
(3) A roaring Lion.
(4) Goddess Lakṣmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters (दिग्गज). The Śvetāmbaras designate this under अभिसेय.
(5) Wreaths, two in number, of fresh flowers.
(6) The rising moon.
(7) The rising sun.
(8) A pair of Fish.
(9) A pair of Jars filled with water.
(10) A fine lotus-pond.
(11) A surging sea.
(12) A royal seat marked with lion's head (सिंहासन). The Śvetāmbaras omit this object from their list.
(13) A heavenly palace or mansion-house.
(14) A palace of snakes or of the king of snakes (नागभवन); this object is omitted in the list of the Śvetāmbaras.
(15) A heap of Gems.
(16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Śvetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7. 5*a* सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms (भावना) of penance such as दर्शनविशुद्धि etc. These भावनाs are :—दर्शनविशुद्धिः, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचारः, अभीक्ष्णं ज्ञानोपयोगः, अभीक्ष्णं संवेगः, शक्तितस्त्यागः, शक्तितस्तपः, साधुसमाधिः, वैयावृत्त्यकरणम्, अर्हद्भक्तिः, आचार्यभक्तिः, बहुश्रुतभक्तिः, प्रवचनभक्तिः, आवश्यकापरिहाणिः, मार्गप्रभावना and प्रवचनवत्सलत्वम्. Compare also नायाधम्मकहाओ, VIII. 64 ; तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI. 24.

19. 14 जहु दिसहु मइं णेहि, take me to that region where there is no birth etc., i. e., to the region of the Siddhas.

21. 11*a* विसु धम्मु तेण भाइ त्ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth (भाइ, भाति) by विस (वृष), i. e., धर्म or piety.

IV

[Prince Risaha grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily atiśayas or excellences such as bodily purity, want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young. His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling, but being pressed by the king, agreed to be married to जसवई and सुणंदा, daughters of the kings of Kaccha and Mahākaccha. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky, a concert was arranged by celestial nymphs with dance, music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires.]

1. 10*a* उत्ताणसेज्ज, lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 15*a* दर दिंतें पयाइं, while walking slowly in the childhood. 16*b* चउसट्ठि वि कलाउ, sixty-four arts, and not seventytwo as with the Svetāmbaras. For that list see Rāyapaseṇiyasutta or Paésikahāṇayam, para 39 and my note thereon.

2. This Kaḍavaka mentions some of the atisayas which a Jina possesses.

3. 10*a* जो कप्परुक्खु सो कट्ठु कट्ठु, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14*b* अम्माहीरएण, स्वदेशस्त्रीबालप्रसिद्धगानध्वनिना, T., i. e., lullaby or song to make the baby sleep. 15 होह्लरु जो जो, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10*a* चंदोवचीणपट्टेहिं छइउ, covered with fine canopy (चंदोव) of China cloth.

10. 3*a* सुहाइ, सु+भाति shines forth.

17. 2*b* दुध्दुं व धोयउ, दुग्धेनेव धौतः, as if washed or bathed in milk. Note that दुध्दुं is the Inst. sing. form which is obtainable by a confusion of अनुस्वार of the Instr. (Cf. Hemacandra IV. 342) and उ of the Nom. and Acc. 4*a* आउज्जइं जेण मुइंग वासु, the arrangement of the musical instruments for a concert is described here, which arrangement is

called पच्चाहार or प्रत्याहार. 9*b* कम्मारवी is an act of cleaning the musical instruments. 10*b* उद्विक्खणु किउ हिंदोलएण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first. 11*b* कउ णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time (ताल), viz. वण्ण, छडय and धारा. T adds:—समस्तनाटकार्थवर्णनाद्वर्णतालः, शृङ्गाररसाभिनयश्छटकातालः, वीररसाभिनयो धारातालः.

18. The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T. which I quote fully here :—चारी पदप्रचारः, सा द्वात्रिंशत्प्रकारा, तत्र समपादा स्थितावर्ता सकटास्या अध्यर्द्धिका चापगतिः विच्यवा एलका क्रीडिता बद्धा उरूद्वृत्ता आदिता उच्छन्दिता वा जनिता स्पंदितजिनिता अपस्पंदिता मतुली मत्तली चेति षोडश भौम्यार्यः, अतिक्रांता अपक्रांता पार्श्वक्रांता अर्द्धजानुः सूची नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उद्वृत्ता विद्युद्भ्रान्ता आलत्ता भुजंगत्रासिता हरिणप्लुता भ्रमरी चेत्येताः षोडश आकाशोद्भवाश्चार्यः. 3*b* अंगवरन अंगहारः, स च स्थिरहस्तकः सूचीविद्धः आक्षिकः कर्णच्छेदः विष्कंभः अपगतः आक्रीडः भृश्चिकः भ्रमणमद्गादिविलसित इत्यादिविकल्पात् द्वात्रिंशत्प्रकारः. 4*b* शरीरमनेकधा प्रतिप्राप्य क्रियंते इति करणानि. तलपुष्पपुट वर्तितं अपविद्धं लीन स्वस्तिक अर्धस्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकरेचित निकुटकं अलातं उन्मत्तं ललाटं तिलमित्याद्यष्टोत्तरशतसंख्यानि. दिण्णु दत्तानि 5*a* चउदह विसीस. उक्तं च—

अकंपितं कंपितं च धुतं विधुतमेव च।
परिवाहितमाधूतमधाचितनिकुंचितं ॥
××× परावृत्तमर्कुतं चाप्यधोगतं।
लोलितं प्रकृतं चेति चतुर्दशविधं शिरः ॥

5*b* भूतंडवइं नृत्यानि सप्त—

आक्षेपः पातनं चैव भ्रुकुटिश्चतुरं भ्रुवोः।
कुंचितं रेचितं कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभिधानात्

6*a* णव गीवउ। तदुक्तं—समानता आनता अस्ता रचिता कुंचिता कंचिता चिता ललिता च निवृत्ता च ग्रीवा नवविधा स्मृता. 6*b* छत्तीस विद्दिट्ठीउ—तथाहि कांता भयानका हास्या करुणा अद्भुता रौद्रा वीरा बीभत्सा चेत्यष्टौ रसदृष्टयः; स्निग्धा हृष्टा दीना क्रुद्धा तृप्ता भयान्विता जुगुप्सिता चेत्यष्टौ स्थायिभावदृष्टयः; स्तान्यांमलिना (?) श्रांता सलज्जा ग्लाना शंकिता विषण्णा मुकुला अभितप्ता जिह्मललिता वितर्किता कुंचिता विभ्रान्ता विप्लुता काकिकरा (?) विकोसा त्रस्ता मेदिरा चेति षट्त्रिंशद् दृष्टयः. 7*a* अंतिमेत्या दि

श्रृंगार (?) बीभत्सा हास्यरौद्रभयानकाः।
करुणाद्भुतशांताश्च........रसा स्मृताः ॥

तत्राष्टौ रसा अंतिमरसवर्जिताः.

जणियभाव

रतिर्हासश्च शोकश्च क्रोधोत्साहौ भयं तथा ।
जुगुप्सा विस्मयश्चाष्टौ स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः ॥
स्तंभस्तनूरुहोद्भेदा(?)द्गदः स्वेदवेपथू ।
वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ॥

तनूरुहोद्भेदो रोमांचः । वेपथुः कंपः, वैवर्ण्यं म्लानता निर्वेदः, म्लानता निर्वेदग्लानिः, शंकाश्रमधृतिजडता-हर्षदैन्योग्राचिंतात्रासेर्ष्यामर्षगर्वाः स्मृतिमरणमदाः सप्त निद्राविबोधा व्रीडापस्मारमोह शर्मानिरलसता वेग-तर्काविहत्थ्याध्युन्मानादौ विषादोत्सुक्यचपलयुतास्त्रिंशादेते त्रयश्च (?) । अपस्मारः उंमार्ग (?) । तर्कः विमर्शः । उवहित्थ आकारगोपनं युक्तः संचद्दा इति । 8*a* अवेत्यादि अपरापरपूर्वभावेभ्यो विलक्षणाः. भावाणुभाव भावानुभावेभ्योऽनु पश्चाद्भवतीत्यनुभावाः तच्चतुर्विधा (?) मानो (?) वाग्बुद्धिशरीराश्च य दर्शिताः. 9*a* फुरणइं स्फुरणानि शरीरगतानि. 10*b* छडुणयपओएं नृत्योपमहारक्तनृत्ताल-विशेषश्छड्डुणकप्रयोगस्तेन The Ms. of T. is illegible at numerous places, but as the contents seemed to me to be important I have reproduced them.

V

[One day Jasavaī, the wife of Risaha, saw in a dream the mount Meru, the sun, the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Risaha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jasavai bore a son who was named Bharaha (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, and the principles of inter-state relations. Jasavai bore ninty-nine more sons, Vasahasena etc., and one daughter named Bambhī. Sunandā also bore one son named Bāhubali and one daughter named Sundarī. Bharaha himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Risaha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty lacs of pūrva years, he was put on the throne by king Nābhi.]

2. 8*b* छक्खंड वि मेइणि, the six continents of the भारतवर्ष. The भारतवर्ष, according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyaḍḍha (Sk. Vaitāḍhya) mountain from east to west; the rivers Gaṅgā and Sindhu

pass through it form North to South ; it is in this way that it is divided into six Khandas or continents. A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष. 10*b* अहमिन्दु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the ग्रैवेयक or अनुत्तरविमान heaven.

3. 2 तिहुयणवइजयंकरेहाराइयं, The loss of folds on the belly of Jasavai, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds. It means that the son that is to be born to Jasavai will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue.

5. 7*a* खुल्लउ कीडुल्लउ, a small insect (क्षुद्रः कीटकः).

6. 13*a* चित्तलेप्पसिलवरकट्ठकम्मइ, painting, plaster-work (लेप्य), sculpture, and wood-work.

7. 2 गिरिथणि...विसयं पयासए, explains (to Bharaha) the subject of governance of his consort, viz , the earth (गिरिथणिधरणि) with mountains standing for her breasts.

8. 12 पढमुवाउ, प्रथमः उपायः, i. e., resolution, resolve.

9. 7*a* करेवा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV. 438. 9*a* अय तिवरिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be यव corn three years' old. 13*a* जिणपडिमापूयण, worship of the images of the Jinas. This is clearly an anachronism unless we accept that Risaha means by it not himself but the Jinas of the past. To a Jain his religion has no beginning and there were Jinas in the past.

11. 8*b* कामुण्णु चउविहु दारुणु, the four व्यसनs or addictions, viz., woman, gambling, wine and hunting.

12. 1 एक्कंतरिउ मित्तु णिरंतरु सत्तु. In the मण्डल or द्वादशराजचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend (एकान्तरित मित्रम्, निरन्तरः शत्रुः). The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy. 8*b* अट्ठारहतित्थइं, the eighteen तीर्थs are :—

सेनापतिर्गणकमन्त्रिपुरोहिताश्च वर्णा बलौघबलवत्तरदण्डनाथाः ।
श्रेष्ठी महत्तरं इतश्च महाऽमात्योऽमात्यो वदन्ति दश चाष्ट च तीर्थमार्याः ॥

—Marginal gloss in K.

The वर्णs in the above list are ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य and शूद्र; the बलौघ is the fourfold division of the army, viz., हस्ती, अश्व, रथ and पाइक्क.

18. 6*a* अवहंसउ i. e., अपभ्रंश which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1–2 सयमह...वारिणा धुयकमकमलजुयल परमेसर, O Lord, pair of whose lotus-like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. 6*a* लग्गणखंभु अण्णु को अम्हहं, who, other than yourself, will be our supporting pillar ?

20. 5–11 पल्लव etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the भारतवर्ष.

21. 3–5 खेडइं etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as खेड, कव्वड, मडंब, पट्टण, दोणामुह and संवाहण.

22. 4 घरि उच्छुरसु,—the race was named इक्ष्वाकु because its founder brought to his house the juice of suger-cane for drinking.

VI

[One day, while prince Risaha was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nilamjasā to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Risaha, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life.]

2. 3 णियमंति जणं, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The Kadavaka mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5*a* भुंजंतहु महि तेसट्ठि गय, King Risaha enjoyed his kingship for sixty three lacs of the pūrva years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11–12 पुण्णाउस णीलंजस—If नीलंजसा who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for wordly life in his mind.

5. 4*b* णाहेयणिहेलणि, to the house of Nābheya, i. e., Risaha, the son of Nābhi. 6*b* वसिंगु वि पुव्वरंगु—The technical terms of dancing and music used in this Kaḍavaka and the two following are explained in T. as follows :—वी स मि त्या दि—नाटकस्येह प्रथमप्रस्तावनावतारः पूर्वरंगस्तस्य च प्रत्याहारोऽवतरणा आद्यारंभ आश्रवणा गीतविधिरुपस्थापना परिवर्तनं रंगद्वारं चारी महाचारी इत्यादीनि विंशतिरंगानि. 7*a* ति पु क्ख रु चर्मावनद्धं वाद्यं पुष्करं तत्त्रिविधं उत्तममध्यमजघन्यभेदेन. 7*b* सो ल ह अ क्ख र उ क ख ग घ ट ठ ड ढ त थ द ध स र ल ह इति षोडशाक्षरं. 8*a* च उ म ग्गु आलिप्त-अर्दित-गोमुख-वितस्ति-भेदात् चतुर्मार्गं; दु ले व णु वामलेपनं ऊर्ध्वलेपनं; छ क्क र णु रूपं कृतं परिति भेदो रूपशेषं उद्यश्चेति षट् वाद्यकरणानि; 8*b* ति य ति ह्न उ समो श्रोतोगतिः गोपुच्छः चेति त्रियतियुक्तं; ति ल य उ द्रुतमध्यविलंबितास्त्रयो लयाः. 9*a* ति ग य उ तद्गाम नुतं उघ(?)श्चेति त्रीणि गतानि; ति य चा रु समप्रचारं विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य रु गुरुसंयोगो लघुसंयोगो गुरुलघुसंयोगश्चेति त्रिसंयोगकं. 9*b* ति क रि ह्न उ गृहीतोऽर्धगृहीतो गृहीतमुक्तश्चेति त्रयः. 10*a* ति म ज्ज ण उ मायूरी अर्द्धमायूरी कर्मारवी चेति मार्जनकम्; 10*b* वी सा लं का र स ल क्ख ण उं अलंक्रियते वाद्यं यैस्तेऽलंकाराः प्रहारास्तैः सलक्षणं मनोज्ञं चेति विंशत्यलंकाराः:—चित्रः समः विभक्तः छिन्नः छिन्नविद्धः अनुविद्धः विद्धः वाद्यसंश्रयः अनसृतः प्रतिच्युतः दुर्गः अवकीर्णः बद्धावकीर्णः परिक्षिप्तः एकरूपः नियमान्वितः सार्चाकृतः समेखलः सामवायिकः दृढ. चेति. 11*a* अ ट्ठा र ह जा इ हि तथाहि—शुद्धा दुष्करणा विषमनिष्कंभितैकरूपा च पार्श्विसमापर्यस्ता समविषमकृता निर्कीर्णा च पर्यवसाने चितिकिसंयुक्ता संप्लुता तथारंभा विगतक्रम चललिगा वंचितिका चैकवाद्या चेत्यष्टादशजातिभिर्मंडितम्; 12*a* च च्च उ डु चाचपटस्त्र्यस्त्रस्त्रिकलतालप्रवृत्तिहेतुः; चा च उ डु चचपुटश्चतुरस्त्रश्चतुःकलतालप्रवृत्तहेतुः. 12*b* छ प्पि य पु त्ते वि षे(?) धिजापुत्रः(?)कोपि मिश्र उभयतालप्रवृत्तिहेतुः, म ण हा रि चचपुटादित्रिप्रकारापि(?)मनोहरः; 13*a* इ य इत्यादि एतैश्चचपुटादिभिर्वाद्यतालविशेषैस्त्रिभिरलंकृता. 14*a* ओ ण द्ध उ व ज्ज उ व ण्णि य उ इत्थंभूतं यदवनद्धं वाद्यं तत्त्रिप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आलिंगकसंज्ञितं चेति. द्विश्रुतिकाः स्वरे जातो निषादो गंधारश्च त्रिभुवसमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकऋषभो धैवतश्च जलि(?)षिमसमसंख्यया चतुःश्रुतिकाः षड्जपचममध्यमाः. 16 च व ल हिं स्थितमुक्ताभिः, अ द्ध हिं अर्धमुक्ताभिः कंपमानस्वरूपाभिः; मु क्कि य हिं वंशसुषिरसंधनवगहिताभिः(?), व त्ता व त्तं गु लि य हिं उक्तविशेषणविशिष्टाभिर्व्यक्ताव्यक्तांगुलिभिः व्यक्तांगुलि स्थितस्थितांगुलि अव्यक्तांगुलि.

6. 1*a* प वि र इ हं इत्यादि—वांशस्वरो जातः; कथंभूते 1*b* व ज्जि य सु सि रे वादित. सुषिरे, सु अ त्थ सु इ शाश्वताः श्रुतयश्च, 3*a* थि ये त्यादिना चतुःश्रुतिकादिस्वराणामुत्पत्तिप्रक्रियां प्रदर्शयति, स्थितमुक्तांगुलिः स्वरे इव; सु अ ट्ठ सु इ चतुःश्रुतिकः. 4*a* कंपमानयांगुल्या उद्भूतस्त्रिश्रुतिकः; 4*b* मुक्तांगुल्या जातो द्विश्रुतिकः, 5*a* व त्तं गु ली त्यादिनोत्पत्तिक्रमेण प्रत्येकं चतुःश्रुतिकादीनां नामानि कथयति, व्यक्तांगुलेः सुषिरोपरिस्थितांगुलेः; 6*b* सा म ण्ण स रं त र स ण्णि य ए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 7*b* अ द्ध ए मु क्क ए अं गु लि य ए अर्द्धया मुक्तया अंगुल्या; सामान्यसंज्ञितः स्वरो निषादः अंतरसंज्ञितो गांधारः 9*a* तं ती र णि उ वीणावाद्यं तच्च द्विविधं. 9*b* णि क्क लु ते प्प वि निष्कलं त्रिपंच. 10*a* घ णु इत्यादि—घनं वाद्यं कांस्यतालयुगलादिकं. 10*b* स मे त्या दि—समं यौगपद्येन हस्तं दत्त्वा यत्र रंगे वादितं. 12*a* उ प्प ण्ण इत्यादि—उत्पद्यमानो हि नादः प्रथमतः उ र ठा णं त र ए उरोलक्षणस्थानकविशेषे उत्पद्यते ततः कंठे ततः शिरसि. 12*b* बा वी स वि

सु इ उ द्विश्रुतिकयोः द्वयोः चतस्रः श्रुतयः त्रिश्रुतिकयोः षट् चतुःश्रुतिकानां त्रयाणां द्वाविंशतिश्रुतयः; 13a क म र इ य प मा ण हिं क्रमोच्चरितसप्तेश्वर(?)प्रमाणैर्नंद(?); 13b व ड्ढं तु मंद्रमध्यमतारभेदेन यथाक्रमं उरसि कंठे शिरसि च वर्धमानो नादः स्वरः श्रुतिर्मंद्रादिरूपतया; 14b स र स त्त सरिगमादिनामानः सरसतः स्वराः सप्त ते सु तेषु सप्तस्वरेषु; दो ण्णि जि गा म द्वावेव च ग्रामौ, षड्जग्रामो मध्यमग्रामश्च; ग्रामः समुदायः. कस्मिन्ग्रामे कियत्यो जातयः संभवंतीत्याह 15 सु रे त्यादि सुरैः पूज्यः स ज्ज ए षड्जग्रामे; जा इ उ जातयः स त्त प उ त्त उ सप्त प्रयुक्ताः शुद्धाश्चतस्रः, जायंते पुष्टिं लभंते स्वरा आभ्य इति जातयः. 16 म ज्झि म ए मध्यमे ग्रामे, तिस्रः शुद्धा अष्टौ संकीर्णाः.

7. 2a जा इ णि ब द्ध हं तासु जातिषु निबद्धानां. 2b ल क्ख वि सु द्ध हं गीतप्रयोगविशुद्धानां. 3a अं स हं अंसानां; स उ चा ली सा हि य उ शतं चत्वारिंशदधिकं. 3b ए क्कु त्त रु तं पि चत्वारिंशदधिकशतं एकोत्तरं; प सा हि य उ प्रसाधिताः. तथा हि अष्टादशजातिषु यथाक्रमसंभवमेको द्वौ त्रयश्चत्वारि पंच षट् सप्त चासंभत्तो(?) मिलिता एकोत्तरचत्वारिंशदधिकशतसंख्या भवंति. 4b गी य उ गीतयः शुद्धेत्यादिनामानः; पं च उ उ प्प ण्णि य उ पंचोत्पन्नाः, किंस्वरूपास्ता इत्याह 5a b ऋयु(?)भिर्ललितैः शुद्धाः सूक्ष्मैर्व्यक्तैश्च भिन्नकाः। स्वरैर्द्रुततरैर्गौडी द्रुतैर्वेति वेसराः। सर्वासां उक्तियोगात् गीतिः साधारणा स्मृता. 6a त हिं इत्यादि ताहि सूद्धादिगीतिषु तत्संबंधत्वेनापरे परिग्रामरागाः त्रिंशद्गणिताः, तत्र शुद्धगीतिसंबंधत्वे सच(?)गणनया सप्तग्रामरागाः भणिताः, भिन्नगीतिसंबंधत्वेन व्रतगणनया पंच वेसररागाः समेवमेते. 7a क मे ण जि कथितशुद्धादिगीतिसंबंधक्रमेणैव संगृहीताः समाहितास्त्रिंशत्. 7b उ डु मा ण ऋतुप्रमाणाः षडेव. 8a प हि ला र उ तेषु मध्ये प्रथमः टक्करागः. 8b अ णु वे क्खा स म भा स हिं सा हि उ द्वादशभाषासमन्वितः; उक्तं च-कोलाहला मालववेसरा च सौराष्ट्रिका च त्रवणोद्भवा च। स्यान्मालवा सैंधविका च ताना ततः परं पंचमलक्षिता च। भाषा मध्यमदेहा च ललिता वेगरंजिका। त्रवणा टक्करागस्य द्वादशोक्ताः. 9a अ ट्ठे त्या दि—आभीरी मागधी सैंधवी कौशिकी सौराष्ट्री गौर्जरी दाक्षिणात्या त्रवणा चेत्यादि अष्टभिर्भाषाभिस्सहितः; 9b बे हि मित्यादि द्वाभ्यामेव विभाषाभ्यां अंधालीभावनिकाभ्यां सविभूषितः. 10a आ वा हि ये त्या दि—आवाहिता आकारिता, मोहिता विह्वलीकृता जगत्त्रिलयाख्रियः. 10b हिंदोलकश्चानसृणां मालववेसरिका गौडी छेवट्टिका कांबोजी चेत्यर्भाषा निलयः स्थानं. 11a मा ल वे त्यादि मालवाभ्यां विभाषाभ्याम्. 12a भि ण्णे त्यादि—भिन्नषड्जोऽपि शुद्धा त्रवण(?)मागली सैंधवी ललिता श्रीकंठी दाक्षिणात्येति सप्तभिः भाषाभिः कलितः युक्तः. 12b क क ह इत्यादि ककुभोऽपि, आभीरी रगती भिन्नपंचमी चेति त्रिभिर्भाषाभिः; सं च लि उ संचलितो युक्तः. 13 सु इ ली ण उं श्रुत्यनुप्रविष्टः. 14 म णे त्या दि मनोहरारामरुति मल्लरुतिः डोंबरुतिः गौडरुतिरित्येवमादयः; दा वि य उ दर्शिताः.

8. 1–2 द हे त्यादि—दश चतुर्भिर्गुणिताश्चत्वारिंशत्संख्या समुदिताना भाषाणां भणिता तथा षडपि विभाषाः; 3b ए या र हे त्यादि—एकादशा एकविंशति षड्जादिग्रामत्रये प्रत्येकं, सप्त सप्त मूर्च्छना इत्येकविंशति; मूर्च्छंति उच्छ्रयमुन्नतिं लभन्तेश्वरा(?) आभ्य इति मूर्च्छना, उत्तरमंद्रा उत्तरायता रजनी अश्वक्रांता सौवीरी कालोपनता सुमध्यमाः पौरवीत्यादयः. 4a ए क्क णे त्या दि—स्वरस्य तननात्प्रयोगविस्तारात्तानाः अग्निष्टोम-राजसूय-अश्वमेध-वाजपेयादियज्ञनामानस्तह(?)नेयगुण्योत्पन्ने, ते च प्रतिग्राममेकोनपंचाशद्भेदाः प्रतिपत्तव्याः, तथा हि सप्ततंत्रीवीणायां प्रत्येकमेकैकतंत्र्या सप्त सप्त स्वराणां तननात्सप्तसप्तगुणिता एकोनपंचाशद्ग्रामे तथा मध्यमग्रामादावपि. उक्तं च-साप्त(?)श्चयं च सप्त नामैकैका भज्जते यतः। अत एकोनपंचाशत्क(?)स्तादे सहोदिताः॥ 5a सं जो य ता णु तथा हि षड्जग्रामे

सप्तसई(?)नानां षाडवौडुविना, काकलि अंतरं काकल्यंतरं; स्वरसंयोगे सति पंचत्रिसप्त योगताना भवंति, एवं मध्यमग्रामेऽपि; 7a ते र हे त्या दि त्रयोदशविधं शीर्षं प्रनर्तितं प्राकृतशीर्षं च(?)च्यते. 7b तथा षट्त्रिंशद्दृष्टिभिर्युक्तमेतच्च प्रागेव व्याख्यातं. 8a ण व ता र उ नव ताराकर्माणि । तदुक्तं—भ्रमणं चलनं पातो वलनं संप्रवेशनं । विवर्तनं समुद्वृत्त निष्कामः प्राकृतं तथा, ॥ 8b अ ट्ठ वीत्यादि अष्टौ परिचिता दर्शनगतयः, उक्तं च-सम्मंसप्पनुवृत्तं च आलोकित प्रलोकितोल्लोकितैरवलोकित(?) सा तिर्यक्. (?) 9b णं दे त्यादि—नवनंदास्तत्प्रकारं पुट(?)पक्ष्मपटकर्म दर्शितं उन्मेषश्च निमेषश्च प्रसृतं कुंचितं सवर्तितं सस्फुरित पिहितं सविताडितं. 10a भु म त्त मे य भ्रू समभेदाः; 10b छव्विहेत्यादि—तत्र नासा षड्विधा, उक्तं च-नता मंदा विकृष्टा च सोच्छ्वासा सविकूणिता । स्वाभाविकी चेति बुधैः षड्विधा नासिकाः स्मृताः॥ तथा कपोलं षड्विध-क्षामं फुल्लं च पूर्णं च कंपितं कुंचितं सममित्यभिधानात्, तथा अधरः षड्विधः; तदुक्तं-विवर्तनं कंपनं च विसर्गो विनिगूहनं । संदष्टकं समुद्गश्च षट्कर्माण्यधरस्य च ॥ 11a म त्त वि ह चि बु उ समचिबुकं, च उ मु ह हु रा य कुट्टन स(?)रागाः स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्तः समर्थानुरोधतः प्रयोजनवशात्. 11b नव गला नव ग्रीवानृत्यानि उक्तलक्षणानि; च उ स ट्ठि वि क र ण भा व चतुःषष्टिरपि हस्तभेदाः पताकः कर्तरमुखः अर्द्धचंद्रः आरालः शुकतुंडः खटकामुखः पद्मकोशः चतु(?)रध भ्रमर इत्यादयः. 12a सो ल ह वि ह सर्वहस्तानां षोडशविधं कर्म । तथाहि आकंपनं कर्षणं च उत्कर्षणमथापि च । परिग्रहो निग्रहश्च आह्वानं नोदनं तथा ॥ सश्लेषश्चवि(?)योगश्च रक्षणं मोक्षणं तथा । छेदनं भेदनं चैव स्फोटनं मोटनं तथा । ताडनं चेति विज्ञेयं ना(?)ज्ञैः कर्मकराश्रित; तथाहि सर्वोऽपि हस्तप्रचारस्त्रिप्रकारो भवति, तदुक्तं-उत्तानः पार्श्वगश्चैव तथाधोमुख एव च । हस्तप्रचारस्त्रिविधो नाट्यवृत्तसमाश्रयः ॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विधं भवति, उक्तं च-अपवेष्टितमेकं स्यात् उद्वेष्टितमथापरम् । व्यावर्तितं तृतीयं च चतुर्थं परिवर्तितम् ॥ 12b भु उ द ह वि ह वि भुजवृत्तमार्गो दशविधोऽपि कृतः, उक्तं च-तिर्यग् ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुख एव च। आविद्धश्च प्रविद्धश्च मंडलः स्वस्तिकं तथा ॥ अंचितः क्षुंचितश्चैव पृष्ठतश्चेति ते दश. 13a ऊ रु स र वि ह उरोनृत्यं शरविधं पंचप्रकारं, उक्तं च- नतं समुन्नतं चैव प्रसारितविवर्तिते । तथापसृतमेवं तु पार्श्वकर्मापि पचधा॥ 13b पो ट्ट वि पा य डि य उ तं ति वि हु—क्षाम खल्लं च पूर्णं च संप्रोक्तमुदरं त्रिधा। इत्यभिधानात्. 14a क डि य लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि । तत्र कटी तावत्पंचप्रकारा, तथा हि-छिन्नावनिवृत्ता च रेचिता कंपिता तथा। उद्वाहिता चेति कटी नाट्ये वृत्त्येव पंचधा ॥ तथा जंघा पंचधा । उक्तं च-आवर्तिता अंतःक्षिप्तमुद्वाहितमथापि च । परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्मापि पंचधा ॥ तथा क म क म लाइं पंचधा । उक्तं च-उद्घट्टितः समश्चैव तथाग्रतलसंचरः । अंचितः कुंचितश्चैव पादः पंचविधः स्मृतः ॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशदंगहारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यंगहाराश्च प्रागेव कथितानि. 16a च उ रे य य चत्वारो रेचकाः, तदुक्तं-पादरेचक एकः स्याद्द्वितीयः कटिरेचकः । तृतीयः कर(?)स्तस्थस्य ग्रीवायां च चतुर्थकः॥ 16b स त्ता र ह पिंडी बं ध कय—ऐश्वरी वा(?)ज्जं भोगिनी सिंहवाहिनी ऐरावती मान्मथी पद्मा पिंड्यादि सप्तदश पिंडीनां बंधाः कृताः. 17a चा रि उ सो ल ह दु य सं खि य उ चार्यः षोडश द्विकसंख्या द्वात्रिंशत्संख्याः. 18a वी स वि मं ड ल इं प या सि य इं अतिक्रांतं विचित्रं ललितं संचरं अलातकं आक्रांतं आकाशगामि इत्यादि संचारिभिर्भावैः स्थायिभिश्च प्रागुक्तलक्षणैरुद्भृतैरनेकैर्नृत्यानि.

VII.

[The death of Nīlamjasā brought about a change in Risaha's outlook of the world. He thought that everything in the universe was impermanent, momentary, helpless, solitary ; the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in saṃsāra. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Risaha decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Risaha then put his son Bharata on the throne of Ayodhya, gave Poyanapura to Bāhubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Risaha was followed by his aged parents and by his wives and his ninety-nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk.]

1. 11 नृयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ, a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of passing salt over the body of a person that is dear to them by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on straw.

2. 6*a* पण्णारहखेत्तुब्भव, born in fifteen कर्मभूमिs, i. e., five in भारतवर्ष, five in ऐरावतवर्ष, and five in विदेह. It is in one of the कर्मभूमिs that a man is able to attain any state after death as a result of his acts. 12 तियरण चरित्तु, activities of mind, body and speech (त्रिकरणं चारित्रं).

7. 11-12 पसु खाइवि etc.—If a person, i. e., a Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma ? Wait upon a hunter (who does exactly the same things.)

10. 8*a* जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मसणात जावो, i. e., I care a straw for the human life.

11. 1*a* तिण्णयासंठाणय, the world is divided into three sections each having a different shape ; the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate (शराव) turned downwards : the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि ; the region of gods has the shape of a मृदङ्ग. 9*a* मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयरु, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella.

12. 4*a* पासुलियातुलाहिं, by beams made of ribs.

13. 1*a* णाणावरणिउ पचपयारउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz., मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय. See उत्तराध्ययनसूत्र xxxiii. 4. 5*a* णवविहदंसण, acts which obscure दर्शन fall under nine heads:—निद्रा, निद्रानिद्रा (deep sleep), प्रचला (drowsiness), प्रचलाप्रचला (heavy drowsiness), स्त्यानर्धि (somnambulism); चक्षुर्दर्शनावरणीय, अचक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय and केवलदर्शनावरणीय. See उत्तराध्ययन, xxxiii. 5–6. For other divisions of कर्म see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Triṣaṣti. 13 तिगइ i. e., पाणिमुक्ता, लाङ्गली and गोमूत्रिका, straight, curved and zigzag movements.

14. 12–13 पिहियासवदारहु etc.—It a person stops all sources of sin and conducts himself properly, new acts do not enter the soul, and those acts which long remained with it are destroyed by bodily sufferings as they do not get any nourishment.

15. 2*b* होमि दियंबरु, I shall be a naked monk. The emphatic and express mention of this term here and also in 26. 15*b* below and at several other places shows that the work is written from the point of view of the Digambara Jains. 10*b* दुज्जायवत्तिसंणाविण्णासहिं by particular permutations and combinations of morsels of food obtained by begging. It refers to the various भिक्षुप्रतिमाs in which food is regulated on the basis of counting the दत्ति or dole obtained or the morsels to be eaten. See below 16. 3*a*.

16. 12–13 जिह हयणिज्झरणे etc.—Just as a pond is dried up by the rays of the sun, and also when water already therein is drained and the influx of it is stopped by building dams (वड्ढं वरणे), in the same way acts

done in various births are exhausted by the control of senses (which prevents the influx of sinful acts) and by the practice of penance (prescribed for a monk).

19. 1*b* अणुवेक्खाओ, reflections of twelve types on the momentoriness, impurity etc. see तत्त्वार्थाधिगम, IX. 7.

21. 4*a* सोणंदियहु, to the son of सुणन्दा, i e. बाहुबलि. सुणन्दा is the second wife of रिसह.

24. 7*b* जसवइणंदउ, i. e., जसवई and सुणन्दा, the two wives of रिसह.

26. 16 The passage gives the date of the निष्क्रमण which is the ninth day of the dark half of Caitra with उत्तराषाढा नक्षत्र.

VIII.

[Risaha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Kaccha and Mahakaccha and his brothers-in-law, came to him in the forest, and after having greeted him, said that Risaha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Risaha, of course, as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his अवधिज्ञान how Risaha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Risaha had told him (the king of snakes) before he (Risaha) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyādharas, of the Vaitadhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Risaha from the awkward situation and went home.]

1. 9*b* मयसिमिरइं, मदस्य सैन्यानि, T. I think that सिमिर comes from शिबिर, camp of the army, but is loosely used to designate army. **12*b*** सुइवइणी, consisting of pure vows (शुचिव्रतयुक्ता). 19 थिउ सग्गहु etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation (च + अपवग्गहु).

2. 1–4 विसयवसा etc.—Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaha, were sinking (भग्गा) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger.

6. 7*b* सालएहिं, by his brothers-in-law. 9*a* पर तेण विमुक्क घरत्थकम्मु, but he has left all activities of a householder. 12*a* कूरमुहि, a handful of cooked rice.

7. From line 6 to 20 note the दामयमक or शृंखलायमक. The sets of a large number of दुवईs, constituting a kadavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet. The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes. 26 जीहहिं दुसयसंखहिं, with his thousand (tentimes hundred) tongues. P reads दुसहससंखहिं which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution.

11. 8*b* रसवाइ व सई णिवडियसुवण्णु, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of baser metals, the mount वेयड्ढ always showed gold.

12. 15*b* सुय दूयत्तणु हलिणिहि करन्ति, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love-messsages to their lovers.

13. 9*b* The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयड्ढ which are assigned to नमि.

14. 5*a* The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयड्ढ which were assigned to विनमि. The cities are enumerated from west to east (वारुणासामुहाओ).

IX.

[Risaha then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely. He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity. He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view. The principle of his life was that food exhausts

the body, this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Somaprabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother, Seyamsa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Risaha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyaṃsa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Risaha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift !". Risaha thereafter proceeded with his wanderings and in due course obtained the fourth knowledge called Manapajjavanāna, knowledge by which minds of others are known. He then proceeded to Nandanavana, and under a banyan tree acquired the Gunasthānas, and in due course attained kevalajñāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasaraṇa on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Risaha.]

1. 7 उज्झिउ आहाकम्मुद्दुमार्हि, food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as आधाकर्म, which the marginal note explains as नीचं कर्म स्वयंपाकादिकम, but elsewhere it is explained as आधानं आधा साधुनिमित्तं चेतसः प्रणिधानं तस्याः कर्म पाकादिक्रिया, तद्योगाद् भक्ताद्यपि आधाकर्म. 15*a* पाणिपत्ति, in the plate, viz., the palm. 17 ए णर, these men, i. e., his followers who became monks along with him.

3. 3*a* ससिप्पहाणुजम्मिणा, by the younger brother of ससिप्पह, i. e., सोमप्रभ, the son of बाहुबलि. 3*b* भवाणुबद्धधम्मिणा, by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4. 15*b* भुवणिबंधु, भुजनिबन्धः, arms.

5. 5*a* भरहहु तुम्हहुं महणि दिण्णी, by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Sreyāmsa, of course through their father Bahubali.

6. 2 सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो, the incidents in the sixth previous birth of Risaha when he was born as वज्जजंघ and his consort was सिरिमई. At that time सेयंस was the charioteer and knew that वज्जजंघ (or वज्रनाभ)

was destined to be the first तर्थिकर. For details see Hemacandra, Trisaṣṭi, III. 284–287 and also this work XXIV.

7. 16*a* सद्दहाणु णव पंचहं सत्तहं, i. e. faith in nine पदार्थs, five अस्तिकायs and seven तत्त्वs. 18*a* देसचरित्तालंकिउ, marked by a partial observance of the vows, as in the case of a householder who takes the अणुव्रतs and not the महाव्रतs.

9. 2 दायगदेज्जपत्तववहारसाग्मग्ग, principles in essence of the classification of the donor (दायग, दायक), the gift (देज्ज, देय) and the receiver (पत्त, पात्र). 11–12असणेण तणु etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñana, which in its turn secures bliss. Compare for the objects of begging alms :—

वेयण वेयावच्चे इरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥
—पिण्डनिर्युक्ति, 662

11. 8–9 तहु दिवसहु etc , the day on which Seyaṃsa served alms to Risaha was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यतृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called.

12. 7*a* पंचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावनाs. Compare तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, VII. 4–8.

15. 10*b* अप्पमात्ते गुणठाणि व लग्गउ, he stuck to अप्रमत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान. This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शीलाङ्गs. The monk is engaged in धर्मध्यान and there is a beginning of शुक्लध्यान. 11*b* खणि अउव्वु आरूढउ तावहिं, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth. शुक्लध्यान is now fully developed here. 13*b* अणियट्टिहि छत्तीस जि जित्तउ, in the अनिवृत्तिबादरगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty-six kinds of कर्म. 14*a* सुहुमसंपरायउ पावेप्पिणु, having acquired the सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the संज्वलनलोभ. 15*a* पुणु जायउ उवसंतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान. 16 खीणकसायचरिउ पडिवण्णउ, he reached the क्षीणकषाय or क्षीणमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लध्यान begins. In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कर्मप्रकृतिs, viz., five ज्ञानावरणीय, six out of nine दर्शनावरणीय and five अन्तराय. At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान.

20. 7*a* अक्खयधारिणि, अक्षयानां सिद्धानां धारिका सिद्धिवधूः, T. 14*b* धणए समवसरणु किउ तावहिं, at that time Kubera built a meeting place for gods etc. who arrived there to celebrate the attainment of Kevalajñāna by Risaha.

X.

[Indra and other gods glorified Jina on his attaining the Kevalajñāna. Jina also possessed twenty-four more atiśayas or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the kevala, that the cakraratna has made its appearance in his armoury and that his queen got a son.—King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, or cakra or father, but ultimately decided to see his father, went to him and praised him and thereafter returned home.

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from samsara went to him. To them the Jina began to describe categories of Jiva and Ajiva. He first explained the six pajjattis, i. e., faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of dvipas and samudras and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 अइसय दह etc. The Jina had already ten atiśayas from his birth such as निःस्वेदत्व etc., but when he attained केवल, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following kaḍavaka.

4. 3*a* दहकुमार i. e., ten gods belonging to the class of भवनपति.

5. 1–8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Siva but is shown superior to him, e. g. वामाविमुक्क, god Śiva is always associated with his consort, but the Jina is devoid of her. 9–13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14–17 to Viṣṇu.

9. 4*a* चउरासिलक्खजोणिहिं परिभमन्ति, तथा नित्येतरनिगोदयोः पृथिव्यप्तेजोवायुकायानां च प्रत्येकं सप्त योनिलक्षाणि, वनस्पतिकायिकानां दश, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाणां प्रत्येकं द्वे द्वे, सुरनारकतिरश्चां चत्वारि, मनुष्याणां चतुर्दशेति, तदुक्तम्—

> णिच्चेदरधादु सत्त य तरु दस वियलिंदिएसु छच्चेव ।
> सुरणरयतिरिय चदुरो चोद्दस मणुए सदसहस्सा ॥ T.

6-7 आहार...पज्जत्ति त्ति भणंति एत्थु. The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development. These पर्याप्तिs are six, viz. आहार, eating food and digesting it; सरीर, body, इंदिय, sense-organs; आणापाण, breathing; भासा, speech, and मण, mind.

19. 11 सुहमणिगोयसमुब्भवहं, of those that spring from the subtle णिगोय or निगोद; this निगोद् is a physical body with infinite lives or souls.

XI

[The Jina proceeds further to define the functions of different sense-organs and creatures that possess them. He then mentions the duration of their life. After a general description of the Geography of the Jambūdvīpa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities. He then goes on to detail the heavenly regions and gods. He explains the fourteen Guṇasthānas, the various prakrtis of karman, the characteristics of the Siddhas and their happiness. On hearing the discourse the eighty-four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Gaṇadharas. Similarly Bambhī and Sundarī became the first nuns of the Order. Only Marīci remained unenlightened. The first lay disciple was Suyakitti and the lady disciple was Piyaṃvayā or Priyaṃvadā. The first disciple to obtain emancipation was Aṇantavīra.]

6. 6*b* वयगुणियउ, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows.

8. 9-10 मइरंगहिं etc. The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs.

9. 2*b* णिरूह, परामर्शशून्याः, T., incapable of guessing or imagination.

10. 4 सावयवयहलेण सोलहमउ सग्गु लहइ माणुसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka. The sixteen heavens are: सौधर्म, ऐशान, सानत्कुमार, माहेन्द्र, ब्रह्म, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सहस्रार, आनत, प्राणत, आरण and अच्युत. According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार.

11. 10 राम उड्डगाइ etc. The passage says that the nine बलदेवs or रामs are destined to obtain heavens while the nine वासुदेवs are destined to go to hells.

17. 8*b* चंगउ कउलु तुज्झु वक्खाणइ, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper. When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1*a* अद्धकविट्ठसरिसंठाणइं, the shape of the heavenly abodes resembles the कपित्थ fruit cut into two.

25. 12 पडियारु, attendance, service, or cure.

26. 3*b* अतुलसोक्खु णिहिल्लहु अहमिंदहु, all अहमिन्द्रs enjoy happiness for which there is no parallel.

29. 8-15 मग्गणठाणइं चोद्दसमेयइं etc. The passage gives the list of fourteen Guṇasthānas. They are:—मिथ्यात्व, सास्वादनसम्यग्दृष्टि, (सासण of our text) सम्यङ्मिथ्यादृष्टि (मीसु of our text), अविरतिसम्यग्दृष्टि, देशविरति (विरयाविरउ of our text), प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण (अउव्वउ of our text) अनिवृत्तिबादर (अणियट्टि of our text), सूक्ष्मसंपराय (सुहुमराउ of our text), उपशान्तमोह (उवसंतु of our text), क्षीणमोह (परिक्खीणकसाय of our text), सयोगिकेवलि (सजोइजिणु of our text), and अयोगिकेवलि (अजोइ of our text). For details see Miss Johnson's Trisaṣṭi Appendix III. Pages 429–436.

32. 5*b* अडयालीसउं सउ, i e. one hundred and thirty-eight प्रकृतिs of कर्म. In the Guṇasthānas from number four to seven, one hundred and thirty-eight कर्मप्रकृतिs are destroyed. They are : ज्ञानावरणीय 5, दर्शनावरणीय 9, वेदनीय 2, मोहनीय 21, आयुः 3 (i. e. नारक, तिर्यक् and देव), नाम 93, गोत्र 2, and अन्तराय 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11*a* अट्ठमपुहईवहि, i. e., on the सिद्धभूमि or सिद्धशिला.

35. 12*b* एक्कु मरीइ णेय पडिबुद्धउ, only मरीचि who is the son of भरत and grandson of ऋषभ, was not enlightened as he was overcome by दर्शनावरणीयकर्म and मोहनीयकर्म. The Śvetāmbara version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain सम्यक्त्व. See Hemacandra, Trisaṣṭi, VI. 385–390.

XII.

[Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarṣa. In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor. He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction. After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tirtha. He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region. The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarṣa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty. The king of Magadha Tirtha did accordingly.]

1. *3a* छुड्ड छुड्ड, immediately, quickly. 15–16 सारयमयलंछणु etc. If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it (this very moon) as the simile, i. e, I would have compared, the fame of the Jina to it (the moon)

5. 30 साडी णं हिमवंतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kaḍavakas contain a fine description of the river.

12. 12 खंधुद्धरियडिंभया, the Kirāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them.

14. 12 णत्थि सहवाहु ओसहु, there is no cure for nature. Compare proverbs like स्वभावास औषध नाही in Marathi.

19. *2a* विविहणिहिसरासु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are:—नैसर्प, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वरत्नक, महापद्म, काल, महाकाल, माणव and शंखक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Triṣaṣṭi, IV. 574–782 and also below XVIII. 15. 6–10. *2b* णियकालवट्टसंधियसरासु, to one who has fixed an arrow

to his bow named कालवट्ट or कालपृष्ठ. Miss Johnson's note (see page 223 of her Tran. of Triṣaṣṭi) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. 7*b* तो तुम्हइं णउ अम्हइं मि देव, my lord, in that case there will remain neither we nor you. Compare तुम्हीही नाहीं आणि आम्हीही नाहीं in Marathi.

XIII.

[King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varataṇu (of Varadāma Tīrtha). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varataṇu. King Varataṇu immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavaṇasamudra, discharged an arrow at the king of Prabhāsa Tīrtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Mālava etc., and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayārdha or Vaitāḍhya mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khaṇḍas.]

1. 4*a* सिमिरं समुच्छलइ, the camp of the army is making rapid movements. 23 वइजयंतिणियडे, in the neighbourhood of वैजयन्ती, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible.

2. 13 दीवकवाडइं विहडिवि थक्कइं, the gates of different dvīpas or islands in the लवणसमुद्र stood opened before him, i. e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

4. 3*a* सहमंडवि वरतणुहि, in the court-room of वरतणु, the king of वरदामतित्थ. Hemacandra does not mention the name of the king in his Triṣaṣṭi.

9. 20 पहासें, by the king of the Prabhāsa Tīrtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

10. 1*a* सुरसिंधुसरिहि देहलिय धरिवि, i. e., regions standing between the Ganges (सुरसरि) on the east and the Sindhu on the west. 5*a* अज्जखंडु, the continents where the Aryans live. 14*a* विजयद्दहु संमुहु, towards the विजयार्ध mountain. This is another name of mountain Vaitāḍhya as can be seen from lines 24–25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khaṇḍas on either side and crosses the continent from east to west.

XIV.

[After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitāḍhya and encamped there. A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side. Bharata then ordered his general to do accordingly. When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents. The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months. He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness The general of the army then took the Kāgaṇi gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon. With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas. Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further. Āvarta and Kirāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the king of the Nāgas called Meghamukha (Clouds in the Mouth), who began to pour down rain over the army continuously for day and night. The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army. The army then attacked Āvarta and Kirāta who then offered tribute to Bharata. Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers.]

1. 12*b* जसवइपुत्तें पेसणु आविखउ, the son of Jasavai, i. e. king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin.

2. Note that the four lines of the Daṇḍaka have a द्ममयमक.

3. 5*b* तग्गिरिंदणामो, bearing the name of that mountain, viz. विजयार्ध. 26 आरासयफुरियउ, sparkling with a hundred spokes.

5. 3 इय चिंतिवि etc. The general then took up the कागणि gem, and with it wrote out the moon and the sun.

6. 8*b* सविण्णाणिणा संकमेणं कएणं, with the help of a dam (संक्रम, संक्रम) or bridge built by the clever engineer, i. e., स्थपतिरत्न.

XV.

[Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain. Sitting on a seat of darbha grass he observed a fast and at the end discharged his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow, but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to Vṛṣabha Mountain He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the past and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the Bhāratavarṣa. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave Timisā of the Vaitāḍhya mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God Nattamāli who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, Nami and Vinami, lived on the slopes of the mountain as lords of the Vidyādharas, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

agreed to do this and paid homage to Bharata. The Kāgaṇi gem then produced light with the help of which the army was able to proceed. Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance. On seeing him he offered him prayers.]

2. 11*b* वइसाहट्ठाणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up. This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force.

4. 9*b* परिच्छेयवंताइं, well-defined, clearly written, readable. 16*a* जो जियइ सो जियइ etc. he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die.

6. 15 वसुमइ छंदुल्लिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son.

7. 12*b* को एम ससंकि णाउं थवइ, who will, like you, put his name, i. e., write his name, on the moon? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon. 18 तुज्झु समाणु तुहु, you are like yourself, i. e., there is nobody who is like yourself.

12. 5–14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name वाहिणी, by a series of expressions bringing out their common characteristics

13. 2*b* तिमीसहि दुग्गमहे, तिमीसा or तामिस्रा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army.

15. 6*b* धरणेण, by धरण, the king of snakes who gave on behalf of ऋषभ, the towns to नमि and विनमि.

17. 7*b* अम्हहं पुणु दइयंबरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks. The expression दइयंबरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens.

22. 10 महिहरु महिहरहु etc. the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिहरहु).

XVI.

[Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kailāsa mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother, was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kailāsa mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him].

1. 2 साकेयहु संमुहु, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 12*a* कुंकुमेण छडउल्लउ, sprinking with water mixed with saffron. छडउल्लउ is a Deśī word. Compare सडा in Marathi. 19 सट्ठिहिं वरिससहासहिं, after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अज्ज वि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 12*a* कि किर वण्णिएण कंदप्पें, how can one describe (fully) god of love or Cupid ? Bāhubali, the son of Risaha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11-11 जइ जम्मजरामरणाइं हरइ etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11. 7*b* बुहसंगमु, i. e., बुधसंगमः, company of the wise. Note the appearance of रेफ in the word as sanctioned by Hemacandra, IV. 399.

18. 12*a* काउ कंदलावलिहि म विरसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death. 13*a* देहि कप्पु, pay tribute or homage to Bharata.

21. 4*a* जो बलवंतु चोरु सो राणउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief. A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24. 14 धवलाइं जि णिरु धवलइं, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon.

XVII.

[Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains. The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army. When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms. Both of them agreed to fight accordingly. But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious. When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata. Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground.]

1. 2 णंदाणंदणहो, of the son of णंदा, i. e., सुणंदा, i. e., बाहुबलि.

2. 9*b* पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy. 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

and therefore Rāhu, the eclipsing planet does not get angry with stars.

4. 14 सरवरपंतिहि वरणु णिबंधमि, I shall build a dam (to stop the progress of the army) by a series of arrows, having the shape of snakes (णायायारहिं).

5. 13 ण एवहिं मज्झमि, I do not behave well when I am with you, i. e., it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy णिमुज्झमि, shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 कुड्डि णाइं आलिहियइं, as if drawn in picture on a wall.

9. 3*a* बिण्णि वि जण, both of you. Compare दोघे जण in Marathi. 13 रणु तिविहु, threefold fight, viz., gazing at each other without winking; splashing water against each other so as to overpower one; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11. 5 हेट्ठिल दिट्ठि etc., The lower eye, i. e the eye of Bharata, was conquered by the upper eye, i e. the eye of Bahubali, whose glance was steady, fixed and unwinking.

12. 6*b* भिसाहारपूरंतचंचूचओ, in which the beaks of cakora birds were being filled with eatable stalks of lotus 12 विवलइ उप्परि मेहलहे, would just fall (slightly) above the waist but would not cover his face.

14. 5 पीलिज्जउ तेरउ उच्छुचाउ etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let (people) drink its juice, or let (them) eat the sweet raw sugar (गुल्, गुळ). Bāhubali had his bow made of sugar-cane and hence the reference. 10 ता भणइ जइणि etc., Then the son of Jina i. e. Bāhubali said: why do you talk in vain? why do you ridicule my bow and arrow?

15. 10*a* अलंभुयजुज्झविण्णाणसयाइं, hundred ways of wrestling.

16. 8*b* ता चिंतिउ चक्कु सुकंधरेण, then the fine-necked (Bharata) thought of his cakra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother.

XVIII

[Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin. He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk. Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women. He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life. Bāhubali could not agree. The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance. He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him. Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire. In course of time he attained Kevalajñāna. Gods headed by Indra came to him and praised him. Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin. Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth.]

2. 11 हउं जित्तउ पइं तुहुं सइ खमउ, I was defeated by you, and you have *once* (सइ, सकृत्) forgiven me.

3. 1–3 जइ पइं etc. If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive ? You have thus won or conquered even earth in forgiveness; you have frightened Indra (कसिउ, कौशिकः, i. e., इन्द्र) by your valour. 10–11 सासि सूरहो, etc, To the sun there is a counterpart in the moon; to the Mandara mountain there is (small) Mandara ; to Indra there is Pratīndra, but O son of queen Nandā (i. e., सुनन्दा), to you alone I do not see any second or counterpart.

5. 6 जइ एवहिं etc. If even after this (talk) you do not desire to have the earth, i. e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, i e. to Risaha, our father. It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

6. 7 पइं मेल्लिवि etc. Hatred (दोसु, द्वेषः), having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called दोसायर, दोषाकर (दोस + आयर, आकर).

7. 9*a* वयसमिदि, i. e. five समितिs viz., इरिया, भासा, एसणा, आदाण and उच्चार. Note that the word समिदि often retains द in this book as also ठिदि in the next line. 9*b* आवासयजोउ, practice or observance of the six आवश्यकs, viz, सामाइय, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खाण.

10. This kadavaka and the next record that Bāhubali, as monk, acquired the knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttarādhyayana Sūtra, XXXI, and also in this book in XXXVII 15–17. I think it is a good occasion for me to treat them here fully.

(1) एक्कु जीवहु गुण मणि भाविय, he cultivated in his mind the quality of Jīva which is one, i. e., solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be उपयोग as defined in तत्त्वार्थसूत्र II. 8 (उपयोगो लक्षणम्), or better still, the एकत्वभावना.. In the Uttarādhyayana Sūtra however we find:

एगओ विरइं कुज्जा एगओ य पवत्तणं ।
असंजमे नियत्तिं च संजमे य पवत्तणं ॥ XXXI. 2

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in the other; i e., Jīva should abstain for असंजम, indisciplined life, and advance with self-discipline.

(2) राय रोस दोण्णि वि उड्डाविय, he sent away, (lit: made to fly) both राग and रोष. The Uttarā. however mentions राग and द्वेष which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads रोस in all Mss.

(3) (a) तिण्णि वि सल्लइं हियउद्धरियइं, he removed from his heart the three शल्यs, viz., मायाशल्य, निदानशल्य and मिथ्यादर्शनशल्य.

(b) तिण्णि वि रयणइं लहु संभवियइं, he soon acquired the three jewels, viz , सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन and सम्यक्चारित्र.

(c) तिण्णि वि डंभ मुक्क संखेवें, he left quickly (संखेवें, संक्षेपेण, शीघ्रम्) the three types of crookedness, viz, bodily, verbal and mental. The Uttarā. has मनोदण्ड, वाग्दण्ड and कायदण्ड in place of डंभ of our Text.

(d) गारव तिण्णि विवज्जिय देवें, the divine one, i. e. Bāhubali, avoided three गारवs (गौरव), viz., रिद्धिगारव, रसगारव and सायागारव. The Uttarā. adds three उपसर्गs here:

दिव्वे य जे उवसग्गे तहा तेरिच्छमाणुसे ।
जे भिक्खू सहई जयई न से अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगइकम्मणिबंधणरमियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, भय परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कर्म which puts the Jīva in the fourfold संसार, viz., देव, नारक, तिर्यक् and मनुष्य. The Uttarā. has:

विगहाकसायसन्नाणं झाणाणं च दुयं तहा ।
जे भिक्खू वज्जई निच्चं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विकथाs, viz. राज्य, देश, भोजन and स्त्री, there are four कषायs, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ; the four संज्ञाs are mentioned above; the four ध्यानs are आर्त, रौद्र, शुक्ल and धर्म out of which first two types are bad.

(5) (a) पंच महव्वयाइं, the five great vows of the monk, viz., अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य.

(b) पंचासवदारइं, the five sources of sin, viz., हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन.

(c) पंचिंदियइं कयाइं णिरत्थइं, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz., शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध.

(d) पंच वि णाणावरणइं गंथइं, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz., श्रुतज्ञानावरणीय, आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्यायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय.

(6) (a) छावासयउज्जमु सविसेसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यकs, viz., सामाइय, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खाण.

(b) छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz., पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति and त्रस.

(c) छह लेसहं परिणामुवइट्ठहं, he got stopped the effect of the six लेश्याs, viz., कृष्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुक्ल.

(d) छ वि दव्वइं पच्चक्खइं दिट्ठइं, he saw or realised all the six entities, viz., धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल.

(7) (a) सत्त भयाई हयाई गहीरें, the serene one (i. e. Bāhubali) destroyed the seven fears or risks, viz., इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, आजीवभय, मरणभय, and अश्लोकभय.

(b) सत्त वि तच्चई णायई धीरें, the wise one knew all the seven truths, viz., जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जर, बन्ध and मोक्ष.

(8) (a) अट्ठ वि मय णिट्ठविय अदुट्ठे, the unsoiled one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., जातिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपोमद, ऐश्वर्यमद, श्रुतमद, and लाभमद.

(b) अट्ठ सिद्धगुण भत्तिय वरिट्ठें, the excellent one remembered the eight qualities of the सिद्धs, viz.,

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुहुमं तहेव अवगहणं ।
अगुरुलहुमव्वाबाहं अट्ठ गुणा होन्ति सिद्धाणं ॥

—सिद्धभक्ति, २०

शुद्धात्मादिपदार्थविषये विपरीताभिनिवेशरहितः परिणामः क्षायिकसम्यक्त्वमिति भण्यते । जगत्त्रयकालत्रयवर्तिपदार्थयुगपद्विशेषपरिच्छित्तिरूपं केवलज्ञानं भण्यते । तत्रैव सामान्यपरिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनं भण्यते । केवलज्ञानविषये अनन्तपरिच्छित्तिशक्तिरूप अनन्तवीर्यं भण्यते । अतीन्द्रियज्ञानविषयत्वं सूक्ष्मत्वं भण्यते । एकजीवावगाहप्रदेशे अनन्तजीवावगाहदानसामर्थ्यमवगाहनत्वं भण्यते । एकान्तेन गुरुलघुत्वस्याभावरूपेण अगुरुलघुत्वं भण्यते । वेदनीयकर्मोदयजनितसमस्तबाधारहितत्वादव्याबाधगुणश्चेति ॥

—परमात्मप्रकाशटीका

(9) (a) णवविहु बंभचेरु परिपालिउ, he observed the ninefold celibacy, viz.,

इत्थिविसयाहिलासो अङ्गविमोक्खो य पणिदरससेवा ।
संसत्तदव्वसेवा तदिंदियालोयणं चेव ॥ १ ॥
सक्कारपुरक्कारो अदीदसुमरणमणागदहिलासो ।
इट्ठविसयसेवा वि य णवभेदमिदं अबम्भत्तं ॥ २ ॥

—T. in Ms. K.

Devendra's Com. on Uttarā. XXXI. 10 however gives the nine rules of celibacy as follows:

वसहि कह निसिज्जिन्दिय कुड्डिन्तरपुव्वकीलिय पणीए ।
अइमायाहार विभूसणा य नव बम्भगुत्तीओ ॥ १ ॥

(b) णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ, he realised the extent of nine entities, viz., जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, and मोक्ष.

(10) दसविहु जिणधम्मु वियाणियउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz.,

खन्ती य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धव्वो ।
सच्चं सोयं आकिंचणं च बम्भं च जइधम्मो ॥ १ ॥

* (11) एयारह इयजडिमउ अवियारहं धीरहं सावयहं...पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमाs which lay disciples practise. These eleven प्रतिमाs are :—

दंसण वय सामाइय पोसह पडिमा अबम्भ सचित्ते ।
आरम्भ पेस उद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224–229.

(12) बारह भिक्खुहं पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमाs of the monks. These are described in Devendra's Com. on Uttarā. XXXI 11, as follows :—

मासाई सत्तन्ता पढमा बिइ तइय सत्तराइदिणा ।
अहराइ एगराई भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ १ ॥

The duration of the first भिक्षुप्रतिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months; of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमाs is called upon to observe. Devendra describes them as follows :—

पडिवज्जइ एयाओ संघयणधिईजुओ महासत्तो ।
पडिमाउ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥

गच्छे च्चिय निम्माओ जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा ।
नवमस्स तइयवत्थुं होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ २ ॥

वोसट्ठचत्तदेहो उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी ।
एसण अभिग्गहीया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ३ ॥

गच्छा विणिक्खमित्ता पडिवज्जइ मासियं महापडिमं ।
दत्तेग भोयणस्सा पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥

जत्थत्थमेइ सूरो न तओ ठाणा पयं पि संचलइ ।
नाएगराइवासी एगं व दुगं व अन्नाए ॥ ५ ॥

दुट्ठस्सहत्थिमाईण नो भएणं पयं पि ओसरइ ।
एमाइनियमसेवी विहरइ जावण्डिओ मासो ॥ ६ ॥

पच्छा गच्छमईई एव दुमासी तिमासि जा सत्त ।
नवरं दत्तीवुड्ढी जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ ७ ॥

नत्तो य अट्ठमीया भवई हु पढम सत्तराइंदी ।
तीइ चउत्थचउत्थेणऽपाणएणं अह विसेसो ॥ ८ ॥

दोच्चा वि एरिस च्चिय बहिया गामाइयाण नवरं तु ।
उक्कुड लेंगडसाई दण्डायय उड्ढ ठाइत्ता ॥ ९ ॥

तच्चाए वी एवं नवरं ठाणं तु तस्म गोदोही ।
वीरासणमहवा वी ठाएज्जा अंबखुज्जो हु ॥ १० ॥

एमेव अहोराई छट्ठं भत्तं अपाणयं नवरं ।
गामनगराण बहिया वग्घारियपाणिए टाणं ॥ ११ ॥

एमेव एगराई अट्ठमभत्तेण ठाण बाहिरओ ।
ईसीपब्भारगए अणिमिसनयणेगदिट्ठा य ॥ १२ ॥

(13) (a) तेरह किरियाठाणइं मुणियइं, he understood the thirteen क्रियास्थानs, which are enumerated below:

अट्ठाणट्ठा हिंसाऽकम्हा दिट्ठी य मोसऽदिन्ने या ।
अज्झत्थ माण मेत्ती माया लोभेरियावहिया ॥ १ ॥

For details of these see सूयगड II. 2.

(b) तेरहमेय चरित्तइं गणियइं, he also conuted upon the thirteen types of good conduct, viz, पञ्चास्रवसंवर, पञ्चसमिति and गुप्तित्रय

(14) (a) चोद्दह गंथ, he avoided the fourteen knots which are enumerated in T. as follows :—

मिच्छत्तवेदरागा तहासादिया (?) य छद्दोसा ।
चत्तारि तह कसाया चोद्दह अब्भन्तरा गन्था ॥ १ ॥

(b) (चोद्दह) मला वि समुज्झिय, he avoided the fourteen impurities enumerated in T. as follows :—

नहरोमजन्तुअट्ठी कणकोंडयपूयचम्ममंसरुहिराणि ।
बीय फलकन्दमूलानि मला चोद्दसा होन्ति ॥ १ ॥

(c) चोद्दह भूयगाम सइं बुज्झिय, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T. as follows :— एकेन्द्रियाः सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः पर्याप्तापर्याप्तभेदात् षट्, पञ्चेन्द्रियाः संइयसंज्ञिपर्याप्तापर्याप्तभेदाच्चत्वारः इति चतुर्दशविधो भूतग्रामः ।

बादरसुहुमे इन्दियदुतिचतुरिन्दियसन्नीया ।
पज्जत्तापज्जत्ता...चतुदस भूदसंगामा ॥ १ ॥

(15) (a) पण्णारह पमाय मेल्लेंतें, abandoning the fifteen प्रमाद्s or flaws, enumerated in T. as follows :—

विकहा तह य कसाया इन्दिय निद्दा य पणगो य ।
चउ चउ पण एगेगं होन्ति पमाया हु पण्णरसा ॥ १ ॥

i. e., four types bad talk, viz. राज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and स्त्रीकथा, four कषायs, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पणग, पानक ?).

(b) पण्णरसभूमिउ जाणेंतें, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz., five in each of भारत, इरावत and विदेह.

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमेंतें, pacifying the sixteen forms of passions. T. notes these as : कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहवयणेम रमंतें taking delight in sixteen types of expressions. T. records them as follows :—काललिङ्गवचनानि प्रत्येकं त्रीणि नव, तथा वि (?) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृष्टपरोक्षवचनानि चत्वारीति षोडश. The Uttarā. has गाहामोलसएहि which refers to the sixteen lessons of the first volume of सूयगडं of which the sixteenth is called गाहज्झयणं.

(17) असंजमोह सत्तारह, seventeen types of असंयम, indiscipline ; Devendra has enumerated these as follows :—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्वं चास्य तत्प्रतिपक्षस्य संयमस्य सप्तदशभेदत्वात् । यत उक्तम्—

पुढवि-दग-अगणि-मारुय-वणप्फई-बि-ति-चउ-पणिन्दिअज्जीवे ।
पेहोपेहपमज्जण-परिठवण-मणो-वई-काए ॥

T. has the following explanation : पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःपञ्चेन्द्रियाणामनिलेखन (?) दुष्प्रतिलेखनापहत्योपेक्षाणि (?) जीवमनोवाक्कायाः अपहत्य (?) गृहीताण्डादिजन्तून् प्रतिलेख्ये (?) उपेक्षा (?)... । अथवा—

पञ्चासवेहि विरमणं पञ्चिन्दियनिग्गहो कसायजओ ।
तिहि दण्डेहि य विरई संजमो सत्तरसभेओ ॥

तत्प्रतिषेधादसंयमः सप्तदशविधः.

(18) जाणिवि संपराय अट्ठारह, having known eighteen types of संपराय viz., ten यतिधर्मs such as क्षान्ति etc., five समितिs and three गुप्तिs.

(19) एउणवीस वि णाहज्झयणइं, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations (नाय-ज्ञात or न्याय ?). This is clear-

ly a reference to the sixth Aṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the नायाधम्मकहाओ. This book consists of two parts Nāyas, Jñātas or illustrations and धम्मकहा or sacred narratives. Our Mss. invariably read ह so that our reading is नाहज्झयणई. This reading is supported by T. also. Uttarā. reads नायज्झयणेसु. The change of Sk. त to ह is not unusual, compare भरह for भरत. It also appears that ज्ञात or न्याय constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of धम्मकहा might have been added later. The present text of the नायाधम्मकहाओ in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called नायs and are named as:

उक्खित्तनाए संघाडे अण्डे कुम्मे य सेलए ।
तुम्बे य रोहिणी मल्ली मायंदी चन्दिमा इय ॥ १ ॥
दावद्दवे उदगनाए मण्डुक्के तेयली इय ।
नन्दिफले अवरकङ्का आइन्ने सुंसु पुण्डरिए ॥ २ ॥

—Devendra on Uttarā XXXI. 14.

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called नाह or णाह; it contained nineteen lessons as in the Śvetāmbara tradition, but the names of the Nāhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below:—

1. उक्कोडणाग constituted the first अज्झयण. The story as given in T. is as follows:—उक्कोडणाग श्वेतहस्ती । अस्य कथा । उत्तरापथे कनकपुरे राजा कनको, महाराज्ञी कनका । पुत्रो नागकुमारः तपो गृहीत्वा विहरमाणः अटव्या दावानलेन दह्यमानः समाधिना मृत्वा अच्युतेन्द्रो जातः । तदर्धदग्धकलेवरं दृष्ट्वा तुङ्गभद्रो नाम तत्रत्यो भिल्लो जातपश्चात्तापो मृत्वा तत्रैव श्वेतगजो जातः । सोऽच्युतेन्द्रेण जिनधर्मं ग्राहितः पुनर्दावानलेन दह्यमानं शशकं स्वपादतले स्थितं रक्षित्वा (दह्य) मानोऽपि दृढव्रतो भूत्वा मृत्वा देवो जातः. If we compare this narrative with the one in the first ज्ञात called उत्क्षिप्तज्ञात of the Śvetāmbara version, we shall see that there is no reference there to a Bhilla being taught by अच्युतेन्द्र, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the Digambara version of the narrative may have been different from the Śvetāmbara one.

2. कुम्म—This is second in the Digambara tradition, but fourth in the Śvetāmbara one. T. gives the narrative as follows:—कुम्म कूर्माख्यानम् । यथा कूर्मेण मुखचरणसंकोचं कृत्वात्मनो ब्राह्मणान्मरणं निवारितं तथा मुनिभिरपि पञ्चेन्द्रियसंकुचितैर्मरणपरंपरा निवारयितव्या.

3. अंडय—This is the third ज्ञात in both the versions. T. says :—अण्डजकथा पञ्चप्रकारा। तद्यथा कुक्कुटकथा मातात्येका पितात्येक: इति । तापसपल्लिकास्थितशुककथा। चारणाख्यव्याकरणवेदकशुककथा । अगन्धनसर्पकथा। हंसयूथबन्धनमोचक कथा. In the Śvetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and not five as T. seems to indicate.

4. रोहिणी—This is the seventh story in the Śvetāmbara version while it is fourth in the Digambara one. T. reads : सुप्रबलदेवेन सह रोहिणी तिष्ठतीति लोकप्रवादं श्रुत्वा रोहिण्या भणितं यद्यसौ शुद्धा तदा यमुनानदी शौरिपुरं वेष्टित्वा पूर्वाभिमुखं वहत्विति । तन्माहात्म्यात्तथैव जातम् । The story in the ज्ञानाधर्मकथा is altogether different.

5. सेल—This seems to correspond to सेलए which is the fifth narrative in the Śvetāmbara version. T. reads : शेषे शिष्यकथा यथा चेलिणीपुत्रवारिषेणप्रतिबोधितः पुष्पडालः. The story in the ज्ञानाधर्मकथा is altogether different.

6. तुंब (and not रुव as read in foot-notes)—This is the sixth story in both the versions. T. reads : तुम्बकथा रोषेण दत्तकटुककुभोजनमुनिकथा. The story in the ज्ञानाधर्मकथा is different as can be seen from its summary in the com. which runs as follows :—

जह मिउलेवालित्तं गरुयं तुम्बं अहो वयइ एवं।
आसवकयकम्मगुरू जीवा वच्चन्ति अहरगयं ॥ १ ॥
तं चेव तव्विमुक्कं जलोवरि ठाइ जायलहुभावं।
जह तह कम्मविमुक्का लोयग्गपइट्ठिया होन्ति ॥ २ ॥

7. संघाद्—This is called संघाड and is the second in the Śvetāmbara version. T. reads :—संघादे । अस्य कथा । कौशाम्ब्या नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशदिभ्याः, तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागताः । सम्यग्दृष्टयस्ते केवलिमर्मापि स्वल्पं निजजीवितं ज्ञात्वा तपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान (पादपोपगमन ?) मरणेन स्थिताः । अतिवृष्टौ जातायां जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातिताः । परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गताः. The narrative in ज्ञानाधर्मकथा is altogether different from the above.

8. मादंगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the Śvetāmbara version should be the counterpart of मादंगि of the Digambara version. T. seems to make मादंगिमल्लि as one narrative which would however reduce the number of narratives to eighteen. T. reads : मादंगिमल्लिकथा यथा वज्रमुष्टिमहाभटभार्याया मंगि (मादंगि ?) नामायाः मल्लिपुष्पमालाभ्यन्तरस्थितसर्पदष्टायाः कथा. The narratives of the Śvetāmbaras and the Digambaras do not at all agree.

9. मल्लि—This is the eighth narrative in the ज्ञानाधर्मकथा. For remarks see above.

10. चंदिमा—This is the tenth narrative in both the versions. T. says : चंदिमा चन्द्रावधकथा (चन्द्रवृद्धिकथा). Perhaps both the versions give the same narrative.

11. तावद्दुव—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called दावद्दुव which is the name of a tree in that version. T. however seems to mean a different story. T. reads : तावद्दुव–तापद्रवदेशोत्पन्नघोटकहरणसगरचक्रवर्तिकथा.

12. तिका—It appears that this तिका should correspond with तेयली which is the fourteenth story is the ज्ञानाधर्मकथा. T. reads: तिका मनुष्यकरोटिसमुत्थितवंशत्रिकस्य कर्कण्डमहाराजस्तच्छत्रे ध्वजाङ्कुशदण्डकथा. The Śvetāmbara version of तेयली does not seem to agree with the above.

13. तडाया—This seems to correspond to दद्दुर which is the thirteenth story is the Śvetāmbara version. T. reads : तडाया तडागपान्यामेकवृक्षकोटरस्थिततपस्विनो गन्धर्वारघनकथितकथा. This has no correspondence with दद्दुर of the Śvetāmbara version.

14. किन्न (आकीर्ण ?) —This seems to be आइण्ण of the Śvetāmbara version which is the seventeenth story there. T. reads: वाह्निमर्दनस्थितकर्षकपुरुषसत्यकथा. This story also does not seem to have any correspondence with the Śvetāmbara version.

15. सुसुकेय—This should correspond with सुंसुमा of the Śvetāmbara version which is the eighteenth story there. T. reads : आराधनाकथितसुंसुमारद्रहनिक्षिप्तपाणकथा. There seems to be no agreement between the two versions.

16. अवरकंके—This is called अवरकंका in the Svetambara version where also it is the sixteenth narrative T. reads : अवरकंकनामपत्तनोत्पन्नजनचोरकथा. There is mention of the town of अवरकंका in the Śvetāmbara veraion, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17. नंदिफले—This is called the same in the Svetāmbara version but there it is the fifteenth story. T. reads : अटव्यां स्थितनुमुक्षणीक्षितधन्वन्तरि-

विश्वानुलोमभृत्यानां किंपाककलकथा. The narrative seems to be similar in both the versions.

18. उद्गनाह—This seems to correspond to उद्गनाअ of the Śvetāmbara version which is the twelfth story there. T. reads : उद्गनाह उद्रुकनाथ (?) कथा यथा राजामात्यसमक्षगडुककथा. The story seems to be similar in both the versions.

19. पुंडरिगो य—This is the last story in both the versions. T. reads : पुंडरिगो य पुण्डरीकराजपुत्र्याः कथा. The Śvetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com.

वाससहस्सं पि जई काऊणं संजमं सुविउलं पि ।
अन्ते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कण्डरीउ व्व ॥
अप्पेण वि कालेणं के वि जहागहियसीलसामण्णा ।
साहिन्ति निययकज्जं पुण्डरीयमहारिसि व्व ॥

T. adds : "अथवा—गुण जीवा प(?)जत्तीपाणासायामग्गणा उ य ।
एउणवीसा एदे णाहज्झयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मक्खयगं जं हवन्ति दस चेव ।
णाहज्झयणा एए एउणवीसा वियाणेहि ॥

कर्मक्षयजाः घातिकर्मक्षयजाः दशातिशयाः. It is clear that the names of the अज्झयणs agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely. Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T.

(20). वीसविहइं असमाहीठाणइं–Twenty types or causes of असमाधि, absence of transquility of mind. These twenty causes are given in Devendra's com. as follows :—

1. दवदवचारी–दुयं दुयं वच्चन्तो इहेव अप्पाणं पवडणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोगे य अप्पयं सत्तवहजणियकम्मुणा असमाहीए जोयइ.

2. अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

3. दुप्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

4. अइरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ.

5. राइणिए परिभवइ.

6. थेरोवघाई–सीलाइदोसेहिं थेरे उवहणइ त्ति वुत्तं भवइ.

7. भूओवघाई–अणट्ठाए एगिन्दियाइए उवहणइ त्ति वुत्तं भवइ.

8. मुहुत्ते मुहुत्ते संजलइ.

9. सइं कुद्धो य अच्चन्तकुद्धो हवइ.

10. पिट्ठिमंसिए हवइ.

11. अभिक्खणमोहारिणिं भासइ जहा दासो तुमं चोरो व त्ति.

12. नवाइं अहिगरणाइं करेइ.

13. उवसन्ताणि य उईरेइ.

14. ससरक्खपाए अथंडिलाओ थण्डिलं संकमइ, ससरक्खेहि वा हत्थेहिं भिक्खं गेण्हइ.

15. अकाले सज्झायं करेइ.

16. असंखडसद्दं करेइ राईए वा महया सद्देण उल्लवइ.

17. कलहं करेइ, तं वा करइ जेण कलहो हवइ.

18. तारिसं करेइ भासइ वा जेण सव्वो गणो झञ्झाविओ अच्छइ.

19. सूरोदयाओ अत्थमणं जाव भुञ्जइ.

20. एसणासमिइं न पालेइ.

T. also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt.

(21) एक्कवीस सवल वि, i. e. twentyone impurities or impure and sinful acts (शबल). They are given by Devendra as :—

तं जइ उ (१) हत्थकम्मं कुव्वन्ते (२) मेहुणं ह सेवन्ते ।
(३) राइं च भुञ्जमाणे (४) आहाकम्मं च भुञ्जन्ते ॥ १ ॥

(५) नत्तो य रायपिण्डं (६) कीयं (७) पामिच्च (८) अभिहड (९) अच्छेज्जं ।
(१०) भुञ्जन्ते सबले ऊ पच्चक्खियअभिक्ख भुञ्जन्ते ॥ २ ॥

(११) छम्मासब्भन्तरओ गणा गण संकमं करिन्ते य ।
(१२) मासब्भन्तर तिण्णि य दगलेवा ऊ करेमाणे ॥ ३ ॥

मासब्भन्तरओ विय माइट्ठाणाइं तिण्णि कुणमाणे ।
(१३) पाणाइवायाउट्टिं कुव्वन्ते (१४) मुसं वयन्ते य ॥ ४ ॥

(१५) गिण्हन्ते य अदिन्नं (१६) आउट्टिं तह अणन्तरहियाए ।
पुढवीए ठाण सेज्जा निसीहियं वा वि चेएइ ॥ ५ ॥

(१७) एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए चित्तमन्तसिललेलू ।
कोलावासपइट्ठा कोलघुणा तेसि आवासो ॥ ६ ॥

(१८) सण्डसपाणसबीए जाव उ संताणए भवे तहियं ।
ठाणाइ चेयमाणे सबले आउट्टियाए उ ॥ ७ ॥

(१९) आउट्टि मूलकन्दे पुप्फे य फले य बीयहरिए य ।
भुञ्जन्ते सबले ऊ (२०) तहेव संवच्छरस्सन्तो ॥ ८ ॥
दस दगलेवे कुव्वं तह माइट्ठाण दस य वरिसन्तो ।
(२१) आउट्टिय सीओदगवग्घारियहत्थमत्ते य ॥ ९ ॥
दव्वीइ भायणेण य दिज्जन्तं भत्तपाण घेत्तूण ।
भुञ्जइ सबलो एसो इगवीसो होइ नायव्वो ॥ १० ॥

(22) सहिवि दुवीस दुसज्झ परीसह, having borne twenty-two unpleasant contacts, viz., क्षुत्, पिपासा etc. For details see तत्त्वार्थाधिगमसूत्र IX. 9.

(23) तेवीस वि सुत्तयडइं, i. e. twenty-three chapters of the सूत्रकृताङ्ग, the second Aṅga of the Canon of the Jains, beginning with समयाध्ययन and so forth. T. reads : समए वेदालिजोए उवसग्गं इत्थिपरिणामे निरयन्तर वीरथुदी कुसीलपरिभासिए धम्मो य अग्गमग्गे समसरणं तिकालागन्थसाहयए (?) आदा तद्दित्था (?) पुंडरीको कीरियट्ठाणे पयआराहेयपरिणामे पच्चक्खाण अणगारगुणकित्ती सुद अत्थ णालन्दे सुदयडज्झयणाणि तेवीसं द्वितीयाङ्गश्रुतवर्णनाधिकाराश्च. It we are to trust the text of T. which is admittedly corrupt, the order of adhyayanas in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one.

(24) चउवीस वि जिणतित्थइं—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas.

(25) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाधिगम, VII 3-8. T. reads: एकैकस्य परिपालनार्थं वाङ्मनोगुप्तीर्वां (?) दानसमित्यादयः पञ्च भावनाः; अथवा, त्रयोदश क्रियाः द्वादश तपांसि च पञ्चविंशतिर्भावनाः.

(26) छव्वीस वि पुहवीउ, the twentysix regions; T. reads : सौधर्मादिमोक्षपर्यन्ता एका (?) पृथ्वी उत्सर्पिण्योर्भरतैरावतयोरवसर्पिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्सर्पिण्यां च सैव सारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रभो (?) मोक्षभागचित्रादयः (?) पङ्कभागादयः सप्त नरकभूमयः इति षड्विंशतिः पृथिव्यः.

(27) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz., द्वादश भिक्षुप्रतिमाः, अष्टौ प्रवचनमातरः, क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामभावश्च सप्त, T. Devendra however gives a different list :—

वयछक्कमिन्दियाणं च निग्गहो भावकरणसच्चं च ।
खमया विरागया वि य मणमाईणं निरोहो य ॥ १ ॥
कायाण छक्क जोगम्मि जुत्तया वेयणाहियासणया ।
तह मारणन्तियहियासणा य एएऽणगारगुणा ॥ २ ॥

(28) अट्ठवीस पवगयारकप्प—There are twentyeight (?) मूलगुणs as T. says; but Devendra gives them as : प्रकृष्टः कल्पः यतिव्यवहारो यस्मिन्निति प्रकल्पः, स चेहाचाराङ्गमेव शस्त्रपरिज्ञाद्यष्टाविंशत्यध्ययनात्मकम्.

(29) एउणतीस वि दुक्कियसुत्तइं, twenty-nine books of heretics which they believe to be sacred. T. reads : चित्रकर्मादिसूत्रं गणितसूत्रं वैद्यसूत्रं नृत्यसूत्रं गान्धर्वसूत्रं पटहसूत्रं अगदसूत्रं मयसूत्रं द्यूतसूत्रं राजनीतिसूत्रं मजुरंगसूत्रं (?) चतुरंगसूत्रं गजतुरंगसूत्रं पुरुषस्त्रीगोभहदंगंजनानां (?) लक्ष (लक्षण ?) सूत्राणि अंगं सरं वंजनलक्षणं च छिण्णं वीभोमंसमिणंतरक्खं (?) इत्यष्टाङ्गनिमित्तसूत्राणीति एकोनविंशत्यपसूत्राणि । अथवा

अट्ठारह य पुराणा सडंगविण्णा (विज्जा ?) य लोइयाणं तु ।
बुद्धाइ पंच समया परूवणा जा सुदी लोए ॥ १ ॥

Devendra gives a different list :

अट्ठ निमित्तंगाइं दिव्वुप्पायन्तलिक्खंभोमं च ।
अंगं सरं लक्खण वंजणं च तिविहं पुणेक्केक्कं ॥ १ ॥
सुत्तं वित्ती तह वत्तियं च पावसुयमउणतीसविहं ।
गन्धव्वे नट्टं वत्थं आउं धणुवेयसंजुत्तं ॥ २ ॥

For still another list see नन्दीसूत्र under मिच्छासुयं.

(30) तीसविहइं मोहट्ठाणइं, thirty causes or types of infatuation. T. reads : तथा हि–व्रतविषये पञ्चप्रकारो मोहः । पञ्चप्रकारमनुष्यविषये पञ्चप्रकारमोहः । पञ्चप्रकारमनुष्याः भोगभूमिजमनुष्याः विद्याधरत्रिषष्टिशलाकापुरुषमनुष्याः पञ्चदशकर्मभूमिजचतुर्थकालोत्पन्नमनुष्याः भरतैरावतेषु दुःकर्मातिदुःषमकालोत्पन्नमनुष्याः समुद्रमध्यद्वीपोत्पन्नकर्णप्रोचरणादि (कर्णप्रावरण ?) मनुष्याश्च । जीवाजीवास्रवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षपुण्यपापानां स्वरूपे नवप्रकारो मोहः । कर्मबन्धनस्वरूपे एको मोहः । द्वादशविधतपःस्वरूपे एको मोहः । दर्शनस्वरूपे एको मोहः । नैगमसंग्रहव्यवहारऋजुसूत्रशब्दसमभिरूढैवंभूताना सप्तनयानां स्वरूपे सप्त मोहाः । व्रतविनाशविषये एको मोहः ॥ अथवा–क्षेत्ररत्नस्वरूपा (?) सुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्यदण्डलक्षणबाह्यग्रन्थाविषयो दशप्रकारो मोहः । मिथ्यात्ववेदरागादिलक्षणाभ्यन्तरग्रन्थविषयश्चतुर्दशप्रकारः । पञ्चेन्द्रियदुष्टमनोविषयः षट्प्रकारो मोहः. Devendra's list is altogether different from this for which see his com.

(31) एक्कतीस मलवाय धुणंतें, shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T. as follows :—तथाहि ज्ञानावरणीयं पञ्चप्रकारं दर्शनावरणीयं नवविधं वेदनीय सातासातरूपतया द्विभेदं मोहनीयं दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयभेदाद् द्विप्रकारं आयुश्चतुर्भेदं नाम शुभमशुभं च गोत्रमुच्चैः (?) अन्तरायाः पञ्चप्रकाराः.

(32) जिणुवएस बत्तीस मुणन्तें, meditating upon thirty-two preachings of the Jinas. They are given in T. as follows :—

आवीसयंक्कपुव्वा छव्वारसचोद्दमा य ते कमसो ।
बत्तीसमिमे नियमा जिणोवएसा मुणेयव्वा ॥१॥

The Uttarā. XXXI. 20 mentions one more series of thirty-three terms as तेत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII. 15-17 below.

14. 9*b* छप्पण्णन्तरदीवइं—These fifty-six अन्तरद्वीपs are located in the लवणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters. For details see नन्दिसूत्रटीका of मलयगिरि, pp. 102-103.

15. 6-10. These lines describe the different functions of the nine निधिs or treasures.

XIX.

[Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc.

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāṃsa a liberal donor, and Somaprabha a meritoriors ruler. Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duḥṣamā when all notions of morality would be completely changed.]

8. 13 अवसवणउं, अपस्वप्नः, a bad dream.

10. 12-13 धीवरिखरिपुत्तहं देहिंति पहुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वासस् who is the son of a female ass. व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वासस् as the son of a female ass I am not able to trace.

12. 2*a* पंचमजुगि, i.e., in दुष्षमा.

XX.

[Risaha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water, and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Siva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloya with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhela with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen Maṇoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmai (Mahāmati), Saṃbhinnamati, Satamati and Saṃbuddha (Svayaṃbuddha). Now one day this Svayaṃbuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmati, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayaṃbuddha refuted the doctrine of Mahāmati, when Saṃbhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayaṃbuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayaṃbuddha refuted this doctrine also.

Svayaṃbuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body, and, when he found that it did not alleviate by any remedy, asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artifical blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

There was another ancestor of Mahābala named Daṇḍaka. His son was named Maṇimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non-poisonous snake) and kept a watch over his wealth. One day Maṇimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Maṇimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Maṇimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Maṇimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing.]

17. 2–5 अणिहणाइं etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18. 9*b* पउरंदरिय विति, the doctrine of Puraṃdara, i.e., Indra, who along with Bṛhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10–11. विणु जीवेँ etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept; in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19. 11 रिसिसमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i.e. Jina. 12. णिरण्णउ, निरन्वयम्, without continuity.

21. 3. आयासु etc. A Tiṭṭibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

XXI.

[Svayaṃbuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the

Mandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Cāranamunis. Svayaṃbuddha saluated them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tīrthaṃkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Śrīṣeṇa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Śrīvarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tīrthaṃkara Svayaṃprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a saṃnyāsa maraṇa. He was born in the Īśāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayaṃprabhā and Kanakaprabhā.

2. 12 करु णिउ सेसासयदलहो, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 4*b* किं भव्वु अभव्वु व वज्जरहि, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1*a* बद्धउ णियाणु, he formed a hankering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth. 9 मणकुडिलत्तें, i. e., on account of मायाशल्य.

XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of

time he died and was born as son named Vajrajaṃgha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajaṃgha had been growing on the earth, his consort Svyamprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Śrīmatī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmatī of Pundarīṅkiṇī. One day when this Śrīmatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former brith and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Śrimatı told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirnāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirṇāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitāṅga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Śrīmatī. On recollecting her

love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out.]

9. 11*b* सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु, the scented paste (सवलहणउं, समालम्भनम्) takes away my courage as it destroys force (स्वबलहन्) or as if it is like a bath to the dead (शव + लम्भन).

11. 8*b* अतियालउ संबुद्धतियालउ, although he (i. e. Jina) is destitute of wife or consort (तियाल-स्त्रीसहित, अतियाल-स्त्रीरहित) he knows the three times, viz., past, present and future (तियाल, त्रिकाल).

15. 6*a* अम्हइं दहजणाइं, we ten people, i. e., father, mother, five sons, viz., नंद, नंदिमित्त, नंदिसेण, धरसेण and विजयसेण, and three daughters, viz., सिरिवहा, सिरिहरा and णिण्णामिया. Note the use of जण with numerals which is preserved in Marathi. Compare: आम्ही दहा जण, दहा जणी, दोघे जण, पांच जण etc. 10*b* मइं उच्चोलि भरिय माहुरयहु, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटीवस्त्र) with a vegetable called माहुरय which is similar to spinach (माठ or पोकळा). This माहुरय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18. 9*a* धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि, there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kaḍavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19. 11 पण्णासट्ठुत्तरु, etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपंचमि, शुक्लपंचमी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुक्लपञ्चमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिणामोपवासैः (परिमाणोपवासैः ?) श्रुतसागरविधिर्भवति तासामेव सप्तषष्टिभिरुपवासैः जिनगुणसंपत्तिविधिरिति, T.

XXIII.

[The nurse of Śrīmatī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmatī. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said : In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Śrīvarman and Vibhīṣaṇa to king Śrīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasaṃca. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhīṣaṇa died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place. God Lalitāṅga, i. e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheḍa as Vajrajaṃgha.]

3. 2 सो सरसरविहिण्णु सा ण लहइ, he, being hit (विहिण्णु, विभिन्नः) by the arrows (सर, शर) of the god of love (सर, स्मर), does not secure her (सा). Note that सा is used here as Acc. sing. feminine, which is very rare in Apabhraṃśa.

5. Note the शृंखलायमक or दामयमक here. Note particularly 7*a* which line looks apparently incomplete as there is no 7*b* in any of the *Mss. The occurrence of such half lines* seems to be justified and correct, and we need not suppose that *b* is lost, for the यमक here °णिहे—णिह°—णियरे—णियराय° in 6*b*, 7*a* and 8*a* remains in tact.

8. 9*b* सीहणिक्कीडियउ—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly सव्वभद्दु in **10***a* ; मुत्तावलि in **9. 9***a* and रयणावलि in **9.** 14*a*, कणयावलि in **11.** 9*a* are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21. 2 इंदवयाउ, इन्द्रपदात्, from the place of इन्द्र. 13*a* अणामिया i. e., णिण्णामिया.

XXIV.

[In the meanwhile the wise nurse of Srīmatī went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa. There she kept the picture in the temple. Vajrajaṃgha came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he saw in the picture the events of his past life including his love to Svayaṃprabhā. He was unable to stand the pangs of separation from her and asked the nurse where his former beloved was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajaṃgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmatī for him, started for Puṇḍariṅkiṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmatī to Vajrajaṃgha, and thus brought about the union of lovers].

4. & 5. Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. 8*b* को नं पुसइ णिडालइ लिहियउ, who can wipe off what is written on the forehead ? This has became a proverb in M.

XXV.

[After marriage Vajrajaṃgha and Srīmatī returned to Utpalakheḍa. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrabāhu saw in the sky a cloud in the autumn which disappeared in a moment. He then thought that everything in the universe was momentary and hence decided to renounce the worldly life. Vajradanta also saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not

leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Puṇḍarīka, the grand-son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajaṃgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitāṅga and Vajrajaṃgha. They then narrated the four previous births of Śrīmatī, viz, those as Dhanaśri, Nirnāmika, Svayamprabhā and Śrīmatī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tīrthaṃkara, and Śrīmatī would become prince Śreyāṃsa. After listening to this he proceeded to Puṇḍarinkiṇī, saw there his sister Anuṃdharī and the young prince Puṇḍarīka, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.

12. 6*b* दूसावासु, a camp in tents (दूस, दूष्य, पटगृह).

19. 11*a* कंदुवि, a sweet-meat seller, a baker.

XXVI.

[Vajrajaṃgha and Śrīmatī were then born in the Uttarakurus as twins to Aṇinda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāraṇamunis arrived there. One of them was no other than Svayaṃbuddha, the minister of king Mahābala. This Cāraṇamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajaṃgha was then born as Śrīdhara in the Īśāna heaven, and Śrīmatī, changing her sex, was born as god Svayaṃprabha in the same heaven. The Cāraṇamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvidhi of king Subhadṛṣṭi and queen Nandā. Suvidhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghoṣa. God Svayaṃprabha

was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratīndra in the same heaven.]

1. 14*b* कव्वय पाययं—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day.

7. 10*b* विउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ—The root विद् (विउ in Prakrit) is widely known to mean "to know", so the term Veda means knowledge. Now, as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a करवाल, i. e., sword.

XXVII.

[Acyutendra and Pratīndra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tīrthaṃkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Ahamindra. Dhanadeva also was born as Ahamindra in the same heaven In the following birth Vajranābhi was born as Risaha and became the first Tīrthaṃkara and Dhanadeva was born prince Seyaṃsa Similarly Risaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tīrthaṃkara as to how many Tīrthaṃkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Risaha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Risaha.]

8. Note that this kaḍavaka summarises the ten previous births of Risaha. They are :—जयवर्मन, विद्याधरेन्द्र, महाबल, ललिताङ्ग, वज्रजंघ, श्रीधर, सुविधि, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि and सर्वार्थसिद्धाहमिन्द्र. Similarly the previous births of Seyaṃsa are summarised here.

12. 5-8 मद्दु णत्तिउ तुहु तणुरुहु मरिइ—The passage says that मरीचि, the son of भरत, will be the twentyfourth Tīrthaṃkara named वर्धमान.

On hearing this prophecy मरिचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Saṃsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāṃkhyasūtras. Compare Hemacandra, Triṣaṣṭi. VI. 373-390.

XXVIII.

[Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvīra, continued the narration further and said to Śrenika as follows:—King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Śeyaṃsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Dīvaḍa. The king touched them with the lotus-flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayaṃvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakīrti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakīrti and arrested

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20. 11*b* मेहेसरु जि हक्काग्गिउ राएं, king Jaya was called मेहेसर or मेघस्वर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in **28.** 4*a*, but elsewhere we find the name as घणरव in **21.** 15 ; जलहरसर in **23.** 7*b* ; जीमूयणाय in **28.** 9*b*. Metrically मेहसरु here is not good, but in **28.** 4*b* it is quite right. In T. also under **30.** 10*b* we get मेघेश्वरमित्रः.

XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhyaketu and Priyaṅguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Parameṣṭhis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvatī ?" Sulocanā also fainted saying "Rativara, where are you ?" On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Atavīśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktiṣeṇa therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva].

5. *2a* सुयावरु, daughter Sulocanā and her husband Jaya. *8a* पडकुडिहि, in the tent.

9. *10a* असिआउसाई i. e. five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेट्ठिs, viz. अरहन्त, सिद्ध, आयरिय, उवज्झाय and साहु. Thus असिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV. 12. 10 where also the same mantra occurs.

11. 11–12 पारावइ हउं etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravṣienā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara. 14 कइयवेण जणु सज्जइ, people are overcome (सज्जइ, lit. swallowed) by tricks. The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya.

12. 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here. *8a* अइइसिरि is mentioned in the sequel as वणसिरि (See **13.** *7a*). 13 परमायए, by my step-mother.

16. *4a* चारण is a class of ascetics. This class has two types, viz., Jaṃghācārana and Vidyācāraṇa. Both the classes are capable of flying through the sky. Jaṃghacāraṇa acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācāraṇa does it as a result of his learning and fast of three days.

21. 8–9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz., the hell; and as to where the meritorious go, the region above, viz., the heaven.

24. 4 तहिं एक्कु etc. There is one plate containing five jewels. He who discovers it will marry Priyadattā.

XXX.

[Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvatī and of Jaya as Hiraṇyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativegā.]

6. 10*b* हिरण्णवम्मु—This name occurs elsewhere, e. g., **20.** 8*b*, **20.** 8*a* and **22.** 4*a* as सुवण्णवम्म, कंचणवम्म and कणयवम्म.

12. 9*b* पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं, the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोळे वर चढविणें or फिरविणें in Marathi.

15. 4*b* तियमइ, i. e., स्त्रीमति, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

XXXI.

[Sukānta and Rativegā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law, but he told them the salient features of the Jain faith. Sukanta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day, while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nāgagrha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth belonged to him as it fell in the nāgagṛha belonging to him. Thereupon Suketu said to Nagadatta that the wealth really belonged to his wife as it was due to gift made by her. Nāgadatta thereupon took all the

wealth and went to the king, but the wealth handled by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasuṃdharā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex.]

3. 8*a* णवमवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order.

10. 9 लूयासुत्ते etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1*a* फणिदत्तु, i. e.. merchant Nāgadatta.

25. 10*a* विवक्खवइसेण, i. e , by Nāgadatta. 12 रइणिहियक्कइं, gems that put into background the lustre of the sun.

27. 5*a* धणसंखइ etc. Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasuṃdharā, in point of wealth.

XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Guṇapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Guṇapāla and queen Kuberaśrī. Guṇapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Guṇapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a bunyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla

did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophecied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophecied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvatī, and Vappilā.]

11. 1*a-b* तुहुं जि णाहु etc.—You yourself are my lover; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head? To have a horn on the head was considered to be an extracrdinary sight and hence proverbs in the vernaculars डोक्यावर शिंगें असणें etc.

XXXIII.

[Sukhāvatī, mentioned in the previous Saṃdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Siddhakūṭā and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvatī showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvatī. In the meanwhile Aśanivega, the brother of Vidyudvegā, arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him, but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā.]

11. Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaḍavaka. 13 विद्दि वि भद्दउ वासरु, even a rainy day becomes a fair day on account of the devotion to the Jina 14 खग्गु वि कमलु सकेसरु, a sword becomes like a lotus full of filaments.

XXXIV.

[Sukhāvatī came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Puṇḍariṅkiṇī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śripāla.]

2. 5*b* जियसत्तुं सलिलसेणु भणिउ, Jitaśatru, the father of Sukhāvatī said to his son Salilaseṇa, i. e., Vāriṣeṇa, to escort Śrīpāla to his town. मालिलसेण and सरसेण in **3.** 7*b* are only synonyms of वारिषेण.

9. 15 दिट्ठादिट्ठसरीरि, one, i. e. Sukhāvatī, who makes her person appear and disappear as the occasion demands.

XXXV.

[Sukhāvatī now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Puṇḍariṅkiṇī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśilekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvatī. In the meanwhile two Vidyādharas met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavati, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśri, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvatī, who was his wife.]

16. 11 एयहि जीव वि दिज्जइ—Note the corresponding saying in Marathi: इच्यासाठीं जीव सुद्धां द्यावा, I shall even sacrifice my life for her.

XXXVI.

[Śrīpāla was thereupon married to all the girls ; but Vappilā did not like that her husband should marry so many ; hence she returned to her father's house. Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavaī, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavaī was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavaī gave birth to the Jina who was named Guṇapāla. Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Guṇapala, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocana went up into the sky to offer worship to Risaha. On their way Indra put a temptation to trap king Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata.]

4. 21 सज्जिवइं रयणइं, the seven living gems of a cakravartin, viz., सेनापति, गृहपति, अश्व, गज, स्त्री, स्थपति and पुरोहित as opposed to lifeless gems such as चक्र etc.

8. 9*a* दुज्झेवडं सहुं चिहिं कप्पडेहिं, the dead body is burnt along with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

XXXVII.

[King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samavasaraṇa where Risaha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk. He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Risaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvāṇakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from samsāra].

6. 9 एयाणेयवियप्पणणाएं, by the law which has modes of expression such as एकत्व and अनेकत्व. I take this to refer to the famous सप्तभङ्गिनय in the form स्यादस्ति एकम् etc. See **7.** 3*b* below where we get express mention of सप्तभङ्गी.

7. 1*b* समयइं तेसट्ठइं तिण्णि सयइं, i. e., three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza :—

असिदिसदं किरियाणं अक्किरियाणं च आहु चुलसीदी ।
सत्तट्ठी अण्णाणी वेणइयाणं च होदि बत्तीसं ॥१॥

12. 6*b* जेवड्डु सलिलु तेवड्डु णालु णिप्पज्जइ णलिणहु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jīva has the same period or extent of saṃsāra as its acts have made it to be.

15–17. These three kaḍavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10–11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

15. 1 गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविहु, णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु—गुणु जीवगुणः पुद्गलगुणश्च, मूलोत्तरगुणा वा; मोक्खु अर्हद्‌वस्था सिद्धावस्था च, तउ बाह्यमाभ्यन्तरं च; पोग्गलु अणु स्कन्धं च; णिज्जर विपाकजा इतरा च. 3*a* जीवहं गइउ कहियाउ तिण्णि पाणि-मुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 3*b* जगवेढणमरु घनोदधि-घननिलय-तनुवाताः. 4*a* जगि जोय तिण्णि कायवाङ्मनोयोगाः. 5*b* बालाइउ चउविहु भणिउं मरणु बालमरणं बालपण्डित-मरणं पण्डितमरणं पण्डितपण्डितमरणं च, बालबालमरणस्य बालमरणान्तर्भावात्. 6*a* चउविहु पमाणु प्रत्यक्षानुमानागमोपमानानि. It is rather strange that a Jain writer should mention these four प्रमाण*s* as against प्रत्यक्ष and परोक्ष. चउविहु जि दाणु अभया-हारौषधशास्त्रदानानि. 6*b* चउविहु दव्वाइउ द्रव्यक्षेत्रकालभावाः. 7*a* चउभिण्णा मन्दमन्दतर-तीव्रतीव्रतरस्वभावैश्चतुर्धा भिन्नाः, चउविह कसाय अनन्तानुबंधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनानि एकैकस्य भेदाः. 8*a* चउविहु जिबन्धु प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशाः. चउविहु जिणासु नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो न्यासः निक्षेपः. 8*b* विणउ वि चउविहु ज्ञानदर्शनचारित्रोपचारिका विनयाः. 9*a* चत्तारि वि बंधविणामहेउ ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि 10 सज्झाय पंच वाचना-प्रच्छनानुप्रेक्षाम्नायधर्मोपदेशाः. (पंच) आयार विहि ज्ञानदर्शनचारित्रतपोवीर्याणि. 11 णिग्गंथ पंच पुलाकबकुसकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातकाः. जोइसकुलइं पंच सूर्याचन्द्रमसौ ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च.

16. 2*a* आसवणिबन्धहेऊ उ पंच मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 2*b* लद्धीउ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि. महाणरया वि पंच गेरवासिपत्रकूल्मलिकुम्भीयाः (?). 3*a* संसार द्रव्यक्षेत्रकालभवभावाः; सरीरइं होंति पंच औदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकार्मणानि. 4*b* समय षड् दर्शनानि. 5*b* सत्ता होमहीउ सप्तनरकभूमयः. 6*a* पयईउ अट्ठ अष्ट कर्मप्रकृतयः. 6*b* वणदेव व्यन्तरदेवाः अष्ट किंनरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः. जीवगुण ते वि अट्ठ सम्यग्दर्शनादयः; अथवा, अणिमामहिमालघिमाप्राप्तिप्राकाम्येशित्ववशित्वकामरूपित्वामिति. 8*b* वेज्जा-वच्चु वि दहविहु आचार्योपाध्यायतपस्विशैक्षग्लानगणकुलसंघसाधुमनोज्ञानाम्. 9*a* दह भावणसुर असुरनागविद्युत्सुपर्णाग्निवातस्तनितोदधिद्वीपादिक्कुमाराः. 9*b* फणिससिमह दह दिसिगय सुहासि धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः अष्ट लोकपालाः.

17 1*a* सिद्धंतासियाइं 2*a* चउद्दह मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता बाहुबलिकेवलज्ञानोत्पत्तिसमये व्याख्याताः.

20 6*b* णिच्चालियाइं निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive. 10*a* अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had given up all contact with body. At the time of मोक्ष the soul exists, but it is not in any way connected with physical body. 11 वसुसमहिं सिद्ध-गुणहि—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b).

GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[*In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied. Only one occurrence of the word, usually the first, is noted. A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like Pāiyasaddamahaṇṇavo are now available. M stands for Marathi.*]

अइमल्हइ–मन्दगमनं करोति xv. 18. 7
अइंवत्त–अतिमुक्तक xi. 1. 8
अक्का–माता xvi. 25. 12
अट्ठिलिय–अस्थिका (cf आठळी M) xxxii. 22. 6
अब्भिट्ट–अभिगत xxxii. 6 13
अम्मणु–कियन्मात्रम् (cf अंमळ M) xxv. 2. 5
अम्माहीरअ–रागध्वनिविशेष iv. 4. 13
अलियल्लि–व्याघ्र xiii 18. 9
अल्लय–कमल, आर्द्रक xxxi. 24. 4
अल्लवइ–समर्पयति, xxxi. 8. 3
अल्लिवइ–समर्पयति xxxi. 28. 3
अवरुंडइ–आलिङ्गति i. 17. 13
अवरुंडिय–आलिङ्गित vi. 5. 11
अवसें–अवश्यम्, xv. 22. 10
अविहंडिय–परिपूर्ण x. 3. 13
असराल–बहुल xix. 2. 4
आलुंखिय–आस्वादित xiii. 11. 4
आहुट्ठ–अर्धचतुर्थ xi. 25. 2
उच्चोलि–कटीवस्त्र, नीवी (cf ओटी M) (H gives उच्चोल i. 131) xxii. 15. 10
उट्टेट–उन्मत्त xxx. 4. 7
उप्फाल–पटहध्वनि xxxi. 15. 6.
उब्भिय–ऊर्ध्वीकृत vii. 21. 18
उल्लूरिअ–कान्दविक (A baker) xxv. 21. 1
उल्हाइ–अङ्गारावस्थो भवति v. 5. 4
उव्वार–उद्धरण, रक्षण, xvi. 21. 11
उव्वारुअ–अवशिष्ट (cf. उर्वरित M) xxxvii 25. 3
ओइल्ल–उपरितन xi. 5. 4
ओम्माहिय–उन्माथित, उत्कण्ठित xxxvii. 23. 11
ओरालि–शब्द (cf. ओरड M) v. 1. 7
ओरालिअ–आक्रन्दन xxviii. 29. 1
ओलग्गिय–सेवित vi. 5. 5
ओहट्टइ–हीनं भवति vii. 18. 7
ओहामिय–तिरस्कृत iv. 4. 4; अभिभूत xviii 1. 5
ओहुल्लिय–म्लान vii. 10. 1
कउल–चार्वाक, कापालिक xi. 17. 8
कक्कर–पर्वतशिखर xxxi. 23. 7
कक्खड–कर्कश, निष्ठुर xi. 13. 10
कडप्प–संघात, समूह viii. 7. 6
कडिल्ल–कटिसूत्र iv. 4. 5
कड्डुअ–चुम्बकपाषाण xx. 19. 2
कणइल्ल–शुक xiii. 7. 7
कप्पड–कर्पट, वस्त्र (cf. कापड M) xxxvi. 8. 9
कब्बड–वसतिविशेष v. 21. 3
कयर–धूलि (cf. कचरा M) xxviii. 2. 14
करंड–स्थगिका iv. 19. 9
करोडि–शिरोस्थि (cf. करोटी M) xii. 17. 8
कलमलअ–कालुष्य, ईर्ष्याजनित खेद (cf. कळमळ, तळमळ M.) xxxvi. 2. 6
कसर–बलीवर्द, vii. 20. 4; वत्सतर viii. 2. 18; गोयुवा xxviii. 28. 7.

कसर–पाण्डुर XXXII. 20. 14
कसेरु–तृण I. 3. 12
कंकेल्लि–अशोकवृक्ष IV. 1. 5
कंदोट्ट–नीलोत्पल XXIX, 6 5
किम्मीर–विचित्र VII. 19. 3
किलिगिलिय–शब्दानुकार XV. 1. 6
कुडुव– वादनकाष्ठ IV. 10. 10
कुढ–पृष्ठ XXIX. 14. 11
कुद्दहीर–चन्द्र XVII. 4. 5
कुवलीहल–बदर XXXII. 20. 15*
कुसुमाल–चोर XXXI. 18. 4
कुहिणि–मार्ग XXXV. 13. 6
कुंड–जलद्रोणी IV. 3. 7
कुंयरि–कुमारी XXXIII. 2. 4
केया–वरत्रा, रज्जु XII. 11. 5
केर–आज्ञा XVI. 6. 9
कोक्काविअ–आहूत, आकारित XXIX. 27. 9
कोक्किय–आहूत V. 17. 15
कोच्छर–दक्ष IV. 18. 1
कोट्ट–प्राकारभित्ति (cf कोट M) XXIV. 9. 11
कोड्ड–कौतुक XIII. 6. 1
कोंड–जलद्रोणी IV. 3. 7
खरियालइ–कदर्थयति XXXII. 23. 1
खुत्त–क्षिप्त, प्रहृत XXXI. 23. 6
खुप्पइ–क्षिप्यते XXXV. 9. 9
खुप्पंत–निक्षिपन् XIV. 7. 10
खुरुप्प–क्षुरप्र (cf. खुरपें M) XI. 1. 9
खेउं–आलिङ्गन XXIX. 19. 2
खेव–आलिङ्गन XIII. 8. 7
खेड–वसतिविशेष V. 21. 3
खेरि–वैर VIII. 1. 11
खोल्ल–गम्भीर (cf. खोल M) II. 13. 9
गणियारी–हस्तिनी XVI. 23. 5
गलत्थिय–कदर्थित XXXI. 27. 9
गलमोडी–गलवक्रत्व XXXIII. 4. 11
गलहत्थण–ग्रसन VIII. 5. 7
गंजोल्लिय–रोमाञ्चित XIV. 12. 12
गाउय–गव्यूति X. 14. 10
गिल्ल–आर्द्र XXIX. 5. 3; ग्रस्त XXXII 13. 9
गीढ–युक्त IV. 16. 3
गोस–प्रभात I 16. 10
गोंछ–गुच्छ (cf. घोंस M) I 3. 7
गोंदल–संग्राम (cf. गोंधळ M) XI. 16 9
गोंदलिय–मिलित I. 3. 7
घणघण–सातिशय III. 1. 6
घत्थ–ग्रस्त IX. 7. 3
घल्लइ–क्षिपति (cf. घालणें M) III. 16. 10
घल्लिय–क्षिप्त VII. 5. 12
घंघल–आपद् XXXII 7. 2
चक्खइ–स्वादति, आस्वादयति (cf. चाखणें M) II. 19. 4
चट्ट–शिष्य I. 16. 1
चडइ–आरोहति (cf. चढणें M) II 16. 1
चडाविय–आरोपित XXX. 12. 9
चप्पिवि–हठात्, दृढम् VII. 13. 12
चप्फल–बहुप्रलापिन्, निष्फल III. 14. 24
चवइ–जल्पति VIII. 7. 3
चंग–उत्तम (cf. चांग, चांगलें M) IX. 4. 14
चंगअ–उत्तम VI. 2. 12
चंचेल–वक्र XXIII 4. 13
चंदकव–मयूर XIII. 7. 10
चाउरि–शय्या (गादीति देशी T.) VI. 1. 6.
चिक्खल्ल, चिक्खिल्ल–कर्दम II. 13. 9
चिच्चि–अग्नि X. 11, 11
चिडउल्ल–चटक IX. 8. 14
चिड्डइ–आर्द्रीभवति (cf चिडणें M) II. 20. 11
चिम्मकइ–चमत्कृतिं करोति XVI. 2. 3
चिम्मकइ–भ्रमति XXIX. 15. 3
चिलिव्विल–बीभत्स (cf चिडबीड M) XX. 10. 11

चुक्कइ–भ्रश्यति IV. 8. 5
चुणइ–भक्षयति XVI. 13. 2
चुणय–अरोचकव्याधि XVI. 3. 7
चुरुलि–ज्वाला XXXII. 16. 14
चुहुट्टइ–लगति XVI. 7. 10
चेंचइय–अलंकृत III. 2. 4
चोज्ज–कौतुक, आश्चर्य (cf चोज M) VIII. 7. 23
चोवाण–यष्टि I. 16. 10
चोंभल–बीभत्स, समूह (cf चुंबळ, चुंभळ M) XXVII. 27. 1.
छज्जइ–राजते, शोभते (cf सजणें M) I. 14. 3
छडउल्लअ–संमार्जन, जलादिनिक्षेप (cf सडा M) XVI. 1. 12
छडयण–भ्रमर IX. 18. 4
छल्लि–त्वक् (cf साल M) XXXVII. 20. 10
छंडइ–परित्यजति (cf सांडणें M) VII 19. 15
छाहि–छाया (cf साहुली M) XVII. 3. 12
छिवइ स्पृशति (cf सिवणें, शिवणें M) IV. 5. 13
छिप्पइ–स्पृशति (cf शिवणें M) VI. 2. 13
छिंक–छिक्का (cf शिंक M) XXVI. 4. 2
छुडु–क्षिप्रम् II. 19. 1
छोडअ–छुटिका, त्रुटिका XXIV. 8. 1
छोह–क्षोभ, विक्षेप XVII. 1. 6; क्रोध XXIX. 18. 8
जडिल–कुङ्कुम XXVIII. 1. 3
जंपाण–शिबिका (पालखीति देशी,T.) VII. 1. 7
जांवाय–जामाता XXXIII. 4. 16
जूरण–खेदन VII. 6. 12
जूरिय–निर्भर्त्सित VII. 5. 5
जेंवइ–भुंक्ते XVIII. 7. 11
जोइय–दृष्ट XVIII. 9. 4
जोक्खइ–तोलयति (cf जोखणें M) IV. 5. 5
जोक्खिअ–तोलित XVIII. 9. 5
झडप्पइ–आक्रमति (cf झडप M) XXX. 4. 9
झडप्पण–ताडन (cf झडप M) XXV. 4. 8
झडप्पिय–पतन VIII. 3. 9
झलक्क–पूर्णाञ्जलि (cf चुळुक M) XVII. 13. 6; औष्ण्य XXXIV. 2. 11
झलझलिय–ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf झुळझुळ वाहणें M) XII. 2. 13
झलुक्किअ–संतापित (cf झळ M) XXIX. 23. 11
झंपइ–आच्छादयति (cf झांपणें, झांकणें M) I. 11. 4
झंपड–नेत्रयोरर्धोन्मीलन (cf झांपड M) XII. 12. 5
झंपिअ–आच्छादित XXVI. 14. 9
झुलइ–कम्पते (cf झुलणें M) XIV. 5. 12
झुंबुक्क–स्तबक (cf झुबका M) IV. 9. 9
झेंदुअ–कन्दुक (cf चेंडू M) I. 16. 10
झेंदुलिया–पुंश्चली (cf शिनळ M) XV. 6. 15
टक्कर–शिलाशकल (cf टोकर M) XXXI. 16. 4
टिंट–पुंश्चली XXIX 18. 9.
टेंट–वृन्त (cf देंठ M) XII. 9. 18
डर–भय (cf डर M) XXV. 8. 9
डंकिय–दष्ट XXX. 12. 8
डाल–शाखा (cf डाहाळी, डाळी M) I. 18. 2
डावि–मुद्रा, मुद्रिका XXXV. 5. 3
डुंग–समूह IX. 2. 27
डेवंत–धावन् XVII. 2. 8
डेंडुह–डुण्डुभ XVI. 20. 9
डोलइ–आन्दोलनं करोति (cf डोलणें M) IV. 18. 2; कम्पते XV. 18. 3
ढलइ–च्यवति (cf ढळणें M) XXXI. 19. 12
ढलहलिय–चालित XVII. 7. 5
ढलिय–स्रस्त VIII 9. 12

ढंकइ–आच्छादयति (cf झाकणें M) I. 13. 10
ढंकिय–आच्छादित XIII. 11. 1
ढंख–पुष्पपत्रफलरहित वृक्ष XIX. 13. 5
ढंढर–राक्षस XXXI. 26. 6
ढालइ–चालयति (cf ढाळणें M) XIV. 10.7
ढिल्लीहूय–शिथिलीभूत (cf ढिलें M) XXXII. 3. 5
णक्क–नक्र, जलचर XXXV. 12. 7
णग्गोर–कर्पूर XII. 10. 7
णाहल–शबर XV. 1. 9
णिक्खुत्तउं–निश्चितम् XI. 9 7
णिक्खुब्भु–निरन्तरम् XX. 1 7
णिच्छट्टइ–स्खलति IV. 15 11
णिड्डुरिय–निष्कासित XXXV. 1. 14
णियइ–अवलोकयति V. 15. 9
णियंयणी–वरत्रा, रज्जु XXV. 18. 12
णिरारिउ–अतिशयेन XIII 7. 13
णिरिक्क–चोर XXIX 17. 3
णिरु–अतिशयेन XIII. 11. 11
णिरोविय–अर्पित XXIX 20. 2
णिहेलण–गृह III. 1. 10
णिसाड–निशाचर, राक्षस XVI. 26. 8
णीवइ–विध्यापयति (cf. निवणें M) II. 19.10
णेसर–सूर्य I. 1. 1
णेहीर–कुङ्कुम XXV. 9. 12
तक्कारि–सारथि XII. 13. 9
तरु–शीघ्रम् XXV. 19. 13
तलप्प–करप्रहार IV. 11. 7
तल्ल–शुद्रसरस् (cf तळें M) XXV. 2. 8
तंडअ–समूह (cf तांडा M) XVI. 22. 8
तारुअ–कर्णधार XXV. 9. 3
तिगिंछि–मकरन्द, पराग IX. 21. 14
तिडिक्क–स्फुलिङ्ग XXXVII. 21. 10
तिया–स्त्री I. 15. 4
तियाउस–भस्म XXXVII. 22. 9
तिंगिच्छ–मकरन्द, पराग V. 1. 10
तिंगिछ–मकरन्द, पराग XI. 5. 6
तुय–स्त्री IX. 22. 9
तुप्प–घृत (cf. तूप M) XXVI 1. 5
तुंदाहि–गण्डूपद VII. 12. 7
तूह–तट XXIX. 8. 9
तोंड–मुख (cf. तोंड M) V. 3. 3
तोंतडिल्ल–मिश्र XXVIII. 1. 5
तोंद–उदर XX. 23. 3
थड–समूह XII. 3 19; स्तबक XIII 6 5
थत्ति–स्थान II. 15 12
थड्ढ–घन XII. 11 1
थट्ठ–धन XII 11. 1
थरहरण–कम्पन VII. 9. 12
थव–स्तबक (cf थवा M) XII 9 19
थिप्पिर–गलनशील (cf थिबकणें, ठिबकणें M) VII. 12. 10
थेंभ–बिन्दु (cf थेंब M) III. 14. 20
दडत्ति–ध्वन्यनुकरणे शब्द (cf धाडकन् M) IX 13. 2
दलवट्टइ–छिनत्ति, नश्यति XVI. 23. 6
दलवट्टिअ–खण्डित, नष्ट XV. 3. 5
दवक्कडी–अशनिपात VII. 14. 2
दवट्टि–शीघ्रम् XXIX. 6. 3
दह–ह्रद XXIX. 8. 3
दंडिखंड–शतजर्जरं जीर्णं सिवितं वस्त्रम् XXII. 16. 22
दाढा–दंष्ट्रा XVIII 1. 15
दविड–सर्पजातिविशेष (cf दिवड M) XXVIII. 9. 15
दुब्बोल्लिय–दुरुक्त VII. 5. 11
देहलिय–मर्यादा XIII. 10. 1
देंट–वृन्त (cf देंठ M) IV. 11. 11
दोर–सूत्र, रज्जु (cf दोर M) II. 16. 2
धण–धन्या (स्त्री) XX. 7. 3

धाह– आक्रोश, क्रन्दन (cf धाय) XIV. 8. 5
पइरिक्क–प्रचुर IX. 24. 12
पउलण–प्रज्वलन, पाक VII. 6. 12
पक्कल–समर्थ XIV. 7. 5
पुच्छाउडुं–पश्चान्मुखम् XXXIII. 11. 3
पहुक्कइ–प्रसरति XXXII. 17. 2
पत्तल–सूक्ष्म, सुन्दर (cf पातळ M) XVII. 10. 1
परअ–प्रभात, परेद्युः (cf परवां M) XXXII. 26. 8
परइ–प्रभाते XVI. 20. 12
परवाली–पर+पाळा (परव्वी) XI. 18 3
परियंदइ–आन्दोलयति IV. 4. 13
परिहृत्थें, परिहच्छें–वेगेन XIV. 1. 20
परोहड–पश्चाद्द्वार (cf परडा, परडूं M) XXIX. 14. 9
पलाट्टिअ–परिवर्तित XXXIII. 6. 13
पसंडि–सुवर्ण IX. 7.1
पहुल–पुष्प (?), प्रभूत XXV. 8. 5
पंगुत्त–प्रावरण (cf पांघरूण M) I. 14. 4
पंगुरइ–पटेन आच्छादयति (cf पांघुरणें M) IV. 15. 14
पंगुरण–प्रावरण VII. 23. 9
पाडिहेर–प्रातिहार्य I 18. 9
पाण–चाण्डाल XXXI. 17. 5
पालिद्धय–वंशवेष्टितपताका XII. 9. 4
पासुय–शुद्ध, प्रासुक IX. 7. 4
पासुलिया–पार्श्वास्थिसंघात VII. 12. 4
पासेय–प्रस्वेद VII. 24. 10
पाहुण–अतिथि (cf पाहुणा M) XXIV. 10. 7
पिच्चइ–पक्कं भवति VII. 14. 2
पीलु–हस्तिशावक XXIX. 8. 1
पुण्णालि–पुंश्चली XVIII. 1. 7
पुलि–व्याघ्र XXV. 16. 4
पेल्लावेल्लि–संभ्रम IX. 18. 16
पोलिय–प्रेरित I. 12. 5
पोट्ट–उदर (cf पोट M) IX. 8. 15
पोट्टल–ग्रन्थि (cf पोटळी M) XX. 10. 12
पोत्ति–स्नानशाटी IX. 4. 13
पोप्फली–पूगीफलवृक्ष (cf पोफळी) XXII. 7. 13
फिट्टइ–नश्यति (cf फिटणें M) VIII. 4. 36
फुलंधुय–भ्रमर IX. 11. 9
फुलुंधुय–भ्रमर IX. 11. 9
बइसइ–उपविशति IV. 1. 11
बप्प–पुत्र इति संबोधने IV. 8. 7
बप्पीह–चातक XII. 7. 2
बप्पीहय–चातक II. 13. 13
बाहिरि–बहिस् XVI. 3. 3
बुक्करइ–शब्दं करोति (cf भुंकरणें M) VII. 25. 5
बुक्कार–भूत्कार XV. 19. 8
बुड्डइ–मज्जति XXXIII. 11. 11
बुंध–मूल VIII. 7. 10
बोल–ध्वनिविशेष XVII. 3. 4
बोल्लइ–जल्पति VIII. 5. 17
बोल्लाविअ–भाषित IV. 4. 9
बोहित्थ–नौः XVII. 4. 4
भउंहा–भ्रुकुटि XXII. 8. 2.
भम्म–सुवर्ण IV. 10. 1
भल्ल–भद्र (cf. भला M) IV. 5. 7.
भल्लारअ–शुभ, उत्तम VII. 17. 11
भसल–भ्रमर IX. 28. 2
भंडइ–कलहं करोति XXXV. 8. 7
भिडिअ–संमुखं गत (cf. भिडणें M) XVII. 1. 1
भुक्कइ–भषति (cf. भुंकणें M) I. 8. 7.
भेल–अतिवृद्ध XXIX. 25. 12
भोल–मूढ (cf. भोळा M) II. 20. 7
मडप्फर–गर्व XV. 15. 11
मडह–सुन्दर XII. 12. 3

मडहा–तन्वी, लध्वी XVI. 26. 2
मडंब–वसतिविशेष V. 21. 4
मड्ड–नालिकेरवन (cf. माड M) XIII. 2. 3; बलात्कार XIII. 2. 3
मड्ड–बलात्कारण IX. 14. 10
मब्भीसिया–मा भैषीः इति उक्ता, आश्वासिता, XXXII. 26. 3
मयासि–(अमृताशी) देव XIV. 1. 4
मरट्ट–दर्प, गर्व, XVI. 16. 8
मल्हण–मदयुक्त XXIX. 25. 5
मंट–निश्चय (cf. मट्ट M) IX. 8. 11
मंठ–निम्नोन्नत XII. 5. 25.
मंडल–श्वा V. 15. 12
मंदीरय–रविकानिरोधकलोहवलय XII. 11. 3
मायण्हिय–मृगतृष्णिका XX. 20. 7
माउंडल–सर्पविशेष XVI. 9. 12
मुसुमूरइ–द्रवति III. 3. 3
मुसुमूरण–पिण्डीकरण VII. 6. 12
मुंडिय–मन्दुरोभयपार्श्वनिखातकाष्ठद्वय XV. 2. 5
मूरविअ–तापित, क्वथित XII. 11. 10
मेरा–मर्यादा VIII. 1. 13
मेलअ–समूह (cf मेळा M) XXVIII. 3. 8
मेलावक्क–संगम XXXII. 24. 4
मेंढअ–मेष (cf मेंढा M) XVI. 9. 10
मोक्कल्लिय–मुक्त XIII. 5. 10; मोचित XXXI. 29. 8
मोढ्ढिय–मग्न VIII. 12. 5
रडि–आक्रन्दन XV. 20. 4
रवण्ण–रम्य II. 2. 3
रहट्ट–अरघट्ट (cf रहाट M) XXVII. 1. 4
रहल्लि–तरङ्ग, वीची (cf लहर M) IV. 15. 12
रहिअ–आच्छादित XV. 12. 4
रंखोलिर–विलसनशील III. 2. 1
रंगइ–जानुभ्यां चलति (cf रांगणें M) IV. 1. 11
रंजण–मृद्भाजनविशेष (cf रांजण M) V. 19. 11
रंडिय–विधवीकृत XVII. 9. 10
रिंछ–शुक I. 14. 4
रुंटइ–शब्दं करोति V. 1. 10
रुणुरुंटइ–गुञ्जति VI. 1. 14
रुंद–विस्तीर्ण (cf रुंद M) III. 7. 10
रुंदिम–विस्तार XI. 4. 5
रेल्ल–चालन (cf रेलणें M) XIV. 10. 1
रेह–शोभा XI. 23. 4
रेहइ–राजते, शोभते II. 2. 12
रोयर–रुचिकर XVII. 12. 7
रोल–कोलाहल XIV. 5. 9
लइ–अतीव (वाक्यालंकारे) (cf लइ M) V. 16. 11
ललाविय–प्रसारित XVII. 1. 1
लल्ल–अस्फुटवाक् IX. 8. 11
लल्लक्क–रौद्र (cf. लल्लकार M) XIV. 7. 5
लंजिया–गृहदासी XXXI. 21. 1
लाणि– मर्यादा, अन्त IV. 5. 14
लीह–रेखा XII. 6. 7
लुक्क–निलीन IX. 14. 12
ल्हसइ–पतति, स्रंसते II. 8. 13
वट्टुत्तिविडि–वट्ट+उत्तिविडी (cf उतरंड M) XXXII. 20. 5
वड्ड–महत् I. 12. 6
वद्दल–झञ्झावात (cf वादळ M) VII. 16. 8
वमाल–कोलाहलशब्द I. 11. 7
वव्वीह–चातक II. 13. 13
वावल्ल–सेल्ल, कुन्त, सर्वलोहमयायुधविशेष VII. 5. 11
वाहियालि–अश्ववाहनमार्ग I. 14. 8
विट्टल–अपवित्र, अस्पृश्यसंसृष्ट (cf विटाळ M) VII. 12. 8
विडप्प–राहु (विदर्प ?) XII. 6. 3
विड्डुम–भय XVIII. 13. 1

विढत्त–अर्जित XVI. 3. 4
विराल–बिडाल, मार्जार XXX. 4. 10
विरिक्क–विभक्त VIII. 13. 23
विरोल्लिय–कदर्थित XXXI. 23. 7
विलया–वनिता V. 4. 13
विसंभर–तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 12
विसूरइ–खिद्यते XIV. 5. 10
विहलंघल–विह्वलाङ्ग XXVIII. 19. 8
वुण्ण–संकुचित XVII. 15. 12
वेच्छिल्ल–कोरण्टवृक्ष XXV. 5. 9
वेल्लहल–कोमल III. 1. 11
वेहाविय–वञ्चित (द्वैधीकृत ?) XVIII. 2. 2
वैभल–विह्वल XXVIII. 27. 1
वोद्रही–तरुणी XXXIII. 1. 10
वोलइ–अतिक्रामति IX. 19. 14
वोलाविय–त्यक्त XV. 6. 4; अतिक्रामित, निष्कासित, XVIII. 2. 2.
वोलीण–अतिक्रान्त II. 9. 1
वोक्क–यकृत् (कलिजा T.) XI. 24. 12
सइत्त–सचेतन XXX. 1. 12
समलहिय–अभिलिप्त VI. 1. 9
सल–शवशयन, चिता, XXIII. 8. 6
सलसलइ–सलसलध्वनिं करोति (cf. सळसळणें M.) IV. 11. 10
सवडंमुह–संमुख II. 2. 12
सवलहण–समालम्भन (विलेपन) III. 4. 7
सव्वल–सर्वलोहमयी घाणी, तिलपीडनायुध XI. 16. 9
सहइ–शोभते III. 12. 16.
संगहण–पुंश्चलयुगल, जारजारिणीयुगल XXXV. 10. 1
संच–शरीरबन्ध VIII. 9. 12; समूह XVII. 5. 2
साइउं–आलिङ्गन V. 15. 9
साड–विध्वंसक XIV. 5. 14
साडी–शाटी, वस्त्र XII. 5. 3.
सारी–उत्तमा III. 6. 1
सिणिसिच–तन्तुवाय, कोलिक XXXI 17. 13
सिप्पि–शुक्ति (cf. शिंप M) IV. 6. 11
सिप्पीर–पलाल VII. 19. 4
सिलिंधय–बाल XXXIII. 6. 6
सिलिंब–शिशु II. 13. 9
सिहिण–स्तन II. 16. 2
सीसक्क–तुष XIX. 2. 2
सुढिअ–दुःखित III. 17. 2
सेल्लु–प्रास VII. 5. 11
सेहीर–सिंह XXV. 3. 5
सेंभ–श्लेष्मा XX. 14. 10
सोण्णार–स्वर्णकार (cf सोनार M) XXXI. 7. 2
हट्ट–पण्यवीथिका (cf हाट M) I. 16. 1
हेडि–शृंखला VII. 13. 8
हल्लइ–कम्पते (cf हलणें M) XIV. 5. 12
हल्लिय–कम्पित I. 12. 5; वलित XV. 15. 5
हुर–दुःख XI. 11. 4
हुंड–विकलेन्द्रिय XI. 1. 11
हुलिय–प्रोत VII. 5. 10.
हवाइद्ध–कुपित XXXII. 20. 4
होहल्लर–जो जो शब्द IV. 4. 14

ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kaḍavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्धय° उद्धत°	उद्धूय° उद्धृत
१५	१६	८	णं	ण
२४	७	६	भ वहि	भावहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जंतजणंण	जत जणेण
३९	४	११	सइं	सइ
४६	१२	५	जोणयहं	जोयणहं
५२	१९	१	णंव	णवं
७७	७	१०	बुाद्धदारेण	बुद्धिदारेण
८३	१४	९	फलिइ	फलिह
८९	२२	६	पुारसु सपससहु	पुरिसु सपसंसहु
१०६	१०	१०	मरतं	मरंत
१२४	३	७	एत्यु	एत्थु
१४८	१०	८	झंकाराह	झंकारहिं
१६५	१	५	तुहं	तुहुं
१६८	४	६	रूढएहिं	रूढएहिं
१८४	७	९	एक्को रुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्धुव	अद्धुव
१८९	१५	१	घइसह	घइसइ
२०५	३५	११	अज्जिय संघहु	अज्जियसंघहु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१५	स पहु	सपहु
३००	८(n)	९(n)	कंदासिहि	कंदासिइ
३०२	११(n)	६(n)	रुंब	तुंब
३०९	६(n)	९(n)	थ्राह्मं	थाह्यं
३२१	८(v.l.)	१०(v.l.)	MP	M*p*
३३९	७	६	ि वाउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	वावहि	वाविहि
३७९	१	७	पंडियभवणहु	पंडिय भवणहु
३८०	३	१	पाद्दिय	पंद्दिय
३९८	१२	८	मुणिविणयं°	मुणि विणयं°

Page	Kaḍavaka	Line	For	Read
४००	१५	४	सिरिसुय	सिरि सुय
४००	१५	१०	वइइदेसि	वइदेसि
४१७	१४	५	उवलोहुवि	उवलोहु वि
४२९	१२	७	दिय कविल	दियकविल
४६३	८	३	धप्पाणउं	अप्पाणउं
४६६	१३	१४	सुयमण	सुय मण
४६७	१४	७	सक्सि	सक्खि
४७१	२१	४	अट्टहासें	अट्टहासें
४७३	२४	४ *	जा	जो
५०२	१७	१३	कणाणिय	केणाणिय
५०६	२२	१०	जेसणइ	जणेसइ
५०७	२४	६	पडिवाणि णाय	पडिवणिणाय
५३३	५	१०	वत्थअियत्थ	वत्थणियत्थ
५३६	९	५	सा	सो
५५२	८	५	होति	हौंति
५५७	१६	३	जिणुगय	जिणु गय
५७४	१	४	णिसवइ	णिवसइ
५८४	१५	७	उच्चविह	चउविह
५८४	१६	२	हेऊउ	हेऊ उ
५८४	१६	३	संसारसरीरइं	संसार सरीरइं

१० वत्था
५ सा